श्री·भा
द॰ ६
५

ता ९४ ताहां जाइ प्रभु अस्तुति कीनी वेद [illegible]राकरि अति रस भीनी देव देव त्रिभुवन पति
स्वामी नाम वृषाकपि अंतरजामी ९५ [illegible]हा करि विनती विधा वहुत विध भनि कीन्यौ
उर ध्यान गगन गिरा सुन मगन मन जान्यौ जग कल्यान ९६ सोरठा सुनि नभ गिरा अनू
नूप विधवोल्यौ तव सुरन प्रति व्योम गिरा अनुरूप सुनहु करहु सव मिलजु रत ९७ चौ
पई भूमताप यह वीर गोसाई प्रथम हि जान्यौ जन सुषदाई तुम सब मिलि धीरज उर आ
नी जदुकुल जनम लेहु सुषमानी ९८ प्रभु निज काल सक्र कर आहू हारिहीं भूमसंता
प कलाहू जगत ईसपति हरि भगवंता आतिसमर्थ गुन अमित अनंता ९९ पुरुष पुरा
न अरि अवनासी जो सब के उर अंतरवासी सो सब ध्यान वृ लसुषदानी सोरो ग्रह प्र
रा देह मजानी ९० तेहि प्रिय लागसकल सुर नारी वज अवतरहि सुभगतनु धारी जे
अनंत हरि कला गुनाकर सहस वदन वल अमित प्रभाकर ९१ सो हरि माया ते जगउ
[illegible]ाई भगतन हेतु प्रगट जो आई प्रभु निदेस कारज हित लागी सो उअवतरहि जानु
[illegible]ड भागी ९२ दोहा आयुस दै सुरगन नभ मिष्ठि निक हसुषउपजाइ गए उविधाता धा
[illegible]निध अपर सुनौं नरराइ ९३ सोरठा हरि प्रगटन कौ हेतु एहि विधवरन्यौ नृपति प
[illegible]जन नै मैनिगडन केतु सो प्रसंग अव कहत मुनि ९३ चौपई सूरसेन जदुपति जग
[illegible]हि सकल मधुपुर महते ते सूरसेन माथुर सव देस पाल्यौ करि सुभ नीत
[illegible] ९४ यदुकुल भूप वसे सुषमानी मधुपुर यौं तै भई रजधानी हरि ते हि सदा सु

५A

पासरहाहीं छिनकनाहिंतनमनततनजाहीं ५५ तापुरसूरसेनमनएकवारा करिवि
वाहविधसुभगप्रकारा साहितदेवकीअति[illegible]सुषपाई करनपयानचढेरथजाई ५६
कंचनरथतेहिंचढुपासा सोभितअनतसतसूरप्रकासा उग्रसेनसुतकंसनपाला नि
जभगिनीहितसोतेहिकाला ५७ रथचढअस्वदामगहिलीना निजभगिनीपतिक
हसुषदीना केरीवारसतसुभगसवारी हेमहामनजनजटितअमारी ५८ पंद्रहसहस
वाजिअतिसोहन देषतरवररथवाजविमोहन रथसहस्रदससतसुषकंदा दियोसुता
हितहियआनंदा ५९ दोहा दासीदेसतसुठि दसकुमारीसुभअंग दाहिताप्रियदेव ६
किदईभूषनकरिबहुरंग ६० चौपई सोवमहदंगदुदुभीवीना बजेबाजनेअमितप्र
बीना करतप्रियानवधूवरदेषी अतिमंगलहियभयोविसेषी ६१ पथरथहांक त
कंसनपाला भईब्योमबानीतेहिकाला वहतजासुरथतेसुषमानी गर्भअष्टमएतव
तवतनहानी ६२ नभवानीजवएहिविधकहेऊ सोसुनिकंसहृदयअतिदहेऊ भोज
वंसदूषनखललरुढा भगिनीवधकहभएउआरूढा ६३ लैकरालकपूसकचगहितासू
त्यागिधर्मपपकुपथनिवासू महाभाग्यवसुदेवसयाने निरतकर्मतासुकेजाने ६४
अतिनिरलज्जक्रूरअघरासी तासनवचनकहतसुषवासी वहुतप्रसंसाप्रनिकर
त तासू समप्रेमजुतवचनविलासू ६५ सूरसराहतगुनसवतोरा भोजवंसनृमजसन
हियोरा तियजनभगिनीब्याहमंझारा मारहुकिमिविनकरेबिचारा ६६ मैंनिज

श्रीभा
६५
5

मरनहेतुभयमानी बंधौ तुमभगिनीयह[illegible]रआनी जौइमिसंसयकरहुविचारी तही
सुनहुएकवचनहमारी १७ दोहा जन्म[illegible]नजेजीवजग तिनकहुसुनहेवीर जन्म
समैविधनालिषीनिश्चैमत्युसुधीर १८ चौपई अवहीआजुवरषसतमाही मरैअ
वस्यरहैकोऊनाही देहत्यागिकेसमयसुजानू गहैजीवतनअवसअजानू १९
निजकर्मनवससैंतनअहई एहतनैप्रथमअपरतनगहई नवपिछिलैतनत्यागेमू
ढा फिरैकर्मवसमोहिअरूढा १२० जिमितनजोंकचलैपगएकू आगेधरैसुपहिलेकर
टेकू नवपिछिलैपगनजैसंभारी अैसेहिनरगनिलषौविचारी २१ कर्माधीनफिरैसब
ठाम नहिसुतंत्रसुभधामकुधाम ग्रहनत्यागिअरुकर्मअकर्मा उभयदेहनहिआ
तमधर्मा २२ सोइदुष्टानकहतहिपसानी श्रीवसुदेवकंससनमानी हर्षैसुनैउभ
यसुषजेते उनमलीनसोचैसवतैते २३ जबवहसोइजाइसोप्रानी सोसबलहैसप
नैसुषमानी आयुहिरंककबहुंनपहोई लहैकबहुसुषदुषलहसोई २४ दोहा अैसे
हिघंटिकाएकमहुलह्योअमितव्यवहार जबजाग्योतबसुधमईस्वपनसत्यनहिसा
र २५ सोरठा अहौअहोमैंरंक नृपतनभयौसोउसत्यनहि रहीनकछुमनसेकजो
देष्योकछुंस्वपनमै २६ चौपई जिमिसपनेकोदेषनहारा लषैनपाछिलतननिरधा
रा तिमिदेहीयहकर्मअधीना गहैतजैतननसुषदुषहीना २७ कर्मविचित्रदेहकोहेतू
हमिष्कतिवरनैसवजगसेतू करनकर्मघटिवाढितनकैसे लहैजीवयहघटनअैसे

5A

१८ इमि संसय करि कोउ मन आनी तौ इमि [illegible]वन सुनौ सुषमानी माया गुन तहँ न सब सं
सारू सुर नर पसु मिल सकल पसारू १९ [illegible]ने काल महुँ जब यह प्रानी जहाँ जात सु मन
गौ सुष मानी अभिनिवेस जिन जहँ अति कीना तन तजि तहाँ सु जाइ प्रवीना २० जद्यपि
देही अमल अमल अनूपा सुष दुष रहत न अषंड सरूपा तद्यपि नाना तन धर फिरही मन
अधीन सुष दुष सब लहही २१ तौ मन करता भाए हि रीती आतम किमि पावै विपरीती
असी संसय करि जे कोई ताहि कहत असे सत हि होई २२ अहै विचित्र वासना जीनी क
र्म फलन महँ मन पुनि हीनी या तें धरत देह यह नाना मैं मेरो करि सह अभुलाना २३
दोहा कह्यो वचन सो सत्य सब तद्यपि यह न्यरे हहु धर्म । सो गिरछा करि यह है सु दरय यह गे
ह २४ सोरठा इमि कोउ वचन उचार ताहि कहत समुझाइ अब सुनिये सुभ गा विचार आ
तम संतत न एक रस २५ चौपई उदक तेल घृत महँ धरई ससि छाया ता महँ तब परई प
वन वेग कंपत सो भएऊ तब ससि बिंब न सो हिं गएऊ २६ तिमि यह आतम सुध सरूपा नि
ज अस्थान रचित बहु रूपा करि अनुराग बसै जहँ जाई सुष दुष लहै अमित तेहि ठाई २७
प्रबल अविद्या बस यह देही अभिनिवेस पुनि करत न तेही देहादिक आसक्त सुभाऊ ज
नमै मरै न लहै उपाऊ २८ निज सरूप निरषै जब सोई सोक मोह दुष रहै न कोई देही
कहै देह मम नाही देह आतमा उभय सनेही २९ आतप तातहु गहि विधि होऊ झूलै निज
सरूप तब सोऊ हंस अरूप भूल देह के धर्मा होत प्रतीत जीव कह कर्मा ३० यदु विपरी

श्री·भा·
९·६
6.

तिधर्मलखुश्रैसे उहकमांऊरंविविंवहिजैसै सोयहसवविस्वस्वपनसमाना चतुरविवेकी
चितनहिंउरश्राना ३१ एहिंतेसुरनरतनु ‍ ‍व्याला सुषदुषश्रवसमिलेसवकाला ता
सुहेतुकसहेतुकसरचहुउपाई भगिनीवधकहमनहुहिंराई ३२ दोहा श्रैसोनिपुनविवे
कजुतचहैजुनिजकल्यान द्रोहिकरैनकाहुसोसवमहिलषैसमान ३३ सोरठा प्रीतिरी
तनजिनीत द्रोहिकरैजोश्रौरको लहैमहाभयभीति तारनकोरविसुश्रनिते ३४ चोपई
तवभगिनीश्रतिरूपनजुवाला पुत्रीसमहैदीनदयाला नहिंवधजोगवंधैश्रघषाली
देषहुतुमनिजहृदयविचारो ३५ एहिंविधसामभेदकहिभूपा समुजायोकंसहिंवहुरू
पा नहिंनिवर्त्तवधतेंकूमूठा ~ दनुजसघामतिमोहिंश्ररूढा ३६ देषिकंसहठपरम
कठोरा तजिहिनमारैविनुसठघोरा तववसुदेवमंत्रहियठानी टरैकालकेहिंविधसु
षमानी ३७ मनठहरायमंत्रश्रतिनीको कहनलगेभावतनिजहीको जितनोहोइवुध
वलजाहो टारियकालमनुचितवाही ३८ जोनटरैहठसठमतिघोरा तोपुनिकछूश्रपरा
धनमोरा कंसहिंपुत्रदेनकहिवानी लेउवचाइवामसुषषानी ३९ पुत्रहेतश्रनुचितयह
वाता तद्यपिकालवचाइश्रघाता जोकंन्याउपजेपुनिकवहूं होनेहारहुहैजवतवहूं ४०
तोलगिइहजीवैसुषमानी दैवीगतिकहूकोंनैजानी जोकहाचियहसरिगोश्राहू तवेस
वरोगमिटयोसंताहू ४१ दोहा तोमेरेकंन्याभईयहमरसोकठोर समयमएजोपुत्रभाए
हिमारैवरजोर ४२ चोपई कंसेपुत्रहनेकहुयोको श्रतिवलिष्टसुतलघुवलजोको त

6A

होकहत अैसे यह आही। दैवीगति को लखि ई न जाई प्रारब्ध आधीन सब सो आनी जहां न हो करम
कियवरतानी यांते सुत अरपन कहियां सै चै देव की एहि विध तो सो ४४ जीव अविवे
अतर्क बषानी होनहार तेहि को ऊ नहि जानी तासु कहत दृष्टांत सुनाई है अतर्क सब विध
दुहठाई ४५ गहन ब्रह्म जो दहन कृसानू त्यागि निकर तरु वर सुषमानू रहै दूर के तरु अन
यासा बचाहि निकर के विनहि प्रयासा ४६ अरु कहूं आग ग्रह महं लागी जारै दूर निकर
ग्रह त्यागी विनु अदृष्टि कछु होइ न कबहूं जीवन मरन होय बहु बस सबहूं ४७ सकल जंतु करि
यह ब्यवहारू जोग वियोग भोग संसारू होनहार को मेटनहारा विधि सिर लिख्यो टरै
नहि टारा ४८ दोहा एहि विध जैं गवु धवल कंसहि अति सनमान पुनि आदर दै वहु ते वि- द्विल ८
ध वचन कहत रस षान ४९ सोरठा मेर मुसक धरि धीर वचन कहत वसुदेव अब मन
कंपित हिय पीर कर प्रसन्न मषकं जन कह ५० चोपई गति लज्जा हिय कठन कठोरा कंस
महा अधम स्यो न थोरा तेहि विस्वास हो तजे हि रीती हसि करि वचन कहत विपरीती ५१
नभवानी कछू विफल न जानू सहा सत्य इमि वे है वषानू तब भगिनी तै भै नहि तो ही तासु पु
त्र भय परजिय जोही ५२ अठमो गर्भ हनै इमि भाषा अष्टम कौन सु कि मि गने राषा उलटि
पलटि अष्टम सभ होई इमि संदेह करौ जिन कोई ५३ यां के उदर पुत्र जो होई तब हि गम आनि
धरौं सब सोई सुनि वसुदेव वचन सुषमाना कंस न कछु विसमय उर आना ५४ भगनी
वंध तै पाइ विरामं गए ऊ गेहि निज करि परनामं कंस प्रसंसा करि वहु वारा गह गम नेव बु

श्री भा
६७

देवउदारा ५५ भएउ प्रकृत काल जव भूपा भए देवकी सुअन अनूपा अैसो पुत्र उपजै जो अघ
र आई जो की महिमा कही न जाही ५६ दो[हा] अनुवत्सर कंन्या भई पुत्र भए सुभ आठ की
न्निमित्त पहिलो सुअन सकल प्रभा को ठाठ ५७ सोरठा काल रूप कह कंस ताहि पुत्र वैदेसं
हियौ शौरी बुध अवतंस तहां वचन अैसे सुनहु ५८ दोहा सो लीन्हेउ कंस कह तुरत जाइ
वसुदेव मन महि भएउ कलेस अति सदा सत्व जिन सेव ५९ चौपई साधुन कह अविर
जन हि कोई तए सम पुत्र विन जिमि होई सुत लालन सुख तिन हि लाहुं संतत जिन हरि
पद अवगाहु ६० कंस हनेउ सुत निर्भय जासू दुष्ट करै अकर्म सव आसू अति प्रिय पुत्र
देवकी न्हा सो ऊन हि कष्ट अचरज वड कीन्हा ६१ धीरजवंत जगत जे कोई तिनि कों सफल
सुलभ यह होई सत्य मों अति सुदृढ़ हि निहारी सौरी की समता हिय धारी ६२ कंस तुष्ट
चित हसि हे भूपा वोल्यो वचन अमोल अनूपा जाहु लेइ निज गेह कुमारा एहि तें भय न
हि काल मझारा ६३ आठमा गर्भ होइ जो तोरा मरन ताहि सौ निश्चै मोरा सौरी ता सुवचन ध
रि सीसा सुत लै गौ निज गेह महीसा ६४ तदपि हिय आनंद न भएऊ दुष्ट वचन विस्वास
न लहेंऊ परउपकार विचार विसारद निज हिय सोच करेउ तव नारद ६५ दोहा छेमा ग
हे जो कंस सठ तो भू भार न जाइ यह विचार गए कंस ढिग कहंत ताहि समुझाइ ६६ चौ
पई नंद आदि जे गोप अपारा वसहि वामपुर ते जे सुष भारा अरु वसुदेव वृष्णि कुल जे
ते आदि देवकी तियन समेते ६७ ए सव देव सरस ते जानु अपर न तें अपने उर आनु तुमहि

आहिजेतव हितकारी हनुजवंसछिति भारदुषारी ६८ तिनहि मारिवे केहित हेतू सुरअग
देसव जदुकुलकेतू एहि विधनारद करि सभुआना गए धाम विधिके सुषदाना ६९ सुनि
रिषिव वनकंस अकुलानौ जादवसकल देवकरि मानौ गर्भ देवकीके हरि आए प्रगटे
मोहि मरिहै करि हाए ७० देवकी अरु वसुदेव समेता गाहि डारयो पगनिगड निकेता जेजे
भएपुत्र भगिनीके मारन लग्यो पापमनु निजहीके ७१ सकसमहु कंस अयाना करन
लाग अघ विनहि प्रमाना आसुपोषक षलनरपमति मेदा मनमलीन अघतन हे वेदा
७२ सूरवउ धअसुरवहु भई जातमित्र तासवन जिदई तातमान भ्राता हित कारी हन
त आपने हाथ दुषारी ७३ हठि हनत अपने हाथ सठ अतिसुहृद यवंधुन छाडई
अपराध विनुदुषदेत सबकहु रारि जेह तेह मांडई ७४ तेहि समय सुध भई कंसक हुनि
ज जन्म पिछिलो जानियो मैकालनेमी असुर पूरव हन्यो हरिनिज पानियो ७५ ता
सवसन करेउविरोध महाक्रूर खल हे तु यह नहि उपजे हियवोध संसकार जेहि मंद
अति ७६ जदुभोजाधिक ईस उग्रसेन पद निगड धरि आपुन भएउ महीस भोग कियो
पितुराजसव ७७ दोहा एकविंसशुभ सोरठा तेईस दोहा जानु एक छंद अध्यायमंहि
शेष चोपई मानु ७८ यह संसार असार लषि ताहि त्यागि मनमूढ रामकृष्णपाभजु कंस
पद मिटै मोहतमगूढ ७९ इति श्रीभागवते महापुराणे दसमस्कंधे भाषानिवं
वंधे प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ दोहा ॥ कंसघात हित आपु हरि कषि देवकी गर्भ धर्यो

श्री·भा·
द·८

हि एरौ उदर तेहि ग्रप भयौ तेहि ग्रर्भ १ तव विरंच ग्रति हर्ष जुन करन लगे गुन गान एहि
दूसरे ग्रध्याय महि एतनी कथा वषान २ चौपई जइसनकिए उ विरोध वनाई इमि पी
छे मुनि कहा जु गाई सो ग्रव वरनत हैं नृपपाला श्री सुक ताहि जानि निज हाला ३ वक
वाणर प्रलंब महासठ तृर्णवर्त मुष्टिक ग्रतिरन हठ द्विविद ग्ररिष्ट पूतना हयासिर
धेनुक ग्रादि ग्रपर जे छिति धर ४ वान भौ जे जे भूप सरूपा ग्रपर दनुज नरवर दुषरू
पा महावली मागधते ग्रारी तिन ते मिल सव कंस कुवारी ५ जदुकुल कंदन करन
सो लागा ते भज गे वहु हिंसा विभागा कोउ पीडन कौसिल पुर गए ऊ कोउ कासीस
ग्रास गहि रहे ऊ ६ कुरु पांचाल स्वाल्व केकेसा कोउ विदर्भ पुर वसे उ नरेसा कोउ
विदेह पुर निषध निवासी कोउ कैकै पुर गो सुष वासी ७ तद पि न सुष कोउ ल
हि व्रजवासी एहि विधि फिरहि भरे दुष रासी महापापि दुष्ट पापी कंस होई तौ तै सुषी
पुर रहा न कोई ८ दोहा कोउक कंसहि मिल चले सेव निसाति हि रंक तव सौरी केत
न प्रपट मारे कंसन कंस ९ सोरठा जेहि ग्रनंत स्तुति गाव विष्णु सकल वल ग्रा
मित जेहि सो इप्रगट्यो जव ग्राइ सप्तम गर्भ जि देवकी १० चौपई श्री भगवान सक
ल घट वासी यादव त्रासित जान ग्रवनासी जदुकुल लं पाल सुरेसू निज माया को क
रे उनि देसू ११ हे कल्यानदे विघ्न विहरनी शीघ्र जाइ व्रजभू सुभ धरनी धनु धाम धनु
जुत वहु गोपा ग्रति छवि भरी निरषि ग्रघ लोपा १२ जो वसुदेव त्रिया सु ठिनी को नाम

रोहिनीप्रियपहीको गोकुलवसहि अपरकजंनारी कंसत्रासकरिमिसितदुषारी १३
देवकीउदरअनंतनिवास्‌ सोममधामसुभगसुभरास्‌ तोहितहोतैंगहिनूआनी
रोहिनीउदरराषसुषमानी १४ अंसभागकरिमैतोहिदामा कैहौप्रगट अखलसुष
धामा अंसभागप्रभुनिजसुषभाषा तासुअर्थसुनियैदमिराषा १५ एकअंससकरि
हरिजगहीसा अषिलअंडअध्यापकप्रभईसा अपवाअंसनामदमिजानू षट्‌अै
स्वर्यजुक्तप्रभमानू १६ सृष्टिकीउत्पतिजानैः संघारजानैः जीवआवनजानैः गवन
जानैः विद्याजानैः अविद्याजानैः तासौषट्‌गुनसंपन्नविष्नकहिजेहत्यर्थः १७ दो०
सोरीप्रियसुभदेवकीतासुगर्भमेजाइ तनयतासुकोसुभगमयकैहौंअतिसुषपा
इ १८ सोरठा नंदघरनघरजाइ नामजसोदाजासुकौ तनयातासुकहाइ तूंकारज
हितरूपधरु १९ चौपई तूजेनरतोहिनानाभांती नानावलउपहारसुहाती जोप
जिहिजेहिआसिषलागी सोतसफलपाइहवडभागी २० नामधामनवठामअनेका
कहिहैनरधरसहितविवेका नामभद्रकालीजयकरनी विष्नसक्तदुर्गादुषहरनी
२१ कुमुदाअपरचंडिकानामू सारदशिवाहानसवकामू क्षेमअरुकंन्यासुषदा
नी कात्यायिनमाधवजगजानी २२ नामरमापतिसक्तिसुषारी सवजगकौकैहै
सुषकारी तवविक्रमभिसितासुप्रताप्र कैहैसवजगविदितजुआप्र २३ गर्भाकर्ष
णतैंसवताही कहैहैसंकर्षणनरवाही लोकरमतेरामवषानी अतिवंलतैवलदे

श्रीभा०
१०६

वसुजानी २४ एहिविधअायसुसुनिप्रभुकेरी धरनिजसीसकपाद्रिगहेरी करेउप्र
दछनएहियदुकुलसाई गमनीतुरतसुवजमहिआई २५ दोहा गर्भदेवकीकोकरषिध
स्योरोहिनीकोष जोगनिद्रयाकरमेंकियहरिवानीसवपोष २६ चौपई अहोगर्भ
गलिगोकहुकैसे कहैसकलपुरजनसवअैसे तवभगवानभक्तअभयकारी अखिल
विस्वव्यापकअसुरारी २७ अंसभागकरिहरितेहिकाला प्रगटेशौरीहियनृपाला
पुरुषप्रसन्नधस्योचितजवही तरनतेजसवदुतिभईतवही २८ अनिदुर्धर्षदुरा
सदरूपा सकलभूतकहुलगेअनूपा जगमंगलमूरतिविख्याता अच्युतअंससलोक
सुषदाता २९ धस्योदेवकीहियमहसोई श्रीवसुदेवचित्तनिजजोई सकलभूतव्या
पकजगदीसा वसेदेवकीउदरमहीसा ३० भईअतसोभिततेहिकाला अदभुतरूप
अनूपविसाला जिमिप्राचीदिसिइंदुप्रकासी इमिसोभितसवसुषकीरासी ३१ दो०
सकलजगतमहिजेवसततासुनिवासअनूप नहिसोभितअतिदेवकीकारनसु
नहेभूप ३२ सोरठा रुकीकंसगृहमाहि अपरनकोऊदेषुतेहि प्रभाप्रगटतेहि
नाहि जिमिदीपकघटमहिवसे ३३ चौपई जिमिविद्याषलउरनहिलसई परिउप
काररहितगुननसई तिमिनहिसोभितभईतेहिकाला कंससदनमहिरूपविसाला
३४ तासुप्रभालषिकंसनरेसू कहिनलागिहियकरिअंदेसू मारनहारमोरिजेकोई
एहिकेउदरआवहरिसोई ३५ प्रथमहिप्रभानअसहमदेषा अंवप्रतिसेकछूरू

१A

पविसेषा अनिदीपनसवसदनप्रकासू यांकेहियहरिकीननिवासू ३६ तासुप्रभा
दीपतसवधामू सवविधमोरमरनपरनामूं मनविचारकरकंसमुरारी कहहकरनी
यमेमहिसुषकारी ३७ मारौयाहिअवहिएहिकाला याकेगर्भवस्योममकाला भय
भीतउरवहुतभयाई चिंताकरतभयाकंसराई ३८ पुनिकछुअपरविचारविचारे
उं भगिनीवधअनुचितहियधारेउ भ्रूनपापभारीयहनारी वधकीनैश्रीजससुष
हारी ३९ जद्यपिअरयपरायनप्रानी तद्यपिनिजजसकरैनहानी इमिकहपुनिकछु
अपरविचारू कहनलागनिजमनअनुसारू ४० दोहा महाक्रूरहतसीलनरजोसव
कौदुषदेइ सोजनजीवतहीमरयौअंततमोगतसेइ ४१ सोरठा जोलगिजीवेमरूढ तौ
लगिनरनिंदाकरहि महामोहिआरूढ मरेसहितभवसिंधुरूज ४२ चौपई एहिवि
धिकरविचारहियआनी त्यागैयाघोरभावदुषदानी भलेहिमंदमंदहिभलकरनी ध
मीरंकरंकहिसुषभरनी ४३ प्रभुमायाकरिप्रवलप्रतापू करिपरिहारघोरमतिआ
पू करैप्रसूतपरिछाहरिकी जन्मनहनौहियेमतितरकी ४४ पूरववैरमानिहियमा
ही संसकारवसमिटैसुनाही सोवतचलतअसनआसीना रिषीकेसचितामनलीना
४५ तनमयजगतलषैसवठामा भयजुतहियनहिलहैविस्रामा तहांआइविधुसे
भुसमेता नारदादिमुनिवुधिनिकेता ४६ निजनिजअनुगसहितसवआई प्रभअस्तु
तिसभकरमनलाई करीसत्यवानीनिजनाथा तेहिअनुकूलकहतजसगाथा ४७ वेठ

श्री॰भा॰
टी॰२०
10

हेप्रभुसंतसंकसतुम्हारा सबसाधनफलश्रुतिनिरधारा तीनकालतुमसत्यगोसांई
आदिमध्यअंतहुंश्रुतिगाई ४८ छंद श्रुतिगावहितिजलआदिपंचप्रपंचकारनतुम
विभौ तुमसकलघटिव्यापीसदातुमअंतअतिसेषतप्रभो ४९ कृतसत्यवानीश्रुति
वषानी तासुनियंतातुमसदा तुमसत्यरूपउदारसंततसरनअवआएसदा दोहा
५० तुमअषिलेश्वरमोसरिससरनगहिकिमिआइ जौकहाविअैसैकहियसुनहु
दसिसतभाइ ५१ सोरठा सकलईसतुमएक हमतवसंततसरनतव दंषियजगतअ
नेकतुमतैभिन्ननअहेप्रभु ५२ चौपई यहप्रपंचतरुआदिपुराणा अगजगमयस
रीरसबनाना सत्यएकतुमप्रकृतपरेसा होइविस्वतरुभवआहेसा ५३ मायाअवले
वनहैतासु सुषदुषउभयअहैफलजासु त्रिगुनमूलदिढतासुविख्याना धर्मादि
करसचारसुजाना ५४ पुनितेहपंचप्रकारअनूपा इंद्रीपंचग्यानमयरूपा बटूउर
मीएकसहजसुभाऊ जगतरूयहस्वरूपश्रुतिगाऊ ५५ जन्ममरनअरुछुधापिया
सा सोकमोहिषटूउर्मिविलासा सप्तधातुतरुत्वचाअनूपा साषाअष्टबडीसुषरूपा
५६ भूतपंचमनभूतअहंकारू जानहुतरुसाषाअतिभारू नवकोटितरुमाहिवि
राजा सोनवछिद्रसरीरसमाजा ५७ दसविधप्राणपत्रतेहिमाही सूषतछरततलेष
तकोउनाही इमिसंसेआनैउरकोऊ तहांकहतअैसेयहहोऊ ५८ दोहा प्रानअपा
नसमानअरुकहिउदानअरुव्यान नागकूर्मअरुकृकलपुनिदेवदत्तएकआन ५९

सोरठा इसमधनंजयजानें प्राणवायुइसविधसकल पंछी जुगलप्रमानु जीवईसंसं
ततहो ६० चौपई यहजगतंरूकारजविधनाना कारनतुमप्रभसकलनिधाना वि
धशिवविष्णरूपत्रयधारी संभवपालिनताहिसंघारी ६१ सबजगमहितुमअपरनको
ई एकमुष्यकारनतुमसोई अमितप्रकारलषियजगनाना एककहोकिमिताप्रमाना
६२ असेवचनकहेकोउप्रानी तहांकहतकारनअनुमानी तवमायामोहितमनजासू
नानालषिहिसुमतितेहिनासू ६३ जेसुमतीनरलहेविवेका तेसबमेंहैंवेहरिएका
तनयहेवकीकोसरव्याना अहोजुमैयहघटेनवाना ६४ इमिजोवचनकहेहेनाथा
तहांसुनोहरिश्रुतिपथगाथा स्वानअषंडरूपअवनासी सोईमूर्त्तिधारिहैंसुषरासी ६५
सुद्धसत्वमयतनसुषकारी अगजगछेमहेतुवपुधारी षलनिग्रहकारनवहुवारा ध
रतरूपतुमअमितप्रकारा ६६ इतनेमात्रनहेतुगोसांई प्रगटहोहुतुमजनसुषदाई
भक्तमुक्तिदेवेकोहेतू प्रगटहोहुहेक्रपानिकेतू ६७ दोहा तवपदपंकजपोतकरिको
ऊएकपरमप्रवीन भवनिधकरिगोवछपदसहजमुक्तिपदलीन ६८ सोरठा भवनि
धघोरदुरंत महाभयंकरविषमकोउ सहिजहितरिगेसंत सकलभूतमहसुहृदजे
६९ चौपई एवंसंतभएजेकोई भवनिधउतरपारिगेसोई अवकेहिविधतरिहैंसव
लोगा इमिकहियेजोवचनप्रयोगा ७० तहांसुनहुहेकरुणाकरा तवपदपोतसुदृढ
वजवंरा तेताहिपारगएधरताही गहेपारसोअंवसिलहाही ७१ जेकोउहेजगमहप्रा

श्री·भा
१८

नौ औरउपायतरनजियमानी तहांसुनियहेवारजलोचन हरितुमएकअमितभवमोच
न ७२ तुमहिछाडमतिअपरगहाही मानहिमुक्तिआपमनमाही तवपदभक्तिविहीनवि
मूढा नहिविसुधमतिमोहिअरूढा ७३ वहुतजन्मकरिकष्टगोसाई लहैजन्मसत
कुलपुनिजाई श्रुतितपजुततनलहिपुनिसोपी तवसारनपदसुमतिनिरोपी ७४ प
रहिअधोगतिअवसअभागे तजितवपाइअनतअनुरागे तौहिचरणभजेनहिको
ई तैमायाकरिमोहितहोई ७५ दोहा सतकुलतेहूंभ्रष्टनरदहैअधोगतिजानु हे
माधवतवभक्तिकहूकवहूंभ्रंससनमानु ७६ चौपई तवपदकंजमधुपमनजासू
वसैनिरंतरसाहिजसुपासू तिनकहुविघननव्यापैकवहूं तवरछतगतिभयहिस
सवहूं ७७ विघनअनेकपर्सिसिरदैपाऊ संतसदाविचरैसवठाऊ निजसंतनसुष
हेतुगोसाई धरतसत्ववपुयुगप्रतिआई ७८ सोतनधारनकौसवकाला हेतकर्म
फलसुभगविसाला श्रुतिअनुसारयोगतपदाना करिसमाधवहुक्रियाविधाना
७९ जेहिजेहिकालजाहिफलहेतू तुमकहहूजैकृपानिकेतू तासुमनोरथप्रभुसव
जानी देतकृपाकरिसुषनिधिदानी ८० जौकोउकहैज्ञानआधीना मुक्तअहैइमि
कहैप्रवीना भक्तिकरेकहकारजआही उत्तरतासुदेतअवताही ८१ दोहा अहोईस
यहसवतनजौनप्रगटजगहोत तौविसष्टसुभज्ञानप्रभुकैसेहोतउदोत ८२ चौपई
तौअज्ञानमिटतनहिकवहूं वेदउपायकरतयचिजवहूं गुणअवछिन्नप्रकासगो

11A

साई तासु करत अनुमान वेनाई ८३ नहि सख्यात लषित सव कोई साक्षी पूरन श्रुति
कहि जोई वुध्यादिक जड सकल पसारा होत प्रकास जासु आधारा ८४ तिनते विषै
जान सव कोई यह अनुमान वेद मति जोई सुध सत्व वपु तव असुरारी सेवै भली भांति
सुषकारी ८५ भजत होइ निर्मल मन जवही सो पर तछ लषै जन तवही मंन वचक
रि षोजत सव ताही सो सव को साषी वह आही ८६ नाम रूप कह जात न तासू जन्म क
र्म पुनि अगनित जासू जो जग अहै उपासक प्रानी लहै रूप तव सव सुषमानी ८७ है
कीर्ति निनि साहि वस करई ते भव सागर मैं वहुरि न परई रहै न तासु ताप भव पीरा स
हज पवित्र होइ मति धीरा ८८ दोहा सुनत गुण तव नाम जस मंगल रूप निधान पर
कहि प्रेरत गाउ गुनत तिन नहि न भव दुष जानु ८९ सोरठा तव पद पंकज लीन अहै चित्त
जा जीव को तव कह सहज प्रवीन रोष दोष भव रुज न नही ९० चौपई पुनि विधि विनय
करत कर जोरी कृपासिंधु विनती सुनि मोरी सो हरि जन्म मात्र जग तोरा न स्पर्शे सक
ल भूभार कठोरा ९१ अति कल्यान रूप पद कंजा तासु अंक अंकित भू पुंजा सोभा पुंज ल
सी छिति आजू सुर पुर प्रभा हीन वहु साजू ९२ तव आगमन हेतु हे ईसा जग प्रमोद मू
रति जनु दीसा जे तव जन छिति नाक निवासी कृपा करी तिन पे सुष रासी ९३ जिमि
को उ अपराध रेव नरदेही तिमि मम तन कहु हे रे राही अह ह नाथ अैसे किमि कहहू ह
रि पर व्रह्म नाथ तुम अहहू ९४ जन्म रहित ईसन के ईसा जन्म हेतु इमि कहत मनीसा

श्री भा
द१२
12

क्रीडा विनु कारन नहि कोई अपर तर्क ना घटै न सोई ९५ दोहा जन्म मरन एहि जीव
कहु जद्यपि जगत लखाइ तदपि सुध सरूप कह जन्म हानि दिग जाइ ९६ सोरठा त
व माया वस नाथ जन्म मरन लहि जीव जग सुनियत है स्रुति गाथ सदा सुध यह जी
व प्रभु ९७ चौपई तौ नुम कहकि निज जन्म प्रसंगा एक विशोर मात्र को अंगा मुनि गन
रिषि सुर सिध समेता हम सिगरे मिल ब्रह्मा निकेता प्रथम हि विनय कीन्ह वहु भां
ती सोइ कुहेतु अपर नहि ख्याती पुनि विधि निज कारज प्रभु पासा कहं म विनय जु
त वचन विलासा ९९ कछ्प हय नरहरि अरु मीना विप्र वाराह हं सव प्रकीना द
वै वोध रिषिम प्रथु कपिल मनीसा राम परसनि हम सुनि धनु जोगीसा १०० पुनि भूपाल
व्रेस सुर माही धर अवतार जहां जस चाही जिमि त्रिभुवन रक्षा करि मोही राखेउ सं
हा काल जिय जोहा तिमि रक्षा अव करहु मुरारी हरि भूभार दोष दुष्विदारी वार वार
प्रभु पद धरि सीसा पाहि पाहि सुर हे जगदीसा १०२ छंद सुर पाहि पाहि कृपालु जदु
वर विरद जन पालक विभो एहि भांत कहि सुरदेव की प्रतिवचन कह तव ना प्रभो ल
हे अंवतव उरु परम पूरन ईस अव आए हरी मही भार हरि कल्यान कर मम होय
प्रभुं परसन हरी १०४ अव मस्यौ चाहत कंस पांवर क्रूर खल कपटी परो तेहि कं
स ते भय परहरौ सुख सिंधु हियसा हस धरो १०५ नव तनय श्रीपति आयु वसुध
रि पालि है जदुकुल यहा निज गिरा सत्य प्रमौहि तवेद्रु वलि तहरि का रिहै तहा १०६

12A

हा ॥ एहि विध सुरगण विधि सहित अस्तुति करि बहु भाइ ॥ गए नै निज निज गेहि सब क्षपा
सो बहु सुष पाइ ॥ २७ ॥ सुभग चारि दस दोहरा छंद युगल परमान ॥ कहे अपर नव सोरठा
शष चौपई जानु ॥ २८ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा निबंधे ब्रह्म स्तुति व स्वा २
रननं नाम द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥ दोहा ॥ निज सरूप धरि हरि स्वयं प्रगटे देवकी धाम अक
नि गिरा वसुदेव की गोकुल लै है स्याम ॥ १ ॥ एहि तिसरे अध्याय महि एतनी कथा पवित्र
मुनि कहिहैं भूपाल सो कृष्ण चरित्र विचित्र ॥ २ ॥ चौपई ॥ करि विनती सुर गेह सिधाए
व्रज तेहि समय सकल छवि छाए सब गुन सहित काल अति सोहन हेत रूप जब प्रगटे म अति
न मोहन ३ नषत रोहिणी सुभग सुहावन सो तस कल तारा ग्रह पावन दस दिस प्रसन्न
तेहि काला अमल अकास नषत गण माला ४ मंगल मै छिति प्रजा सुषारी पुर अरु ग्रा
म नगर नर नारी व्रज आकार अरु शिषर सुदाम रहे सौ छाय मंगल मय धाम ५ सरित प्र
२ न सैर भ जल सुष रासी सरनै कंज अति प्रभा विलासी द्विज अलि रकुल रव सुभग सुह
ए वन अति सुभग सुवन महु छाए ६ त्रिविध पवन सेतन सुषदाई सो तन अनल द्विजही
पति पाई भए प्रसन्न साधु सब लोगू एक कंस हिय भा अति सोगू ७ साध संत सब प्रस
न्न भए ताही देव मुनि सिध जन हरषाई जब हरि लीन जन्म हे भूपा नभ इंदुभि बाजी बहु र
रूपा ८ छंद नभ दुंदुभी बाजी विपुल गंधर्व किंनर गावही सब सिध चारन करत अस्तु
ति उर्वसी मिलि नाचही ९ अंसुमन सुर सुमन वर षहि विविध सुष उपजावही तव गन
ति

श्री भा
द·१३
13

मंदमंदजुमेघधुनसुनिसिंधुमंदसुगाजही १० अतिसघनतमनिसअरधजवतेहि
समयजनसुषकरनकौ प्रगटअनूपदेवकीहियईसधरभयहरनकौ ११ जिमिहि
साप्राचीइंदुपूरनउभयसुषजगभरनकौ तेहिसमयलषिवसुदेववालकभक्तिज
नभयहरनकौं १२ सोरठा जलजनयनभुजचारि शंखचक्रकरिकंजधर गदाद्नु
जकुलहारि उरश्रीरेषालसतसुभ १३ सजलजलदवपुस्याम कंठलसतिमणिसुभग
अतिपीतवसनसुषधाम अमितदामिनीमंददुति १४ चौपई दिव्यकिरीटसीसपरसो
७३ व हत जटितदिव्यमणिमुनिमनमोहत कुंडिलश्रवनअधिकंधामा निरषिताहिलज्जित
वहुकामा १५ अपरअभूषणदिव्यसुहाए चिकनचिकुसुरमिछविछाए कटिकिंक
ननूपररविकारी कंकनवलयगिरामनहारी १६ अंगअंगप्रतिअमितअनंगा तीनलो
कछविकिवदुतिभंगा लषिअदुतवालकतेहिकाला उमग्यौसुषवसुदेवनिहाला १७
पा सुरवालकहरिवालकरूपा कौनहिनिरषमोहहेभूपा विसमयमनविगसितभएलो
चन निरषेहरिवालकभयमोचन १८ शौरीअधिकअनंदउमाहूं पाएउअतुलभलाभवं
उलाहूं हरषसहितउनिकरअसनाना द्विजकहंअयुतधेनुकियदाना १९ दोहा पुनि
सुतकीअस्तुतिकरीपरमप्रकृबहियधारि सुधवुद्धिकरिजोरिजुगप्रनतकरीसुष।
कारि २० सोरठा निजतनदुतिहेभूप स्फतीग्रहसवजोतिमय लषिप्रभुसुतरूप भयग व
तिकैवसुदेवकह २१ चौपई प्रकृषपुराणप्रकृतपरईसा सततचितअनंदहेजगदीसा

13A जान्यौमैतुमअंतरजामी जेनहितप्रगटभएहेस्वामी २२ वुधअहहिजेतनकहहेतू तुमह
इहाहिकपानिकेतू अहौदेवकीसुतमैजायो किमिअस्तुतितुमएहिविधगायो २३ जोक
हाविअैसेहरिकवहूं नहोनाथविनतीएकसुनहूं निजमायाकरिप्रगटगोसाई रचेउ
प्रपंचविविचित्रवनाई २४ तामहितुनिप्रवेसप्रभुकीना करिचेतनसुरगणसुषदीना
सदाकालसवतेतुमदूरी स्रुतिकहसवघटसोइरहपूरी २५ दोहा जद्यपिसवतेहोपरे
तीनकालतुमईस तद्यपिलगतप्रवेसइमिकहतवेदमुनिईस २६ चौपई जिमिमहद
हिकसत्यगोसाई जिमतुमप्रगटप्रकासलषाई तेविकारषोडसमिलस्वामी जगरचा
नाकियअंतरजामा २७ भिन्नभिन्नदेरहेगोसाई नहिसमर्थभाकारजकाई तवप्रवेस
तामंहिप्रभकीन्हा भएउअंडसुरगणसुषदीन्हा २८ अनुप्रवेसइवमुनिस्रुतिकहई
पूर्वविद्यमानसीअहई अैसेअवदेवकिसुतअहहूं गततत्वअकथसकलश्रुतिक
हहूं २९ कारनकारजसमदोउरूपा इमिवरणतुममोरसरूपा वुधअहहिमोहगहेन
कैसेजोकहाविकहियेहरिअैसे ३० विषयनकेसरूपकोग्याना होतवुधकरिरूपा
निधाना विषयग्रहनइंद्रिनतेहोई अपरसमर्थइन्हेनहिकोई ३१ दोहा विषयनक
रिसंयुतहरीतिनसंग्रहननहोत वाहरभीतरतुमवहीसर्वरूपउहोत ३२ सोरठा सर्व
आतमानाथ सवमहपुनिसवकेपरे कोकहिसकजदुनाथ यातेविषयवमिहस्तुअ ३३
चौपई जिमिइंद्रीनिजविषयसरूपा जानहिअपरनभोगअनूपा जिमियहनयनरूप

श्री॰भा॰
२२५
14

कहुजानै नहिकहूतिकस्वारपहिचानै ३४ तैसेहिवुधग्राहिकहिंसवहूं तुमहिग्रह
नकरिसकैनकवहूं देहादिकगुनकरजगजेतो आतमविनुसवसत्यनतेतो ३५ आ
तमविनासत्यकहजोई जानियमहाअवुधनरसोई देहादिकजेसकलपसारा
वुधजनकहतनिपटअसारा ३६ ताहिसत्यभाखैजेकोई वचनविलासमात्रहै
सोई जैसेअनित्यदेहजगजानी मानैवस्तुमूढअभिमानी ३७ अंतभस्मविष्टा
कृमहोई देहसत्यतिहुंकालनकोई तुमतेजगसंभवथितिहोई अंतहोइलयतें
हंसवसोई ३८ दोहा अगुनअनीहअमानप्रभुअविकारीसुखकंद तुमतेसवचर
अचरजगसुनियतकरुणाकंद ३९ सोरठा अविकारीकिमिहोइ करताकरितुम
गनकिय इमिसंसयकरिकोइ तासनकहतवुजाइअव ४० चौपई तुमपरब्रह्म
ईसअविनासी सकलघटैएहितेसुखरासी तदापिविरुद्धसरसयहवाता ताहां
कहतसुनियैहेताता ४१ सुभटसैनजुरजुद्धकराही लहतभूपजयजसजगमाही
जौनयपरत्यकरतकरतूती भलाअरुमंदजहांजसभूती ४२ सोसवनृपहिसोहिज
गजैसे गुनकृततुमहिकहतसवतैसे जिमिगुनत्रयकरित्रयअवतारा करतक
हतपालतसंसारा ४३ निमिममग्रहजगरछनहेतू प्रगटेतुमकृपानिकेतू निज ह
जनपालकहेअघलेसा कृपासिंधुअरतनयहवेसा ४४ लोकपालवेकैहितेना
या प्रगटेमैलषिभएउसनाथा असुरकरालअमितदुखदाता कोटिकनृपजू

पविख्याता ४५ पृथवीभारहरनकेहेतू प्रगटभएऊतुमभक्तपानिकेतू भूपञ्चजेभूपर
अतिभारा वहुहिसविकिरअनीकअपारा ४६ अवतुमसकलकरवसंघारा मैंअपने
मनयहनिरधारा तदपिनाथतुमहीनरपाला साविधानरहियोसवकाला ४७ छंद
रहियोसवकालापरमकृपालाजिनविश्वासकरोकवहूं यहकंसअपावनममअसु
तपावनहन्योमहादुषप्रदअजहूं ४८ हरितवअवतारासुनतगवारा धरिकरिअस
आवैअवहूं तेहिभत्यदुषारीजाइपुकारी तौअसिमेजनसहैसवहूं ४९ सोरठा इमिश्रीव
सुदेव निरषवालछविचुपरहे ताहीछनननरदेव निरषदेवकीऊसगुन ५० चौपई
महापुरुषलछनसवदेषी वालकअरभुतरूपविसेषी आयुधसुभगचारुचहुंहाथा नि
रषदेवकीहृदयसनाथा ५१ कामकोटिछविस्यामसरीरा नीलकंजवारिदगंभीरा
मुषछविकोटिइंदुदुतिहीना लोचनसरदकंजछविछीना ५२ भकुटीकुटिलतिलक
गोरोचन निरषहोइत्रयतापविमोचन मुकरधामछविकामनिहारी थकितरहे
चितपलकिनटारी ५३ कंवुकंठअतिचिवुकसुहावन जलजमालअतिछविमनभा
वन विथकनविकुरसुरभिघुंघुरारे नासाललितकीरछविहारे ५४ उरमणिहारपद
ककीसोभा विप्रचरणदेषतमनलोभा त्रिवलीललितउदरछविधामा नाभीवरगं
भीरललामा ५५ नवराजीवअरुणमदुरचनां पदजरुचिरमषशशिदुतिहरना ल
लितअंककुकुंलसादकचारी नूपुरचारुमधुररवकारी ५६ दोहा देषिरूपअद्भुतसुअ

श्री·भा·
६·२५
15

५

न जान्यौ पुरुष पुराण कंस भीत भय देवकी करन लगी गुन गान ५७ सोरठा कहत
जाहि इमि देवै पुरुष आदि अव्यक्त प्रभु षोजत जेहि कर वेद सुरंग निविध तें आदि स
व ५८ चौपई ब्रह्म जोति मय निर्गुन रूपा निर्विकार सब काल अनूपा बुध आहि सब घ
ट गति ईहा निर्विशेष गावत सत जीहा ५९ अति आनंद अमल अविनासी अखिल लो
क तुम एक प्रकासी जग चर अचर भए सब नासू महाभूत मह प्रवसे उ आसू ६० सो
उ तव रूप छम रूप है रहेउ पुनि अव्यक्त मांझ चलि गएउ सो सब तुमरे मोज़ समाना
आप एक अवशेष निदाना ६१ पुनि असेष संज्ञा श्रुति कहई जहँ तैं जग संभव सब
हई सो यह अमल रूप मैं देषा एहि तैं अपर न अहै विसेषा ६२ प्रलय अवधि जे काल
गोसांई यह नव लीला स्रुति सब गाई उपजे न सै सोइ बहु बारा विधतें आदि सकल सं
सारा ६३ दोहा लव निमेष परमान जुग कल्प कियौ परमान विध जीवै निज वरष करि
सेवत सत जग जान ६४ सोरठा पुरुष प्रधान के ईस जग प्रेरक तुम नाथ एक तुम तैं अ
पर अनीस छेम धाम हरि सरन तुअ ६५ चौपई काल व्याल डर तैं यह प्रानी भज्यौ लोक
सब नहिं दुष हानी दैव योग तैं तव पद कंजा पाइ लह्यो सुष भव भय गंजा ६६ पुनि एहि
देषि मृत्यु भज जाई आहि पुरुष हे जन सुषदाई यह षल कंस महा दुषदायक पाहि
नाथ तुम जन सुषदायक ६७ ध्यान धाम यह रूप गोसाई अज गिरीस संबोजे मन लाई
शनकादिक मुनि करै विचारा नारद मुनि अरु दछ कुमारा ६८ मम लोचन गोचर य

हरूपा चर्मविस्युममनहिं अनुरूपा हेमधुहा यहकंसकठोरा मोतेंसुनैजन्मजनितोरा
हूई मैभयभीतहोतहैभारी तुम्हरेहेतुपाइअसुरारी. धिर्यनाधरे धीरनहिंमोरी कंसा
हिंडरौहेतुएकतोरी ७० यहतवनाथअलौकिकरूपा शंषचक्रधरपरमअनूपा उप
संघारकरियजदुनाथा दीनजानिमोहिकिएउसनाथा ७१ दोहा यहसरूपमैंसुअन
तवछितिजसप्रगटअनूप उपसंघारउकहहुउ किमदेषहुअद्भुतरूप ७२ सोरठा जो
करताविदमिवेन कहहुउनाथकरताउनेन सुनउसंतसुषदैन मोरवचनयहविनयजुत
७३ चौपई प्रलयअंतयहजगसमुदाई धरहुसकलनिजहियसुषपाई पुरुषपुरान
ईसभगवंता सोममबालकभएअनेता ७४ कारनकरणब्रह्मजगदीसा धरयोगर्भमैं
केहिंविधिईसा नहिसंभवयेजगतयहबाता हैउपहासमोरहेताता ७५ योतेउपसंह
रउगोसाई रूपअलौकिंजनसुषदाई देवकिअस्तुतिकरीमनलाई हर्षषंवतहोअत
सुषपाई ७६ मातुवचनसुनकमलापाला रूपहेतुकहवचनरसाला मनस्वयंभूमह
तुमहेमाता नामप्रश्निनवजगविख्याता ७७ तवपतिस्वरवसुतपानामू अतिसर्वज्ञप्रे
मरसधामू विधिसंतानुमकहजवदीन्हा हेपतितुमनिजासिरगहिलीना ७८ प्रजाक
रउविधजवइमिभाषा सोतुमहृदयमांउधरराषा इंद्रीग्रामरोकवहुवाती तपकीन्हेउ
निजहृदयसुहाती ७९ दोहा आतपहिमिवरषाअनिलधूपछाहरूतुधर्म सहेसक
लतुमवहुविधंएकचित्तमनकर्म ८० चौपई कछूकदिवसकरिवारिअहारा संवतस

श्री भा.
१२६

16

सहसदिव्यएहिरीती संवतगएउभै मनप्रीती ८२ मोतेचाहकामनातोही करयोउग्रतपधर

हियमोही अपार

हससमीरअधारा कबहुहिमगिरिपत्रपुनिषाए सोउपुनित्यागिध्यानमनलाए ८२ एहि
विधकिएउद्दुसहतपभारी दिव्यवरषबहुविधसुषकारी वाहरतेतपअरुभक्तसमेता वि
मलभएउतवहृदयनिकेता ८३ अतिप्रसन्नतवभामनमोरा देषभक्तितपसाहसतोरा
तवमैदहसरूपसोजाई दर्शनदिएउतोहिसुषपाई ८४ मांगुमांगुवरमैकहिजवही
मोहिसरससुतमांगेउतवही लौकिकसुषतुमएकनजाना रहितयुक्तितामहिरुचिमा ना
ना ८५ मैयावससुधरहीनतोही यातेसुतनजाचेउमोही मोहदेषिभुजचतुरविसाला
सै मोहिहोऊंछिनतिहततकाला ८६ दोहा मोहिसरसुतपाइवरतुअमनअतिआनंद मै
चलिगोनिजधामतवतुमभोगेसुषकंद ८७ सोरठा ग्रामभोगवहुभाय भोगेतुमअति
सयवहुतमैअपनेचितचाय कौनआहममसरसजग ८८ चौपई गुणउदारतासील
सुभाऊ सोसमअपरलषानहिकाऊ तवमैभयोआइसुततोरा प्रश्निगर्भसंत्ताभईमोरा
८९ पुनिअदितीतुमकस्यपनारी तववामनसुतनवहितकारी अवतिसरेतवग्रहमाहि
आई सोइवपुतेप्रगटेयोसुषदाई ९० मानुषिरामममषानहोई होतिनपाछिलभवसुध
तोही तुमप्रसन्नजाचेभगवंता कहौतासुभवकिमिनहिअंता ९१ सुनेउअववैममवचनअ
नूपा तुमकहउभयअहैसुषरूपा ब्रह्मभावकैसुतहिनप्रीती भजहिमोहिसंततसुषरी
ती ९२ अवसपर्मगतिविनहिप्रियासा पैहौतुमहोऊअनयासा कामरूपहोभजभग
वंता निश्चयपायहोपसवअंता ९३ दोहा हरिअसेसुभवचनकहमौनगहीहेभूप दे

16A

बनहीपितुमातुकेह्वि भुजभएहरिरूप ८४ सोरठा ह्लासकहेसुभवेन प्रथमहिश्री
वसुदेवप्रति औभयतैनाहिचैन तौगोकलधरआउंमोहि ८५ चौपई जबवसुदेवंव
चनकहभएऊ नंदघरनिकंन्यासुभलहेऊ अजाआइजनमीतेहिकाला प्रभुआयसु
सिरधरिप्रतिपाला ८६ रववारेमनगतविसाला होइस्त्रिपलसयनसुषमाला सुघरक
पाट संषलाभारी आयसकीलजरेकलतारी ८७ पिहितरहेसोखुल्हगएसारे लेसुत
जबवसुदेवंपधारे जिमिरविदेषभजैतमरासी इमिसवषुलेद्वारसुधनासी ८८ गर्जे
मेहजलधरतेहिकाला वरषहजलअतिसुषहरसाला देषिअहीसमेघजलधारा निज
फनप्रभुतनवारिनिवारा ८९ सुरपतिवारवारवहुवारी वरष्योजवचहुदिसासुवारी
ताछनभानुसुताअतिवाढी जलगंभीरवेगअतिगाढी ९० भवरभयेकरभयोअपारा
अतिउतंगवीचीभयकारा दुस्तरनदीभयेकरिभारी मगहीनोप्रभुगमननिहारी छंद
मगदियौतुरतहतरनततनया जानिहरिचितवायके जिमिसिंधुक्षीरसुवेसमनिकोद
यौमगसुषपाइके ९२ तवनंदग्रहवसुदेवगोलषिगोपसोवतजाइकै निजसुतहिजा
सोहासयनधरिकियगमनकंन्याचायके ९३ निजगेहश्रीवसुदेवगेजवएंककंन्या
सोहनी धारदई निजतियसेनऊपरहारिकाजगमोहिनी ९४ पुनिनिगडनिजप
गडारवेठेहृतेजिमिपहिलेतहां तवलगेसकलकपाटतारेगएषुलजेजेतहां ९५ दो
हा नंदघरनितवतोहिछिनइमिजान्योमनमाहि कछुप्रसूतमारेभईसंतासुधकछू

श्री भा
६:१७
17

नांहि ॥१६॥ सोरठा ॥ अमित भई तव पीर निद्रा वस हत तेह बुध मंत्र सुध कछू रही न वीर या
तै पशु मति नहि लख्यो ॥१७॥ हरि मांया के मांहि भूल्यो नाहिन जगत को परसै तिन क
हु नाहि राम कृपा जो परि रही ॥१८॥ दोहा तेरह सुंदर सोरठा छंद पांच सुभ जानु सु
भई ग्यारहि दोहरा सोष चौपई मानु ॥१९॥ इति श्री भागवते महापुराणे नवमस्कंधे भाषा
निबंधे सजन्म वरननो नाम त्रितीयोध्याय ॥३॥ दोहा सुनत बंदिका वचन खल चित
अति सै भय पाइ सचिव दुष्टि कर मंत्र सठ बालक वधिहि वनाइ ॥१॥ सहसैक पुन
हि वसनि निसि करि है वहु अपकार एहि चौथे अध्याय महि एतनी कथा प्रकार ॥२॥ चौपई
श्री शुक कहत सुनहु नरराई कृष्ण कथा सुनि अघ न रहाई अंतह पुरु वाहर सव
द्वारू जटित कपाट सकल करतारू ॥३॥ जिमि पहिले सव जटित कपाटा तैसे ई सक
ल कंस ग्रह ठाटा नाछिन भई वाल धुनि भूपा अकनि जगे किंकर सुषरूपा ॥४॥ तुरत
जाइ निज नृपसन भाषे समाचार कछु गोपन राषे अष्टम गर्भ कहा जिन ताही ॥ उ:
षित चित्त षोजे निज जाही ॥५॥ सुनत सेज नै उठे उतुरंता अहो काल अह है मम अंता
सीघ्र प्रसूतिका ग्रह चलि गएऊ गिरत परत कछु सुधन हि रहेऊ ॥६॥ देषि भ्रात भगिनी
अकुलानी करुणा युक्त कहत भई वानी हे कल्याण रूप मम भ्रातू तव ग्रन सुजस
जगत विख्यातू ॥७॥ दोहा कंन्या पुनि भगिनी सुता नहि यह वध के योग वहु सिसु पा
वक के सरस मारे उम धा प्रयोग ॥८॥ सोरठा है वी गति तै वीर मारे वालक तुम वहु त

अवमनकरिनुमधीर. देहुपुत्रिकाएकमोहि ९ चौपई लघुभगिनीतवदीनदुषारी पुत्र
सोकजुतदुषअतिभारी यहकंन्यामोकहप्रभदेहू पंछिलोप्रभाजुजसजगलेहू १० इहि
विधदीनवचनवहुभाषी हियेलगाइसुतावहुराषी तेहिउर पाइजोरकरिमूढा वैंचि
लेइविलमइआरूढा ११ भगिनीसुतापकरकरिकंजा चरणफिराइशिलावरगंजा सु
हृदयसनेहतोरततकाला करेउकंरमअतिदुष्टिकराला १२ सोकंन्याताहीजोतिहकाला
धर्योदिव्यरूपजिहिपरमविसाला सोदेवीतिहकरतैछूटी गईगगनजनुदेववधूटी
१३ हरिअनुजाभुजअष्टसुहावन धरेदिव्यभूषनअतिपावन दिव्यवसनस्रगसोरभ
अंगा धरेचर्मअसआहिनिषंगा १४ दोहा वज्रशंखधनुसूल धरि गईगगनपयरूढ
चारनकिंनरसिद्धिमुनिकहतगिरासवगूढ १५ चौपई सुरनकरीअस्तुतिवहुवारा दि
एउविविधविधउनिउपहारा तवकंन्यावोलीहरषाई कंसश्रवणवानीदुषदाई १६ अ
रेमंदषलकूरअभागी हनेउमोहिकहुकाफललागी मारनहारतोरजगमाही जन्मैया
गिरामोघयहनाही १७ जहांकहुसोहेयहजानू रूपनवषावैयाहनेअयानू असेकह
देवीवहमाया छितिपरवहुननामथलपाया १८ सुनिदेवीकीगिराकठोरा भयोकंस
हियत्रासनथोरा. विसमयचिन्तसाहसजियआनी निगडधामतेहोऊजनआनी १९
निगडकाटिकरिजोरिवहोरी श्रीवसुदेवकहतनिहोरी हेभगिनीहेभामिसुसीला ह
नुजकरममैंकरेउकुसीला २० मारेतवसुतपरमअनूपा तिमिनिजतनयपाइअहरूपा

श्रीभा
१२९
18

नीतधर्ममैसर्वविसरायौ कुजसकलंकमैजगतलगायौ २१ तजसवस्रातसनेहभलाई
जौहौकौनलागदुषदाई जिहिद्विजवंधदोषकरैजिमिकोई जाइगैहेअघनिश्चैसोई
२२ दोहा मैषलजीवतहोमरयोकरयोकरमयहघोर असुरअसत्यलागेकहनमेंअति
सैमतिघोर २३ चौपई जासुवचनकरिमैविस्वासा भगिनीकेसुतवहुतविनासा अ
वहंपतित्यागहुसुतसोका निजक्रतजीवलहैसवलोका २४ सदाकालसवकोउए
कठामा मिलैसुविछुरैपुनिप्रनामा हेवाधीनसदायहप्रानी इतिउतफिरैलहैदुषषा
पुत नी २५ उपजदेहविनसैफिरैआस छितिविकारजिमिघटनासू सदाएकरसछितिस
वकाला प्रुरुषसदातिमिवुद्धविसाला २६ घटपटनैसैरहैछितिजैसै देहनसैआतंम
लषुतैसै एविधनहिसमुझातिनताना तनमहआतमसमनदाना २७ तिनकहसंसति
छुटैनकवहुं देहगेहसुतसुषदुषसवहूं यौतैहैकल्यानसुभागी हन्यौसुअननतवनिज
पर५ हितलागी २८ दोहा तासुसोचतुमजिनिकरौजीवसदाहौंतत्र निजक्रतभोगैअवसयह
फिरैरहंटजिमितंत्र २९ सोरठा जौयहमरैनजीव तौगुरूवधनिजदोषकिमि कहैवे
सीव दजगतांहि जीवमात्रवडुदोषजग ३० चौपई इमिसंसयजोकरिकोउप्रानी नाहिकह
तउत्तरसनमानी जिनहिदेहअहमितिअतिभारी नहिआतमजिनएकविचारी ३१ मैं
मारयौयहहनेउंजुमोही हंताहननभावजिनजाही वाधकवाध्यहोतहैनाहीं उपजासु
मगत्याननहिजाही तवतैवंधनहैसवसोचा परगुनदोषजासुमनराचा एहिविध

18A

वचनबहुतककहमृपा सुषउपजाइसमयअनुरूपा ३३ छमहुदुष्टताममअघताता
सु हरिजनसहाहीनदुषदाता इमिवसुदेवरनपराअकुलाई नयनसलिलसोंचोपगिजा
ई ३४ एहिविधनिजसनेहप्रगटाई निगडकाटिनिजकरसिरनाई कन्यागिरासत्यस
वजानी एहितेइनकोंअतिसनमानी ३५ दोहा भ्रातभगिनीसुनविनयजुततजैोदेवकीरो
स हसवोल्योवसुदेवतव वचनसत्यसहरोस ३६ सोरठा महाभागहेकंस कह्योवच
नसोइसत्यसव नहियामहिकछुसंस जोवलहैनिजकर्मकृत ३७ चौपई यहअस्या
नमूलसंसारा पुनिअहिमितिएहिवडेअपारा पुनिपरअपरहोइतेहिहेतू सोकहर्ष
भयदेषनिकेतू ३८ लोभमोहिमदवैदैनघोरा तेहिमिलकरहिकर्मअतिघोरा लरहि
परस्परसुधसवनासी भिन्नदृष्टितेहलषिअवनासी ३९ एहिविधकहवसुदेवसुजा
ना सुनितवकंसवहुतसुषमाना अर्घपसुमांगेउअभयकरिजोरी गयोकंसनिजभवन
वहोरी ४० सोनिसिगएकंसअभिमानी सचिवबुलाइकहतसुभवानी कहेउयोगमा
यामोहिभाई तवरिपुप्रगटभयोजगआई ४१ दोहा सुनिनिजभरताकेवचनवोलेअसु
क्रोध ररिपुवैन अतिअमर्षकरिसुरनिसों जिन्हैनकछूचितचैन ४२ सोरठा जोअसोय
हवात तहांसुनोयहमंत्रफल कहेंसत्यहमतात जोतुमरेचितमेंगहौ ४३ चौपई पुर
षरुग्रामजहांलगिजेते वालकमारिडारिहैतेते दससहिनभीतरभयेजेकोऊ अयवाह
सवाहरजेहोउ ४४ सकलसिसुनकाटिकरहमनास तुमकहमुषवैरैहै हमआस सुर

श्री·भा·
ह२१९
19

उद्यमसवविफलनिदाना समंरभीरुचितचपलग्रयाना ४५ नितउदवेगरहैमनजाको
तवधनदैवोघसुतनभयताको सरसमूहछांडवतुमजवही ताकरिअहितेहैतननतवही
४६ अतिसेआनअहे प्रियजाही रनततजिमजेहैछिनताही कौउकरजोरिदीनकहेंअवा
नी लागिसख्वकोऊसरनेवषानी ४७ षुलेकछुसिरवहुसुरजूथा भूलिहैंशास्त्रअनेक
विरूपा विरधीजरनविमुषअनेका इनहिंआदजेरहितविवेका ४८ दोहा तिनहिंन
तुमफिरमारहौ धर्म जानिरनमाहि रनततजिकरहि प्रलापजेतिनकीकहांजुआहि
४९ चौपई हरिडरउरपतहैमनमोरा असुरसुरमहएकशंभुकठोरा इमिजोवचन
कहेमनआनी उत्तरसुनियनाथसुषदानी ५० हरिरहैसेवनकहसवकोई तिनतैंन
हिपुरुषारथहोई शंभुसदावनवासरहाई नामदलाव्रतकहस्त्रातिगाई ५१ हरिर
हसेवनकहावषानी सोअंतरजामीहैजगजानी इनतैकहांहोइतवहानी देदअस्सव
लकायरमानी ५२ अजधुनिवहुतपस्वीसाता इनतैभयनतुम्हेकछुताता तद्यपि
सुरवैरीछलकारी नहिविस्वासकरियसुरारी ५३ तातमूलछेदनकहनाथा आ
यसुरीजियहोइसनाथा जिमिरुजअपजेदेहमहकाहू नाहिंतेहिगनेजानलघुवाहू
५४ जवजरगहै वधवडहोई वहुउपचारकरैनरसोई नहिरुजमिटैसुषलैका। न
स पहिंरिउजरिकाटियआस ५५ दोहा जिमिइंद्रीगनप्रथमहीनिजवसकरैनको
इ तासनफिरनवसाइकछु जतनकरौवडसोइ सोरठा ५६ तैसेरिपुदृढहोइ

19A

सोनहिं केसो होइ अवस जइ निज हियमहं जोइ करिय जतन अव वेगप्रभु ५७ चौपई
सकल सुरन कौ हृदि है सूला सो सव हनुजवंस कह सूला तहां उपाइ अहै एक नीको सु
नियनाथ भगवति मन हीको ५८ हरि कौ मूल सनातन धरमा तासु मूल द्विज स्तुति सु
भकर्मा धेनु विप्रन यजन अनेका एसव कारन सहित विवेका ५९ एहि तैं सकल प्रका
र विचारी ब्रह्लवाहिं जे द्विज व्रतधारी यम सील समरम सव काला दयावहुत पुनि
कृपन कृपाला ६० एसव हरि तन अहै गोसाई सो पुनि विवुधाध्यछ कहाई सो हनुवं
स अहै दुषदाता अपर सुनिय कछु हे मम भ्राता ६१ अजतें आहि हिं असुर जेते विष्णु
मूल विनु अपरन नेते नासु विनास आसु एहि भांती मारिय रूषिगण साधु सुजाती
६२ छंद रिषि साधु मारिय वेग सव मिलइ इछ मंत्र न्ह मन तभयो सुनि कंसहुं मन भावती
यह विप्र वधि हिय सुष छयो ६३ सव असुर काल कराल सष है भूप भावी सो इ भयो
तव कहन प्रियं कंह सं तवध हित कंस सठ आयसु दयो ६४ तेह सकल धरि धरि का
म रूप अनूप हिंसहिं सकै भए तव कंस उठि निज भवन गमन्यो नाहिं सुषतहिं छन भ
ए ६५ ते मूढ़ दनुज तम प्रकृत तव स भ्रांति होय हरिजन सो ठए जेहि निकर मनुमहीसग
मनी हनुज से तनदु षदए ६६ सोरठा मनु मात्र नहिं जानु संत होय भैगन वडुत हैं है
अगनित मानु श्री जस सोभा नास तव ६७ अपुर्वल अरू धर्म लोक आसिषा जे हल
गे अरू सुभ लौकिक कर्म रहै न हरिजन होय तें ६८ दोहा आठ प्रमान छंद सुभगदै जा

नियहु शोषचौपईमानु अपरसोरठा सातसुभ ॥ ६ ॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे
दसमसकंधेभाषानिबंधेचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥ दोहा ॥ नंदआपनेसुअनकोकरि
हैवडुउतसाहं पुनिमथुरावसुदेवसोमिलहैसहितउछाह १ एहिपंचमअध्यायम
हिएतनीकथापुनीत श्रीसुकनृपसोवरनहै निरषतासुकीप्रीत २ चौपई हेनृप
नंदसुवनजबजायो अतिआनंदहियेसुषिछायो जेहेवतविप्रगनसबही ताहिवोल
सोन्यौतिनतबही ३ करिमज्जनसुविभूषनधारी स्वस्तिवचनतबद्विजनउंचारी वि
धवतहूजपितरसुरगाई सुतकेजातककर्मकराई ४ द्विजकहुधेनुलछदैदोनी
अलंकारजुतअतिरसभीनी तिलगिरसातरतनजुतनीके कंचनजरितवसनहितंं
हीके ५ तासनहापिहियोसुभरीती विप्रनकहसनमानसुप्रीती कालसुद्धछितअ
हकजामू मज्जनसुद्धदेहकोमानू ६ लगिअमेधसोचकरिपावन नपकरिइंद्रीहो
इसुहावन गर्भाहिकपावनतवहोई संसकारविधसोकरिजोरी ७ दोहा इंद्रीआदि
तपकैकियेसुद्धहोतंस्रुतिगाव मषकरविप्राहिकसकलसुद्धहोतयहभाव ८ सो
रठा दानिकियेधनसुद्ध मनपावनसंतोषकर आनमनवढैसुद्ध आतमविद्याज
वलहै ९ चौपई यौतैनंदमहासुषमूला क्रियाकरीसवस्रुतिअनुकूला विप्रनसु
भमंगलजुतवानी गाइकगानकरतसुषमानी १० बजतिभेरिदुंदुभिसहनाई सूता
दिकपुराणसुभगाई मागधकहैवंससुभपावन वंदीजनप्रस्तावसुहावन ११ कहन

20A लगेनिजनिजमतिजैसी करतप्रसंसासबमिलितैसी व्रजकहसबअंनहुपुरुषा
कृ० श्री सम्पकूसीचेउगलीबजारू १२ ध्वजपताकसजसजेअनेका तोरनसुभगएकतेएका
गजमनपल्लवबसनविधाना तोरनएहिविधगृहगृहनाना १३ वृषभवलीवत्सरतर
धेनू लेपेउतैलहरिद्रारेनू बहुचित्रतगोव्रजघरघरके धातुपछ्छकेकीगनवरके १४ व
सनमालयुतललितबनाए व्रजमहितेसबअतिछविछाए गावतमंगलसगुनसुहाव
न कृष्णजन्मअतिसबपुनिपावन १५ छंद. पावनसुहावनगोपवनिवनिवसनभूष
नसाजिकै अदभुतसुमोलसुभांतिभातिन्हभेटलैसनमानिकै १६ सुतभयोजसुदाभ
वनसुनिसब गोपिकासुषपाइकै करिमज्जनादिसुधारिवपुनवसाजसजचितचाय
कै १७ तनसुभगसारजराइजगमगनयनअंजनआजकै नवकुंकुमाकुलकमलमुष
कविभ्रमरविरहेछाइकै १८ प्रघुरप्रेमनचलनउरोजसुंदरलिएवलिकरचाइकै गृहव
लीजसुमतिकेसबै पथगमनमंगलगाइकै १९ अतिअमलमणिकुंडलसुहावनकं
ठपदकविराजही गृहनंदकेव्रजबालजातिउछाहमगछविछाजही २० अंबरअनू
पम्मिषाननैतसुभसुमनवर्षनभ्राजही अनिलोलिकुंडलहारउरनउदारसुषमासाज
ही २१ दोहा एहिविधमगआनंदजुतगईनंदकेगेह लगीअसीसनबालकहसबमि
लसहितसनेह २२ सोरठा चिरजीवौयहबाल रछ्छासबव्रजकीकरौ हरषकहैव्रज
बालि वारवारकरिगानवहु २३ चौपई हरदीतेलवारबहुभांती सोचहितेयकरिगा

श्री·भा· १०·१ २१ २१

नसुहाती व्रजविचित्रवाजेवहुवाजे घरघरउत्सवअतिछविछाजे २४ हरिअनंतजगदी
सपरेसा भएनंदसुतजवहिनरेसा पयघृतजलनवनीतमिलाई गोपपरस्परमुखलि २
पटाई २५ नाचतफिरहिनंदग्रहमाही दधिकोदौकरिसुषवरषाही नंदमहामनधेनु
अनेका यथायोगिकरिदियोविवेका २६ भूषनवसनअमोलमगाई गोपगुनीजन
सवपहिराई मागधसूतवंदीजनजेते सनमानेविधवतसवतेते २७ सुषमांगापावा
सवकाहु दियोनंदजाचानहिवाहूं हरिआराधनहेतुविचारी निजसुतउंदयहेतुहि
यधारी २८ नंदगोपकरिलहिसनमाना हरषितकरतरोहिनीगाना दिव्यवासस्त्रज
विविधवनाए कंठाभरणअमोलसुहाए २९ दिव्यमणिकोसकंअधकसुहाई श्रीरे
षाकरहैंअतिछविपाई विचिरतगहहियेपरमउछाहूं श्रीहरिजन्मदेषिवडलाहू ३०
दोहा नाहिनतैसववसिद्धनरयवसीसकल व्रजआइ हरिनिवासगुनवासकररमारहीं
हितसोछाइ ३१ चौपई गोकुलरछाकेहितलागी गोपिनसौपिनंदवडभागी. यदुपुर
गएदेनकरिहानू वरषीसराहेतसनमानू ३२ नंदागमनसुन्योजवकाना सुनिवसुदेवं
हिएहरषाना दयोभेटनपकहयहजानी सिविरनंदकेगौसुषमानी ३३ नंदताहि
लषिउठेतुरंता जिमिलहिप्रानअंगसुषवंता प्रीतमपाइहरषअतिताही गहिभुजकंठ
लगायोवाही ३४ आनंदभएउपरस्परभारी जानहिउभयउभयहितकारी निजआ
सननतेहिकरिआसीना पूजिकुसलपूछीपरवीना ३५ श्रीवसुदेवपुत्रकेमाही अति

21A

आसक्तचित्तनेहिपाही अतिप्रवीनवोलेसुनिआता वधसमय अनुकूलविधाता ३६ अजा
आसगतसुतभाआजू भलीभईव्रजसंपतिसाजू एहिसंसारचक्रमहतोता धमनसहानिज
कृततहआता ३७ दोहा अहोपरमकल्यानयह भ्रातमिलेतुमआजु मनहुं फेरजन्मयह
दुर्लभमित्रसमाजु ३८ सोरठा चित्रकर्मगतिभ्रात प्रीतमवसहिनएकथल जिमिसरत
नसंघात विछुरेफेरमिलवौकठन ३९ चौपई पुत्रसनेहहियेअति आही मिसकरपूछ
तहैकछूताही अहोनंदतवघरतरुणीरा भूरिअहै पसुनिरुजसरीरा ४० श्रीगोकुलजे
हवसहुसुखारी हैसुखसवहिकिधौनरनारी ममतियसुतनसहितएहिकाला वसहि
तहांहैश्रीव्रजवाला ४१ तोकताततुमहीकहजानत तुमतेलालिपालिसनमानत वंधु
हेतुअर्थाहिकतीनी साधनसत्यवेदकहहीनी ४२ जोकलेससोलहईनिदाना तोव
हअर्थनअर्थसमाना सुनिवसुदेवगिरामधुसानी नंदहरषवोलेमहुवानी ४३ अहो
देवकीसुअनअनूपा कंसहनेवहुसुखरसरूपा वचीएककन्यावहपाछे गईदिव्यग
तिसोउफिरेआछे ४४ यहसंसारकर्मजसआही योगवियोगलहैतसताही तेहिए
हिविधसमुझैकोउप्रानी मोहिनउपजैतिनकहुजानी ४५ छंद उपजैनतिनकहु
मोहिकवहूंनंदतुमसाचीकहो जिनजानियोनिजकर्मकृतसवलहतहैसुखदुखसही
४६ पारिएवातुमअववतुरतकीजो रह्यौजनदृतिघरकहो करदयौतुमयहकंसकौए
निमिलेहमसोसुखलहो ४७ कंरियैसुवेगप्रियानगोकुलकछुकहैउतपातजू यह

श्री·भा
६·२२
22

सुनिगिरानवतुरतहीनेंदहिसंकितगातजू ४८ जियजानिसौरीगिरासत्यनअन्यथाहि
इजातजू सवसकटसाजेवेगिहैंचढि चलनचितअकुलातजू ४९ दोहा सौरीकरिसन
मानवहुआयुसलैव्रजराज गोपसहितगोकुलचलेहरषतहियनदराज ५० सोरठा
सुभगसोरठातीन दोहापंचवखानियौ छंदपंचवरवीन एहिपंचमअध्यायमहि ५१
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेभाषानिबंधेवसुदेवसमागमोनामपंचमोध्या
यः ५ दोहा सषावचनसुमिरतचल्योनंदलषीपथमाहि मरीपूतनासुनकथाविसम
यचितभईवाहि १ एहिछठयेअध्यायमहिएतनीकथापुनीत शुककहिहैंसवभूपप्र
तिहरषितचितकरप्रीत चौपई श्रीशुककहतसुनहुनरराई नंदचल्योमेंचितअ
कुलाई करतविचारजाइमगमाही सौरीवचनअन्यथानाही २ संकितहरिचरनअ
धारा समितहोइउतपातअपारा नामपूतनापरमकठोरा पठईकंसनाहीवरजोरा ४
वालघातमहिपरमसयानी फिरैहननजगमहिसुषमानी बहुवालकजोवानेमारे
ऐसीपूतनाहैवलिकारे ५ कवहुकनपमनमहअसआनै वालघातसुनिसंकामानै
तहांकहतमुनिहेनरनायक कृष्णदेवसुरमनिसुषदायक ६ तासुचरित्रकथागुन
नाना श्रवणादिकजेहिठौरवषाना जातुधानतेहिऔरनजाही संकाकौनकृष्णके
माही ७ श्रवणादिककेनिकटनरेसा भ्रमितइहकरिलकनप्रवेसा सोसख्यातव्र
जसुषरासी जातुधानुतेहिढिगकिमिजासी ८ दोहा सोवहपापिनिपूतनागगनपं

करि

22A

घएकवार आई गोकल कपट करि भई नार सुकुमार ९ सोरठा कामचारनी वाम मिषि
सेक निरलज्ज अति जासु पूतना नाम गई गेहि व्रजराज के १० चौपई ताहि वाम कौ लखि
व्रजनारी रमा मानते हि रही निहारी पति देषन आई यह जानी देषि रूप तेहि रही भुलानी
११ मालति सुमन ललित वर वैनी गुहे रुचिर रीत सुष देनी वहु तन नित वउरोज सुहावन
नेहि भरनै कटि क्षीनसु अति पावन १२ वसन सुदेस वेस मनभावन वाम काम छवि कोटि
लजावनं कुंडल चपल ललित श्रुति सोहन नासु झलक मनसिज मन मोहन १३ चिक्कन
चिकुर सुरभि सम कारे मुषपंकज लोचन कजरारे मंद मंद मुसकन मन हरनी करि
कटाछ चितवन मन करनी १४ व्रजनर नारि देषि छवि तासू चकित रहे तेह रूप विसालू
षोजत वाल वाल वृष माही पहुंची नंद सुअन के पाही १५ दुष्ट विनास कहरि सिसुरूपा
निज प्रताप किय गुपत अनूपा भस्म छन्न जिमि रहे कृसानू इमि हरि रूप गुपत किय जा
नू १६ दोहा पौढे प्रभु निज सयन पर लषि सिसु व्याधक नारि नयन मूंद रहे सहज ही
जिमि नलषै मनुजारि १७ सोरठा अग जग व्यापक ईस हरि अनंत अरि दलन प्रभु कु
मती नारि अनीस अंक धर्यो जगदीस कंह १८ चौपई सोवत आहि जिमि कोऊ कर गहई
कुमती विनु जानै दुष लहई रजु मानि अहि लेइ उठाई तिमि इन अंक धरे जदुराई १९ त
हो रोहिणी जसुमति रानी इन वरज्यो नहि का जिय जानी इमि संसय जो कोऊ जिय आनै
तो प्रति कहत वचन सनमानै २० नीछन हद्य मधुर मुष वचना अहमत रूप नार वर रचना

कोमल मषम लम्या न अनूपा तामहि तीछन असि दुषरूपा २१ निजगह जुग जैंनी तेहि रे ना
षी मोहत चित थक रही विसेषी हम जननी के धोयह आही यह मन गुनते हि तन रह वाही २२
केवल इक टक रही निहारी धरषि चित्त नहि ताहि निवारी ऐसे जतन करत तिह काला
लिएउ उठाइ पूतना वाला २३ दोहा लिए ताहि छिन अंक मैं स्तनपान कराव दुस्तर गर
ल लगाइ कुच दुष्टन इहै सुभाव २४ सोरठा हटि कारि गहि भगवंत पीवत पय प्रानन स
हित कोपि वहुत अनंत मुगकर गहे उ उरोज विव २५ चौपई विषय पय्य ज्यानी जगही
सा अनूपान किय प्रान महीसा बाइ जु कहूं औषधि सित सेगा पुष्टि हेतु सज्जर है न अंगा
२६ छाडि छाडि कहि वाम उ कारी चकित जीव सव कर्म दुषारी उलटे नयन भुजा पग हो
ऊ महि पटि कन रोवत भई सोऊ २७ अंग स्वेद अति रूदन कठोरा इंद्री सिथल भई नहि यो
रा अति गंभीर रूदन धुनि ताल कंपति महि गिरि दिग्गज व्याल २८ नाकन कंत सहित
जीव ग्रह डोले वकत सव रहे अडोले वज्रपात सिंका सम मानी गिर भूमि कंपित मन वानी २९
वेपथु वहुत कंपि सव गाता मुष ने उ विरसे कन हि वाता घोर निसिचरी परम कठोरा
कुच पीडा दुबल हीन घोरा ३० दोहा भई प्राण गति वाय मुष गिरी भूमि पटि भूप चरन
भुजा कचि परसे सव रूकि गो षरक अनूप ३१ चौपई मरती वार कपट सव त्यागी प्र
गट कियो निज वपु वडभागी परी अवन पर सैल समाना महाकाय षट कोस प्रमाना
३२ जिमि वत्रासुर गिरेउ कठोरा सक्र वज्र हत कियव रंजोरा हाहाकार भयो अति भारी

23A

गिरतीवारस्वकितनरनारी ३३ जेषट्कोसमोउडुमभारे तोवपुसोरजसमभएसारे उ
ग्रहहहहलहेडुसमाना प्रुषअतिविँरभएगतिप्राना ३४ गिरिवरहरीसरसनेहिनासासै
लभंगयुगकुचजनभासा विपुरेकवसिरअरुनभपावन अंधकूपसमनयनडरावन
३५ जघनापुलिनसरसमयहाना वेधेउसेतुजिमनकुसुहाना विनुजलसरसमउह
रबुलाई हनीतुरतहरिविलेवुनलाई ३६ दोहा निरषतासुवपुगोपिकासहतिगोपभ
यभीत पाहिलेसुनितेहिसवरवैहहृदयअवलविपरीत ३७ चौपई षेलतवालतासुउ
रदेषी किलकतनिर्भयहरषविसेषी तवहीतुरतधाइनंदरानी अपरगोपिकासवअ
कुलानी ३८ लिएउउठाइनंदसुततवही लष्योतासुउरषेलतजवही जसुमतिसहि
तरोहिनीदेवी अपरनारिजेहैव्रजसेवी ३९ सवमिलसिसुरछ्छापुनिकीन्ही धेनपूछि
सिरसपरसदीन्ही धेनुमूत्रकरिपुनहिन्हवावा गोरजपुनिसवअंगलगावा ४० पुनि
द्वादसहरिनामनिरूपा गोमयजुतरछ्छाकियभूपा प्रथमहिसंभ्रमकछ्छूतासू एहिविध
रछ्छाकरेउजुआसू ४१ साविधानह्वैपुनिव्रजनीरो विधसोरछ्छकरिसुषमानी सेज
लसुभगआचमनकरेऊ अंगन्यासपुनिनिजतनधरेऊ ४२ पुनिसिसुअंगसुभगकरन्या
सा वेदविहितचितसहितहुलासा नारायनतुमअंतरजामी रछ्छाकीजौनैनपतिगामी
४३ दोहा विधमुगपदरछ्छाकरौ जानुजुगलमनमान उरूत्राताजसतवकटितटिअ
च्युतजानु ४४ सोरठा जंठरसदाहयग्री हृदयपालकेसवतुम्है उरईसजगसीव कंठई

क

नरछ्यासदा ४५ चौपई विस्वभुजा तव पालहु ताता मुख वामन पालहु जनत्राता ईस्वर तन
वसिर पालु सुखारी जगमंगल दातां दनुजारी ४६ अग्र चक्रधर रछ्याकरऊ गदाधरै ह
रि प्रसन्न रहऊ धनुधर मधुहा एकहिं सपालू असिधर अजन दीन जन पालू ४७ उभ
य पार्स्व एहो जसुख धामा ज्ञानातन वपुपूरन कामा धरै संख हरि जस नहि थोरा चारको
न रछ्या करतोरा ४८ उपर उपेंद्र गरुड जुन तोही संततं पालि दनुजकुलद्रोही हलिधरि
छितितल तव दिनराती रछ्याकर जे असुर अराती ४९ हृषीकेस इंद्रीगन पातू प्राणर
मापति संतत त्रातू तव चित संतत रछक सोई स्वेतदीपपति है जे कोई ५० योगेस्वर म
न रछ्या करऊ पृस्निगर्भ धिय मण सुख करऊ अहंकार पालहु भगवाना संततत व जेसो
पानिधाना ५१ श्रीगोविंद खेलती वारा दैरत मम अवगति परवारा जाग्रत मे रघुपति
प्रतिपारा सोवत माधव पानु सुखारा ५२ दोहा चलत अवत नुकुंठ प्रभ विभ श्रीपति
आसीन परम धाम विश्राम जेहि अखिल लोक प्रवीन ५३ चौपई नाम जसा मूक है सु
मजासू सकल घोर ग्रह नासक आसू भौ जन करत पालहु हरि सोई नित सहाजन हित
करजोई ५४ भूत प्रेत अरु जछ पिसाची जातुधान कुषमांड कुजाती कोटरा हि रेवत
जगख्याती मात्रिका हि जे अपर विनायक पूतना हि जे है दुखदायक अपसमार उन
माद समेता सकल प्रान इंद्री दुखहेता ५६ दुस्स्वप्न जे वरु उतपाता वाल वृध ग्रह जे
डखदाता तेसव नास जाहि अव आसू विस्वनाम सुनि जेहि हि त्रासू ५७ एहि विध

24A

प्रेमवंधहियगोपी सिसुरछाकीन्हीविधसोपी जसुदाअस्तनपानकराई प्रतिपालंनंप
रलैवैठाई ५८ जोलगिनेहाहिकवृजवासी मधुपुरतेआवनसुषरासी आवनतपुरीम
रीमगदेषी नामपूतनाकोपविसेषी ५९ दोहा देषिपूतनाकोकुरूपमहाघोरभयरूप
विसमयचितनंदाहिसव वोलेवचनअनूप ६० सोरठा सम्यकुसानीआहि केसौरी
रीकोऊराजरिष कहोवचनचितचाहिसोसवफरदेषैनयन ६१ चौपई वृजवासीस
वमिलनेहिकाला तननिसचरीकेरविकराला परसुनिछेदछेदसवअंगा धरयौदूरिसु
निमरनप्रसंगा ६२ दारुचितारचिदहीवनाई चिताधूमजनुअगरवसाई पियोजा
सुपयकसुरूपहरि सपदिगयोअघजन्मसहसजरि ६३ वालघातनीवकीअपाव
न निसचरजातिजीववनदावनि रूधिरासनसंततप्रियजाही हननहेतुहरिकहचि
तवाही ६४ महागरलनिजकुचनलगाई हरिकहपानकरायोआई तदपिताहिपर
मगतिदीनी अतिकृपालवैगुनगुनलीकी ६५ श्रद्धाभावसहितजोताही ताहिसमरपै
जोचितचाही तासुभागमहिमाअतिभारी गावतकविकोविदमतिहारी ६६ दोहा व्र
जकीगोपीधेनुसवमहिमातासुअपार जिन्हपयप्यायोप्रेमजुतकृस्नवालउरधा
र ६७ चौपई अतिगिरीसवंदितजोचरना मुनमानसमरालसमवरना सोइपदकं
जचापितनेमांसू कियोपानपयरमानिवासू ६८ भूरिभागवरनतकाविहारे उपमा
नहिंत्रैलोकनिहारे महाअघीनिसिचरकुलकेरी जननीगतिसोलहीनिवेरी ६९ गो

श्री भा
६ २५
25

गोपीजनकी कहै गाथा कहै जासु पय पियजदुनाथा कहि सुत जासु श्रवत कुच जाल
कियो पान जदुनंदन आस ७० हानि चारि फलको अखिलेसा पुत्रभाव तह करे उ नरेसा
धन्य धन्य सब ब्रजकी नारी पुत्रभाव पर ब्रह्म निहारी ७१ छंद परब्रह्म निहारी गुन
अतिभारी नारी न न मन न छन सही तिनकर भव रोगा सब दुष सोगा भसम भयो जरि
छनक महीं ७२ वह नारि अपावनि बालन सावनि चित नित अघ चाह वही ताकर
वपु दाहा धूम उमाहा सुरभि सकल ब्रज फैल रही ७३ ब्रजजन सब जे ते चक्रत सुते
ते अहह दैव यह काह अही इमि कहत जु वाते अति सुष राते निज ग्रह गोप गए सब
ही ७४ गोपन सुष वानी श्रुति सुषदानी नंद सुनै ग्रह गेत वही सुत लीन उठाई कंठ लु
गाई सुष पाई सुरवि नयगहीं ७५ दोहा सीस संघि निज सुअन को लह्यो नंद आनं
द सुत हित अति सनमानि किय पूजे भूसुर वृंद ७६ सोरठा वकी मोछ मन लाइ जो
जन एहि जग महि सुनै प्रीत लहे जदुराइ सुनै जु बाल विरित्र को ७७ दो केवल विष
यन सो लगे प्रभु प्रीतम जदुराइ रामकृपा तिह जनन को व्यर्थ जन्म वरि जाइ ७८
सुभग सोरठा षट् कहे दोया रुद्र वषानि कहे छंद युग सुभग अति एहि छठि ये महि
जानि ७९ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा निबंधे पूतनामोछ ना
म षष्टमो ध्यायः ६ दोहा मर्कट व्योम हरि डारि है तणावर्त छिति डारि निजमुष
विस्व दिषाइ कै नित मात हि असुरारि १ इह सप्तम अध्याय महि कृष्ण चरित्र अनू

25A

प श्रीसुककहिहैं श्रीनजुतनिरषभागवतभूप २ चौपई वकीकथासुनिहियहरषां
ई पूछ्यनृपग्रतिसैसुषपाई हेमुनिहरिईस्वरभगवंता जेजेधरिग्रवतारग्रनं
ता ३ करतचरित्रसोउस्रुतिसुषदायक ग्रनमनोगप्रवंछितफलदायक जाहिकथा
सुनिसहजहिग्रानी तस्नाविरतिलहैंसुषमानी ४ होइसुद्धमनसहजगोसाईं ब्रह्म
भक्तलहिग्रतिसुषपाई हरिजनमहिरतिहोइग्रभंगा सहजहोइभवरुजदुषभंगा
५ नाथकृपामोपरजोहोई कहियमुनीसकृपाकरिसोई ग्रपरकृस्नलीलाजगा
पावन लोकचरित्रविचित्रसुहावन ६ ग्रतिरमनीयसुषदग्रघहारी किएउजेनर
ग्रनुकरणमुरारी कहियनाथतुमकृपनकृपालू पुनिसवनरकहुदीनदयालू ७ सु
निनृपवचनमृदुलरससानी वोलेस्रीसुकजनसुषदानी हेनृपकरवटलियभगवं
ता ताहिदिनकौतकभयोग्रनंता ८ जन्मनषत्रप्रभुकोहितवाही घरिघरितैजुवतीजु
रिताही वालचरतगावैवडभागी तिनकीप्रीतकृस्नमैलागी ९ दोहा ग्रतिसुदरवा
जेवजेद्विजवरमंत्रउचारि गीतगानजुवतियनकियौमंगलसुभगसवारि १० सोरठा
कियेसुग्रनग्रभिषेक जसुमतिग्रतिग्रानंदभरि जेद्विजसहितविवेक करवाए
तिनकर्मसव ११ चौपई भूदेवनजवकियग्रभिषेका लह्मवंदकौसहितविवेका
नयननीदवसवदननिहारी सयनकराइदियोमहतारी १२ ग्रन्नवसनधनधेनुग्र
पारा सवगुनजुतवहुविनयप्रकारा विप्रनदयोजसोमतिरानी जिनिसुभकर्मकि

श्रीभा॰
द॰ २६
२८

यौसनमानी १३ पूजितद्विजनिजभवनपधारे हेतअसीसमगनसुषकारे वरसगा
ठिउत्सवअतिभारी आएव्रजवासीनरनारी १४ ताहिजसोमतिअतिसयमानी पू
जितअमितभांतिसुषमानी ताहिसमैजगिसहिजसुभायक पयहितरूदनकरतजदु
नायक १५ रूदनसुनैनाहिजसुमतिरानी उरधपगचलाइसुषमानी अधसयान
सुंदरसिसुरूपा अरूणकंजमदुचरणअनूपा १६ मांस्योउलटिपर्यौसवसाजू सक
टदूटरसभाजनभाजू चक्रअष्टकुवरसवतवही भिन्नभिन्नहोइगिरगएसवही १७ म
हिरआहिव्रजनारिघनेरी आईजेउत्सवमहिंटेरी तिनदेषायहअचरजधाई
पुनिनिरषागोपसुषपाई १८ दोहा अद्भुतदेषिचरित्रयहनंदादिकजेगोपसकट
आपहीतहगिरोनिश्चैनहोइनसोप १९ सोरठा जासुअमितगुनआहि गनिनसकै
कविवेदवर किमिजानैकदुताहिनेरआहिजेगोपसव २० चौपई निश्चैकरिनसकै
जवकोऊ चकतरहेव्रजपतिमिलसोऊ षेलतवालतहांतेहिकाला वोलेतेसुभवच
नरसाला २१ रोवतइननिजचरणचलाई अस्तवस्तयहसकटगिराई यहनिश्चैजा
नहुरेताता देषीनयनसत्ययहवाता २२ गोपनतहविश्वाससवराषी वालवचिनक
हिरूचितजिनाषी अप्रमेयवललषैनतासू एहितेतिनहिनभाविश्वासू २३ रोवति
सुतलियमहरउठाई ग्रहसंकाकरिचितअकुलाई द्विजसनसुतस्वस्त्ययनकराई
पुनिअस्तनपयताहिपियाई २४ तरूनवलीजेगोपप्रवीना वस्तसकलतेहिविधध

रहीना पहलेधरीहुतीजेहिरीती तैसेधरीवनाइसुनीती २५ दोहा द्विजनपूजियोवहुत
विधि इधिअछतसुषमानि पुनिकुसजलअभिमंत्रकरिसीचौतनमनवान २६ चौपई
रहितअसूयाजेद्विजकोई दंभमानमत्सरगतिहोई सत्यसीलस्मृतिसमतवानी तिनन्हतन
आसिषविफलनजानी २७ द्विजवरतेरछाएहिभांती करवायोनिजसुअनसकांती
लैघनस्यामगोदभरआइ मगनभईजगरहाननताई २८ नेहसमाहितभाएजवही मंग
लस्वस्तिद्विजनपढिनवही वहुरवेदविधआहुतदीनी एहिविधक्रियासकलतिनकी
नी २९ नेहअनेरतहुतैनवताही अन्नआदिदीन्योचितचाही सवगुनसहितधेनुसुदिसु
दर कंचनसाजसाजदीनीवर ३० निजसुतउदयहेतुसवकीन्ही विप्रनहरषिआसिषा
दीन्ही औरसभीनदीनैवहुदाना अपनीअपनीसक्तसमाना ३१ दोहा विप्रमंत्रवितजे
जगततिनन्हतआसिषवैन कवहूविफलनहोइसोजेसुन्हनीसतऐन ३२ सोरठा नेह
घरनसुषपाइ एकदिवससुतअंकधरि निरिषवदनहरषाइ लालनकरतिअनेकवि
ध ३३ चौपई इविमुषारविंदकीसोभा दृगनदरैतहतैमनलोभा जोसुषलह्योमहर
तेहिकाला कहैकवनजगवुधविसाला ३४ सुतगरिमालषिकरतिविचारा काहे
लगतलालैहिभारा गिरिसमसुअनभारअतिभारी सहिनसकीधरूधरनिउतारी वि
स्मतमनपीडितसुतभारू मनमहकह्योध्यानकरतारू करुणाकरीकृपालिगोसाई
जननीयेसुषअतिसैपाई ३५ गिरिसमभारभएगिरिधारी धरैमानुसाहिमहमिउता

श्री०भा०
१४७
27

री एहिकछूचारितमातुनहिजाना एहितैकरेउपरूषकरध्याना ३८ अषिलविश्वसुत
उहरनजानी लौकिकभयसेकाउरआनी त्रिनावर्त्तलषिअैहै आसू जननीसमरुथलहै
नकासू ३९ जोमनसमुझैह्लहयाला मोविनदुषीसभीव्रजवाला एहितैगरुअेभएगि
रिधारी छितिउन्नरसहजैहनुजारी ४० दोहा त्रिनावरतअसनामजेहिकंसमल्लसु
षकार निजनृपआसासीसधरिगएसुव्रजमनुजारि ४१ सोरठा वातचक्रधरिरू
प गोकुलगयोसुमूढमति वालकहन्योअनूपमहिरधस्योजेहिठौरतै ४२ चौपई गो
कुलरजकरआवर्त्तिकीन्हा पुनिव्रजजनलोचनहरिलीन्हा महाघोररवभयाचहुंओ
रा सवहिसिविदिसिनाहनहिघोरा ४३ रजवरषाकरितमअतिभारी भएसकलथ्यां
कुलनरनारी धस्योजसोमतसुततेहिठामा तहांनदेष्योसुंदरस्यामा ४४ परअपरलै
षेनहिकोई तृणावर्त्तरजमोहितजोई औरमहाध्यानकजलकीधारा वरषनलगीजो
वारनपारा ४५ पवनचक्रघररजचहुंओरा वृष्टिमईरजअतिसैघोरा नहिसुतलष्यो
जसोमतिजवही कह्योजुसोधहुरेमिलिसवही ४६ सुतपदवीनलषीव्रजनारी तव
अतिरूदनकियोकिमिभारी सोधुनिसुनीजसोमतिजवही मनुवत्सगोसमभईतव
ही ४७ दोहा अतिचितव्याकुलताहिकी अवनिगिरीविलपाइ भूलीतनसुधअंसु
मुषविलपतिनानाभाइ ४८ सोरठा रजवरषाअतिघोर उपसमभईजुनाहिछन प
वनरह्योवरजोर रोईसवमिलगोपका ४९ चौपई वातचक्रधरिरूपकठोरा हरिलैगो

श्रु

27A हरिकौवरजोरा महावज्रसमदेहतकठोरा पकरुलियोहरिकौकरिजोरा ५० कष्टकगयौ
नभभरअतिसारू आगेचलनसकावरुभारू धकतवेगव्याकुलअतिभारी हृदयविदा
रतअधमसुरारी ५१ वालकिधौमैगिरियहलीन्हा गलगहेतमैप्रथमनचीन्हा चाह
ततजिनतज्यौनहिजाई कंठलपटिरह्यैप्रभजदुराई ५२ चापेचपरकंठहरिजवही निग
ततनयनभयौवहतवही ईहारहितअंगसवतासू रूवैपाकेठरवहनुसुतआसू ५३ वा सीघ्र
लसहितवृजमैगिरपरेऊ भएऊँसहजहिमरेऊ वजभूशिलाउपरहरिभारू टूकटूक प्रानविन
भातनवहसारू ५४ सोरठा कपटीकुनपकराल अंतरोष्टतेगिरेउजव जिमिवहत्रिपु रु
रकैलहरसरतैसवविंमसिगो ५५ चौपई तिमियहगिरयोभूमिपरआई रुदनकरत
वृजतियसवधाई तिहअवलेवमानहरिदेषा भयौतियनकौहरषविसेषा ५६ तुरतउ
ठाइहृदयकरुवाला जननीकहिदीन्हेउतेहिकाला सहितगोपगोपीजनसारे कौतक
देषिचंकितिचितभारे ५७ लैपुरुषाहिव्यौमपथगएऊ प्रानसहितयहवालकलहेऊ
जिमिकोऊकालवहनतेछूटी मिलैफेरइमिहमसुषलूटी ५८ असआनंदभयोसव
काहू करतपरसपरनिजसुषलाहू अहोलषौअवरजयहभारी वालहन्यौहोअधम
सुरारी ५९ वंधुनफेरमिस्योयहआई एहिभाग्यवानहमभाई यहनिरदयषलनिज कै
अघमरेऊ साधुसहतभयगतिसुषभरेऊ ६० चौपई कहाकिएउतपदानहमहरिप्रज
नकीन सकलमंतमहिसुहदतोकिधोअग्निमुषदीन ६१ सोरठा वापीकूपतड़ाग

ब्रह्मपुरी निरखाय बहु। हियौ सहित अनुराग फल्यौ सुकृत सो आजु सब ॥६२॥ चौपई ग्रसत का
लमुख तें पद आजू। लह्यौ बाल फिर बंधु समाजू अति आनंद भयो सब भांती अहो भाग कछू
कहि न सिराती ॥६३॥ बहु अंबर जोरे खौ तहं भूपा नेहाद्रिक जे गोप अनूपा। फिर बसुदेव बच
२ न सुध आई कह्यौ मित्र सौं सत्य सुहाई ॥६४॥ तरणावर्त आगम की बेरा अति गरु रज जननी सु
घेरा। सो संका हिये बोधन काजू मुष महि विश्व दिषावहि आजू ॥६५॥ जे भ्रम मिस मुष वि
श्व दिषाई। संसय समन कियो सुष पाई एक समै श्री जसुमति रानी अंक धर्यो सिसु
ति म अति सुषमानी ॥६६॥ सुत सनेह पय स्रवत उरोहण सुतहि पिवावत जो भव मोचण। रहे पा
न करि जब जदुनेहा। जननी निरखै मुष सुष कंहा ॥६७॥ लालिन करन लगी जब सोई हरि
जे भांत मुष निरख्यौ जोई देख्यौ मुष महि जो तिरनी का। नभ आसा रवि इंदु अलीका ॥६८॥
अंबु धवायु दीप सब देषा। कानन नदी चराचर पेषा। देषि विश्व संहसा सो राजन। सिथल
अंग पुलित तन आनन दोहा। युगल नयन तब मूंद लिय अति विसमय भई सोइ करत
सात विचार जु मन हि मन अहो कहा यह होइ ॥७०॥ सोरठा दोहा अष्ट अनूप कहे सोरठा वर संत
सदा सुषरूप। सेष चौपई सुभग अति ॥७१॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भा
षा निबंधे विश्वरूप तरणावर्त मोक्ष दर्शनं नाम सप्तमो ध्यायः ॥७॥ दोहा ॥ नाम कर्म श्री क
ष्ण कौ अरु श्री राग न भाइ पुनि मद भछन करन मिसि मातहि विश्व दिषाइ ॥१॥ एहि अष्टम
अध्याय महि कथा सुभग चित चाहि कहि है मुनि छितिपाल सौं जा नि भागवत ताहि चौपई

गर्ग पुरोहित जदुकुल केरो व्रज आयौ शौरी जव प्रेरो. महा तपस्वी सव गुन रासी नंद ताहि
लखि हर्ष हुलासी ३ उठे प्रीति जुत करि सनमानू धरि पग सीस ग्रेह निज आनू पूजे वि
धवत हरि सम जानी मुनि वैठे आसन सुष मानी ४ पुनि अतिथ्य करी भव रीती जोरि
हस्त जुग मन अति प्रीती अहो नाथ तुम पूरन कामा कहा करौं सेवा सुष धामा ५ पूरण
काम होत जे कोऊ जात न धनिक धाम चलि सोऊ इमि कदाचि जो कहौ गुसांई तो मम वच
न सुनिये चित लाई ६ महत पुरुष निज आश्रम त्यागी विचरत गेहिन कौ हित केहि लागी
गेही कस न जाहि वलि तहवा महत पुरुष आश्रम है जहवा ७ इमि संदेह होइ जो काही
उत्तर सुभग देत है ताही महा दीन चित तप न सुभाऊ धनि भरि ग्रहत जिसके न काऊ ८ ना
म कर्णी करवै के हेतू तिन्हे कहत तुम गुन निधि सेतू संत पुरुष वोके संग प्रतापा ग्रेही जनौ
के मिटै सव पापा ९ दोहा गनति फलत जोतिष सकल तुम वक्ता भूदेव तव प्रति पाद
त अपर को उत्तम विभ विष्य भव भेव १० सोरठा तुमहि नाथ अति ग्यान जानत गति त्रय का
लकी चाहत पर कल्यान तुम स्तुति अमित विचार किय ११ चौपई वालक संस्कार प्रभु क
रहूं विघन दोष से का परिहरहूं नर कहुं विहित विप्र गुरु कहेऊ जन्म आदि जे हलगि जस व
हेऊ १२ मैं जदुकुल गुरु अहो सुजाना व्रज आयो हे वुध निधाना इति आए को जानि हि ना
था मैं विष्यात प्रथम जग गाथा १३ तो पुनि कहां होई भल देवा कहत गर्ग मुनि अस है भेवा
मम कृत संस्कार होऊ वाला सुनै जुं कवहुं कंस कराला १४ देवकी सुत अनमानि है सोई हौं

हियेविपरीतिनहोई देवकीसुतसौरीतैभएऊ कंसवधरिकैसेकैलहेऊ १५ तुमसौरी
होउमित्रअनूपा उनकेसुतजानेएहिरूपा कंसमहाबलइमिजोमानै प्रगटयोअहेनं
दग्रहजानै १६ पुनिकंन्यावानीसुधआनी भएउशत्रुवतजहकहुमानी पुनिनभगिराअ
न्यथाकैसे अठएगर्भसुतानहिंऐसे १७ दोहा एहिविधयत्ननितमनगुनैममसंततसुने
जुनाम निश्चैकरिकुमतीमहाकरैद्रोषपरनाम १८ सोरठा यहसंकाजियमोहि करैअ
नर्थनकंसकछु नहिंलागैकछुतोहि मयौंअजसभाजनमही १९ चौपाई सुनिकरवोसो
नंदविनीता हेद्विजवरतुमपरमपुनीता यहगोकुलएकांतिगुसांई नामकरनइतिकरि
यवनाई २० स्वस्तिहिवाचनमात्रसुधारी संस्कारकरिहेहुविचारी नंदरायजवएहिंवि
धभूपा विनयकरीवहुधासुषरूपा २१ रहिसिजाइतवगर्गविचछन युगलसुअनके
लषिसुभलछ्छन यहजुरोहिनीतनयकहावै निजगुणकरिसवसुहृदरमावै २२ यौंतेना
मराममहैयांकौ अतिवलितेवलकहिहैंतांकौ यादवएपकुभावनहिंराषिंहि यौंतेएहि
संकर्षणभाषहि २३ अवलघुसुअननाममैंकहेऊ छरणकामयाहितैलहेऊ जुगजु
गतनधारतयहजानू रक्तसुक्लअरुपीतवषानू २४ तीनवर्णत्रयपुगदमिगावा अव
कृष्ण यहरूपहरिआवा यौंतैकृष्णजन्मजगख्याती नामअनूपतापत्रयघाती २५ दोहा कव
हुकयहवसुदेवकौतनयभयोतवतात वासुदेवश्रीसहितएहिकहतविवेकीख्यात २६
सोरठा गुनकर्मनअनूप नामरूपएहिकैवहुत भक्तनंप्रियसुरभूप मैजानौनहिंअपर

२९A

जन २७ दोहा सकल गोपकहू सुखवहु भांती देहै संतत दिन अरु राती पुनि सबके सेकर
वहु रीती विनु प्रयास हरि है करि प्रीती २८ पूरव छिति महीप विनु कवहूं दुष्ट न साधु संता
यौ सव हूं दनरछा कीन्ही तव तास्रू मारे दुष्ट वीर सव आसू २९ महाभाग जो को ऊ जग
माही चित राषै या के पद पाही रिपु ते अजय होइ नहि तासू विस्नु पछि जिमि सुर सुषवासू
३० यातें नंद सुअन यह तेरौ श्रीपति सम गुन अहै घनेरौ श्रिया कीर्ति अनुभाव अपारा
रषहु जत्तं न सव सहित निरधारा ३१ एहि विधि कहत सव कछु प्रतापू गर्ग गये निज ग्रह
वलि आपू नंद महा आनंद समेता मान्यौ निज गुन भागि निकेता ३२ कछुक अल्प कालि
गति भूपा राम कृष्ण होऊ अद्भुत रूपा वालकेलि क्रीडति व्रजमाही घुटुरुन जानु सपानि
चलाही ३३ अव रज रूप निरषै व्रजनारी अमति हर्ष भयो अधिक अपारी चलत घुटुरुन
वन आनंद होऊ हरि हलधर अति सुंदर सोऊ ३४ दोहा नूपुर धुनि वाजे मधुर रुनझुनस
द अनूप कटि किंकिनि झंनकार सुभ कृष्ण पाहुद यव वहु रूप ३५ सोरठा व्रजरज महु सुष
पाइ चपरि षिलत फिर फिरलषै मुग्ध भाव वासु सुकाइ किलकिमातु हिग आइ पुनि चौपई
तव मात नव सुतली नउठाई अति सुष पाइ महा छवि छाई अंक लगाइ रहो जुत प्रीती
महा रंक जिमि निधि तेहि रीती श्रवत पयोधर अति सुषमानी हयौ सिसुन कह कहिम
दुवानी अंग राग अरु पंक समेता हरि मुष निरषत प्रभा निकेता अलप दसन अति सुंद
र राजे मन हु सत्व गुन अंकुर भ्राजे मंद मंद मुसकन अति नीकी अमित निसाकर प्रभा

श्री·भा·
६३० अति
30

फीको ३९ भएकुमारन्हसुषकेरा वजजुवतियनकौ अधक अनेरा वहुकुमारलीला
प्रभकेरा वरनीयसवकहसुषदेरी ४० यहसरूपजोगीको दुर्लभ सोयोगोपहेष्यो अति
सुलभ तववजकीवरनारिसभागी प्रभलीलानिरषैअनुरागी ४१ दोहा गहिवछरन
कोपूछजवरतिउतवहफिरजात देषित्यागिगहकाजसव हियप्रफुलतिसवगात
४२ सोरठा उभयभ्रातकमनीय लीलाकरतविचित्रपुनि डोरमहारमनीय देषिहलल
नोकोजुग्रह ४३ चौपई क्रीडारतिअतिचपलसुभाऊ निरषिजननिअतिसयसुषपाऊ
धेनुअग्रअहजलकीओरा चपरिचलततवग्रहवरजोरा ४४ संगकेरकअरसवानवि
लाई गहनचहैनवलेतिवचाई जहजहचपरचलेदोउभ्राता दोरवेगिहोराकितमाता
४५ एहिविधसुतवरजनकोहेतू सकैनकछूकरिकर्मनिकेतू तवमनकी अतवस्था
पाई सोअतिसैगहसुषसुषदाई ४६ कछुकअल्पदिनवीतेभूपा विचरनलगेवरन
अनुरूपा जानुप्रसनहिछितिहोसोई एहिविधलीलाकरनितसोई ४७ पुनिदोउभ्रातस
हितनरराजू निजवयकेवहुवालसमाजू गोपीजनमनमोहिवढावन क्रीडाकरतभए
जगपावन ४८ दोहा देषिचपलताकृष्णकीजोकुमारिवयमाहि व्रजगोपीसवसिमि
लिकेगईजसोदायाहि ४९ सोरठा लषेकृष्णतेहिपास हरषतमनवोलीवचन वेहन
चेदजुतहास अहोजसोमतिसुनहुतुम ५० चौपई कवहुकजाइसंगविनवालू वछ
रनिछोरिदेइविनुकालू करहिरोसयहहसतुहसोई पुनिवारीरवनावहुभाई ५१ या

30A

यहही पयस्वर्द्द समेता पैठिताहिग्रहवुध निकेता वचैसोहतकपिनकपिआइ वरजैकोउ
वीजैकरहाइ ५२ बाततपतिपावैनहिजवही भाजनभंजवलेउठितवही जोघरमिलेन
पयदधिकोउ बालरोवाइ वलैहलिसोऊ ५३ पुनिकरकोपकहैहमिवानी हैहोवारगेह
यहआनी पुठुवैजहाहस्तनहियांको रचनारचैलेनकहतांको ५४ पयाउलूषलाहि
मलिरीती धरैजतनकरिकै नुतप्रीती अतिऊचेछीकाजवदेषी पुनिकछूरवैउउपा
इविसेषी ५५ जानेहहीदूधहैयामै विधिरिछिद्रकरैहठितामै एहिनरतनजोरूपल
षाई ताकोगनकछूरहीलषीजाई ५६ दोहा धरैअंधेरेगेहनिजजवकछुवस्तुदुराइ
तवनिजतनमनप्रभाहीपसरसिप्रगटाइ ५७ सोरठा रहैभवनमहपैठि जवगृहकार
जहुविनमन आवनहीगहअैठि कहातिहारोहमलियौ ५८ चौपई देरेचोरकहैहमवा
नी सवैचोरहौमैअवजानी कहैववनमैंहोगृहस्वामी तुमसिगरीझूठेपथगामी ५९ अ
होमहरयहतनयतुमारा देषोलियेभवनसुधारा मेहनमूत्रकरैजहजाई महाचपल
काकहौवनाई ६० घरिविगारिकैकानवलेई महरवातअवसुनुचितदेई चोरीकेउ
पावबहुजानै गुनवहुकहिलगिकरौवषानौ ६१ श्रीमुषसभयनयनअतिसोह
न निरषयसोमतिसुतमनमोहन ६२ सफलजन्ममानामनमाहो मेहमुसकिषीजी
कछूनाही सुतपेष्ठपानेहअतिभारी निसिदिनलीलानिरषसुषारी ६३ नितरूपजुत
जुगलनिहारी जिनकीरजशिवसिरधारी एकसमैसवगोपकुमारा रामआदिमिल धं

४ जोरीकरमकरैनहिमानै ६४ तवहिगषरेसाधुसेजानौ ४

श्री·भा
६३१.
31

करतविहारा छंद मिलकरतसकलविहारवालक जाइजसुमतिसोंकहो सुनुअंबुस्न
सलक्षपालिअवहीभयोमरहेषोमहो ६५ सुतहेतुहितकरकहिजसोहा डाडिकहकैसो
अही भयपायवष अतिचपलचितवनहेषिमुषअनुपमलहो ६६ तुवपलगातडरा
ननहिमरभषनतैकाहेकरी एकहतसिगरेसखानवबलदेवकहसाचीषरी हेअंब
मैंनहिमषोमरइएमषावादीहेंसवै जोसाचुममसुषदेषुतैसवझूठफिरजानेअंबे
६७ जोसाचयहमुषवायतौहसितताममुषवायोमहा अैश्वर्यअव्याहतशिरोमनि
अनल७ हूतमकोठानरतेहा मुषमध्यतिरष्योजगतसवचरअचरराजतहैजहा तहांअनिल
समुद्रशशिरविरै व्योमगिरिनिजद्रिगलहा ६८ पुनिद्वीपअरुसुरलोकतेहभूगोलअ
मितनिहारियो तनमाअगुनअरुतेजसहवुलोंडरचनासारियो ६९ सवजीवका
लविलोकअद्भुतचकितचितउरधारियो सवभिन्नभिन्ननिहारजसुहासंकहियमन
हारियो ७० दोहा वदनविहारयोसुअनजव तामुषमेहैभूप आपुसहितव्रजसकल
ष्योसंकालहीअनूप ७१ सोरठा वोलीमनअकुलाइ कहासपनसोमनलष्यो पुनि
वहुआरलषाइ अहोसपनतोहैनही ७२ चौपई किधोंअहेयहदेवकमाया तोपुनि
अपरनलषयोछाया किधोवुधममभ्रमकछुभएऊ जिमिदर्पनप्रतिविंवतलहेऊ
७३ जोइमितौपुनिघटैनथैसे अंतरकसदेषियेकैसे भीतरलष्योजगतसवनाना
पुनिवाहरयहअहैप्रधाना ७४ एकुतर्कनकछूमनमाहि आईअपरभांतकहतकै

वनाई किधौं अहै ममसुअनसुभायक यह अचिंत्य ऐश्वर्य सुभायक ७५ अहै स्वभा
विक गुण एहि केरा एहितें है येउ अचर्ज घनेरा मन वानी करि तर्क न जाई जे आश्रित
जगसंहारहाई ७६ कारण अधि स्थान है सोई तातें जग प्रतीति सो होई अकथ कथा
सब है जेहि केरी वेदो तेहि पद गुनि बहु बेरी ७७ छंद वेदो बहु बेरी पद सुघटेरी जेहि मा
याबल अमित अहै यह पति मम सुहर सुतगुन मंहरि मोहि सबै व्रजरानि कहै ७८ यह
गोप सु जेते है मम तेते अहमिति मन जेहि है तु गहै मम गति है जाई ईश्वर सोई अजास
हा जेहि सुवस रहै ७९ दोहा विदित न बल लषि मातु कह न वहिं ईसत तत काल प्रबस नेह
मई अजा प्रगटी परम विसाल ८० सोरठा सपहि भूलि गैयो ग्पान लयो लस कह गोह
भरि हृदय नेह उनगान भयो तनो रुह प्रेम बस ८१ चौपई प्रथम सरस सम भए उसु
भाऊ मिटेऊ सान सुधरहे ऊन काऊ प्रभु माया अति प्रबल महीसा जा करि मोहि
त अज गिरि ईसा ८२ श्रुति जेहि सकल रूप करि गावै ब्रह्म उपनिषद नाम बतावै प्र
ह्मषं सांख्य वाही जेहि कहही योगी परमात्म तेहि भनही ८३ भगत श्री भगवान बषा
ना एहि विध जस सु गावै श्रुति नाना हरि माया बल प्रबल सु जाना गोपी ताहि सु अन
करमाना ८४ सुनि यह कथा विचित्र अनूपा श्री शुक सो बोल्यो नव भूपा हे मुनि नें
द कहा तप कीना लही महत निज उदय प्रवीना ८५ जसुमति कहा करम सुभ करेउ
हलदेव जेहि सुय अति भरेउ जासु पयोधरि हरि कियपाना पुनि तेहि बालचरित

श्री भा०
९३
32

करिजाना ८६ द्वियौग्रमित्तसुषश्रीभगवाना भए ग्राइसुनक्तःपानिधाना गोपसु
ताकहोइत्तवकीना जिनकैवसंभयक्तसप्रवीना ८७ दोहा जासुवाललीलावर
नहेपतिलक्षीवनाइ नहिजान्योपरिव्रलहरिलषै केहिभाइ ८८ चौपई हरिली
लाग्रघश्रोघनसावन कविकोविदगावहिजगपावन सोलीलानिजनयननेदेषी
कहोकियोतिनपुनहिविसेषी ८९ यहमुनिकहोमोहिसमुझाई ममजियसंसयपर
हैनकाई मुनिनपवचनकहतमुनिराया साविधानसुनहेनरराया ९० द्रोणनाम
वसुप्रवरसुजाना धरानामतियतासुप्रमाना विधग्रागयागोपालनकीन्हा कंज
सुश्रननतेवरउनिलीन्हा ९१ तोनवसतभूमहिमोहिनाथा भक्तहोइप्रभपदसुभगा
था होइग्रनन्नभक्तभवहरनी औरनकछूचाहोजगकरनी ९२ एवमस्तुविधव
वनउचारा धरद्रोणनुमपरमउदारा भए नंदसोजससजगभाजन धराभईजसु
धाहेराजन पुत्रभावश्रीपतिकहुजाना भईग्रनन्यभक्तिपरधाना गोपीगोपश्री
तिहिनदिनहूं वढ़नलगीनितप्रतिरससवहूं ९४ विधकेवचनसत्यहितहेनू
नाघगएवलिनेहनिकेनू भ्रातसहितविहरेग्रहजासू ग्रहोभागपसुषकोकह
तासू ९५ दोहा नेहमहहरिव्रजराजघरिकरतकेलिजेहिरूप रामकृपाकेवसन
हियरामस्यामघनरूप ९६ दोहाएगारहसुषहछहपोचसुभरीते नवसुदरस्व
सोरठा श्रपरचौपईनीत ९७ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेनवमस्कंधेभाषा

32A

निबंधे जसोदा विश्वरूप दर्शनो नाम अष्टमोध्यायः ॥८॥ दोहा ॥ पय उफन्यौ पाव
क धरयौ निरष जसोधा धाइ नाहिं लांति कर नैं गई नजि सुत अति रिस आइ १ भाज
न कौ भानि हरि भग्यौ महरि हिये रिस आनि बांधउ लूषसो सुतहि एहि नव मैं मदु आ
नि २ चौपई एक समय श्री जसुमति रानी आपु मथै दधि अति सुषमानी अपर का
ज पठई ग्रह दासी आपुहि दधि मथहि सुषरासी ३ मथत दही गावे गुन भूरी हरि छवि
सुचरित सुभग सुरभूरी पृथु कटि तट पट अंबर नीको सकल सुवेस सुषद सबही कौ
४ सुत सनेह पय श्रवत उरोजन रजु कर्षत चलकंकन सोहन कंपित गात बिंदु श्र
म श्रानन कुंडल चल जनु सुषमा भाजन ५ कबरी ललित गलित सुम फूला मुष छवि
बेद कहत कवि भूला नंदलाल जननी छवि देषी बंद वायु रो रंक विसेषी ६ नाहि
समय पय पीवन हेतू आइ गए नंद सूनु पानि केतू मथति थनियां कर गहि रोका महरि
अनेद भरी लषि तोषा ७ हिये प्रमोद गोद भरि लीना सुत सनेह पय श्रवन प्रवीना
पान करावति बदन निहारी मुसुकन मंद मयन मद हारी ८ दोहा सुत सो भामु बला
गि वर दोरी पय हित लाग ज्यौं गुंजा कहुं होर को उमहा दिव्य मन त्यागि ९ सोरठा ध
री छसानु वनाइ तह अवरन हित पय धरयौ वरी आगि अधिकाइ दूध उफनि वाह
र चल्यौ १० चौपई नाहि देषि जसुधा जब दोरी हरि तजि गई महा मति बौरी नहि पय पा
न तृप्त मन भएऊ नव हरि हृदय रोस अति छएऊ फरकत अधर अरुन अति नीके का

श्री भा
द ३३
33

दिरदनछदनिजद्विजहीके सिलापुत्रलैकररिसमानी दधिभाजनभंजेउसुषदानी
१२ मषाहरनलोचनभरिवारी अंतरगहतवगएमुरारी वैठिएकंतिकादिनिजपा
नी माषनषानलगेसुषमानी १३ पयउतारयसुदातहंआई कूरयोलष्योपात्रतेहि
ठाई निजसुतकर्ममहरितवजानी लषैनतेहतेपुनिमुसकानी १४ उलटेउलूषंपरि ल
चढिनाया माषनदेनकपिनिजहाथा चोरीहेतुचपलवषचितचारू कपिनषवा
वतसभयनिहारू १५ दोहा निरषजसोदातनयनिजमेरमेदहसिआइ हरिएहिरू
पसुअनढिगगईतहांचुपचाप १६ सोरठा लषीन्हामनिजमातु लएछरीआवै
षरी मनहुसभयसमगात उतरतहांतेभजचले १७ चौपई नयकरितहांकारमन
जासू नहिप्रवेसकरिसकतेहिमासू ताहिधरनधाईनंदघरनी अहोभूरिभागपतेहि
करनी १८ थूलसरीरचलितगतिधाई अतिश्रमस्वेदवदनपरछाई विथुरेकेसवं
धसिरताके सुमनगलितअनुगतपदजाके १९ ऐहिविधमहरिधाइहरिपाछे ग
ह्योसुनेहकुअरकहुंआछे कृतअपराधरुदनहरिठाने मातुवदनदिसिदेषिलजा
नै २० पोछतपानिनयनजलढरई कज्जलवगरिवदनछविकरई भयविह्वलअ
तिक्रन्दकिसोरा जननीगहेउपानवरजोरा २१ नयनतरेरिहियअतिप्रीती उर
पायोसुतकहिंएहिरीती जानिभीतसुतजसुमतिरानी छरीत्यागिअवयहमनआ
नी २२ दोहा वांधोयांकोदामगहि यहइछामनमाहि तासुतेजवलिअमितसवजा

33A

नतएहिकौनहि २३ सोरठा अंतरबहिनजाहि पूरबपरिनहिजाहिकै वह अंतरबहि
आहि पूरबपरसबजगतकौं २४ चौपाई बंधनहोहिकहुराजन अंतरबसुहोइन नरहु
घुभाजन लघुदीर्घजबबसुविभागा नबबंधनकरिकारनलागा २५ दीरघहोइर
जुजबकोई लघुकहबंधनकरिसकसोई पूरनप्रभुसबन्यूननरेसा तेहिबंधनबहि
वडोअंदेसा २६ साखी अरुअव्यक्तनियंता मनुजाकृतप्रभुश्रीभगवंता ताहिमानि
निजसुअनजसोदा बांधौतेहिहठिकरिमनमोदा २७ कृतअपराधसुअनकहुआनी
बांधनलगीहियेहठिठानी लेकरिदामपरतनजबही भुगअंगुलरजुघटिगोतब स
ही २८ अपरदामपुनिकरिसंधाना सोउयुगअंगुलघट्योनिदाना अपरदामआ
न्योपुनिमातू सोउघटिगोबंधननहिनातू २९ पुनिदिसिकरअन्योऐकदामा सोउ
नपूजबंधनपरिनामा जिमिजिमिरजुजोरैनेहरानी सुसुकहिसबगोपीसुषमा
नी ३० बालकलीलाकहीनजाई अचरजकौनकलषिहरषाई अपनहूंबिह
सीलषिलीला बिसमितिहियलषिसुतगुनसीला ३१ छंद सुतगुनलषिलीलाम
नभईषीनाषेदगातमनसोचभरी देषीनिजमाताश्रमबहुगाता बुलेकेसभईषु
मनजरी ३२ अतिपरमकृपालादीनदयाला आपुहिबंधनधारि रही जोलैाम
हितारी रजगुनधारी बंधनतौलगिनाहिधरी ३३ दोहा जबहिसलगुणप्रगयहि
यतबहीकरुणाकंद प्राकृतइवबंधनलहे श्रीपतिश्रीनंदनंद ३४ सोरठा एहिबि

घसवहि दिखाइ अहो भक्ति आधीन मै जावस सकल रहाइ विधि गिरी ससका हि सुर
३५ चौपई अहै विरंचि पुत्र हरि केरो ताको तनय भव स्फ तिह मिटेरो रमा जासु प्रियप्री
तम नारी तिनहूं असं सुष लहा न भारी ३६ जस सुष लहा जसोमति भूपा असको
उ लहै न लह्यो अनूपा तापस अस सुष लहा न कहूं गति अभिमान भए जो ताहू ३७
जस सुष गोपिन लहा अनूपा अपर लहै न हि असि सुष रूपा जप तप तीरथ व्रत अ
रु नेमा जोग जग्य जे सुष हि न प्रेमा ३८ इनि तै जिमि हरि सुवस न होई एक भक्ति तै
हरि वस सोई ज्ञान कथा निन मुनि सो काना जिन कै हृदय वसे भगवाना ३९ मा
नुग ईय्रह कारज कोई हरि कृपालि जन रछक जोई भक्तन हेतु लीनौ अवतारा दु
ष्ट दैतनन कूं करै संघारा ४० द्वैयौ अर्जुन द्रुम युग भारी प्रथम धनद के पुत्र सुषारी
नारद श्राप दीन्हा सठ जानी अति मद तै न रहत न भाष्यानी ४१ दोहा नलकूंवर माणि
ग्रीव तेहि नाम रव्यात जग जान अठ ये युग की वात यह को विद कहत प्रमान ४२
सोरठा सुरपालक व्रज ईस नयन शिरोरुह चंद्रमष जन पालिक जगदीस रामकृ
पा के हिय वसो ४३ दोहा॥ कहे सोरठा पांच वर दोहा पंच वषानि॥ छंद एक वर चौ
पई एह मह हि धरेउ प्रमान॥ ४४॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे भाषानि
वंधे गोपी प्रसादो नाम नवमो ध्यायः॥ ९॥ दोहा॥ वंधु न लहि निज मो तुतै उलूषल
सहित मुरारि जुमर्जुन छितै डारि कै गति दैहै असुरारि १ अय यहै व वर रूप धरि

ल॥

34A. ४

हरिअस्तुति बहु भाइ करिहैं द्वैकरजोरिकिएहि हरसये अध्याय २ चौपई सुनि नृपक
थापरमसुषषानी बोलेउ हरषसुधासमबानी हेमुनि कहियआपकौहेतू भएउ कछु
तनअघवरकेतू ३ कापअपराधकरयोनिनभारी जेहितेसुरऋषिभएदुषारी यह
सबनाथ कहहु करिदाया मैंकिंकर मनवचमुनिराया ४ सुनि नरपतिबानीरससा
नी बोलेश्रीसुकहियसनमानां धनदपुत्रअनुचरशिवकेरे हिमगिरिउपगतिसुरग
निघेरे ५ मेहाकिननदिसुंदरदेषी सुरापानकियमतिविसेषी मदकरिभमितनय
नविसाला पुष्पतिवन अरूतियगनमाला ६ गावहितियगनकोकलवयनी लस
तवनजसुरसरिसुषदैनी तांजलप्रवसेउतियनसमेता विहरतिभएउतियनसुष
देता ७ जिमिगजकरिनीसंगविहारू विहरैमदकरिरहितविचारू ऐसैविहोऊ।
तियनकेसंगा विलजुफिरैकामकोमदकोउररंगा ८ दोहा हरिइछातैंदेवरिषिआ
इगएतंहरूप देषिहोऊमदमततेहधनमदयौवनरूप ९ सोरठा सुररिषिकौं
त्रियदेषे लज्जाजुतअतिशीघ्रसो पहरयोवसनविसेषमानआपभयसकुचहिय
१० चौपई रहेमगनदोऊमदभ्रामननारी देषिहोविरिषिभएदुषारी श्रीमदांधमदिरा
कियपाना महामत्तरिषिनारदजाना ११ तासुमोहिमदनासनहेतू दिएउआपमु न
निकृपानिकेतू आपदेनजवमनअनुमाना प्रथमहिंबोलेवचनसुजाना १२ से
वैविषयअनेकप्रकारा रातिदिवसपुनिवारहिवारा सतकुलजनममपाइमदभा

री विद्यामदयौवनदुखकारी १३ इनिकरखु अनर्थसनहिहोई श्रीमदजिमिनासैसव
ते खोई श्रीमदसवदोषनकरिमूला जेहधनतियगनसवसूला १४ श्रीसवधूतत
होइनिहोई श्रीमदतैसुधरहैनकोई श्रीमदकरियहतुछशरीरा वधैताहिहितजी
वनपीरा १५ तदमावसयहजीवरहाई विषैश्रासमनरहौवंधाई धनमदतैनर
रंत मूढश्रयाना तुछतेतितश्रमरसुजाना १६ दोहा भूमिदेवनरदेववपुश्रपरजहां
लगिकोइ तामिविशमस्महै श्रंतकालमहिसोइ १७ सोरठा ताहिदेहलगिमू
ढकरैद्रोहपरजीवकों महामोहिश्रारूढ परैनिरयसोश्रवसकरि १८ चौपई नि
जस्वारथउनकछूनजाना जिनियपरद्रोहमोजरतमाना पुनियहदेहकवनकीश्रा
ही यहनिश्चैसोकहैनश्राही १९ देहजीवकाहै यहताकी पितामातपालेकेवा
की नृपतिकहैचाकरयहमेरौ श्रंग्नस्वानकहिश्रंतहुचेरौ एहिविधनिश्चयन
हं हियकाकी करैमूढममिताश्रतिवाकी गतिश्रव्यक्तताससवकोहू पढैगुनैपुनि
सुधिनहिताहू २१ जहतैहोइतहांचलिजाई नहिथिरताकविमनिजनगाई ताहि
म देहिश्रांतमससमानौ कोप्रवीनजनहतैसुजानौ २२ विनामूढश्रसकरैनकोई जेतुह
नैनिरदैनरसोई श्रैसेश्रीमदांधजेप्रानी मोतियानेत्रधूंधफियानी वहरारहैज
गरवकरानी तेहिहरिहरश्रेजनसुखहानी नारहिरिहपरसुखइमहानी निजतनस
रसलखैश्रनुमानौ २४ दोहा जिमिकंठकतेपगछिद्योविषालहीसवताहि सोनि

35A
जवपुसमजानिजगविषावहैनहिकाहि २५ चौपई प्रथमलीनवानीअकुलानी
सकलजीवनिजवपुसमजानी द्रोहनकरैकर्ममनवानी २६ जोकोउयांकहपीडा
देई तदपिनपरदुषचाहतसेई कोटिकाहितनविध्यौनजासू परसुषदुषसोलषैन
आसू २७ हरिदूतैभवरुजमिटिजाई एहिविधसुनअवकहतवनाई हरिदेहगर्वत दि
सदाई अहंकारसवमरदनसजोई २८ अनायासपायोदुषपुंजा सोइवडुतपजासौ
मरगंजा नित्यछुधाक्रसगातमलीनै गतधनअन्नवाहमनहीनै २९ इंद्रीगणसूषै
पुनितासू हिंसाकर्मरहितभाआसू तिनकहिसंतमिलहिअनयासा समदरसीजे
हिहरिपरआसा ३० तासुसंगतसपासवनासो होहिसुधहियमलहअवनासो जन्म
मरनकटिकर्मफांसी निर्मलमनअभयसुषकीरासी ३१ दोहा साधुनकोधनप्रिय
नहीनहिहरिकहप्रियहोइ जोकदाचिकोउइमिकहैऐसीघटैनकोइ ३२ चौपई स
मचितअरुप्रभुचरणअधारा ऐसेसंतअवनिसंसारा धनगर्वितजेअसतअभा
गी महामूढविषयाअनुरागी ३३ तिनतैनेहिसनवेधनअहई मनवचकरितेहि
औरनचहई एहिहोउमदआरूढा श्रीमदांधतियलंपटमूढा ३४ हरिहोइनिकोम
दअवआसू लोकपालसुतकुपथविलासू दुर्मदनगनलषेउनहिआपू तियलंपट
श्रीमदपरतापू ३५ तातैतरुतननलायकहोऊ श्रीमदफलभोगौसंदसोऊ जासोप
निऐसोनहिकरई देविसंतमुनिहियमहडरई ३६ कोमलचितमुनिपरमदयालू

श्री भा
द ३६
.36.

आपअनुग्रहकरतनिहारू ममप्रसादसुधभूलनतोही जिमिभइअवलोकबड़ेरो
ही ३७ दिव्यवरषसततरूतनपाई नेहसुअनसपरमसुषदाई बहुरदेवतनह्वैहे
तोरा सतवचनजानेहुतुममोरा ३८ मुनिहरिभक्तकृपाइहोनीकी भवभजिनिगोज
निहवजोकी जडजोनिमैंकरौप्रवेसा तुमहोकेवजप्रह्लदेसा ३९ दोहा एहिविधकहि
सोदेवरिषिनरनारायणधाम नलकुवरमनग्रीवभेजजमलार्जुनजेहिनाम ४० सो
रठा सुषभागवतमाहि गिरासत्यतेहिकरनहित सहितउलूषलताहि हरैहरैचलि
हरिगए ४१ चौपई अतिप्रियतममोहिसुरिषिआही कहेसुमोहिकरनोचितचाही
जोमुनिप्रथमगिराकथूगाई सोअवस्यकरनौअवआई ४२ धनदसुअनजेसेहेआं
ला गे होइवेगितिमिहरिअनुरागे जुमार्जुनकेअंतरजवही प्रविसेकृस्नचंदनपतवही
४३ भयोउलूषलतिरछोआइ श्रीदामोदरपरमप्रताइ उषलेषैंचउभयतरुमूला
परसतहीसवमिटिगोसूला ४४ मूलवंधुउषरयौहोऊतासू मूलीसरिसभयोतरुआ
सू अतिकंपितभामूलसमेता लघुघूलडारिसवजेता ४५ वालकवलअतिपरमवि
साला गिरयोभूमिधुनिभइकराला दोऊतरूतेद्वैपुरुषअनूपा प्रगटेकेंचनसमसु
भरूपा ४६ अतिसोभिततनदिसाप्रकासी मनहुकृसानुप्रगटतमनासी करिप्रनाम
पुगकरिधरसीसा वोलेवचनविनीतमहीसा ४७ छंद वोलेविनीतेसुप्रीतिजुतसु
तधनदकेगुनआगरे हेकृस्नकृस्नमहापालिजइवरयाहिअवकरुदेकेरे ४८ वरअ
ला

36A

चरसूछमथूलजेहलगिजगततववपुहेहरे यहविस्वजेप्राणीरिपुतसवकेनियेतातु
मपरे ४९ तुमकालरूपअनूपअव्ययविस्वविभुभगवंतजू यहप्रकृतितत्रयगुनयुक्त
तवतिनरच्योजगतअनंतजू ५० अगजगजहांलगिनाथसवतुमरहेव्यापसमस्त
जू तुमपुरुषपरमात्मअछसविमेंएकवेहमनंतजू ५१ दोहा तवकृपाछतेजीवप्रभुजा
नैछत्रविकार तुमहोएकअनेकपुनिश्रुतिसवमिलनिरधार ५२ सोरठा कहेउसक
लममरूप तोकाहेनहिसवलखाहि तहोसुनहुतवरूपकोजानैकैसेलखै ५३ चौपई
यहजोदृस्यमानप्रभुआजू सोऊनहिजानसकेयवजराजू प्राकृतगुनकरिदेहविका
रा वुधज्ञानइंद्रियअहंकारा ५४ इनिकरग्रहनहोहुनहिकवहूं तुमइच्छालवकेहि
यजवहूं अगुनअचिंत्यदृस्यनहिकाहूं अजअनंतगुनलहेमथाहूं ५५ गुनआवृत
यहजीवगोसाई जानिसकेनहिकोटिउपाई सवकेप्रथमसिद्धतुमनाथा कौजानैप्र
भुतवगुनगाथा ५६ योनैवासुदेवभगवंता नमोनमोतवचरणअनंता निजमायागुण
करिप्रभुन्नाहू रहितगुप्तद्वैप्रलयप्रनाहू ५७ सकलजीवकेतुममहिनियंता नमोनमामी
ईसअनंता जिमिघनतरनितेजनैहोई पुनिरविकोढापतिहैसोई ५८ दोहा विनुविग्र
हपरिव्रह्मप्रभुविग्रहधरहुअनेक अतुलवीर्यऐस्वर्यतवगुनवहुसुमतिविवेक ५
९ सोरठा पुनिअगिजगिकेमाहि अंतरजामीवहुतनुम वहुंलिप्ततुमनाहि सदाअसं
गीविस्वपति ६० चौपई सोतुमजगमंगलकेहेतू वासुदेवभएकृपानिकेतू अरूनरमुक्त

हेतुहेस्वामी प्रगटेव्रजतुमअंतरजामी ६१ वंदौप्रभकल्यानसरूपा पुनिमंगलप्रदरू
पअनूपा जदुपतिवासुदेवभगवंता वंदौजुगपदइसअनंता ६२ तवअनुचरकिंकरमो
हिजानो कीनीक्रपानाथसुषमानो वंदौतवपदवारहिंवारा क्रपासिंधुकियक्रपाअ
पारा ६३ सुररिषि[illegible]षकरयौअनुग्रहमोहौ तवमैप्रभनिजनयनजोहौ धरैदेववपक
वहुकमोहौ प्रथमसरिसमतिउपजनकोहौ ६४ यहवरमोहिदेहुजदुनाथा जानिदा
सनिजकरउसनाथा तवगुनकथनगिरातहसोऊ कथासुधातसुतवहसोऊ ६५ ह
स्तसदातवकर्मकराही हरिपदकंजमधुपमनताही जगनिवासतुमहेजगदीसा क
रेउप्रनामभूमधरिसीसा ६६ तवसरूपसवसंतसुजाना नयनदरसतेहिरहलप
टाना जथासकमतअनुसारा हैगुनलीलाअमितअपारा ६७ दोहा एहिप्रकार
अस्तुतिकरीधनदसुअनजवभूप गोकुलेसवोलेविहसितिनसुषअनुरूप सोग्या
वंधेउलूषलदाम वालेश्रीजदुवंसमनि लष्योप्रथमयहकाम रिषिकरुनानिधिजा
रजव ६८ चौपई मंदमंदसनवानीकरिकीन्हा पुनिअतिसेसुषतोकहदीन्हा श्रीमदकं
रियुगनयनविहीने श्रापभूपमलअंजनदीन्हे ७० ताहिहेतुममदरसनभएउ सं
तश्रापसुषप्रदअतिकहेउ समचितजेकोउसाधुसयाने आतमरामसकलमहिजा
ने ७१ मोपदविंदसमर्पनजासू तेजगमेसवक्रपानिवासू तिनकेदरसमात्रतेप्रानी
नहिभववंधनलहैसुषमानी ७२ जिमिरविउदयनसैतमभारी सवलोचनकौंसुषमह

37A कारी तिमिममजनसवकौंसुषकारी सहाजीववहितकरहिविचारी ७३ हेनलकुवर
अवतुमहोऊ जाहुभवननिजभयनहिकोऊ सहजेभावममपरभातोही जोसोसदासु
षीनरहोई ७४ पुनिभवलहैनसोनरजानू जिनसुक्रतममपहरतिमानू इमिजवकृष्णगो
कृष्णसुषवानी हियहरषेअतिसेसुषमानी ७५ करयोप्रदछिनहरिकरतवही पुनि
स आयुमागेउनितिहिछिनही वंधेउलूषलहरिसुषदेषी लेहुअमितसुषधर्मविसेषी ॥७६
दोहा प्रभुआसावरपाइदोऊ महादिव्यवररूप गएवहुरउत्तरदिसिहि निजआलय
सुषरूप ७७ सोरठा वंधनलहिभगवान परवेधनतोरेउतुरत असिदयालकोऊ आ
नि नाहिमूढमनवेगिभज ॥७८॥ दोहा नवसुंदरकहे सातसोरठामित्र जुगछंदवरचौपई
एहिअध्यायविचित्र ॥७९॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधे भाषानिवंधे नल
कूवरमणिग्रीवमोक्षोनाम दशमोध्यायः ॥१०॥ दोहा ॥ श्रीगोकुलतजिगोपगण करिवें
दावनवासु तहांक्रिस्नसवबालमिलवत्सपालहैंतासु १ वत्सवकासुरमारहैए
हिग्यारहकेमाहि यहअध्यायपुनीतअतिहरैपापछनमाहि २ चौपई हेन्पवछछगि
रिउतेहिकाला नंदादिकसुनिशब्दविसाला तुरततहासेकिनगहआए असंनिपात
दवभयउरछाए ३ तहांआइतिनक्रिस्ननिहारी वंधेदामउषलमहितारी छितिपर
गिरवृछहोऊदेषा भएउचितभ्रमहेतुनपेषा ४ पुनिसुनऔरनेहअवलोका ऊषल
दतिउतषैंचततोका तरूतनदेषितर्कमनकरई केनिसिचरडारेगिरपरई ५ कैं

श्री भा॰
६९

कैकोउ देवकर्मयहकीन्हा मूसलउषारि अवनधरिदीन्हा अहो अवमोलागतमोही का
रणकछुनपाइअतिजोही ६ भयउतपातसेकजियआनी नवहिंवालवोलेमृदुवा
नी अहोनंदयहवालतिहारो सोतिरछोकरिउषलविचडारो ७ छुहितहिंगिरोवृछ
यहभारो हमसवहीनिजनयननिहारो यहहमसवालकनहिंदरस साछीसवकोई
खरहुनपरस ८ दोहा औरसुनोतुमवातइकएहितरुतैयुगदेव प्रगटेअद्भुतरूप
तेउकितगएलषेउमेव ९ सोरठा लरिकनकहीजुवात सोकाहुंनहिंग्रहनकिय
हियमहिंकोउसकुचात भएजुमनसंदेहयुत १० चौपई नेअपनेमनकरहिंविचारा कि
मिअनयासगिरोतरुभारा ओकरावितोस्योयहवालू जाननपरैकर्मगतिकालू ११ नं
दहिहरिमायालपटानी सोअवसुनतोहिकहौंवषानी वंधोउलूषलनिजसुतदेषी
इतिउतचैंवतहरषविसेषा १२ तुरतजाइवंधनहियछोरी जनवंधनजिनअगनित
तोरी हरिनिजमनसेकायहआनी लषैनकोउजिमिमोकहआनी १३ ताहिहेतुअति
वालविलासू करतभएतवजगतनिवासू कवहुकतालिदेइव्रजनारी नाचतहस
देवअसुरारी १४ कृष्णगुणगावैंव्रजवाला अद्भुतचरतअधकविसाला जिमिअ
जानप्राकृतसिसुकोई लीलाकरैकरततिमिसोई १५ दोहा गावतजबेसुरकवहुंमुग्ध
मनोहरिगीन छंदजंत्रजिमितारवस हरिखतंत्रवसप्रीत १६ चौपई कवहुकगोपी
सहजसुभाए कहैपीढआनहुसुनिधाए नहोजाइहरिपीढउठावै उठेनभुजआक्षेप

38A

सुहावै १७ एहिविधकछुनितसुषदेहीं करिलीलाजनमनहरिलेहीं जेविद्यानजगत
महिकोई तिनहिहिंयावतयहसुषसोई १८ मैंनिजंमंत्रपसहावसअहहुं वेदगिरासा
वीकियचहहुं एहिविधलीलाकरिबहुभांती ब्रजकहुसुषदियहहयसुहाती १९
कौऊएकफलवेचनकहल्यायौ लेहुफलहमसिवचनसुनायौ गएलेनफलसवफ
लहाता धान्यदियौलेहहुकरताता २० धान्यलेतभाजनगोपूरी हिस्परतनमनिग
नगुनभरी जुगनरूभंजनकहुएकवारा गएनहीतटकरनविहारा २१ नवहिमात
टेरतिहैमैया आवहुवेगिजाइवलमैया आजुजनमकौनषततिहारो देहुदानवि
प्रनसुषकारी २२ दोहा देहुदानधनधेनुवरवसनविसदवहुरूप कंचनअंगंगीर
ननजुतवेदविदिनसुषरूप २३ चोपई देषेरबुएसषातिहारो मातुअलंकृतकिय
सुषकारे नुममजुनकर्करहुअहारू बपुभूषणधरिकरहुविहारू २४ जसुमति
वहुविधसुतननबुलावा हाररहीसुतनढिगहूंनआवा क्रीडासक्तवालहविराचे न
जिनहिसकैषेलसुषमाचे तवजसुदानिजग्रहफिरआई पठईवलमातहिसमुझा
ई व्रजलाहिकजेदेवअसेषा तासुसुकरमनिकहमविसेषा २६ ताहिजसोमतिंसुर
करमाना अपरभावतिनकछूनजाना वलमाताअतिसेप्रियमानी गईसुअनके
निकटसयानी २७ नेहनिवधवधुअतिनाहू उभयपुत्रकरिगहिलियआसू ल्याई
निजग्रहसुअनसयानी उत्सवकरीजसोमतिरानी २८ दोहा एकसमैवलनगए

श्री भा
६३५
39

ग्वालसहित जदुनंद बेर अंतक्रम है गई षेलत बढ्यौ अनंद २९. सोरठा सुनसनेह
चितमाहि अवनपयोधर छीरवंहु बलीमहर सुतपाहि देषि उबेर नलगी चौपई
कमलकमलेहि पंकजनैना नानएहि सुनसुंदरबैना करहु तातममअस्नानपाना षे
लौबहुत बार मैं जाना ३१ क्रीडाश्रम आपासुततोही छुधालागि है है मैं जाहो तजि
को विहार आवहु है ताता है बलदेव आउ सह भ्राता ३२ प्रातकाल तुमनहिं अहारा भई
कं बेर बहु नंदकुमारा आइकरेउ भोजन बलभ्राता परषत हैं तु सहित वजताता ३३ बज
पति भोजन करि यह काला आवहु वेगि नंद के लाला आइ लालेर पतिसुष देहु जा
हु वालरे निज निज गेहूं ३४ एहि विध अमित लहौ सुष गोपी अपरनलहौ है नहि
कोपी शिवसनकादिक जापद धावै सो गोपन संषेलमचावै ३५ लषि कृतपानगो
पवरजेते मिलि सब आइनंद ग्रह तेते वजकारज हित मंत्र विचारू करन लगे हित
नंद कुमारू ३६ छंद हित करन लागे मंत्र सवन ह सुष एक उपनंद जू तेह स्यान वय
दे सव अधक सुंदर वचन कहि सुष कंजजू ३७ पुनि देस काल विचार कवनो कोउ न
लहं गुन अंत जू ते हियराम कृष्णकृपालकी प्रियकरन हित मति सेत जू ३८ कहे
र नंदसुन इतनेउ डौउतपात इनि आयो घनो एहि बालनासन हेतु आई पूतनागर
लासतै नौ यह वच्यौ देषहु देव बल वहमरी अपने अयनसौं हमचहत गोकुल हित
सदा इति वसहु जनि अवहीनसौं ३९ दोहा पुनिवच्यौ सुतसकट तै गिरयौ दूरवह जा

39A

ई कृपा करी ताबिलियेसुकृत फलनौतनवस्त्राइ ४१ सोरठा चक्रवातके रूप अयौ
प्रवलसुरारिषल नवसुतपरमअनूप हरिनभपथवहलैचलै ४२ चौपई गिरेसो
शिलापरदुष्टअभागी बच्यौसुअननवकोउवडभागी पुनिद्रुमअंतरगतियहवा
लू तहांवच्यौयहपरसनकालू ४३ औरौअपरअरिष्टअनेका भएउवहुतपरल
हेउनएका जौलगिअपरउपद्रवकोई वजअभिभवकरिसकैनजोई ४४ तेहि
पहिलैसुतपरिजनसाथा चलहुवेगइततैव्रजनाथा सज्जनसुहृदसवअनुगसे
ता चलिवेहावनरखउनकेता ४५ तहांललितफलफूलसुहावन धेनुसुखद
काननसुषपावन गोपीगोपिधेनुहितकारी यदुरितसघनछाहमनहारी ४६ अ
रुगिरसुभगपुन्यतरुरोचक तरुद्रुमलतातापत्रयमोचक तहांचलियेजनंक
रउनविलंवा तहसवकोसुषअहैकदंवा ४७ होहां सकटवेगिजोरिहुसकलगोध
नअग्रचलाइ चलहुवेगपरकरसहितजौमतितुमहिसुहाइ ४८ सोरठा तासुवचन
सुनिगोपभलीभलीसभकहिउठे सुनतनभईअतिचोप एकचित्तनितगोपसव चौपई
निजनिजसकटजोरिततकाला तापरधरसभवववसुरसाला तापरिवालवृद्धजे
कोई तिनहिंचढायोसुषजियजोई ५० जोतेसकटधेनुकरिआगे संगवजाइप्रे
मअनुरागे धंरधत्ववानगोपसजेसारे ढोलनिसानवजेसुषकारे ५१ सहितना
रिनरचलेसुभायक गोपमनस्वीसवसुषदायक रथचढिचलीगोपवरनारी महा

श्रीभा
६४०
40

सुंदरी अति सुकुमारी ५२ नूतन कुच कुंकुम अति सोहि न गावहि वाल चरत कियमो
हन मृगनैनी गजगति पिकवैनी कंठ पहि कंजनु सब छवि सैनी ५३ सब नारि मिल
मिलि कै जूथ्यां रूप न गुन गावैं गाछि गहि गूथ्यां मह हिरयोहिनी अरु सुत होऊ वढी एक र
घसुंदर सोऊ ५४ दोहा सुतन सहित सोभित भई उपमा कवि नहि पाव घकत भए न
भेदवगन धन्य धन्य द्रवगाव ५५ सोरठा सर्वकाल सुषदानि श्री वृंदावन अति सुभ
ग गए तहां सुषमानि गोप सकल लषि मुद भरे ५६ चौपई सब मिल सकटि धरयो
तह जाई अर्धचंद्र आकार बनाई गोपी गोप बसे सुष पाई वृंदावन छवि अमित सु
हाई ५७ राम सहित मिल सषा समेता लषे उ सुभ गवन प्रभा निकेता वृंदावन गिरि
वर सुषदायक जमना पुलिन सपरस वलायक ५८ अति प्रसन्न मन परम उछाहू
सदा सुषद महू है नरनाहू है नृप वाल चरन करि नाना ब्रजवासिन सुष दिय भगवाना
५९ भक्ति वछल ब्रजजन सुषदाई किसोर वपु धरयो कुवर घन्हाई कछूक काल
वीते भगवानू वछपाल भए अति सुषमानू ६० अपर गोपवाल कलै साथ्या वछच
रावत भए जदुनाथा बृजकेनि करि मूमि अति सोभन हरित सघन तन पसु मन लो
भन ६१ तहां चरन वछरा सुषमानी षेलत षेल संत सुषदानी कवहूक वंसी धुनसु
मकरही जाहि सुनै सुरतिय मन हरही ६२ दोहा कवहुक श्रीफल आक फूल लर
कं तपरस पर धाइ रुनुझुन क कटि किंकिनी वाजत सहज सुभाइ ६३ सोरठा छविअ

40A

तपर मग्यअनूप वपहिमाहि जवभजतिहरि वडभागीहेभूप जिनकवहुसपनेलष्यौ ६४
चौपई अपर गोपवालकहैचारी वषभरूपतेहिकरतमुरारी कंवलवसनद्वारितेहि
ऊपर मनहुसत्यसोअपरनदूसर ६५ कतमवषवोलेसंवरई तेहिअनुकरनवंधु।
होऊकरई वोलतवषभसरिसतेहिसाथा लरतपरस्पर जदुकुलनाथा ६६ हंसमयू
रअपरद्विजकोई वोलतसुनितेहिसमसुरसोई वोलतआपुललितवरवानी सोसु
निवैवोलंतसुषमानी ६७ नरतनधरिप्राकृतसिसुलीला करतिविस्वपतिप्रभुसु
षसीला एककदिवसहोऊभ्रातसमेता संगवलिवहुकृपानिकेता ६८ जमुनातटव
छरानिचरावत षेलतसंगसषालिएगावत तहांएकप्रतिअसुरकठोरा वत्सरूपअ
योघरघोरा ६९ कृस्नचेहवलकहृसमुझायौ वत्सनहीयहकालसुहायौ सयनंमो
ऊवलसयनसयानै गएतेंहिढिगसेकनमानै ७० दोहा पूछसहितगहिचरणयु
गतेहिप्रभुमायजदुनाथ पटक्यौवछकपित्थसोमरिग्यौतुरतअनाथ ७१ सोरठा म
हाघोरवपुनासु गिरतगिरेवहुवृक्षगए साधुसाधुकहिआसु वालदेषविसंमयल
हे ७२ चौपई देषिचरनसुरगणाहरषाई सोरभसुमनसवनवरषाई अघलंलोक
पालकजगदीसा वत्सपालसोभएमहीसा ७३ भोजनसंगलिएसुषरासी वछचं
रावतहरिअवनासी एकदिनसकलवालप्रभुसाथा निजनिजवछरालेनरनाथा
७४ गएसवैजमुनातटधाई वछरंनकहपयपानकरई आछपानिकरिजमुनानीरा

श्री भा॰
द॰ ४१
41

लेष्यौतहाएकअधमसरीरा ७५ हिमगिरिशृंगसरसवपुतालू जनुकैलासचलो
पगआसू देषिवालसबत्रसितपरानै कंपितगातहृदयअकुलानै ७६ तबबकदैरघा
ल्लढिगआई निगलगयोसबकुवरघन्हाई रामआदिवालकसबजेते गिलेराक्षसही
लषेतितेते ७७ दोहा विनाप्रानजिमिकरनसब विफलहोइछनमाहि तिमिगुपालविनु
वालसबतनसुधतिनकौनाहि ७८ सोरठा तासुतालुकोमूल पावकसमजरबेलगे
भईमहातेहिसूल उगलदियोनंदनंदकौं ७९ चौपई पुनिवकतुंडपसारविसाला दै
रवैठ्योजहकृष्णकृपाला आवतपकरिचोचगहिलीन्हा चीरचौचतेदैधरकीना ८०
जिमिपटलिलएफारेकोई तिमितेहिकृष्णबधकियहोई तबसुरसकलसिमिटएक
सांथा वर्षसुमनगाईगुनगाथा ८१ आनिकषोरबहुदुभीनाना सुरन्हविजाईकीनपुनि
गाना लषिबृजवालचकितचितसारे जवहिगोपालबकासुरमारे ८२ रामआदि
वालकसबजेते हरषेमनहुपाइनिधितेते प्राणपाइतनकरप्रकासू कृष्णहिलषि
तिमिवालबकासू ८३ निकटआइसबसषासयानै मिलेअंकभरिभरिहरषानै पु
निबछरालैलैघरआए कृष्णकथापितुमातुसुनाए ८४ सुनप्रभुचरतगोपगोपीजन
प्रेमभावअतिसैहरषतमन अरूनेहाहिकसबहीबाला विसमतभएजुनाहीकाला
८५ दोहा साहरसुनिप्रभुकेचरतगोपीगोपसुजान उठैसकलततकालइमिजिमि
आएतनप्रान ८६ सोरठा जाइसबैतेहिकाल निरषंनलागेहरिवदन सुषतेहिला।

41A

द्यौ विसाल लषि गहैं नहि नयन पुनि ८७ चौपाई लषि नंदाहि कगोप उदारा हरष सहित इ
मि वचन उचारा अहो लषो अवरज एहि केरो एक काल रूप बहु वेरो ८८ मरे परंतु
आपु अघ अपनै एहि कौं दुष परस्यौ नहि सपनै करै प्रथम परिहोष गंवारा सो निज आ
क्रन फल लहि निरधारा ८९ अहो घोर हन्यौ वंस कठोरा आवत एहि मारन वरिजोरा आ
वत सो आपुहि मर जाई जिमि पतंग पतंग पावक के माही ९० विप्र वेद वित्त जो कछु क
हही तासु असी सम त्युमुनि भनही कहे गर्ग जो वचन अनूपा भई सत्य सव तेहि अनुरू
पा ९१ छंद भई सत्य तेहि अनुरूप वानी कही जो मुनि गाइ कै इमि कहि अनंद तनेइ सन
तकुमार सकहि चाइ कै ९२ गृह रमत अति सत भांति भूप अनूप फल भव आइ कै प
रसी न तेहि भव वेद ना पर ब्रह्मसुत सुष पाइ कै ९३ दोहा इमि कुमार वय महुं करी ली
ला ब्रजमकपाल निलियान कपि षेल बहु सेतुबंध नरपाल ९४ सोरठा ब्रजवसि नृपा
निधान ब्रजवासिन कहि सुष दियो गई अवस्था जानु कही ज्ञय हकोमार वय ९५ दो
सुभग सोरठा दस कहे छंद तीन परमानु द्वादस दोहा सुभग अति ते षट चौपई जानु ९६
इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा निवंध्ने वकासुर वधो नाम एकादसो ध्या
य ११ दोहा नाम अघासुर है सवर अहि सरूप धरि आइ गिलि हि संग के वाल सव
ब्रजमक्रोध कह पाइ १ छंद कंठ तेहि असुर कौ हरि है प्रान मुरारि एहि वार हि अघाय
महि कथा विचित्र सुषारि २ पै ठि वकासुर के वदन निकसे आपु नुरंत सषा सहित।

अहिवदनमहि पैठहन्योभगवंत ३ वकलीलाकछून्यूनसीमनआनीभगवंत ताहि
हेतुअहिमारिहै संततप्रियजेहिसंत ४ चौपई एकसमयश्रीनंदकुमारा वनभोज
नहुविमनमहिधारा शृंगशब्दकरिशासनिजगाई निकसेअग्रवत्सकरधाई अमि
तवालसवसहितसनेहा चलेतुरततजितजिनिजगेहा निजनिजछाककधेरेनिजछी
के व्यंजनसहितभोजनसवहीके ६ एकएककेसहसवछेरू हरिकेकोगनिसकैनि
वेरू जूथजूथनिजवत्ससमेता वत्सचरावततहंपानिकेता ७ वेत्रविषाणवेनुरवका
री विचरतएहिविधिवनवनवारी गुंजाकाचखरणमणिभूषन निजनिजमाततनिर
षिमतिभूषन ८ तदपिअपनेकरतनअपनेो धातुपिछगुछाकियरचनेो सुमनसु
हामनसेरमपातू तांकरिकियोअलंकृतगातू ९ करतिवाललीलावहुकाननचो
रलहतछीकासहुभाजन मांगनआवरेतहसिताही कछुकषिजाइलेतजवजाही १०
दोहा वनसोभाकेलषिनहितहूसदूरजवजात नवसववालककैरकहिप्रथमहू
आएतात ११ सोरठा कोउएकवेनुवनाइ शृंगनादकोउअपरकर कोउभंगवतगा
ववोलतकोकिलसरसकोउ १२ चौपई छुअतपतत्रिधाहिकोउधाई हंसचालि
चलकोउकवनाई कोउवकवतकरिध्यानलगावै कोउकेकैसमनृत्यवनावै १३
कंपतरूचिदिगरहछगतिताल वैचितवलकरिइतिकहमास हंतहिवायमकुटि
करवांको पुनिनिजभांतिकूदहिगतितांकी १४ कोउकेभेकुगतिकूदहिकाला

42A

निगरसरितनीरतेहिकाला कूदजाइ निदरकोऊनारे सैहेतसपतनिजविवनि
हारे १५ कीन्हेपुन्यपुंजजिनभूपा तेषेलतहरिसंगअनूपा योगीयोगसाधवहुसो
ती मनईद्रीवससुवनिसुहाती १६ वहुतजन्मकरिकष्टअनेका जपंतपन्नतनीरथ
अभिषेका सवकौफलयहहैनरराई कृष्णनयनगोचरजेहिपाई १७ कृष्णसंगजे
हिकरहिविहारा अहोभागवरनैकोपारा नामअघासुरअगजररूपा आयौत।
छिनतेहिठांभूपा १८ लीलाकरतिजहांजदुनाथा सहसकौंवहदुष्टअनाथा जान। न
गएकृष्णजोनाहीकाला अघासुरयहहैत्पविसाला १९ दोहा महाघोरमनजा ह
वलसुरद्रोहीसवकाल डरतजासुभयअमरगनकविमारिहैकेहिकाल २० सोर
न सदारहितभयभीति सुधापानजदपिकियेजपतहरिहियपुनप्रीति प्रभुयातेर
छाकरऊ २१ चौपई अजगरवपुधरपथकेमाही परौअघासुरदुरहिमनाही कृष्ण
आदिंसववालकदेषी भएउक्रोधतेहिंहृदयविसेषी वकीवकाकोमारनहारू॥
हनौकाहिविधकरैविचारू पठयौकंसजाइव्रजआजू हनौकृष्णसववालसमाजू
२२ निजभ्रातारिनेदेहिवुकाई वालतिलोकसुभगवनाई वालमरेसववंजनसिजा
ई प्रानगएजिमितनननरहाई २३ सवव्रजकेशप्रानसमाना विदितिवातयहसव।
जगजाना दमिनिस्त्रयकरिसोसुरहंता भयोमहावपुसरपतुरंता २४ हरिकहग्र
सनहेतुमतिमंदा अद्भुतवपुसवदुषकोकंदा योजनभरितनपुछिकंठोरा गिरिसा।

श्री·मा·
२४३
43

समतुंगभयानकघोरा २६ मुषजनुगुहासमानपसारा भूतलअधरएकतिनद्वारा
उत्तरअधरजलधसोलागा दादमनोगिरिसृंगविभागा २७ भीतरअंधकारअति
भारी रसनामनंहुपंथअनुहारी भुजाहोऊधनुषसमताती विजलजैसातुलक्राति
वषानी २८ दोहा स्वासपवनअतिपरूषजनुमनहुदावकहुलाग अगनिपरसिवि
पिपवनचलितिमिसववालन्हलाग २९ सोरठा देषिअघासुररूप मान्योवकजसो।
भामनहुं अजगरतुंडकरूपगिरसमलषवोलेंवचन ३० चोपई अहोमित्रदेषहुएहिआई
अहैजनुकौउकेगिरिभाई नाघनाघकरूणानिधदेवा कालमनहुयहकरिहिक
लेवा ३१ सषाजेनुबोलगेकीनाही रहेोउपसारवदनतोचाही वालनसहितसमे।
किनषाई वाहरहोमुषसररसलषाई ३२ निश्चयरविकरअरुणसमूहा घनसो
परमिलगतधरन्यूहा तिहिप्रतिछायाधिरसवठाम् लगतश्रोठसमसुंदरधाम्
३३ सक्यासघनगोहरमाही झकनीदाईसरसमध्याही तुंगसृंगराजोदमिराजतद्वि
जसोभासमसुंदरभ्राजत ३४ पथयहसुभगदेषियेकैसा रसनासरिसलगतलषुजै
सा संगमंध्यतमअतिसैभारी जनुमुषमध्यअहेअंधियारी ३५ दोहा दावउष्णवर
वातयहभासतस्वाससमान सषालषोयहसर्पसोजान्योजानप्रमान ३६ चौपई
जस्योजीवदावामहेकोऊ तासमदुष्टगंधयहजोऊ जनुयहव्यालवदनहेभाई प्र
विसतहमहिग्रासकरिजाई ३७ ग्रसैहमहिकौंवकगतियेहै निजअघदुष्टप्राण

43A मरजैहै लषिवकारिमुषकंजसमाना प्रविसेवालनंउनकछुजाना ३९ हैकरनाल
विहूसिसुषपाई वछरनिसहितपैठगेधाई अखिललोकगुरुश्रीभगवंता दनुजन्
सर्पवपुहैवलिवंता ३९ यहजान्यौसवहियअनुमाना वरजौहन्हकहवालअयाना
जौलौप्रभुयहकरतविचारा पैठेवालवत्ससवसारा ४० गिस्यौनवालनवत्ससमे
ता हरिआगमचहुकुमनिनिकेता वकीवकावधकोसुधआई आवैउदररहृमसुष
दाई ४१ अखिललोकभयनासकआई वलिवालकविस्मयकरिसोई दैवप्रवलग
तिकाहिजहुनेहा निजजनसोचकरनसुषदेहा ४२ दोहा करविचारकैसीकरौ दीनलीन
मोमाहि वालगएसवहायतैकरौगहौंजिमिवाहि ४३ सोरठा जठरानलकौंग्रास
भए वालवछरासकल यहविचारचितआसु कलणकरिजान्यौअहित ४४ चौपई
इहांकमपकरनौअवंकैसो उभयवचैकरियेअवतैसो वालवात्सनासेअघनासू
यहविचारपुनिजान्यौआसू ४५ करविचारसर्वज्ञसुजाना अहिमुषपैठैहृमपानिधा
ना परमपुर्षभक्तनसुषदाता दीनवंधुशरनागतित्राता ४६ सर्पकंठगतिहरिहिनि
हारी दीनसर्वस्ववसुरनरकारी केसाहिकसवहियहरषानै वधिहिवालसवअघ
दुमिजानै ४७ दीनवचनसोसुरनउचारा सोसुनिदीनवंधुउरधारा वत्सवालमो
हिसहितमुरारी चूरणकरणवाहदुषकारी ४८ वढेतुरततेहिकेगरमाही निज
जनचितविमोचनचाही अव्ययकृपालक्षमअनूपा कालवालिकनिकौंलषिस्

श्री॰भा॰
६४५
55

पा ४९ अति दीर्घ वपु वटे क पाला असुर स्वास संग कम्यो नेहि काला भ्रमे प्रान व्याकु
ल विवुधारी उलटे नयन गिरे भू भारी ५० पवन रुक्यो सुकिछि द्रुन पावा इस मग बा
रछि द्वार हरन्यो ब्रावा सव घट हि स्फुरण अंतरजामी तहि रोकि कुं असुर तु धठानी ५१ दो॰
भगवन सुहृद निमन कैन फिर जगाइ दृगिकोरि करे सुमुषतै वाल लै अखिल लो
क चित चोरि ५२ सोरठा सर्प भोग नै योन्त कढी जो परम प्रकास इति जग मग जग
मग होति व्योम हि सास वविसिद अति ५३ चौपई षरी व्योम पथ जोति अनूपा पर
षत प्रभु आगम सुषरूपा पुनि प्रभु मुषप्रवसी सो आई अनमिष लषे देव समुदाई
५४ लष प्रभु चरन ते हे वहरषानै वरष सुमन हिय अति सुषमानै गान करहि गंधर्व
प्रवीनै अपरे से करहि नृत्य रस भीनै ५५ विविध भांत के वजे वधाए द्विजवर क
रत विनय मन लाए शंख शब्द जय शब्द अनेका दुंदुभि सुघर रंक कै एका ५६ कंज
सुमन सुनि शब्द अनूपा तुरत आइ सो हि दिढि गमरूपा प्रभु वय हे षिच कन्त चिंतभ्रम ऊ
पुनि निज भवन आशु चलि गए ऊ ५७ हेन्त अजगर चर्म सुषाना व्रजवाल हुक
हि खेल सुषाना क्रीडा हेतु महावल मानी षेलहि वाल क अति सुषमानी ५८ गो
पी गोप वहुत सुष पाई मुनि जन सुरन अति हरषाई यह कुमार वय सत हरिक
र्मी अहमोचन रछन जन धर्मा ५९ दोहा क्षत कुमार वय कर्म सव अहमोचन प्र
भु कीन सो पौगंड विषैं कही लरिक हुऔं हि नवीन ६० चौपई पंचवर्ष कोमार सु

व

44A

जाना। हसभरि पुनि पौगंड वषाना। पंद्रह वर्षन हों लै जानू। सो किसोर वयक वन वर्षा
नु ६१ पंच वर्ष महि कर्म जु कीन्हा। हरि अहि मोचन जन सुष दीना। छठ ये मांऊ वालक
न भाषी। निज निज ग्रह अति प्रिय अभिलाषी ६२ अति विस्मय मन सुनि व्रज वासी।
अद्भुत वाल चरित सुष रासी। जो अखिलेस परावर स्वामी। सकल नियंता अंतरजामी
६३ माया मनुज लोक तनु धारी। करेउ कर्म निज जन हितकारी। नहि आचर्य मानिय
इक वहूं। भयो अघासुर पावन अजहूं ६४ महा अघी पावर सव भांती। परस अंग गल
हृ सुगति सुहाती। प्रतिमा जासु मनो मइ कोऊ। ध्यान करै कै सो किन होऊ ६५ लहै सु
गति सो विनिहि प्रियासा। कंचन वपु सुत सेअ नयासा। सदा नित्य सुष प्रभु भगवंता।
सो सष्यात लोक श्रीकंता। ६६ तासु अंग परसत भा पावन। महा अघी यह देव संतां।
वन तौ आचारय कहा एहि माही। नाम लेत अघ कोटि न साही ६७ दोहा कहत सू
त द्विजवर सुनिय कथा विचित्र पवित्र। विष्णुरति पूछन लगे पुनि हरि कथा विचि।
त्र ६८ चौपई जासु चित्र नित अवण मझारा। अपर न रुचि कछु तेहि निरधारा। सो रि
षिराज जो रिहो उहाथा। पूछन लाग मुनिहि हरि गाथा ६९ कालांतर कृत कर्म गो।
साई। सपद कह्यो किमि वाल वु जाई। कृत कौमार कर्म हरि केरा। किमि पौगंड मांज
ऊन टेरा ७० हे मुनि मोहि कहिये समुझाई। मम उर अति कौतक रह छाई। हरि मा
या विनु घटै न ऐसे। वरनी वात वालक नि जैसे ७१ छत्रबंधु मै धन गोसाई कथा सु।

श्री·भा·
द·४५·
45

धोसुनिचितनअघाई हरिगुनकथासुनसुभअप्रतिहोई जन्ममरनकीविपतिस
वखोई ७२ दोहा हेसौनकएहिविधसुनरपतिपूछेउमुनिहिनिहोर अतिप्रसन्नहि
यउमगअतिहरिगतिचितमतिमोरि ७३ सोरठा सुमिरायौभगवंत छनकरहेम
नलीनतह पुनिकरुणानिधसंतवहिरदृष्टिछनमहिभए ७४ हेसौनकमुनिना
थ अतिप्रसन्नवोलेवचन जनकहुकरतसनाथ दीनबंधुकरुणाअयन ७५ सु
भगसोरठासात दोहाहैं अरुसातसुभ अपरचौपईख्यात एहिवारह अध्याय
महि ७६ इतिश्रीभागवतमहापुराणेदसमस्कंधेभाषानिबंधेअघासुरवधोनामद्वाद
सोध्यायः १२ दोहा एहितेरहअध्यायमहि कंजसुअनवजआइ वत्सपालअरु
वत्ससवहरिहेकथ्थूभ्रमपाइ १ चौपई श्रीसुककहतसुनियहेराजन श्रीहरिक
थाश्रवणकेभाजन सम्यककीन्हप्रश्नसुखसागर हरिगुननूतनकरहुसुधाक
र २ संतसारग्राहीजेकोई तासुसुभावसहजअसहोई प्रश्नकथाप्रतिछनसु
सुपाई नूतनकरहिसहचितलाई ३ जिमिलंपटकोकामिनिकीवाता स
दाकहैरुचिकरिनिततांता तिमितवहदयकथाहरिकेरी वसैनिरंतरसवसु
घटेरी ४ साविधानचितसुनहेभूपा कहौगोप्यहरिकथाअनूपा पूछेसिष्यभा
वयुतजवही गुरुदुरावतजिभाषैतवही ५ दोहा वालवत्सअघवदनतेकाढि
कृपानिधआप आएसरितापुलिनलैकहतमेटहुसवपाप ६ चौपई अहोस।

45A

षायहु पुलन सुहावनि अतिरमनीय सुषद अतिपावनि स्वछ बालुका विसद रसाला
वा सुभग वारि मनि मनहि वागावा विकसे कंज पुंज अलिश्रेनी कूजहि द्विज सव
श्रुति सुषदेनी तोकरि वसीभूत नभगामी वोलत प्रतिधुनि रुचि हियधामी ८ ता
धुनि तैन रु सोभित भारी सीतल छांह पथिक मनहारी अहो सखा सव मिलएहि
ठामा भोजन करहु वैठि सुषधामा ९ भई वडु वेर काल चलि गएऊ क्षुधात बाधि
त सव भएऊ वछरन्ह प्याइ नीर सुठि नीको निकट रवर हित रए भावत जीको १० स
खनि प्याइ वछरन कहु नीरा हरित सुभग तरु जमुना तीरा तहां चरन वछरा जव
लागे तव सभ मिल भोजन अनुरागे ११ छंद मिलि सबै जव जेवन लगे तव अधिक
सोभा राजही तव बोलि निज निज सखन छीका हसिन शशिडतिलाजही १२ वैठं जु
वीच कृपाल सुंदर सखा चहु दिसि भ्राजही जिमि कमल मध्य सुकर्णिका सुभ पत्र
वहु दिसि छाजही १३ दोहा कोउक पुष्प कोउ तासु दल कोउक पत्र फल माहि भोज
न करि जेवन लगे अपर उपल चित चाहि १४ सोरठा भोजन करती वरि निज निज वं
जन प्रेमजुत हरसावत रससार हसत परसपर नाथ मिल १५ चौपई काहूं हिं टेरि
कहत हरि प्यारे सषा साक आनहु निज सारे दियो आनि हरि कर सो भाजन ग्रास
एक पाए विनु काजन १६ अहो अहो यह अतिसै षारो हसे आप कहि हासि विथारो
प्रभु हसत हसे सव वारा अहो अहो यह हासि गवारा १७ एहि विध अमित हास्यरस

श्री॰भा॰
द॰४६
46

लीला करत भए प्रभु सब गुन सीला। अखिल जग्य भोगी श्रुति गावै पुनि परि पूरणना।
मवनावै सो हरि बाल संग इमि आजू जेवत सुष प्रद संत निवाजू देषि सुर्ग बासी क
है वानी अहो कहा हरि कौन कठानी १८ धन्य यह गोप पुनि अधिकाई जाकि कनौसे
जेवत जदुराई उदर पीत पटि सुषमा रासी ताहि मध्य धरि वेनु विलासी। १९ हो ऊभु।
ज मूल श्रृंग धरि वेनू जेवत जेवन कर पानि केतू वामिं पाणि दधि ओदन लीन्हे वेल अ
दि फल अंगुरिन दीन्हे २० दोहा एहि विध भोजन करत प्रभु मध्य बाल भूपाल सब क
हु सन मुष सुमुष सुठि सुहद संत गोपाल २१ सोरठा वत्स चरत वन माहि तण लोभि
त चलि दूर गए सुषन लषे जब नाहि भय तें अति चकृत भए २२ चौपई कृष्ण देवा।
तिंनि सौ तब भाषेऊ जनि डर करहु बोधि इमि राषेऊ तुम जेवहु षोजों मै जाई अबही
ले आवो इति भाई २३ इमि कहि गए तुरत तनेदनेहा षोजे गिर वन आनंद कंदा दरी कुंज
गह वर सब ठामू कवल पान षोजन सुष धामू २४ तेहि अंतर विध आइ नरेसा व
छरनं हरि लैगो निज देसा प्रथम अघासुर वध तिन देषा चहे चरित कछु लषे वि
सेषां २५ कृष्ण हरी सब जग की जानै नेति नेति जिह निगम वषानै तेहि कारण फिर
आइ महीसा वत्सपाल हरि लिए अधीसा २६ उभय गये ले विध अस्थानी प्रभु मा
या वहि दे मोमानी निज माया करतें इह तेहि राषी पुनि हरि चरित सुनहु मुनि भाषी
२७ प्रथमहि वछरन लैगो मूढा प्रभु तब विपिन मोज सब दूडा तो लगि इति तें लै

46A

गोपाला तुरतहि फिर आए नंदलाला २८ दोहा पुलिन मांझ बालक नही बछरा मिले न को
इ पुनि सब ठौरि निहार प्रभु कतहुं मिले न सोइ २९ सोरठा अषिल विस्व इग नाथ जा।
न गए सब बात प्रभु विधकृत यह सब माय तब मन करत विचार कछु ३० चौपई जौ पे तु
प कहूं रहौ निदाना बालमात कलपै विधनाना ब्रह्म भवन तें आने तिन ही तौ नही होइ समो।
ह विधमन नही ३१ उभय प्रीति प्रीति काजै कै हेतू करत भए इमि कृपानिकेतू उभय रूप
हरि आपहि भएऊ बछरा वत्स पाल जस लहेऊ ३२ जैसे चरण एक एमुष जासू सील सु
भाव बोल जस हासू बलनि वानुरी छरी विभूषन नाम दाम तन यों कछु दूषन ३३ अ
सन बसन मुसुक निज सिजासू जस विषान बय वेनु विलासू जसि विहार जस रुचि
गुण ग्रामा सकल भए सुषमय सब धामा ३४ सर्व विश्वमय ये इमि बानी ताहि कहि तेइ
मिस दावषानी सत्य करी करुनानिधि ताही भए सकल मैं निज चित चाही ३५ दोहा अ
षिल लोक पति सुकरमनि द्वै सरूप धरि भूप चरत चरावत आपही बछरा गवाल अनू
प ३६ सोरठा फेरत घेरत आपु षेलत ष्याल अनेक विध करत विविध परलाप गए अ
मत ह्वै अमन गृह ३७ चौपई सुनि वंशी रव जननी तासू गह गह तै हो रीत व आसू मिल
त भई अति हरष समेता सुत जिनके भए कृपानिकेता ३८ तासु भाग्य महिमा न रसाई
कै वरनि सेस अस मति किन पाई सुभग उरोज अस्रवत पय धाई सुत उठाइ उर लै लपटाई ३९
सुअन जानि परब्रह्म उठाई अंक राषि निज हृदय लगाई नेत निगम तापार न पावै गो

श्री भा
२४७
47

पसुताजागोहरषिलावै ४० सुधासरसपयपानकराई जानहुपरमभागपनरराई पुन
मईन्हनिजसुतन्हकरावा अरूमज्जनकरायसुषपावा ४१ नेहनवर्वसुभगतनदेषी
होतहृदयआनंदविसेषी रछ्यातिलआसनभलरीती सुतन्हलडावैनितनवप्रीती ४२
इतिक्रीडानिर्षतसुतकेरे संध्याभईसनेहघनेरे एहिविधसकलगोपिकामोही व
रनौधेनुमोहिअवनोही ४३ दोहा धेनुधाइनिजघरकमह पैठीअतिअनुराग क
रतभईहुंकारवहु वछरनकेहितलाग ४४ चौपई निजवत्सनहुंकारवुलाए अव
तओघपयपानकराए करहिपानवछरासुषपाए चाटहिमातप्रेममनलाए ४५ म
नहुलीलजेहैअतिप्रेमा लहैनयोगीकरिवहुनेमा सोभासुतजिनकेघरआई प्रे
मतासुकिमिवरनसिराई ४६ संध्याकालक्रसनिजगेहा आवतजानिवढौअति
नेहा सुनिवंसीरवचतुरसयानी कोउसषिकहतिसुमहरिसोवानी ४७ अहोस
षीलषियहवरवरवानी आवतवेषगोपसुषकारी गुंजमालउरलसतविसाला मा
लतिलकसोभितवनमाला ४८ हस्तमाहिजोवेतरसाला वंसीअधरधरैनववाला गा
छाव र ननिपुनपुनिहंसाला सुनतभईमगनव्रजकीवाला ४९ एहिविधनिजग्रहगएसुजा
नू देनिवंधुहरिक्रपानिधानू जननीवहुविधलालनकीन्हा क्रपासिंधुतेहिअतिसुष
दीन्हा ५० दोहा मातभावज्यौसौंभयोगोगोपिनतेहिकाल पूरववालननेअधकनेह
वढिएहवाल ५१ सोरठा हरिमयभई प्रसेष गोगोपिनकीमातता देतनोभयोविसेष

४७A

नेहाधिक्यविनालसत ५३ सोरठा गोगोपिनकेमाहि कृष्णचंद्रकहभावनिज प्रथमसंर
ससवत्साइ तोकभावजानेनिपर ५४ चौपई तोकभाविनाहरिकहजैसी प्रथमकुंतीमा
तनपरजैसी एकमोहिविनुजानुमहीसा वालभावकियहरिजगदीसा ५५ मैहौसुतयह
हैममताता एतनैविनाजानियहुताता नेहिवढ्व्रजजुवतिनिकेरी सुनहुतातताहिक
हौनिवेरी ५६ नरनारीजेकोउव्रजवासी तिनकेप्रानकृष्णसुषरासी निजपुत्रनतै
कृष्णमेजारा अतिसनेहयहप्रथमविचारा ५७ अवनिजसुअनमोअतिप्रीती वढी
निरंतरसुषमयरीती वरषएकवाढोसवकाहूं नेहलताजिनसुतवितचाहू ५८ एहिवि
धभएवत्सहरिआइ मैटनहितनिजजनप्रताइ वछरावत्सपालकेआजा पाल्यौनिज
जननीवसमाजा ५९ गृहवनफिरतकरतवहुलीला कृपासिंधुगुनगणवहुसीला वर्ष
प्रजंतगएउहरीती लषेउनकाहुवढेउप्रीती ६० दोहा एतनैदिनपर्यंतप्रभुवरतिलषे
उनाहिराम रहेउदिवसषटपांचजवलषेउकछुकवलधाम ६१ चौपई सोवरनतमु
निकृपानिधाना हरिचरित्रसुषप्रदजगजाना एकसमैवलिदेवसमेता वनगमनेप्रभु
कृपानिकेता ६२ वत्सचरावनहेतुउदारा अपरसरवातेहि कोगतिपारा वरषमांझदि
नपांचकदूना अतिप्रसन्नताद्दिनदिनदूना ६३ तहतेदूरकुंधरपरधेनू चरहितलषीते
सुनधुनवेनू वछराचरतिनिकटिव्रजकेरे गैयनतहैनिजसुतहेरे ६४ अतिसनेहमय
तनमनजासू भूलिगईसवसुधआसू अतिसैवेगनहांतैधाई तुरतसवैवछरनिढिगआ

श्री भा. ६४८
५४

ई रोकन लगे गोपि बहु भांती एक एक वल विपुल सुहाती अति सय दुर्गम पथ वर घो
र शिला विपुल दुर्म सघन कठोरा ६६ गनै न ता हित हांते हौरी मन हु वात वस द्वै ग
ई वौरी हरि सन कप्रबल जो अनेता तिन कोई नै पावै नही अेता ६७ दोहा मानभंग भय गो
प सव रूकीन के सहु गाइ धाई जिमि मृगराज गति निज जनन कहु विसराइ ६८ चौपई
आकुंचित ग्रीवा अरु आनन पूछि उच्च वगारी भजि कानन चपर सकल आई सुत पा
सा वे ठिर है द्वै गोपनि रासा ६९ धेनु धाइ वछरन ढिग आई प्यावन लगी प्रेम अधि
काई वत्स वती अपि धेनु प्रवीने प्यावत भई न जिवालन वीने ७० चाटन लगी प्रेम ।
अति माहौ गिलि जैहै जनु असि मुष वाढौ लषि लेवै हैव धेनु के प्रेमा वछरन मोउ अ
प्रूरवे नेमा ७१ गोपन कह अति नेहि अपारा वरनत मुनि मति परम उदारा पशुपाल
न सो कीज वधेनू रूकी न वै मुष अमभा फेनू ७२ सो सम रेद्रिग अंतर तन नारे पंथ त्यागि
धाए अति हारे सरता गिर वन उपवन माही आए दौरत तन न सुध नाही ७३ दोहा आ
ए जदपि रोस भर ताउ न मन अनुराग तदपि देषि बालक वदन वढ्यो प्रेम वड भागि
मुद्दत ७४ सोरठा जद्यपि रिसि अति घोरि निरष वदन सव मिट गई प्रेम उमग नहि थोरि उर
मुदित लए उरलाइ सुत ७५ चौपई सो सस्नुध पुनि हियलाई मानहु परी परम निधि पाई
पीछे परम वृद्ध जो गोपा ते उ आए सव गति तह कोपा ७६ आइ तोकति न हू उर लाए
परमानंद तो ष तिन पाए गदगद कंठ नयन भर वारी इकटक रहे सु वदन निहारी ७७ ले

४८A

षि वलप्रेम अधकंसव काही करत विचार आप चित चाही पिवत न स्तन वालक जे
ऊ तिन पर अधिक प्रीति करि मेऊ ७८ निकट प्रसूत वत्स कहं त्यागी दूर वमह कि
सिए अनुरागी नित प्रति वढै प्रेम सव काहूं लष्यो न कारन प्रीत उमाहूं ७९ मोहि स
हित सव कह एहि रीती प्रेम अधिक छन छन किमि प्रीती मोहू प्रीति इन मे केहि हे
तू सुमुझ परे पै नहि मोहि निकेतू ८० के देवी माया यह होई कै नर असुर कहा तै।
सोई केहि कारन प्रेरी किम कैसे अपर न घटै भई यह जैसे ८१ दोहा अपर न माया प्र
वल अति सो कह मो कहराइ यह माया श्री कृष्ण की अस मो मन ठहराइ ८२ सोरठा
अस सि विचार वलिराम ग्यान दृष्टि देषीत वहि कृष्ण देव सव ठाम वछरा वत्स यह आ
पु हरि ८३ चौपई वोल्यो पुनि प्रभु सो वलि रासी सुनि प नाथ हरि सव घट वासी वछ
रा सकल अहै रिषि अंसा वत्स पाल सव है सुर वंसा ८४ पाहिले इमि जानै मैं स्वामी अ
व तौ नहि है अंतरजामी तुम अव सकल मांहि मोहि भासत नव अगन अगम घेद इमि
भाषत ८५ मोहि वुध भ्रम कै यह साची सव मैं तुम असी मन राची नव हरि के जसु अ
न कृत भाषे वल सो कछु दुराव नहि राषे ८६ जान्यो वल हरि त्रिभुवन साई तुम विनु।
को अस कर सक भाई वीत्यो वरष एक एहि रीती के जसु अन की चूटत व वीती ८७
आएउ फेर लषि नविध आहू षेलहि वालक लष माता हू जिमि दूर षेत सहि सव दे
षी अजहि य उपज्यो सोच विसेषी ८८ दोहा मैं आयो सतन कराइ सव वालक व

श्री॰भा॰
६५९
49

जैमैं आव इहाँ ताहि सम अपराये बालक षेलत पाव ८९ चौपई तेहैं सखा कि धौं ये
साचे इमि व्याकुल चित संसय राचे इतिउत फिरि लषे होउ ठामा बालक वत्स सब सु।
ष अभिरामा ९० चित भ्रमैं तें बुपद्धै सब ठाढा महा मोहि हिय मैं नहि बाढा अखिल वि
श्व मोहन भगवाना तिन्है मोहि वैको मन आना ९१ माया करी वस्स हरि लीना आपु
मोह वस भा अति हीना प्रभु माया कृत अंड अनेका रचना अमित एक तें एका ९२ रो
म रोम प्रति अंड कटाहा तासु प्रभाव देषवे चाहा कि मि मोहै माया पति नाथा अखिल
विश्व प्रभु सब जेहि नाथा ९३ कोटि कोटि रवि सरस प्रकासा क्रम क्रम चंद्रमुष शशि द्यु।
ति हासा विध माया षद्योत समाना आपुहि लखत लज अपमाना ९४ जैसे निसि मह
तम अति भारी पुनि निहार अन तें अंधियारी होउ तब मिलए कहै गएउ नहि न हार
व लभिन्न जु भएउ ९५ दोहा जिमि षद्योत सहस्र मिल हि वस मित्र प्रकास तिमि ह
रि माया के विषे माया सकल निवास ९६ चौपई तेसेंहि महत पुरुष कहु कोई माया
करै इतर जो होई वह माया तेहि लगै न कवहूं उलटी फूलै करै जेहि सवहूं ९७ तेहि।
छन अपर अचंभो भएउ कंज सुअन निज नैयन लहेउ तिन तें वत्स पाल अजेरषा
स पहिल षे [illegible] अति रूप विसेषा ९८ तन घन स्याम चतुर भुज रूपा पीत वसन क।
टि लसत अनूपा गदा चक्र धर पंकज पानी सुभग किरीट सीस सुषदानी ९९ कुंडि
ल चपल हार वनमाला श्रीवत्सांक सुललित विसाला कंठू कंठ अंग द सुठि लौने

५१८

कंकनपानिअंगुरितमनिसौनै २० नूपुरकटिकलवलितअतिसोहन कयिकिंकिनविभु
वनमनमोहन सुभगहसांगुलभूषननीको निरषतमनमोहतसवहीको २१ दोहा
नषसिषतुलसीदामवर जोकरिसोभितगात पुण्यपुंजवहुजन्मकृततिनगूथीवहु
भाति २२ चौपई कोमलपत्रविमलकरआनी भूरिपुण्यपक्वफलकोऊएकआनी तिन
अर्पितपहिरेसुभमोहन एहिविधिविधिदेषेउमनमोहन २३ मदमुसुक्यानिचंद्रा।
चारू अंवरएकटाछभरीसुषसारू निजजनवांछापुन्य[illegible]नहारू संभवपालनकेर
भंडारू २४ मनहूसववरजगुनएहेऊ इतिएवलेअरूणासितसोऊ ऐसीसुभकटाछ
युतनैना निरषतहोतसवनिचितचैना २५ ब्रह्मादिकअगजगजेप्रानी लहेंसुभम
तनहितअतिमानी लैलैअमितवस्तुवहुभांती आएसवनिजहृदयसुहाती २६ नृत्त
गानअरूवाद्यअनेका पूजनप्रभुहिएकतेएका अणिमादिकजेसिद्धकहावें अज
सुरेसजेविभवविसुहावें २७ अरूजेचौविसतत्वसमेता मूर्त्तिवंतसौभाग्यनिकेता॥
सवहिप्रभुपदकंजकजतेऊ ब्रह्मादिकवरनैअवजेऊ २८ कालरूपईश्वरभगवा
ना सर्वसमस्तकृतुमकृपानिधाना जेहिप्रतिविंवचराचरभासा सोईप्रभुंवजप
तिनंदप्रकासा २९ दोहा क्षोभककालस्वभावजेपरिणामकजेहेतु प्रभुमहिमाल
षिचकितचितसवहिवरणनकेतु ३० चौपई सवसानजुतआमितनअंता परिहर
णसवठामलसंता परमानेहरूपवजपालू स्तुतिगावेजसविमलरसालू ३१ महि

सावहुतलहैनहि थाहूं हस्तामलस्रुतिहैसवजाहूं तेऊप्रभुमहिमालहैनछोरा। विधवा।
क्रतचितभएउनथोरा ।१२ एकहिवारअषिलसवदेषा क्रस्नरूपसवअपरनपेषा।
प्रथमएकपुनिलषाअनेका अमितप्रभावएकतेएका १३ अतिआचर्यदेषिसवठामा
छुभितचित्तनहिलहविश्रामा इंद्रीगणमनवुध्रसमेता थकितरह्यौगहिमौनअचेता
१४ नयनमूंदमुषआवनवैना षरोरह्यौविधनहिचितचैना जिमिव्रजग्रामदेवताको
ई नासुनिकरकौतुकहितजोई १५ हारूढनरीरविमुषउचारी षरीकरीविधएहिअ
नुहारी गहेगिरापतिअगजगताता देषिरूपमोहेअकुलाता १६ पुनिदेषनकहस
कैनसोई तवश्रीक्रस्नदेवजियजोई निजमायाजोप्रवलप्रचंडा जिनिमोह्योयहस
वव्रह्मंडा १७ दोहा जोकरिमोह्योकंजसुतलषनसकैप्रभुरूप षैंचलईनिवनाथ
तेहिजागिपर्योसोभूप १८ सोरठा किमिमोह्योअजआपु इमिकोउवोलेवचनज
ह नहांसुनौपरितापु मोहैनहिकैसेजुअज १९ चौपई जेहिस्रुतिनेतिनेतिनितगा
वै सोनेदनंदनआपुकहावै आगमन्यायमुनीसमुदेसा चारणसिधआहिउरा
गेसा २० जासुसुजसगावैचितचाही शंभुआदिसेवैमनमाही रविशशिपावक
नषतप्रकासा सममहिक्रस्नचंद्रकनभासा २१ मायामनपरिपुरूषनियंता स
वकोकारणप्रभुभगवंता नामरूपलषिकसनहिमोहै अषललोककौपतिएक
सोहै २२ हरिमायाजवकरिउपरामा षुलेनयनतवंलषिसवठामा इमिकोउम

30A

सुषाइ पुनि जागे जेहु तेहु लषै वत्स अनुरागे २३ तिन यह देषत भाव बहु ओरा चार वदन
करि सुषन हियोरा वृंदावन श्री निकट निहारी तरु अति ललित फूलत फलभारी २४ वी
रुध लता गुल्म सुहावन सकल जीव वहु श्रमित मन भावन सदा वसंत सघन तरु
छाया कुहकत कोकिल मोरि सुहाया २५ जीव जीव श्रमित वहु ओरा निसि दिन तिनक
हु सुषन हि योरा औरन तरुवर अनेक सुहावा निरषत तिनके वर एसु सुषपावा २६ दोहा
जहां निसर्ग तै जीव सब वैरिभाव विसराइ वसहि जहां सुष सौं सदा प्रीत अधिक अध
काइ २७ चौपई केहरि करी कलापी व्यालू मूषक मग सावक अरु भालू फिरहि एक
संग भय विसराई नहि जिनके हिय वैर बुराई २८ तिन्ह देव क्रीडा थल पावन क्रोध लै
भ मद गर्व न सावन छुधा तृषा वाधे नहि नाही वसे विपुन जे निज वित चाही २९ पुनि वि
धलषे वत्स अरु वाला ताहि संग षेलै नंदलाला ब्रह्म सनातन गोप सरूपा निरषत पु
नि पुनि रूप अनूपा ३० पसु पवेस ससिसु लीला भारी देषित पुनि पुनि वदन निहारी अव्य
य एक बोध घन रासी षोजत वत्स वाल अवनासी ३१ है अनंत पुनि सव घट वासी जा
सु प्रभाव क जगत प्रकासी सो परि ब्रह्म नाय जग ईसा षोजत वत्स वाल हरि ईसा ३२ क
मलपानि विचरति सुषमानी केवल सिसु लीला मे जानी लषि विचार करि मन ठहराई
जान्यो ब्रह्म रूप जदुराई ३३ छंद जान्यो जु ब्रह्म सरूप जदु वर हंस तजि पायनि पर्यो जि
मि कंचन कंद जु गिरै पृथमी मुकट निज हरि पद धर्यो ३४ मुहि वारि नयन प्रवाह वर प्र

श्री·भा·
१५२
51

भुपाइ अभिषिंचन कर्यौ पुनि उठि तपु नि गिरि परत पुनि पुनि गिरत अति आनंद भर्यौ। ३५ प्रभुरूप तेज प्रभाव बैभव सुमिरहि यसु कुम्हलातिहै पुनि उठ्यौ निज कर पोछि लोच न निरख प्रभु पहं रयात है ३६ अतिनम्र शिर कर जोरि जुग सह विनय कंपित गात है पुनि प्रेम गद्गद पुलक तन नृति करन हित अकुलात है ३७ दोहा धर धीरज अस्तुत कं। ज कौ अस्तुति करत बनाइ अति सरधा जुत हर्ष हियं लषि मुष अति सुषपाइ ३८ अ ष्टाहस दोहा सुभग तीन छंद सुषरूप सुषंह सोरठा नव कहे येहि अध्याय अनूप ३९ जा माया करि जगत सब मोहे विधत्रिपुरारि राम ताप तै जगत पानाहि न सके निहार १४०॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा निबंध्रे वत्साहरननाम त्रियोदशो ध्यायः॥ १३॥ दोहा प्रभु को अद्भुत रूप लषि मन हु भई मति भोरि सब विधि अद्दै अनीस विधि अस्तुति करि कर जोरि १ पयावु धवलकंज सुतन याकरत गुनगान चौदहवे अध्याय महि कृष्ण ध्यान कंसान २ चौपई प्रभु आराधन कीने तेहि भारी तनस कं पते डर उर धारी प्रभु महिमा नहि सक अवगाही प्रभु सरूप निरषे चित चाही ३ सो इ सरूप वरनत है भूपा गोप वेस प्रभु रूप अनूपा नौमि ईड्य घनस्याम सरीरा ता डित दिवि पीत लसत कटि चीरा ४ गुंजमाल कुंडल श्रुति सोहत मोरपुछ माथे जग। मोहत श्री मुष पंकज अति छवि कारी मैन कोटि छवि तापरि वारी ५ बन बनमाल विलसत उर भ्राजै पानि कमल धरि अति छवि छाजै धरै वेत अरु वेनु विषाना महुप

हलसकल्याननिधाना ६ नेहसुश्रनतुमप्रभुगुनभारी प्रनवौवारवारअसुरारी देवदेवदेही
नरपाला यहनरवपुनवप्रगटक्रपाला ७ गोचरनयननमयनमनहारी यहअविनासध
ह्योसुषकारी सोउमहिमामोहिअघटिगोसाईं अपरजानिसककिनमतिपाईं ८ होहो
यहवपुतुमनिजभक्तिहितधर्‍योनाथयहजानि गोकुलगोपीगोपजनसवकाहुंसुषदा
नि ९ चौपई तौकिमिजानिसकैनहिकोई हमिजौनाथकहोजियजोई तुमअनीहआ
तमसुषरूपा हरनब्रह्मअनुगगुनरूपा १० एकअनेकसकलघटवासी क्रपासिंधु निरूपा
तुमसवगुनरासी कोनलषैतवचरनक्रपाला यातेगाईअगुनगनमाला ११ वरन
कंजमनसिजमनहारी ताहिभजतजेनितउरधारी ताहिहेतपदअभयगोसाईं स्रुति
पुरानमुनिजनदूमिगाईं १२ जोतवसुषनिरषएकवारा सोनलहैप्रभुपुनिसंसारा
जोगजग्यनीरथव्रतनेमा जिनकेइतिमेनहिकछूप्रेमा १३ नैनरूपस्रुतिकथासुहानी
सुषमवनामरटनसुषदानी एहिविधजेजीवनजगप्रानी तेभक्तभक्तनभएउमेउरजा
नी १४ तीनलोकमहिअजनअनंता तिनजीत्योतुमकहभगवंता तवगुनकथाअम
तअतिपावन गलितसूरमुषतेमनभावन १५ श्रवनगुनसुनेभगवाना कलकेस तें सु
गरदुषदोषनसाना निसिदिनपानकरतमनलाए जमजलाहुतिनहीएकपाए १६ तें
दोहा त्यागभक्तनवमहनरस्रानहेतुहितमाति कैरेजतनपचिपचिमरैलहैनकैहुंसो वे
ति १७ चौपई भक्तसरोवरअतिगंभीरा उरनाअमतजरैतेहितीरा औसेसरलभक्ति

सुषदानी तेहितजिअपरदामिरुविमानी १८ तासुसकलश्रमविपलगोसाई श्रुतिष
राणसंततहमिगाई जिमिकोउअल्पधान्यकहुत्यागी धानअभासघनोअनुरागी १९
केइनकेरैताहिंरुविमानी लहेनअन्नसहैदुषषानी तिमितवभक्तित्यागिनरमूढा स
हैकोटिदुषिमोहिअरूढा २० हेमूमिगतिपूर्वजेयोगी तजिगहादिसुषभयेवियोगी क
रवहुजतनसानहितभारी मिलेउसाननहिमहउदुषारी २१ पीछेनिजईहासवजेती
तुमहिसमर्पहिमनवचतेती सुनितवकथाभक्तिहियआई जान्योआतमरूपवनाई २२
देहा तेनरसहजप्रयासविनुमुक्तलहैसुषकंद परैनभवनिधिमाहिपुनिमेरिसकलज
गदंद. २३ सोरठा दुर्गमप्रभुतवज्ञान भक्तिसुगमसवजीवको एहिविधकरयोवषान
अपरभांतिअवकहतकछु २४ चौपई अगुनरूपजोअहैतुम्हारा तासुज्ञानकहुलहै
उदारा सगुनरूपतवगुनवहुभारे लहेनकोउहमिवेहउचारे २५ गुणातीततवरूप
अनूपा इंद्रीजितजानैसुषरूपा इंद्रीजितजानैकहुकैसे जोकोउकहैवचनपुनिऐ
सें २६ ताहिकहितजानैएहिरीती गगनजीतेमनकरिप्रीती मनतवविसदहोदपु
नितासु अंतनहिकर्णीविमलपुनिआसु २७ तेउकदाचिदिषैवहुरूपा वहुकलेशतेहि
नहिसुषरूपा यहसरस्यातगुनवपुहेवा नहिकोउजानिसकैतवभेवा. २८ गुणअवि
तमहिमासुषसागर जगपालनकारनवजनागर तवगुणगननसकैसतसेषा
जिनकेवहुमुषअहैअसेषा २९ भूरजगगनरुघगणजेते वर्षावूंदपरैकनकेते

52A

हिमकनवूह जहांलगि आही गनैनपुनि कोउ अतिचितचाही ३१ दोहा विपुलकाल
करि गनै कोउ व्योमकिरनपरिमानु तदपि तव गुणगनणकोनहिं समर्थ जग जानु
११ सोरठा एहते है जग हीस भक्ति सुगम तव जीव कह अपर न मोहि कछु हीस भक्ति
विनाहे नेह सुत ३२ चौपई जो नर चतुर होइ जग कोई तव कराछ चाहे मनसोई काव
कराछ हरि है जदुनाथा यह वंछे नित सुनि हरिगाथा ३३ निज अर्जित जे कर्म पुराने
मल अरु मेह कियेजसजानै तिसफल तरै सो भोगा अनासक्त भागे विनु सोगा ३
४ अतिकलेसनप आदिक त्यागी तव पद संतत है अनुरागी एहि विध जे जीवत है शा
नी भव मुक्त भागी जे जानी ३५ एहि विध विध अस्तुति वहुभांती करिकै जतन हृदय स
कुचांती करि प्रनाम पुनि पुनि प्रभु पाही निज अपराध जानि मन माही छमाकराव
नहि तक छु ववचना जोरि हाथ जुगकह करिरचना देषेउ ईस हु छलनामोरी छमांज
हांलगि वरनौ तोरी ३७ तुममाय केईसनियेता पुनिमायापति हरि भगवंता मैं म
तिमंद अतिनिजमाया सोप्रभु कौमें आनि देषाया ३८ दोहा तोकरितव अैश्वर्य मैं
देषनचहो अनंत किमि देष्यो मैं मूढमति तव महिंको अंत ३९ चौपई जदपि मम
कृत अोगुनरासी प्रभुकह एक नदिमच लिजासी जैसो ज्वाल पुंज अति भारी
पावक कन तेहि किमि सक जारी ४० अोगुन छमहु मोर मैं ताता कृपासिंधु तुम सव
जग ताता रजगुणसंभव मैं मति हीना प्रथम कई समानी अति हीना ४१ अति अ

मा

श्रीभा॰
६५२
53

जानैतैं कियअपराधा हौनबंधुतबकृपाअगाधा अजारूपतमछ्राएउलोचन
सृजनकथ्रमोहिहिभवमोचन ४२ जदपिअपरछोमयहनाथा तदपिहासममश्रुति
यहगाथा एतनोंजानिलूकसबमेरी छमाकरहुयहकिंकरहेरी ४३ तुमहुंअंडवि
राटस्वरूपा अपरईसतुमअहउअनूपा जोकहाचिदश्मिकहैगोसाईं तहममविनय
सुनहुमनलाई ४४ हरीब्रह्मनाथतुमएका तुमतेयहजगभएउअनेका तवइछातें
अगजगरचना होतसकलइमिश्रुतिकेवचना ४५ प्रकृतिपुरुषकिंकरएहोऊ
हैंअनादिजगकारनसोऊ तातेतरचनारचेउअनेका सबकेकारनप्रभुतुमएका
४६ प्रथममहतमायातेतभएऊ अहंकारगुणत्रितनवठहेऊ पंचतत्वजोसकु
लपसारा तुमरारूपहेऊतैन्यारा ४७ होहावायुअग्निजलभूसहततपहप्रभुअंड
कहाहि अपनेसप्तवितास्तिकारसवकाहुकरिआहि ४८ सोमही पुनिरचनातेहि।
माहिअनेका जीवचउधमनकर्मनएका इंद्रीगणविषयापुनिपांचू तहांदेवगनहै
सबसाचू॰ ४९ मरूतपंचविधरचितसरीरा धातुसप्तपुनिपंचसमीरा अरुनारा।
यणनामतुम्हारा नरसबअयनवेदनिरधारा ५० एकअंडकोमैंअधिकारी म
होहीनपुनिअहमतिभारी ऐसेकोटिकोटिब्रह्मंडा रोमरोमतवभ्रमतअखंडा ५१
सोउन्निसरेतुमहरिसहेसोहत ऐसेईसनाथमनमोहन मैंतवदासतुछमतिमंदा
कृपाकरहुहेकरुणाकंदा ५२ मातुगर्भबालकजबरहई बहुअपराधतहांसो

53A करई जननी कछु अपराध न मानू यौं सब जगत उदर मम जानू ५३ बाहर कि भिपि नव सुल तव
बाई सब तव हर हे गति हे जदुराई तौ मम अघ छमिये जग त्राता जननी इव तुम सब जग
माता ५४ दोहा प्रलय समै सब सिंधु मिल होत वार अति घोरि ताहि उदर कमे श्री रमनके
रत सयन इव विहोर ५५ चौपई तब तेहि नाभ सु भगतै कंजा प्रगटि भयो अति छवि कौ पुं
जा तेहते मैं प्रगट्यो जदुनाथा यह स्रुति संत गिरा जो गाथा ५६ हे ईस्वर मै सुत तव जानू
तुम पितु मम नाता यह मानू कृपा दृष्टि प्रभु मोहि निहारी कीजिय प्रनत पाल सुषका
री ५७ जो कहौ चिह्न मि कहिय गोसाई रमा रमन सुन तै स्रुति गाई मोहि कहौ तें सुत है जा
सू कृपा करिहि नो कहि सो आसू ५८ तहां सुनिय तुम है वजनाथा तुम नारायण यह स्रु
ति गाथा नार अयेन तव कृपानिधाना नारायन तुम श्री भगवाना ५९ नार सव स सव जी
व कहावै तहां वास तव स्रुति पुनि गावै जो अधीस अैसी कनिक हहूं नारि प्रवर्तक सो
न रव हहूं तहां सुनि दु हे आनंद कंदा दारु कतरी यह जग गंदा सूत्रधार तुम सब हि
न चावबे नाथ सकल स्रुति अैसहि गावत ६१ दोहा जौ कहा चिन्ह अैसी कहौ जग जानै
सोइ नारि तौ अग जग जेह लगि अहै तुम दृष्टा निरधार ६२ चौपई नहि याकौ वित प
तिस जाना नारि सब जो तुम कियगाना तहां कहत अैसे अब जानिय कहै वेद मुनिज
न सब गानिय ६३ चौविस तत्व अजा कृत आही तां करि अग जग सकल सुहाही के
वल नारायन जिन्ह कीन्हा रमा रमन सब कहु सुष दीन्हा ६४ सो तुम ही हो कृपा नि

श्रीभा॰ धाना अपरनकोऊइमिस्तुतिकरगाना अपरछिन्ननहिमोहिसरीसा॰ अतिप्रकासमय
२.५४ अद्भुतवीरा ६५ वरअरूअवरजहांलगिजेते आतपोतजगस्तुतिकहुहेते सोज।
54 लआश्रयघटैनेकवहू कहेवचनजैसैतूसवहू ६६ तहांकहतस्रुतियममवचना
तवमायाकोसवयहरचना घटैसकलअघटितसववाता तुमअखिलेससकल
जगत्राता ६७ जगदाश्रयतववपुषगोसाई सोवतजलधिमांजमनलाई वहेएककहे
सत्यनिधाना तोमैंतवहींकसनहिजाना ६८ तुमईस्वरहौतुवसअनंता सवकेका
रनमूलनियंता प्रथमहकमलनालमैभएऊ वाहरमैकछूदिगनहिलहेऊ ६९ तेहां
तवहींमैंतेहिकंजहीनालछिद्रमहिजाइ दूढतफिरोसुवर्षसतहेभगवनेवहुभाइं ७०
सोरठा तहांनपायौनाहि तवमैफिरआयौभवन तवहिलष्यौमैंवाहिहृदगतिसूजै
नयनजव ७१ चौपई गिरागगननपतपजवभाषी सोमैसत्यहृदयधररापी तपक
रितवपीछेमेंदेषा अपरछिन्नतेअपरविसेषा ७२ एहतेतवसरूपजगदीसा देसका
लपरछेदनईसा जोजलादिपरियंचगोसाई सत्यहोइतौघटैवनाई ७३ सोतौतीनि
कालनहिंसांचा मायाकृतयहसवजगकांचा हेमायापतिप्रभुभगवंता एहिअ
ल२ वतारसवहिसुषवंता ७४ वाहिरप्रगटघरेतुमआहू जननीतवसुषप्योप्रताहू वा
हिरसतआहरससमाना वदनमांजप्रतिविंवलषाना ७५ कहौसर्वथामायाकेसे
नहिप्रभुघटैकंहौतुमजैसें वाहिरजगप्रसिद्धसवजेसैं तुमसमेतसुषमैंलषुतैसें ७६

54A जासुष मैं प्रतिबिंब लषाई तौ बाहिर बिलोम ठहराई ७७ सो तौ नहि तुम दर्पन जैसे लषै
अनेक एक नहि कैसें तुम प्रभु एक प्रपंच अनेका माया कृत सब लषिय बिबेका ७८ हो-
अ नभ मध्य छबि अंबर पर सोहि बाहरि दृग जानु अनहि पानु न अंन मै तां तै माया मानु ७९
सोरठा लषिय तु माया सोउ द्विगय ह माया कृत सबै तुम बिनु अपर न कोउ सकल जग
तमि अतल षैया ८० चौपई प्रथम एक मै लषा गोसाई पुनि अनेक है ब्यौ ठहराई पुनि स
व बछरा बाल समेता चार भुजा जुत सब लषि तेता ८१ मोहि आहि सब तत्व जेहां लौ सो
वत पाइ सरो जत हां लौ सुद्ध रूप चैतन्य अनूपा तेहे षेउ सुंदर मम रूपा ८२ ताहि कहत
माया तै कैसे जो कहा बिभाषिय प्रभु जैसें न हां सुनिय स्वामी मम बानी तुम प्रभु एक स
त सुष हानी ८३ तुम तै सकल प्रपंच अनेका गुन अवतार एक तें एका जैसें छाया हिक
अवतारा धरेउ नाथ लषि भूपर भारा ८४ जहां काज जस सब जेहि बेरा धरहु नाथ त
स रूप घनेरा एहि बिध कौतुक करौ अपारा माया करि निमित्त निरधारा ८५ पुनि मा
या तुम दे रहि हूरी जीवन कह बांधक बहु भूरी अस तौ जे जड मति कोई तुम हि न जानत ६
सा सोई ८६ दोहा ते रमि गावह जगत कह संभव पालन नास अ जगिरी समिल जगर
चै कहे जिन हि प्रकास ८७ सोरठा सुरहि षेनि रजगरूप मत्स्य आहि तुम ही धरयौ दुर्मह
बिकट अनूप ता सु मान मर्द्दन करत ८८ चौपई साधु अनुग्रह हित सुष केहा माया ग्रह
न करत न जहु नेहा धर्म सेतु पालन के हेतू कृपा कर हु तुम कृपानिकेतू ८९ प्रभु लीला को

55

श्री भा
द॰ ५५

लषेवनाई गाइस्सुइकोगुणसमुदाई निजजनजानहेतुवहुवारा धरउस्वरूपअने
कप्रकारा ९० मैंरचतंत्रकुत्सिततनुधरऊ कोनहेतुकोतकअसकरऊ परिपूर्णप्र
निवामनरूपा यांचोकस्योहीनअनुरूपा ९१ इमिजोकहहुनाथमनिआनी तहांसु
नियकिंकरकीवानी नहिंत्रिलोकमहिंअसिकोउप्रानी तवगुनलीलाकहैवषानी ९
२ कैसेकवकेतिलककेहिठामा रचनारचितनाथअभिरामा मायाजोगअपारनि
यंता किमिकरलहैपारभगवंता ९३ यहअवतारवातसवसाची हेपरंतुवानीत
वकाची जोप्रपंचयहसत्यनहोई अपरसत्यतालषिकिमिसोई ९४ असेमनगुन
येममनाया तहांसुनौविनतीजदुनाया यहजगसवनस्वरसमाना तवजगभक्ताक
रेवषाना ९५ दोहा यहजगअसत्यअसेयविधसपनसरिसकहवेद यामेसुषरं
चकनही अतिदुषसंततषेद ९६ सोरठा तुमतेसंभवहोइ लयपावैप्रभुतुमविषैंल
गतसत्यइवसोइ सत्यनहीदुषरासिप्रभु ९७ चोपई नित्यसरिसइविनित्यनआहीसु
षइवलगैदुषहसवकाही चेतनइविनहिंचेतनरूपा हैविकल्पवहुचित्रअनूपा ९८
तुमस्वरसत्यरच्योवहुभांती लगतसत्यइवसवहिसुहाती सत्यएकतुमनंदकुमारा
आत्मरूपसकलआधारा ९९ आदिपुरुषतुमहरनकामा सवसंगभिन्नसहाअ
जेर भिरामा नित्यसनातनसुषमयरासी अछरअमृतअघअवनासी १०० अंजन
रहितप्रकाससरूपा हुरउपाधसरूपअनूपा एहिविधलषनसुघरनरकोई जिन

55A

कैकधूउत्तममतिहोई ११ भक्तिजनोकेहौतुमस्वामी घटिघटिकेतुमअंतरजामी नेरसु
अनतुमकहिसवठामा लषतचराचरमैंअभिरामा १२ किमिकहलैषैकहैजोकोई नहो
कहितएहिविधकरजोई हरिगुरुरूपतरनसमग्यानी वेदउक्तचषलेहुसुषमानी १३
दोहा नाहिनयनकरिलषतजब ग्यानमएकअवीन तवतिनकहसंसारसवहोइजात
जनुलीन १४ चौपई तवतिनकहयहजगतनसाचा पहलेरह्यौजहांमनराचा निर
षहामअघहिअतिभयकारी रजुजान्योनवभयोसुषैरी १५ वंधमोछभवमरनविचारी
अतिभयभीतसुनिभयोदुषारी जवलगुजेतवदुषहूदूरी नातरूदोषसोकरहदूरी १६ सु
द्धसुचेतनरूपअनूपा ग्यानमसदाएकअनुरूपा वंधमोछनहितांकहिकवहू भयोन।
हैहूनहितवहू रजुसर्पीजिमिसत्यनहोई तिमिग्यातमसुषदुषनहिकोई तरनएकर
ससेनतजाही उदयअस्तकहियतहैताही १७ वंधमोछनिसदिनसमतूला स्ववक
हलषुअज्ञानसमूला मानहितनकहिग्यानममूढा जेनरममतामदआरूढा १९ दे
वाहरषोजतग्यानमाअहौ ग्रमेजनमूढ सवघटिव्यापीनहिलषत सदामोहिंआरूढ
२० सोरठा वस्तुहिरानीगेह षोजतगहनमंझारसठ मिलैकह्यौकिमितेहिं करिप्रयया
सपविपविमूढो २१ चौपई कोउएकविदुषसरीरमझारा षोजतजदुनाततिनिरधा
रा कैसेसर्पसपवाहविनासु रजुग्यानतवउपजेग्यासु २२ ऐसेगुरुकहेतुएकग्याना
अपरउपाइनअहैसुजाना भक्तकरतकाहेकोउप्रानी इमिजोवचनकहेमनग्यानी

श्री भा
१०.५६
56

१३ जदपि ग्यानवंध भयहारी तदपि एहि विधि होइ सुषारी तव पद पंकज लेस पसाऊ जि
न काहू एहि जग सह पाऊ १४ तासु अनुग्रह जा परि होई तव ग्यान जानै नर सोई विनु प
द कंज अनुग्रह पाए करत जतन वहु अंत न लाए १५ तव ग्यान उपजे नहि कवहूं
केसेउ निपुन होइ किन जव हूं याते भूरि भाग मे नाथा निरषउं जुग पद भए सनाथा १६
अपर जन्म तिर जग कोउ ओनी धरउं जहां जस निज गति होनी तुमरे जन मो जन न
धारी होउं हास कर हास विचारी १७ मोते आहि हे वज जग जेते सवते अधक भक्ति कहु ते
ते भक्त वछल तुम भक्त रपाला करौ कृपा मेटौ भ्रम जाला १८ छंद सवते अधक तव
भक्त जदुवर धन्य वज रसनो विभो अरु धन्य वज कौ धेनु गोकुल नाथ जेहि वछरा
प्रभो १९ वहु पुन्य पुंज गोपिका जेहि सुअन तुम घर घर भए पुनि कस्यो अस्तन पान ति
नके वहुत मुद उर महि छए २० जेहि तृप्त नहि करि सके कौटिक यज्ञ जेति कहै प्रभो
सो अमृत वत पय पान कीनो जासु कोह सि हसि विभो २१ ते धन्य धन्य सु धन्य जग म
हि धन्य गोकुल गोपिन कियो अहो भाग्य नंद सुनंद गोपिन हान कह पूरन वहियो दोहा
व्रजलसना तन कृष्ण प्रभु पूर्ण परमानंद मित्र रूप भए जासु के अहो भाग्य सुष कंद २३
सोरठा तासु भाग्य की वात कौं वरनै केहि वुद्धि असि धन्य भाग्य सुर तात जे इंद्रीपति ज
गत के २४ चौपई मन अरु वुध चित्त अहंकारा चक्षु आदि जे रहि निरधारा सो इ भाज
न करि करहि तु पाना तव पद कंज अमृत रस जाना २५ छके रहते हि आस व सो ज अ

56A

हो भाग्य कहि सकै न कोऊ एक एक जे अधिपति मानी सो रमा हि सेवहि हिय आनी २६ त
इ पि सुतार यह मम मय सवही एक हेम चषश्रादिक तव ही सकल इंद्रियन करि जिन से
वा तासु भाग्य किमि वरनौ देवा २७ अहो भाग्य याते ब्रजवासी जिनके गृह विचरत अव
नासी भूरि मैं तव जग ही सा मांगौ यह तव पद धरसी सा २८ पावौ जन्म अब वन महि जा भाग
ई वृंदावन गोकुल सुषदाई जहां जीव सव रहहि निरंतर नेह तव पद रज लहौ निरंत
र २९ सत्यलोक न जिहन सुषमानी सेभंव किमि वा छुत सुषहानी जो कदाचि हमि व
हियगोसाई तो मम वचन सुनहु मन लाई ३० दोहा तव पद चरण सरोज रज जुग जु
ग श्रुति जेहि षोज सो वृंदावन भूमि सव अंकित चरन सरोज ३१ सोरठा याते ब्रजम
हि नाथ जन्म लहौ तरण द्रुम लता लहि रज हौउ सनाथ मिटै फेर संभव मरन ३२ चौपा
ई ब्रज महि जीव जहां लगि कोई चर अरु अचर मेहम लहोई तासु चरन रज नित
शिर धरऊ जेन्म अनेक दोष परहरऊ ३३ धन्य तिय गोकुल वड भागी जिनकी प्रीत सु
म्हउर लागी गोकुल वासिन कौं इमि कहेऊ धन्य धन इनका सोक रेऊ ३४ औ इमि
नाथ कहौ न ववानी कारन सो मैं कहौ वषानी जा सुनि षिल जो विन घन स्याम ता
हि विना नहि तहि विश्राम ३५ एह ते धन्य धन्य तर जानू वाल भाव ईश्वर मैं मानू
अहो हेव यह रहे जु वाला अपर सुनौ विनती एक लाला ३६ घोष निवासी जन है जेते
पुन्य पुंज जानिय सव तेते इन्ही वान दव जां घर वसहूं ताहि देव सुष सव विधसवा।

श्री०भा० द०५२

52

हु ३७ कामै है इसकै नहि ताही वसौ रिनी इमि किमि चित वाही जो कहा कि ऐसै तुम
कहहू तापर रिनाथ वचन मम गहहूं ३८ दोहा अहौ सकल फल रूप मै मो तै अधिक न
होइ है उकहा इनि कौ तुमै यह विचार चित जोइ ३९ सोरठा करि विचार मांहि तुम तै
अधिक न जब लहौ ए हितै हो नौ नाहि मोहि पाइ मन चूप रहे ४० चौपई अहौ अयन
पोइन कौ है ई रिनखुकाइ है तो सब तेई अह ह नाथ घटै न वैना सुनहु वचन मम महे सुष
अैना ४१ जननी इव सुभ वेष वनाई कपटी क्रूर पूतना आई जननी गति दीन्ही प्रभु वा
ही उरिनी कै सै तुम हि न पाई ४२ तो इन हूं को है तैसे करि उरिनी मह्है हो ऐसे करि
सकुल वकादि दियो निज धामा अति उदार है हरन कामा ४३ इन हूं को ऐसे करि
कै जू इन सब कौ है हौ भरि कै जू यह जो नाथ वचन तुम कहहूं नहि रस कहूं रिनी से
रहहू ४४ घोष निवासी जे जदुनेरा तिनके वहु गुन आन घनेरा जिनके सुहृद तनय
प्रिय प्राना तन धन धाम तुमहि एक जाना ४५ तुम तै अपर अर्थ नहि जिन हूं ए हि तैरि
नी वान इव तिन हूं तुम चरनन कौ जजै जे कोई सकल वासना तिन की तुम षोई ४६
दोहा वित्त राग गति दोष जे संन्यासी जग माहि मो तै अपर सुवस्तु कछु तिन कौं जग मैं
नाहि ४७ चौपई इनकौ कहौ रिनी के हि हेतू या पर अज उत्तर अव देतू सुनहु नाथ
मम वचन विनीता तव लगि नर कहु सव विपरीता ४८ जव लगि तव पद चित नहि जो
रा रागादिक लू टहि वहु चोरा तव लगि कारागृह जानू मोहि निगड तव लग पद मानू ४९

गुरु

57A जवतैंतवपदभक्तिनहोई तवतैंजगदुषमिटैनकोई तपजनकहुरागादिकसोई तिवनिसा
सोऊमोचककहोई ५० सोईरागादिजतनकहिहोषा नवजनकहसोइदेतप्रमोषा रहि
तप्रपंचनाथसवकाला पुनिअनुकरहुतिमिवाला ५१ जेप्रपन्नजनतिनकैहेतू लीला
करितेहिकहिसुषदेतू तनमनइंद्रीप्रानसमेता नेहादिकतववरणिनिकेता ५२ काम
नासहितभजेभगवंता तिनकोमुक्तमुक्तकरिहोकंता संततवसहिसहाकरिप्रीती ताहु
भक्तकोंगनिसकईती ५३ दोहा यांतेसंमततुमअहौरिनीवानदमिदेव योषनिवासन
केसहाअपरनजानौभेव ५४ सोरठा कहतमूढनरकोइ प्रभुवैभवहमजानिसव त
नमनवचनहुजोइ मोकहतवमहिमाअगम ५५ चौपई जगअधीसकौतजिअभिमा
ना अजवासौसुनिक्रपानिधाना निजगुनसवतुमहोहरिजानत सोनरहितमोहिस
वजगपालत ५६ मोरज्ञानप्रभुवलआधीना असकुटिलमैपरमसलीना जगकरनासव
कहविधमोही किमियहववचणसुनावहिमोही ५७ असिनहिघटैनाथजिमिकहहू
अखिललोकपतिदक्षअहहू तुमसर्वेसअसमैनाथा यांतेविनुसुनियजहुंनाथा ५८
जगकरतामैअसहेकाहू सवकौयहसरीरमंडाहू सोयहतनअपरनमैकीन्हा नाथ
प्रथममेतुमहिनचीन्हा ५९ किंकिरज्ञानिनाथनिजमोही ओपुसकछुकीजेतियजो
ही आदरअल्पजानिविधकहई जोदिहायप्रभुपदसिरधरई ६० दोहा जदुकुलज
लरुहगहनवडुताहिसुषदजनत्तूर धेनुविप्रछितिसिंधुहितसुषकरजनुविधपूर ६१

श्री भा०
६५८
58

सोरठा छितिपर निसिचर घोरि कंसादिक तम सरिस जग तिन कहं रवि करि जोरि तुम
नासे प्रभु छिन कमहि ६२ चौपई जग पाषंड धर्म तम भारी तिन कहं रविससि सम अघ सु
रारी तरनि आदि जगतेज जहां लौं तव करा छल हि भासत हांलौं ६३ वारवार प्रणवौ प्रभु
तोही करेउ अनुग्रह अतिसै मोही व्यास सुअन वोले सु भवानी विधि राति प्रति अति सु
षमानी ६४ एहि विधि विधि अस्तुति वहु करेऊ तीन प्रदछिन करि पगपरेऊ प्रभु स्वरूप
पनि जहिं यमहरायो भवन गयो वहु विनती भायो ६५ वत्सपाल लै पुनि हरि पासा आ
यो धरि पुनि गयो सु पासा हरवहु रिले गो विधजाही ताहि सहित प्रभु सुष तेहि चाही ६६
पुलिन आए तेहि सहित कपाला अति शोभित भए ही नदपाला मुनिजन लषि जो ताही
काला मगन भए सुभ सुभगा विसाला ६७ दोहा रहे वरष भरि वालकिमि विनु गुपाल प्रा
नेस छुधा पिपासा नहिं लगी इमि जो कहु हुनरेस ६८ चौपई प्रिय गुपाल ते विछुरत
जवहीं पालक जाहि सतयुग सम तवही तमोहि प्रभु माया वस तिन ही वरष वीत पल
सम भोजि नहीं ६९ जा माया मोहित जग प्रानी भूले निज सरूप अग्यानी वार वार भूले स
व कोई माया वहे करे सब सोई ७० छुधा आदि कोके तिक वाता कमलपाते यह सव ता
ता वोले वाल सकल हरषाई अहो सषा तुम पलक न लाई ७१ एको उ ग्रास न तुम विनु
षाए अति सै सीघ्र नाथ चल आए एहि साधु मिल भोजन कीजे हम सवको अति सै सुष
दीजे ७२ तव हसि हरषी केस जगही सा भोजन करउ सषन युत ईसा गृह कौ चले वालनि

58A

यसोधा अजगरमुषमहि षावतनाथा ७३ बरहसुमननवधातुअनूपा तोकरितनविचित्रतव
हुरूपा वेनुसृंगरवविहलअतिसोहन करतहासरविअवतमोहन ७४ दोहा गनतवत्स
पोछ्रतकरनिमेदमंदमुसकाति गुनगावतआवतसषा गोपिनसुषप्रददात ७५ सोरठा ए
हिविधकरतिकेलिजदुनेदा आएनिजग्रहआनंदकंदा निजनिजग्रहसबबालपधारे मा
तपितासबबचनउचारे ७६ महाव्यालमारेउएकआजू नेदसुअनकीनावडकाजू महा
कालतेहमहिबचावा सकलकथातिनघरघरगावा ७७ सुनियहकथापरीछ्रतराऊ बो
ल्योबचनउमगहियभाऊ हेमुनिकथाकहीतुमजैसे सोमेश्रवणकरीसबतैसे ७८ ब्र
जवासनकौसुतअपनेतै बडौलक्षमैप्रेमकहेतै निजतोकनतैपरसुतमाही अधकसने
हसुक्यौंतेहिपाही ७९ कहियनाथकारनसमुझाई कृपासिंधुतुमजनसुषदाई आत्म
सबकौप्रियहेरूपा सकलजगतनहितेहिअनुरूपा ८० पुत्रादिकआनमतैजानू भूतमध्य
आतमउनमानू सोवहरूपविस्नभगवाना तोकोजसुदापुत्रकरिमाना ८१ सोरठा सबक
हप्रियनिजदेह अपरनअैसोप्रियकछु निजवपुमहजिमिनेह पुत्रादिकमहतिमिनही ८२
चौपई हेनरबरसुनियेएकबाता मूढनरनिकीयहतिमिताता निजतनप्रियरांषहिअति
भारी तिमिनहिदारसुतादिककारी ८३ ममताकोभाजनयहदेहा तदपिविवेकीकरतननेने
हा जानतकालकवलयहआही नहिअतिनेहिकरतचितचाही ८४ कछुकनेहहिजेतन
सोकरही रूपविचारहेतुहियधरही आतमप्रियसमअपरनकोई यहमतिउनअपनेजि

श्री·भा·
६५९
59

यजोई ८५ सवग्यानमकोग्यानमभूपा क्रस्नदेवजानहुसुषरूपा जगकल्यानहेतुवितवाही
नरवपुधरिकोइतिहितताही ८६ अपरसुनोग्याश्चर्यनिदेसा सकलब्रह्मइमिदेवनिदेसा
सोयहक्रस्नदेवसवमाही अगजगअहैअपरकोऊनाही ८७ जलथलमैव्यापकहरिहै
ई जहलगिवस्तुचराचरकोई सकलजगतकोईस्वरवोही क्रस्नविनाकछुअपरनहोई ८
८ दोहा सवकोकारनक्रस्नलषिनासुसरणजोहोहि जतनविनासोमुक्तलहयहवरनौ।
सुनतोहि ८९ चौपई क्रस्नपादपंकजकरतरनी महासुषदग्याश्रितभयहरनी तेहिआ
श्रतजेकोऊनरहोई भवनिधतरैअवस्यकसोई ९० वछ्छपदसमभवनिधताही अनो
यासहरिपुलमिलवाही पुनिभवनिधसोलहैनकवहू भूलगएपदपल्लवतवहू ९१ हे
नृपदृष्टांतुममोहिपाही हरिकौमारअवस्थामाही कियोकर्मसोसषनिवषानौ छटि
येवर्षकहौकिमिजानौ ९२ सोमैतुमसनसकलवषाना जेहिविधकौतुककियभगा
वाना क्रस्नचरितयहसवसुषकारी हन्यौअघासुरदेवदुषारी ९३ पुनिवनभोजनविवि
धप्रकारा छीकाचोरहेतकरिप्यारा पुनिद्वैवत्सवालसवआए करिपयपानमेदिजन
ताहू ९४ पुनिअस्तुतिविधावहुविधकीना त्यागिमोहहरिपदसिरदीना अन्नाजुनगाव
हिजेसुनही अरस्मनमोहकरैमनमनही ९५ ताहिमिलैपुरुषार्थचारी विनुप्रियासमि
लमतासुवारी धनसंपतिमिलअतिसुषपाई तीनिलोकमैहोइवडाई ९६ दोहा इमि
विहारकरक्रस्नव्रजसवकाहुसुषदीन यहकुमारवयकीकथावरनीतोहिप्रवीन ९७

59A

सोरठा॥ बार भाव बहु आनि सेतु बंध मर्कट किलिपा॥ अपर खेल सुखमानि खेलत गये कुमा
र वय ॥९८॥ दोहा॥ तेइस सुंदर दोहरा दे अभछै हरखखानि॥ कहे पंच सहस सोरठा सुभग कथा सु
बखानि॥९९॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषायां निवेदे ब्रह्मस्तुति नाम चतु
र्दशोध्याय:॥१४॥ दोहा॥ धेनु चरावन व्याज करि धेनुक दलि जदुनाथ॥ कालीजर तें गो
पि मुनि रखि है दीनानाथ॥१॥ पंद्रहि के अध्याय महि एतनी कथा पवित्र मुनि कहि है
नरनाथ प्रति बानी विमल विचित्र॥२॥ चौपई॥ गई कुमार अवस्था बीती एहि बिध ली
ला किय सुभ रीती जब पोगंड अवस्था आई पसु पालन समत होउ भाई ३ निज गोध
न लै भ्रात समेता सखनि संग नन्दपालकपानि केता वन बन धेनु चराइ प्रवीना वृंदावन भू
पावन कीना ४ निज पद अंकित करि जदु नेहा महापुन्य तन मछिति सुखकेहा बलयु
त वेनु बजाय सुहावन निज गोपन तें गोप सब पावन ५ आगे करि गोधन सब ही के वन
प्रवेस किये भावत जी के कुसमावन कर सुखमा धामू तहां गए प्रभु विहरन कामू ६ मंजु
घोष अलि द्विज बहु जाती मृग बाराह गनन नाना भांती सर सुंदर जल अति गंभीरा त्रिवि
ध पवन सौरभ पुनि नीरा ७ स्वछ स्वाद जनु सुधा समाना बिसद संत मन सरिस बखाना
देखि विपन सुंदर सर सोभा रमन हेतु प्रभु को मन लोभा ८ दोहा सुंदर तरु पल्लव अरुन
फल प्रसून उर भार पद परसत निज सखन तैं हेरि कहेउ नंदकुमार ९ सोरठा बोले श्रीज
दुनाथ मंद मंद हस भ्रात सौं सुनिय तात यह गाथ द्रुम सोभा निरखहु संजन १० चौपई

आ॰ भा॰
दृ॰ ६०
60

अहोतातएतरुगनजेते अहैअमरजानियसवतेते सुरपूजितपदकंजनिहारे फलअरु
फूलउपायनधारे ११ सिषनसहितपरसैजनआजू अर्पनकरतसकलनिजसाजू व
छजन्मअघनासिनहेतू परसैंतवपदक्रपानिकेतू १२ अहोअनघयेअलिगनजेते अहै
देवसबजानहुतेते गावहितवजसअतिचितचाही अषिललोकतीरथसमताही १३
तुमनरवेषगूढहनजाना अमरभएसवअलिगननाना गूढवेषधरतवपदकंजा
भजहिनिरंतरमवरूजगगंजा १४ केकीगननांचहिमुदमानी गोपीइवसबमगगिरिसुहैनी
पलकल्पागिनिरषैतवरूपा तवप्रियकरहिविनयअनुरूपा १५ कोकिलकूकिकूकि
प्रियवानी तवसतकारकरहिसुषमानी साधुनकौयहसहजसुभाऊ पूजहिकापैवं
वनचितचाऊ १६ ग्रहआगमनजानिजगदीसा अर्पनकरहिसुवचनपियूसा धन्न
पृथिवीउतरेजगदीसा निरषैतवभयगगनमुनिईसा १७ दोहा धन्यधरनीतलएविरुध
सवतवपदपरससुजानि करजपरसकरदुमलतालैहैपरमकल्यान १८ चौपई सरि
तागिरिषगमृगवनजेतें धन्यधन्यपसुतनएतेते मगएकटकवदननिहारी प्रेमसहि
तयेधन्यविचारी १९ तवभुजमध्यरमारहवासू गोपिनकहिसोसहितसुपासू धन्यभा
गगोपिनकेभूरी कोवरनेमहिमाअतिरूरी २० एहिविधवलसोवरनक्रपाला लषि
वृंदावनप्रभाविसाला अतिप्रसन्नमनआविनसमेता रमतभएहरिक्रपानिकेता २१
गिरिसमीपसरितांतटसुंदर धेनुचरावतिहरिगुनमंदिर सोछविवरनसकैनहिकोऊ

60A

सेस ग्राहिल बिछकु रहे सोऊ २२ जे महं राधि अल बिग सुभ गाना तेहि अनु सुभ गगान हरिदा
ना गोपि सुजस गावति हरि केरे विहरति विपन सघन सुष हेरे २३ हरि वरि त्र किये सरू पानि
केता प्रगट भए जो सेतन हेना कबहु क कलहंसनि की वानी सुनि तेहि आपु सरस मन
जानी २४ दोहा विधिवाहन की सुभ गिरा तेहि सम बोलत बेन कबहु क केकीन तल बि
नाचत हरि सुष अैन २५ सोरठा कबहु क दूर निहार गोधन अरु निज सषन के सषा
सेनहि तंकार जल ह गिरा टेरत पसुन २६ चौपई चक्र चकोर कूं च अरु भारत मोराहि
कंद्विज जे वनराजन जेहि अनुकरन बोलि गति तासू एहि विधि षेलत सरू पानि वासू
२७ कबहु क अपर जंतु वन जेऊ सिंहनाद सुं जित जेऊ ताहि संग भाजत हरि आए उर
तभीतत वकरत कलाए २८ कबहु क क्रीडा श्रम हिय आनी बैठे सुभ गछ्याऊं तर जा
नी सषा अंक उपवरहन कीना निज जन सकल सुषी तब कीना २९ चापत चरण स
षा बड़भागी निज कहु विषय पलेस महि लागी नाचत गाइ कवहु पुनि जगरत लरता
फेर फिर फिर तेहि वरजत ३० सषा हस्त गहि हि हसत हसाई बहुर प्रसंसा करत वनाई
गोपिन संग षेलत जदुराई देव बंधु लषि अति हरषाई ३१ दोहा कबहु बनावं ताहलन
कीन तल्प मूल तरु जाइ गोपि गोद उपवरह करि सोवत त्रिभुवन राइ ३२ सोरठा भिर
तपर सपर नाथ ब्याल वारत जब सषानि सो जुग पद गहि वरहाय चांपत कोउ वहु
पुन्य कृत ३३ चौपई भूरि पुन्य कृत कोउ जन भूपा करत पवन तेहि सुष अनुरूपा अ

निभा

तिसुष

श्री·भा·
६६१.
61

३ पगेकोउवडभागी गावहिसरससराग अनुरागी ३४ वालचरित्रगावैगोपाला हरषहरष
जोनाहीकाला एहिविधनिजमायाकरिगूढा रहेकालबहुसमुझनमूढा ३५ विचविच
भए प्रगटहरिकबहूं दनुजहनेजबतेहिछिनतबहूं एहिविधरमतरहेबहुकाला गोपबा
लजनुचरितविसाला ३६ जिमिप्राकृतवालकगुणसीला करतरहेप्रभुब्रजनिजली
ला श्रीदामाएकसषासयानो सुवलआदिप्रियअपरसुजानो ३७ बोलेवचनविहस
सुषमानी कृपासिंधुसोअतिसनमानी रामरामहेजदुकुलभूषन अहोनाथघमअघद
नुजविदूषन ३८ इतितेनिकटतालबनसुंदर सघनसुहावनफलसुषमंदिर गिरि
गिरतफलपकसुहावन छितिछपिरहीअमीसमपावन ३९ हैपरंतुधेनुकअतिघोर
रोसैंयातिनसबफलबहु औरा अतिविसालबलकालसमाना षरसरूपतनकुलस
प्रमाना ४० दोहा ताहिसरसबलअपरबहुजातितासुअतिघोर नरअहारसंततकरै
कुमतीकठिनकठोर ४१ चौपई तेहिभयभीतमनुजनहिजाही पसुपंछीनहिनि
कटरहाही फलअभुक्तसर्वजइनेहा अतिसौरभफलहैसुषकेहा ४२ अनिलसंग
यहसुरभिअनूपा मनकहषैंचिलइसुषरूपा मनलोभितफलचाहिविसेषी हीजि
यनाथकृपाहियपेषी हेबलदेवचाहिचितभूरी चलियनाथकीजैरुचिपूरी जोइ
छाप्रभुहोइतुम्हारी चलहुनाथतौजनसुषकारी एहिविधसषनकहामृदुवानीसु
निहियहरषचलिनहियआनी ४३ सषिनसुषदहोउजननतवही गएतुरतवानी

सुनजवही गएतालवनराजतहोऊ मन्नगायंहसाहिसमुहिसोऊ ४७ गहनजाइवलक
रिगहतालाहियेउहलाइगिरेफलजाला फलकेगिरतसोरचहुंग्रोरा धायोग्रवकनि
ग्रसुरवरघोरा ४८ दोहा वलेउरोसभरिछोभकरगिरिसमकायविलंसे कंपितछि
तिगिरद्रुमसहितग्रतिसैक्रूरकराल ४९ चोपई ग्राइतुरतयहहलधरठाढे युगलपाइ
उरमैहनिगाढे करिवरनाहमूढसठघोरा भ्रमतभयोवलकेचहुग्रोरा ५० पुनिकरि
क्रोधनिकटचलिग्रावा वलसनमुषनिजवदनदिषावा पिछिलेयुगपरजोरिगवारा
पुनिवलउरकहुकरेउप्रहारा ५१ ग्रावतचरननेदेषवलजवही पकरिलीयोपगजुग
करितवही एकपानगहिताहिघुमाई पटकितालतरुपैसुषपाई ५२ भ्रमतहिप्रानग
येवलतासु मारयोग्रब्बौ ग्रपनेग्रघग्रासु एहिविधनपधेनुकवलमारयो गिरयोता
रलैवहुछितिडारयो ५३ नारतालले गिरेग्रनेका कोगनसकग्रसकहिविवेका फल
सुरंगरिवर्ग्रंकरिछितिराजत घननभउवसोभानहछाजत ५४ दोहा रामकृष्णकेकर्म
लषिसुरन्हदुंदुभीदीन्ह सुमनवर्षिहरषतहियेजयजयमुनिगनकीन्ह ५५ चोपई ता
हिनतेसवकहफलमिलेऊ भयगतकाननेसुषजमलहेऊ तएसुभचरहिधेनुस
वुपाए धेनुकहतफलसषनषवाए ५६ कमलनयनकीरतजगपावन ग्रनुगगीत
गावतमनभावनि सुरनरमुनिदेवहरषाई नाचतिकिंकरहदिगुनगाई ५७ षाता
सहितव्रजप्रविसेभूपा जगसुषदायकगोपसरूपा नंदसुग्रनगावतगहजानी गो

श्री भा॰
द॰ ६२

पीचलीहरखहितमानी ५८ अतिउतकंठारसनकाजू आइतुरतहेषौव्रजराजू स्या
मसखिकनसौरभकेसा गोरजभरयौसुभगसुठिवेसा ५९ मोरपछवनसुमनसुहाए
अंगअंगसोभितमनलाए चितवनललितमेदमदहासा वंसीरवसवसुषनिधवासा
६० दोहा व्रजजुवतीदृगभंगसम कन्ह वदनवरकंज पानकरयौमकरंदमविहरंता
पभयभंज ६१ चौपई ललितकटाछछेपहरिकीन्हा सजलमंदमुसकनिसुषदीन्हा
व्रजवनताएहिविधसनमानी भवनप्रवेसकीनरसषानी ६२ दोऊजननीसुतउभ
यनिहारी हरषेउठांइअंकवैठारी आलिंगनदैपुनिविविधप्रकारा सुतलडाइसुषल
हीअपारा ६३ ललितकहूरउवटिअन्हवाए स्रमपथसकलसदूरवहाए नीलपीत
पटकटितटवाधी एहिविधसुतजसुमतिआराधी ६४ पुनिसुगंधचर्चितकरिगाता
सुमनमालपहिराइसुहाता भोजनविविधप्रकारअनेका जसुमतिपरसेसहितवि
वेका ६५ दोहा भोजनकरहरप्रीतजुतजननीतपैसवारि सोयेतहजहुंवेसमनि
अषिललोकसुषकार ६६ चौपई एहिविधश्रीभगवंतअनंता व्रजवासीसुषित
कियेनिंजसंता एकसमैजसुमनकोवीरा सुषिनसहितगेजमुनानीरा ६७ वसतेत
हिदिवसरहेघरमाही हरिचरित्रकहुहिगमनाही गोपधेनुरववकरलहितापा ग्री
स्मधूपघोरतनव्यापा ६८ तषितमहाव्याकुलमनतासू गरलविदुषितजलपि
यआसू देवीहततचितविषजलजवही परसतमृतुकभएसवतवही ६९ गिरिगे

62A

सकलसषाअरुधेनु जमैंतीरतीरसुभरेनू नासुदसालषिक्रसमकपाला योगेश्वरके
दृसदयाला ७० क्रपाकटाक्ष अमृतवरषाई सषाधेनुएकसंगजिवाई भक्तवछलईस्वर
सुषदाई सर्वजीवनकीकरीसहाई ७१ दोहा उठेसलिलतटतेसवैदेषपरसपरैनैनसुध
आईविसमतभएहरषकहतदमिवेन ७२ सोरठा सषनिदहेमन आनि मरे जिएयेहिका
लमहि कृस्नअनुग्रहजानि मनहरषेअतिप्रेमभरि ॥७३॥ कहे सोरठा चारि दोहा सुंदरदस
कहे कृस्नकथासुषकारि पंद्रहिके अध्यायमहि ॥७४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदस
मस्कंधेभाषानिबंधे धेनुकवधवरननंनाम पंचदशोध्याय:॥१५॥दोहा॥ कालीनिग्र
ह कृस्नप्रभुकरिहैयोइसमाहि अहिपतनीकीविनयसुनिततजिहैंहैपुनिवाहि १ सषनि
षवाएतालफलहतिधेनुकजदुनेद अवकालीकेसीसपरनचिहैंकरुनाकंद २ चौपई
विषदूषितरविनेहिनदेषी कृस्नवेदनिजहिमहिलेषी जमुनासुद्धकरनकेकाजू काल
हिकाढिहीनिवजराजू ३ सुनिमुनिवचननृपतिहसिवोला निजसंसयहियकोसव
षोला जमुनाजलगंभीरसुजाना निग्रहकिमिकियसरपकराला ४ सोपुनिवहुजुग
वसजलमाही कारनसमुझपरामोहिनाही घलवासीजलमहिकिमिवसई कहिय
नाथममहि सुषलहई ५ हेमुनिभगवतचरितरसाला सदासुनतेतृहीनजनपाला नेद
सुअनकेचरितउदारा कहियनाथमोहिवारहिवारा ६ कथाअमृततवमुषकरगाई
नहिअघाउसुनिहेमुनिराई सुनिनृपवचनकहनमुनिलागे भगवतगुनमहिचितअनु

श्री भा
६६२
63

रागो ७ कालीनाथ एक अहिराजू कालिंदी ह्रद वसन रराजू तासु गरल दूषित जल घोरा
विषझलान तेह पचै ककोरा ८ तेहि ऊपर उडु चले षग कोई जल महि गिरै प्रान तह षोई
जो कोउ जल पीवै धौ जाई छिन महि प्रान रहित होइ न्हाई ९ दोहा ता जल कहु जव परि
सकै पवन कतहु चलि जाइ थावर जंगम जीव सव परसत जाहि नसाइ १० चौपई वल
षेदिन भंजन महिमा रू एहि कारन प्रभु कौ अवतारू काली प्रवल वंड विष घोरा ताहि दे
षिकै नंद किसोरा ११ एक कदंव तुंग तेहि तीरा फैट वांधि चढि गे वलवीरा चढत प्रमान ता
रीजु करिया तां कौ षा वृष्भ वन मै वरिया १२ ढाकि ताल रसना करि गाढौ जमना विसहद कै
रोम तिरा ढौ कोउ कर सका हदय विचारी अगजग जीव जरै सव जारी १३ रहो क ह्रदव
तीर कहु कैसै ताहि कहत उतर सुनि औसै भावी होन हार रषवारी चढि है कृष्ण देव एहि
भाषी १४ तेहि तै नहि कदंव जर गएऊ विषय को परस ताहि नहि भएऊ अय वाग रलै अम
त जव आना तापरि आनि वैठि सुष माना १५ तासु परस तै सोन हि जरऊ अपर पुराणमो
रु हमि कहे उ तातै अमर भयौ तिन्ह काला वांके ऊपर चढे गोपाला १६ दोहा भुजनाउ नक
र नाय जव कूदे हद के माहि सतसत धनुष प्रमान जल पसरयौ अवर्ज नाहि १७ सोरठा
वल अनंत है जासु त्रिभुवन पति भगवत हारि अचरज अहै न तासु सुत धन जल गो वारि
हिस १८ चौपई विषक वाढ जल घोर तुरंगा तामहि कृष्ण षेल वहु रंगा हरि भुज दंड पा
त जल घोषा जनु गज मत्त षेलु सहरो षा १९ सो निज सहन न सुन्यो अहिराजु सहि न हि सा

63A

कापराभवकाजू. रोषसहित धायौ बल आसू शीघ्र आइ गो कृसनु पासू विहरत देष्यौ
कृसन कृपाला मेघस्याम तनु जनु छवि साला दरसनीय कुमार सुहावनि पीत वसन जन
मन अति भावनि २१ हे धौ कौन सेकन हि नेकू विहरैं मम मंदिर यह एकू अस विचार आ
वा ढिग आए काहे पापग महि कर अति दाए २२ प्रभु तनु लपटि गयौ सब अंगा महा क्रूर म
द मत्त भुअंगा सकल अंग अहि लपट्यौ देषी भयौ सषन हिय सोच विसेषी २३ जिनके
कृसन प्रान धन गेहा सुत कलित्र सोदर परिजन देहा अपर न प्रिय नित कहुं से सारू एक कृ
सन बिनु सकल असारू २४ दोहा भए मूढ बुध बिकुल तनु मनु सुध गई भूलि गिरे भू।
मि परतु रत सब कौनि कके सम तूल २५ सोरठा धेनु वत्स वृष जाति करिहि ष्याद्र करु
ना सहित जनु रोवहि बहु भांति देषि नाथ क्रीडा रहित २६ चौपई ब्रज मै त्रिविध भए उत
पाता दिवभू अंतरीछ दुष दाता नेहा दिक जे गोप संयानै ताहि देषि अति से अकुलानै
२७ मैससै एनि परम सलौने चापत अंतर हंत हौं लीने जान्यौ बल बिनु गे जदुराई बोजा
न बलेन्ता हि चित लाई २८ देषि बडौ उतपात कठोरा निधन मानि मन संकन घोरा बाल
वृद्ध नर नारि समेता व्याकुल न जित जिव ले निकेता २९ कृसन प्रान धन जीवन जासू घ
र कि मिरहे हरस हरि प्यासू जानत नहि प्रभाव हरि केरा एहि ते मन दुष भयौ घनेरा ३०
दोहा प्रभु प्रताप बल देव सब जानत महु मुसुकाइ देष विकल तासव न कौ रहे मषह सु
षपाइ ३१ चौपई तिन प्रति कछुन कह्यो मुषभाषी अनुज चरित्र हिये धरि राषी बोजत

श्री·भा·
६·६४
64

चलैजाहिपरताही भ्रातहिगएकृस्नमगजाई ३२ मगमहप्रभुपदग्रंकितधूरी ग्रंकुसध
मलध्वजागुनभूरी बीचबीचगोपहजवरेषा देषिकृस्नपदग्रवनिविसेषा ३३ एहिविध
बोजतनरग्ररुनारी बीचबीचपदग्रपरनिहारी ताहिल्यागिहरिपरमनेहू सी जिमिजो
गीग्रातमगहिलेही ३४ तनउपाधितजिचितघनरूपा ग्रहनकरैग्रातमघनरूपा ह
मिषोजतपहुंचेसरितीरा रवितनयाजेहिजलगंभीरा ३५ हदकेमध्यललितग्रभि
रामा गोपवेससुंदरघनस्यामा ग्रहिलपट्यौवपुग्रंगनिहारी भएमहाव्याकुलनर
नारी ३६ दोहा भुजगभोगलपट्यौलषैपुनिगतिईहादेषि मनहुमृतकइविहुग
एगोपीगोपविसेष ३७ चौपई धेनुवंदग्रारतसुररटही पलकत्यागिप्रभमुषस
वलषहीं गोपिनेहमुग्रननातिदेषी भयोहृदयग्रतितापविसेषी ३८ कृस्नगिरामदुह
सनग्रनूपा वंकविलोकनिसुखग्रनुरूपा ताहिसिमरमनग्रपरनजाना देषिकृस्न
तनग्रहिलपटाना ३९ तीनिलोकसुनैभातिनही कृस्नभावसंतनहियजिनहीं ज
सुमतिसुगनदेषिग्रकुलानी जमनानीरधसीहुजमानी ४० ग्रपरनारितेहिमहितैर
ग्रानी तनंसुधमहलगईसुषहानी ग्रपरजेव्रजकीनारिग्रनेका तुल्यव्यथाजिन
कीमतिएका ४१ कृस्नमुषारविंदद्रिगदीनैं रोवहिंविह्वलवहनमलीनैं. बारजेलोच
नमोचहिवारी संततिहियजेवसतिमुरारी ४२ दोहा कहिकहिलगितगोपलिगुन
व्रजकीनैंजोष्याल भूलीतनमनहुसवभईविकलव्रजवाल ४३ चौपई नेहग्रा

64A

हिजेगोपघनेरे धसतनीरवलजूगहिफेरे जानतप्रभुकौतुकभलिरीती सुंदरवचनक
हेकरिप्रीती ४४ प्रभुदेषावजकेनरनारी वालवृद्धसवभएदुषारी ममहितदहनकौदु।
षिअतिभारी करुणाकरनिजहृदयविचारी ४५ हदुएकनरकोतककीना अहिवंधन
तेकछ्योप्रवीना हलसहेववजकरिअहिराजू अयतभयोतनमनअतिलाजू ४६ वडंचौ
हतअतिसैवरजेरू तवौअसर्पवंधनअतिघोरू फनउठाइप्रभुओरनिहारू रोषमानर
हषरैगवारू ४७ नासाविविरस्वासअतिघोरा विषभाजनजनुपावकहोरा नेनक
रालअनलजनुवरई मुषउल्मूकराशिजनुजरई ४८ दोहा एहिविधदहोअतिलस
नुकालीकालकराल तुरतमालसाषामनहुलसतफननकौजाल ४९ चौपई ताहि
हलसघेरौचहुंओरा मनहुपयोगसघेरअहिघोरा नयनज्वालविषअधिककरोला र
सनादेवारतिमुषकाला ५० जेहिहिसिप्रभुतेहिंहुलाऊ एहिविधभ्रमतफिरनहहोऊ
प्रभुयदाइएहिविधवलतासू भएउश्रमतअहिएहविधयासू ५१ हरिसवकलाप्रवी
नउदारा नत्पहेतुनिजहृदयविचारा सकलसीसधरताछुनवाई चढेकूहिजदुवरसु
षपाई ५२ नवतगुपालतालगतिनाना कालीफनपरिनृतपानिधाना फनमणिअरु
नअरुनपदकंजा अयमिलेअतिछविकोपुंजा ५३ प्रभुकहनचनतेदेषिसुरचारनअ
एवनवनसेवाकारन देववधूगावहिपिकवैनी अपसरसंगमिलीमृगनैनी ५४ सि
द्धमुनीसरगंधर्वनजेते यक्षकिंनरविद्याधरतेते पणवमृदंगअहिवहुवाजेभिन्नभिन्न

श्री·भा·
२६५
65

नानाविंधराजे ५५ दोहा करिअस्तुतिसुरसिद्धिगएसुमनवरषिहरषाइ नचननसुका
लीकेफननकतमरदेहिसुषपाइ ५६ चौपाई सतअरुएकसीसतेहिकेरा परप्रहारप्रभु
करेउघनेरा फनसवनमितफनीव्हेगएउ विद्धलतनसुधकछुकनलहेऊ ५७ कोउ
फनउठेनाहिहरिदेषी करमनत्यतवकछुकविसेषी तेरततानताहिपरजाई जोकछु
ऊचौहतहिषाई ५८ भमनभयोवलहीनअहीसा मरएतुल्यसोभयोमहीसा मुषना
सातेरुधरप्रवाहूं चलेअमितसुधतननहितासू ५९ पुनिकवहुककरक्रोधकठोरा
सिरउठाइत्योसातजिघोरा प्रभुसोइपदप्रहारकरतासू भंजहिसिरहरिकरिपरहासू
६० तेहितेहिसमैदेवगंधर्वा किंनरचारनमुनिगनसर्वा ब्रह्माशिवआदिहिंइंद्रदेवा सा
रदमुनिंजनमगुजोदेवा ६१ जसुहानेदनकहसवआई पूजहिसुमनसुरासिसुषपाई
सेसासनजनुप्रहषप्रराएु पूजेउएंहिविधकरसनमाना ६२ दोहा नत्यभेदकरिभि
न्नसिररुधरवमनमुषश्रोन सिमिरचराचरजगतगुरुअगजगजेहिप्रनिभौन ६३
सोरठा अतिगरुयेहहरिजानि भयोशरनअहिराजतव पायोफलसमबमानि सोचित
अनुचितकंमेजिन ६४ चौपाई अखिलजगतजेहिउदरमेसारा तासुपादतलघातअपा
रा अतपत्रसवफनसवताके चूरचूरसेव्हैगएवाके ६५ सुनियतिगतिअहिहितियसव
धाई विधुरेकचनहिलनसुधकाई अैसीगतिनिजपतिकीदेषी अहिपतनीहियसो
चविसेषी ६६ मनचितअतिउदवेगनघोरा हरिकहदेषिउभयकरजोरा आगेधारिनि

65A जवालग्रनेका करहिंदंडवतिछितिसिरटेका ६७ प्रभुभारनवरसंग्रनेता सरनगहीतिन
श्रीभगवंता भक्तिवछलयहविरदतिहारो महापातगकीयाकोन्पारो ६८ अहोनाथयह
दंडनयोगू न्यायदंडयहभयोनिरोगू तवग्रासाधनकीना एहिभारी जोग्पदंडएहिहियो
मुरारी ६९ सुतग्ररुरिपुएकसरिसतुम्हारे तद्यपिखलतुमग्रमितसंघारे षलनिग्र
हहितयहग्रवतारू हरिमहीभारउतारनहारू ७० एहिदंडजुदीना ग्रतिमलकीनापर
मग्रनुग्रहमैमाना तवपगतलधूरीभवरूजमरी लहैनसूरीस्रुतिगाना ७१ इनतिज
सिरधारा पुन्यग्रपाराकेवलतहानकरेउधाना महसर्पकुजातोग्रघभवष्यातीसो
जरिगोग्रवमैजाना ७२ यहनामजुकालीपरमकुचालीपरिहरीतपरुतरासी केतजि
महमानाजपकछुठानाकैतीरथकौहेवासी ७३ कैधीयहहरीनीजनसनमानी एकेजा
नीग्रवनासी योकीशुभकरनीयातिनवरनीपायधरेसिरमैनासी ७४ हेहेवमुकं
दाग्रानंदकेदाग्रहिमतिमंदाकूरमहा एहिसुकृतयुदानाहमनहिजानातवपदपंकज
सीललहा ७५ नितकरितपभारी ग्रजग्रसुरारी चाहतजासुप्रसादलहा सोरमासहा
हीहियउमगाहीतवपदपंकजग्रासुमहा ७६ दोहा रमोग्राहिजेपरसहित करहिंसदा
व्रतनेम ग्रहोसर्पसठभागकीपरस्यौपदविनुप्रेम ७७ सोरठा ग्रैसीमोहिलषाइ
नहितपग्रादिकारनकछू तवकृपालनागाइ कहतवेदकछुमितिनहीं ७८ चौपाई जे
कोउतवपदसरनगहाहीतेकछुग्रपरनसुषललचाहीं नाकलोकसुरईसनकेना

श्री भा
१६६
66

एकचक्रभूधनसुखजेता ७९ नागलोकसुखअमितप्रकारा योगसिद्धफलकहेअपारा
मुक्तवाहिनहितिनकहुकेवहूं तवपदपंकजमेसुखसवहूं ८० अखिललोकतेहितुष्य
समाना जिनकियकंजरसासवपाना अहिमलीनपतिनायहमारा विषअतिघोरम
हतमभारा ८१ सोरजविनुप्रियासहनिपावा तासुभाग्यकहुकोकविगावा अजगि
रीसंतोध्यानलगावे निगमपुराणजाअंतनपावे ८२ जारजअहितकारजननअनेका
करतयोगगहिनेमविवेका सोरजविनाजतननसिरधरेऊ प्रभुरूजरोगसकलपरह
रेऊ ८३ छंद तवपदनमामिअनंत भगवंतकमलाकंत तुमपुरुषपरमसुजानि जे
हिमहतकरिश्रुतिगानि अगजगसकलतववास सवकेपरेसुषरास चरअचरक
हतुमहेतु निजसेनकहसुखहेतु ८५ तुमआहिअंतनजानि जेनिपुनजगमहसान
हमनारसववविधहीन तवचरनअवंद्रिगहीन तुमस्यानरूपजुईस हमनमहियदध
रिसीस चरणरजधरैमुनीस वारवारनाऊपदसीस ८७ अपरछंद तुमध्यानध
नविस्यानरूपसरूपव्रह्मनमामिहे तुमअगुनसगुनसरूपसुहरसकलसन्तनिवि
धानहे ८८ प्रभुकालरूपसरूपअरभुतभुवनसंभवपालहे तुमकालहूकेपरमसा
क्षीविश्वरूपनमामिहे ८९ तवपादहेतिकरिवारवारउहारहस्याजगतके तवपदन
मामिवदामिकिमिगुनअखलसुखप्रदभक्तके ९० छितिआहिपंचप्रपंचरचनास
कलतववपुनाथके हमप्रानइंद्रीवुद्धिमनचितसकलतुमवजनायहे ९१ छंद

66A

नमो त्रिगुन सत्वादिक रूप नमो अहंकृतन ईस अनूप नमो महतत्वन के ईसा नमो सकल
करता जगदीसा ९२ जय कूटस्थ अनेनता एकरस जय सूक्षम सर्वज्ञ विस्वबस बहु सास्त्र
विचार विचारत है तव भूत तनितन्ह पि कोउ लहै ९३ नत वाचक वाच्य सरूप करें जग वेद
तरूप परे सपरे द्विग आहि सरूप निमामि विभो तिन तैं निरपेक्षक रूप प्रभो ९४ तव ब्या
स सबै निगमाहि हिहरे तिन मैं द्वै भेद प्रसिद्ध करे जय कृस्न किसोर नमामि परं भव षंड नरा
मम ह्यावि परं ९५ जय वासुदेव पद कंजनमो परद्युम्न निविभो अपराध छमो अनिरुद्ध सुष
कररूप हरे पति श्री गुन नाथ क्षमा जु करे ९६ जय भक्त पति जदुनाथ प्रभो पद कंजन
मामि नमामि विभो हिय अंतह करन चतुर्विध जो तुम कारन रूप सहाय सबै जो ९७ दोहा अ
गजग के अंतह करन सकल प्रकासक नाथ सबके साक्षी रूप तुम मम पति भयो सनाथ
९८ सोरठा मन अरु बुद्ध विचार नहि गोचर तव रूप हरि अह कहहु यह अध कार तव मह
मा कहु को लषै ९९ छंद प्रभु कारन कारज रूप नमो गोपाल प्रवर्तक नाथ नमो जग से
वँ मपालन आपक रौ पुनि अंतन सबै निज माहि थिरौ १०० गुन ईस नियंता नाथ हरे पद दंद
नमामि दयाजु करे जग आदि सबै पुनि नाथ तुम्ही जस जासु अहैं सु सबैसब ही १०१ प्र
निबाध करावत हौ तुम्ही भलि कंजन मामि कृपा करही एहि तें जग जीव जहां लगि जे
सबके करता तुम नाथ अजे १०२ कोउ सो न अस्यो न तुम्ह सम हो जस सेचन है तुस रूप लहा
तव क्रीडा साधन है सिगरे सबके तुम रक्षक एक हरे १०३ हित साधुन के अवतार धरं

श्री·भा
६६
67

तेहि रछक सुषकंदसमयं षल षंडन मेदिनि मह मरुजं श्रुति धर्म परायन नाथ अजे ४ छंद
विनती प्रभु मोरी सुनिय बहोरी नेह सुभ्रन सुषकंदा अहि जाति कुजाती अधम अपरवा
ती रवि उमो रपविमेदा ५ यह प्रजा निहारी छमहु विचारी सुत पितु इव जड नेदा तुम सील
निधाना छमा प्रधाना छमहु नाथ यह अतिगेहा ६ तुम हीन दयाला हो हु कृपाला नत
हृनजैए हस्वान प्रभो हम कह बड सोच्चू तिय मति पोचू दीजै पतिय हदा निषिभो ७ तव पति
तजि दीन्हा छमा जु कीन्हा तुम हूं जो यह राह गहो पति की गति असी तिय तेहि कैसी मोक्ष
दाचिद्र मिव नक हो ७ पद पंकज दासी हे अबनासी जानि हमै अब याह प्रभो तव अस्मा
कारी हहि मुरारी नाथ कृपापति छाडि विभो ८ तव वचन प्रमाना चलहि सुजाना ता सुमि
टैम पभीत मढा हम नार अयानी पुनि अस्मानी छमहु चूक कछु वचन कहा ९ दोहा अ
हिपतनी एहि विधवरन प्रभु जस परम पुनीत सुनि करुणानिधि भूपत व छोरे हुये अहि
कर प्रीत १० सोरठा चरनघात करि तासु दूक दूक सब फन फने मतक सरिस तेहि त्वासु
त्याग दियो तव नाहि हरि ११ चौपई सा विधान भा छनएक वीते दृढ प्रान भए सुबहोते अ
ति दुष लहो सिथिल सब गाता में द्रक्रिया सुष अवनबाता १२ दीरघस्वास द्वार वहु बा
रा जेन नेन हिय साह सधारा हो न जाहि जु गहा यम हीसा बोल्यो हरिसन बचन अतीसा
१३ हम निसर्ग ते होते षल अति घोरा नाम सक्य अधक क्रोध नहि घोरा नाघ सुभाव दुसा
हम सवका हूं न जिन सके को उ भलि गति जाहूं १४ अग्र ह अस तक रे सब कोई त्यागि नस

67A

कै कोउ छिन होई नाथ विश्व यह गुन नहिं तकीन्हा जस गुन जासु तासु तस दीन्हा २५ तामसी
जीव जो जात सुभाई कर्म वासिना बुध उपजाई पुनि नाना विध जाति सुभाऊ वल विक्र
म आकार वनाऊ २६ जस जेहि जोनि जस जासू फल उपजै तैसे तन वतासू हे भगवंत अनंत
गुसाईं हम पुनि सर्प जाति दुखदाई २७ विष धर क्रोध होइ नहिं थोरा किमि त्यागहि नि
ज सुभाव कठोरा तव माया मोहित हम स्वामी अनंत अनंत वर्ष पद कंज न नामी २८ दोहा माया
दुस्तरं नाथ न तव सोत वस हम अधीन मायां क्रत चर अचर सव कैसे सो करे प्रवीन २९ सोरठा
तुम सर्वज्ञ सुजानि जिमि कोउ पालव वूरवन आवन फेरे निदान तद्यपि हम आधीन
तव ०३० चौपई कारन करन ईस भगवंता सव जन के तुम एक अनंता निग्रह अनुमोहन
दोऊ नाथा सकल अहे प्रभु एक न व हाथा ३१ आसो देहु नाथ तुम जैसी हम करिहें सेत।
तथ ऐसी तुम ही नौके नाथ भगवंता दुष्ट दलन संतन दुख हरता ३२ मुनि असवचन नाग सम्मु वे
षं कहा वोले वचन सुषद ने रनेहा रहा न तू अव वसहि फनीसा जाहि सीघ्र तू नट वारी।
सा ३३ जमुना जल पीवें नर नारी धेनु वत्स तन सहोइ सुषारी सुत दारा परिकर लै साथ
जाहि वेग अव ही अहिनाथा ३४ यह प्रसंग गावे जो सुनही तुम ते भय सोक वहु न लहई
यह आज्ञा मम संत न माने काहू हि नहि हें से उमन वानी ३५ एहि सर जो मज्जन कोउ क
रिहै देव पितर हि तु पिंड जु भरिहै वत करि मम सिमरन अरु ध्याना जे करिहै तेहि पाप।
न साना ३६ दोहा रमन कनामा दीप वर तहां वसो सुष पाइ जासु त्रास ते दति व स्योभं

श्रीभा०
१६८
68

गहुगईनिसाद्र ॥ १७ चौपई ममचरणनरविंदहके अंका नवसिरअंकनभयोनिसंका गरु
डपाइनोकहनहिकवहू तहांवसकुसुनपरजनसवहू २८ हमिजवभयो जगतपतिभू
पा अहितियमगंनभईलखिरूपा पुनिसाहरगुनविविधप्रकारा प्रभुहिपूजिकीनोसत
कारा २९ दिव्यवसनमनगनसुभमाला दिव्यगंधसवसौरभिसाला कुंदिलहियमोसु
भगविसाला सोभितभए जोनंदकेलाला ३० दिव्यकंजस्वजभूषनआनी अपरेउप्रभुक
विंध हुअतिसुषमानी एहिप्रभहिप्रसन्नकराई पुनिअतिविनयकीन्हमनलाई ३१ आग्युंसमो
गिअ हछनकीना पुनिनिजसिरहरिचरनसुदीना सुतकलत्रमिलकै एकसाथा गएदीप
परमनककनरनाथा ३२ तोहिनतैरविसुतासुहावन गतिविषभई सुभगअतिपावन
श्रीउगमनुजरूपधरसाई करेअनुग्रहवृजसुषदाई ३३ दोहा गोपगायहितहेतहे
रिकर्दहोकालीकाल रामक्रपालोहारसवलपालकपलिहलसाल ३४ सोरठा अैसेपर
मकृपालि ताहिछांडिमनमन्ह ते विषयभजेभवजाल त्यागिताहिभजुकुलपद ३५ दो
हा हासुमयंद्दिहकरैआहिसोरठाजानि कहेछंदनवसुभगअति सोरहेमध्यवषानि
३६ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधेभाषानिबंधे कालीनियीधनोनामषोड
सोध्यायः ॥ १६ ॥ कालीदहतेनिकसहरिवंधुदुषितनिजहेतु अमनताहिनिसिसयन
मैताहि आनदुषहेतु ॥ सोरठा देषिवंधुदुषआप करिदावानलपानप्रभु मेटिसकक
लसंताप एहिसंवरहमहि वरनिहै ॥ २ ॥ चौपई सुनिकालीकी कथाअनूपा पुनिसोह

68A

सबोलेमुनिभूपा हेमुनिरमनकहीपनिवासू का लोकिमित्यागासुभवासू ३ अप्रियक
हागरुडकरिकीना जोभयतेजलमहँरलीना सोकारनसवकहिमुनीसा विनवेतनवु घ
पहधरनिजसीसा ४ सुनवानीनृपकीरससानी बोलेमुनिसुंदरमृदुवानी सकलसर्प
गनमिलिएकवारा गरुडभक्षहेनकियवारा ५ वक्षमूलधरआवहिआइ मिटेसकल
बाधापरिताइ जासुतासुआवैजववारी सोधरिआबमक्षनिरधारी ६ गरुडत्रासमानै
अवनागा निजरक्षाहितअरपहिभागा कद्रूसुतकालीभगवेता अतिविषधरमहअभि वैल
ननअवेता ७ गरुडनिराहरकेरिअतिमूढा तासुभागषायोमहरूढा सकलनागमिल
करेउविभागा एकएकअमपहुतिननागा ८ दोहा जाहिहियेसवकुलवचैयहहहैनीत
कविचार तोहिनतैनिजनिजसमैहनलोगनिरधार ९ चौपई कालीभागहरनहिता
सू गर्ववंतअतिविषयविलासू अपरनागधरिआवैभागू कालीषाइसहितअनु
रागू १० समाचारयहमुनिउरगाहा भएउक्रोधअतिसैकरनाहा चलेउताहिमारनकै
हेतू कालीलषेउआवषगकेतू ११ तासनसमरकरनकहधावा विषयांपुनतेहिघा
रसुभावा फनअनेकरहआयुधघोरा अतिकरालरसनाजुकठोरा १२ उग्रवचनज
नुबरईहासानू ताहिदेषिअतिगरुडरिसानू कालीजपटिपटतेहिकाढ्यो जिमिपि ज
पीलकागजपमेवारढ्यो १३ वामपक्षकरिवेगेसा मतकेसरिसअभिभयोनरेसा
हरिवाहनकेपक्षकठोरा असनिसरिसतेहिवलनहिघोरा १४ तासुंचोटसहिमजोअ हुणोर

हीसा प्रविस्यो एहि हंह आइ महीसा वहुकाल जुर हैग्रो छघाना तांको भेद कछु नही किन
जाना २५ दोहा गरुड़ गम्य नहिं ठौर सो इएहि लुकैबो जु आइ तासु कहौं कारन सुनौ जे
हि तैं न हान जाइ २६ चौपई एक समै तेहि हंह के माही सोरभ तप करि मन हरि पाही ता
हिं समै आवा उरगारी मीन गनेनि भछनि हारी २७ सोरभ तिह वरजा वहु भांती मीन
षाडु जन अहिं आराती तासु वचन उरगाइ न माना ग्रास्यो मीन जितने मन माना २८
मरै मीन पषगति कारि तासु रोवहिं अति करुणा करि आसु अति कृपाल मुनि पर
उपकारी देषि मीन दुष भए दुषारी २९ निकर मीन हित चित सुष चाहे बोले वचन
रोष कर जाही अब जो गरुड़ आइ एहिं ठामा षाइ मीन कवहुक मति वामा ३० सप
द प्रान विनु होउ षगेसा सषा होइ नहिं मोर निदेसा कालीएक जानु यह वाता अप
र न पन्नग जानन हि ताता ३१ दोहा तासमानि षगराज की वस्यो आइ एहि ठाम ते
हि कहंयौ नेह नेरयह हहको नैया सुषधाम ३२ चौपई हहं वा हर आए हरि भूपा वस
न गंध स्त्रज अमित अनूपा भूषण हिम दिव्य वहु जाती कंचन मणि जुत नाना भांती
३३ देषि कृष्ण कह सव व्रजवासी हरष उठे लहे न सुष की रासी प्राण पाइ ज्यों इंद्री गन
जैसे सुषित भए सव एहि विधि तैसे ३४ गोपन कह आनंद अपारा मिलि परस्पर
वार हवारा नेह आहि जे गोप सुजाना जसुदा आदि गोपिका नाना ३५ पाइ कृष्ण
कह अति संतोषा लहे मनोरथ सव भय मोषा जन मुनि सुर प्रसन्न सव भए निरष

69A

कृस्नसुखसबनिदगए २६ मिलवलहि बहुसेमुसुकाई जानतम्रानबरतिसमुहाई धेनु
वछवछरावरुवसारे लहि परमम्रानंदअतिभारे २७ दोहा भूमिदेवगुरुजनजितेपरि
करसहितसनेह म्राएढिगसवनंदकेप्रेमसहिततजिगेह २८ सोरठा वोलेभूसुरम्रा
द म्रहोनंदतवभागवड घरवैासपभुखजाइ देववचायोसुम्रननव २९ चौपई देहुदा
नद्विजकहुसनमानी म्रहिलेछुड्योतनयनिजजानी सुनकेनंदबहुतसुखमाना दी
येधेनुकंचनमनिनाना ३० नानाभांतींदियेवहुदाना वस्त्रभूखनकरेसनमाना ज
सुमतिपरमभाग्पनिधभूपा नहदत्र पसुतलह्योम्रनूपा ३१ म्रंकराखिनिशनिहिय
लाई नलजनैनजलवारवहाई तेहिनिसिसकलरहेतेहिठामा छुधातृखाम्रमकर
वितधामा ३२ सोयेसकलगोपम्ररुगोपी कृस्नचरनतनमनजिनरोपी जमुनातट
सुंदरम्रतिकानन निद्रावससवहूगएराजन ३३ ग्रीष्मतएनरूकेवहुम्रोरा तामहा
दावलगेउवरजोरा निसिनिसीथसोवतब्रजवासी घेरिचहूंदिसिम्रग्निप्रकासी ३
४ दोहा चाहतसवहिजरायकैभस्मकरोछनमाहि तोलागजागेसकलउठेदुखितम्र
कुलाहि ३५ सोरठा मायामानुषरूप भएताभुकीसरएसव वोलेवचनम्रनूप कृस्नकृ
स्नकरुणानिधे ३६ चौपई हे वलिदेवनाथवलरासी घोरकृसानुलागचहुंपासी हमत
वकिंकरग्रसेकृसानू पाहिपाहिहे श्रीभगवान् ३७ पावककालरूपम्रतिघोरा राखितो
हितेतुप्रभमोरा नहिहमडरहिमृत्युतेनाथा कितुनाथसुनियेममगाथा ३८ नवचरण

रविहृष्ठनएकू तजिनसकैयह अहैविवेकू श्रीकृस्नईस्वरभगवंता तिनकीसरणगहे
वुधवंता ३९ तवपहंप्रभयसहाजदुनेहा तासुवियोगछैकदुषकेहा एहिविधसुन्योसज
नदुषभारी करुणानिधतवहृदयविचारी ४० ममआश्रितकिमिघटैकलेस दावानल
कियपाननरेस जगतईसप्रभुसंतअनंता कृस्नदेवप्रभुश्रीभगवंता ४१ पुनिनिजवं
वृज धुसहितभगुनाथा प्रविसेवजहरषतएकसाथा गोपीमुहितगानकलिवानी सुनतगेह
पहुवेसुषदानी ॥ ४२ दोहा एहिविधगोपीगोपकोसहनाथसुषदेत हलदानवदुषदा
थिजेनिजजनपालकहेतु ॥ ४३ सोरठा ॥ कियोजुपावकपान राषिलियोवजजनसवै
अैसेकृपानिधान रामकृपाभजतासुपद ॥ दोहा ॥ संगदोहराचदूकहे तीनसोरठाजानु ए
हिसत्रहकोध्यायमहिसुनतलहेकल्यान ॥ ४५ ॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कं
धेभाषानिवंधेनामसप्तदसोध्याय ॥ १७ ॥ दोहा ॥ अष्टादसअध्यायमहिवलप्रलंव
कहुमारि ग्रीष्मअनहुवसंतरितुविचरतवलवनवारि ॥ १ ॥ कालीफनपरिनित्यकरि
कौतकसरवनहिषाइ अवप्रलंवकेअंसवहिहुनहैसुषपाइ ॥ २ ॥ चौपई ॥ एहिविधि तिह
क्रीडाकरतगोपाला ग्रीष्मरितुआईनरपाला जोनरकहअतिप्रियनहिलागू अतिसे
धूपतिथाअनुरागू ३ श्रीवंदावनगुनकरसोऊ मधुरितुसरिसदेषिसवकोऊ झरना
झरतविपुलवहुरंगा जिझारवसवक्रैगएभंगा ४ नदराजीनेहितटतरसोहनजला
कानतेसुमहरितनमोहन फलदलसुमनललितसवकाला मुनिमनमोहकसुरभिरसा

70A

ला ५ सरवरकमलमहासुषपाई गूंजैभवरेअतिहरषाई सरितासरयलसुभगअनूप
विकसेकंजविपुलवहुरूपा ६ ताहिपरसिवहमेहसमीरा सीतलसुषदहहैजनपीरो त
णतटिहरितसुभगसुषकारी व्रजजनतापश्रोघअघहारी ७ दोहा तननिदाघव्यापैन
हीभानुहसानुनजोरि वनवासीमुदयुतरहितनिरषततनेहकिसोर ८ सोरठा हरिनी
वारअगाध तरलितरंगिनतटिपरसि तणसवहरतिअगाध छितरहसंततपंकजुत
९ चौपई नहिप्रचंडिकरिष्णुअतिहिनेस तेहियलकैंरसंकवहुंनिरेस जाहिरसकरि
सवजगताए सोवजभूरंचकनहिव्याए १० कुसमतिवनसुंदरअतिपावन वोलतषग
मगसुभगसुहावन गावतमत्तमयूरअनेका अलिसारसुपरभ्रतअनेका ११ तेहिवनप्र
विसतसमकपाला भ्रातसहितछविधामगोपाला वेनुवजाइगोपिलेसंगा धेनुअग्रलि
यनानारंगा १२ क्रीडाहिततहगेजदुनंदा जगपालकहरिआनंदकंदा मोरपछसजधातु
प्रवाला सुमनगुछकियेवेसविसाला १३ गुंजमालपहिरेजदुनाथा सोभितभएहेलडके
साथा न्यगानकरिजुद्दविधानू रामन्हसमिलगोपसुजानू १४ दोहा नाचंतक्कसतव
तोसमैगावतकोउसुरवाध अपरबाघवहुविधिकरतकोउकतालसुरसाध १५ ध
न्यभागतेगोपवरजेविहरतहरिसंग मिलेनघोरेअन्यविनुसपरसप्रभुकौअंग १६ सो
रठा गोपजांतिकरिवेत विवुधवंहसोहैसकल पहिलेहिकरयोनरेस छितिगईजव
विधकेनिकट १७ चौपई कोउकगोपतहकरैप्रसंसा कोउकअंगरंवपूरहिवंसा को

ऊएकभलेभजेजूनटवर नचेभली विधसोगतिधरवर १८ रीझिरीझकोऊइमिकहवा
नी त्रिभिनदिकोनटकहैवषानी क्रीडतिविविधभांतिहोऊभ्राता काकपछधरसुभगसुगा
ता· १९ तालहोकिलेंघितअरूगाजत आकरषनूकरियुगयुगराजत कवहुग्वालसंग
भिरतवलाई कवहुहास्यकरहसतहसाई २० अपरग्वालकोऊनचतप्रवीना गावतहो
ऊजनरागनवीना गावेंकुलसगुणएहरषजोवाला अरूसंगीतसुभगविसाला २१ वाघ
वजाइप्रसंसततितिनहो परमभागपमानोजगउनही कवहुविल्वफललैहरिलरही कव
हुअमलकलैपुनिभिरहो २२ कवहुककुंभीफलवहुआनी भिरतपरस्परअतिसुषमा
नी मुष्टिवंधकवहुककरिष्याला रमैगोपसंगप्रभुगोपाला २३ नेत्रवंधलीलापुनि
करई षगमगईहापुनिसंचरई पुनिहादूरगतिचलतचलावति वहुतहास्यकरिसखि
निहसावत २४ दोहा कवहुंककरिस्यंदोलिका क्रीडतिनपद्मविष्याल अखिललोक
पतिगोपवरवन्योनंदकोलाल २५ चौपई लोकप्रसिद्धषेलजगजेते सरतसरनषेले
सवतेते सरितागिरिद्रोनीसुभकानन कुंजकुंजप्रविसनसुषभाजन २६ वनवनपसु
चारनहोऊभ्राता एहिविधक्रीडतजगसुषदाता नामप्रलंवअसुरअघरासी हैषित्तसु
विचरतवनवासी २७ ताहिकरनकेमनअस्त्वानी गोपवेसआयोअभिमानी प्रभुस
स र्वज्ञानसर्वताता ताहिमारवेकहमनराता २८ कह्योसरव्यातकहसवजानी मरि सं
हैषलएहिविधमंनठानी सकलगोपटेरेजदुनाथा क्रीडारतिवोलेगहिहाथा २९ अ

71A

हांमित्रदै दै मिलसाथा षेलषैलैयहौउसनाथा वलवयसरिसग्रपनेजानो युगयुग
मिलग्रावहुमनमानी ३० विस्वपालकजदुहरिनाथा लीलाकरतभैगोपोसाथा सुनत्त
सखासवग्रतिहरषानै दैमुषयांकरिसवमिलगानै ३१ वीरीवादिकीन्हीदैजूथा राम
कृस्नदैजूथपजूथा जेहारैनिजपीठचलाई वहैग्रपरकौग्रतिसुषपाई ३२ दोहा
जेजीतेतेचढिचलैहारेवहैसुताहि एहिविधक्रीडारचितहांषेलतग्रतिचितचाहि ३३
५८ चौपई वाहतग्वालहरिसंगी गोधनव्यूहवरतहरिरंगी वटभांडीरनामहैजासू गए
कृस्नसंगीतहग्रासू ३४ सवसंगीवृषभादिकजेते श्रीदामासहजीतसुतेते हारेकृस्न
षेलमहजवही हरिसंगीसुषसौवहतिनही ३५ श्रीदामाकहपीठचढाई यहकौतु
कलषभूमिहरिपाई देवमुनीसिरहेलुभाई हरिलैचलेग्रापुनरराई ३६ ग्रजित
पराजयमुनीनकाना भक्तग्रधीनएकभगवाना वृषभनामएकगोपग्रनूपा भद्र
सेनतेहवहसुषरूपा ३७ वलजूकौलैचल्योप्रलंवू चल्योशीघ्रनहिकरयोविलंवू
दुस्सहभारमान्योविवुधारी ग्रतिगरवौकिमियहउरधारी ३८ दोहा कृस्नदृष्टिवच
नकरसोई छोरिल्यागिवलुविधमतिषोई जहांकीयोउतरनकोनेमा सकलगोपमि
लकैजुतप्रेमा ३९ दोहा तेहते ग्रागेलैचल्योवलजूकोविवुधारि तहांवनीसोभा
सुनहुग्रतिसुंदरसुषकारि ४० सोरठा धरनिधरनसमभारि चलेहनुजकेपीठप
रसोभासुषहग्रपारजदुपतिकहववमेघनु ४१ चौपई तडतमेघनंसससिएकठामा

असि उपमा जानहुं अभिरामा नभपथ वढत देषि वपु तासू विकट भ्रकुटि द्रिग घोर
विलासू ४२ मुख लषि भजत वंद हत जिहेसा हाटक माल भयंकर केसा कुटिल कुटि
क करी दसु हावन लषि वल देव कहत चित चायन ४३ दंवक त्रास मान जग करता
पुनि किय क्रोध अखिल जग हरता संग छुडाइ सनु हरि मोही लायो नभ पथ मै सुर द्रो
ही ४४ करि दृढ मुष्टि हन्यो तेहि सीसा शक्र शस्त्र जिमि गिरि नरईसा भयो भगन सि
र रव कर घोरा वमत रुधिर मुख घोर न थोरा ४५ प्राण रहित धरणी गिर परेऊ मा
नहु वज्र हत भूधर गिरेऊ हन्यो प्रलंव राम जेहि काला देषि चकत चित सगरे वाला
४६ जय जय देव लोक मै उर छाई देव दुंदुभी अधिक वजाई साधु साधु सव कहत नव
वानी वद्र गोपन न आसिष ठानी ४७ दोहा करि पूजा वहु भाति पुनि कर हि प्रसंसा भा
व मख्यो जि वै जिमि प्रीत जुत मिलित हिये करि वाच ४८ सोरठा प्रेम भरे चित आइ अं
ग लाइ पुनि पुनि मिलत मख्यो दनुज असु धे पाइ भए देव आनंद जुत ॥४९॥ सुमन वरष्यफ र
लाइ साधु साधु कह शब्द पुनि जस गावहु सुष पाइ वारवार वहु विनय जुत ॥५०॥ दोहा
प्रवल प्रलंवक राइ वध वल जू तै घनस्याम पद पंकज वरता सु कोन्ह पाहि ये अभिरा
म ॥५१॥ सुभग सोरठा आठ भनि पंच सोरठा जानु यह अष्टादस ध्याय वर कथा सुनत
कल्यान ॥५२॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे भाषा निवंधे प्रलंव वधो ना
म अष्टादसोध्यायः ॥१८॥ दोहा ॥ गोकुल गोप समेत प्रभ मुंजारण्य विहारि जारै है

९४
72A

प्रवलरषिहै सवकौ परिवारि १ उनहूसके अध्यायमहि कथापरमरमनीय करु
णसिंधुकृपालिकीलीलासवकमनीय २ चौपई षेलतहूसतग्वालमनलाई स्वेछा
चारितधेनुमनिलाई तृणलोभतगईगहनगंभीरा गईदूरचलिहेनपधीरा ३ अजा
गावमहिषीएकसाथा चरतगईग्वालननसाथा वनतेंगईअपरवनमाहो मुंजारण्य
नामजगमाहो ४ अतिउचेतृणसघनघनेरा मुंजारण्यनामतेहिकेरा दावानलकरि
त्रषततनघोरी दीनवदनक्रंदतिचहुंओरी ५ गोपकृष्णवलदेवसमेता षेलतजोजा
वत्सपानिकेता देषिहिग्वालगाइनहिंएकूं षोजनलगेसुसहितविवेकूं ६ इतिउतषो
जेदेषिचहुंओरा नहिंनलह्योगोधनकहुंछोरा दंतषुरणतृणटूटेदेषो पुनिअंकित
पदमृघलपेषो ७ तेहिमगचलेसकलअकुलाई अतिचिंतागोपनउरछाई धेनु
जीविकाहैसवतासू नष्टविनसवव्हैगएआसू ८ उभयभ्रातविनुसवअकुलानेहूं
डतगोधनसवविलषानें भरमतसवभयतिन्हकाला गोपीग्वालतवभएविहाला जुत
दोहा मुंजारविगोधनमिल्यो क्रंदमानंअतिदीन नष्टपंथहरितिनहिंलषिफेरनकौ
मनकीन ९ चौपई तृषितश्रमितसवगोपनिहारी देख्योधेनुआयुअसुरारी लैलैना
मतासुजगहीसा देख्योमिघगिराधुनिहीसा ११ हेगंगेजमुनेहेधोरी हेस्यामापीली
हेगौरी सुंननिजनामधेनुहूंकारी आईदौरततनिकरमुरारी १२ प्रमुदतसवैधेनुजेहि वै
काला धूमकेतुतहउठेउकराला दावानलघेरउचहुंओरा देषिहिग्वालनीत

श्री भा
१७३
73

भयघोरा १३ अगजगजीवजरततिनपेषा डारेग्वालहियकंपविसेषा वल्यौसार
थीपवनप्रचंडा जरहिपतन्नेवछ्छसातषंडा १४ मजिमजिगोपधेनुनरराजू आएशर
एजहांव्रजराजू जिमिजनमत्यहेषियहडरई सकलगोपजिमिउरपररेषरई १५
तिमिसवसिमिरनाथपरआसू गहिपरवोलेवचनविलासू रामकृस्नहमसरए
तिहारो राषहुतुमअवहेहनुजारी १६ दावानलयहप्रवलनघोरा जारतनाथजीवव
रजोरा राषनहारनामतुमअहहूं अमितपराक्रमगतिवलसवहूं १७ दोहा जाहिमु
हहनवहासहमनिजकरनेहकिसोर तवजनकहुनहिदुषघटैदमिकहसवसिरमो
र १८ सोरठा हमरेतुमएकनाथ तवपदपंकजआसएक राषहुअवगहिहाथ करुणा
सिंधुकृपालतुम १९ चोपई वंधुवचनसुनिकृस्नकृपाला वोलेअभयवचनगोपाला
निजनिजकरमुंदहुनिजलोचन हसवोलेभवभयदुषमोचन २० दावमलुकहनिज
निजहाथा मूंदेनयनसवनएकसाथा देषिकृपानिधयोगअधीसा दावानलकिया
पानमहीसा २१ मुषतेअगनपानिकरआहू मेटेउनिजजनकोंपरनाहू नयनउघारलषि जव
हिग्वाला वंनभंडीरी घरेसवबाला २२ निरषग्वालविसमयचितआनी वोलेआपु
समैंमृदुवानी हमसवआएगोधनवंहा राषेजरतिनंरकेनेहा २३ गाइगुपालकृपाल
निहारा अवनजातपयभूपरमारा कृस्नयोगगतिग्वालनदेषा भएमहामनहरषवि
सेषा २४ दोहा निजमोचनलषिअग्नितै अतिविसमयचितआनि मान्योकृस्नकृपा

सकौं विबुध रिषभ सुषदानि २५ चौपई गोधन फेर सहित बलराम संध्या जानि चले
निजधाम बेनुं बजावत लै सुर साता चले जात पथ होऊ हूरषाता २६ गावत गोपि सु जा
सहरि के रे प्रेम पवित्र चरित्र घनेरे गए गोष्ट निज कुअर घन्हाई गोपन सौं संतन सुषदा
ई २७ चंदव बन हरि कर मंडु गाना करहि निरंतर छवि दृग पाना ऋतु सम सुषार विंहनित
देषौ होत हृदय आनंद विसेषी २८ छत्र अंतर जब होइ नरेसा युग सनई वहि यह होइ अंदे
सा हरि अवतार ईश्वर सुषदाई सब जीवन कौ करी सहाई ॥२९॥ दोहा गोय गाइ रछ्या करी
हरि दावानल भीति राम रूप पार्ति विरण भजै जो सदा करि प्रीत ॥३०॥ दोहा कहेऊ चार बरस सुभ
गसोरठा एक उनसी के अध्याय महि सुनत भजे अविवेक ॥ इति श्री भागवते महापु
राणे दसमस्कंधे भाषा निबंद्धे दावाग्निपानो नाम एकोनविंशो ध्यायः॥१९॥ दोहा॥
बरणन बरषा सरद रितु जगजीवन कौ जीव धरनि धरनि बहु रंग कौ ज्यौं कामिन ल
षि पीव १ एहि विंशत अध्याय महि द्वै रितु बरनन होइ प्रथम हि बरषा बरनहै हि
य ग्रहन विध सोइ २ चौपई गति ग्रीष्म बरषा रितु आई जगत जीव गन कहं सुषदाई
रवि ससि परधि लसंत चहु ओरा छुभित व्योम चहु दिसि नहि घोरा ३ अष्ट मास कै
रि छिति जल सोषा सो रवक रिकरि चाहत मोषा ग्रीष्म रितकर षित अति षीना ज
लद पाइ सो भई अति पीना ४ जिमि सकाम तप करत तन छीना पाइ तासु फल होइ सुपीना
व्योम घटा घन सुहर छाई पवन तुरंगम नहु तिन पाई ५ जगजीवन जीवन बरषाई

के० २

पोषैजीवजालसमुदाई जिमिकृपालजनदुषिनिहारी तेहिजीवनहिहिहृयविचारी ६
तासुहेतुनिजजीवनत्यागी पालहिदुषितजीवअनुरागी तिमियहमहतमेघउपकारी
तड़िततयनकरिदुषिततनिहारी ७ पवनवेगिकरकंपितगाता वरषहिवारजीवसुषदा
ता रतजीवमैकामअनंता वरषजीवहरिहरिकंता ८ दोहा रजनीमुषतमसघनअ
तिछिपेज्योतिगतिब्योम जिमिकलिमैंअतिपापकरमिटैवेदपथतोम ९ सोरठा प्रग
टेअतखद्योत जिमिपाषंडीगनप्रमित सुनघनाहदहोति वोलिउठैसवभेवकगाम १०
चौपई दूरवरहेमौनगहिवालू गुरुनिजगेहसाधुनिजकालू नित्यकर्मकरिगुरुहजव
आए सुनिगुरुगिरावलिएकहाए ११ छुद्रनदीजेवारविहीना जलभरिउमगचलीम
तिछीना त्यागिपंथतेचलीसुतंत्रू जिमिमनअजितपुरुषतंत्रू १२ जितजिनदूर्बीगन
चलजाही तंहतंहपुरुषजाइचितचाही हरितसघनतणभूमिसुहावनि इंद्रवधुद्रवपुस
वमनभावनि १३ छत्राकारअगटछितिमाही भूंविकारउपजैरितुमाही ज्योंतपसैन
छत्रजुतराजत त्योंयहधरातातहिछविछाजत १४ ऋषीकारसशिंअनूपा होतमहासुह
षिअनरूपा अरुजेवनिकिछत्रव्यापारू हरषेपुनिविषारअतिभारू १५ प्रथमप्रियं
गुसालललविहरषे वीचसूषगोहेवनवरषे हरषतापतिनकोहैंदोऊ दैवाधीनलष
तनहिजोऊ १६ दोहा जलथलवासीजीवजेनवजलसेवनपाइ रूचिरूपंसवधर
तहैमनअनंदअधिकाय १७ चौपई जिमिहरिसेवनकरैंअरंभा सपदिहोइतनरूप

खिरअहंभा तिमिबरखाजलसेवनकीनै रुचिरहोइसबजानुप्रवीनै १९ सरिताउमगसिं
धुकहंमिलहीं कंपिततरलत्रासजनुलहहीं जिमिअपक्वयोगीमनछोभा गुणमिलजाइ
तियनलगिलोभा १९ बाहरखरहिनतनगिरीसा रंवकव्यर्थनलहहिंमहीसा दुष्टपराभवक
रहिंअनेका जिमिहरिभक्तगननतनहिएका २० तृणअतिसघनपंथगोनासी मगनहिमि
लतंपुरुबासी जिमिपढवेहनकरिअभ्यासा बहिविधानहिकरैप्रकासा २१ जगसबमेघस
रिसकरिजानू चपलाछनभरटिकैनमानू जदपिगुणज्ञानपुरुषप्रवीना कामिनतहपिन
भजधिरलीना २२ दोहा बिनुगुणमघवाधनुलसतगुनज्ञानइमिनभसोइ गुणप्रपंच
संसारमहि अगुणपुरुषजिमिहोइ २३ सोरठा उमडसघनघनघोरि नभतलनिसिप
तिदुरगयौ सदाप्रकासनघोर अहिमिलिदुरगोपुरुजिमि २४ चौपई मेघागमहरषतस
बमोरा नानाविधकिलकहंकरसोरा निजग्रहतापतपितकोउगेही हरिजनग्रहआएसु
खतेई २५ पाहपपरहकरकियजलपाना भएपुष्टविपुलसुफललहनाना जिमिविप्रपनईश्वरत
राता लोलुपवसक्रोधमनराता २६ जिमितपकरियहिलेक्नसगाता कामपाइपुनिसुभ
गसुहाता चक्रवाकसरतजैनकबहूं कंडूककीचक्रकहैंनबहूं २७ जिमिग्रामीनग्रही
निजगेहूं नजिनसकैतहिअतिसैनेहूं कर्मअंतसोलहैंनकबहूं अतिदुखसहैंनजैनहि
नबहूं २८ डंडीओघजलबरषेजबही निसिदिनसेतुहूहैसबतबही पाषंडिनकेमति
करजैसें श्रुतिपथसेतुनसैकलितैसे २९ दोहा जलदवाउप्रेरेसदादेननरनकौवार

जिमिनरषलहैसुकामवरद्विजप्रेरसुषकारि ३० चौपई अवववरषारितुकीसुभलीला
कहिमुनीससुनिनृपतिसुसीला वहुप्रकारवनसौरभछाए पक्वजंवूअरजूरसुहाए ३१
गोपधेनवत्सहेवसमेता वनप्रविसेप्रभुसकपानिकेता मेहगमनसोहहिसवधेनू सोभित
वनकहुमिलैनरेनू ३२ ऊधोभारहरिटेम्योजवही दुतमगचलीसिमिटसवतवही ऊरत
जातपयघनतेजासू कामधेनुतेअतिगुणजासू ३३ कोलिकिरातपुलिंदसुषारी अ
तिप्रमोदजुततिनकीनारी कमलवंदतिनकोपुनिदेषा वनराजीमधुअवसवपेषा ३४ गि
रिसकामजलधारनिहारी सुंदरदविअतिनिर्मलवारी तासुनिकटएकगुहासुषारी
हरिवहुदिससवठौरनिहारी ३५ कौउएकवटछमूलसुभठामा कोउगुहाएअतिअभिरा
मा वरषनलागमेघघनघोरा गुहाप्रवसनवनंदकिसोरा ३६ इसहसुकंदमूलफलष
नू रमतभयोसंगसुंदरभ्रातू गोपनसंगषेलतजदुनाथा लीलाकरतभएहरिसाथा ३७
दोहा दधिओदनलैसलिलतटि सुंदरशिलानिहार अनुजगोपमिलहास्यकरभोज
नकरतमुरारि ३८ चौपई तप्तिधेनुवषवत्सरजाती ओधोभरश्रमगऊदुसुहाती दूरत
सघनतृणसुंदरदेषी तापरिवैठेमिलतनमेषी ३९ चर्वितचर्विनपसुगणराजन ग्वा
ललितलीलासवसाजत वरषारितुश्रीसंपतिदेषी सवजीवनकोमोदविसेषी ४० सो
सवनिरख्योनंदकुमारू निजमुषवरन्योरितुगुणसारू अपनीसक्तवदवकरकानन
षापुसरासोहोश्रीसुभआनन ४१ एहिविधवलकेसवमिलभूपा व्रजकहसुषदीन्यो

५

75A

बहुरूपा बरषारितुगतिसरदसुहाई स्वछसुहावनसबसुषदाई ४२ बिगतमेघघनभनिर्मि
लनीरा पंकसूषपथमेंदसमीरा बारजसंभवसरदसुहाए नीरस्वछसुरसरितनपाए ४३ सा
धनयोगभ्रष्टमन जैसे पुनिकरियोगलह्योतिमितैसे निर्मदभक्तकहोइपुनिजैसै साधु छि
नछुभतननहीजैसे ४४ दोहा सरदहरेघनस्वछनभभूकर्दमजलमैलि प्राननकीसंकंर्ज
तावसहिदूरचलिपैलि ४५ सोरठा हेनृपश्राश्रमचार हुतितश्रमसुभहरिभक्ताजिम ति
मियहसरदविचार श्रमलकियेगगनाहिकन ४६ चौपई जलहकरयोसबैसजलहाना
ब्योमविमलराजितदुतिनाना पुत्रकलत्रछोडग्रहवासू जिमिमुनगनजाहिसुषवासू ४७
कावहुकगिरजरनसुभरही कतहुंनजलरंचकनहपरही जिमिग्यानीग्यानामतदेई कव
हुकवचनकहैनहिकेई ४८ जलग्रगाधनाहिवसजलजंतू घटतवारनिलषैपरतंतू जि
मिग्रहलमतिमंदश्रयानै श्रायुसुछीनहोतनहिजानै ४९ थोरेनीरवसहिजेहिमीना
सरदतापतापितश्रतिदीना कूपकुदूवीहरिहघेरा श्रजितकरजिमिदुषवहुतेरा ५० मंद न
मेदचलकीचसुखानी रसरससूषसरनदसपानी वीरूधभएसवपक्कमुजाना श्राए
सरदकालसवजाना ५१ मोगाहिकसवमोहेप्रानी जहांतहांजवजौनिभरमानी देहादि
कसवनस्वरमानी जिमिकोउवीरपुरुषविग्यानी ५२ त्यागिग्रहंमम दृढवितएका भज
हिईसपरससहितविवेका सरदागमसरमौनगहाही निश्चिलनीरहलतकहुनाही ५३
जिमिमुनित्यागिकर्मबहुजाला मनथिरकरप्रभुभजसबकाला प्रेमसहितगोविंदगु

श्री·भा·
९·७६
76

नगावै सोहरिजीकेनिकटरहावै ५४ दोहा षेतकिसानरनौमैजुतलयोकबिसानसु
जान इद्रीयारनसत्रवतजिमिसोकहिमुनिनिजग्यान ५५ चौपई सरदग्रर्ककरतापन
घोरा शशिसवहरईजीवदुषघोरा देहजनितग्रभिमानग्रनेका हरैसकलजिमिए
कविवेका ५६ वजातियवितनतापहियभारी जिमिसवहरतिकृष्णग्रसुरारी रहि
तमेघनभसुंदरराजत सरदविमलतारागणभ्राजत ५७ सबजुक्तजिमिमनसुषकारी
लहेवल्लग्रानंदग्रतिभारी विमलसरदनभनषतसुहाए राकापतिमिलग्रतिछव
छाए ५८ जिमियारदवमिलकैहभूपा राजतभूपरकृष्णग्रनूपा सीतउष्णसमपवनसु
षारी वनसेभवतरूसुमिननिराही ५९ इनहिपरस्सिजनतापनसानू हरिहतवितगो
मोविनुजानू गोसरगषगनारीगनजेते होहिंसगमेसरदहरितुजेते ६० जघपिपतिरक्षानहिहो
ई हठिकररमेलहे फलसोई निर्मलकथाकृष्णकीसोई वरननकरैधन्ननरवोई ६१ दोहा
जेसेजनहरिभक्तरतिचहतकछूनहिकाम फिरनपछायेतासुकोफलचारयो ग्रभिराम ६२
सोरठा उदिततरनकरिदेषि हरषदवारिजकुमद विनु जिमितवराजिसुयेषि प्रजासुषी
विनुचोरजग ६४ चौपई पकोग्रन्नमूग्रमितप्रकारा संपतिजुतभएजननिरधारा सर्वट
षेटवजाकरवासी नगरग्रामपुरजनसुषरासी ६५ करिनवानप्रसानसवलोगा सक
लसुषीघरघरनवभोगा रामकृष्णदरसनसुषभारी ग्रतिसयमुदितसदानरनारी ६६ व
निकनपतिग्ररूमुनिगणकोई स्वकेरहितवरषारितुजोई ग्राएसरदगमनकरितेऊ नि

जनिजअर्घलहतसबकोऊ ६७ क्रयविक्रयबहुबनिकपधारे नृपतिविजयकहुंनिज
उरधारे मुनिविद्याकहुंहियअनुरागी चलेविजयकरिभोगविरागी ६८ दोहा मंत्रयोग
करसिद्धिलेउनिजजननदृढकरिराषि आयोकालनतजनहित मुनिपूरारणद्रमिभाषि ६९
सोरठा रोकहिजिमिनिजप्रान जाहिखतेंनसुरेसपुर इमिसबचलेसुजानि बनिकभूपमु
निजनसकल ७० यहलेसाअसार बनिविहीनकासारसम एकजनेहकुमारसार
सकलतेहिमनुहाया ७१ दोहा सुभगसोरठाषट्कहे दोहानवसुभरीत एहिविशत
अध्यामहिहरिवरनैकरिप्रीति ॥७२॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधेभाषानि
वंधे रितुवर्ननंनाम विंशतिमोध्यायः ॥२०॥ दोहा ॥ सरदकालकमनीयअतिवंदह
वनगतिनाथ तासुवेनुसुनि श्रवणनिजगोपीहरिगुनगाथ ॥१॥ एकविंशअध्यायम
हिएतनीकथापवित्र शुकमुनिनृपसौंवरनिहैं कृष्णचरित्रविचित्र ॥२॥ चौपई ॥ सरद
स्वछजलवनअतिपावन वनजसमूहहिपवनमनभावन सीतलमंदसुगंधअनूपा
ताकरिवनशोभितहैभूपा ॥३॥ कुसमंतिवनराजीअतिसोभा मधुपमत्तद्विजकुलमन
लोभा सरिसरितागिरिवरसुषकंदा तेहिवनगएकुअरवलनंदा ४ गोपसहितवन
चारितधेनु तेहअतिललितवजैएवेनू सुनतिवेनुवजतियअकुलानी विपतउदयधु
निजनसुखहानी ५ कोऊएकसखीधीरधरवोली मनवचक्रमहरिचरणअरोली क
हनलगीगुणगाथअनूपा कहिनसकीमनसिजवसभूपा ६ व्याकुलचित्तगतसवमूली

श्री भा
६७१
77

अहोभागकोतेहिसमतूली जसप्रभुरूपहृदयआवेसा जेसिमरेभावितनप्रवेसा ७ सोई
सरूपवरनतिअवगोपी जामहतनमनरहैजुओपी ॥ श्रीमदनगोविंदमुरारी नैनोकरि
निरषनरनारी ॥ ८ ॥ छंद ॥ जामहिरहिओपीतनमनगोपीसोईवरनतमनलाई वनप्र
स विसपालाआगोपालानटवपुवरधरमाई ९ वनहैअतिपावनअनेकसुहावनसोक
नसावनस्रुतिगाई मिलगोपकुमारासवसुकुमारागावहिजसमनलाई १० तेहिवीच
श्री मुरारीजनसुषकारीनटवरवपुअतिराजै सिरधरिकेकींपषविसेषीअरुणसुमनमस्
तिभ्राजे ११ जनमुनिलीनीसूक्ष्मनवीनीकुंजविविमूरतिछाजे कटिवसननवीनापी
तप्रावीनालषिकंचनदुतिलाजे १२ दोहा उरवैजंतीमालवरवेनुअधरधरिलाल अ
धरसुधाकरिपूरतेहिगावतरागिरसाल १३ चौपई मुनिवंसीधुनितियनतेहिकाला मो
हितहुईगईसवव्रजवाला आगजगमाहिंगएसुनिकाना मिलेसकलहरिकोसवजाना
१४ पदपरधुनिवरननमुषचाही देषिनकहदृगअतिललचाही मनकरिमिलनचाहते
हिभारी तिनकहूजीवनकृष्णमुरारी १५ अवगोपीवरननछवितासूजातलषेवननदि
वरजासू हेसषिसुनियहवचनअनूपा नयनवंतकहयहफलरूपा १६ नेहसुअनद
रसनतेआना अपरलाभकछुमैंनहिजाना सषिनसहितअरुधेनुसमेता वनप्रविसत
जवकृष्णपानिकेता १७ रामकृष्णमुषपेकजमाना करैनयनकरअतिसुषमाना वेनु
वजावतअधरसुधाधर नेहिसहितलषिहिगकटाछ्छकरि १८ दोहा नूतप्रवालवना

77A

इधर वरह पाछ धरस्याम इतरे तर पारि धेनदुनि नीपीत अभिराम १९ सोरठा अंपरं क
हत यह वात अतिविचित्र लषि वेषवर ह्वांदेए होउभ्रात गोपभाग महसुभग अति २० दे
नरवरसुभवेषिगावतसुभगसुरागिवर असमैंक वहुनयेष गोरस्याम सषि लसनयु
ग २१ चौपई हे सषियहवंसी वडभागी कौनसुकृत इन कियअनुरागी हामोहर अधराध
रलागी रहितनिरंतर छनने हित्यागी २२ प्रभुअधरांमृतसभकरभागू इकलीपीवेकर
अनुरागू जेहि जलपुष्टिभईयहवंसी हहनीमान तुल्पसुर अंसी २३ प्रभुलितकमलनैनी
रहहसमजनु हरषहदयभयोतेहितनमनु जेहितरुवंसप्रगरयहवंसी मधुमिलआनं
द अम्बुप्रसंसी २४ जेहि कुलप्रगरभागवत होई हरषेपितु तन पुलक तसोई अपरकहे
सुन सषी सयानी यहवंदावन भूसुषदानी २५ स्वरगहूतें अतिसुभगसुहानी कीरति
विसदभई जग जानी नंदसुअन पद अंकित गाता अतिविचित्रसव कहसुषदाता २६ श्री
गोविंद वेदमुषवेनू तासुनाद सुनि वरहीघेनू नीलमेघघनस्यामहि जानी मुरलीमंद ग
र्जधुनिमानी २७ मत्तमयूरनत्यवहुकरही तहां अपरसत्वा हिकचरही नानापंछीवोले
सुषपाए मृगवराह कोकिल अधकाए २८ दोहा गिरिके वहुं हिसि जीवगन नचत देषि
गनमोरि रहे थकित है तजि क्रिया निरषत नंद किसोर २९ चौपई असमुष अपरलोक
नाहि देषा एहि तें यह छितिसुषरविसेषा अपरसषी वोली सुभवैना सोभा निरषनाक सु
मनैचैना ३० हेसषी यहपसुजोनि सयानी महामूढ मूषकहतनवानी तदपिमगीकृता

श्री भा॰
१७८
78

रयरूपा जासु दरसा सुनि एहि अनुरूपा ३२ सुनि वंसी धुनि अति सुषभारी नंदनंदन नहीं उ
लटि निहारी प्रणय सहित प्रभु वदन विलोकी सो दृढ जा जनु कियमन रोकी ३३ रहित निमे
ष लषै हरि गाता भई सुंदर ताप सब जग रव्याता तदपि सुनौ निजपति न समेता निरषै हरि
मुष अमृत निकेता ३३ व्रजनारिनके पति मति मंदा गोप जाति अति धुद्र गयंदा षल क्रूर
पापी पतति अनेका तेरे दरस करह कृपानिके ता ३४ दोहा हरि मुष निरषत लषहिं जो
मम माषहिं अति क्रूर असन हिदु दुसुभाव सठ मग एसवसु षष्टर ३५ चौपई अपर
कहन लागी मृदु वानी हे सषि सुनि यह अचरज वानी व्रज वनिता दृग गउ सरूपा सोल
अधिक वय संग अनूपा ३६ असो रूपकह लकी देषी मोहि गई सुरनारि विसेषी पुन
वंसी धुनि सुनि निज काना निजपति संग चढी सुरजाना ३७ तदपि वितनव धीर ज स
त्यागी मोहित है गई सुधवुध भागी कवरी गलित प्रसून अनेका नीवी षुलगौ सुधन
हि एका ३८ हे सषि अपर अचंभौ तो हो कहौं जु मैं निज नयन न जो हो नंदसु अनज
व वेनु वजाई ता सुनाद अमृत सम पाई ३९ धेनुन्ह अवन उठाइ उठाई पीवन लगीव
हु तसुष पाई तैसे हि तिनके वछराजानू करलगे सो दृग अस्तन पानू ४० वीचहि सुन्यौ
जु अमृत गानू कवल मात्र पयमुषम हजानू मूलगए सवक्रिया कलाप निरषै नंद सु
अनमुष आप ४१ छंद निरषै जु मुष सुषकंद प्रभु कौं नहिं नैन तन मुष ताहि कौ दृगयं
पकर हरि स्याम मूरति परसि अति सुष वाहि कौ ४२ पुनि मिलहि मन करि अंक भरि भरि

५.

78A

नयनजलभरिपेषही सवधेनुवत्सासाहितसविरीरहितईहादेषही ४३ दोहा अहैथ्रे
वएहि वनविषैविहंगवसतजेकोइ तेमुनिसरिससहिषानमोहिरंचकवीचनसोइ ४४
सोरठा हैानवहतमुनिराइ निरषहिनंदकिसोरमुष फलअरुफूलवचाइ देषहिछवि
नहिपलकपर ४५ चौपई रुचिरप्रवालजाहितरुकेरी सावासुभगतासुकीहेरी तांप
रिवैठअतिसुषमानी जैसैकोउमुनिवरविमानी ४६ कृस्नवेनुरविसुभगसुभायक मी
लितनैनसुनैषगनायक त्यागिसकलसंसारिकीवाता जिमिकोउमुनिभगवतिगुनरा
ता ४७ कृस्नहररसअसासाहितलागो वेदउक्तकर्मनफलत्यागी श्रुतितरुसाषापरआरू
ढारुचिरप्रवालकर्मगतिगूढा ४८ नाहित्यागिमनकरसंतोषा सुनिहिगीतभवरुनजेहिमो
षा इमिएषगमुनिहैनैजोगू सनुहिगीतहरितजिनिजभोगू ४९ रहैोसुचेतनिकीगनआ
ली सुनुजउदुहसालषेवनमाली हरिचरित्रगावैगोविंदा नेरसुभ्रनसोआनंदकंदा दोहा
सुनमुकुंदकेगीतवरसरताधीरजत्यागि हियमनासिजव्याप्यातुरलघकितवेगिवढ़
भागि ५१ सोरठा आलिंगनकेभाव थकितभईगततासुको भुजतरंगसमपावसरिस
जवनिउपहारसो ५२ कृस्नयुगलपदकंज सोउपहारसमर्पिजनु लहीमहांसुषपुंज
चेतनिकीगनिकहचली ५३ चौपई गोपधेनुसहअरुबलरामू कृस्नचंदसवसोभाधा
मू आतपमाहिचरावतधेनू सुभगवजावतहैतववेनू ५४ देषिजलदऊपरकरछा
या मानहुआतपत्रसमगाया लोकतापहारीसमसीला वरनहोउपुनिसुंदरनीला

श्री॰भा॰
द २१
79

५५ नयाभावमान्योहियमाहीं बढ्यौप्रेमअतिसुभगसुहाहीं कुसुमसहितसजलकन
उरलाई मित्रभावतेहिठामलषाहीं ५६ अपरएकबोलीमदमाती सरदकमलमहिंचित
रहराती हेसषिसुनिएकबातअनूपा कहौवाततबमनअनरूपा ५७ सवरकोलति
यअतिवडभागी तेरकृत्यकृत्यजेहिहरिअनुरागी कमलाकुचकुंकुमअरुनारे कृष्ण
चरणलगिअतिसुषकारे ५८ विहरतबनमेंलागेउतृणसोई भिल्लसुतातेहिजवदहु सो
ई भृकुमदेषप्रमसुषपाई ललितकमलाअतिहरषाई ५९ दोहा देषितहीतिनकोस
षीभयोवितनरुजभूरि सोईकुंकुमनिजवदनकुचलेपिकियोदुषदूरि ६० सोरठा एहि
श्रृं. तेवैवडभागि अपरनारिजनमेंधिक हमअतिसेगतिभागिप्रेमसिउभूरिनलहतअव ६१
चौपई हेसषियहगिरवरवडभागी सदाकृष्णपदपदअनुरागी हरिभक्तनमहिंश्रेष
भसुजाना हरिपदपरससुषितहमजाना ६२ तृणद्रुमलतनाहरिसबठामा रोमहरषा
सोइअतिअभिरामा रामकृष्णगोगणअरुगोपा सबकहमानदेतकरिचोपा ६३ तृ
णजलसुभगकंदफलमूला सुभगकंदराअरुवरफूला आदरसहितदेतसबकाहु यो
तेधन्यलहौवडलाहू हेसषिसुनिअपरजअतिभारी अगजगउलिटीगतिसबजारी
धेनुगोपहेउवंधुसमेता वनवनविचरतिकृपानिकेता मधुरवेनुसुरअतिसुषकारी
जवहिवजावतवनवनवारी तांसुनिजंगमजीवजहांते थावरगतिव्है थकितनहां
ते ६६ तरुपुलिकांहिसुनतवहुवंसी जंगमधर्मलहैसुरअंसी पुनिप्रसुरूपनिहारनि

५

79A हारी थकित होहिं अति सै नरनारी ६७ गोववेस वाधौ सिर नोई अस पास धरि विरंचित
सोई गोप रूप भ सो भ मनहारी लषि होऊ भ्रांत सुव सनर नारी ६८ दोहा हेन्र पएहि विध
गोपिका कहत परसपर वैन भई जु तनमय रूप सब लही परम चित चैन ६९ सोरठा श्री
वृंदावन माहि लीला करी जु कृष्ण प्रभु इन जो सषि यन पाहि गावहिं संतत प्रेम जुत ७० दो
आठ जु होहिं सुभग अति तीन छंद सुभ रीति कहे सोरठा सात वर गावत प्रभु पद प्रीत ७१ सो
कौ हरि चिंता चिंतमनी कृपा हृदय भल है म जरित होइ सो भलि है अंत लहै गोषेम ७२ इति श्री
भागवते महापुराणे दसमस्कंधे भाषा निबंधे एकविंशतमोध्यायः २१ दोहा गोपिन कौ
श्री कृष्ण मैं कामभाव करि प्रेम कात्यायन पूजन कियौ लही परम सुष छेम १ ब्रजकं
न्या व्रत नेम करि गिरिजा पूजहे चाहि वसन हरन लीला जु कर वरदै है सुभ ताहि २ वा
ईसके अध्याय महि एतनी कथा प्रमान सुक कहि है नरनाथ सौं सुनि नर लह कल्यान
चौपई हेन्र यमार्गशिर सुभमासा कें गोपकन्या कांधरि हिय आसा करहि हविष्य भोजन
व्रत नेमा गिरजा पूजहिं नित युत प्रेमा ४ करमज्जन जमुना जल प्राता अरुणोदय के वेला
सुषदाता सिकता की प्रतिमा करि रूरी गंध पुष्प बलि वहु विध रूरी ५ धूप दीप उपहा
र अनेका फल प्रवाल वहु मन करि एका इमि पूजैं नित करहिं प्रनामा अस्तुति करै जु लै
लै नामा महामाई ईस्वरी हे जगदंबा कात्यायनि वरदानि कदंबा देहि दानि वरदायक रानी
नमहि चरनन तू जग सुषदानी ७ इहै मंत्र सब करै उचारा नंदसुअन पति होइ हमारा नं

श्री·भा·
८०
80

मोनमोहेमातुभवानी पूरहुवरदीजेहियसुषमानी ८ एहिविधएकमासव्रतकीन्हा दे
वीअर्चनमहिमनदीन्हा नेहसुअनपतिहोहिहमारा अपरनमनवचकछुउरधारा ९
जथाकालउठैसुषमानी दृढ़िव्रतउनअपनेमनठानी निजनिजगोपमिलीसवुपाईवा
हजोरसवचलैवनाई १० दोहा कृस्नचरित्रविचित्रअनिगावहिकरिहियप्रेम एहिवि
धजमनातीरलैवलीजाहियहनेम ११ सोरठा नितप्रतिएहिविधजाइ मज्जहिजमुनासु
हितमन पुनिपूजैमनलाइ गिरिजापतिवरचाहचित १२ चौपई एकदिवस+जमुनात
टजाई वसनउतारिधरेतेहिठाई गावतकृस्नसुजससवकंन्या विहरैसलिलमुदित
मनधन्या १३ जानितासुहियभावकृपाला योगेस्वरिहरिजनप्रतिपाला सखासंगलै
तहप्रभगएऊ व्रतफलतिन्हैदैनफलठेएऊ १४ तासुचीरलेसवहरिधाई चढेकदंव
हुसतअतुराई सखासहिततेहहसतहसाई पुनितिनसौवोलेमुसुकाई १५ हेअवला
ज तुमसवअतिआई निजनिवसनलेहुमनभाई कहौसत्यमैनहिपरिहासू तुमव्र
तकरिकसततनकियआसू १६ एवंहूंमैअसतनभाषा लोकवेदयहमितकरराषा
आवहुएकएकलैजाहूं अथवासवमिलिवसनगहाहूं १७ लषिपरिहासतासु
व्रतकंन्या भईप्रेमरसमगनसुधन्या निरषपरस्परमनमुसकाही लज्जाजुतवैठी
जलमाही दोहा सुनेवचनजवकृस्नके जुतहासरसमाहि मगनसीतजलकंठलौं
कंपितकहिहरियांहि १९ चौपई वोलीमुग्धावचनअनूपा कहहूंसंभारिवचननिज

80A

रूपा अहोक्षमअन्यायनकीजै कपितहमैवचंनप्रभुदीजै २० जानहितुमहिनंदसु
तनीके व्रजप्रगटेसुजसीसवहीके पुनिप्रौढावोलीकरजोरी सुंदरस्यामकिंकरीतोरी
२१ कहौवचनसोईकरौतिहारी देहुवसनममधर्मविचारी जोकहौचितुमचीरनदेहुं
कहिहैनरपसौनहिसंदेहू २२ सुनिअसगिराप्रेमरससानी वोलेहरिगोपिनसुषदानी
जोतुममममदासीमनवानी तौममवचनकरौहितजानी २३ इहांआइसवमिलिएकसा
था लेहुवसनअपनौनिजहाथा व्रजकन्याकंपतसवगाता हठजुतसुन्यौंक्षमसुष
वाता २४ लज्जाजुतगोपिकाउरभई प्रेमलताकहुजाननहिकही निजइंद्रीनिजकरि
सोढापी जलवाहरनिकसीहियकांपी २५ हरितवतासुदसालषिवैसी सुधभावछ
लगतिमतितैसी तासुवसनतेहिनिजकंधचढाई वोलेहसतवकुअरकन्हाई २६
वोलेजुहरिहसवचननेहि छनसुनहुतुमव्रजदारिका तुमधर्यौदृढव्रतनेमपुनितु
मकर्यौहमपरचारिका २७ विनुवसनतुमजलकर्यौमज्जनदेवहेलनअतिघरौ
तेहिपापनासनहेतुतुम ममवचनयहनिजहियधरौ २८ दोहा करसंपुटनिजसी
सधरिरविसनमुषमहिमाहि करहुदंडवतिप्रीतिजुतवसनलेहिमोपाहि २९ सोरठा
सुन्यौक्षमसुषवैन देवदोषवतनासलषि अषिलकर्मफलअैन वतपूर्णहितनम
तभई ३० सोरठा नमितदेषिप्रभुगोपकुमारी अतिप्रसन्नहसकैवनवारी दियोवस
नतिनकौसुषमानी करुणानिधकरुणासुनिवानी ३१ वेचिनवचनकहिहवहुरीती

सन

श्री·भा·
द·८१·
81

देवहोयककहुपुनिविपरीती लज्जारहितकराइहहरितोही कीड़ामृगकीन्हेपुनिवाही २२
पुनिउपहासवचनवहुभाषा व्रजकेन्याहियेनेकुनमाषा प्रीतिमसंगग्रासहियरा
षीहोयदृष्टिनहिकछुउनभाषी २३ निजनिजवसनपहरहरषानी है अधीनगई
मनक्रमवानी लज्जाजुतदृगसकहिनदेषी ग्रहचलसकैनप्रीतिविसेषी २४ तासु
हृदयग्रासाप्रभुजान्यो ममपदकंजपरसमुषमान्यो हृदएत्रत अवलामोहिप्यारी ह
सवोलेतिनसोवनवारी २५ तवसंकल्पसकलमैजाना जदपितुममनहिप्रगटवषाना
भक्तप्रियमोहअधकसुहाना मानाजसोहामोहिसंकराता २६ दोहा लाजमानितुम
नहिकह्यो जद्यपिमुषतैवैन तदपिअनुग्रहमैकियोसत्यहोइहियचैन २७ सोरठा म
मआवेसितवुद्धि कामवासिनासहितजो भूलजाइदुरवुद्धि नहिसंभवसोलहैपुनि ३८
चौपई जिमिभूंज्यो छितिजमैनहाना ऐसेमोमिहकामनिहाना फिरअंकुरनलहैतैतै
जानू अगिनिपक्वजैसेसवधानू ३९ अववजजाहुसकलहेवामा सिद्धमनोरथतव
सवकामा आगामीरजनीमैमोही मिलहौतुमनिश्चैजियजोई ४० ममहितकरोकठन
व्रतवामा कात्यायिनपूज्योअभिरामा मैप्रसन्नहैहीयवरदानू ह्वैहैसत्यसकलतवमा
नू ४१ सुनिभगवतवानीरससानी हेन्यअवलासुनिहरषानी पाइमनोरथकामअ
नूपा हरिपदध्यानकरतसुषरूपा ४२ चलिनसकैहरिहाथविकानी स्वामिरूपलषि
धामभुलानी जैसेजोगीध्यानसमाधलगाई ऐसैगोपकालाजगवाई ४३ जेनतेन

४१A
करिकष्टविसेषी अवलंबनपहुचीसुषदेषी ताहिअनेतरक्रष्नक्रपाला वंधुगोपमिल
हेनरपाल ४४ दोहा धेनुचरावतदूरगेवंदावनमजि आइ मध्यदिवसरविकरनकर
तप्योधूपतेहिठाइ ४५ चौपई आतपत्रसेतरुवरदेषी वोलेहरिहंसवचनविसेषी अ
होतोककहेक्रष्नसुजाना असुनामश्रीदामवषाना ४६ अर्जुनसुवलविसालप्रवीना
ऋषभतेजनिधअतिरसभीना देवप्रस्थएकनामवरूथप अपरसखागएजेहैंजूथप
४७ देवहुमित्रवरुछवडभागी सहितआपुदुषजगहितलागी घामसीतलपवनप्रचारु
आपुसहितऔरनउपकारु ४८ धन्यजन्मतरुसमनहिआना जाचकफिरैनविमुस
नमाना औसेसुजनक्रपालसुभाऊ अर्थीविमुषजाइनहिकाऊ ४९ पत्रपुष्पफलमूल
सुछाया छिलकादारुदेतकरिदाया गंधगोदपल्लवअभिरामा भस्मसारकरिपुरवैका
मा ५० सफलजन्मजानहुसोइप्रानी परिउपकारकरैसववानी परिहितप्राणतजैव
डभागी धन्यजन्मपरिहितअनुरागी ५१ फलदलफूलप्रवालसुहायक साषानमिन
विटपगुणलायक नीरपयसिरहिडारअनूपा सीतलस्वछवासिसुषरूपा ५२ जमनाती
श्री
रकुवरकन्हाई क्रीडाकरतभएउजहुराई सकलसुरभिपयपानकराई विसरठामल
षिगोविंदराई ५३ दोहा देन्दपगोपघनसहितप्रभु आपुकस्योजलपानि सुंदरसीतल
स्वादअतिरुचिमानीभगवान ५४ सोरठा तेहिउपवनकेमाहि धेनुचरैसुषमानतह क्र
ष्नरामकेपाहि गोपक्षुधितवोलेवचन ५५ क्षुधितभएक्योगोप द्विजसमयकोउअन्न

श्री भा
९८२
82

धरै ताहि कहत करि चोप सुनौ छुधा करि हेतु अब ॥५६॥ दोहा ॥ ब्रजकन्या वरदान हित तो
हि न उठि प्रभु प्रात गए विपिन सब गोप लै भोजन लयो न तात ॥५७॥ सप्तम दोहा ॥ सुभ कहे
पंच सोरठा जानु एकं छंद वरन्यौ विमल द्वाविंशति मे मानि ॥५८॥ वनवन विचरै ग्राम्य हरिज
न अभी हर फल देत वड भागी सो ताहि भजि जन्म लाभ फल लेत ॥५९॥ इति श्री भागवते महापु
राणे दसम स्कंधे भाषा निवंधे कुमारिका वर दानो नाम द्वाविंशतमो ध्याय ॥२२॥ दोहा ॥ भोजन जा
चन व्याज मिसि जग्यपतनी अनुकूल कृपा अनुग्रह पाइ तिय पति मन सुनि वडमूल ॥१॥ य
ह सब कथा जु वरनिहै एहि तेईस के माहि जिमि कृपाल हरि भक्ति परिति मि और न पै
नाहि २ चौपई छुधित गोप वोले प्रभु पासा हे नंदपजिन को अपरन आसा राम राम हे अ
मित गुणाकर हे कृपाल प्रभु कस्मल पाकर ३ वाधत छुधा हमै जदुनाथा सांत करउ तुम
हे मम नाथा इमि विनय सत जब वानी हे नंदपक्ष सेव सुखदानी ४ द्विजतिय कृपाकर
णा के हेतू वोले तिन मति कृपानिकेतू देवजजन भूसुर सब कंहही नाम अंगरस मष फल
चहहीं ५ वेदविहित सभ करे उ आरंभा तहां जाउ तुम तजि मद दंभा तहां जाइ और संतनु म
मांगो लेआवहु सब हे वडभागी ६ हम पठिवे कछु तुम महि न लाजू जाहु वेगि जह विप्र समा
जू हम हि अपात्र जानि द्विज मानी देहै कि मिकि मि कहौ जु वानी ७ तहां सुनौ तुम सब स
सयाने नाम हमारा कहेउ सुख माने हरि अवनासी ईस अनंता अैसे प्रेर श्री जानि कं
ता ८ दोहा पठये श्री भगवंत के गोप तहां हि गजाइ कह्यौ दंडवत भूमि पर जोरि पान

३२A सिरनाइ ९ सोरठा कहतगोपसुभवैन सुनहुवचनममदेवसव कृपादेवसुखअयन तिनप
ठिएतवनिकटहम १० चौपाई रामकृपाभइमिकहेउसंदेहू तवकल्याणहोइपरनेहू इति
तेनिकटचराचरततधेनू वनविचरतिउतवाजतिवेनू ११ छुभितभयेहोउभ्रातगोसाई भो
जनहितपठियोएहिठाई हेद्विजसकलधर्मतुमजानहु अर्थीजननलषितुमसनमानहु १२
अन्नदानहेतोअवहनहेहूं उनपंठयेआएतवगेहू दीछितहमकैसेअवदेहो अहैअभोज्यअ
न्नअवतेही १३ जोकहाविश्वसेतुममकहहू तहांहमारेवचननहिगहहू पसुआलभनपू
रवहिहोषू सोतौहूंगोकर्मविमोषू १४ सोत्रममन्यमाहनहिसोऊ अवतौननहोयरतिको
ऊ ऊवितअन्नदेवोहैताही रामकृपासजाचौतुमपाही १५ दोहा सुनितिनभगवनजाति
वोअन्नसुनिकैरेजुवैन स्वर्गकामनामनवसौवद्धमानवुधिहैन १६ सोरठा ऊलजेहोता
जाग मंत्रतंत्रतीनौअगिन हेवधर्मसवरागि हेसकालसवधर्मजुत १७ चौपाई दछिण
ग्नगार्हपतपतिनामा आहवनीयरामअभिरामा तीनिअग्नकेनामनिरूपा मीमांसावादीसु
षरूपा उद्गाताअध्वर्जुवषाना होतानामएकजुतस्माना ऋगयजुसामवेदसवसाई क
र्मिकर्मसकलफलहोई ताहिनभ्रोहनहियौअभागी सकलमईहरिलष्योनरागी परि
पूर्णपरिव्रह्मअनंता अव्ययअजअरुश्रीभगवंता १८ मनवानीगोपरजगहोसा सह
जाहिधावहिमुनिईसा मनजड़हिमान्यौतेहिभूपा मायामतजगूढनिजरूपा २१ ढुरा
वुद्धिमदमोहिअरूढा चुपह्वैरहेमंदमतिमूढा होनाहोकछुगिरानकोले गएनिरासगोपअ

श्री॰भा॰ २०३ 83

नबोले २२ दोहा जाइकही दोऊभ्रातसन भूसुरज्यावनदीन सुनिगोपनिकेवचनहंसि बोलेस्तु।
सप्रबीन २३ चौपई लौकिकगतिदेषाइतेहिनाथा जगपतिनीकहकरतिसनाथा सषासु
नहुमनकरउनषेदा जनितुमआनहुमननिरवेदा २४ जाचकको नपराभवहोई यातेमन
हारेजनिकोई वेगजाउतिनकीतियपासा वेतुमको नहि करहिनिरासा २५ कहिहौभ्रात।
सहितममनामा मांगेउपुनिदेहैंजोइकामा केवलदेहमात्रगृहवसही मनसंततमेरे दि
गलसही २६ सुनिहरिवचनगएततकाला देष्योवैठीपतनीमाला सुषासीनभूषनअं
तअंगा मनहुनाकतियरचेउअनंगा २७ दोऊकरिजोरिवंदपगतासू बोलेगोपगिरा
सुषमासू नमोविप्रपतिनीहेवाला सुनहुवचनममसुभगरसाला २८ इनितैनिकटचरा
वतिधेनू आएरुकलवजावतिवेनू सहगोपालजुगलपुनभ्राता क्षुधितअहैगृहतैच
एं हम लिभ्राता २९ दोहा कहपठउतवनिकटअन्नदेहुकछुताहि एतनोमात्रजुअव एसु
निसंभ्रमइतिउतचाहि ३० सोरठा सुनितकथानितनासु वसीभूतचितहेरही आ
एसुन्यौहुलास संभ्रमचितयातेभई ३१ चौपई तवहीतुरतसाजसवसाजू भांतिभां
तिकेपक्कअनाजू भक्ष्भोज्यचोस्यअरुलेहू चारभांतिकेसहितसनेहू ३२ संस्कारपु
निविविप्रकारा अमृतस्वादरससुभगसुधारा भाजनभरिभरिसजिसुभरीती चली
शीघ्रप्रियपेअतिप्रीती ३३ पुत्रभ्रातवर्जतहुनरोकी सरतासिंधुइवगईविसोकी व
हुतकालसुनिकृष्णप्रभाऊ देषनकहिवढिरह्योजुचाऊ ३४ जसगुणसुन्यौलष्योत

83A

जाई जमुनाउपवनमहिसुषपाई नवपल्लवअसोकतेरुछहिया विचरतगोपमध्य।
होऊतहिया स्यामसरूपजलधरसमसुंदर पीतवसनपरिधानसुभगवर मोरचंद्रिका
उरवनमाला ललितधातुअतिसुभगप्रवाला ३८ दोहा नटवरवेशसुदेशवर सषाअंस
सहियहाथ इतहस्तलियेकंजवर नाहिभ्रमावतनाथ [illegible] सोरठा धरेकमलश्रुतिमाह
सुरभिसचिक्कनअलकवर ललितकपोलनपाहि सोभितमानहुभंगगणा चौपई ग
आननकंजसरिसमृदुहासू देष्योनरसुअनचलिआसू सुनतरहीप्रियगुणउरकरषा
श्रवणपवित्रचित्रउरहरषा ३९ मनतहमगननिरंतरतासू पुनिनिरष्योयहरूप।
विलासू नेत्रद्वारअंतरहियआनी मिलीअंकभरिअतिसुषमानी ४० हरयतापसवक
दिकैदूरी भईपवित्रभागपतेहिभूरी जिमिकोउनिधुनपुरुषहरिपाई कल्यकल्पलषत
हरहुधाई ४१ सरबवुधसाक्षीभगवाना तिनकीमतिनिजहियमहजाना सकल
आसतंजिगृहसंजाला आईममदरसनहितवाला ४२ तासुनिहसिबोलेजहुनंदराज
नपालकहरिआनंदकंदा महाभागहेद्विजवरघरनी तवआगमनधन्यसुभकरनी
४३ सुतापितुमातुत्यागघरबारा मोरेदरसनहितइतिपगधारा हेमहतुमहियोगभलकीनी
कहहुकुहासोकरहिप्रवीनी ४४ दोहा अंतरजामीसकलकौ अरुसबकोप्रियजानु
करहिविरदकीभक्तिममसवफलतजिसुषमानु ४५ सोरठा जैसेतुमसबत्यागि ममदरस
नकेहेतुकरि कोतुमसीवडभागि कहोकरैसोइकाजसब ४६ चौपई मैंसबकहप्रियहौं

श्री·भा·
६·८४
84

एहरीती कहौसुनाइतुमैजुतप्रीती प्राणवुधमनत्रातिसमेता देहादिकजेहैसववेता ४७ जा
सुकटाछपाइसवप्यारे तेहितैश्रपरहेतुनहिन्यारे तेहितेतुमहक्तनक्रत्यसरूपा जाहुजनस
सालासुखरूपा ४८ हमहक्रतक्रत्यजाहिकेहिकाजू जैधमिकहोत्यागजगलाजू तहांसुनहु
तुमवचनहमारी ग्रहमेधीतवपतिव्रतिधारी ४९ तुमहिसहितनिजमखकरहूरो ज
गसुखतिनहिहोहिगोरूरो पतिहितमानजाहुनिजगेहा ममपदसंततकरेउसनेहा ५०
प्रेमलतीतुम्हरीमेजानी मोरवचनतुमकरोप्रमानी सुनिप्रभुवचनकहहिद्विजवांमा
हेविसकस्मइनिसुंदरस्यामा ५१ छंद हेसुंदरस्यामाविभुसुखधामापुरुषनिसायहयोग्यनहीं
तजपुत्रकलत्रपरिजनमित्रचरणपवित्रश्रानगही ५२ सत्यकुरुवानीलंजनजानी
प्रभुशरणकोउअपरनही· तुलसीदलदामपदअभिरामपरसितसिरधरचाहतही ५३
हेहरितवदासीहोहिसुवासीत्यागिनकरयेपाहिप्रभो पतिपुत्रहमारपितरदुवारभ्रातवंधु
दृत सोसुहृदविभो ५४ तेकवहुकदाचितगेहेनहमकोअपरकहोकोचाहरही यहतनंदुचरा
सीतुमअविनासीप्रवपरपंकजश्रानपरी ५५ दोहा तवपदपरस्योनाथहमस्वर्गहमाहि
जनिहोइ तवपरदासीकरहुमोहिअपरचाहिनाहिकोइ चोपई सुनिद्विजतियकेवच
नमुरारी कहनलगेहरिसंतसुखारी हेअवलातवपितुसुतभ्राता सुहृदवंधुजेकोउज
गनाता ५७ कोउनअसूयाकरिहितकारी ममआसासवसिरपरधारी सुरगणसवहै
ममआधीना यांतैतुमग्रहजाहुप्रवीना ५८ तुमहित्यागिहमसकैनआजू केहिविधवंधु

84A

समागमसाजू इमिजोकहहु आपजियआनी तहांसुनहुहेसुमुषसयानी ५९ अंगसंगक
रिसुषनहिवैसो नेहवधनहि ह्वैसकतैसो करैचिंतवनमनकरजैसें मोहलहैसुषसोनर।
तैसे ६० सुनिहरिवचनतवहिद्विजनारी गईजग्यसालासुषकारी तिनकेपतिनिअसूया
त्यागी कियोजग्यहरणअनुरागी ६१ दोहा कोउभूसुरनिजनारिकहिरोकराषनिजगेह त
वउनसुनेउजुक्तस्यगुनध्यानकरेउजुतनेह ६२ सोरठा कर्मवंधुतनत्यागि गईक्रस्णपेह
प्रथमवह सोसवतेवडभागि लहीमुक्तिसाजुज्यसोइ ६३ चौपई चारप्रकारअन्नसुषकारी
धरिआईसोद्विजवरनारी गोपसहितप्रभुभोजनकीन्हा करिलीलासवकहसुषदीन्हा ६४
गोपधेनुगोपीजनजेते जिन्हैरमनहितषेलकरेते पुनिद्विजवरसमुझेमनमाही निजक्र
तअघघोरैकछुनाही ६५ भयोतापकछुताहिनघोरा अहोलषोयहऔगुनघोरा अवि
लविग्यप्रभुभोजनजाचा ताहिदेनकोमननहिराचा ६६ मंदभागहमपरमअभागी प्रभुसेव
नमहिभएनरागी इमिकरतापनोरगतिदेषी पुनिसाहिसहियधरयोविसेषी ६७ दोहा निज
तियकोगुरुसरसद्रवमानकछुकमनतोष भगवतभक्तिजुआपुकहुयहितजानिगतिदोष
६८ चौपई निजतियहरिपदभक्तिअनूपा देषिअलौकिकगतिसुषरूपा तेहितैरहितआप
नपुनिदेषी कियेउहृदयअतितापविसेषी ६९ पुनिनिजतननिंदतवहुभांती धिकधिक
जन्मत्रिविधजोख्याती सुकुलसवित्रअपरएकदीक्षित धृगवहुस्तातावतधृगसीक्षित ७०
धृगकुलविप्रमानकोउपुंजा लष्यौनक्रस्नचरणभवगंजा धृगयहवक्तकलापहमारा क्र

मों

श्री·भा· गं.त
९·८५
85

लचरणरजसिरनहि धारा ७१ धिक विवेक धिक मम चतुराई हरितै विमुष सो धिग सब ठा
ई धिग हम अवगत नहीं जानी धृग मनुष्य तन हम मानी ७२ दोहा भगवति माया कठनि
अति कोतर सकै सु जानि अज गिरीस मोहे सकल कोनर वपुरा आनि ७३ सोरठा सब के गु
रु हम मानि निज स्वारथ भूले सकल देषहु तिय गुण षानि भक्ति लही जगदीस की ७४ चौपई
करे उ सनेह हतु स्य पदकंजा अनायास जो भवरुज गंजा संस्कार उपनयन विहीनी नहि गु
रु कुल सेवन इन कीनी ७५ नहि विद्या नहि तप कछु भारी नहि कछु सौच मंत्र अनुसारी तद
पि कृष्ण पदकंजा भजे भाग्यनिधि सुष जह पुंजा ७६ संसकार जुत हम अघ रासी भक्ति
विना सव गुण गोना सी सदा गेह रति स्वारथ मूढा अति प्रमत्त मद मोह अरूढा ७७ गोप वचन
सुन अन सुनि कीना प्रभु आसा हम नहि मति हीना सकल आसिषा पति भगवंता आप्तकाम
हरि ईस अनंता ७८ नरविरंवनाकरत स्वतंत्र अषिल ईस हम कह स्तुति मंत्र त्यागि अजादि
क सुरगण जेतो चंचला रिवै गुन निज जेतो ७९ जासु चरण आसा निज करई सिंधुसुता
पदरति नितरहई सो प्रभु हम सो भोजन मांगा अहो है वहु मम अभागा ८० दोहा प्रभु
जाचा हम प्रति करी यह अचरज वड आहि मुनि मोहे ब्रह्मादि शिव अपर कोन जे हनाहि
८१ चौपई देस काल अरु द्रव्य अनेका मंत्र तंत्र क्रतु जन नहि एका सुर क्रसानु जजमान ज
हांते मष अरु धर्म क्रिया रितहांते ८२ सकल स्वसमय इमित मजानू वेद पुराण करैइ सि
गानू सो मखयान विष्णु परईसा अषिलेस्वर योगेस्वर ईसा ८३ सो यदु कुल जनम्यो तिन सु

85A नहीं तदपि मूढ हम लखा निति नहीं पुनि निज नीति यगति देखि विचारी कहत धन्य हम हैं सुभ
कारी ८४ महापुन्यतम तिय मम जानू कृष्णचरण जिन अतरति मानू निश्चल भक्ति कृष्ण प
द कंजा भई सोह मक हम वरू जगं जा ८५ कृष्ण कृपाल अकुंठत नाना नमो नमो हे श्री भग
वाना तव माया मोहित सव काला भवनिधि परे भ्रम हि नित जाला ८६ भक्त वछल तुम अंतर
जामी सव घटि व्यापक तुम हो स्वामी आदि पुरुष तुम प्रभु जगदीसा सकल जीव गन अहे अ
नीसा ८७ दोहा निज माया मोहित सकल जानि हमैं भगवंत छमा करो अपराध मम सिंधु
सुता के कंत ८८ सोरठा वारवार एहि भांति निज अपराध विचार करि होत न हिय महि संति
दरसन की नित लालसा ८९ रुचि अति सेमन माहि देखिय केहि विधि जात होउ चलि न गए
हरि पाहि मान कंसा की त्राण हिय ९० दोहा द्वादस ब्रह्म होहा कहे युग है छंद प्रमान सुभग
सोरठा नव कहे तेईस विषे सुजान ९१ जप मन विधान नेम व्रत प्रेम विना श्रम जानें कृष्ण प्रेम
वस जान मन रामत कृपा सुष मानु ९२ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा निवंधे
जज्ञपतिनी वरदानो नाम त्रयोविंशोध्यायः २३ दोहा लखि मघवा मघ आपहरि नंद हि व
ज्ञ समुझाइ सक्र जग्य कहु रोक है गिरि पूजन करवाइ २ चौविंशा के अध्याय महि एतनी
कथा पुनीत मुनि कहि है नरराज सौं देषि तासु की प्रीत ३ चौपई वसत भ्रात जुत हरि अस्सु
रारी इंद्र जग्य रति गोपनि हारी सकल आत्मा सभ कछु जानूं पूछनि गोपनि करि सनमानूं ४
संभ्रम कहा तात यह आही कह फल केहि उदेस कराही कौन देव कौ है अधिकारी साधन को

श्री·भा·
२८६
86

नयनश्यह धारी ५ सुनिवेकोइछामोहिताता वडोकामलषियैविष्याता सवठादृष्टिाकहै
जाही साधुकृतयकरनैाकछुताही ६ नहिदुरावकछूकरहिसयानै दृष्येताहिकहैसनमानै
आतमदृष्टिपरअपरनजाही यातैशत्रुमित्रनहिताही ६ करमदुरावनरायेसोई भेददृष्टि
जिनकैनहिकोई भेददृष्टियहनीतविषानी उदासीनशत्रुहिकरजानी ७ सुहृदयमंत्रनह
करनहुराऊ यातेकहहुतातसतभाऊ यहकरतवजोतुमकरिया कोनहेतुउरमचितधरि
या ८ दोहा जानेविनुजानैकरतकरमसकलजगरीति यांकोकछुअचरजनहीकहौं।
करोजनप्रीत ९ चौपई जानिकर्मकरिफललहआरू विनुजानैफलहोहिविनारू
क्रियायोगतुमकरयौविचारू वेदरीतकैलोकाचारू १० पूछतसाधुकहोमोपाही रचना
रच्योजुतुममनमाही सुनसुतवचननरतववोले सुनहुतातकहियेसवबोले ११ तातइं
द्रभगवानसरूपा जगहाताजगपालअनूपा तासुरूपयहजलहअनेकावरषहिज
लहपरहितमतिटेका १२ सवजीवनकोजीवनमूरी वरषहिवासंहामतिपूरी हमअरू
अपरजीवजगजेते पूजहितातइंद्रकहतेते १३ तासुरेतजलउपजेधाना तासोपुनि
मषक्रियाविधाना सेषवचैतासोतनपोषत पुनिमषकरमघवहिपरितोषत १४ पुनित्रि
वर्गसाधतजलपायै सुषीहोतसभसहजसुभायै कृषीआहिजेवृत्तिअनूपा ताकरिजीव
तजोविसरूपा १५ कहाइंद्रकरतूतवडाई जोइमिकहियेवचनवनाई तहोसुनियकारन
असन्याही विनुमघवानहिवृतलहाई १६ पुरुषपुरुषार्थजेती साधतजलधतासुसवते

साधत

86A

ती एहिविधपरंपरायहधरमा छारैहोत लोकगति धरमा १७ दोहा कामलोभभयदेषतैंत
जैजुकुलव्यवहार लहैनसुषकल्यानसोइ होइभ्रष्टआचार १८ सोरठा पुनिवृजपतिकै
वैन अपरगोपअैसैकह्यो वोलेराजववैन जासुनिमघवारोसवठ १९ चौपई इंद्रहिको
नं पकरावहेतू वोलेप्रभुतवक्रूपानिकेतू गर्वभूमिधरइंद्रअरूढा अतिमदछकेयोनसमुझतमू
ढा। २० तांगिरनैतेगेरनकाजू निराकरएकरइंद्रवसमाजू कहनलगेहरिकृपानिधाना
करमप्रधानराषिजमनाना २१ कर्महितैउपजैयहप्रानी कर्महितेसवलैहैजानी सुषदुष
भयकल्याणअनेका कर्महितेसवलषहुविवेका २२ फलरूपीईस्वरएककोउ कहतिमि
मोसासारहैजोउ करैकर्मताकहफलदेई हैअकर्मतेहिदेइनकेई २३ यातेंकहाइंद्रको।
काजू निजनिजकर्मफलैसवलाजू सुरुउदेसारथविनुहीनैं स्वनरकर्मकिमिफलप्रवीनै २४
इमिआसंकाकरैजोकोई ताहिकहतअैसेयहहोई चलतसवकर्मजगतकेप्रानी तांकोसुरक
रसकैनहानी २५ जसकछुपूर्वकरमजासुको निसफलप्रगटलषाततासुको कर्मसं। नं
स्कारजोउपजाई जैसीजोनिमैगतिजाई २६ दोहा देवदनुजनरनारसवकिंन्नरद्विजंग
जेउ निजस्वभाववसहैंसक लअपरनजानहुभेउ २७ चौपई ऊत्वनीचतनधरेजेदेही नि
जस्वभाववसतजिपुनितेही शत्रुमित्रमध्यस्यजहांतै कर्मप्रधानजुअहेतहांतै २८ कर्मई
सगुरूकर्महिजानू कर्मपूज्यसवजगतप्रमानू निजस्वभावजुतकरनिजकर्मा करयेंनहि
कछुअपरविधर्मा २९ जेतीकर्मजेतयहप्रानी जिमिसाजनवाजनतसजानी जीवस

श्री भा॰
६०८७
87

कलहै कर्मप्रधाना तिनकहसोइजानौभगवाना ३० करसुकर्मपूजियनिजकर्मा यातेल
हैजगतसबसर्मा अपनीवृत्तछाडितेकोई परकीवृत्तलेतहैजाई ३१ तेकवहुनलहैक
ल्याना भ्रमतफिरैजगमहुअयाना जैसेअसतीनारिअभागी निजपतिजारितागिअनु
रागी ३२ वंध्यावानीउरकुचभजानो अनेकप्रकारमनोरथमानौ नहिकल्यानलहैव
हतैसै यहनरतिमिदुषलहहलषुतैसै ३३ दोहा कहनचहतनिजवृत्तकहतेहिउपमाकै
हेतु वरणचारकीवृत्तअववरनतकृपानिकेतु ३४ चौपई ध्यायनादिद्विजवृत्तप्रवीना
भूपालनछत्रीसुषलीना क्रयविक्रयकरवैस्यसुजानू सेवावृत्तसूद्रकीमानू ३५ वैस्य
वृत्तपुनिचारप्रकार सुनहु इथगुनमसुभगविचार कृषीवनजगोपालकमाई धनवढाइ
जाहितितिहअनुसरई ३६ तिनमहहमगोवृत्तअधीना अपरनहमकहसुषरप्रवीना
गोधनेवृत्तमहैउअधीना इमिसेकाकोउकरैप्रवीना ३७ ईस्वरविनासोस्वमतिकोई
नामतिलियैकहतप्रभुसोई सतरजतममायागुनजानू संभवादिपालनतैमानू ३८
रजगुणतैउपजेसवप्रानी नरनारीमिलपुनिवहुवानी रजगुणप्रेरमेघसमूहा वरषाहि
वारमिलेगणव्यूहा ३९ प्रजासकलजीवैएहिरीती कहौइंद्रकीकहावसीती नदपयो
गध्ष्मसहितसवको देवचाहनाहैसवहीको ४० यहजोजीववसकरमजाई सोवहतनजो
जोनधराई इमिजोकहोकरावितवैना सुनोवचनममाचितदेचैना ४१ दोहा हमरेए
रूनहिग्रामग्रहनहपुरजनहेतात वनगिरकरहिनिवासहमसदादिवसअरुरात ४२

87A

जै चौपई हमरे योगछेमसहित ताता वनगिरि संतत है सुषदाता याते तात वात यह कीजे मेरो वचन
मानप्रवलीजै इंद्रहेतु जो रचेउ विधाना तां करि करहि जन्न परधाना करहु विविध पाक वनाई विंध
पायस आदि सकल सुषदाई मूंग भांति सुंदर अतिफूली पूपसकुल सवं गुणमूली सकल दू वंसी
धदधि संग्रह करके पूजहु गिरवर कहमन धरके वेदविदुषद्विज लेहु वुलाई द्रविषकसा।
न देहु मनलाई धेनुवसन अरु अन्नसुधारी सहित दछिणा देहु विचारी सुनि स्वपाक अरु
पतितप्रजेता यथायोग भोजन सुषवंता ४६ देहु सकल कहु हृदय विचारी गोकहु हरत
र्धस सुषकारी सिद्धमुनीसर पूजन करियै द्रहसमतुल्य औरन लहियै ४७ दोहा नानावि
धके पक्कसव गोवरधनकहु देहु भूसुरको सनमान किय तिनसो आसिष लेहु ४८ सोरठा
भोजन कररु विमानि पहन वसन भूषन ललित सोरभ सव सुषषानि तन लेपन करकैसुध
र ४९ चौपई गिरिगोविप्र अनल सुषदाई करहु प्रदछिण सव मिल भाई यह मम मतो तात सु
निलेहु करहु सवै जो सव सुष लेहु ५० भूमिदेव गिरिवर की पूजा एहि तैं अपर यत्न नाहिं दू
जा कालआतमा श्रीभगवंता इंद्रगर्व चाहे किय अंता ५१ कह्यो वचन यह हे नरनायक
नेदाहिक जेहि यसुषदायक करसतकार वचन प्रभु मानी कियो सकल प्रभु मुष की वानी
५२ स्वस्ति हि वाचन विप्रन कीन्हा गिरिवर मषमहि वित उन दीन्हा सादर पूजत मलिवि।
धताही वलविधान कीन्यो सव वाही ५३ चले गवाल आगे कर धैनू कमहि प्रदछिण अति

श्रीभा०
६०८
88

चितवैनू भूषण विविधपहरसवगोपी रथचढचलीकृष्णमनरोपी ५४ दोहा गावतिचली
सुगोपिका कृष्णचरति पिकवैन देतअसिषाद्विजचलेमगनभएचितवैन ५५ चौपई जोगे
स्वरकेईसअनंता अपरंरूपएकधरभगवंता गिरिऊपरहरिदेवविहारी भोजनकरनल
गेसुषकारी ५६ गोपनकहउपजैविस्वासा उभयरूपएहिहेतुविलासा कहंभएयहगिर
ममरूपा दीन्हीवलभोगैसुषरूपा ५७ वहतरूपधरआपुनदेसा भोजनकरसवसकलेसु
देसा ग्वालनसाथस्यामतेहिकाला आदिरूपकवंदकृपाला ५८ कहतभएदेषहुयहरू
पा अद्भुतगिरहमकोसुषरूपा हमकहकर्योअनुग्रहभारी गाइगोपसवकहसुषका
री ५९ कामरूपमृधरअतिसुंदर नहिनरकोउजानैगुणमंदिर जेमतिमंदकरैअपमाना
ताहिकरैवधसोघ्रसुजाना ग्वालनसोप्रभुएहिविधकहेऊ करऊप्रनामसुतनचितगहे
ऊ गोपीजसोदाअतिसुषपाए वारवारनंदकंठलगाए ६१ दोहा सुनतवचनश्रीकृष्ण
के किये प्रनामसुषमानि निजगोधनअरुआपुकह षेमहेतुजियजानि ६२ सोरठा एह
विधसोसुषपाइ गिरगोद्विजमषनेमजुत कर्योसवनिमनलाइ कृष्णदेवकेवचनगहि
६३ कृष्णसहितवलराम गोपिगाइअरुगोपिका नंदादिकसुषधाम व्रजप्रवेसासुषपाइ
सव ६४ दोहा सुभगदोहराआठवर कहेसोरठाचारि चौविसकेअध्यायमहि कथासकल
सुषकारि ६५ गोपिनकीमतिफेरकैगिरिपूजनकरवाइ रामकृपायहकृष्णगतिरापहुजि

88A

यठहिराइ ॥ ३ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दशम दशमस्कंधे भाषानिबंधे गोवर्द्धनपूजनं नाम चतुर्विंशो
मोध्यायः ॥ २४ ॥ दोहा ॥ इंद्र रोष कर वरष कै पाहन जल बहु रीत करन चहे व्रजनास वर जव
बहे हरि करि प्रीत ॥ १ ॥ पंचविंश के ध्याय महि निज कर गिरवर धार बूडत व्रज सब राखि
है गर्व इंद्र को टार ॥ २ ॥ चौपई सुनासीर तेहि काल नृपाला निज मष भंग सुन्यो तेहि काला
नंदादिक सों अति रिसमानी कृस्न नाथ जिनके सुष षानी ३ सक्र क्रोध करि कै हिय भारी
प्रलयकाल के मेघ हंकारी व्रज परि घेर पठाए ताही आतम संभावत मति जाही ४ अहं ई
स इति कर अभिमाना महा मूढ पठए उगणनाना कहन लाग निज मुष कटु वानी अहो
लषो श्रीमद दुष षानी ५ वनवासी ए गोप विमूढा मनुज कृस्न आश्रय मद रूढा करे उरवे
हेलन मति मंदा सबै गोप सठ मति अति नंदा ६ जिमि आतम विद्या सुषकारी ताहि त्यागि भ
की वतरन निसुषारी हरि भक्त करे जन कोई कर्म वासना तिन सब षोई ७ गहै अपर नौका मद
रूढा कर्ममयी कृस्न मैं मति मूढा नाम मात्र नौका गहि प्रानी तरन चहै भव निधि दुष दानी ८
दोहा अति वाचाल अनम्र पुनि है वाली सनिहान पंडितमानी अनसुनि कृस्न मनुज हम मा
न ९ सोरठा तेहि आश्रय सब गोप मम पूजा सब हत कियो अरु सम मध्यां सालोप करौ
तासु फल पाइकै १० चौपई अति वाचाल कह्यौ जो वानी इंद्र कह्यौ जो पुरुष वषानी निरा
वचन सकल तेहि फेरी गिरा अर्थ कछू कहै निवेरी ११ इंद्र कह्यौ वाचाल वषानी सा॥
स्त्र ज्ञान निहार सब जगमानी अपर न कौ वंधन कौ हेतू एह तै है अनंग सुष केतू १२ सिसु

श्री·भा·
द·८५
89

भि

समगतिं अभिमानसुभाऊ इमिवालीसकहौसतभाऊ वेदविदुयमानहि अतिप्रीती पंडित
मानिनभेएहिरीती २३ हेसर्वसअसंतानाही एहतैअसकहौमनमाही सदानंदमयकृष्ण
सरूपा परंब्रह्मजनसुषदअनूपा २४ एसवगोपभरेमदमोहा श्रीकरमनसरतसुरद्रोहा
कृष्णदेवककहिवप्रवलभारे पसुछयतासुकरहुनिरधारे २५ श्रीमदकरगरवनघोरा
जाइ शीघ्रुनाशहुवरजोरा कृष्णश्रासरेकरयहसोई इनकुंनष्टकरौंमैंवोई २६ दोहा
जनतुमसंकामनधरहुवेगचहुतेहिकाम मेइमिचढअवतुरतहीतवपीछेतेहिठाम २७
सोरठा नंदगोष्टकेमाहि अहौलैसभमरुतगन वचैजीवकौउनाहि नासहुव्रजछनए
कमै २८ चौपई इमिआसामेघनजवपाई हरषतचलैंजलदसववाई गतनिर्वधतुरत
रिसमानी गएसकलव्रजपैंदुषषानी २९ जलधाराअतिप्रलयकठोरा वरषैव्रजपर
करघनघोरा चपलाविपुलअसनिसमनाहू सुनतजाहिजनलहेविवाहू ३० तीव्रवायु
प्रेरतघनव्यूहा जलपाहनधरवरषिसमूहा षंभसरिसमोटीजलधारा नभतेपरेअ
षंडुअपारा ३१ नीरमगनसवछितिनलषाई नहिसमविषमदेषिपरकाई अतिआसा
रवातवहुभारी कंपहिपसुगनअएदुषारी ३२ गोपीगोपसीतलहिघोरा भईसरनस
वनंदकिसोरा व्रजजनदुषीतहांसवभए महाभःभीतव्याकुलवहुभए ३३ दोहा अति
वरषापीडतसकलगोधनवत्ससमेत कंपततनहुंकारदै ताकौचरणनिकेत ३४ सो
रठा निजतनसौतेहिकाल निजवछरामिटापिलिय गईसरणनंदलाल पाहिपाहि

89A

गोविंदप्रभु २५ चौपई हेहेकृष्नकृपालगोसाई तुमगोकुलपतिजनसुखदाई यातैगोकुलन
पकृपाला पाहिधेनुकुलसहितरवाला २६ सुनसीरअतसैदुषदेत राषिलेहुतुमकृपानिके
तू गोपीगोपसकलएहिभांती विनयकरीहरिसौविलषाती २७ सिरावर्षअतिसैचहुंओ
रा तौकरिपीडितदुषनहि थोरा देषिकृपानिधकरतविचारा जान्योहरिकृतसकलवि
कारा २८ विनुदिनुवरषाकठनकराला पुनिअतिवातवीतदुषलाला पाहनउडहिरि
साचहुंओरा जीवत्रसितव्याकुलदुषघोरा २९ मैमषभंगकरोएहकेरा तेहितैहठिनि
जजनउनप्रेरा निजसमर्थकरसम्यकरीती करौदूरहरिकृतविपरीती ३० दोहा लोक
ईसमानीमहाचडैगरवतरुमूढ ताहिउषारौमूलतैफेरनहोइअरूढ ३१ चौपई
श्रीमदअंधमहातमघोरा हरौआसुतमघोरकठोरा देवसत्वगुणजुतश्रुतिकहई सो
तवमदअंधकिमअहई ३२ इमिकोउवचनकहेमनमानी ताहिकहतउतरसनमानी स
त्वभावजोकहजवहोई अघावाभक्तिलहैजोकोई ३३ ताहअमरकहमाननहोई अहं
ईसइमिकहैनसोई ताहिगर्वनहिउपजैककहू सत्वभावउपजैजेहिसवहूं ३४ यातेअ
सनआरिविविधेसा ममजनकहदनहिएउकलेसा यातैदेउदंडएहअवही जासौफिर
नकरैअसकवही ३५ मैजेउदैउदंडकरिक्रोधा सोपुनिलहैसहजमलवोधा गोकुल
वासनकौमैनाथा एममसरणप्रगटजगगाथा ३६ इनकेएकआसहैमेरी अपदन
इतिकैगतिमैहेरी कृष्नदयालसवसुषदाई समवृजकीजोकरीसहाई ३७ दोहा गोर

श्री·भा·
१९०
90

भक्तिदयाकरविरहममविनुरछ्छनचलिजाइ तातैव्रजसवरायहौसुरपतिमानघटाइ ३८
सोरठा गोरछ्छनव्रतलीन अवमैकरउनकाजकछु मघवामदकरिहीन राषिलिएउ
व्रजनिजआपनो ३९ चौपई इमिकहिवचनकृस्नजगनाथा गोवर्धनगिरिलिएकहाथा उ
छलीधुरवलिएउठाई जिमिवालकछ्त्रलेसुषपाई ४० धरगिरनषपरिकुंवरकन्हाई
वोलेविहसिआपुनरराई हेहेतातअंवहेगोपी सुनहुगोपसवडरहूनकोपी ४१ गिरिगो
वर्धनतरसवआई वैठहुभलीभांतिसुषपाई ममकरतेगिरवरगिरिजाई असिसंका
जनकरउवनाई ४२ मैतवत्राएकीन्हभलिरीती वर्षावातभीतसववीती आवहुइति
सवसहितसमाजा करिपरिगिरिवरअतिछविछाजा ४३ अतिसोभतनंदकेलाला हीं
करपरिगिरिधर्योतेहिकाला सुनिप्रभुवचनसकलव्रजवासी प्रविसेसकलगर्तसुष
रासी ४४ सकलमंडलीसहितअनेका भृत्यवर्गजुतसहितविवेका गोधनगोपीगोपस
मेता वैठेसुषसोंगर्त्तनकेता ४५ दोहा छुधातृषाश्रमसकलसुषत्यागिगोपतेहिकाल
देषतव्रजजनसोतिदिनधरेउआहिनंदलाल ४६ सोरठा पगनचल्योतिलआधि गि
रधरकोतेहिठामतै गोपीभईअवाध गावहिकृस्नस्वरूपते ४७ चौपई जोगप्रभावकृ
स्नकरदेषी सक्रहियैअतिसोचविसेषी अतिविसमयसवगर्वहिराजा गतिसंकल्पमा नसाना
नमदनाना ४८ प्रलयमेघगणफेरवुलाए सक्रतिनहिसवकहसमुझाए मेघनिवारत
कसकुचाई निजग्रहगएउहियदुषपाई ४९ गगनमेघगतसंदप्रकासा दारुणवरषावा

90A

तबिनासा देषिकृपालिकृस्नतेहिकाला गोपनसौंबोलेनंदलाला ५० अहोगोपगनतजसं
बत्रासा निकसहुतियधनमहतसुरासा बालवृधसबअल्पसमाजा सनैसनैनिकसौलै
साजा ५१ बरषाबातभयौसबदूरी रविप्रकासचहुदिसिभाहूरी सरसरतंनिजलअल्पसुहा
ए सुनतगोपबाहरसबआए ५२ दोहा लैलैनिजगोधनसबै ग्वालगोपिकावृंद सकटभरे
उपकरणसबजरटबालसुषकंद ५३ सोरठा कृस्नदेवतेहिकाल भूधरभूपरधर्‌यौतह
लीलासहितकृपाल सबकेदेषितराषियौ ५४ चौपई प्रेमभारसबव्रजवासी यथायोगमिल
रमानिवासी पररंभनमुसकनहसिबानी इमिविधमिलेगोपसुषदानी ५५ गोपीसहितसनेह
अपारा पूज्यौतेहिछननंदकुमारा दधिअछतजलजुतमनप्रीती गिरिधरभुजपूज्यौएहिरी
ती ५६ वृधनआइआसिषादीनी नंदसुअनमुषलषिरसभीनी नंदजसोदाअतिहरषाये
रामरोहणीबहुसुषपाए ५७ कृस्नदेवकहहृदयलगाई मिलीअसीसदियौमनभाई दिवसु
रगणअंबरसिद्धअनेका चारणादिसवसहितविवेका ५८ करिअस्तुतिमनपरमअनंदा सुमनव
रषिकहजयसुषकंदा पुनिदिविविविधबाजनेबाजे संषदुंदुभीबहुविधसाजे ५९ सुरपु
रेगंधर्वप्रवीने अप्सरानिरतकरैअधिकनहीने किंनरगावैरागरसभीने गानकियेतिनअ
तिसुषदीने ६० दोहा तबगोवर्द्धनतैसकलगोपसहितजदुनाथ हसतसंगबलदेवपुनव्रज
बहुरेनरनाथ ६१ सोरठा तैसहिसबव्रजनार कृस्नसुजसगावतचली हैसबहियसुषकार
पावनपरमपवित्रजस ६२ गोवर्धनकरधारि यातैगिरधारीकहत जांसुनामअघहार रा

मह्यपाउरवसहुनित ॥ ६३ ॥ कहेंसोरठा आठवर अरुदोहराजान पंचविंश अध्यायमहि ॥ क
हौंकथापरमान ॥ ६४ ॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधे भाषानिवंधे गोवर्द्धनोधरणंनाम
पंचविंशतमोध्यायः ॥२५॥ दोहा हरिकेअद्भुतकरमलखि गोपअचंभोमानि तिनप्रतिनंदवषानहें गर्ग
उक्तमनमानि १ सोरठा षटूविंशतकेमाहि सुनिहैंगोपद्मपालजस संसयकछूनरहाहि
सामहापाहरिगुणसुनत २ चौपई हविधदृसवारिचनरेसा गोपनदेषेअमएअंदेसा आ
इनेहारिगवूझहिवाता विसमयचितहरिगुनमनराता ३ तासुप्रभावनजानतकोई गोपनंद्म
समनुजकरजोई अहोनंदहनवसुअन अनूपा अद्भुतकर्मलष्योसुषरूपा ४ हमग्रामीन
गोपवनवासी ममग्रहनंदनघरसुषरासी करैकर्मषट्अवलअमोघू वचनकहेंसो
होइनमोघू ५ सातवरसकोसुअनतुम्हारा सातदिवसलोगिरिकरधारा एकसोउअम
नहिनाही जिमिकरधरेकंजकरवाही ६ दोहा कछुकवुलेहगतोकतव कीनवकीपय
पान महावलीवहनिसचरी थैंचलईहनप्रान ७ सोरठा जैसेकालकराल नरआयुर्वल
पालेकर हन्योनिशचरीप्राणपय ८ चौपई तीनमासकौतनयतुम्हारा तासुचरनंअच
रजअभिमारा सकटवध्योपलनापरसोयौ उरधरचरणचलावतरोयौ ९ पाहअग्रते
सकटगिरायौ एथकृष्णथकूसवसाजनसायौ वरषएककौभासुतजवही जसुदाकरि
नभूधरतवही १० तणावर्त्तलेगगनउडायौ कंठरुधरतेहिप्राणनसायौ एकदिवसचो
खोनवीना वांध्योजननीलषिअवनीसा ११ उषलसहितजुंगलतरुमाही जाइगिरायो

तिमितवतनयगोपाल ५

११A

दुमछिनमाही। एकदिवसवलकान्हकृपाला सखासंगलियेंदीनदयाला २२ चारतवत्सफि
रैवनमाही मारनहेतुआववकताही। मुषतैंताहिचीरकिमिडारा जिमिपढेरतृणकोउरधारा
२३ वत्सचरावतपुनिएकवारा वधहितवत्सासुरपगधारा युगलचरणगहिपकस्योताही
भएउप्राणगतितेहिछिनमाही २४ दोहा मारयौधेनुकअसुरदृन सेनाजुतकरनाहु वलसह
कीनेउतालवनछेमलहतनैंरआसु २५ सोरठा दनुजप्रलंवकठोर वलजूकरतेहनासदृन
पुनिदावानलघोर गोपवचाएपानकरि २६ चौपाई अतिकठोरविषयुतअहिराजू दहतैंका हं
ढेउसहतसमाजू देतेहिदंडविसदकरआसू गतिविमनीरदृहितासू २७ एवृजवसतसक ३३ किंमें
लजेप्रानी तवसुतनैंसहजैसुषमानी प्रवलसनेहअहैसवकेरा स्वतहस्वभावफिरनहिफेरा
२८ कहयहसातवरषकौवालू कहगिरवरकरिधरउविसालू हेवृजनाथतनयतवदेषी मम
हियसंकाहोतविसेषी २९ सुनिगोपनिकीगिराअनूपा नंदरायवोलेसुषरूपा सुनहुगोपग
नसंकात्यागी कहौगरगवानीअनुरागी ३० अजगिरीसताअंतनपावैं जुगजुगअवतारधर मै
आवै ममसुतगुनउनकहावषानी सुनहुसकलवानीसुषदानी ३१ अरनजुगतीनवरण
हैयांकै अरुणश्वेतअरुपीतहुतांकै अवयहकृष्णवरणइतिभएउ गोपधेनुगोपीसुष
दएउ ३२ दोहा पूर्वयहवसुदेवकौ तनयभयौइमिजानु तवसुतकहयातेकहतवासु
देवपरमानु ३३ सोरठा तवसुतकेवहुनाम रूपअमितकोकहिसकै रूपकरमअभिराम
मैंगुणजान्यौअपरनाहि ३४ चौपाई गोकुलगोपजहांलगिजेतौ यातैंसुषपैहैसवतेतौ

श्री॰भा॰
द॰७२
92

यांतैंसंकररिपुगणभारी तुमतरहौविलभ्रमभयहारी २४ छुरवदनव्रजकौसुषहीना
नृपविहीनधितिपालककीना वट्टेचोरपीडतभईधरणी मारइहरकीनीसुभकरनी २५
अहोनंदतवसुतसुंषदाई यांसौप्रीतकरैमनलाई अमितैनहिनपराभवतासू जिमिहरिप
छिकअसुरविनासू यांतैनंदकुमारतुम्हारौ श्रीपतिसरससकलगुणभारौ श्रीकीरतअनु
भावसुभाऊ कर्मअतर्क्यनविसमयकाऊ २७ इमिसख्यातगर्गमोहभाषी सेमैंनिजहियमैं
धरराषी तोहिनैमैतैलोकरिजान्यौ गर्गगएग्रहअवइवमान्यौ २८ नारायणकोअंसलषांया
ला मान्यौ कृष्णहीनजनपाला रहतकलेसकरमसवदेषी जनसंसयकछुकरहुवि
सेषी २९ सुनिसवगोपनंदमुषवानी गर्गउक्तजोकहीवषानी अतिआनंदसहितव्र
जवासी गतविस्मयसवमोहविनासी ३० छंद गतिमोहिविस्मयगोपसगरेनंदपूज
नतिनकियौ सेषदकृष्णहमकहकृपाद्रिगकरहेरिअघसवसुषदियो ३१ फिर।
कियोजिनमषमनैवरवससेक्रतवकोप्योहियौ तेहिहेतुटेर्योप्रलयकरतामेघकहु
आयसदियौ ३२ व्रजनेगिरेहुवहाइसवमिलमेहुआवतहोतहा तवघोरजलअति
वर्षपाहनतीव्रमारुतअतिवहा ३३ भयोदुषितगोपीगोपगणपसुजीवव्याकुलभेमहा
तवदेषिकरुणासिंधुजनकहुसरणमेरीइनगहा ३४ तवकारिकृपानिजजनपरिनि
जपौरताप्रगटीतहा तवलयोतुर्तउषारभूधरलष्योव्रजव्याकुलजरा ३५ एकहा
थऊपरराषियोगिरधारजनपाल्योमहा एहिभांतिमघवामेहमतिजनगरवजो

92A

रतहरिसदा ॥ ३६ दोहा एहिविधव्रजरछ्याकरी गोवर्धनगिरिधारि उछलीधूजिनिकर
गहैवालकसहजसुधारि ३७ सोरठा निजजनपालनहेतु गिरिधास्योजिनसातदिन सो
इहरिक्रपानिकेत रामकृपापरिकरिक्रपा ३८ सुभगदोहरा चारि चारिसोरठासुभगअत
तीनछंदसुषकार छवीसाके अध्यायमहि ॥ ३९ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे
भाषानिबंद्धे गोपविस्मयप्रकरणे नामषट्विंशोध्यायः ॥ २६ ॥ दोहा ॥ लषिप्रभावश्रीकृष्ण
कौसक्रसुरभिइतिआइ प्रतिमुषनुतअभिषेककरि कृष्णगोविंदकहाइ ॥ १ ॥ सप्तविंशके
ध्यायमहि एतनीकयावषानि मुनिकहिहैभूपालसोंकरुणाकरसुषदानि ॥ २ ॥ चौपई नंद
दलालगिरिवरकरधारा व्रजराष्योकरजलपरिहारा सुरभिलोकतेंसुरभीआई बैठे
प्रभुजहकुंवरकन्हाई ३ सचीनाथआयोचलितहवां गिरिधर्वनबैठेहैजहंवां सक्रमा
तंत्र नब्रीडितआयो अतिआनंदसुरभिसुषपायो ४ लषिअकंतजहहरिआसीना आयोसु
रपतिवदनमलीना कृतअपराधसकुचमनमाही सिरकिरीटरविछविछकजाही ५ तो
करपरसकृष्णपदधूरी करतदंडवतभूपरभूरी सुन्योश्रवणदेष्योसोइलोचन कृष्ण।
अमितगुणजनभवमोचन ६ मैत्रिलोकपतिमदयहभागा हायजोरकछुकहनसुलागा
सुधसत्वगुनमयतवरूपा सांतएकरससुषदअनूपा ७ पुनितपमैसर्वज्ञगुणाकर रजत
मध्वस्तसदासुषआकर पंचतत्वतुमहोप्रकासी पारब्रह्मअवगतअविनासी ८ दोहा
मायागुणमयजगतप्रभु तामहिहमअतिलीन तुमईश्वरमायापरैसुषकरसदाप्रवीन

श्री भा॰
८.९३
93

९ चौपई तुमसर्वेसअशहमनाथा भ्रमहिवारवहुफिरहिअनाथा लोभादिकमेंअतिसे
नेहा विनुसुधहमवांधेएहिदेहा १० तुमप्रकासमयकामनलेसू किमियहूउभीकर
हिअवेसू तदपिदेहिकरनागुणभूरी राषिधर्मनिजवलकरिदूरी ११ गोपपुत्रमेंजोहिवि
विधेसा दंडुदेउकिमिकहमिअदेसा कारणकौनदंडकाआही मैंतोकोरान्योकववाही १२
जोकराविप्रभुअैसेकहहू तोममवचनश्रवणप्रभुगहहू जनकजगतकेगुरुतुमनाथा
पुनिअधीसकारणसुतेगाथा १३ कालरूपतुमसमरथभारी विश्वरूपलीलातनुधा।
री क्रीडितमनहुमनुजसिसुकोऊ जगसुषदायकहेसवकोऊ १४ जगतईसमानीअति
मूढा कियोविमदजेमदआरूढा हमसिअसजगतपतिमानी भयमयतुमहीअतहम।
जानी १५ दोहा त्यागिसकलमदआसुअवभजहिचरणतवईस तवईहाजहुनाथयह
वलअनुसायनहीस १६ सोरठा तवईहाजहुनाथ गर्वप्रहारीवलनिकौ हमअतिअग्यअ
नाथ तुमकृपालकरुणाअयन १७ चौपई छमहुनाथअपराधहमारा श्रीमदसुरापानत
तुमारा अतिमूरषअसानअगाधा तापरकरेउजुतवअपराधा १८ अहोईसअसतीम।
नमोरी उपजनकवहूंसरनमैंतोरी विनयकरोंप्रभुवारहवारा जानिमोहिकिंकरनिर
धारा १९ तवअवतारदेवजगमाही अधममारिभूभारनिसाही उदरपरायणजेअसु
रंदा भूमिभारसमकुमतगयंदा २० तिनहिविनासनहितअवतारू दुष्टनिकंदनजनसु
षसारू पुनिजेदुष्टचमूपतिभारे ताहिमारकियसंतसुषारे २१ जेतवचरणकंजअनुरा।

गी पालेतातिन्हे सदा अनुरागी तातैं नाथ दास मैं तोरा छमा करउ अघ औगुन मोरा २२
नमो नमो भगवंत अनंता अंतरजामी अमित अनंता वासुदेव वंदौ पद तोरा जादवपति मैं
किंकर तोरा २३ दोहा सव घट व्यापी दूर पुनि स्वेछा वपु धरि धारि पुनि विसुद्ध विग्यान वपु
नमो नमो गिरिधारि २४ चौपई सकल मई पद कंज नमामी जगतवीज हरि सरण नमा
मी नमो नमो चर अचर सरूपा नमो कृष्ण वपु मोहन रूपा २५ कर प्रणाम पुनि विविविकासो
री निज मुष निज अघ कहत वहोरी निज मख भंग देष मैं मूढा भयो क्रोध मानी मदरूढा २
६ वरष्यो व्रज पर पाहन पानी पुरुष कठोर पवन दुषदानी गोप नास हृदयाकर मंद्रा कियो
महा अघ ग्यान हदकेदा २७ हतउ हम करि गर्व विनासी किए अनुग्रह तुम सुषरासी मैं तत
व चरण सरन जइ नाथा नाथ आजु मैं भए उ सनाथा २८ एहविध प्रभु गुन वरन महीसा अ
स्तुति करि पग धरि सीसा तासन कृष्ण कृपाल गोसाई हसि वोले वर गिरा सुहाई २९ होइ
मोर सिमिरन विवुधेसा तव मघवा सन धांकरे उ निदेसा श्री मद करि द्रिग कि रहे भारे की
न अनुग्रह आसु उधारे ३० दोहा श्री मद कर जे छकरहे अंध गर्व आरूढ दंडपानि मोहि
लषत नहि महा मंद मति मूढ ३१ चौपई तासु करौ सव संपति नासू करउ अनुग्रह जव जेह
आसू जाहु स्वर्ग सुरपति भय त्यागी मम निदेस पालहु अनुरागी ३२ नित अधकार करउ सु
षमानी साविधान सव मद रिहानी तव कल्यान निरंतर जानू स्वर्ग रहहु जुत सुष सनमानू
३३ पुनि सुर धेनु वंद प्रभु चरणा वोली वचन मंजु मन हरना कृष्ण कृष्ण हे प्रयोगी सा अग

हर

५

जगकारणतुमजगदीसा ३८ अखिललोकजगहेभगवंता मोहिसनाथकियकमलाकंता
शक्रवदौमममकुलकियनासू तुमवृजनाथराखिलियआसू ३९ छमारेवतुममममयदुनं
दा हेजगदीससकलसुखकंदा धेनुविप्रसुरसाधनहेतू होउइंद्रतुमकृपानिकेतू दोहा
जोकराचिअसेकहोइंद्रअहैयहआज तौयाकोदेखेउसवैइंद्रयनेकोकाज ४१ सोरठा
इंद्रदेवताहोइ कैसेंकरमारेवयति वैनकहोइमिकोइ नहांसुनौकारनेनिधे ४० चौपई
केजसुअनप्रेरेउमोहिनाथा होहुइंद्रजगकरउसनाथा करिअभिषेकतुमहिजदुनं
दा जवकैहोगरहआनंदकंदा इमिकहिसुरस्रेदेवसोवानी निजपतिअभिषेषैमोसुख
मानी व्योमसुरसरीजलसुभजानी एरावतकरउधतआनी इंद्रदेवऋषिमिलएकवा
रा देवमातअदतीजवप्रेरा करिअभिषेकहरषिहेभूपा नामधरेउगोविंदअनूपा ४१
तहगंधर्वसकलमिलआए तुंवरनादविविधसुहाए विद्याधरचारमुनिईसा सिद्धआदि
गणअमितमहीसा ४२ गावतभएसुजसअघहारी देववधुनाचहिमुदभारी सकलदे
वगणअस्तुतकरई सुमनवर्षजयजयउचरई ४३ तीनलोकमहिसुखअतिभारी पा
इनिवृतिभोगसुखकारी धेनुननिजपयसेंजोधरनी महाप्रेमभरकोसकवरनी ४४
दधिघृतछीरनदीसववहही तरुमधुधारदिवसनिसिचलई तरवरसुगंधमहासुख
दाई पवनपरसमनरहावंधाई ४५ छंद तरुश्रवहिनिसिदिनिमधुसुहावनम
हापावनसुखमई विनुअमहिछितसवअनउपजैमिणिनिमनिवाहरई ४६ जेजन

९५A

महीगें कूरतिन की विषमता सब न सगई यह सकल कंस प्रताप जानौ दुष्ट मति सुष मैं भई
४७ दोहा॥ निंद्य निज वैर विसार सब जे पापी षलु जंतु चरहिं एक संग सुरभि हरि मृग पंत
जग परिजंतु॥४८॥ गोपति गोकुलपति कियौ नाम धरी यौ गोविंद लै आयुस निज ग्रह गए
हो उभर आनंद कंद॥४९॥ सोरठा॥ देवन सहित सुरेस निज पुर गए उ अनेक जुत सुरभि मांगि ते
नि देस हरषि गई निज धाम कौ॥५०॥ कृष्न चरण सुष अैन भव भंजन गोजन वियत ताहि
भजै चित चैन राम कृपा मज मूढ मन॥५१॥ सात सुभग दोहा कहे चार सोरठा जानु सप्तावि
शके ध्याय महि छंद एक वरणैक मानु॥५२॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा
निबंधे इंद्रस्तुति पूर्वक गोविंदाभिषेको नाम सप्तविंशतमोध्याय॥२७॥ दोहा॥ वरुणालय हरि
नंद गे तेहिं आनौ घनस्याम वहुरहि यायौ गोपगन ब्रजलय अभिराम॥१॥ अथ दादस के
अध्याय महिं एतनी कथा पवित्र मुनि कहहैं नरराज सौं कृष्न चरित्र विचित्र॥२॥ चौपई
गिरि धर कह्यौ सुरेस अधीना वहत जलेस हि निज वस कीना नंद हरन मिस कर वस ताही
सो प्रसंग वरनत चित चाही॥३ एक समै हे भूप सुजाना एकादसी नंद व्रत ठाना॥ निराहार क
रि भगवत पूजा कृष्न जाहिं प्रिय अपर न दूजा॥४॥ धर्म कर्म द्वादसी जो होई॥ अर्ध निसा पर पा स
इय सोई द्विवस कृत्य करयत हारी इमि शिवकह्यौ संहिता माही॥५॥ कला एक द्वादसी जानू
नंद गए मज्जन सुष मानू असुर काल जमुना जल गाह्यौ वरुण भृत्य तेहिं निज वस चाह्यौ
६ लै गोपक रि वरुण के पासा इन अकाल जल परस सुपासा गोपति नंद री षन हिजव

हो देख्यौ कृष्णचंद्र कहतवही दोहा दीनगिरागोपनकह्यौसुनियक्रिपानिधान वरुणभृत्य
ममपितुहस्योसोउजान्योभगवान ८ चौपई जननअभयदातासुषकारी गएवरुणकेवि
करमुरारी आएकृष्णकेशजवजान्यौ लोकपालहियअतिसुषमान्यो ९ वहुविधपूज्यौ
अतिसुषपाई उमगप्रेमलषिकुवरघनाई नयननीरपुलकितसवगाता जोरपानजुगक
हकछुवाता १० आजुसफलतनभायहमोरा देषेउनाथचरणमैतोरा धन्यलोकपूज्योमम
कामू आजुसफलधनधनपतिनामू ११ धन्यलोकजेतवपदकंजा तासुहोइभवरुजहरि
भंजा नमोनमोभगवंतअनंता षड्ऐश्वर्यसहितश्रीकंता १२ जयपरब्रह्मसच्चिदानंदा
सकलनियंताआनंदकंदा नमोनमोहेगिरवरधारी मायापारकृष्णअसुरारी १३ नाथ
अजानभृत्ययेमेरे मूढअंधहियआहिमितघेरे काजअकाजसुधकछुइनही हरिल्याए
तवपितुसुधविनही १४ सोअपराधछमहुप्रभुमोरा नाथपाहिकिंकरमैतोरा तुमप्रभु
होपरमकृपाला मोपरअनुग्रहकरौदयाला १५ दोहा यहतवपितुश्रीनंदजूलीजैकृपा
निधान दीनवंधुकरुणाकरोजानमोहिअस्तान १६ सोरठा एविधकरुणासिंधुलैनिजपि
तुआएदहं सदाहीनकोवंधु रामकृपाभजयेतिनाहि १७ चौपई लोककपालऐश्वर्यअने
कादेष्यानंदएकैतएका जोपूर्वकवहुनाहिदेषा अतिअद्भुतसोनयननपेषा १८ कृष्ण
चरणवंद्यौतिनआई नंदसकलगोपनप्रतिगाई उनकंदाउपजीहियमाही जान्यौकृष्ण
देवहरिआही १९ मनवांछाउपजीसवकाहूं देषैव्रह्मसूछमचितचाहूं देहेहमहिईसम

95A

गवंता गोपनमनउपजीसुधवेता २० प्रभुसर्वज्ञदीनहितकारी जनसंकल्पहिएनिजधारी
जनसंकल्पविधिजिमिहोई कारजमोहिकरनौअवसोई २१ करतविचारनाथमनमाही
जासोजीवयरैभवनाही देहादिकमैअहमितकरई तासोकामघनौसंचरई २२ तवयहक
रैकरमभलमंदा सोईकारनतनधरसुभगंदा मायावसयहफिरैभुलाना विषयेवासनारहा
वंधाना २३ एहिजीवभ्रमतफिराना नहिनिजगतकवहुंपहचाना अनेकजनमधरेतननाना नित
तवभक्तिविनाव्यासवजाना २४ दोहा एहिविधचिंताहरिकरी करुणाकरजगपाल ब्रह्म
रूपतमपारसोधामदिषायोग्वाल २५ चौपई पूर्णब्रह्मसनातनजोई तीनकालवाधतन
हिसोई अजरअनंतजोतिमयधाम सदाएकरससूरणकाम २६ गुणातीतमुनिदेषहिजाहि
सोसरूपगोपनलषिवाही हरिक्रपालतेहरूपदेषाई भएमगनहृदयहरषतेहिठाई २७ ब्र
ह्मस्वरूपसोछ्हभाभारी तहांमगनसवगोपनिहारी तहतेंकृष्णदेवतेहिकाढी वाहरकिय
निजहियरुचिवाढी २८ जिमिसमाधितजिजोगीकोऊ लषैप्रपंचसत्यसोसोऊ तिमिसवगोप
जागतहठामा लष्योसुभगवैकुंठसुधामा २९ ब्रह्मनिमानहोइजोकोई लषैलोकसोअघटि
तहोई द्विमिकोऊवचनकहेअनुमानी तहिकहतवानीसनमानी ३० कृष्णनिमित्तपाइअक्रूरा
देष्योपरमधामअतिरूरा प्रभुअनंतवपुऐश्वर्यअनेता असंभावनाकरहुनसंता ३१ दोहा
अपवाजहंअक्रूरस्वलिमनुजकियचितचाह देषलोकअचरजभयौनामब्रह्महदितांहि ३२
सोरठा सोप्रसिद्धवहठौर कहतघाटअक्रूरको कृष्णदेवसिरमौर तहांन्हाइसवगोपगन ३३

श्री भा।
१८६
96

चौपई तिन देषा अजधाम महोसा नहि तै तिन हि कोउ जगदीसा एहि विधि कर सब गोपस नाथा
जन मन रंजन है जदुनाथा जिमि अक्रूर देषि प्रभुरूपा इत उत लषि कौतक सुषरूपा पुनि निनि
जहियविस्मय अति आनी भासं तोष हे तु प्रभु जानी २५ तिमि नंदादिक हूं सब देषी तह अब
रज एक लष्यो विसेषी विध सुरेस मुनि आदिक जेते अस्तुति करहि कृष्ण की तेते २६ मह।
कौतक लषि गोपस यौनै॥ तद्यपि तिन नहि विस्मय आनै भक्त ईस त्र पाल गोसाई प्रेम सहि
त भूलत भए आई॥ २७॥ दोहा॥ एहि विधि नंदादिक सकल देषि रेषि हरि रूप कृत्य कृत्य मानत।
भए भाग्य मानत इरूप॥ ३०॥ दोहा सुंदर पाँच मनि सुभग सोरठा होइ अठाइस के अध्याय महि
वर्ण्यो कथा सुभ सोइ॥ २९॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा निबंधे नंदमोचनो
नाम अष्टाविंशतमोध्यायः॥२८॥ दोहा॥ उनतिस के अध्याय महि रास हेतु जदुवीर उत्तर
प्रति उत्तर तहां गोपी कहिहै धीर॥ १॥ तहां रास महं रास कछु हरि अंतर हित होइ कौतक एहि
विधि कर तह हरि सुनि अघ घर है न कोइ॥ २॥ ब्रह्मादिक को जीत कै मैन मान आरूढ तासु गर्व ग
जहलन कौ रास ब्यान हरि गूढ॥ ३॥ चौपई॥ नंदकिसोर निसा जो देषी रमवे को मन भयो विसे
षी ब्रजकुमारिका वरदस मेता तिन कह वरदियव्रत पानि केता ४ सो निसि देषि स्या अति की
नी रास करन को हरि मन दीनी सुभग सरद लषि निसा सोहानी राकापति कर मंजुल जानी ५
वनसौ रम प्रफूलत वहु फूला मल्लिकादि वहु तेहि सम तूला रमन काज मन उपज्यो तव ही
लषि उजल निशि निशिपति जव ही ६ यह विपरीत करम कि मि कीना परदारा मह कि म चित

96A

दीना मैंन पराभव करि विपरीती इमि संका कोउ करै प्रतीती ७ ताहि कहत संका करि हांनी लाल

दे वगत अमित वषानी अमित योगमाया पति आइ ताकरि घटै न परसै पाइ ८ आतम रत पुनि

रमै अनेता इमि आगे कहि है वुधवंता मन मथ के मनमथ सख्याता रमत सहाय अचुत विख्याता

९ दोहा एहि विध श्रीसुक वरनहै हरि स्वतंत्र सब काल यास विडं विन जानियो काम विजै यह

ख्याल १० सोरठा रमन चह्यो व्रजराज तिन के प्रिय करि ताहि छनि उदित भयो उडराज

सो सुषमा मुनि कहत अव ११ चौपई जिमि प्यारी तिय को मुष देषी पिय कुंकुम कर लावविसे

षी तिमि प्राची दिस नार सुभागी प्राचि कर सुभग अरुण अनुरागी १२ सोइ कुंकुम जन मुष हिल

गावत प्राची तिय सोभा अति पावन दिवस ताप जन को करि हानी उदत निसेस समय सुष जानी

१३ रमा वंधु कहि लषि गिरधारी सुभ अषंड मंडल सुषकारी श्री आनन इव आभा जांसू निज कर

कानन करत प्रकासू १४ नव कुंकुम सोभा दुति राजत कुसमित वन अति से छवि छाजत सो छवि

लषि तेहि छन जदुनेसा गाए उसुभ गरा गसुषकेसा १५ जा सुव्रज तिय वहैयो अनेगा भई काम

वस मन ते हि संगा चली गान मारग कहु देषी रहित परस पर संग विसेषी १६ दोहा कह्यो न काहू

सो कछू चली सी घ्र व्रज नारि पुनि पथ ते पहु ची तहां जहां लाल सुषकार १७ सोरठा चली सी

घ्र व्रजवाल कुंडल लोल कपोल छवि सोभत वरन विशाल विधु मंडल तें सरस अति १८ चौपई

उमग्यो उर अनुराग अपारा गान शर श्रवण न जिन धारा लाल माहि चित जां को वसही ता सुत्रि

वगि कर्म सव न सही १९ हरि हित कर्म करै जो कोई जो कहा विभूले न रसोई तौ वह सफल होइ

श्री भा॰
द॰ ५७
97

सबभांती सोवरनत अवसजनसुहाती २० अवणमनकभूलीसुधगोपी चलीमगनचितगिरधा
रऔपी दुहतधेनुआधोदुहत्यागी पयअवटनकोसुधनहिरागी २१ अर्धपकथूलीतजि
कोउ चलीनायिकाकृरमनजोउ परुसतअसिनछांडितेहिभागी अपरसुअनपयपानमरा
गी २२ अपरचलीपतिसेवात्यागी असनकरतितजिचलवडभागी अंगराजतजिचलिएकना
री उदवर्तनतजिचलिसुकुमारी २३ अंजनएकनयनकरवामा चलीहृदयवससुंदरस्यामा
हरिमूरतलषिजोगीकोई जैसेसवगोपकातनसुधषोई ॥२४॥ दोहा ॥ कृष्णतोषहितकर्मकोउ
करैतहांमनलीन जद्यपिहोविपरीतकछुफलनहिनसेप्रवीन ॥२५॥ सोरठा ॥ सोइतलषहुसुजा
न जिमिव्रजतियजतसफलसव नूपरधरनिजकानि अवणभूषणचरणधर ॥२६॥ चौपई ॥ कर
पटिधरिनिजसीस सारीनिजकटिसोकसी उलटेतिनहिनहीस तनमयश्रीहरिरूपमे ॥ चौपई
हरिसनमुषजाकरमनहोई विघननव्यापैतांकहकोई जिमिगोपनकेपितुपतिभ्राता वरजनतेहे
वेधुगतत्राता २८ रुकीनतेगृहचलीजहनागर जिमिसरतागतिरुकैनसागर कृष्णहस्योमनु
जासुदयाकर सोकिमिरुकहिनाद्रजनागर २९ अंतरगृहरोकीएकवाला नहिनिकसनपाई
तिहकाला मनकरमिलीप्रथमसोइनारी निरष्योप्रथरूपगिरधारी ३० सोमूरतउरमहिकरि
ध्याना जिमिसमाधिजोगीमनठाना सपरमिलीसोपियकहआछे गुनमयवपुत्यागेतवपा
छे ३१ किमिवपुत्यागिमिलीसोनारी विनाज्ञानपरब्रह्ममुरारी इमिसंसयजोकीउकरप्रानी
तहशुकमुनिधमिकह्योवषानी ३२ जारिबुधश्रीकृष्णहिरैषी लहीब्रह्मगतिपरमविसे

97A

थी बलु शक्र अति प्रबल प्रतापा। चहै बधन हित कृपा कलापा॥ ३३ दोहा सुधापान जिमि करइ कौ
उ अमर होइ सोइ जानु। तिमि यह बस्तु प्रभाव लखु अपर न कारन आनु॥ ३४ चौपई किमि प्रारब्ध।
भोग बिनु कीनै देह तजी उन कह हु प्रबीनै। इमि हू छे जो तासन कहही। इह बिध उन कह भोग न ग
हही॥ ३५ प्रीतम बिरह दुसह दुष भारी। तीब्र ताप सब पाप बिहारी। ध्यान पंथ मिलि कृस्न कन्हाई। पर
म भोग सुष तिन सब पाई॥ ३६ तो करि पुन्य छीन भा तासू। गुनमय देह तजी तिन आसू। मुनि श्री
सुक के बचन अनूपा। जो रिपान बोल्यो तब भूपा॥ ३७ हे मुनि मै पूछौ एक बाता। निज संसय प्र
गटै है ताता। निज पति पुत्र आरि जे कोउ। बस्तु एक है सब मै सोऊ॥ ३८ तासु भजन तें किमि गति हो
ई। ऐसे कृस्न बिषे लषु सोई। अति कमनीय कांति उन जाना। नहि उन ब्रह्म भाव मन आना॥ ३९
गुनमय चित नारी बस कामा। गुन प्रभाव किमि भा उपरामा। सुनि नृप गिरा कहत मुनिराया। हे म
हीस पहिले हि मै गाया॥ ४० दोहा निंदत रहे दैवी सदा गिरा परुष अति घोर। सिसुपाल हि बहु गति
दई गनी न कुमति कठोर॥ ४१ सोरठा जोगी जावत जाहि सो गति दीनी हरष हरि। तौ अब रज की
आहि गोपी जो पावन भई॥ ४२ चौपई मन क्रम ए हरि प्रिया प्रबीना। कहा अब भी गति जो दीना।
ह्रषीकेस भगवंत गुणाकर। सील सनेह सदन सुष सागर॥ ४३ तिन महं सदा लीन मन जासू। गुण
कृत बंधन सहज बिनासू। अप्रमेय अव्यय अबिनासी। अषिल नियंता अगुन उदासी॥ ४४ नर कल्या
न हेतु तन धारी। ब्रज लीला हरि बिपुन बिहारी। मन जु सरस को उ कहत हि मूढा। महा अघी सो म
हा अरूढा॥ ४५ जेन केन बिध कब हु क कोई। सुमरै लहै सु ता नर सोई। काम क्रोध भय नेह समेता।

श्रीभा
द०५०
98

कैसेंवंधभक्तिदृढवेता ४६ मनहरिमाहिधरैजोप्रानी हरितिनमयगतिलहैसोज्ञानी जोंगेश्व
रकेईसम्रनेता अजअनादिईश्वरभगवेता ४७ तिनमहविस्मयकरउनभेया हरिगतिअमि
तअनेतअनूपा प्राणमात्रकीकेतकवाता याचरमुक्तलहतहेताता ४८ दोहा निजढिगआई
व्रजवधूदेष्योनंदकिसोर रससानीवानीविमलवोलेहसितेहिओर ४९ चोपई महाभाग
हेसुमुषसयानी आइहुतुमसवभलैसुजानी कहहुकहाप्रियकंरहितिहारे इमिकहहारिते
हिओरनिहारे ५० सोभमजुतआईतेहिदेषी पूछततेहिअवकुशलविसेषी कहोअनांम
विरजहेवामा कोनहेतुआइहुएहठामा ५१ करिकटाछव्रजतियमुसकानी लज्जाजुतमुष
कहेनवानी तवहरितासुहेतुपहिचानी पुनिवोलेवानीरससानी ५२ घोरनिसावनजंतुकठो
रा वसेंइहासततषलघोरा ईहावसोजनव्रजचलजाहुं मातपितानितप्रतिचितवाहु ५३
पतिअरूपुत्रभ्रातसवतुमही षोजतहैहेघरघरसवही यातेतुमनिजनिजघरजाहुं इतर
हवोनहिकरहुउमाहुं ५४ दोहा मुषवरेहिचितवतहुतीसुनेक्तसमुषवेन प्रनयकोंपईष
तउपजअनेतकियेतिननेन ५५ चोपई तिनसोंपुनिवोलेभगवंता देष्योवनयहअतिसुषवं
ता राकापतिकररंजितसुंदर कुसमितिसघनसुषदसोरभवर ५६ जमुनापरसिअनलवह
मेरा कंपततरूपल्लवसुषकेरा ताकरसोभितहैवनराजू देष्योमंजुलवनजसमाजू ५७ सुंद
रजाहुवेगिनिजगेहा सेवहुनिजपतिसहजसनेहा वछराछोरिदुहौनिजधेनू वालपिआ
वहुनिजचितचेनू ५८ भईवडीवेरक्षुधितसिसुजानी जाहुवेगग्रहतुमसुषमानी सुनिहरि

१४A

वैनछुभितचितकोपी नयनरिसोहेलषिहरिगोपी ५९ वोलेहरिसुनिसुमुषसलोनी तुम
सोंअपरभईनहिहोनी अयवातुममनेहअधीनी आइहुइतसोघरेप्रवीनी ६० सकलजे
तुमोसनअतिप्रीती रापतहैसवजगयहरीती नारधर्मयहसुनउसयानी निजपतिसेवैम
नक्रमवानी ६१ दोहा छलतजिसेवैरातदिनअंपकेमनअनुकूल पुनिपतिकेजेवंधुकहु। ति
पुत्रआदिमनफूल ६२ चौपई सीलहुसहदुरमगजडरोगी निरधनजररकूरगतिभोगी ऐ
सेहुपतिकोतजैनकवहूं सोउतमतियसुषलहसवहूं ६३ जोकदाचिपानकजुनहोई तोन
वं संगपतिसोकरसोई करैसंगजवपातकहानी श्रुतिपुराणइमिकहतवषानी ६४ तिय
कहपतिएकदैवतआही परमधर्मयहअपरनताही रमैनारपरपुरुषअयानी उभयलो
कतावरमोहानी ६५ छनसुषलागिअजसअतिभारी गतिसुषभईकालवहुनारी मनकर
ध्यानश्रवणगुणसुनही दृगकरदरसनामउचरही ६६ अधकप्रीततेसोउरउनही निक
टरहे असमुषनहिजिनही अरुतुममेरीकरौतुध्याना हरिमाहमोहिलषोनिदाना ६७ सो
रठ यांतेतुमग्रहजाउ जोग्यनहीयहजारसुष ध्यानकरोउरमाहि दिनिजवकहेउगोविंद
प्रभु ६८ चौपई गोपिनिसुनिअप्रियहरिवानी हेरपतेसवहियअकुलानी भईषीनमनहु
षअतिवाढा भगनमनोरथसंकटगाढा ६९ अतिचिंताव्यापीतनमाही चिंतालछनवरनतत
वाही नैनसरोजश्रवहिजलधारा अंजनकुचकुंकुमपरहारा ७० सोकस्वासतेअधरसु
षानै जाहिदेषिफलविंवलजानै नमितदृष्टपगलेषहिधरनी महादुःषभरविंतुतरनी ७१ पोकल

श्री·भा·
द·स्कं·
99

रही मौन गहि कै सब ठाढ़ी चित्र पुत्रका की छवि वाढ़ी पुनि धर धीरज ते ब्रज नारी. निज निज कर पौ
छौ निज दृग वारी ईषत गोपन यन रति नारे हरि मुष लषि कछु वचन उचारे मदुल मंजु गद
गद सुर बोली निज हिय की संचित सब बोली ७३ जगत काम त्यागे ओ हि लागी एक चरन
पंकज अनुरागी हृदय प्रेम हरि सौं दृग जोरी कहन लगी सब प्रभुहि निहोरी ७४ दोहा हे
विभु एहि विध क्रूर जो गिरा कहन नहि जोग तन मन प्रन कर हम भजी तजे उ और सब भोग
७५ चौपई तव पद कंज आस एक मोही प्रणत पाल विनवौ एक तोही तुम स्वतंत्र सेतत जड
वीरा भजहु हमहि छाडहु जन धीरा ७६ आदि पुरुष जिमि भजत ममुछन तिमि तुम रम
हु हम ही येही छन वडे धर्म वित तुम जो भाषा नारि धर्म सो हिय मह राषा ७७ तव मत लुय हृ यै
से होउ तव मुष गिरा सुधा नहि सोउ पति सुत सुहृद जगत मह जेते प्रीन एक सब ही तुम तेते
७८ त्यागि काम सब सरण तिहारी ता सु त्यागि भलि धर्म विचारी नहि आन मत हई स सहाई
अपर न दूजा है तेहि ठाई ७९ भोग पभोग ता सकल अधीसा तुम विनु अपर न जन कहहीं सा
सकल ईस तुम हो हु स्वामी सब जीवन के अंतरजामी ८० किये ध्यान तव सब सुध आवै
यह विचार हमरे मन भावै पूर्ण परम धाम घनस्याम् जह आन मत ह तव विश्राम् ८१ दोहा
जल ज नयन जन दीन के सुनिये प्रभु एक वैन एा हितै जे कोउ निपुन जग तुम हि भजत सुष
ऐन ८२ चौपई आतम नित्य तुम हि प्रिय जानी भजहि तु महि सुषप्रद जिय जानी पति सु
ता दि सव दुष प्रद ईसा या ते कृपा करिय जगदीसा ८३ अति वहु काल करी तव आसा त

११८
मे

वपदकंजहोहिनिवासा सोग्रासावहवेलिग्रनूपा जनिछेदविहरिजनसुषरूपा ८५ हेह
रिचित्रग्रादहरिलीना वसीभूतहममईग्रधीना कहेउजाउघरमननहिजाई कहउकाहग्र
वकरयउपाई ८६ करग्रहकृत्यकरतहेनाथा ग्रवपदकंजपरसचहहाथा नयनननाथतव
रूपलोभाने ग्रपरदेषिनहिसकेग्रघाने ८७ पैडुएकनहिपगचलसकई पदमलतजस
केनकवई सुनिधुनिवेनुश्रवणरसमाते सोइदतनेग्रवग्रनततनजाते ८८ दोहा वृजकेगेह
मंजाहिहरिकरैकहहमवाम इंद्रीगणमोसोसकलसुनहुस्यामग्रभिराम ८९ चौपई हेहरि
तवकराछ्यहवांकी तियहियमैंनग्राकजनचाकी सुनमदवेनुकणीएभूले द्रिगतवस्यामरू
पग्रनुकूले ९० एहिकामग्रगनिहियवाढी जानहुहमहिदुषितग्रतिगाढी ग्रधरामृतकरसी
चहुनाथा ग्रगिनिनासकरकरहुसनाथा ९१ जौकरहिचिद्रभिक्षपानकरऊं कामग्रगनकहनहि
परहरिऊं तौपुनिविरहजनतएकग्रागी होउकरतनजराइहतभागी ९२ जोगीइवतवपदज
हुनेरा ग्रैहै हमएहिविधसुषकेरा एहदृढनेमसत्यममजानू ग्रपरनकछूग्रपनेमनग्रानू ९३
जवतेंईसचरननतवपरस्यो जगततुछछोईसमदरस्यो ईसरमायातेमुदलहई जासुचरनग्र
जग्रादकचहई ९४ रमारीनृग्रवसरजवकाहू ताहिहोहपदपंकजलाहू सनकादकचाह
रजधूरी. धन्यगोपकाहरिपदमतिरूरी ९५ दोहा सोउपदकंजनसर्वदा कोउसकतनलह
जानि सोपदपंकजपरसहमतुमलीनीहितमानि ९६ चौपई हेग्ररन्यजनप्रियजदुनाथा त
वपगपरसतहोहिसनाथा छूवतचरणहमकहवलवीरा तुमवढाहियसुषगेभीरा ९७ तेहि

मनतैनहिजगतगोसाई लगततुछसवनरसमुदाई जघपिरमावसैउरमाही. विनासवति
कौवासतहाही ९७ एहितैचरणरजचाहनघोरी वसतसंगसेवनकहहौरी मत्यसहिततु
लसीहतिवसई कछुविसेषरसपरमहलसई ९८ एहतैचरणकंजरजचाहै सवतिरोषन
हिचितअवगाहै जासुकृपाचाहतअजआरी सुरसुरेसजोकोऊ स्रुतिचारी ९९ करहिम
हातपअतिमनलाई चहहिकदाछकरैअवगाई सोलछिमीपदरजनितचहई तिमितव
हमसरणागतिअहई १०० छंद तवसरणहमइयहरणप्रभुतवभजनआसालाइकै तं
जिगेहिपरिजननेहपतिपितुलोकलाजविहाइकै १ तवमंदमुसकनिसहितमुषलषि
छप्योमनसिजआइकै अनिदुषितहमकरकृपाजदुवरकिंकरीकरुचाइकै २ सोही
निजपतिकहुतुमत्यागि दासीकाहेहोउतुम इनमनकाहेपागि जौकहाचित्रसेकहियः ३
चौपई नहासुनियपहवचनहमारी हीनवंधुहेकृष्णमुरारी कुटिलअलकआवृतमुषसो
हनकुंडलश्रीकपोलजुगमोहन ४ अधररसुधाधरछविरसछांके मंदहासजुतंचित
वनवांके नेहलालतववदननिहारी मोहगईहमवामविचारी ५ पुनितवसेससरसभु
जदंडा अभयकरणदुषदलनप्रचंडा श्रीसुरदानवछसुषमानी सोलषियेरजवालिलो
मानी ६ विनामोलतवहायविकानी मनदैतुमहिहियेअकुलानी करियकृपालजगत
जनजानी हमैअवलपुनिनिपटअयानी ७ देषिधामछविवदनतिहारे होहिकिंकरीए
हितेपारे जारकर्मनिंदतयहआही नाहिगहोकिमितुमचितचाही ८ जौकहाचित्रसैसेतु

100A

मकहहू तौमम वचन अवणपुटगहहू लाजजातसवताहिगवाई ऐसैगोपकावचनप
ठाई ९ छंदः हेनंदकुमारागुनआगारा जवतुमवंसीनदकरी कलपदवहगानापरूजे
हवानाकौतियंगनहिधर्मटरी १० अतिसुभगसुप्यारोरूपनिहारोत्रिभुवनछविएकधा
वहरी तेहिलषिद्विजधेनूद्रुमकुलऐनूपुलकिततनोरुहवकतपेरी ११ सोरठा देषिरू
पतवस्याम पसुथावरगरगरभए हमहियव्याप्योकाम कहानाथअचरजभयो १२
चौपई व्रजकेव्रजनहरनकेहेतू प्रगटभएतुमकृपानिकेतू आरिपुरुषजिमिसुरूपुर
पालू अषललोकपालकगोपालू १३ आतेवंधुआरतजगजानी ममउरोजसिरधर
निजपानी जानिकिंकरीहोहुकृपालू हरउकामरुजतापविसाला १४ हेन्रपहेविधकरू
णवानी सुन्योकृष्णगोपनिसुषदानी जवजोगीसईसभगवाना रमनकाजमनधस्यो।
सुजाना सुदयहृदयहरिहसहेभूपा जदपिआतमरामसरूपा तदपिगोपिनिसहज
सुनेहा रमतभएसवसुषनिधकेहा १६ तेहिछनतेदसुअनअतिसाह्यो हसिकरपुनिगो
पनमनमोह्यो कुंदकलीरदअवलविराजी कोटिमारिदुतिलषितेहिलाजी १७ पिषकटा
छलषिप्रफुलतगोपी कनकलताजनओपनओपी ताहिसहितहरिअतिदुतिराजे उडुग
नजुतनिसेसछविछाजै १८ अतिउदारलीलागिरिधारी कोटिअनंगरूपविचारी गा
वतआपुगवावततिनहू विचरतवनमंडितकरसवहू १९ सोभतभयेकृष्णभगवाना
मायावीवईश्वरप्रभुजाना वनताजूथजूथवहुभाती लियेसंगगेपुलिनसुहाती २०

दोहा गोपनसंगरमैसततवरमतभएतेहिठाम तरूएनतनयकेपुलनमहिहिमसतासु
षधाम २१ चौपई सीतलमंदसुगंधसमीरा परसततियगनसुषगंभीरा देषिपुलनअ
तिसुहरदाम्ह रमंतरमावतमैसववाम्ह २२ तिन्हहिअनंगवढावनहेतू परिरंभनकिय
कृपानिकेतू कंजपानपरस्योसवअंगा पुनिकुचपरतउरगअनंगा २३ पुनिपरिहा
सवचनकहेआहू करजपातछतगतसंनाहू पुनिक्रीडाकरिविविधप्रकारा वंक
विलोकनहसनिउदारा २४ नीवीपटकरसिथिलसुजाना ऊरूयलदलरूपनिधाना
एहिविधव्रजवनतासनमानी कामभयोउदीपनजानी २५ रमतभएतवतिनकेसंगा
कृपानिधानतापकरभंगा कामवितनंताहिरमाई क्रीडाकरतभयोजदुराई २६ कृष्ण
चंदतेलहिसनमाना उपज्योहियमहि.कछुअभिमाना रूपगर्वअतिसैतेहिभारी मा
न्योहमसमकोजगनारी ॥२७॥ दोहा ॥ देषितासुसोभाग्यमद गर्वअधिकहरिजानु सोउप
समहिततहिछनअंतरहितभगवानु ॥२८॥ सोरठा ॥ दोहादसअरुचारि सुभगसोरठाआठ
भनि छंदयुगलसुषकारि उनतिसकेअध्यायमह ॥२९॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशा
मस्कंधेभाषानिवंधे एकोनत्रिंशतमोध्याय: ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ विरहतापअतिघोर गोपी
हैसववावरी कितगएनंदकिसोर वनवनपूछहिद्रुमलतनि १ यहसवकथाअनूप
कृष्णअध्यायजुतीसको तामैसवसुषरूप मुनिकहहैनरराजप्रति २ चौपई अंतरहि
तजवभेभगवंता गोपिनिनहिदेष्योजवकंता महातापतापतभरनिवही जिमिजगपति

101A

चिनुकरनीसवही ३ गतिअनुरागमंदमुसकानी चितवनवंकभ्रगुटिमुखकानी सुभगअला पअवणसुभकारी अपरविलासतियनमनहारी ४ गतितेआदिरमापतिकेरी जाहिदेषि सवहैगईचेरी तनमयव्हैप्रमरागनतवही कृस्नकह्योलीलासोईकरही ५ गतिदृष्टिन भाषनमुसकानी पीयकेजेजेकर्मकहानी सवआविस्थहैमनजाके तनमयहैगईसु धनहिताके ६ कृस्नसरसक्रीडासुषरासू करतभईसवहासविलासू मैहोकृस्नदेषि रीगोरी कहहिपरस्परमिलएकठोरी ७ पुनिमिलगोपवंदएकठामा गोविंदगुणगामें अभिरामा करैपरस्परकीरतसुषधामा गावतभईउच्चसुरवामा ८ वनतेगहनअपर वनजाई षोजहिपियकहिमनषकुलाई जिमिवाउरकहतनसुहानी तिमिगोपनकी। गतिभईजानी ९ दोहा पूछहिवनवनद्रुमलतनिकृस्नकहुदेषि हमहिवतावहुवेगि देतुमकहपुन्यविसेष १० सोरठा जोप्रभुसवघटवास पुनिवाहरसवतेअहै वोमस दिसंसवपास तेहिपूछेउनमतदव ११ चौपई हेअस्वस्थकृस्नकहूदेषे हेगूलरितोम तौनहिपेषे हेवटक्योचुपव्हैरहेसाधू उपकारीगुनसंतअगाधू १२ प्रेमविलोकनमद मुसकाई गएउचोरचितिकितेकन्हाई कुरुवरअसोकनागपुनिनागू कह्योनक्योंचंपक वडभागू १३ रामानुजमाननमदहारी मंदमुसकिचितवनिमतिहारी गएइतेव्हैदेहुव ताई वोलतक्योनरह्योचुपलाई १४ हेतुलसीकल्याणसुषारी सदाकालगोविंदपिया री अलिकुलसहितधरतिनिततोही देषेउकितउवतावनमोही १५ हेमालतहेजाहीजू

श्री भा
१०२
102

ही अहो मल्लिका के गुन जुत तू ही देख्यौ है तुम कुअर कन्हाई पानि परस तुम कहु कियौ आ
ई १६ अति प्रसन्न यातें तुम सब ही कित गए बेगु मकहौ न हम ही पुनि फल कारक वृख्यनि
हारी कृज हि तिनहि जानि उपकारी १७ छंद तेहि जानि उपकारी सबै मिल लागी पूछन ना
यका हे अम्र पनस प्रियाल जंबू बकुल बिल्व सुहायका १८ हे असन अर्क कदंब सोह
नी कदंब सुषदायका जे अपर पर हित जन्म भू परि सरत तन रस वलायका १९ चित चो
र नंदकिसोर परम कठोर बिन एव सत तीरथ के महा यातें न एक कछु कहत हम सो चलहु
पूछें अपर ही २० दोहा हे छिति तू अति तप कियौ तो सम अपर न कोइ धर्यौ चरन एन तव
पद्मिपर पुलकित वत न होइ २१ सोरठा भयौ तनो रुह तोहि हरित तन एन दिक व्याज क
रि नव तन अति मै सोहि पद परस्यौ चितचोर को २२ चौपई हे छिति सपद परस पद कंजा
भयो तोहि मुद अतिसै पुंजा कै वामन पद परस अनूपा भा मुदितो कहए हि अनुरूपा २३
कै वराह वपु सपरस कीनै भयो हरष तोहि मै लषि लीनै बिनु परसे अस हरष न होई
निसै तुम रेषा हरि सोई २४ यातें हे हु बताइ सभागी नंदकिसोर चोरि पद लागी लषि मृ
ग बधु निरषि अति सोहन अति प्रसन्न निज निज पति गोहन २५ कृष्ण दरस सै भव मन।
आनी पूजन लगी तिनहि मृदु वानी हे मृग बधू सुभ गानन तोरा देषेउ नंदसुअन चित चो
रा २६ तव समीप कहैं निकसें जब ही देष भयौ तव दृग सुष तब ही एक प्रिया संग गे है ता
सु संदर मुष अंग तन सव तासु [illegible] कुंद माल पिय कुंठ लला मा अंग संग जव किय इति।

वामा कुचकुंकुम जुतसम्पासोऊ अतिसौरभता कीयहुजोऊ २८ सोहा अतिसौरभजुगगंध।
मिलहतिपाईहमश्राजु पियप्यारीहेय्योहगनिकहेउकरहुकिमिलाजु २९ चौपई अतिफ
लभारूनमिततरूदेषी पूछहितिनहिजुवचनविसेषी हेतरूप्रियकहहकस्योप्रनाम्रू अभि
नंदहोतुमकहहुघनस्याम्रू ३० प्रणयकुरांछकोरतुमपाई सुमनव्याजरोमांचलषाई पियाग्र
सभुजधस्योमुरारी इतरपानवनरूहसुभकारी ३१ तुलसीमालकंठहरिकेरे तेहिसौरभ
मद्छकेघनेरे आलिगनपिरतमुहतइतजाही सोइसुगंधयोजतचितवाही ३२ आमसि
बीवालीहरषाई हेसषिएसवलतासुहाई इनकहपियसपरसभाजानू पूछहुइनक
हकरसनमानू ३३ निजपतिसंगतिकरहुरषानी दुर्घटसंगतासुकरजानी निजपति।
आलिंगनइनधारी अहोभागअतिसैसुषकारी ३४ परनिश्चेजान्योअसजाई हरिनषप
रससलइनपाई अतिपुलकिततनसुभगसुहानी निजपतिसंगनअसिसुषमानी ३५ नि
जपतिआलिंगनकियतिनहीं किमिक्कहिहेतनव्यानजिनहीं एहिविधगोपीवनवनजा
ई तरूदुमलताघूछसमुदाई ३६ जिमिनरकहहपूछैकोऊप्रानी तिमिथावरकहइनकहवा
नी योजतकायरषितभईनारी तनमयव्हैगईप्रियमहप्यारी ३७ छंद व्हैगईतनमयप्या
रपियमैमैसुधनहीवपाकीजिन्है नवलगीहरिअनुकरणकरवेकियेप्रभुअनुभवति
न्है ३८ एकहतनाप्रमरामईएकताम्व्हैकुचपरगही पयपिवनलागीअधकप्रियक
रिमनहुवालकपुरसही ३९ इकतौद्धैकररूदनभारीसकटइकनारीभई हतिपारसक

श्री भा
१०१०३
103

टविदारिइतिउतडारमूपरसोरई ४० एकनारिस्यौंमासुरभई एवस्यामह्वैवैठीतहां ति
नहस्यौताकौंग्रापुतवही व्यौमजिमिवलियौंजहां ४१ जेव कंठरोक्यौतोकनैतवगिस्यौ
छितिपररिपुमहा एकवामवालकतनसह्वै निजपनिपरगहैंचलुतहां ४२ दोहा वलीघु
टरूवनवालज्यौधुनसुननूपरकानि हसतकिलकपुनिपुनिहसत चलतिवहुरिहरिमा
न ४३ सोरठा एकभईघनस्याम एकवामवलिरामह्वै इकवछरूभईवाम एकचराव
तग्वालह्वै ४४ चौपई भईवकासुरतहएकनारी अपरतनेसुतह्वैतेहिमारी अपरभई
सुरभीतेहिकाला एकभईतहमोहनवाला ४५ दूरधेनुजिमिटेरतस्याम तिमिवंसीरव
टेरयौवाम सुनतधेनुधाईतहांआई अपरप्रसंसाकरतवनाई ४६ साधुसाधुधुनि
सुंदरकीनी इमिएककहतभईरसभीनी एकएकअंसनिजभुजधारी कहतमेरइहसि
अहेमुरारी ४७ महावलीगजमत्तसुचाला जिमिहरवदेख्यौनेरत्ताला भईवामइकुगि
रधररूपा गिरधरकहैंसुगिराअनूपा ४८ वर्षावातत्रासजनमानू मैंसवव्रजकौंकान्यौ
त्राणू एकभुजानिजपटलपटाई कहतभईइतिआषहुभाई भईव्यालएकनंदकिसोरा
मस्तकचढहुसवमलसिरतोरा चढीसीसकहवचनकठोरा निकसइहांतेअहिवरघोरा
षलदंडुनाहितधरेउसरीरा नृप्रवृजाहिरवछहोइनीरा ५० हैनीरसुछपवित्रतूंज
विकल वजाइदंततैवेगहीं एकअपरगोपीह्वैकहलषहुपावकघेरहीं ५१ ह्वैहसवोलीनैन
मुंदहुछेमतुमपैहोसहीं करछिप्रपावकपानितिनकौंअभयकियहसकैनहीं ५२

103A

एकभईनारिगोपालतेहिवनवांधिएकजसुराभई भयमानतेहिकरिनैननीचैोलषितभूक
रुएतमई ५३ एहिभांतिवहुविधललनातरुम्गभूमिकहपूछतचली देष्यौकाहूंचितचोरहम
रीकहोसोवानीभली ५४ दोहा एहिविधयोजततहांसकहवनवनगोपीदीन भूपरिदेष्योह
रिचरनअंकितजलरुहकीन ५५ सोरठा हेसषिनिस्चैजानु यहपरनंदकिसोरके अंकुसा
असनिप्रमानु गयोइतेहूंचोरवह ५६ चौपई लेपदषोजचलीवहनारी जोहिपघगेतियसहि
तमुरारी देषिवधूपदसवअकुलानी कहनलगीआरतआरतअतिवानी ५७ कोनसंगयह
गईजुप्यारी मिल्यौजासुपगछितिपरधारी हेसषिकैौनगईहरिसंगा अहैोभागपरस्योनिज
अंगा ५८ जासुअंसभुजधस्योललामा कहांरेवसवसुषकेधामा विहरेएकाकीहरिसाथा
अहेतासुपरमईसनाथा ५९ अंसधरतइमिहाथसुहाए जिमिकरतोडभराजहिपाए निस्चैद
नहरिपूजनकीन्हा हरिईस्वरभगवानहिचीन्हा ६० जासुप्रन्यवसहरिआधीना हमहिंत्यागि
ताकोसंगलीना रहसिलिएविचरैचितचोरा धन्यसषीवहहरिचितचोरा ६१ धन्यधन्ययह
हरिपदधूरी सकलकामदायकगुनभूरी धरतसदासिरअजअरुईसा रमाचाहनितधरनि
जिसीसा ६२ भजहुयाहिसवमिलहेआली याहमभेपाइयवनमाली पुनिआगेपघचलत
विलोकी अपरसषीकहवचनविसोकी ६३ छंद यहपदलषुआलीममहियसालीहेवाही
केजानुसही हमसवनिविहाईहरिसंगजाईसोभोगतजाकहचितगही ६४ गोपनिकोसरवसहरि
कैवरवसपानकरेइकलीसवही अच्युतअधरामृतपानरसासवमनतमईतिवही ६५ दोहा

कृत

श्री·भ
द १०४
104

हमकहरोषनहोतिलखिजोइकलौपरहोइ बीचबीचपदनिरखिसखिछुभितकरैमनसोइ ६६
सोरठा आगेचलिपुनिदेषि बिनुललनाहरिपदलषे छुभितभईजविसेषि कारनलगीअनुमा
नचित ६७ चौपई अतिरमनीयअंब्रितलदेषी तरुणअंकुरमूलब्योविसेषी लहिउठारअं
सधरताही गएइनैदेषोरीवाही ६८ अपरलषैआगेजानाई बोलीइतिदेष्योरीआई वधूअं
सधरखल्यौकन्हाई भयोनिमग्नधूरयहमाई ६९ साहसदेखिसखीकामीको पगिगडगए
उभारगामीको देषहुइहाउभारोवाही सुमनहेतुहरिपैचितचाही ७० प्रियहितसुमनचुनैउ
एहिठामा देषहुरीकोनकएहिवामा ऊचीलतापहुचनहिस्यामा यातैलगेउप्रपदअभिरा ध
मा ७१ देषहुअरधचरणएहिठामा एहिविधअपरकहीएकवामा कृस्नजानुविचवैठी
नारी देषहुरीयहचिन्हनिहारी ७२ प्रियाकेसनिजकरिनिसुधारी सुमनजुक्तएहयलगि
रधारी निश्चैइतिवैठेरीदोऊ चरणचिन्हउघएसेहितोऊ ७३ प्रियाअलेक्तकरप्रियआ
पू ताहिभयोसुषहमहिकलाइ जगतईसकौईस्वरसोऊ पूर्णकामचाहनहिकोऊ ७४ स
दास्वतंत्रआतमारामा ताकोसंगरहेहरिवामा जोकोउसंसयकरैवनाई तासनकहतगिरा
समुझाई ७५ दोहा कामिनिकीअतिदीनितातियगतिअजिसैघोरि सोइहरिआइवेकहुरमेति
यसंगनंदकिसोर ७६ सोरठा एहिविधजुगपरदेषि गोपिनकेमनछोभिअति नहिकछु।
रोषिविसेषि पुनिआगेघोजनचली ७७ चौपई हेरतपतजिगोपीगनस्यामा एकसंगलै
गेसुषधामा ताहिवढ्योअतिहियअभिमाना मोहिसरसिकोउनहिंआना ७८ ललिना

104

अमितन्यागि एकमोही भजे स्याम सुंदर प्रियजोही बोलीगर्वसहित वहवानी चालिनसकौमेहेसु
वषानी ७९ जहांहोहतवमनवलवीरा लै वलुकहहमिकहतिअधीरा हरिहंसिकहे उगिरासुनि
वाकी भईरूपमदसौंअतिधाकी ८० वहहुअंसमोरेहतिआई सुनिउधमभईसोसुषपाई ह
रिअंतरहितह्वैगएतवही चढिवेकहआईवहजवही ८१ तवअतितापभयोनरपताही एकाकी
वनतनिगेजाही तववहतापसहितकहवानी हाहाकारअतिसेअकुलानी ८२ अहोनाथ
हरमनकृपाला कितगएहेगुनभुजाविसाला जानिकिंकरीमोहिजदुनाथा हीनजानमोहिक
रहुसनाथा ८३ निजसमीपआनहुप्रियमोही मनवचप्रियजानौएकतोही हरिपरशोज
नवीसवआई देष्योसवनिविलषिजेहिठाई ८४ प्रियतेविछुरदुषितअतिहीना वदनसरोअ
तिवदनमलीना पूछैसवनिकहीउनवाता पायोमानगर्वजेहिताता ८५ छंदः पायोजिमि
मानाहरिसनमानाअपमानासोसकलकही सवनारिसयानीसुनियहवानीविस्मह्वैसवमौ
नरही ८६ तांकौलैसंगातियवहुरंगापुनिवोजनकहुंपंथगही गईसवसकुमारीगहनमं
झारीशशिकरिजहलगिजातिलही ८७ घनतिमिरजुआवापंथनपावाथकीतहांसवव्रज
नारी करिनागरध्यानापुनिगुनगाना तासुवचनकहसुषकारी ८८ मननामहिहीनाभई
अतिदीना भूलीतनसुधसुकुमारी तहतेव्रजवामाफिरअभिरामा पुलिनगईप्रियहितका
री ८९ दोहा कालिंदीकेपुलिनमैंवैठीवामप्रवीन मिलिकैसवगावतभईकृष्णभावमनं
लीन ९० सोरठा कृष्णआगमनचाहिपुनिपुनिगावहिकृष्णजस जिन्हैनकछुसुधआहि

देहिगेहिंपरिवारकी ॥ ८९ ॥ सोभूलैसबबात जाहिलगेहरिरंगरस माततातसुतभ्रात मानहुरं
गपतंगसम ॥ ९० ॥ रामकृपाजनसहोइ जानैहरिरसस्वाततव जगविसरैतबसोइ विनुजानै
नहिमबमिटै ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ सुभगसोरठानबकहे अरुनवछंदबषानि कहेंआठपुनिदोहराको
यातहासुषदानि ॥ ९४ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषानिबंदे कृष्णविरहेण
व्याकुलगोपीकृष्णअन्वेषननामत्रिंसोध्याय: ॥ ३० ॥ दोहा ॥ एकत्रिंशकेध्यायमहि गोपीतज
सबआस फेरिपुलिनमहआइसब गुनगैहैहरिआस १ सोसबयामहबरनहै श्रीशुककृपा
निधान जानुभागवतराजरिषि चहतपरमकल्यान २ ॥ चौपई ॥ हेप्रियजबतेतुमव्रजआ
ए तबतेजयतेंअधिकव्रजछाए बसैरमातेहितैइहठामा तुमजन्मेजेहतैसुषधामा ३ व्र
जकेजीवसकलसुषकरही तवजनमइहबगोपीभरही हेप्राणेशप्राणतवहेतू धारदही
हमकृपानिकेतू ४ एहितैंअगरहोअमनाथा हीनजानजनकरहुसनाथा वनहिसविरिस
सकलहमहेरा तुमहिनाय अवलाएहबेरा ५ हेहुरसहेजगतउज्यारे गोपीजननैनकेता
रे षोजहुवनवनहमनेहिकहेऊ किमिषोजोकाचिततुमचहेऊ ६ इमिकहतिजोकहेकन्हा
ई तहांसुनहुमहवचनसुहाई बोलीअपरसषीमदुबानी सुनियेनेहसुअनसुषदानी ७
सरदसरोजअरुणअतिलोने विकसतिछबिभीतरजासिहोनै तेहिछविसरसनयनजइने
रा लषिसबगोपनकहिसुषकेरा ॥ ८ ॥ छंद ॥ सुषकंदनवमुषचंदलषिवहनयनसरहियला
गियो विनुमोलदासतवदृगवधुकरेविनिवहैसरमनबाकियो ९ हेवरदवरगिरधरननागर

105A

विनहिंगयदासीभई तवदछिअपहतप्राणयहहमरैहिंतुमलीजौरई १० दोहा जौनलेहुतु
मप्रभुप्राणनाथसुनिवैन होहुनयनगोचरअवहिंनिरषिहोउचितचैन ११ सोरठा कहतअ
परसुषवैन वहुतठौररछाकरी तुमजनकहसुषअैन अवकिमिमारहुमारमिस १२ चौपई
विषजलतैराषेउतुमप्राना ब्यालअघासुरहतकल्याना वरषावातअनलतैराषी अमसनिपा
तसंकानहिंराषी १३ सुनिअरिष्टतैराषेउनाथा ब्योमासुरहतिकियेउसनाथा कालीआहि
अपरजेहेषा तिनहिंनासनिजजनतुमपोषा १४ अवसुधलेतनकोनैहेतू मनसिजदुषहरि
कृपानिकेतू जगपालनहितधरअवतारा निजतनत्यागिनउचितउदारा १५ मैंजसुदासुत
अवएहिंठामा जगपालेऔरैअभिरामा जोकहाचिकहियगोसाई तहांसुनौममवचनसुहा
ई १६ हेप्रियतुमजसुदासुतनाही सकलवुधसाषीहियमाही सोकिमिफिरैप्रगटभूमाही ल
षैसकोउकैसेकरिवाई १७ जोकोउइमिभाषैकरसंका साषीलषिनसकैनररंका तहांसु
नौअजपूर्वकाला जाच्योतुमकहदीनदयाला १८ भू[illegible]भारहरनिकेहेता प्रगटभएतुम
कृपानिकेता तवयहसात्वककुलकियेपावन प्रगटेतुमजनदोषनसावन १९ छंद जनदो
षनसावनहेमनभावनपावनजसतववेदकहै हेजदुनंदातवपदकंजाजेभवभयलषिआ
नगहै २० तिनभयनासीसुषलहरासीकालनताकीओरचहै हेकंतकृपालाजेहिंकरिला
लागसोरमाकरकामदहै २१ सोपानिसरोजंमषनमनोजंममसिरधरिहरिपीरप्रभो हेवी
रकृपाकरिसवसुषआकरध्याननहरसयषारविभो २२ हेवजदुषहारीजनसुषकारीत

श्री॰भा॰
६॰२॰६
106

वमुसकानी प्रवलमहा गोपीमदहारी पुनिहितकारी प्रगटो अवदुषवहुतसहा २३ दोहा ना
थजाननिजकिंकरी प्रगटहो उभ्रीकंत जलरुह आनेरदे बितवसुक्कतलहे हमकंत २४
सोरठा तवपदपंकजनाथ प्रणतपापहारीसहा अघहारीपुनिनाथ सोईगेयनपीछेफिरत
२५ चौपई अतिसुंदरपदकंजतिहारे मुनिगनभंगवसततिनितिसारे पुनिअहफणअरापितसो
इचरण ममकुचधरहुवेगिदुषिहरिण २६ कामतापतापितवहेतू हरहुव्यथासोइक्कपानि
केतू कमलनयनहेकरुणाकंदा मधुरगिरातवसोइजनुफंदा २७ अतिगंभीरवचनसुव
श्रवण मोहितसिगरीहमव्रजरमना भईकिंकरीतवआधीना अधरामृतप्यावहुप्रवीना
२८ तवविहारनलप्रवलप्रतापी सोइसवगोपीजनकहव्यापी मरनयोगइमसवव्रजना
री भईकथामेयजहितकारी २९ कोउजनकतोहीनचितवाही राषेउप्राणदयाकरवाही
तवगुनकथाअमृतसुषदायक तपतजीवकहतापनसायक ३० हिविअमृततेएहगुने
भारी अषिलमहाअघहोवविहारी तवपदचरणकमलकीछाया दुषनहिव्यापिहेजदु
राया ३१ सोतोसुरपुरमेइकमिलई यहतोविद्युववरनतेलहई श्रवणमंत्रयकरकल्या
ना वहतोवहुमषक्कतकरिपाना ३२ छंद वहुमषक्कतप्रानीलहेसुजानी तदपिनएहि
समआहिविभो सोअतिमदकारीनहिअघहारीकुंजविहारीपाहिप्रभो ३३ तवगुणगनरू
पासुधाअनूपा सोतिसवैगुनहेतिहरी सोतातनत्यागेमिलवरुभागेयहइतिएहितनभो
गभरी ३४ जेतवगुनगानासुधाप्रधानागावहिभुवितेदानमहा तवहुसुषदानीकरिह

106A

षहानीजीवनकौगतिरैनबहा ३५ जेसंततगानाकरहिंसुजाना तेउअपिधन्यजुवेदकहा
तेतुमहिंनिहारैपलकनपारै तिनिकीसरितौअपरगहा ३६ दोहा एहिंतैहेकरुणानिधेह
मविनवैकरिजोरि दरसदीजियैनाथअब एकहमैगतितोरि ३७ सोरठा सुनीकथातुममोरि
द्वैनिचलतअवजाहुघर जोइमिकहहुबहोर तहांसुनहुपियवचनमम ३८ चौपई वालीअ
परसखीमृदुवानी सुनहुनाथवजतियसुषदानी तवलीलामनमोहितहमारा सुनिगुनकथ
नसांतिनहिधारा ३९ तवमृदुहासप्रेमजुतवानी वंकविलोकनिसवसुषषानी तवविहार
मंगलकौमूला रहिसवचनसुनिरहैनसूला ४० हेकपटीकरिकैसंकेता अवलात्यागे
विजननिकेता हमसवतुमसौंसुहृदकराही तूकेहिकारनकपटगहाही ४१ अपरकहै
हेकंतसुजाना वजनैपसुलैकरनपयाना कमलहुतैकोमलपदतोरा तृणअंकुरछितिक
ठिनकठोरा ४२ चलतकलेससहोतजवतुमही तवचितविकलहोतितियसवही हमतवइहि
संकितएहिरीती अतितुमनिठुरत्यागिहियप्रीती ४३ अहोवीरसंध्याजवहोई आवतवज
तवमुखहमजोई कमलवदनकुंचुतघुंघरारे सौरभगौरजजुतअतिकारे असिमुषपुनि
पुनिहमहिदिषाई मनसिजहमकहदेतवढाई नहिसंगतकवहुतुमदेहु एहतेतुमकपटीग
तिनेहु ४४ दोहा अवसवकपटविहायतुम करहुकृपावलवीर मोगहिहमसोदेहुहरिनि
यगनपरमअधीर ४५ चौपई तवपदप्रणतकामदाता रू इजनश्रीकरसुषनिधसा रू अ
जहजेध्यानपुनिजाई छितभूषनकविजनकहनाही ४७ ध्यानमात्रआपदसवहरई अहो

श्री·भा
२०७
107

रमनपरंगुनस्तुतिकहई सोईपदकंजअरोजहमारे धरहुनाथहमसरनतिहारे अपरकहेहँ
नेहकिसोरा कितहूँरहौनारिचितचोरा निजअधरामृतहमकंहदेहु मनसिजतापवेगि
हरिलेहु ४९ रतिवर्धनअधरामृततोरा घोरसोकनासकवरजोरा वेसीकरउंविनमुष
रासी नाहिअमृतवासिनमधुरासी ५० अखिलभुवनसुषलपलममाही कवहुकपरसत
होहिजवजाही एहितेवेगिदीजियेमोही अधरामृतविनवेहरितोही छनभरिहरसहोइ
नहितोरा कल्पकोटिसमदुषमोहिघोरा छनभरिआननदेषियजवही कोटिस्वर्गसुषपा
वहितवही ५२ छंद हमनारिअधीराजेजइवीरा जवतुमकाननजातहरी तवतोहिविन
देषेजुगसमलेषेएकछनमहिअतिपीरपरी ५३ पुनसायंकालाजसुमतिलालातवमुष
ले · देषीपीरटरी अतजडमतिमंदाकमंजअंधानिरषनडिगनहपलककरी ५४ हेप्रभुतपाव
नसोकनसावनसकलत्यागिनवसरणगहो पतिपुत्रविहाईसजनसाईआनवंधुतजिनात
नहो ५५ आईतवपासातजिसवआसा तवआसाचितचाहवही हमसुनतवगानाचितअकु
लानाधुनपघदतिआईसवही ५६ दोहा तुमसेसुठकोऊअपरनहिहमदेषेजगमाहि हम
अवलामहघोरनिसिचलआईतवपाहि ५७ सोरठा चलिआवैकोउनारि ताहिनत्यागह
श्रम पुरुषवर जद्यपिहोइगवार नहिकोऊतोहिविनु ५८ चोपाई जोतुमत्यागिकीनिहरिमोरा
कर्वहरसकियोहमतोरा सोईयहरोगभयोहियभारी तासुउपाइएकनिरधारी ५९ भेष
जतासुहरसतवआही सोईहमकरिहेअवचितचाही रहिसविचारवचनतवगूढा सुनि

हियमनसिजभएउअरूढा ६० मंदमुसिकअविलोकिनतीषी सोइअनेगसरउरहंतजी
षी लषिविसालउररमानिवासू देषिहेविअतिहियेहुलासू ६१ मोहितसकलभईव्रज
नारी वदनकंजसुषमदनिहारी व्रजकेजीवनहौलगिजेते थावरजंगमहैवहुतेते ६२
सवकेदूषहरिवेकहहेतू प्रगटभएतुमकृपानिकेतू अषिलविस्वमंगलकेहमूला तव
आगमनमिट्यौव्रजसूला ६३ आरतजनकीआरतहरना मातेसरनगहेतवचरना या
तेतवआसामनभारी सोइएकरोगभयोगिरधारी ६४ सजनरोगकरिकृपागोसांई रंच
कहुमिटैसुषदाई स्वजनहृदयरुजकोउपचारा तुमजाननहोवहुतप्रकारा ६५ दोहा
अतिधर्षितमनप्रेमवसरुदनकरतव्रजनारि वोलीकरुणाकरगिराहीनवंधुउरधारि ६६
चौपई हेप्रियतवपदअतिसुकुमारा सोहमजाननहैनिरधारा कठिनउरोजजानतुममोरा
धरतसंकहियधरतनथोरा ६७ सनैसनैप्रियतघरहेरहे नाही हमहियकेदारदयानहिमा
ही सोइपदकरजवतुमवनजाहू गैयनसंगफिरौव्रजनाहू ६८ नवलतृणअंकुरकेकर
कैने तोकरिव्यथानहोइप्रवीने होतव्यथाजनेनहमप्यारे सोकरतवहहियेहमारे
६९ गोपनिकेजीवनधनप्राना तुमबिनुअपरनिकृपानिधाना तववनसुधआवेजव
हममहो महामोहिउपजैहियतवही ७० दोहा एहिविधकरिसवगोपिका विविधप्रका
रविलाप गुणगाएगोविंदके हृदयविरहिकेताप ७१ जेनकेनविधतासपरहोइ
जासुमनलीन सोइजीवतजगजानियोसवसमअपरप्रवीन ७२ सुभगसोरठाचार

ह

दोहा आठवषानियो ॥ छंद सात सुषकार ॥ वरन्यो इक तिसके विषै ॥ ३३ ॥ इतिश्रीभागवते महापु
राणे दशमस्कंधे भाषा निबंधे एकत्रिंसोध्यायः ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ विहरविकल सवै गोपिका अ वं
तिसे हियमई षीन प्रगट होइ है कृस्न तव रे षिना दिगन रीन ॥ १ ॥ वत्तीसके अध्यायमहि वो
धि गोपिका वेद तिन प्रति बहुविधके वचन कहिहै करुणाकंद ॥ २ ॥ चौपई ॥ मुनि कहिहै नृ
प सुनहु प्रवीना एहि विधि गोपी हरि रस लीना विविध प्रकार गाइ गुन नाना पुनि प्रलाप कि
य चतुर रसयाना ३ पुनि स्वसुर रोई एक साथा एक सदा जेहि प्रियजदुनाथा तेहि छन प्र
गटे श्री जदुनंदा महा हास जुत सुषमुष कंदा ४ पीतवसन सुंदर वनमाला मनमथ केमन
मथन कृपाला तिनहि विलोक सकल व्रजनारी उठी सी घुहरषत सुकुमारी ५ जिमि
गत प्राण पाइ अब देहा या होइ सचेत सबै एक साथा तिमि सव तिय गन अति सुष पाई प्री
तम सौ निरष प्रेम हिय छाई ६ कोउ सषि धाइ कृस्न कर किंजा पकर्यो दुहु कर सो सुष
कर पुंजा कोउ सषि श्री भुज परम अनूपा धर्यो निजं सुष रद अनूपा ७ छंद ॥ निज सुषरद अनू
पा कोउ सषि भूपा हरि मुष चर्वित पान लई एक अपर सुभागी हिय अनुरागी तप्त उरोज
न ध्रै घ्रि दई ८ एक अपर अनूपा गर्वित रूपा प्रेम रोस हिय मान छई वांकी करि भौहै प्रेम र
सौ है विविस भई तनन प्रेम मई ९ निज रद छद दंतनि काटि सुनैतर नयन कटाछ निसर निह न
ई एहि विधि अली पी हरि मुष सो पी गोपी सुष निसमूह छई १० एक अपर सयानी हि
य सुष मानी एकटक हरि मुष पानि करै मुषपान सयानी करि सुषमानी ते घायि मन

नहितप्रघटै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जिमिहरिवरएसरोजरस पानकरतकोउसंत ॥ पीवतहोइनतो
षतेहिवढतलोभनहिअंत ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ एहिविधगोपीजानु हरसपाइप्रियनाथको ॥ नो
षनहियमहआनु रूपलाहुदृगलालची ॥ १३ ॥ चौपई ॥ कोउएकअवलापरमप्रवीनी नि
जदृगद्वारहियेहरिकीनी नैननमहरजनुकरयौसमाधी जोगीइववाधासववाधी १४ मग
नभईसरआनंदमाही पुलकिततनोरुहतनसुधनाही सकलगोपिकाहरिमुषदेषी अति
उत्सवहियभयोविसेषी १५ विहरेतापसवनसगेपोआसू सननसंगतिजिमिभवइषना।
सू अघवासेसारीजनकोऊ विदुषसंगकरसुषलहिसोऊ १६ रहिततापगोपीवहुपासा
मध्यकृस्नछविधामसुपासा अतिसोभतभएकवरकन्हाई मनहुसक्तजुतईस्वरआई १७
अघवाकोउकउपासिकप्रानी पाइसानवलिवीरजबानी तिनसवकोलैकृस्नकृपाला जम
नापुलिनगएउनरपाला १८ विकसितकुमरकुंदमंदारू त्रिविधिसमीरतहांसुषसारू ॥ पवन
सुगंधमहासुषदाई चंदनमिलयाप्रगट्योतनआई १९ अलिगनगानकरतरसमाते सरदहचं
दकरसुभगसुहाते जमुनातरलहस्तकरवालू रचितकियोसोपुलनिविलासू ॥ २० ॥ दोहा ॥
ताहिपुलनमहिगोपवृन लेआएघनस्याम ॥ ताहिसहितसोभितभए अतिसैछविसुषधाम ॥ २१
सोरठा ॥ कृस्नदरससुषपुंज अस्योहियआनंदघन नसोहहैरजपुंज परिपूर्णमनकामना
२२ ॥ चौपई ॥ आप्तकामजदपिजनत्राता भजतभएगोपीसुषदाता सोपुनिवरननहेनपपा
हो वसनजासुहियकृस्नसदाही २३ कुचिकुंकुमअंकितअतिजीनो सुभगासुपरनासोरम

श्री·भा·
६६५
109

नौ सोउ तार ग्रासन रचि दीनौ एहि विधि प्रियसन मानु कीनौ २३ तापर वैठे श्री भगवंता
ग्रति सोभित भए तव श्रीकंता जोगी हिय कल्यसु भ ग्रासन गोपी वसन वैठ लैहि सासन २४
व्रजजुवती मंडित चहु पासा ललित लाल लोचन लवि प्यासा त्रिभुवन सोभाजन तन धारी
ग्रसिव पुसु भगसो हिमिगिरि धारी २५ गोपिन सहित हांसद् गिवांके ग्रति विलास जुत प्रभु
मुष ताके एहि विध करसन मानन थोरा वैठी निकट ग्राइ चहु ग्रोरा २६ धर निज ग्रंक कह
रूप दकंजा करि पल्लव परसहि सुष पुंजा परसित मन सिज उमग ग्रपारा निरषत कत्रु सुमुष
वारहि वारा २७ करि ग्रस्तुति रंचिक जुत रोस वोली तियत व कदि सह रोस हे भगवन तुम मक
छिन कठोरा मम हृद दहतु व धावन घोरा २८ ॥श्री॥ एक भजहि जे को उ भजहि तिनकौ ग्रपर
वितु भजु नहि भजै एक भज तेहुं तेहि ना भजै वितु भजे काहु के लै भजै २९ इनचार महि तुम
कौन चतुर सुजान कहहु विचार कै तव हसे नंदकिसोर तियकी चातुरी हिय धारि कै ३१ ग्र
कृतज्ञ नपापी हमै यह जानि हरि वोले न वै हे सषी भजते को भजै ते कहौ सुकृती है कवै ते
परसपर हित उभय चाहत सुहृता नहि नहि ग्रहै नहि सुष नहां रंच कलष्यो नहि धर्म लेसहु
तेस है ३२ दोहा केवलि स्वारथ हेतु ग्रलि ग्रपर न कछु उपकार गो महिषी जिमि पालिवो के
वल पल उपचारि ३३ सोरठा भजहि परसर कोइ तो की गति ग्रैसी लष्यो विना भजे भजु जोइ
सो पुनि उभय प्रकार के ३४ चौपई करुणा जुत एक संत न भजही एक सरल चित भजे जु सव
ही करुणा जुत सुव कह पितु भजई मह मन सो सव कहं नित चहई ३५ धर्म सुहृदता एक स

109A

षिजानू कामुसिधपितुपुत्रवषानू एकमध्यमलघुसषीसयानी प्रभुनतीसरीकहौबषानी ३६
जेभजतेकौभजेनप्यारी तेजगमैनरहैविधचारी एकअहैजेआतमरामा आप्तकामएकअति
अभिरामा ३७ अपरएकअतितसनिदाना गुरुद्रोहीवोघोरनिजाना उपकारीतननपोषनहारा
जनकमभिगुरुसमनिरधारा ३८ यहविधजववहरिवचनउचारा गोपिनसुनिसुषभयोअपारा
गूढभावसवतियमुसकानी तासुभावहरिहियमहजानी ३९ प्रेमभक्तिसवनासिरमोरा वेदउ।
राएसकलतुमतोरा वोलेअपरवचनभगवाना सुनोसषीतुमकामनआना ४० दोहा चारमो
जमहिएकनहिसुनोसषीममवैन कारुनीकमयहदुअतिजगमहिअसिकोउहैन ४१ सोठि
मोहिभजतजेकोइ ताहिभजोनहिहेतुसुन ध्यानवध्यजिमिहोइ तेहितैतिनकोनहिभजो ४२
चौपई जिमिनिर्धनिकहधनकछुमिलई पुनिवहनसहोइकोउहरई ताधनचिंताधनमहु।
होई छुधात्रिषासोलषैनसोई ४३ ऐसेमोमैचितरहतासू एहितेअंतरहितमैवासू मोमेचि
तराषैंकोउप्रानी सकलकामपावैसुषमानी ४४ ऐसेकहप्यारीसमुझाई अपरकहतकछु
कुन्हाई मोहिलागित्यागेउसवकाहूं जुक्तअयुक्तहानिअगलाहूं ४५ धर्माधर्मगनेउनहि
ताही साननेहिसवतज्योनवाही ऐसीतुमनागरसुषदानी मोसनेकिएउप्रेमसुषमानी ४६
सोमेघनभरितजोनतुमही रहेउसंगतवमैनिसिसवही प्रेमलताहिषिनतुमहेतू गुपतभया
मेहुपानिकेतू ४७ विविधविलासकीनवहुभांती सोसवमैसुनिश्रवनसुहाती तुमहिअ
लछतमेसवठामा फिरेउसंगमैतवहेवामा ४८ छंद मैफिरेउजहजहगहनवनतुममोहि

श्री भा०
१११०
110

षोजनकहुचली गुनगानतवमेंश्रवनसुनसुनिभजौमैंतुमकौंअली ४९ मैंकलयाईहीन।
तुमकोंमनअलस्याजनिकरौ तुमअतिसुसीलप्रवीननागर वचनममयहउरधरौ ५० गहनि
गइकाछिनकरोरि जेहितुमतोरिसवमोकहुभजी जगलोकलाजअपारवारषलेषितेहितु
मनहिलजी ५१ ममप्रेमअमितअनेकठौरनिएकचितनहिहोतरी तवदेषिपरमसुसील
तामनमोरउरननहोतरी ५२ तवसाधुकृतउपकारजोवहुकालमैंचाहीकियो तदपि
नप्रतिउपकारसुंदरहोततुमजिमिममकियो ५३ तवसीलगुनतेसषीमोकोंअरिनतं।
हुजानियो नहिकरिसकोवदलौतिहारोरिनीसंततमानियो ५४ दोहा जद्यपिहरिअषि
लेसप्रभुभक्तिवस्यभगवान एहिविधगोपिनसोंकह्योश्रीमुषकृपानिधान ५५ सोरठा सु
भगसोरठाचारि छंदसातएहिमहकहे दोहापंचविचार द्वात्रिंसतिअध्यायमहि ॥३२॥ इति
श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषानिवंधेगोपीकृस्नसमागमोनामद्वात्रिंसोध्याय:
॥३२॥ दोहा ॥ अवत्रयत्रिंसतकेविषैगोपीमंडिलमाहि हरिव्रजतियकहमानिदेरमानरु
मावतनाहि १ चौपई हेनृपसुनिहरिमुषकीवानी अतिकमनीयसुषदरसषानी गोपि
नहियअतिहरषविसेषी आप्तकाममइहरि[मुष]पेषी २ विरहजनतसवजाइविहाई भ
ईसुषीसषिअमिमतिपाई हरिकरचरनपरसव्रजनारी सकलआसिषालहीसुषारी
३ नेहिषललललितनेहसुनतवही रासआरंभकीन्हनृपजवही विपुलवामछविधामप्र।
वीनी नाहिसंगक्रीडामनदीनी ४ अतिप्रसन्नमनजुवतगुनाकर वाहुवंधसवभईपरस्प

110A

पर अनुगतस्यामवामभुजरोऊ मिलेपरसपरअतिसुषजोऊ ५ रच्योतहांमंडिलसुषकारी
नाचितगोपिकाजेहिमुरमारी ललितगोपिकामंदमुसुकाई विहसकलाअनेकछविछाई
६ तहांरसउत्सवअतिकीन्हा जोगाथीसरासमंनरोन्हा जुगललिनाबिचएकमुरारी षेलत
फिरैंहलसुषकारी ७ दोहा ललितस्यामवपुकामछविकोटिकोटिएकअंग तदंनउप मै
दै मासोयहअधकअधकछविअंग ८ सोरठा सबललिनातेहिवाम इतिजानतभईआपुम १
नहमछिगहैघनस्याम यांतेमनआनंदअति ९ चौपई उत्सवलषिसुरगणतिमसाथा चढि
विमानगावैप्रभुगाथा सुरविमानअगनिततनभछाई वरषतसुमनविसावैनजाई १० जेगंध
र्वगानगुननागर गावहिहर्षितजसअमलसुधाकर नूपुरवलयकिंकिनीनादू पियप्यारीमि
लधुनिसंवादू ११ अतिसिंधुनिसवरिसासोहानी रच्योरासमंडिलसुषहानी तेहिमध्यनंदसु
अनअतिसोहत निरषितविवुधतियभईमोहित १२ जिमिमरकतमनिकंचनपासा लहेंअ
धकछविहोहिप्रकासा कंचनगनजुवतीगनवेरा मरकतमनदुतितनगोविंदा १३ द्वैद्वैवीच
एकजदुनंदा सोभतभा अतिआनंदकंदा जिमितेहिसंगललितगोपालू तिमितेहिसंगछ
कीछविवालू १४ छंद पगधरनगतिअतिन्रतमेदनिचलनकरवरचातुरी मंदमंदहास
विलासभ्रकुटीनमितकटिलघुआतुरी १५ सुभचलतकुचिपटललितकुंडल हलितउर
वरहारहैं अतिसुभगगोलकपोलजलकनिकवरिसिथिलसुसारहैं १६ मुषकंजपरस्र
मविंदुराजतमुलीरसनासोहनी एहिभांतिन्रत्यतगोपिकाहरिसंगकरिअतिमोहनी १७ त
हविविधरूपअनूपकेशवजलदवपुसमसोहनो तहगोपिकासवनडितदामिनभईखेदकन

श्री॰भा॰
६१११

फूलहीमनो १८ दोहा गावनमहागरजतमनहुँ रासरसकघनस्याम ताहिवीचअतिसेलसीरास
कृपाक्रजयाम १९ चौपई ॥ नृत्यतजहँसंबसुषमसयानी नृत्यभेदगुनअगनितषानी गा
वहितहांमुदितमगनेनी तालभेदसुरगतिसुषदेनी २० अतिप्रियलसतसुलतगजगेनी
पदकमलतचरनकंजमनुरवेनी पंचमरूषभमिषादवषानी अरूधेवतगंधारसुजानी २१ मध्य
मषडजगसस्वरमाती प्रियागानकियअगनितभाती परसत्कुमवपुअभिअभिरामा वामभ
ईसवपर्लीयकमा २२ गावतनरतातेहिसंगा मर्छीपरयोजेहिदेषिअनंगा मंदमंदधुनवेनुसु
हानी जासुनिअगजगमोहितप्रानी २३ जाहिगीतकरिसवजगहरा सुगलकिसोरमोति
अभिरूरा सवैसषीवरवयसकिसोरा सवैमदनकोटिकचितचोरा २४ तिनमेएकअतिप
रमप्रवीनी गानकियोपियसंगरसभीनी मिलतहोइस्वरतालननासु ऊंचेकरिधुवताल
विलासु २५ प्रीतमपीतसहितरंमाना तासुकियोअतिसेसनमाना साधुसाधुकहिकरसमु
मारी सुषउपजायोलषिनिजप्यारी २६ कोउसषीआइरासश्रमयेरा निकरकरसमुषल
षिमुतम्बरा वलयमल्लिकालिपलसुनामु निजअसनिपियभुजधरिअसु २७ विरह
जनतसवतापनसाई अतिआनेदउमगअधिकाई जैसैतपोजीव॰॰॰सेसारी हरिजन
संगकरैभवभारी २८ छंद अतिउमगअतिआनंदकोउसषी अंसभुजलविस्यामकी सुहि
सुभगसौरभकेममलय॰संघनियवसकामकी २९ पुनिपकरभुजनिजपानिकेमनि
विहसिचूवनलिनकियो सोमईनिरभरप्रेमगगरगरपुलकितनहुलसतिहियो ३० कोउ
अपरपरमप्रवीननागरनतनिनृत्यसुहावनी अतिलोलकुंडलगंडझलकनिअलकपि

111A

षमनभावनी ३१ गतिभेदसोंपियगंडपरनिजगंडधरनाचतभई एहिव्याजहरिमुष पानच
र्वितनुतेनिजमुषमेलई ३२ दोहा हरिमुषचर्वितपानलहि कृत्यकृत्यजियजानि नृत्यतिवहु
रविसेषगतिपियमुषलषिमुसकानि ३३ सोरठा कोउनृत्यतिकरिमानि कूजतनूपरमेष
लाकरिद्गिसौंप्रियमानि निकरदेषिपियकरकमल ३४ चौपई निजकरसौंप्रियश्रानि नि
जउरोजपरधरहियो नहिकछूकीनीकान रासश्रमतरसवसभई ३५ चौपई पायगोपकन
रषाई ३६ करतभईविभ्रमगतिनाना सुषमाकोकरिसकेवषाना श्रवणकंजलसतलरवां
की व्यालवालंजनुश्रमसरिसताकी ३७ कंजवरनश्रवविंदुश्रनूपा जनुत्रिभुवनछविधरेउ
सरूपा ललितकपोलगोलछविधामा वारियकोटिकामनीवामा ३८ नृत्यतसंवेवामएकसा
घा नृत्यभेदकरजदुवरसाथा नूपरकटिकिंकनिधुनिरूरी गायकमधुकरस्वरतहपूरी
३९ करननृत्यषुलगएउश्रुभकेसा गिरितसुमनसुभलगतसुदेसा तहसोभाश्रेसीवनश्राई
मनहुतुषभएकवसमुहाई ४० देषिताहिगतिश्रतिसुषपाई हेतयगनकहुरीजवधाई जि
समकरिश्रतिसुषमाना निमिरजनागरसंगविहारी नृत्यभेदकरदमेमुरारी ४२ दोहा वजजु
वतीकेसगहहरि श्रालिंगनकरिश्राप पुनिकरकंजनपरसतन मैदिसवनिकेताप ४३ सोरठा
करिकटाक्षतेहिदेषि पुनिकरहासविलासवहु कौतककरेउविसेषि विपिनविहारीनेहसुत ४४

श्री भा०
द २१२
112

चौपई ब्रजतिय अमित अनेत सरूपा भए उमहन सुत तेहि अनुरूपा एक एक ब्रजतिय ब्रजरा
जू नच्यौ करयौ हरि रास समाजू ४५ एहि विधि तिय संग रमे उरमेसा भक्ति सुधाकर जानु नरेसा
जिमि बालक निज बिंब निहारी विहसि करै क्रीडा सुखकारी ४६ तिमि हरि रत तिय संग सु
हाई करि विहार तिहं सुख उपजाई हरत न अंग संग सुखभारी ब्रजतिय हिय हुलसे सुखकारी
४७ तन इंद्री सुध तिन हि न कोई छूटे वसन भूषन गए खोई सिथल केस परबंधन जास छूटउ
रोज पट्टिका नास ४८ नहि संभारि सकै सुकुमारी उमग अनेह भूर सुखकारी कहल विहार
दावि सुरयामा बदयो प्रबल तन हु अति सै कामा ४९ मोह नहै गई तन सुध भूली अहो भाग केस
मते हि नली मोहौ निज गन सहित मयंकू थकि तर हो भागि दिनकर सकू ५० छंद गति संक
दिनकर की मनो थकि रह्यौ विलसि तेहि काल मै तव बदी निसि ब्रजसुंदरी कहु सुघर कानन मा
लमै ५१ कर रूप बहु न अनूप मोहन सोहिनो अति सै भयौ जेती हुती ब्रजनायका तेहि संग र
मि सुख चह दियौ ५२ हरि भरपि श्रांत भरी महूरन रम मै सुख पाइकै बरतान किय ब्रजगोपक
न सो सलकि यचिन चाइकै ५३ करुणानिधान कृपाल की करुणा लयो मन लाइकै निज सें
ग सँग विहरन गोपकनि श्रमा विदूर रहु सुख पाइकै ५४ दोहा ताहि देखि ब्रजराज करि निज
पौधो मुखनासु सु यरद के जकर परस तेहि बढो प्रमोद बिलासु ५५ सोरठा कुंडिल ललित अ
नूप कुंतल सो रम सोसनी प्रेम अलौकक रूप झाई परत कपोल मह ५६ चौपई सोभत कुं
तल मे मुखहासा प्रेमभाव चिंबनि सुबिलासा अधिक सुधाति मधुर सुहस्वन श्रीनम नहिया।

112A
त

मोरवढावनि ५७ हाविभावकरिविविधप्रकारा इमिऔबहुविधनंदकुमारा पुनिश्यामनेरभरीव
जवाला गावंभईगुनकृतगोपाला ५८ जानिसषीगनश्रमजुतआइ जलक्रीडाकरिहरितन।
ताइ सोवरनतमुनिमनहरभाई त्रिविधतापगनसुननतनसई ५९ व्रजतियअंगसंगकरना
गर मरदितसुमनमालसोभाधर अरुकुचिकुंकुमरागनसोई अलिकृतनाहवंहतिहहोई ६०
एहिविधजमुनाजलमहिमाया व्रजतियसहितधसेजदुनाथा जिमिअंगजमतंगजीवहुसं
गा इमिसोभितप्रियतियवहुरंगा ६१ जिमिविहारगजसेनतुरंता सेकरनीजलधसमहमें
ता तिमितजिलोकवेदमरजादू रमेप्रियनसंगकरसेवादू ६२ छंद तियसंगतनयातनमें
जलकेलकियसुषमानिके सोमैजुवतिनचहूं औरते अतिहरषहियरहछाइके ६३ अवलो
कसहितसनेहमुषससिफिरिहिदतिउतवाइके तहआइनभसुरसुमनवरषेहरषप्रभु।
जसगाइके ६४ हरिअहैआनमरामजदपिकामनाकछूहियनही तदपिरमैतियसंगकरू
णासिंधुअच्युतश्रुतिकही ६५ जिमिद्विरदकरनीसंगरतितिमिरमतभौगुनसागरा व
जजुवतिजनकेहेतुश्रुतिपथत्यागिभगुरजनागरा ६६ दोहा पुनिजमुनाउपवनमहजल
थलसुमनसुवास त्रिविधमरुतसवकहसुषर लषसुभठामहुलास ६७ चौपई अलिग
ननादश्रवणसुषकेरा भ्रमरागनजुतविचरतिमुकेरा जिमिमदमत्तफिरैइभिराजू संगक
रीगनसहितविराजू ६८ तिमियुवतीगनसंगसमाजू विचरतवनहरिअतिछविराजू
लसतिमयंकअंसुकरराती सरदकालरितुसुभगसुहाती ६९ सोनिसकृसमरेवसुषधामा

श्री भा
११३

सवनकियोसंगवहुवामा जेअनुरागीतियगनजेती तिनहिरमावतभेसुषसेती ७० सत्य
संधाएहिविधनेहिसंगा रमतभएसवनिसाअभंगा कामविजयहटिएहिविधकीना चुन
नहिभएवामसुषरीना ७१ सवकोमनमथमदअतिभारी मनसिजकोमनमथ्योमुरारी
आनमरमेरम्योसवरमनी कृपासिंधुपावनसवकरनी ७२ छंद पावनसवकरनीमुनितु
मवरनीमेपूछोएकुवातप्रभो पापनहितधर्मोअरभुनकर्मोहरिप्रगटेएहिलोकविभो ७३
कलिकलुषनसावनहेतुसुपावनश्रुतिगावेजसुनासुमहा सोहेश्रुतिसेतुधर्मनिकेतु
वक्ताकरतापालसहा ७४ सोकिमितजिधर्मीकरेउअधर्मीअतिसेहपरदारगही हरि
आप्तकामासवसुषधामातिन हूनरकिकैसेअककही ७५ जोइमिमुनिकहियेवचनसुग
हिवेममहियससेहोतसही जोहरिगतिकामामोपरवामासेगरमेकेहहेतुचली ७६ दोहा
मोयहोतसंदेहवडु केहिकारनघनस्याम यहनिंदनअतिसेकियोरमेसंगपरिवाम ७७
सोरठा जेसमर्थजनकोइ तिनकेसाहसदेखिनय इंदुप्रजापतिजोइ निसपतिविस्वामि
त्रपुनि ७८ कर्मव्यतिक्रमतासु नहिपरस्योतेहिरंचकहुं तेजवंतहेंअतितासु तासुहोय
ओगुनसरस ७९ चौपई हुतयाजिमिपावकसवषाई कोउनअपावनकहतेहिगाई
रहगेहरतेजोजगप्रानी नहितेपतितजसोनवलहानी ८० मनहुकरस्याहेयहकरमानस
हिवेमिस्तोहोइविधर्मा गरलपानशिवविनकोकरई अपरषाइसोनिश्चैमरई ८१
सदाचारकेसोमिरवाहु इमितवहियउपेजोचाहु नहोसुनोहेनरपतिप्रवीना कहोतोहि

113A

अतिहरिरसलीना ८२ प्रभुआग्याकरियेसुषमानी असभावनाकरिसव्हानी प्रभुआ
यरनकवहुंमनवानी नहिकरियैतौसुषलहप्रानी ८३ प्रभुआचरतिकरहाचितकोई सेव
नगुरुपितुआग्याजोई प्रभुकतकर्मकीनचहमूढा सोमतिमंदमोहिआरूढा ८४ अहमि
तिवधेअहेजेप्रानी कर्मभोगफललहअभिमानी गतिअभिमानजगतजेकोऊ करहिक
र्मसिरसतजोहोऊ ८५ यहजीवजडमतिजोमेरा कैसेसरवरकरैजडुनंरा तिन्हैतासुफ
लपरसनहोई ईस्वरकहपरसैकिमिसोई ८६ दोहा हरिईस्वरभगवानप्रभुमायापरिअ
षलेस तिनेमहकासंकाकरहु निश्रेगहहुनरेस ८७ सोरठा निरहंकारीकोइ ताहिन
परसैकरमकछु सहसतकरैजुकोइ त्यागिअहंममविषमता ८८ चौपई नरकहजवके
धूलगपोनलेस ईस्वरमहहतवकरियअरेस देवमनुजअरुतिर्यगजाती अपरजीवजेअ
गनितभांती ८९ सेभवपालनअरुसंघारु करैसकलसोगतिहुकारू ताहिकर्मवाधक
किमिहोई समदरसीहैसवमहिजोई ९० परपंकजपरागजेहिकेरा सेवतमनवचसोजस
देरा पाइतोषमनसोवहप्रानी तेहिरसमगनभयोसुषमानी ९१ सकलकर्मवंधनजिनना
सी फिरेस्वतंत्रभयोसुषरासी असप्रभावपदपंकजजासू नरभवतरहिसरनगततासू
९२ जगसुषलागिधस्योजिनदेहा जोपरब्रह्मअषिलसुषगेहा स्वेच्छावपुधरक्रीडाक
रई तिनकहुकिमिवंधनसंचरई ९३ सकलौंनिरगुनस्वामी सतकईसऔरपुनिअनजी
मी पुनिभगवानसकलघटव्यापी मायापरितेहिक्रियानकापी ९४ दोहा नहिपरिहा

निवेता २

श्री॰भा॰
१ २२५

हतो यकछुसवघट अहै जुएक सो वरनतमुनिभूपप्रति जिनकहसुभगविवेक ६५
चौपई गोपीगोपजहांलगिजेते अगजगजीवसकलपुनितेते सोसवकोहैअंतरजामी
बुध्यादिकसाक्षीसवकामी ६६ क्रीडाहेतुदेहिधरसोई अपरजीवसमलख्योनकोई
हरिईस्वरगोविंदनरेसा तिनहिदोषपरसैकिमिलेसा ६७ आप्तकामजोहरिभगवा
ना तिरतकिमआचरनसुहाना इमिसंदेहकरैमनमाही ताहिदेतउतरमुनिसाही ६८
सकलजीवपैअतिहितमानी नरतनधरतसुभगसुषखानी नरसमक्रीडाकरिसुखद
ता हैसवकोसरसमरुषदाता ६९ जोदिषाईतनहैजगमाही भक्तलेसतिनकैकहु
नाही तिनकेहेतुकरीयहलीला प्रभुनेविमुषकामरससीला ७० जेयहलीलासुनहिसु
भायक तामहिमनह्वैमगनगुनायक एहिप्रकारममसनमुषहोई सुजसगाइममभवतर
सोई २ ताहिहेतुयहकौतककीन्हा रासविलाससरसविनसुषदीन्हा कृष्नचरित्रमोवेनर
नारी तेभवबंधनअघपरहारी ३ दोहा जोकोउअनुमतिइमिकहै तिनकेपातियहजा
नु किमिरावीनिजनिकटतियनिरनगुनअघषानि १ चौपई ताहिकहतसमुझाई
सुन्योचित्तदेईसना कृष्नब्रह्ममुनिगाई तासुप्रभावनयोरकछु ४ चौपई हेब्रजपवज
वासीजेकोई निजनिजनारिनिकटतिनसोई हरिमायामोहितसवगोपा रहितअसूया
नहिकछुकोपा ५ हरिनेइतरवेहैअसकीना सोअतिअधीसकलमतिहीना घरिका
द्वैरजनीअवसेषा ब्रह्ममहूरतकालविसेषा ६ आयसुदीन्हीकृष्नकृपाला जाहुगेह

114A

निजनिजगेहे बाला अनदछित हरि पाइ निदेसा निजनिजग्रह सब गई नरेसा ७ श्रीभगवंत
अनंत अनूपा क्रीडा तासु ललित सुषरूपा रास ब्याज मनसिज मद गंजा सुनत श्रवन भव रु
ज दुष भंजा ८ ब्रजतियसंग विहार अनूपा करयो क्रस्न ते हि निस सुषरूपा सु धाम सहित सु
नै अरु गावै धाम सु अनंग विजय सो पावै ९ हृदय रोग वैरी सो कामा ताहि जीत लहे सुष अभि
रामा लहि भक्ति अडु वर परकंपा जन्म मरन को मेटै फेरा १० छंद लहे सुष अभिरामा
हरी कामा पुनि लहि हरि परम भक्त सही सो नर अति पावनि सब हि सुहावनि प्रभु गुन गावत टे
क गही ११ सब क्रस्न तिहास कहे इमि ब्यासा बिनु हरि क्रपा न भक्त लही मन कर बिस्वासा
त जिन गत्र्यासा भजहु क्रस्न इमि नेति कही १२ सोरठा हे मन करि बिस्वास क्रस्न कथा सुनि
प्रीत जुत तजो बिषय की आस राम क्रपा भजु क्रस्न पद १३ दोहा नवगुन बानि कहे सोरठा सु
भग दस छंद रस्र दुष हानि मैनी सके अध्याइ मह १४ इति श्रीभागवते महापुराणे दसम
स्कंधे भाषानिबंधे रासक्रीडा वरननो नाम त्रयस्त्रिंसोध्याय: ३३ दोहा ब्याल बदन तें नंद
नेर कह हरि छुडाइ ते हि आसु बिद्याधर कह सुगत दै स्राप मिटै है तासु १ सोरठा तेसे करुना कं
द संषचूड कह मारि है हरे सत्रु जगदंद चौतीसके अध्याय मह २ चौपई श्रीसुक क
हत सुनहु हे भूपा क्रस्न कथा सब को सुषरूपा राक समे सब गोप सुजाना सुरयात्रा को तक म
न आना ३ सकट जोरि धरसब संभारू गए अंबिका गहन सु चारू गिरा सरत मज्जन करता
ता हुंगो पसु पति जनसुषदाता ४ पुनि सादर अरि हन बहु भाती देवी हि हुंगो मन हुल

नृप

गीता·
९·११५
115

साली द्विजसनमानवि दोगोराना कंचनवसनसहित सनमाना ५ मधुरअन्नसुदरसुषदानी रि
षीधनीविधश्रुतिअनुसारी नारिनसवमिलनजानियभूपा सरस्वतीतीरवसेसुषरूपा ६ नरग्रा
मिसवगोपिअनेका वसैसवतहसहितविवेका तेहिवनछुपितवसेएकव्याला अजगरजाति
जेतुगनकाला ७ देवयोगतेनिसिवहआई ग्रस्योनंदकहअतिसुषपाई ग्रसतनंदअतिक
रिपुकारा। सुनतसकलमोहियहकोषहिकाला ८ दोहा जेप्रसन्नजनजगतकोउसकलहतू
प्रतिपाल गहुलियाल्लेनेनातमोहि छोरिवेगिगोपाल ९ सोरठा नंदगिरासुनिगोप स
हिसाउठिनागनभए ग्रस्योनंदलषिकोप ज्वलतिदारुतैअहिहन्यो १० चौपई ज्वलितकाठ
मास्योवहुताही तजैननंदहि गहिरवचाही तवसुवनपतिश्रीभगवाना आएतुरततहांजव
जाना ११ परयोकमथरस्योअहिजवहो भयोतीयदूतसवतेहितवही मानिव्यालवपुभासु
ररूपा विद्याधरवपुपरमअनूपा १२ परमप्रकासरूपउरमाला देवृरिजोरियरोतेहिका
ला तवतेहिप्रछतिश्रीपतिदेवा जनुअजानइवकोतुमदेवा १३ ममअेरवयेजानुजनिको
ई परमातेअजानसमहोई अतिअदभुतवपुसुभगसुहावनि कोतुमअहोरेवमनभावनि
१४ यहनिंदितितनभाकेहिहेतु कमिप्रछोत्तहिकयानिकेत तववोल्योवहअहिननधारी
सुनियनाथहेसत्यमुरारी १५ हरवमैविद्याधरजाती नाममुदरसनसुदरख्याती छवेयो
रूपमदचढ़िसुरजाना चिविरोमैहि सविहसअयाना १६ तेहा चिवरनिदयाअगिरारू
षिसापपरमकुरूप दस्योताहिकोमदुमैनिजतनगर्वेअनूप १७ सोरठा रिषरीन्होमोहि

115A

आम धर्यौ आइमै आलतन भोगेगो मैनिजपाय सापअनुग्रहतिनकियो २८ जाहि आपकर
नाथ तव पद पंकज परसभा तुममोहि कर्यौसनाथ पदपरसतसवदुषनस्यौ २९ चौपई जे
प्रसन्नजनभवभयनासी ताहिअभयदातासुषवासी हेअघनासनचरनतुम्हारा परतमिटैयो
रोयममभारा ३० हेप्रभुजेतवनामउचारा अपरश्रवनकोउसुनएकबारा सपदपविवहोइते
होउ चरणपरसजेअघजुतकोउ ३१ सर्पविजजोहोइगोसाई अचरजकहाभयोजदुराई
करिविनतीअनुसासनमांगी गएउस्वर्गकहहेवडभागी ३२ करिप्रनामपुनिपुनिवहुभांती
करेउप्रदछिनहियहुलसांती गएउअसुररसनतवनिजलोका वृन्दहंदितैभयौविसोका ३३
हरिचरित्रयहवैभवदेषी गोपनिविस्मयभयौविसेषी हरनकरितकनियमसुहाना एकना
थहरिअपरनदूजा ३४ गावतसकलकथागुनसवही ग्रहआएनेहरिकनवही शंखचू
डएकअसुरतेहिबारी ताहिवेधनकौप्रभुहियधारी ३५ दोहा सोप्रसंगश्रवकहतसुनिकरु
नानिधजनपाल हेनृपएकसमैसुप्रभुहीनेवंधुगोपाल ३६ चौपई सहितवंधुवनकरतवि
हारा सुहदनिसिलषिकेएकवारा व्रजवनितावहुतिनमहहोउ स्यामगोरतनअद्भुतसो
उ ३७ चरनचर्चितअतिछविछाजै नीलपीतअंवरसुछिराजै अतिसनेहगुननियगनसव
ही गानकरतभईसुरस्वनतवही ३८ तेहिछनविसिपतिअतिसुषमानी उदितभयौक
रिसुभगसुहानी तारागनअतिविमलसुहावन गंधमल्लिकासुमनसुहावन ३९ ताहिगंध
करिअलिमनमाते करतगानमनुसुभगसुहाते तेहिछनगावतभएहोउभ्राता स्वरमंडल

श्री भा
१२२८
116

न

मुनतालसुहाता ३७ सहित नमीनासु नारएककहि वारा अपरंगाइ रसकै निरधारा गोपिन सुन्यौगा
न अति नीका लीनचित्त तनन भास वही का ३८ मन अवचनं कौ मंगलरूपा रसमकृपाकौ गा। न
न अनूपा अरु कै सुरगावै जइ नैरा बचन अंबुज समसोभ सुकेरा ३९ तन तें चलन गिरत
न हि जानी कचतें सुमनचसनसु बहानी इमि स्वतंत्र विहरति करि माना तिमि प्रमत्त कौ अ
विहर अपाना ४० दोहा ताहि समे धनपति अनुग शोखचूड असिनाम आइ गयौ मति मंद वह
जहां कृष्ण गुनधाम ४१ सोरठा आवत हो बहमूढ रजनिय कौ हरि लेचलेयो महा मोहि आ
रूढ निरकृष्णबलिदेव कौ ४२ चौपई गोपी करहि विलाप अनेका कृष्ण नाथ हे गिन कै ये
का हे अनेत हे कृष्ण सुधाकर एकनाथ तुम हे वजनभार ४३ सुनि अति दीन वचन निजज
न के ग्रसत धेनुनि मिरदकेहरि कें देखि कृष्ण निज साथि गति दीना धाए होऊ जनपरमप्रवी
ना ४४ लेकरि साल ग्रास रहौ उचीरा अभयं वचन कहि केर न धीरा पहुंचे निकट तासु के ज
वही कालमसु इव निनल सुत वही ४५ तन गोपी गन भयौ विमरुढा चाहत जीवन मोहि अरु
ढा तवति यरावन कहि वलिराम बरे रहे अनिवल के धाम ४६ कृष्ण ताहि पीछे ते धाई जह
जह भग्यो तह तह जाई कछु करि सोभ मैं अभागी मेरमहा विपहा अनुरागी ४७ दोहा कृ
ष्णे दवन वैर करि मुष्टि हन्यौ सिरनाहि गिर्यो सीस परमन हरी सो लीनी चितचाहि ४८
सोरठा शोखचूड हनिनाथ मनि लेअग्रज कौ दई गोपी भई सनाथ देखि चरित्र विचित्र अति ४९
कहे रोहनापोचवर पे वसोरटा जानु तहि वैतिसकै ध्यायमहि चौपई कथा बयानु ५० इति

116A

श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबंधे गोरसचूरनवोनामत्रयत्रिंसोध्यायः ३३ दोहा
पंचत्रिंसके ध्यायमहि कृस्नजवपवनजाति नवव्रजजुवतीगनसवै जुग्मगीतकरिख्या
त १ गाइ विविधगुनकृस्नके वासरविहरविहाइ सोसवयामहि वरनिहै सुकमुनिअति
सुषपाइ २ कृस्नसंगनिसमुषभरीदिवसनाहिबिनुव्यापि कृस्नगीतभेषजकियोनासहि
व्याधिअसाध ३ चौपई हेनरपकृस्नदेवउदिप्रात सषाधेनुलैवनजवजात गोपीमनतेसंग
सिधारु महासोचहियविकलयेभारु ४ गाइकृस्नगुनमनअतिप्रीती वासरइहनासेए
हिरीती कोउप्रवीनइकसषीसयानी बोलीअपरअलीसोवानी ५ हेसषिजवयकुअर
कन्हाई विचरतिवनसवकहुसुषदाई वामकपोलवामभुजधरेउ अतिसोभासोभामनहरे
उ ६ भ्रकुटीवंककलितसुठिसोहन अधरधरतवेसोमनमोहन कोमलकरजसुभगसुष
रासी सप्तरंध्रपरधरतविलासी ७ जवएहिरीतिकरतसुभनादा सुनिसुवधुनिउमगि
अहलादा जदपिनिजपतिसंगसयानी वंसीसुनिचित्तमनअकुलानी ८ मीनकेतुवसहैस
वदामा मोहितह्वैगईपतिढिगस्यामा नीवीबंधनसिथिलभातासू तनसुधभूलबेहमन
तासू ९ दोहा वंसीरवसुनिजासुकोदेववधूवसमेन औसेकृस्नकृपालविनुकहुकेसेंमा
नचैन १० सोरठा अपरवधुअकुलाइ कहनलगीहेसुनसषी अवरजचडोलपाइ कामदे
वपुविसरलषु ११ चोपई विसदहासउजालअतिजासू उरधिरतडितसोहइमितासू
धारतजनजनमेंहेजेते नेहसुअनसवकोसुपरेते १२ करतवेनुधुनिजवबनमाली त

श्री भा·
११७

117

थगोमगजिपपसुवनग्रासी सुनिरवियंम्रीभूतविमसवही धरेंदेतनलरहिगेनवूही २४ क
रि श्रुति कछुकसुन्यहिम्नोनारा निकृतदृविजनुजननेतेहिवारा लिविनम्रिचउग्रवहुरहेहादे क
रिमधुपानप्रेमअतिवादे २५ तिन्हिंगनगजनैवनकीगतिग्रेसी तासुविरहसहिसकेनु केसी
सुनिजदुकीगति कहोवखानी ग्रवनग्रवचर्मसुनमनग्रानवानी २६ हेग्रालिमवधहनहकि
सोरा नटवरवेषविधरतवितचोरा मोपरछसिरपच्छवधारी गेरूकारिगेंधानुरपयारी २७ ध
रतस्यामतनपीतसुढिसोहत मच्छेवेषिधरिसवमनमोहन करिग्रनुकरनमच्छकोरीती स
हतगोपिमनमुनग्रतिप्रीती २८ नववेसोधुनिमैलेनाम टेरतिधेनु चेरसुयपाम धुनिसु
नि थकनहोतनगतिसरता चहेंपादरजनिजसिरधरता २९ दोहा दमाहिसरसिवहुपुन्पन
हि थपरजमिलेन ताहि केवलहियग्रतिप्रेमभरि कंपतभुजग्रतिजाहि ३० सोरठा सुभ
तरंगभुजरूप कंपतहैमलयकर रह्यौ गोपीसुनिसुपिरूप सजलनयनेगरगरतिग्ररं
चौपई पुनिग्यावरगनिकहतवनाई ग्रतिग्रचरजसुनहिम्यसुखदाई अपवरूसेसविसुनि
एकवाला नेदसुग्रनग्रतिसुभगसुहाता ३१ गावतगुनसखासुपारी ग्रारिपुरधइवसो
हमुरारी निग्यलग्रोडरसोभितललामा धेनुसंगविचरतिसुपधामा ३२ गिरितटगह
नचरतनिग्रधेनू टेरतितिन्हैंवजाइसुवेनू धोरीधमरिधूसरिकारी वंसीरवनिमहरेटरमु
रारी ३३ तेहिछनप्रनतभाहलरूसाका निसननहरिप्रकासछतिभाया ताहिमल्यदइव
कहकानिचारी ललितसहितउमग्योसुखभारी मधुधारागरगरतनहोई वर्षितभरम

र
सग

117A

गनमनसोई वनवेलनकीगतिमहवीरा पतिनसहितधरिसकीनधीरा २५ बिननकामक
रैउरमहामनपाई निरखतभईश्रीरतनविहाई तासुविरहकहुकिमिसहिजाई मुग्धावचन
कहतिएहिभाई २६ दोहा अपरकहनलागीवचनहे अलिसुनिममवेन वनविहरतब्रजरा
जजबहिंगमनचितहिंचेन २७ चौपई हरसनयोगपतिलकहैजासु अतिसुंदरवपुसुभगवि
लासु हिव्यगंधतुलसीप्रियप्यारी अलिकुलमत्ततासुमरभारी २८ ऊंचेस्वरधुनिकरनसुहा
ए ताहिसुननसारसमनलाए जबअधरोमनअर्पितवेनू तेहिछनमहलगिपनगसुखेनू २९
चारुगीतसुनिमनललचाई जसुमतसुअननिकरसकआई एकचित्तगहिमौनविहंगा सा
रसाहिजेहसपतंगा ३० नयनमूंदिजिमिमुनिगनकोई हरहिभजनसबएहिविधसोई
विहगनकीगतिरीमाई तासुविरहकैसेसहिजाई ३१ अपरकहैसखीसुनिएकवाता मेनि
जनयनलखोसख्याता ह्रस्नहेवबलजूएकसाथा विपिनिफिरतगोपिनिकेसाथा ३२ सु
मनरचितकरिकीअभूषन अपरसकलपुनिकुसमविभूषन गिरिगोवर्द्धननिकटसुहाव
न हसनहसावतजनमनभावन ३३ जबकरिगहिवंसीजदुनंदा करतनादसुंदरसुघकंदा
तबहिमेघसुनिसुखरवकारी मंदमंदगर्जतनहिभारी ३४ दोहा मानसखाश्रीकृस्नकीमे
घसकुचहिगआइ वंसीरवअनुकूलसोऊगर्जतमंदसुभाइ ३५ सोरठा निजसमइववपुरे
खि हरखिसुमनवरखतभयो जलकनिकुसमविसेखि सोवरख्योतेहिछनमलर ३६ आन
पल्लवबनमाहि आतपत्रतनसोकियो मेघतनिजतेहिमाहि तासुविरहकैसेसहिव ३७ चौ॰

श्री भा·
२२२८ 118

पई अपर सखी बोली मृदुबानी सुनिहे सुमुखि जसोमति रानी तव सुत गोप चरित्र उआगर बे
गुवार मह अति सिन नागर ३८ तव सिखा सिखुति आचरई कौन कथ्य मित गहनम हि कारई अ
धर बिंबि धर वेनु सुहावनि रुचभारि कस्वर गाव सुहावनि ३९ ताल भेद स्वर बिविध प्रकारा
गाव तो जव तव सुत सुकुमारा तव हित सुधुनि सुनि मृग अभारी सकल सर्व सुर मुनि श्रुति वा
री ४० तन कंधर चित चुनि गो तासु सुनत पागित न सुधनहि आसू सम्यक सुन पुनि करहि
बिचारा है कोविद जदपि निरधारा ४१ गान भेद नि श्चै नहि जाना मोहित चित सब भए सु
जाना असेउ मोहि नाहि सुनि जाही हम हि मोहि कस होइ न चाही ४२ छंद कस होइ मो
हन भाखधि वचन मोरा कसु नसही पिय कंज चरन सरोज दुति अति ललित कुसजि न मही
४३ पुनि ध्वज अंकुश कुलिस धर वर फिरत छिति पर चित चही यह परस छिति इ बिहरत सं
व जब चलन गजगति छबि गाही ४४ सोइ कमल कर भुज सिंधु जब व हुच लत बेनु बजाइ कै
पुनि बंक भृकुटि बिलास ई छन हसत पुनि मुसुकाइ कै ४५ एहि हेतु देत मनोज हम कौ श्रेर
अनि सुख पाइ कै तव हो हि तरस न हम सबै अति मोहि रहि तन छाइ कै ४६ दोहा मोह होत न
बहे सखी तन नसु धरहि तन होइ कुलन के संबंध न बस नन हि मान हि हम सोइ ४७ सोरठा
अपर कहत अकुलाइ सुनहु सखी मम बचन तुम कहो तुम हि सत भाइ मैं देखी निमन यन जो
४८ चौपई एक समै लखि नंद कुमारा मन गन धरे अग्र सुकुमारा गो धन गन हेतु मनि धा
री कबहु कएक समै गिरिधारी ४९ मनि करि कबहु कगन पाजु गाई कौ द्वार तिगोप मिसु ध

118A

राई रघत गंध मुलसी सुभमाला एहि विध वनविचरति गोपाला ५० अनुचर अंस धरे भुज दंडा
असुर विघंडन प्रवल प्रचंडा जवहि वेनु महि किय वर गाना तेहि छन धुनि सुनि पसु गति साना
५१ हरिण वधू सुनि हरि ढिग आई थकत भई तनसुधनहि काई जिमि गोपीन जि ग्रह कुल आ
सा एक कृष्ण गति अपर निरासा ५२ तिमि सव हरन वधू कुल त्यागी निरखहि त्यागि पल्लक
अनुरागी पसु तन जात ए स्याम विहाई ता सु विरह केसे सहि जाई ५३ दोहा वृंदावन के निक
ट की लीला वरनी चाहि मध्य दिवस जमुना विषे क्रीडत वरनौ ताहि ५४ सोरठा गोधन लै ज
दुनाथ फिरे मध्य दिन जानु प्रभु लषि सरिता सुभ पाथ क्रीडा रत सो छवि कहत ५५ चौपई अ
परस वी वाली सुभ वानी सुनहु गिरा हे जसुमति रानी तव सुत नंद सु अनन सुष रासी अति सुंद
र छवि धाम विलासी ५६ देस षिव वचन जानु एहि ठामा व्रजतिय सकल प्रेम रस धामा कुंद दा
म कुनकौ तक वेषा गोधन गोपसंग सुविसेषा ५७ निज जन सुष रस कल गन वानी जल क्री
डा जव कर सुष मानी तव समीर सौरभ प्रसंगा हरि अनुकूल वहौ सुष केरा ५८ मागध सू
त अपर गंधर्वा वाद्य गीति अस्तुति करि सर्वा सुमन निवर्षे सुर गन हरषाई एहि विध सक
ल उपासत आई ५९ आवत लषि श्री नंद कुमारा व्रज तिय हे सुष भयो अपारा कहहि पर
सपर वचन विनीता देषि नंद सुत कहु मन प्रीता ६० अहो सषी सुनि वचन हमारी लोतत गो।
व्रज को हित कारी गिरवर धरनि हो यदु यहारी ६१ नारद आदि मुनीस्वर जे ते शिव दछ स
नकादक हू ते ते चलन पेष अज आदि सुरेसा तिन कर वंदत चरन सुदेसा ६२ संध्या समे वेनु

आवत नंद सुअन सुष कारी ३

श्री॰भा॰
१२२८
119

करिरे री गोधनसकललनामलेफेरी एकहामकरिसवनिनश्रागें चलेगोपमिलहियेश्रनुरागे

६३ छंद हियश्रनुरागासपीवहुभागागोपनिकियकछुपुण्यमहा श्रममुतलषिश्रंगाकोटि

श्रनेगाछविनेगासोउरसरनलहा ६८ ममनपनचुकोरासुषनहियेरासुषमयंकलषिचैन

गहा गोरजसोंसानीस्वजसुषदानीश्रलकनिमानीचूरतहा ६७ दोहा हेमसषिहमसवसु

हृदजेनासुमनोरयसिंधु उदरदेवकीकेप्रगटयहुनिसिसजगवंधु ६६ सोरठा श्रावतनिक

रनिहार कोउसषिलिनभ्रमसोकहत लषिलषिरीतनारि यहश्रायोसोभासरन ६७ चौपई

मरविरूवलरेवकशुभनयनामनगतिदेषिसुहृदरचितवयना ईषतपकवररफलजैसोपा

डुरवहनलसतहैतैसो ६८ कुंडिलकनककमासुछविभारी परीछाहमदुगंदसुषारी नेहिलव

रनपोढुषनश्रानन देषितहिनरहैसुषभामन ६९ जगपतिजनसुषदानश्रनूपा चलत

चालगजमदश्रनुरूपा मुषप्रसन्नजनुउगेउनिसेसा सेततापदरिरहैनलेसा ७० जिमिनि

सिपतिदाकपतिउश्राई दिवसतापसवजनकोंहरई तिमिहमसवगोगनवनवासी वहुरि

नतापनासछविरासी ७१ यहलखुएकसमीपहेश्राली गोपिसंगश्रायेवनमाली एहिविधि

धहेनपसवनजगोपी तममहसवननमनलोपी ७२ तजिकेसकलकुटंवपरवारी मिल

नमई गोविंदकूप्यारी विरहभाविकररिनप्रतितास गावहिलीलागुननामजास ७३ जीवन

प्रानकृष्णएकजिनहीं मनवचकायश्रपरनहितिनहीं श्रतिउत्सवनितप्रतिपुनिजाही

श्रैसेनिसिदिनरमैजुताही ७४ दोहा धन्यभागिसवगोपिकानैनमनहरिरसलीन रामसषा

सोऽइधन्यजगभूलहुभजेप्रवीन ७५ सोरठा जपतपजोगविराग करैवेदपथलाइमन कृस्न
नामअनुरागि करतलहैजपआदिसब ७६ कहेसोरठाआदिवर दोहाआठप्रवीन तीनछं
दवरनेविमलपद्धितसुनतअघछीन ७७ पंचत्रिंसकोध्यायवरगोपनिगायोगीत दिवस
विरहमेदुतभई मिलेस्यामसेमीत ७८ कामक्रोधवसलोभके जोसिमरेभगवंत रामकृपाते
हिपदिकृपा करैरुकुमिनीकंत ७९ इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा गोपिकानु
गीतंनामपंचत्रिंसोध्यायः ३५ दोहा छत्तिसकेअध्यायमहिंवृषभासुरकोनास नारदमु
निसवकथापरिकहिहैसकलसमास १ है सुनहैवसुदेवके रामकृस्नबलवेस धरिआए
जोनेदग्रहतिनकियहानवसेन २ सोरठा सोसुनिकैपलुकंस पठैवेकोंअक्रूरकहः
सुभगकथाअवतंस वरननएहिंअध्यायमह ३ चौपई शंखचूडनववधोकृपाला सुमि
तकरीसगरीव्रजवाला सुमनवरषअरुअस्तुतिकीन्हो करिजयसब्ददुंदुभीदीन्हो ४ व्र
जअतिउछवहोइनिरंतर रामकृस्नजहवसहिस्वतंतर एहिविधव्रजसुखभरसवा
भांती सहिनसकैतवरैवअराती ५ हेन्रपतेहिछनदनुजप्रचंडा आयोव्रजअतिवलभुज
दंडा नामअरिष्टधरेवृषरूपा सहतकायअरुककुदअनूपा ६ निजखुरछितिखोदनक
रिनाई जेसुनिसुरगनहृदयविथाई भूकंपतजवचलेसुरारी निजपुंछाऊपरकरहधा
री ७ निजविषानखोदेपुनिधरनी सकृतमलअयलुकरपसुकरनी गोवरकरैवंकदृगि
देषी अनमियनयनहोइभयमेषी ८ वृषभगाजगाजेवलभारी अतिकठोरखजनदु

पसुभयपाइश्चलेबहु थोरा ९

खकारी सोसुनिबाइ सबभैश्रतिघोरा बृजगोपनड्यनहिहियधोरा १० जोसुनिबृजकी
गोश्ररिनारी महाश्रासञ्चाकुलसबझारी गर्भपातश्रबर्कपतगाता भएउश्रनेकगनेकौ।
ताता ११ दोहा चारिमासकोगर्भजोगिरहैश्रावतेहिनाउ पंचमासकोजोगिरैपातककहु
मुनिराउ १२ सोरठा ककुहिलगीनभजासु मानतगिरसममेघजेहि करतश्राहतहवासु
नाहिजानतयहुश्रसुरतन १३ चोपाई देखिबिशानतासुकोघोरा गोपीगोपत्रासनहिथोरा
'नजिग्रहगोकुलकरिवहुसोरा १४ श्रहोकस्महकस्मकपाला सरनसरनदेहीनेदलाला
दीनिबचनसुनिकृपानिदाना मनभयकरहुगोपबलवाना १५ एहिविधश्रभयबचनक
रिनाहीं देख्योपुनिश्ररिखचितचाही मेघगिरावानीरसमानी बोलेहरिबृजजनसुखदानी
१६ श्रेरेमेरवलहुसश्रभागी गोपश्रसितकिमिकरमोहित्यागी तबबलहननहारमेजानू
दुखिनोहिसमकुटिलनश्रानू १७ इमिकहिप्रभुदोकभुजदंडा कालबलीकहदलनप्रचं।
डा सखाश्रसधरिभुजापवीना घरेरहेमुरभरसलीना १८ देखिकोपभरिगोसुरद्रोही
धुरमोश्रचनिघनेश्रुतिरोधी ऊचोपुच्छकियोबलजबही इनिउनमेघभ्रमनिमेतबही १९
छेर नवहीधमतसवमेघइनिउनकोपकरिधावनभयो श्रतिविशयश्रंगकरालेलोचनल
खतनिरछोमरथ्यो २० जिमिइकुलसकठोरधावतनरतमिमिपहुचोतहां निजमनक्लि
पालकपालसुंदरबृजश्रभिराढतहां २१ हरिपकरिलियविविश्रंगसोऊकरिदेलतेहि
पीछेरयो परश्राइरसनेहिरंरपीछेमनहुगजप्रतिगजनयो २२ हरिद्वारमहितेहिविह

120A

पुनि द्वारन्ह परदाविपगसोंसिरमन्यौ न्यौ तासुकौ २१ जिमिरजकन्नवरधोईपगसौंदाविगारे तासुकौ २

सिटाई उठ्यौ पुनिरिसभरिगयौ तवचलेउ सखरस्वे रजुत श्रमस्वास ऊँचो हुय छयौ २२ ते हि

देषिश्रावतक्रोधजुतहरि पकर लियजुगसंगकौं तिमिकसपकरअरिस्कौवपुतोरिमारेसै

तासुकौ २३ दोहा कंस उधारविघनपुनि हन्योरनुजवलवंत स्ववतरुधरमुषतेगिर्योवि

कराय नअरूरंत २४ सोरठा पसरिपरयौ पमचारि गोवरकरषलुमरूत्रकिय पायौकसमुरा

रि मरयौ जुअपनेपापकरि २५ सुमनवरषसुरवृंद पुनिअस्तुतिकरिकसकौ निजग्रहगम न

नेवृंद जयजयधुनिकियपायसुय २६ चोपई एहिविधवध्यौमासुरहरिनाथा कियेगोधन

सवसघासनाथा गोपिनिकेदुषकहनहुनेरा मनहुअनेरूरूपधरकेरा २७ वलजुतहरिप्रवसे

निजगेहा अस्तुतिकरतुसमनजुतनेहा हनेपरगुजहत्यौरनुभारी अरभुतकर्मविस्हजसकां

री २८ सोलषिनारदरंगेजेहितकारी गएकंसढिगसमयविचारी अहोकंससुनियेएकवा

ता कहौसत्यमैंतुमप्रतिताता २९ कसरवकीतनयविचारू रोहिनसुतवलिरवनिहारू सो

रीमानत्रासनवभारी सुतलैगोगरहनंरसुषारी ३० जसुमतिजनीसुतानिसताही सोरीसोइ

चा लायोचितलही सोरीमित्रनेरतैजानू उभयसुअनसोपेअनुमानू ३१ जसुमतिकेन्यातवक

रिछूटी गगनगईवहरवैवछूटी तासुवचनसवसत्यसुजानो महसुनिकंसमहाअकुलानो

३२ दोहा चलतगातअतिकोपजुत निसितषड्गलेहाथ वधनचल्योवसुदेवकौंमहामूढनर

नाथ ३३ चोपई नारदतववरजाहठिताही सुततेवधएहितेकछुनाही इनतेतोतवमृत्यु न

आही कंन्यागिराकहीचितचाही ३४ समुझौकंसआपुमनमाही सुततेवधएहितेकछुनाही

श्री भा.
१५१
121

सोहि पासरयतिपगमगारी कारागृहराष्योइयकारी ३६ नारदजवविधलोककसिधारे केसीक
हतवकेसहकारे कहोताहितुवजवचलजाही नरसुश्रवनरोउहनुचितेचाही ३७ सुनंतवचन
सोक्रमनचलिगएऊ कमलग्रुपरकहदेरतभएऊ मुष्टिकसलत्वाद्वरहिआरी मंत्रीमहदुमहासठवा
री ३८ अरुमगपालककिंकरवोही तिनहिबुलाइवोलसुरद्रोही सोरीसुश्रवनेनरवजनहोऊ
निश्चैतहाआइहैसोऊ ३९ रामसखासुनियेवलवंता तिनतेमोरकहोरियअंता नेरसुश्रवनता
हिहोऊधाता तिन्हनाहिस्पावोतुमताता ४० रोहा वोलिपठावोमतिनेंइतिआवेहोउधात
मल्लजुधकरितुमहनो यहविचारहेतात ४१ सोरठा मंचकरोसुभरीति मल्लभूमिकेचहुदिसा
जनवेंहकरिप्रीत देखिहिजुधसमाजसव ४२ चौपई हेमगपालकसुनिदकवाता साविधा
नरहिकेहताता नामकुवलयापीडुमतंगा आनेद्वरंगद्वारसुभरंगा ४३ आवहिनरसुश्रवनत
वहोऊ मजनेपीसहारयहुसोऊ धनुजीगरचनासवरचहू वहुसंभारआनसवसचहू ४४
सुदरमेधकनयपसुआनी भूतराजकहुजनहुभवानी इमिआसाहेसवकहआइ निजजी
वनिहितकरेकल्याइ ४५ पुनिअक्रूरहिवोलिपठावा सुनिनिरहसतेहिपनसोआवा निज
करगहिनासुकरकेजा वोल्योवचनेमनहुसुषहेगा ४६ अहोदानपतिमित्रसयाने तुमसे
हितुअपरनहिमाने भोजवृष्णिसानतकुलसारे तुमहिसरसनहिअपरहमारे ४७ मिश्रका
जएकआनुहमारा सादरकरियेसुमितउदारा तुमरेआश्रतकारजमोरा सिधहोइउपका
रनथोरा ४८ तुमसवलायकचतुरसयाने सारेनअौरनतेहमजानै विस्पथराहिसुरपति

जैसे सकलेफलभारेवततैसे ४८ अर्थसिधपावैसवतैसै हरिजूभजैवरएनरजैसे मै
सहिमोहिअर्थसवआजू पूजहिमनवांछतसुषसाजू ५० दोहा जाहुनेरवजवेगितुमतह
सौरीसुतहोऊ अहैजुनिश्चैजानिजियरघधरआनहुसोऊ ५१ सोरठा मत्युरूपहोऊमोर
रवन्हयहरचनारची इतिआनहुहोऊभोरि नेरसहितवलभेटजुत ५२ चौपई इतिआवे
होऊवालकभारी हनोताहिमैजननविचारी मत्तगयेरथारपरराषी आवतहन्योसत्यपह
भाषी ५३ जौपुनिववैकरेतैहोऊ मन्नहापमारोपुनिसोऊ असननतुल्यवलघोरअपारा
मुष्टिकतजेनयहनिरधारा ५४ जवसौरीकेसुतहोऊसुतमारे तववसुदेवताएउरभारे
तववसुदेवआदिसवसाती व्रह्मभोजसालतजेख्याती ५५ सवकोहनोतजौनहिकोई सौ
रीवंधुजहोलगिहोई उग्रसेनममजनकअनीती कामीजटरराजपरिप्रीती ५६ तासुभ्रा
तुजेरविकनामा ममहोषीमारोमनिवामा अहोमित्रएममउरसाला इनहिहतेसुषहोइ
विसाला तवछितिहोइअकंटकराजू होउसुषीमैसहितसमाजू सकलमारिहोतुमकेहि
भांती वंधुवरगहैवहुजगख्याती सवनिमारतुमकाकेसगा किमितुमकोसुषहोइअभं
गा जोकहाचितुमअैसेकहहूं तौममवचनश्रवनकरिगहहू ५९ जरासिंधममगुरूसमजा
नू दिविदिसषाममप्रियअतिमानू संवरनरकासुरअरूवानू एममसषासुहृदअतिजा
नू ६० व्र: एसषाममआतिसुहृदयजानहु असुरएममहितचहै इनिसेगमैआरिमारि
सिगरराजकरिसुषइमिलहे ६१ तुमजाहुचलिवजवेगिरेहोऊवंधुमिसकरआनियेध

श्री॰भा॰
द॰१२२
122

राजसहैपिनचलहुतुमपहिसोहमैंोलपिप्याइयै ६२ दोहा इमिकहिग्यानहुवैगिरैसौरीसु
तकहहमित्र करियेयहउपकारममतवगुनपरमविचित्र ६३ सोरठा मुनिअकूरकंसकेव
चना बोल्येउवचनजुमंकरिरचना होराजननुवसुभमविचारा निजमरनैकरग्योटनिहमा
६४ सिधासिधतहांसमज्ञानू इहविचारअपनेमनग्यानू करैकर्मकोऊनिजभलताकीउ
लटोहैविधकीगतिबांकी ६५ उत्तमनोरथकरिकोऊप्रानी करैकर्मसबविधसुषमानी है
चाधीनलखैनहिसोई करैकर्मफललहैनकोई ६६ उलटेहोइ षपावैअतिघोरा सोकर्मो
हरुजविपतिनचोरा तदपितवआयुसहैभूपा करिहौमैसबसुषअनुरूपा ६७ एहिवि
धआयुसदैनृपकंसा मुनिनिजमंत्रिनकेमिपुर्बसा विदाकियैसबकौसनमानी निजमं
दिरगमनौअभिमानी ६८ दोहा तिमिअकूरनुआपनैगेहगयोहैभूप कृष्णचरित्रविचित्र
यहसुनतषुदैभवकूप ६९ सोरठा कृष्णकथासुभषानि भवरुजकौयहमूरफल रामसुसा
यहनानु कृष्णकथासुनियेसदा ७० दोहा चारछंदयहसोरठा एहिछत्तिसकेमाहि कहे
दोहरासातसुभ एहिसुनिअघनसजाहि ॥७१॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषा
षट्त्रिंशोध्यायः ॥३६॥ सोरठा सप्तत्रिंसकेमाहि केसिहिकेसवमारिहैं भावीकर्मजुग्याहि
सोसबनारदवरनिहै १ कीहिमतकृष्णकृपालु जुतिंयौमासुरमारिहैं मुनिअतिदीनदया
लु यहसबकहिहैनृपप्रति २ चौपई केसीनामाअसुरमहीसा कंसनिदेसधारिनिज
सीसा गयोनंदव्रजमनअतिपापी धरैपौअसबतुरंगनसंतापी ३ पवनवेगिगतिरूप

122A

दुरंता महाबलीबलनहैनअंता निजवपुरमहीविस्तारनकरई कंधकेसनभलैासंचरई ४
जबनिजसीसचलावैसोई नभविमानसेकुलसबसोई जबहयरीतशब्दसोकरई अखिल
विस्वसुनिहियथरथरई ५ विकटआस्यकोटरसोजासू नयनकरालग्रीववडतासू तन
अतिनीलजलदसमपेखिय महादुरासयगतिसबलेखिय ६ भीमसतहहितकरबेकाजू गयो
नंदव्रजहैनरराजू पुनिअतिनिठुरकरखलनाहू जासुनिसबकहंहोतबिमाहू ७ कृष्णलो
मनभपरसिअभागी जेलदजाहितेहिलखिरिसत्यागी इतिउनदूरइतफिरेसुमेरा कृष्णदेव
कहंदुखगयोहेरा ८ तवश्रीकृष्णजानिसबबाता गोकुलरक्षितेरेबिजननाता पुरतेबाहर
निकसनदेसा केसीनाहंटेर्योसुभदेसा ९ सुनतटेरिकेसीपुनिगाजा जिमिम्रगराजनाद
वनराजा कृष्णहिदेखिदनुजदुखकारी मुखपसारचलुदुसहसुरारी १० सोहा धायोमन
मुखकृष्णकेअतिसयरिसकरिघोरि पुनिफिरकेपगपाछलैचोटकर्योबरजोर ११ सोड
सो बचाइजदुनाथ अतिदुरतिक्रमअपरकहं जाहिदेखिसुरनाथ दुर्मेअपरकीकाचसी
१२ चौपई चोटबचायोनंदकिसोरू पुनिमारनआयोकरिजोरू हननहेतपगउभयचला
ये पकरलियोहरिदोरिसुभाये १३ पकरपानसोपुनितेहिटेर्यो सहजअयाससतधनुपर
गेर्यो जिमिउरगउरगलिसुलेके डारिदेरअपमानजुहैके १४ तिमिमुकंदुडार्योतेहिभू
पा वलिअनेतदुरिसुधिनिधरूपा पुनिसचेतभासोअकुलाई उठ्योदुसहकेसीमुखवाई
१५ महावेगिधायोहरिऔरा महाकठोरदुसहअतिघोरा नंदकिसोरदेखितेहिधावत मुख

हुं

गा

श्रीभा
द १४२
123

वायैगिरिवरजनुआवत १६ निकटआइगौहरिहसभूपा भजनिजतेहिमुयधरेउअनू
पा वामबाहुमुखमहबलकैसे उरगदागिनिजविलमहजैसे १७ हरिभुजखर्वेनबहज
वमदा परस्योरसनमोहआरूढा तवप्रलोहसमतेहिद्विजलागी गिरगोरसनसकल
मुखत्यागी १८ हरिशक्तिईश्वरकर्मअनेता मायासकलईसजइनिपेता हरिभुजतेहि
हियेगतिसोवाढी जिमिजलउदररोगगतिवाढी १९ छंद जिमिउदररोगिउपायविनुव
ढिजाइ शोषघनहिलमै तिमिवढीभुजजइमेरकीहियत्रासरुचितनहुगमगे २० भए
खरतनविपरीतसो वनलीरिकरिछितिपरिगिर्यो निजचरणचारिचलाइहतउतवि
गासितनपायौमर्यो २१ जिमिफूटिभाडाकीफुटै तिमिफुटैपोन्रपतननतासुकौ अनयास
भुजपरिवैचलीनीभुजगभोजगजासुको २२ विनुजतनअरिहतगर्वगतहरिदेवदेखत
सुखलहै हियहरखवुनिपुनिसुमनवरखतसजनदुंदुभगाहिंगहै २३ दोहा करिअस्तु
तसुरसवकोगएनुनिमनिजधाम ताहीदिनतेकौतलखिनारदगएतेहिठाम २४ सोरठा
कहीकैसपैजाइ कस्मरहत्यसमाप्तकरि तेरवेहिदतिकौआइ कहुतवधारिककंस
अव २५ चौपाई सुरत्रियपरमभागवतभूपा नहिपरिरचिकसेतत्यअनूपा बोलेवचनवि
हसुयकैरा कस्मकस्महइजदुकुलमेरा २६ तुमईश्वरभभारहरहेतु इतिअवतारेजगत
पानिकेतु सोइअवकरेउसंतसुखदानी तुमहिनभयसेकामेजानी २७ अप्रमेयगु
नअमितप्रभावा जगतईसपुनिश्रुतिइमिगावा सर्वभूतमहिकरहुनिवासा सबकै

श्राश्रय सबतब पासा २८ सात्वति पति तुम अग्य लनि येना हे श्रीपति भगवंत अनेता नेरसु अन
मे किमि अस रूपा कहेउ गिरा तुम केहि अनुरूपा २९ जौ कहा चिदमि कहिये नाथा तहां सुनहु
यह श्रुति पथ गाथा सकल भूत अंतर तुम स्वामी बसहु एक तुम अंतरजामी ३० दारु मांझ जि
मि बसे कृसानू तिमि तुम सब घट बेद प्रमानू सब घट बसहु लखै नहि कोई बुधादिक साधी
तुम सोई ३१ महापुरुष ईश्वर तुम जदुवर अपरछिन्न तुम कहहु कहहु मुनिवर तुम ईश्वर भक्त
वरदायक दुष्ट दलन संतन सुखदायक ३२ जीव अहै परिछिन्न दुखाकर तुमही सर्व हाईस
सुखाकर जीव सदा परतंत्र हीन अति तुम स्वतंत्र सर्वेश महामति ३३ दोहा ईश्वर बिना न जी
व को घटे प्रवर्त्त सुजानि कारन ते तुम नेरसु न अहो ईस भगवान ३४ चौपाई मैं ईश्वर किमि
अपर अनीसा जौ कहा चित कहिये जगदीसा तहां सुनौ विनती प्रभु मोरी सत्य कहो अ तिसा
रनिचारी ३५ तुम स्वतंत्र सब काल गोसाईं स्व बस अजा तब गुन मय माईं ता गुन कर यह वि
श्व अनेता रचहु एक तुम हे भगवंता ३६ रच पालहु पुनि करहु विनासू उदर धरउ यह सकल
बिलासू सो तुम परम ईस जगदीसा जदुकुल प्रगट भए परमीसा ३७ प्रथम भूत रघ सगरा
ऊहा भूप रूप छिति भार सिम रूहा तुम प्रगटे ते हि नासन हेतू सो तुम पवन हे सु पानि केतू ३८ अ
स्वरूप यह दनुज बिदारी जिमि अहि बिन नासु नग हि मारी जासु नाह सुनि हि बिन जिरबो भा
मिना हि तिय सुध न हि लेबा ३९ पुनि मुख हि कृसानू रस मेता अपरम झ्झ मे पा पनि केता गज
रघ कहि तक सब बिनासू कालि परो देषि हे हम आसू ४० हो बिभु तुम मम हि हो यल भारी देतन।

कौनासकहोवरवाकौ धनमेगलएघिवीसुषकारी सुषपैहैहमनयननिहारी ४१ पुनितु
मसंरवासुरहियकारी रहौअतिअजकौनिरधारी संखासुरभातीनिरदेसा नहिकंथुहिय
आनियअंदेसा ४२ दोहा पुनिनरकासुरजमनकहु मुरतेआरिकहइह छितिपरिजेअघ।
रूपसठ प्रभुकरिहौतुममनह ४३ सोरठा शत्राजीतजदुनाथ पारिजातपुनिआनेहौ पा
निग्रहनपुनिनाथ करिहौन्रपकन्यानिके ४४ चौपई पुनिकुसावतीवसिजदुनाथा कर
हुजनगहुआपसनाथा पुनिमलिहैतुरुक्मपतिभीती कंन्यामनलेहौजुतप्रीती ४५ मनुपुक
पुत्रद्विजकेपुनिआनी महाकालपुरतेसुषमानी पुनिपौडुरहतिकैजदुवीरा कासीदहन
करवमनिधीरा ४६ रनवक्रशिसुपालविनासा अस्वमेधमहकरिहौआसू वसतद्वारका
अपरअनेका करिहौकर्मजुसहितविवेका ४७ सोसवहमरथवसुषपाई जोजोकरिहौ
कुवरकन्हाई सोसवचरतिगाइहहैरवौ जेकविजनवकवहुवुधविसेषौ ४८ पुनिछितिभा
ररूपजेन्रुपा कालरूपतुमतेहिअनुरूपा ढूंकरिकर्मसारथीतुमही करिहौनिधिनिदे
थिहहमहीं ४९ द्विजकहअववेरितपरकेगा आश्रितजनकहुजोभववगा जो हेहरितवपरके
मलनमानी सकलनिदेनाअनेनरगामी ५० तुमविग्यानरूपसुषदाता परमानेदनाथजग
त्राता आप्तकामपुनिकामअनेका पुनिजगपालकहोतुमएका ५१ छंद तुमएकहोजग
पालजदुवरअवरकोनवसारिथहे निजसक्तिकरिजगहरिउपालहु प्रकृततवंदिगनहि
रहे ५२ भगवेननवगुनआमितपावनतरहिभवजेपरगहे ऐश्वर्यअगनितरावरी

124A

तेहिछोरनहिकोउकविलेहै ५३ दोहा तुमत्रिकालदरसीअहौ किमिनहिजानहुछोर जो
करावकहियप्रभुविनयसुनियएकमोर ५४ चौपई तुमईस्वरएकपरमअनीसा एकनि
येतातुमजगदीसा निजआश्रयमायाकरिनाथा रचेउअनेकविस्वजइनाथा ५५ अथवा
जरवकुलरविभारी निजकीडाहितकरेउविचारी मनजरूपतदधरअवतारा अवकीड
तहेनंदकुमारा ५६ यदुख्याततअरुवस्पुनीता तेहिकुलरिषभनाथसुभरीता वारवारवं
देपदरेनू जनकहुसुलभमनहुसुरधेनू ५७ एहिविधकृस्नदेवकहनारद करेवेनतीअति
बुधविसारद पुनिपुनिकरिप्रनामवहुभांती आयुसमांग्योगिरासुहाती ५८ हरिहरसनआ
नेदनयोरा नारदगमनेविधपुरओरा हेनरपश्रीगोविंदअनेता कीडुतिकेसोहुनमगवेता ५९
धेनुचरावतसखिनसमेता गानकवहूकरिकृपानिकेता सखापालसववजसुघरेतू ली
लावहूकरिकृपानिकेतू ६० एकसमयगिरिनिकटकृपाला गोचारतमिलसहगोपाला
कीडाकरनलगेहरिनागर परमकृपालसीलगुनसागर ६१ नीलायनकीडातेहिनामा र
चोखेलप्रभुसुखनिधधामा याहीचरतरचेउजगदीसा लरकनिसंगकीडाकरेमुनिईसा ६२
दोहा केतनेमेषअजाभए केतनेपालनहार केतनेवालकचोरकृतकृष्णमिरवस्मिसुविहार
६३ सोरठा मयसुतछलीप्रवीन मायाजाननवहुवह व्योमनामपितुकीन सोआयोतेहिखेल
महि ६४ चौपई गोपवेसधारिसोमिलगएउ सोआचरनकरतसोभएउ मेखसरिसविच
रेजेवाला चोरसरिसहुहरतेहिकाला ६५ एहिमिसवालकएकगहि गोपा गिरिकंदरमेंदध

श्री भा
द १२५
125

रितेहिलोपा सिलाद्वारतें इतिचलिआवै अपरबालकहु पुनिलेजावै ६६ एहिसवलेगो ह विध
रिजाना चारपांचजवरहेनिदाना तासुकर्मजवहरिपहिचाना सेतनकेरथकभगवाना ६७
जवलेचल्योगोपवहचोरा हरितेहिगह्योचपरिवरजोरा जिमिमगराजगहेवृकजाई ति
मितेहिपकरिलीनजदुराई ६८ सोअसुरातितजिगोपिसरूपा भूधरसमसोभयोअनुरूपा महा
बलीछूटनसोचहई किमिछुटैप्रभुदृढजवगहई ६९ नेहलालदोउभुजगहिताही पटक्यो
अवनिऊपरचितचाही नभसुरगणदेषनहरिभूपा मधपसुरीनहन्योसुषरूपा ७० गिरि
केदरतेकेजेबाला प्रभुसवकाढिलीनतेहिकाला अजगिरीसरेवमुनिहरषाई नभदुंदुभ
सुमनिवरषाई ७१ दोहा केसीवधपीछेकहेव्योमासुरकोनास कोउकहेव्योमासुरहि
न्योपीछेकेसीनास ७२ सुरगनसवअस्तुतिकरत गोपकरतसवगान एहिविधिकछुकाल
तवग्रहपहुचेबरजप्रान ७३ शंखचूडकेप्रथमही कोउकहेव्योमविनास यहविचार
हेसंतमम संसयकरहुनतासु ७४ रागद्वेषवरजोरि मजतनएहिनरदेहको तवमनते
हनयोर भमहुक समजहेसकल ७५ दोहा सप्तत्रिंसकेध्यायमहि कहेदोहरासान तौ
नछेहएहिमहकहेकथासुभगविख्यात ७६ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषायांते स
प्तत्रिंसतमोध्यायः ३७ दोहा जिमिमगकरतौध्यानवर गोकुलगोअक्रूर तिमिकीन्येस
नकारप्रभुतासुमनोरथपूर १ अठतिसकेअध्यायमहि तनीकथाविचित्र नृपमुनि
कोसवारवर पावनपरमविचित्र २ प्रातकालकेसीहन्योद्वारसतिघनुभदाम मुनिना

125

ररसुरधामगेयौमहन्यौसुखधाम ३ ताहीदिनसंध्यासमैगोकुलगैअक्रूर मिल्योकृ।
ष्णसोभावजुतप्रेमहियभरहर ४ सोरठा सुनिनारदकेवैन कंसादिकवधहेतुसब कृष्ण
कमलदलनैनन पुनिदेषिनकोमनकियौ ५ तेहिदिनसायंकाल नंदगेहअक्रूरगौ एहि
विधजसुदालाल ख्यालकरतनितप्रतिसकल ६ चौपई श्रीअक्रूरकंसकीवानी हेनृप।
सुनिकैमनअनुमानी तेहिनिसिमधुपुरबसरहसोई प्रातकालरथसुंदरसोई ७ तापरचि
ढिगोकुलकहचलेउ चलतपंथहरिपदमनलहेउ महाभागअक्रूरसुजाना परमभा
वहरिपदमनआना ८ मनमहकरतविचारप्रवीना अहोकहामैंअसतपकीना अहोकु
हाकीन्योमैंदाना देषहुनिजदृगिश्रीभगवाना ९ मैंप्रभुदरसयोगनहिंअहऊ असभा
वनासोअवकहहऊ प्रभुकृपालसर्वगतसुजाना मेविषयाजुतलंपटनाना १० प्रभुदरसन
माहिघटैनऐसैं सरदूनम्म कृतपढवेजैसैं पुनिकरिसाहसकरतविचारी विधगतिअप
रअहैकछुन्यारी ११ जदपअधमअघीमैघोरा प्रभुदरसनमोहहैबरजोरा वहैनदीजिमि
नेतुअपारा दवीवससेहिहुगोपारा १२ तवचरननतवकाकरैजोई जन्ममरनकाअघ
सबषोई जिमियहभवसरताकेमाही कोउकनरयहैसंसयनाही १३ तेहाआजुअमेग
लनसेउमम जन्मसफलभामोरि वंदनकरिहोकृष्णपदएहमैंभागपनथोरे १४ सोरठा विघ
नेआरिसुरेसजोमीननजहिलगिअहे सेततजाहिंस सोपदपंकजदेषिहो १५ चौपई अहो नेट
थारपरेयहुभाई कंसमहाखलअतिदुषदाई सोअनिकरेउअनुग्रहमोरी देषहुदेवोगति

श्री भा० ११२६
126

जियमोही १६ कंसग्रनुग्रह हरिपरकंजा देषिहें जो जनभवरुजगंजा जापरग्राश्रितजी
वघनेरे ग्रंवरीकग्रादिकवहुतेरे १७ दुस्तरतमसंसार ग्रपारा तरेग्रमिततनेहि कोगनि
पारा विधशिवरमाग्रजानि तजाही सुरमुनिसकलतिजपहिजुनाही १८ ग्रतिकृपालसव
कोसुषदाता वनवनफिरतदेवमुनित्राता गोपीकुचकुंकुमकरिरंजत एभिविधसुल
भलषउभवगेजित १९ ग्रपरमनोरथपुनिहियधारु हरिदरसनहितप्रेमग्रपारु देवहु
नेरसुग्रनमुषग्रानू कुंडलसुभगमहाग्रतिसानू २० गुंजमालपहिरे व्रजराजू त्रिभुवन
उसमाजेहिलोषिलाजू सुभगकपोलगोलग्रतिसुंदर ग्ररुणकंजलोचनसुषमाधर २१
कं०
वंकभौंहनासामनहरनी मुसकनमेरमंदसुषहरनी घुघरारीग्रलकैछविछाजत कौ
कां०
रिसोभादुतिलाजत २२ दोहा निरषेहरिमुषदेषिहौंसगुनसुभगभामोहि मगममरछुए
कहिगयसफलकाजसवहोइ २३ सोरठा ग्रपलनिमेनाम्याम निजइछ्याकरिनेरसुत
छिनिमयरहिहे काम गोकुलवसलीलाकरत २४ चौपई ग्रैसेसोभासिंधुकृपाला दरस
कं०
नमेपैहोननकाला नेरसुग्रनदेषौनकनेहि छिन नयनसफलमानचमेतेहिछिन २५ कर
नकरावतजिमिनरकोई ग्रैसेकरतकरमसवसोई किमिपरिब्रह्मकहोनुममाई ग्रमि
सेकाछोउकरैचनाई २६ सेकानासलतासकुभारी कहग्रक्रूरजुहदयविचारी कारज
कारनवंसुजहोने साधीसवकोकहमनहोने २७ ईछिनमात्रकरेसवसोई ग्रहंकाररं
चकनहिहोई दृष्टिमाहिकल्पमसवजाको सतचितग्रानंदघनप्रभुताको २८ तरपिनि

126A जअधीन जोमाया तागुनरचसबजगउपजाया जीवकर्मसांतविविधसरीरा सबघटबसो
एकजदुवीरा ३० अंतरजामीरूपअनेका सबमहसकिल्पकल्पयहएका वंदावननतरुलता
अनेका अगजगमहसोहैहरिएका ३१ नेरजसोहापुन्यअधिकाई धनगोकुलजहांबसैकु
अरकन्हाई गोपीगृहवसिकरिबहुलीला अहंकारगतिरतिसमसीला ३२ दोहा अहंकारजो
केनहीं आतमरतनगतिकाम लीलाघटैनतासुकोकरैसुबपोबिनुकाम ३३ सोरठा इमिसंका
करकोइ तासनकहितविचारकै परहितनितचितजोरि हरिलीलासबजानियै ३४ चौपई
हरिगुनकर्मजिन्मगुनवानी अघलसुमंगलकीहैं यानी पुनिसबअघकरकरैबिनासू सु
नैमवहिजेजनजगतासू ३५ हरिगुनसहितसुभगजेवचना प्राणमाचककहुसुधासुरचना
सुनतमात्रजगहोइपुनीता हरिगुनजुतवानीसुभरीता ३६ हरिगुनकथाविमुषजेआनी सुंदर
वपुसुंदरकुलमानी बसनविभूषनगुनहैंजेऊ मनककविभूषनसबजगतेऊ ३७ संतनिके
मनतेउअैसे सबसंगारसरिससबतेसे सात्वतकुलप्रगटेएहिहेतू रछननिजभक्तजेजगसे
तू ३८ वर्णाश्रमकेधर्मअनूपा तेहिपालनहितधरेउसरूपा अरुअसुरनरिनासकेहिहेतू
प्रभुलीलाकरिकृपानिकेतू ३९ बजवसकरतकर्मजगनायक जसवितानछायोसुषदा
यक ताहरिकहदेषिहोमैंआजू सकललोकसोभाछविभ्राजू ३९ जोहरिकूंदेष्योमेंअ
निसुषपाई कोमनैःचडुगुणकियाचितलाई थविकोउवलुनासुसवरूपा एकसंगपर
लषियअनूपा ४० दोहा जाहितमैमनाङ्गिगनकहूअसवहोइअप्रपार श्रीवंछितसोभा

श्री मा·
१ १२७
127

सरन प्रगट्यो नरकुमार ४१ सोरठा सोइ ईस्वर भगवंत निभ्रम मे जेहि देखिहौ प्रात काल सुषदेन
सगुन सुहावन मै लष्यो ४२ चौपई देषेउ नव हरि वरन सरोजा जो लषि मोहे अमित मनो
जा गेहहि होस पद वरन सुषदेनी तेव मैं संपरन लागि तुरेता ४३ राम लषन पद धरि निज सी
सा ध्यान करत तिनेहि मुनि विधि ईसा केवल हिय ध्यावहि सब जाही मे सच्यान रे विहोनाही
४४ पुनि पुनि लषि पद पंकज तासु गोप सहित मैं वेरव श्रासु निज चर लार विरहि गमोही प
स्यो रषिहे रितकुल डोहा ४५ तव निज हस्त कमल मम सीसा धरि है सुषद कृपाल जगदीसा
काल व्याल त्रासित मे होई अभय दान सब कौं कर सोई ४६ जो कारि कंनर यो वलिनी रा अपप
रभू मिर यौ मनि धीरा जेहि करि कंज सरूप कवारा कवहु कर यो वस्तु कछु सारा ४७ जे मम मु·
छ जे मन वनय हारी वछि तल्ल हेल्ल काम सुषारी अनुरत कहं अति सुष दानी अपर करि कहौ
वषानी ४८ दोहा राम समय महु गोप कन्ह भयौ अमन तसु वसन्चर पौछ्यो निज कंज सो मि
ट्यो नियन भ्रमघेर ४९ सोरठा अनि सी रमन भ्रम विंदु पौछ्यो जेहि कर कंज सो सोई कर
श्री गोविंद धरिहै मम सिर आनु हलि ५० चौपई तिमि विचारु मुनि अपर विचारु गहि से
कापुनि करू परिहारु जधपि मैं अरि कौ हो हूता महा मेरमनि कूर कुरुता ५१ अरि कौ हूत
सब यह त्याही असनौ प्रभु मम आवन ताही प्रभु सर्वज्ञ सकल घट वासी मम हि असे नर
सोइ सुषरासी ५२ वाहर भीतर सोइ सव ठामा भलि अरु मेर जा न सुष धामा एहितें अरियु
न भाव विहाई करिहै कृपा सेन सुष दाई ५३ असुर जनहीन वछ ताहरी जो नि अपमतिन

127A

कीमतिहरी जवनिजचरणकंजकेपासा जोरेहाथसरोतजिग्यासा ५४ क्रपादृष्टितंवमोह
निहारी हरखनिमेरघुनतकुंजविहारी सपदिमोरअघभातवनासा प्रेमानेरलाभमोहिग्रा। रं
स. ५५ पुनिममसुहृदसातिजदुनाथा ममदेवतसोइप्रभुरजनाथा पुनिग्रजानभुजक
रिजगसाई आलिंगनकरिहैमोहिधाई ५६ तवहितोहिसनममयहदेहा पावनअतिनिर्म
लभाएहा कर्मरूपवंधनदृढमोरा तवहिसिथिलभाकरइनिजोरा ५७ छूटसिथिलभाजव
कर्मवंधनसहजततवभवसरितरो लहिप्रेमसंगरमेसकैमैजोरिकरिहैहोसरो ५८ तव
कृस्नपरमकृपालमोसनमंजुवचनउचारिहैं हेतातहेअक्रूरहमिकहमोहिहरिसतका
रिहैं ५९ तवभयौअतिसैपरमपावनसफलजन्मामैभयौ जेहिकृस्नकहुनअदरयौते
हिंअधिकपसुसमभयौ ६० सुनसुहृदमिलिवोप्रस्नकरिवोअहेयहसवजीवकोपरव
सकहयहघटेकैसेगहनजेश्रुतिसीवको ६१ दोहा इमिसंकाकोऊहियकरैताहिकहत
समुझाइ करताहरताजगतकौतहोनसेसयकाइ ६२ चौपाई हरिकहिप्रियअप्रियनहि
कोई एहितेरागद्वेषनहिहोई नरविभक्तिपद्यप्रतिपाला सत्पसेधप्रभुपरमकृपाला ६३
समदरसीजदपिभगवंता तदपिजेहिसुषजेनिमसंता भईविषम जोकहकोई ताहिकह तां
नअैसेनहिहोई ६४ जिमिसुरद्रुमनहिविषमसुभाऊ देतसवहिसमफलसतभाऊ परसौ
तेहिकैनिकटनजाई कहुकैसेफललहसुषपाई ६५ आलिंगनकीनेतहिपाछे करजोरे
लखिहैमोहिआछे मइमुसक्याइवाहगहिमोरी लेजेहैनिजसदननिहोरी ६६ पुनिकरम

श्री भा
६२२८
128

मसतकार अनेका पुनिहि हरिसब सहित विवेका भोजराज सनकर्म दुधारी पुनिहि आपमो
हिगिरिधारी ६७ हेनपहू विधकरत विसारा सुफलकसुत मम बुध उदारा रथ चढ़ि चले सोपा
नसुषपाई सेष्याकजपहुचौ सो जाई ६८ प्रेम मगन मम षबर न ताही वनपहुचौ सो संध्या वि
तताही नवव्रज निकट चले स्यो सो जोई अरुत हरि पद छिति तिन जोई ६९ दोहा अखिल लो
कपति मुकट वर निजपद वंदनतासु तापर अंकित नम मिलषि प्रेम उमगा गहियतासु ७० सोर
ठा जव अंबुज कुलसारि तो अंकरि अंकित रेनुलषि श्रम सोचारि फल ध्यारि ताहि परस मुन
वाल मिल ७१ चौपई प्रभुपद अंकित रज महदेषी भयौ हियै आनंद विसेषी अधक प्रेम
पुलकित सवगाता जल भनयनन नलभ स्यो सुहाता ७२ ध्वंदिन त्यागि तुरत रज माही गयो
लोटनेहि तन सुधमाही अहो लाभ अमत हानकवहू दुर्लभ हरिपद रज भालाहू ७३ को
उकहु किलोट्यो रज माही कछु के कहि मन धो कछु नाही तहां कहत जेहि संभ्रम नेमा ता
हिन पल सम नवन हि नेमा ७४ नर तन पाइ लाभ नहि आना पुरुषार्थ सब इतनो जानो
त्यागि निरभय सोक सम हूा हरिगुन सुनत होइ सुषसूरा ७५ जिमि अक्रूर चल्यो मगमा
ई तन मन वानी हरिपद लाई इतनो लाभ मनुजतन केरा अपर न स्रुति पुरान सवके
रा ७६ पुनि गोतोहन ढोर अनूपा सुफलकसुत को सुष अनुरूपा तहां लख्यो यह वपुघने
ता नापद कूधावे अजनम्रिकेमो ७७ जहां लखे दोउ नंदकिसोरा मोर स्याम अरु गौर नरेउ
जोरा नील पीन वरसन सुहारा अंबुज नयन सुभग छवि छारा ७८ दोहा श्रीनिकेत भुज

जे

दंडहोउ नवकिसोरवपसोहू अतिसुंदर अरूसमुषहोउ छविरहवालगतिमोहहि ७९ चोपई
ध्वजावज्रअंकुसअंभोजा एहिलछनजुतचरनसरोजा चलतचारुगतिछविमनहारी मेरमु
सकिचितवनमनहारी ८० रत्नयुक्तमालावनमाला नेहसुअनहोऊसुभगविसाला अतिउ
हारकीउरागुनभूरी कृतमजुनचंदनछविरूरी ८१ जगतआदिसबजगकोहेतू प्रकृतपुरुषका
रनश्रुतिसेतू बलसमेहोऊसुषरूपा ब्रह्मआदिअवतरेउअनूपा ८२ छितिकरिभारउता
रनहेतू उभयरूपदोऊकृपानिकेतू निजस्वरूपकीप्रभानपोरी हरतसकलरिसतिमिरव
ढोरी ८३ मरकतमनिगिरिसममनभावन जातिरूपकरिवछविमसुहावन प्रभुसरूपअ
सदेखिसुहावन अतिसनेहमुनहियहुलसावन ८४ सुफलकसुतअस्येहनकहुत्यागी गि
रेउचरनहरिकेवडभागी अतिविह्वलचितआकुलनयना पुलकितनोरूहआवनवयना ८
५ गदगदकंठमुषवचनननहिआई प्रेममगनमनेनझरलाई मेंअक्रूरकरउपरनामा एतनो
नहिकहिसकअभिरामा ८६ दोहा प्रभुजानाअक्रूरयहआयोपुनिजेहिकाज सकलजानि
सर्वज्ञहरिकह्योनकछुनरराज ८७ सोरठा परयोचरणहरिगदेषि निजकरलिएउठाइत
व करिहियप्रीतविसेष आलिंगनहितसोकियो ८८ चोपई चलजतेहिकहप्रनतनिहारी
तासुपानिनिजकरमहिधारी सानुजहरितेमगहकहस्याए सुभगवरासनपरपधराए ८
९ पुनिस्वागतिपूछीबहुरीती विधवतपाइधोइजुतप्रीती करिमधुपर्कयथाविधितासु
आन्योअरिहनसुभगसुआसू ९० कह्योनिवेदनसुभसुहावन सादरसेवाश्रमहिनसा

श्रीभा॰
१० २२९
129

बनि पुनि षट्रस भोजन बहु भांती भोजन नाना गुन बहु भांती ९१ सादर तेहि भोजन करवाई
तेहि पीछे बलजू सुख पाई बहु सुगंध युत दिय सुख वासा पहिराये अक्रूर सुमन सुवासा ९२
इमि सनमानन हरि ढिग आई पूछत कुसल अरु पुनि सुख पाई हे अक्रूर कहो केहि भांती जीवहिं स
कल बंधुजन जाती ९३ जीवत कंस महा खल पापी सकल जात जन कहं संतापी पसु घाती।
गृह उरगा गेसे इमि सब सकुन तेहि ढिग तैसे ९४ छंद तेहि ढिग सब कैसे बसहिं जु ऐसे
जिमि षग व्याधा भौन मही सब कहं संतापी खल अति पापी भगनी सुत हति लाज नही ९५
बहु करन विलापा करत संतापा तदपि न कंस घृणा करत जी तेहि धरि मारा अघन विचारा सोउ
करने गिरि गगन भजी ९६ अस सोच लरा जा भाविनु को माता सु प्रजा की कुसल कहा तेहि
ढिग जे प्रानी जीवति जानी सोइ दुख भए कल्याण लहा ९७ अस सुनत वचना सत अक्रूर रचना
ने रबहु तम मन मान करी सुनि कै यह बानी सब सुखदानी कंस हूत मग पेख ही ९८ दोहा
एहि विधि पूछ्यो नैन सब सुख पायो अक्रूर सुख सों बैठ्यो सेज पर मानन लह्यो भरि हरि ९९
सुफलक सुत जिमि हरि भज्यो लह्यो पद कल्यान रामसखा प्रभु निमि भजो तव प्रसन्न भगवा
न १०० कहे सो रदासा तव रहे छंद चारि सु बकार रह कहे सु भरो हरा अक्रूर सु कथा भव हार १०१
अठतिस को अध्याय वर सुभग कथा सुख दानि कहत सुनत अघ कहं हरति करत सो विदु
भाषानिबंद्ध
विहानि १०२ इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे अक्रूरागमनो नामाष्टत्रिंसो
ध्यायः ३८ दोहा उनचालिस के अध्याय महं कंस मधुपुरी जात गोपी कहिहैं वचन

129A

वहुसोसवएहिमहख्यात १ पुनिकासिरीकैं अक्रूरहिनिजलोक प्रभुतेहिंमहांरे याइहैं जेहि
लखिनरगतिसोक २ एतनीकथापवित्र अतिवरननपरमविचित्र मुनिकहहु हे सवभूपसो सु
नि अघहरैनमित्र ३ चौपई वोलेश्रीशुकग्यानेरकंरा हे नृप सकलकथासुषवेरा रामक
ष्णतेलहिसनमाना वेदयोसुभगसेजसुषमाना ४ मगमहकरेउमनोरथजेते विउअनयासल
हेसवतेते श्रीनिकेतजेहिसनमनमाना तेहिकहहुसवसहजहकल्याना ५ तदपिजेहहरिरतिजन
कोई प्रभुतेकछुजाचतनहिसोई साधेतनकरअसमयुरारी सुफलकसुतढिगगे असुरारी ६
सुहृदवंधुजिमिकिमकररहहू कंसराजवससुषकसलहहो अपरकंसकेहियकैहेतू ताए
कूनहितककपानिकेतू ७ श्रीपतिनववोलेमृदुवानी साहरसुफलकसुतजननजानी अहोता
तआएभलिकीनी हमसववंधकोसुषदीनी ८ उतजेभ्रातवंधुजनकोई वसतमपुरीजहंनृप
सठसोई तिनिकेसुषदुषकीकछुवाता कहहुयथाहमहेताता ९ ममकुलकोजो हैदुजरू
पा कंसनाममातुलजोभूपा तिनप्रजाकेरसुषकैसे एकपितातमघटैनहिअैसे १० ममनिमित
तेउविनुअपराधा सहेमहादुषअमितअगाधा औरमथुराकेजोनरनारी कहौतिनकेदुष
सुषहितकारी ११ दोहा ममनिमित्ततिनकेननपमारेवहुतअनूप पुनिहंपतिवंधनसहेमम
कारणदुषरूप १२ सोरठा हे अक्रूरप्रवीन तवदरसनहमकहभएउ अतिमंगलसुषदीनि
यहवांछाहमकहरही १३ चौपई तवआगमनहेतुहेताता कहियवेगिहैसोसववाता हेनृप
एहिविध श्रीभगवंता पूछ्योवचनसुभगसुषकेता १४ सोअक्रूरकह्योसवगाई भोजराज

प्रं ५

नं

श्री भा०
१२३०
130

करतूतबुराई सोरीवधउपामसबगायो जदुकुलबैरभावहियछायो २५ प्रगुपजन्मसमिस
आनिहुनाही यहकह्यो बोलिनिनचितचाही नारदकह्योकंसप्रतिजाई कृष्णजन्मसोरीग्रहगा
ई २६ जेचाणूरआरिबलभारी जेमरिहैरोउसुतनिरधारी तहिविधकंसमनैभ्रमजेते सुफल
कसुअनकह्योसबलेने २७ सुनिअक्रूरबचनहोंउभाना विहसनेहरिगगेहरवाता कंससमर्म
सबकह्योबनाई जेअक्रूरबरनसुनिपाई २८ सुनिनेह्वचन नेहिकाला अपरनेहनेबुध।
विसाला तिनप्रतिकह्योबचनअक्रूलाई चलहुकंसनेबोलपठाई २९ रथिचढनधीरसकु
लजेहोई संगुहुकरहुसकलमिलसोई उत्तमबस्तुहोइजोजाके लैलैचलहु चाहचितचोके
३० होहा कालमधुपुरीचलसबैभेटभूपकहहेइ मयमउत्सबस्वहेपिहैं इतिअरहैसबसोइ
३१ चौपई नेहरिगिरासुनिब्रजरखवारे घरघरयहतिनवचनपुकारे गोपनिगिरासुनीयह
जबहो महादुखउपज्योहियनबहो ३२ इतिअक्रूरनामएकआयो नेहरिकहकंसबुलायो
रामकृष्णसबबसनसमाना पुरलैजानकंसनहराजा ३३ सुनिकेव्यापाभईअतिनाही
जीवनप्राननकप्राकमाही सुननमाअहियतापअपारा नमस्वासडारतबहुवारा ३४ ता
कधिमुखमलीनछविहीनो सिथिलदुकूलबलयकरिछीना कंसगृंघबुलिसुधनहिकाहू
एकएकगनि इमिचितचाहू ३५ कोउकरिकृष्णध्यानकरिमोनी नमनआरिगतिपकी
चितेनी निजसरीरकीसुधनहिताहू जननमुखलरआतमलाहू ३६ अपरक्रियाकोउ
हरिमुखचाली सिथिरतलहीमोहिइयथानी मरमेरहासिनुमअनुरागा करतगिरासुनि

130A

हियप्रियलागी २७ सोइभइमनहुमोहनीजेऊ तेहिसुमितेमनभापरितेऊ कोइचित्रस
महियहोतभईगोपी औरतहांएकमनमेंअतिकोपी २८ दोहा कोउमुकंदकोललिग
तिहमअविलोकिनेवैन पुनिपरिहासअनेकविधलीलासुषगुनऐन २९ सोरठा तें
करतचिंतवनताहि भईविरहवसविकलअति पुनिसिमटीप्रियचाहि सजलनयनवो
लीवचन ३० चोपई कहहेहिलमिलवचनअनेका वोलीकोउएकसहितविवेका
भईकृष्णसंगतिसुषदानी सोइविछरतअवदुषकीषानी ३१ विधकृतसवपरपंच
निहारी ताकहिदोषदेइअवनारी अहोविधातादयाविहीना कृष्णसंगकाहेलषिदी
ना ३२ प्रनयप्रीतिअतिनेहवढाई लषीमित्रतातेसुषपाई तिनमित्रनतेसुषअरुभो
गा तिनुपायेतेकरसिवियोगा ३३ मातेदयातोहिनहिलेसा किमितोहिकहहिप्रजेसम
हेसा तवकृतकर्मसकलनहिसांचा अर्भकसरसअहेमतिकाचा ३४ जिमिवालककौ
उषेलवनावै करिकमाइफिरतुरतनसावै निरतकर्मआहिसवतोरा असमतितोहि
नचहियकठोरा ३५ छंद तोहिचहिनऐसीसठमतिजैसीकृष्णदरसकीहानिकरै अ
षमहिंश्रीआननएहिव्रजकाननमिलअनेकविधिमालधरै ३६ सुंदरमनहारीकुंज
विहारीवदनअमिहारीफूंदपरी सोभंसुठकारीअलकसुधारीजुगगंडनितनफूंदध
री ३७ अतिसुंदरहासामदकंजहासासोकविनासारेषतही असवरनदिषाईसकत सुषरासा
लोभाईपुनितूचहितेतोहिऔरकही ३८ अधिघरैनतोहीचितनिरमोहीकर्मसवैअन

श्री॰ना॰
१३२ 131
य

निंदनही दैकै अपहारी हैषयकारी क्रूरमहामतिमूढसही ३९ दोहा महाक्रूरतूकु
मलसुतनैनहरत अबमोर दृगहैकारिनहि फोरियै कर्मविफलसबतोरि ४० चौपई
मैनहिहरोहरे अक्रूरा जोकहाचिइमि कहितै क्रूरा तोविनुकोउ अबसकरैन आना
मिसअक्रूरनामहमजाना ४१ हरनहारतू अपरनकोई नामांतरकरिहै तूसोई
जोकहाचि अैसे पुनिकहहसी हरौननैनकस्मकोचहसी ४२ तोसुनवचनकहेहम।
तोही तूजोनयनरियौहमोही ताहृगकरितवबसबेचतुराई जगरचनाजेसबलेव
नाई ४३ तोतववसकस्मदेवएकअंगा गुलेननरपितवगुनभंगा इमिकहनिरषतसं
ततनाही एहनैनचाहियअमरषआही ४४ तासोकस्मदरसकीहानी करिबिमेरह
मअंधअयानी इमिकहिविधसोनेहितजिवामा कहतपरसपरमतिअभिरामा ४५
हूसाथिनैरसुअनकोनेहा छनभंगरहैनहिसंदेहा हमपतिपुअनसबजननसबत्यागी रा
स्वभावकरिपरअनुरागी ४६ पूर्वकृतनिजकर्महमारे परवसभईकदाछनिहारे
मेरमेहमुसबकनिलघिबांकी ननमननैरेआसाअबताकी ४७ दोहा सोमुकंदहमकौस
थीसम्पकुलयैनकोइ सोतनप्रियमेहतवबधू सलहूनिवारहिसोइ ४८ चौपई अप
रनारिबोलीअकुलाई सहितईरषावचनसुहाई आगुनिसाकेअंतप्रभाता लसपषा
सियाउनकैमाता ४९ जेपुरवधुकस्मसुषदेषी हसनिमेंदसोइसुधाविसेषी ने
बहारकरिहै जेपाता तिनकहसबसुबलहीनिदाना ५० दिनदैचाररेषिपुरसोभा

131A
इति अहै मन हम तै लोभा अैसे कहत भई एक कोई अपर कहै अैसै नहि होई ५१ हे अब
ला तै सुनि मम बानी नेह सु अन अति गुननिधि पानी वे पुरुष धूरूप गुन धामा तिन के ब
चन सुघर अभिरामा ५२ सो सुनि हैं जवने रकिसोरा हूं है नेह अधीन चित चोरा लज्जा जु
त मुसकन लखिनासू हाव भाव जुत बिबिध बिलासू ५३ पिता आदि पुनि अपर अनेका
य है घने हित करन नहि एका आप मन खौ परम प्रवीना हम ग्रामीन बाम मति हीना ५४ हम
अबला तुम ही उर देखै निरखत रूप यह औरन ही पैखै कहु कैसे आवे इति सोई नहि अै
है नि अै जिय जोई ५५ दोहा हे सखि मम उत्सव रह्यौ तासु पाअ अब आजु भयौ अपर तू जा
नि अब नहि विचार कौ काज ५६ सोरठा सात्वत अंधक भोज वृष्णि आदि जे पुर बसत ति
न के हृदय सरोज अति उत्सव तिन सबनि के ५७ चौपई श्री मुकंद रस बंस भुआनी दे
खिहै निज दृग करदुंभि पुनि मग चलन लोग पुरवासी देखिहै बदन सदन सुख रासी ५८ दुंबहानी ८
तिन के उत्सव पर घर आजू सफल मनोरथ सब सुख साजू अब अक्रूर रहि जो सन करही
बानी बहुत भांति बिस्तरही ५९ अैसे कर्म करन को हारा अति निर्दय पुनि क्रूर अपारा
दुखिन देखि जन बिनु करि बोधा प्रिय प्रीतम लै चलि गत बोधा ६० महा क्रूर यह है सुन रा
सी एहि अक्रूर नाम उपहासी नाम करन निज कीन अजाना एहि के औगुन नहि पहिचाना
६१ धग जीवन हम मरे हे आली तजे नात हम कह बनमाली जरठ गोप ए परम कठोरा मनै
करत नहि एहि बरजोरा ६२ क्रूर बुध यह करत अनीती धरि सेदन लै चलु जुत प्रीती बर

श्रीभा
१२२

जनकेप्रानमेरमतिमृदे देवीगतिभएमोहिअरूढे ६३ जोवहहेवहोतअनुकूला तोइनकेहिय
उपजितसूला कैकुअपरहोतउतपात् कैकोउवज्रपातसंघात् ६४ कैकोउवधमरतरी।
आजु तोइतिरहहिसरैममकाजु प्रेमलनागोपनिकीअतिसोई लखिअक्रूरअचरजमैहो
ई ६५ सोरठा सोनहोतमरीआजुदेवआहिप्रतिकूलसखि इमिकहिसबीसमाज पुनिअप
समहिकहतकथु ६६ चौपई चलौसबैमिलहरिढिगजाही मनेकरेंहटकेहमताही अपर
करहितहवधसयामै घेरहैकिमिचलियअयाने ६७ सुनिरीतेअतिसैमतिहीनी कहाकरें
गवधप्रवीनी अघोनिमियकस्नविनुरैवै जगसतकोटिसरसिदुपहैवै ६८ तासुवियोगम
एविनुप्राना काकहिहैसबवधअयाना रीनचितमहउरहिनकाहू कस्नचितसबनिरहता
हू ६९ कस्नहेतुयहसाहसनीको हेकरनीयतेबनहिजीको लीलाललितमेरमुसकानी र
हसमंत्रबोलनिरससानी ६९ पुनिकटाक्षअवलोकनविपकी रासरसमापरिरंभनहिय।
की सोनिसकस्नसंगकरिमोही छनइवगईनसुधकातोही ७० ताहिकस्नविनुअतिदु
खभारी विरहदुखकिमिनरहिविसारी नहितरजाइब्यथायहगाढी जोपियअंगसंगकर
वाढी ७१ विरहतरनकीरहीजुवाला रहप्रानकहुकिमिदुखसाला दिनअवसानकस्नवज
आवत सखासंगलैधेनुचरावत ७२ मोरजभरीअलकघुंघरारी सोरभसुभगचिक्कन
कारी मकराकृतसोभनैरलाला मोहिलभईदेखिवदनकीबाला ७३ छंद अतिसुभगसु
धारीचिक्कनकारीनारीनिरखरफूँदरी मुसकनिमृदुमतारेहिअनेदावेकविलोकिनचि

132A

नेहरी. ७४ ऐसो ब्रजनागर है सुषसागर तामिनु कहु किमि प्रान रहै इमि कहि ब्रजना
री हियदुषभीरी मनप्यारे परवाह न वहै ७५ विरहातुर सो पी एहि विधि गोपी सपरि ल्यागि।
सब लाज रई तजहि यकुल कानी सस्वर वानी रोवहि तन सुध हानि भई ७६ हे नाथ अना
थाकरियसनाथा हा मोहर गोविंद ज्ञानी इमि रोहत वामा गतिसुषधामा स्यामा वय मन स्याम
धुनी ७७ दोहा एहि विधि रोवत ब्रजतिय निमयो भोर ब्रज अंत कंस दूत रवि उदय लषि
सन नियमादिक कंत ७८ सोरठा नित्य नेम सुषमानि संध्या वंधन आदि सब कियेउ स
कल नियजानि रथ हांक्यो अक्रूरको ७९ चोपई नंदादिक जे गोप सयाने निज निज स
कट साज मन माने भूरि भेट ता पर धर लीनी गोरस मादि माट भरि दीनी ८० चलत कृस्न
देष्यो ब्रजनारी जाहि मिरे तर्ते हि इकु प्यारी नयन सयन करि कृस्न कृपाला तिनि हि
अनदिति कहि गोपाला ८१ सैनन मांगसी श्रुहम अहै इमि सुक्यो तिरछी करि भोंहै अति
तावित पुनि तिनहि निहारी निज ग्रस्थानहे तु दुषभारी ८२ सहित प्रेम हरि दूत पठाई करि
आस्वासन तेहि गजाई ऐसे शीघ्र कह्यो तिन आई रही मोन गहि सुधन हि काई ८३ इकु
टकलषै केतु रथ केरी मन हरि संग फिर्यो नहि फेरी पुनि रथ रेनू लषि मन लाए चित्रपुत्र
का इति की भाए ८४ जब रथ रेनु लषीन हि जाई है निरास मंदिर पुनि आई प्रिय चरित्र
अति ललित अनूपा गावहि सस्वर सुष अनुरूपा ८५ किये चरित्र गावें ब्रजनारी बाल
मुकंद गोविंद मुरारी एहि विधि दिवस बना वहि नारी कृस्न विना तिन कोइ दुषभारी ८६

न

वायुवेगिरथचढ़िदोऊभ्राता अरुअक्रूरसहितजगत्राता कालिंदीतटगेजवनूपा जलअ
यहुरनतरनिमवकूपा ८७ दोहा स्यामसुभगअतिविमलजल उतरिकढ़िउहरिपान स
घनरुछायापासुभगरथ नहवरोसुजान ८८ सोरठा तवअक्रूरविचारि इतिउतरेपी
वहुफिरत सकुसंकाउरधारि रथदेखारेउवेधुहोऊ ८९ चौपई श्रीकृस्नमांगकृस्नपेआह
परस्योजमुनागनेस्नान विधवतसवकरिक्रियासुजाना कंसहूतहियसंसयआना
९० कहांमल्लवेअसितसमाना कहांवालसुकुमारअयाना इमिउपजीसंसयहियता
स हरिसर्वज्ञजानिहियतास ९१ करतिहमजुनजलमहिंभूपा देखेउजुगलसरूपअनू
पा रामकृस्नलखिभ्रमचितभाउ रथपरहे इतिमनकितलहेऊ ९२ पुनिवाहरदेखिर
थमाही वेठेसुवदससघनतरु छाही जलमहिलव्योमसावहेआही पुनिनिमज्जिदेख्योवि
तवाही ९३ पुनिदेख्यानहस्नोहरिरूपा वेदितसुरसुरेसगनभूपा पुनिकोतकअौरेकधुहे
पा सोकहियनहैरूपविसेषा ९४ पुनिएकस्वेतवपुषअतिसुंदर कमलकुंदहमगिरि
समभाधर सुभगसहस्त्रसहेसिरजास महसमोमिलमनिदिव्यप्रकास ९५ नीलांव
रधरिधानअनूपा तेहिउतसंग सुखदसुधरूपा वेठेपोलप्योरूपघनस्यामा पीतवा
समुनिमनअभिरामा अभयदानभुजचारिविलासा अरुणकंजदुतिनयनरसाला
कोटिभानसमसुभगसुहावनि निरवतमुनिमनअतिसुषपावनि ९६ दोहा वदनसा
रसोभासदनमंदमंदमदहास उअनतनासासुभगसुठिअवणमनद्रुछविवास ९७ सो०

मोहवे कामु यरूप सुंदरगोलकपोल जुग अधरविंवअनुरूप पीवरभुजाप्रलंववर ७६ चोपई
तुंगअंससहेउ उरछविधामा कंबुकंठसोभाअभिरामा त्रिवलीसुभगनाभगंभीरा चलरहलसरस
उदरमतिधीरा १० कटितटिवहसरेषिमनहरई स्रोनीरेसअमितछविधरई कटिभोरूदय
जानअतिराजे गुलफाजुगलषिउपमालाजे १ पदजरूचिरसवसोभाषानी नषमनिअरूणको
टिससिजानी तेहिनृत ललितअंघ्रिजुगसोहन देषितमुनिजनकोमनमोहन २ महाअमो
लकमनजेहिमाही सुभगकोटकटिकंकरमाही ब्रह्मसरूजकटिसहअनूपा अंगरनूपरछ
विधरभूपा ३ कुंडलकरनसोहछविनीकी सरवाहिकछविभावतिजीकी श्रीरेखाउरलसत
ललितवर वनमालाछविदेषियकतिमन ४ नरसुनेरअहिसनकाही विधसुरेसजेमुनिस्तुत
वाही ब्रह्मसुअनतवगिरिजानायक नारदहिजेप्रभुजससगायक ५ अरूप्रह्लादअरजेसेता
भगवतजससगावहिवुधवंता भिन्नभिन्ननिजवुधउआगर प्रभुगुनगानकरहिमतिनागर ६
छेद गुनकरहिगानसुजाननागर कृपासागरकी वरे अरूअहसिद्धप्रसिद्धजेतउकरहिनुति
एकहिसवरे ७ विद्याअविद्यासक्तद्वैजगिहेतुसेभवमुक्तकी अरूतासुकारणसक्तअपराअ
रुनामाजुक्तकी ८ दोहा अियापुरुषिअरूगिराएककोतिकी विएकनाम अपरतुसएककहे द
लाउर्जनामसुषधाम ९ अहलकसुरमुनिसवेसेवतप्रभुपददेषि अतिसेमयोप्रसन्नहि
यउपजीभक्तिविसेषि १० सोरठा महममकृपाकृपाल परमईसपहजगतपति अतिसय
दीनदयालहमिजान्योअनुरतव ११ पुलकअंगअतिभाव सजलनेयनगदगदगिराप्रनि

श्री भा
१२५
134

धीरजमनआव जोरियानअस्तुतिकरत २४ एकादसमुभरोहरा पाँचछेरसुघरानि कहे
सोरहासुभगनसमुसुनहोइभवहानि २२५ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषायांनिबंधे
अक्रूरप्रयानोनामएकोनचत्वारिंसोध्याये: ३९ दोहा अबअक्रूरसुकथकहइस्वरजा
नौहरिकरि प्रनामअतिभावसुतबबरननतकरतविसेषि १ चालिसकेअध्यायमहिअगुल
सगुनहरिरूप जाहि विधअस्तुतिनिजवरनवरनततसुपरअनूप २ चौपई कहिअक्रूर
नाथजुगहाथा धरितवपदपरिनिजमाथा तुममममपितासरसहेताता किमिचेहौंमम पर
जलजाता ३ सोकराविद्रमिकहिमुरारी तहाँसुनियप्रभुबचनहमारी आदिपुरुषअ
बयसुघरासी जगतहेतुकेहेतुप्रकासी ४ जगतहेतुश्रुतिकहैरमेसा मैंकैसेतवबच
नअंदेसा सोकराविद्रमिकहिपनोसाई सोनीतुमकोउअपरनकाई ५ तबनाभीसर
सीरुहभएउ तासुकोसउजपतिविधकहेउ तेहिंतेप्रगटभएउसबलोका जीवचराचर
जलथलओका ६ भूजलअग्नपवनआकासा अहंकारअरुमहतप्रकासा प्रकृतपुरुष
एतेजगहेतू तुमसबकारनहेतुनिकेतू ७ तवश्रीविग्रहरूपअनूपा अमितलोकबहु
अंडसरूपा होतजातकोकहिसकताही अतिसेसुमतिबुधबलिजाही ८ दोहा अतिअ
स्तुतिनुमकिमिकरौमैंपरतंत्रसुजान सोकराविद्रमैसेकहियतोश्रुतिवचनप्रमान ९
चौपई अजाआदिकारनतेहिनाहू तेनबरूपलखैनहिमाहू जड़कारनतेजड़मतितासु
लखैनतबमरूपसुधर्मा स्यम १० जोजड़तौकुजड़हेकोई नहिजानेसोइमितोहोई जीव

134A नमानतहैकहुकैसे जोकोउवचनकहैपुनिऐसे १० तहांकहतजेविधतेआदी मयाग
नतैवधैअनादी गुणतीततनवरूपअनूपा जानिसकैनहितवनिजरूपा ११ अपरकहीजा
नैनरजैसे रचतप्रपंचतासुकरऐसे जोकोउजानिसकैनहिमोही तोयहसंसृतमिटैनवो
ही १२ जोकहाविद्गमिकहियेनाथा तहांकहोमैसुनपथगाथा जोजनजैतुमहिजेहिभांती
सोतेहिविधलहफलसुभस्वाती १३ विधतेआदिजोगजनतेते सांख्यजोगमतियोगीकेते
अध्यात्मतादिकसाध्योसोई नाहिजजनमनववकरिसोई १४ तुमईश्वरहोश्रीभगवाना नेतने
तकहिस्रुतिवखानी अपरजजनतसोसवघटवासी श्वेतजोमोसवसुखरासी १५ दोहा कर्म
जोगिजननेजगनस्रुतिमारगअनुसार जजनकरैतुमकोसदेममनवचविविधप्रकार १६
चोपई रुद्रवरुणआदिकसुरजेते तिनकहुजजैकर्मवहुतेते इमिकहाविकहियेजोनाथा
विनतीकरोजोरिजुगहाथा १७ नानाविधकेदेवअनेका सक्रआदिकामदनहिएका अमित
नामवहुआयुधधारी जजनहिपरंतुमहीनिरधारी १८ जहलगिदेवगनेसमुदेसा वासुअ
ग्निशशिआदिजलेसा हेऐस्वर्यसहिततमतिकाचे सर्वईसतुमहीएकसाचे १९ मांतै ना
नामभेदकरिप्रानी जजहितुमहीहैअभिमतिदानी अपरनकोउसर्वेस्वरआही तुमकहु भै
जजतसकलविलचाही २० अपरएककोउकरहिसुकर्मा विविधप्रकारनेमजुतधर्मा अ
परनकरहिसकलफलतुमही उपसमपाइलोकभलसहही २१ कोउआनीमुनिचतुरप्रवी तु
नेकरिसमाधिसोजजमनदीने कोउकामनानिमित्ततुमपूजै एकनिहकामहोतुमकूभ

श्री·भा·
१२२५
135

जे २४ कोउ एक भगत मंत्र सम मेना संस्कार युत नमन चेता नारद पंचरात्र विधि जानी निजस
रूप चिंतहु मन मानी २५ दोहा चतुर्व्यूह सेवन करै कोउ करमापति एक एहि विधि सेवत
सेत जन तुम कहँ सहित विवेक २६ सोरठा अपर एक जे कोइ शिव भागवत जे ग्रंथ वर
तेहि मग तेहि कहँ जोइ शिवरूपी तुमको भजे २७ तहँ पुनि नाना भेद शैव तंत्र आगम अभि
त तजन चहत भव भेद प्रभु कृपालि करुनाकरो २८ चौपई अपर देव जे सेवहि कोई
नर पितु रुद्र वुध है जोई नर पितु जननि करै प्रभु तोरा सर्व देवमय नंद किसोरा २९ अरु वुध
भेद मात्र है तासू सकल नियंता सब घट वासू गिरि सम वजिमि नदी अनेका पुनि परिज
न्य हरि मई नेका ३० विविध स्रोत है सिंधु मझारा प्रवसहि सकल तहां निरधारा ऐसे
हु सकल पंथ करि कोई जनत तुमहि को ऊ अपर न होई ३१ हे हरि जे तव सकृ अनूपा प्र
कृत नाम वद अद्भुत रूपा सत्वादिक तो के गुन तीनी महा प्रवल वहु परम प्रवीनी ३२ गु
ण्यकार ब्रह्मादिक जेते तो गुन वधे अहै सव तेते सो माया तव अहै अधीना हे भगवंत अ
नन प्रवीना ३३ अव सव तें विशिष्ट भगवंता इमि कहहिं घन करि वुधवंता सकल आ
तम तुम जहु नेरा सकल वुध साधी मुख केरा ३४ नाहि असत्कि दृष्टि तव आही सव सा
क्षी गुन लिप्त न काही तुम तें अपर आरि अन जेते त्रिजग मनुज देव मुनि केते ३५ अ
हे अवि दाम क तु मारी अग जग व धे पुरुष अरु नारी तुम अवलेस सकल घट गामी
नमो नमो हे अंतरजामी ३६ दोहा हे श्रीरंग नमामी सव घट वासी अरु अखिलेस्वर नाथ

विभो छितग्रंथ्युतुमारीहे असुरारी पावकतवहैवदनप्रभो ३५ नभनाभतिहारी अति
सुषकारीरवितवनयनप्रकासमई हिसअवनवषानासवजगजानाभुजसक्कादिकजे
वहई ३६ द्यौसीसतुम्हारापवनतुप्राणकुछिनाथजलरासिअहै द्रुमजानअनेकाअ
ननएकानाथरोमतववेदअहै ३७ कच्छजलदतिहारेगिरिवरसादेनाथकदअनवआ
हिविभो निसअहनिमेषनसवजगपेषनकहिलोकहियोरूपप्रभो ३८ दोहा नाथप्र
जापतिजेअहैसिश्नतिहारेवास वारिवछितवसुककप्रभुमहतवरूपप्रकास ३९ सोरठा
लोकपालसवलोक अमतिजीवसंकुलघनेः तुमसवकेहौओकयहसवकल्पितगुम
विषे ४० चौपई जिमिजलमाहिअल्पवहुजेतू अमितप्रचुरतानेकोअेतू जिमिगुल्लरि
फलसमकअनेता फलपिनुअमितलहेकोअेता ४१ मसकरिहैजेहिफलमहकोई नहि
फलअपरलषैगतिसोई तिमिअनेनब्रह्मांडसुरवौरी तवविग्रहमहफिरैमुरारी ४२
असतवरूपलषैकोताही पावैतवगुनअमतसुचाही ताहिसोइनरलहकल्याना नमो
नमोहेकृपानिधाना ४३ कीउहितजेजेतनधरहू तेहिअनुरूपकर्मतिसकरहू प्रेमसहि
तजेगावहिताही सोकमोहअघसपरिनसाही ४४ छंद जयमत्सरूपनमामितवकं
२ जपसंवरामि प्रभुप्रलयवारिधिराहि विचरैसुषद्सवकाहि ४५ पुनिधरयौहयवररू
प सुषकंदपरमअनूप मधुकैटभद्अनिदुरू तेहिछनकमहाकियनरू ४६ नवचर
नकंजननमामि कमठाकृतेसमरामि पुनिधरयौसूकररूप अतिविनसुभगअनूप ४७

श्री०भा०
६२२६
136
रा ४

छितिउधारे विधकाज सुषल्लहे संतनसमाज करिजोरितव परईस वेरोपुहुमिधरिकर
सीस ४८ नरसीघ्रुपरमदयाल निजभक्तिजनप्रतिपाल पुनिधस्यो वामनरूप हरि
जाचियोवलिभूप ४९ परिवारिवारिनमामि भृगुनाथपरसुमरामि निजदुष्टभूपविनासु
द्विजवंसकहसुषेंसु ५० रघुवंसकुलअवतंस प्रगटेजुहरितेहिवेश श्रीरामकरुना
केर सुषदलोनिअवरचेर ५१ पुनिधस्यो कल्किकसरूप जमनादिनासकभूप सक्ति
रूपश्रीभगवंत आदिपुरुषअभेअनंत ५२ दोहा करिअस्तुतिअकूरइमिपुनिकरि
जोरिनिहोरि चतुर्व्यूहअवतारकहु प्रनमतविविधकरिजोरि ५३ सोरठा वासुदेव
वलिराम अपरनामप्रद्युम्नजे पुनिअनिरुद्धसुनाम वेदोसवकेपदकमल ५४ चौप
ई पुनिवेदोहरिवोधसरूपा दानवकुलमोहुकसुषरूपा अवसंस्तनछुटिनकेहेतू प्र
नमतिहुहरिगुनसकपानिकेतू ५५ हेभगवंतलोकयहजेतो तवमायाकरिमोहिततेतो
रहारिकजेसकलपसारा करैअसतआयदतहमारा ५६ अहंमोरनिसिदिनयहकार
ई एहितेपुनपुनभवनिधिपरई जिमियहुजगतेमिमेजगईसा वंध्योमोहिफांसमति
धीसा ५७ तोकहिमूढसत्यमैमाना सवप्रभुत्यस्यहलोकवषाना देहगेहुदारादिकवंधू
स्वजनादिकसवनस्वरवंधू ५८ ताहिहेतुमैइहसंसारा भ्रमतिफिरौमैवारहवारा
सुनियेनाथमूढमामेरो मैंकुवुधनिजकहोनिवेरो ५९ अहोअनित्यकर्मफलजेतेकु
मतीनित्यमानरहीतेते छनभंगुरतनअहेनसाचा तोकहिआतममानिसुराचा ६०

136A

यहजीववासनाविषैलपटाना जहंजहंजोनधरितननाना दुःखरूपसवग्रहव्यवहारा
तामहसुषमैंलष्योगवारा ६२ दोहा सुषदुषमयगेहादिसव तामहिंग्रतिसेप्रीति नमगुनम
यतनमयसदायहमतिकीविपरीति ६२ सोरठा ग्रगजगजहलगिनाथ सवकहंग्राश्रय
एकतुम दीनवंधुजदुनाथ मैकुमतीजान्योनही ६२ चौपई जैसेजलतरणसोजलछायो ना
हित्यागिग्रागेंकोधायो जिमिजलतरषितपात्रलेकोई म्रगतष्णाकहंधावैसोई ६४ तैसेहि
तुमतेमैजदुनंदा विमुषसदामैग्रानंदकंदा एहिविधजानतहोसववाता तौकिमिविषमो
जमनराता ६५ जोकहाविद्यमिकहिगोसाई तौममवचनसुनियमनलाई विषयवासना
जनमतिमोरी त्रापनमूढगतिसहंकठोरी ६६ कामकर्महतमनदुषदायक प्रवलग्रछयु ४८
तविषयसुभायक इतिउनषैंचषेंवलेजाही दोकनसवैपोमूढमेताही ६७ मेपरितंत्रसदा
हुदेवा श्रवनवचरनकंजमैंसेवा ग्रसनकहुसोमिलेनकवहूं ताखुसरनमेगहीजुषवहूं
६८ होइसदाइंद्रीग्राधीना सोममचरनगहेकिमिहीना इमिजोकहिंयनाथजगदीसा तहां
सुनियहेहरिपरमीसा ६९ तवपदकंजसरणमोहिनाथा तुमरीकृपामिलेजदुनाथा सव
नसंतकरैजोकोई तवममसरनपावनरसोई ७० जोकहाविश्वेसेप्रभुकहियै तौममवच
नहेतुजुनगहियै जवएहिजीवकेरभवग्रंता होइवासनाक्षयभगवंता ७१ छंद हैवा
सनाछयजवहिजदुपतितवहिसतसंगतिमिलै तवकृपासोइवजानियैतवदाससंगति
रुचिहिलै ७२ जवकरैसवतसंतकौयहतवहितवमनिपरगहै तुमरीकृपाविनुनाथवंहुं

श्री भा·
२६७
137

संतसेवननहिलहै ७३ बिनुसंतसेवनतैकबहुं तबअंघ्रिप्रिमनिपरसैनही तबअंघ्रिप्रिमतिप
रसैविनाकहुमुक्तकैसेकैलही ७४ इमिकहिगिरयोपदकंजप्रभुकेकहतिपुनिकरिजोरिकै
जयध्यानघनहेग्यानकारनप्रणतप्रभुहितहोरिकै ७५ दोहा पुरुषईसजगदीसप्रभुस
कलनियंतानाथ नमोनमोवसुदेवसुतरूपीकेसवदुनाथ ७६ सबकहग्राम्रयनाथप्रम
हीनवेधुभगवंत मेप्रपन्नमनकायवचपालिकृपालिअनंत ७७ सोरठा एहिविधकहअक्रू
र वारवारपदरजपरसि हस्प्रभुमैंअतिक्रूर प्रणतपालतवदिरद्रप्रभु ७८ दोहा चालि
सकेअध्यायमहिअक्रूरकहेवरचारि कहेसोरठासुभगयदुदोहाग्रष्टविचार ७९ इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषाविवेकेअक्रूरस्तवचत्वारिंसतमोध्यायः ४० दोहा श्रवण
कतालिसकेविषेपुरुषप्रविसतजदुनंद रजकमारिहैकुब्जप्रभुजनहितकरुणाकंद १ नि
जजनमालकालग्रह अत्रहैकुब्जकृपाल पुनिवायकवरदानहैसुदानागतिप्रतिपाल २
सोरठा एतनीकथाविचित्र कहैहैएहिअध्यायमहि पावनपरमपवित्र मुनिकहिहैसोइनृप
तिसो ३ चोपई हेनृपइमिजमनाजलमाही निजवपुनाहिदेषाएउआहीं पुनअक्रूरभएध्यान
सरूपा जिमिनटनाटयसमेटअनूपा ४ जबअक्रूरतहंजलमाही देष्योकछुकोत
कनहनाही जबजबबाहरनिकसनिहारयो विसमयचितवहरूपनिहारयो ५ नित्यनेमक
रतुरतनरेसा रथचढिआयोहरयसथेसा आवततेहिलषिकैजगदीसा पूछततेहिज
नुबालअनीसा ६ अहोतातवमुवकछुविरेषी जनुअद्भुतकछुलष्योविसेषी छितिनभ

विचा

137A

कै जलमहकछुदेषेऊ कछुअद्भुतकौतकदृगपेषेऊ ७ इमिसुनिकरुणानिधकेवचना
कैसहूतबोल्योकरिरचना भूमिअकासनीरमहजेतो अद्भुतकौतकजहलगितेतो ८ सो
सबतुमरेमध्यगोसांई बसतअहैसगरेसुषपाई सोतुमकहदेष्योजेहिकाला अद्भुतस
बलष्योरूपबिसाला ९ दोहा मोबिनुदेषेप्रथमहीतबमुषबिस्मनदेषि मातैकछुअद्भु
तलष्योकहियेमानविसेषि १० सोरठा भूमिव्योमजलमाहि अद्भुतजोजहलगिसकल
सोसगरोतवपाहि तुमहिलष्योमैआइजब ११ चोपई तबमाहितुमहिलष्योजदुनाथा
तुमतेअद्भुतअपरनगाथा भूमिव्योमजलकौनकजेतो तुमितेभिन्नअहैनहितेतो इमि
कहिकैअक्रूरसुजाना रथमहांबैठोपुरकहसुषमाना संध्याकालसहितदोऊभ्राता म
धुपुरलेपहुचैहैताता हेनपपुरबासीमनजेते नृपजूषमिलषयमहितेते देषिहिराम
रूपमुषकंजा जाहिदेषिभवरुजसबगंजा १४ पहिलेनंदहारिकपुरपासा पहुचेपरउप
बनसुषरासा रामकृष्णमगरहेनिहारी नवलगिमहपहुचेगिरधारी १५ नंदहिकनै
मिलभगवंता बोलेवचनसुनहुबुधवंता गहिअक्रूरपानिजहाथा वचनबिनीतकह
तजदुनाथा १६ हेअक्रूरचलहुतुमआगे रथलेजाहुवेगिवडभागे हमकहछाडजाहु
इतिताता हमपुरलषनचहतदोऊभ्राता १७ सुनिहरिवचनबोलअक्रूरा प्रेमसहित
जोहिगुनअतिरूरा हेप्रभुतुमहीक्रपानिधाना भक्तनकोकीजेकल्याना १८ छंद जेहि
गुनअतिरूरासुकनीरूराप्रभुसोदेकरिजोरिकहै हेआनेदकंदरा श्रीजदुनंदनतुमबिनु

श्री भा
१२२८
138

चितनहिंचलनचहै १९ मैतासनिहारौदीनविचारौतजियनमोकहनाथहरे चलियैममना
थागेहिसनाथाहूहैप्रभुपरकंजधरे २० दोउभ्रातसमेताकृपानिकेताअरुसवगोपनिसं
गलियेवहसरननिहारौतहपगधारौहोइहिपावनपरसकिये २१ मैमेरमलीनाथहमै
लीनातवपदछालनसीसधरे जोहिंतेसुरपावकपितरसुभायवतप्रगहैवहुकालहरे
२२ दोहा जानुगअंध्रिप्रछालप्रभुचलिभीतिहुपुरुख्यात लह्यौअतुलऐश्वर्यप्रभुगत
लहुपरमरावतात २३ सोरठा तवपदपंकजनीर तीनलोकपावनिकिएउ मिटैसकलभव
पीर यहैजानिशिवशिरधर्‍यो २४ चौपई मुनिसोंदजलपरसनहेंनाथा भएउसगर
सुतपावनगाथा देवदेवत्रिभुवनकेसाईं पुण्यकीर्तिहैजनसुखदाई २५ हे मदुकुल
नायकसुखदानी रमारमनहेकरुणाखानी जगमईसहेअंतरजामी तवपदकंजनमामि
नमामी २६ सुनिअक्रूरगिराहरिबोले अतिहरषतकहवचनअमोले अहैहैतातगेह
नकेमानू अनुजअनुगसहहनिहैमानू २७ प्रथमहकंसनासकरिताता सकलसुहृद
जनकरहुसुखदाता तासुनिधनपाछेनवधामा अहैहैसंगसहितवलिरामा २८ इमिज
वकह्यौवचनगिरधारी सुनिअक्रूरविमनदुखभारी प्रवसेउपुरनृपसरनलिधारा
कहेउजोदेसकलगिरधारी २९ प्रातप्रभुदोउभ्रातसमेता इमिकहिगोनिजसुखसनि
केता तवसौकृष्णगोपसहभ्राता पुरुप्रवसेदेखनसुखदाता ३० स्याममोरसमदोउभ्रा
ता प्रगटभएजोजगविख्याता लखेउकृष्णनापुरुकहभूपा सोपुरुवरननसुनहुअनूपा

३१ छंद सोइ पुर अनूपम भूपम धु पुरु उतुंग गोपुर सोहनै सब फटिकमनि रच्यो बहु विधि सँ
वारमुन मनमोहनै ३२ अति उच सुभग कपाट हाटक जटित सब परिघ परिवनै अति सुभग
तोरन झिलमिलै अरु अन्नमाला अति घनै ३३ हयसाल अरु गोसाल पुनि मखसाल अद्भुत
को गनै बहु ओर खाई परिसजल सो अगम अति वकविकिमिभनै ३४ उद्यान पावन सुभग उ
पवन वाटिका अति सोहहीं वोहार बजार सुढारि कंचन धनिक ग्रह मनमोहहीं ३५ प्रतिगेह
गेह बनाइ वेदक ललित सौरभ सुषमई सब भिन्न भिन्न बजार वनक विजाज वेदेखा सोभई ३६ पु
नि अमति विधि के मोहरी जरियाजरकसी जे करै ते भिन्न भिन्न बजार तिनके निरख मुनि मन को
हरै ३७ दोहा भिन्न भिन्न सब के भवन कंचन खचित अनूप जरे जरोखा आदि सब मगन बहु
सुषरूप ३८ सोरठा मणि वैदूर्य सु आदि विद्रुम मुक्ता नील मन इन करि जटित सु आदि वल
भी वेदी मगमगे ३९ चौपई नह कहु पारावति धुनि करही केकी कूकमन हु सुर भरही ढोर
ढोर वैठे सुख पाई बोलहि बचन सुभग सुख पाई ४० अति सुरभी चलमलेन नघोरी सीच्यो
राजपंथ अरु षोरी वनक वजार वोहारन तोरन सीच्यो सौरभ जल चहु ओरन ४१ विथुरे सौ
रभ सुमन सुहाए सुंदर सुभग सुमरा छवि छाए द्वारि दुन्ह दिसि तंदुल धरई ता परि पूरन घ
ट सुभ रचई ४२ कुसुमावलि पाटि के बहु पासा कंठ पटि काधरि सुभ वासा कंदु आम्र पल्लव
सुत धरई ता परि पाव अपरए कर रचई ४३ दीपावलि पुनि रचे वनाई तासु निकट कल रीझ
भलाई क्रमुक वट छत हु धरे उ सुहावनि तोरन के तु सब हि मन भावनि ४४ एहि विधि रचना अ

श्रीभा
द २२५
139

हप्रतिसाजे जाहिरेषिसुरपुरजनवलाजै हारसअंगुलकेविस्तारा सुभगसुभारवसनसुष
कारा ४५ कलकंठपरिरचैवनाई ताबुपट्टिकानाममुहाई एहिपुरीअलेसतनभूपा तहिप्र (वंध
विसेहोऊअनूपा ४६ चलेराजपथश्रीजदुनंदा लिएसषासंगआनंदकंदा गोपसुता
लषिमनहरियाई उमगउममनयनउरलाई ४७ दोहा देषनहितपुरकीवधूसिमटीजू
यअनेत भईभीरअतिराजपथजनचआएभगवंत ४८ सोरठा हरसहितपुरनारि धाइअट
नपरचढिगई अतिउत्सवसुषकारि ननसुधतिनकोभूलनप ४९ चौपई कोउकधरैव नें
सनविपरीती लषिनगईहरिसुजनप्रीती एककर्णकुंडलधरिकोई एकपानिकंकन
कैपोई ५० एकपत्रधरिअचलसुहाए नूपुरएकपासुषपाए चोलनएकअंगआएकभू
ली चलीचपलसीतनमनफूली ५१ अंजनकरपाहुतीएकवामा त्यागिचलीहरिदरसन
कामा कछ्योउवटनौतनमहकोई बिनुमजनधाईउहसोई ५२ सोवनहीकोऊअपरसयानी
उरधुनिसुनिअतिसयअकुलानी तरलगमकचलिलाजबिहाई नेहसुअनदरसनकि
यमाई ५३ अयर एकनिजवालकगोदा लिएपियावतिपयजुतमोदा ताहित्यागिधाईएक हरम
साला कछुमंहितहियेहुलासा ५४ लीलाललितमंदमुसुकानी चंकविलोकिनसवसुषषा
नी मनकारीगतिस्यामलगाता श्रीनिवासउरबहुसुषदाता ५५ एहिविधपुरकीजहलगि
नारी कछुमवरनकहरहीनिहारी तासुदगनसुषदेजदुनंदा मनहरिलीन्योआनंदकंदा ५६
दोहा वारवारवहुकालैसुनतहरी प्रभुरूप सपदिलव्यौनिजनयनजवअद्भुतपरमअ

नृप ५७ सोरठा हास्यमंद मुसकानि अवलोकिन बहु अमृत सी मानत ही सुखखानि नि
रखहि प्रभु रूप को ५८ चौपई पुनि हरि रूप दृगन के द्वारू आन्यो हिय विच सब सुख
सारू करि आलिंगन सुखद सरूपा लही परम आनंद अनूपा ५९ पूर्व जो लो जिन लै न ना
पा सो सब ताप नस्यो एक सा पा चढी अटा परि जे पुरनारी विकसित वदन के ज सुख भारी
६० वर्षहि सुमन हरष सब अंगा निर्षहि प्रभु मुख पलक अभंगा दधि अक्षत सर्गंव दन चा
रू सुभग भेट लै लै सुख सारू ६१ जेहि मग आवत नंदकिसोरा नहत हम भूसुर जे तेहि ओरा
पूजहि विविध भांति जुत प्रीती निरखस ना घहो हि सुभ रीती ६२ कहहि परस्पर सब सुख वा
सी अहो भाग्य गोपी सुखरासी सोभासदन वदन नित देखी जन्म सफल ते द करहि विसेषी
६३ धन्य धन्य उन कात पत्नीना कियो दान द्विज कौ वड दीना एहि विधि पुरवासनि की वा
ता सुनत जात मग महहोऊ भ्राता ६४ रंगकार एक रजक सुभाए आवत देखि कृष्ण सुखपा
ए धौत वस्त्र उत्तम बहु जानी जाचे हरि कहि गिरा सुहानी ६५ दोहा देहु वसन दोऊ भ्रातक
ह जथा जोग जस आहि परम श्रेय फल लहत ते द देत दान चित चाहि ६६ सोरठा इमि जा
च्यो भगवंत परिपूर्ण अमलेस प्रभु रानभृत्य मय मंत हिसकरि वाल्यो पुरुष कछु ६७
चौपई हे अधत गिरवर वन वासी गोचारन दिन घरकनिवासी ऐसे वसन सदा परिधा
ना करत रहेहु हम सुख वजाना ६८ हे वाली सजा कुभाजि आस सुनहि राजभट करिहि
विनास भूप द्रव्य चाहत मतिहीना जाहु वेगि इततें कहु लीना ६९ जीवन आस होइ जौ तु

महौ फिर अस बचन कहहु जनि कबहो फिर असि बचन सुनहि जौ कोऊ बधे जाहु भ्राता
तुम दोऊ ७० ऐसे बचन परुष बहु भाषे सुनि भगवंत हृदय अति माषे पानि अग्र सिर
छेद्यो तासु भजे जासु किंकर सब आसु ७१ बसन पोटजित जिम मग माही गए भाजि ग्रह
तन सुधि नाही लिये बसन मन भावत जी के रूप रेख बलि भावति ही के ७२ यहि बिधि बसन
होऊ भ्रात समेता आदि गोपनि दिय कृपानिकेता कछु भूमि मग परे रहे तेहि ठामा आगे चले रू
पगुन धामा ७३ दोहा चले जात प्रभु पंथ महि बायक लषि प्रभु रूप बसन अभरन बनाइ
प्रभु पहिराए अनुरूप ७४ सोरठा जथा जोग रचि देषि सोभत अति भ्राता सहित जिमिग
ज बाल सुचेषि उत्सव के दिन साहु प्रति ७५ चौपई आगे चले कृष्ण बलि रामू गए सुदा
मा ग्रह सुष धामू मालाकार द्विबिद हरि रूपा सादर उठि चेयो पद भूपा ७६ पुनि आसन दी
न्यो सनमानी अरघ पाद्य कीन्यो सुष मानी पुनि धरि भेट कयो हरि पूजा जाहि न अपर
देव जग दूजा ७७ बहन चरचित प्रभु करि अंगा सुमन माल पुनि बहु बिधि रंगा दै सुरव
वास जोरि जुग हाथा कहत लाग मैं भए उ सनाथा ७८ पावन भयो आजु कुल मोरा देष
उ तो उद्गिनेद किसोरा सफल जनम मैं भए उ गोसाई पूर्व पुन्य फुल्यो मन भाई ७९
सुर रिषपति र आजु अनुकूला देष उ चरन ताके जन सुष मूला अषिल बिश्व कारन कोह
न दोउ जनम महेत कृपा निकेत ८० जग कल्यान हेतु सुष रासी इतिय बतार लीन मेजा
नी रजक मारि बायक सुषकारी बिषम दसा ई सिर किमि पारी ८१ जौ को उ इनि कहव

140A

सौरभसुमनपवित्रनिहारी २५ तासुरचितमालासुषकारी ५

चनवनाई तासनकहतवचनसमुझाई हरिईस्वरसवनसुषदाई भगवतजनकीकरीसहाई
८२ दोहा सकलजगतकेसुहृदतुम अगजगसमभाव तदपिभजतेकौंभजौ उरकुमदवञ्छ
तिभाव ८३ चौपई आसाप्रभुतुमजानिकधूकीजे करौसीसधरिजौकहिहीजे यहवडुभागअ
नुग्रहएहूं जाकहितुमकछूआसुदेहूं ८४ इमिकहमालाकारसुजाना अभिप्रायहरिहियकी
जाना पुनिअपनैमनअतिसुषकारी पहिरायेदोउवंधुनिहारी ८५ ताकरिअतिसोभितदोऊ
भ्राता प्रणतप्रसन्नहेविसुषदाता ८६ मांगुमोगुवरकहहुसिहाना सोंकहअवमैभएउसना
था अवलभक्तवपदअषिलेसा यहवरमोगोकरियनिदेसा ८७ अरुतवभक्तजहोंलगिको
ई तामहिसुहदभावमोहिहोई सर्वभूतमहिदयागोसाई उपजेममहियहेसुषदाई ८८ एव
मस्तुकहिपुनिजनपाला विनुमांग्येवरदेतकृपाला तवकुलपरंपराजेहोई श्रीमतिसंततघ
टैनकोई ८९ सीलिवंतदानाअधिकाई वुधनिरमलवैरागमहाई वलआयुजेसकीर्तिरूरी
निहरेवेसहोउअतिभूरी ९० दोहा इमिदैकेवरदानतेहिसहितधानजदुनेद आगेचलेकृ
पालप्रभुगुनसागरसुषकंद ९१ सोरठा सक्रतसुमनकीमाल पहिराईअतिप्रेमजुत जुरतहु
कस्योकल्यान कोकृपालजदुवीरसम ९२ एहिनेजगमेंजाल त्यागिकृपाभजिकृपर भजे
महाभवव्याल नाममूरकेसुननही ९३ दोहा सुमनगदोहदानवकहे पांचछंदसुषकारि
कहेसोभदानवसुषद अवगुनसुननअघहारि ९४ इतिश्री भागवतेमहापुराणेदशमस्कंधे
भाषानिवंधे पुरुषवंशोनामएकचत्वारिंसोध्याय: ४१ दोहा कुवजारूपसुधारि धनुषभंज

श्री०भा०
१२५१
141

रच्छकहनन कंसारि हृविचारि रंगभूमउत्सवकहव १ दोहा देउपरचालिसविषै एतनी
कथाअनूप अकमुनिकहिहैंनरपतिसौजानिरसकअनुरूप २ चौपई चलेजातदोऊभ्रा
तनरेसा राजपथअतिसुभगसुदेसा आवततलषीललितएकवामा रूपअनूपकूवरीस्यामा
३ मलयजआदिसुगंधसवारी तासुपात्रकरलियेसुधारी हसिपूछीनंदकिसकिसोरा
हेसुंदरमनचितचोरा ४ कोतुमकहाजाहुकेहकाजा कहहुसत्यकेहिमयहसाजा चं
दनसुभगदेहुयहहमहो अवकल्यानहोतवथवहो ५ सुनिप्रभुगिराबोलसोवामा सुनिये
हेसुंदरघनस्यामा नाममोरत्रपवक्रकृपाला कंसकिंकरीहीनदयाला ६ अनुलेपनसाध
नअतिरीती जानैमसकलकिपायुनप्रीती ममकृत्यलेपभएहितकारी नपसंमनतासीमैप्या
री ७ तुमकेअपरपात्रकोनाथा लीजैचंदनमहोउसनाथा वदनसरनछविदेषिलोभानी अ
तिसुकुमारअंगमसुघघानी ८ मुसुकिमेरईछविगिरिधरकी देषभईवसमुरलीधरकी
स्यामरूपकेसेनउरलाई चलजूकेजोसुभगकराई ९ दोहा मनासिजवसहूं कामसवहोउ
भ्रातमुदिदेषि चंदनवरत्रोसुभगविधजथाजोगतनुपेषि १० सोरठा चित्रितकियेवना
इ कटिउपरभुजसोसलौ सोभितसहजसुभाइ पुनिअतिसैसोभितभए ११ चौपई रुचिरा
ननकुचजागतिदेषी अतिप्रसन्नहरिभएविसेषी निजदरसनफलसदादियाई रतुक
रिकेकहनिजमनआई १२ तासुभावकोध्ययुभागजो निजपगसौतदाबीतापालजो करि
उत्तानकरिसीभगवेला देअंगुरीकरचिबुकअमेता १३ ऊपरवैचिरहकरिसधी भईसो

141A

घगतिमति पुनि लषी सुभगासमाम अंगासवतासु सुंदरस्थैनपयोधरहिं जासु २४ प्रभुकर
परससुषप्रदहहेतु भईनारिअतिसुभगनिकेतु अतिउदारगुनरूपभरीसो हसीमनोभवहि
यच्यापीसो २५ ऊपरनाप्रभुकोंगहिवोली गूढभावहियकीसबषोली एहवारचलियेनिज
गेहा नहिनजिसकोंतुमहिमुतनेहा २६ तुमरेहेतुछुभितचितमोरा ममग्रहचलियेमेरकि
सोरा होउप्रसन्नकिंकरीजानी इमिकहिसैरध्रीमुसकानी २७ प्रेमलतासुरहीवंधानी मे
रमेरहियउमगवषानी हेन्रपएहिविधजबउनकहेऊ श्रीयसनूरेषितसवकहेऊ २८
दोहा सषाओरसूजरामलषिहसिवोलेतेहिपास हेसुंदरहमआइहैंतवग्रहसुषरसुरा
स २९ सोरठा अलतदारूजेकोइ पररेसीइतिजेरहें तिनकहआश्रयसोइ तवग्रहतमनते।
नाहिकित ३० चोपई कंसविनासससजनसुषरेके ऐहेतवग्रहसषजुलेके मधुरगिरा
कहतेहिसनमानी विदाकियेउसकुनमुसुकानी ३१ चलितराजपथवनकुसमाजा लैलै
भेटआइसजनसाजा स्वगतोवूलदूवरधिरोचन कनतहरहिसफलकरलोचन ३२ प्रभुहर
सनकरतिपगनजेती चितनवालसोभतभईतेती वासककयोरिवलषाटिकजासु भयेलिषु लि
लतनमुधनहितासु ३३ चित्रलिषितइवरहगईठाढी वरनविलोहिरविहियगाढी चले
जातपथहरिसुषरासी पुरवासिनदूछतअविनासी ३४ मषसालातिनरिषोवताई प्रव
लतहहीऊकुयरकन्हाई अद्भुतधनुरेष्योनहजाई ननुसुरेसधनुगुरूअसुराई ३५ व
दुमयलछतिअर्चनसोहीं हमिमिनरगरेष्योलषओही ऐसेकहेकृतसभगवंता कृास

रि

श्री भा
द १५२
142

चले सकल नियेरा २६ छंद देष्यो जब हि रंगजाइ प्रभ तेहि न्चपरि हठ करि गहि लियो वर
जनर हे भट सुभट बहु रिसनि ररतेहि कौतुक कियो २७ लै बाम पानि कठोर धनु अति सो घु
नोर नम न दियो सब लषत लो गनि कै न हो प्रभु ललिक चापसु सजुयो २८ पुनि यै खिंके कौ
दंड यदुबर श्रवन लों नेहि आनियो करि मध्य ते दे टूक ता कहुं तर किछिति परि डारियो २९
सो नाद नभ भरि चहु दिसा पूरे तिच क्रन सुर विस्मत भये जेहि सुनत ही हिय कंस के अति त्रास
मन विषम सो पियो ३० दोहा रहे ता सुरछक जिते अति से करि हिय रोस धर धरु वाधहु सो
रु कहर धाये नृपति भरोस ३१ सोरठा अभिशाय अति क्रूर आतताइ अति मूढ मति जिनम
न मानी सूर घेर्यो प्रभु कहं गहन हित ३२ चौपाई तिन्हहि देषि दोउ नेरा किसोरा होउ धनु
टूक गहौ कर घोरा मारे सब हने प्रचारी कोउ भजन नृप सो कहो पुकारी ३३ तिनि प्रे
री सेन कछुन हवा राम कृष्ण विचिरत है न हवा आवत नुरत हनी सब नाथा किये अधी
सब हनुमंस नाथा ३४ पुनि मष साला ते जदुनंदा बाहर निकसे मन सुष कंदा एहि विध
देषि न पुर सुषरासी पुरवासिन देष्यो अविनासी ३५ अति प्रभाव अति बल सुठ सुंदर
अति सोहि स अद्भुत गुन निधि वर मानो सुषर है दोउ अतिमान पोरुष बल बिलोउ ३६
रामि ख या बिचिरत दोउ भ्राता गोपन सहित मसंत सुष दाता जानि अस्तत्र बि पि हि दिन हासा प्रभ नि
आए जहं उतरे सुष धामा ३७ नंदादि कन्त बि अति सुष पाए दोउ सुन हसि करि के हलगा
रा ए नाथ मन अब गनि धूं बनासी सकल नगर को जानि प्रकासी ३८ दोहा बज ने चले गोपा

142A

लजव गोपिनकहै नुवैन सोसवइतिसाचीभई पुरजनलहहुसुषचैन ३८ सोरठा देषिछकेपुरु
लोगा कूसमरूपसोभासदन भएविगतदुषसोग सत्यासियगोपीभई ३९ चोपई सिंधुसुताज
कहिनितचहई रूपअनूपदेषिसुषलहई ब्रह्मादिककरकरिपरहारा चाहतचरणकंजसुष
सारा ४० सोछविदेषिछकेपुरवासी लहेजन्मफललहसुषरासी अनुगनचरणकंजजगधो
ये दूधभातिभोजनकरिसोये ४१ कहांकंससुनिकसप्रभाऊ लीलामात्रकियेउअसिचाऊ
धनुषभंजरछकवलमारी गएकपनिजठामसुधारी ४२ भयोभीतहियनीदहिरानी दुरनि
मित्तदेषियोदुषषानी जगतरुषपनमोगभोती अतिअरिष्टलषिधरकीछाती ४३ मनुद्दरअ
सगुनसवदेषी अतिभयभीतिसुकहोविसेषी जलअरदरमांझप्रतिरूपा देषनुहैनिजसिर
विनुभूपा ४४ नहिस्वसदेयहअत्यविचारा दैदेमेवहमूढगवारा निजपरिछाहीलषेविचारी
वहुतछिद्रनिजनयननिहारी ४५ श्रवणमूंदसुनियेजोनादा प्राणघोषवहहैअतिवादा
सोनहिसुनतकंसमतिहीना रुछलषेदुतिकंचनकीना ४६ दोहा रजकर्रममेनिजचरणचि
न्हरहितसोदेषि जागतिकेअरिष्टलषिकंपितहृदयविसेषि ४७ चोपई पुनिसपनेदेष्यो
विपरीती मरेवंधुजनमिलहिसुप्रीती गरलखाइषरजानअरूढा जपाकुसुमस्रजपहिरि
समूढा ४८ तैलाभंगकियेदिगवासा चलेजातदछिनपतिआसा एहिप्रकारअमिनितदुष
दाता लषिअरिष्टकंपितसवगाता ४९ पाइमरणभएचिंतावाढी निद्रागतिलषिविपतिसु
गाढी महाकष्टकरिनिसिगईभूपा उठितदेषिरविमिजअनुरूपा ५० नवहिकेससवमल्लेव

श्री॰भा॰
द॰ २४३
143

लाए श्रीउग्रसेन सब कहि सुखपाए रंगभूमि भट सुजन कीन्हे सन्मान करि आदर दीन्हे ५१
तहं तहं पुरवासी जन जेते विप्र छत्र आरिक सब तेते साव कोल सब बैठे भूपा जथा जोग जे
हि जस अनुरूपा ५२ राजन मे वर एक सुभग सवारी तां परि बैठे उ कंस सुखारी मंडलीक मंत्री
बहु पासा मध्य कंस तदपि हिय त्रासा ५३ छंद तदपि प्रबल हिय कंप त्रासित लखि असुग सुपन
ल बरे बाजे बने बहु मल्ल साजे ताल ठोकित बल भरे ५४ चानर मुष्टिक कूट सल अरु तोसला
रिक अपर जे अतिसै अलेष तम ज्ञ गुरु सब सिमिटि आए महसजे ५५ बहु वल्गि वाद्य अनेक जं
विध करि आइ ठाढे तहं भए तेहि समय कंस हुंकारियो तह सभै नर हांकि गए ५६ दे भेट नृप
हि सुपाइ आसु सुमे चह कु सुंदर नये बैठे तहां गोकुल निवासी सकल प्रभु सुख हगि रये ५७
दोहा एक कंस बिनु अपर जे पुर नारी नर कोइ सबै कृष्ण सुख बांछहीं बिधाहि मनावैं सोइ ५८
यहि बिध करें असमा नन्प तदपि कंस हिय त्रास कृष्ण रूप सब ठाम वह लखें न अपर बिला
स ५९ चौपई कहि ओर का कारि दोहा यह सुंदर कहे छंद चारि सुखकारि कहे गुण अध्या
यम हं ६० इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा प्रनिबंधे द्विचत्वारिंसो ध्यायः
४२ दोहा अब ते तालिस के विषै राम कृष्ण रो कबीर रंगभूमि प्रविसन हरी हनै द्विरद सधी
र १ पुनि हरि सिंभा वरनिहै पुरवासी लखि रूप पुनि चनूर अरु कंस की ते संभा विन सुरूप २
एती कथा पवित्र यह सुनत होइ अघ नास कहिहैं ताहि अध्याय महं लखि नरपहृदय हुलास
३ चौपई प्रात क्रिया मज्जन करि भूपा राम कृष्ण सो कबे पु अनूपा सुने उमंग अनारी धुनिका

ना अप्र्परदुंदुभी धुनि बहु नाना ४ चले देषवे कहि गिरिधारी रंगद्वार गे जन हितकारी तहां ष
रो गज प्रभु जब देषा प्रेर्यो गज पकरी हिय पेषा ५ जुद्ध उचित कटि बसन कसतब कुटिला
लक सिमैं टवा धे सब साविधान ह्वै हरि तेहि रे षी बोले बचन असंकि बिसेषी ६ रे रे गजरष
क सुन बानी करी टारि द्वति तैं सुषमानी हम कहि शीघ्र पंथ अब देहू जो कहा चितु मदार निलेहू
७ तौ तोहि सहित करी कहि मारी पठइ देहु जम सदन सुषारी एहि बिध तासु निरादर की
न्हा तेहि तन भए क्रोध के चीन्हा ८ गज कहि कोप कराइ अभागी हरि सन मुष लै चलु मद पागी
काल अंक जम सदर स गजे सा शीघ्र हरि सन कहि चले उनरे सा ९ निज सूंडा सन पकर्यो धाई नि
बुकि गए करि तें जदुराई करि तें गुरत छूटि हरि ताही हन्यो मुष्टिका तेहि करि वाही १० मारत
रत तेहिं मग विच आए छिपि गयो सो मत्त जे करि साए नहिं देष्यो तब रिस कर भारी घ्रान द्रिष्टि
चहु ओर निहारी ११ दोहा दृग गोचर जदपि अहै बस्तु भली के मंह तदपि जानत घ्रान करि गो
मग आरि गयंद १२ सोरठा हरि कहि लष्यो गयंद पकरि लियो निज सूंडि सो तब हरि क
र लाकंद निकस गए बरजोरि तें १३ चौपई पूछ पकरि षैंच्यौ प्रभु तासू बीस पांव धनु ले
कें आसू जिमि उरगारि उरग सुत गहि कै षेलइ बिनु श्रम चित चाहि कै १५ करी पूछ ग
हि के स्मक पाला षैंच लिये जानत बष्याला तस्महि गहन चाहन जब नागू फिरै सो हनै बेघो
रविभागू १६ बाम भाग तब हरि फिर जाही पुनि बह दच्छिन फिरउ माही जिमि जिमि फिरे ना
गरि सक करिकें तिमि तिमि फिरत नाथ हसि हसि कै १७ जिमि गो बत्स पूछ गहि ब्याल फिरे व

श्री॰भा॰
१४४
144

सकोसंगभुजआनू तिमिकेसवगहिहृदयफरीके भ्रमतरहेकौतकहितहीके १८ त्यागिहृदयआ
एभुयआगे मारिमुष्टिकाहरिपुनिभागे छुअतजाइकरिसोंगजराजू भजेजातजनुभयजुत
आजू १९ धावतगिरतसंतसनभाये तेहिबचनहितवचनबनाए गिरिछितियेउठिभजेतुरं
ता तिनमान्योइतिमितिभगवंता २० ऐसोसुमिरतकरेउबडभागे नरतनक्रीडाकरतअनुरा
गे निजहंतनिछितिहन्योरिसाई तहोनतेईकछुलहोसुभाई दो॰ तासुपराक्रमविकलभौ
अतिरिसभरयोगयंद गजपालकप्रेरयोकरीजिन भाजेनंदनंद २२ सोरठा गजआवतहरि
देषि फिरआगतेहिनिकटतव कौतककरयोविसेषि पकरिपानसोतासुकरि २३ चौपई
गहिडारयोतेहिभूतलमाही निजपदसोंपरिचाप्योवाही दंतउषारलीनतेहिकेरा ताकरिह
नमयहनितेहिचेरा २४ त्यागिमतवारंतीतेहिठामा दंतपानिगहिहरिसुखधामा रंगभूमिप्रव
सेसुखमानी प्रगटवीररससुखमाषानी २५ श्रमसपरेगजदंतविसाला सोनितमदलपटी
विकराला अतिसोभितश्रमबिंदुसुहाए बदनसरोजअधककछविछाए २६ रंगभूमिदोउनंद
किसोरा गोपिसहितसोभतनहिथोरा करगजदंतवराउपनीके नवरससुभगसोहसव
हीके २७ निजनिजअनिप्रायअनुसारा नवरसजुतभएनंदकुमारा मल्लनकौंअसिनस
माना अपरननरनहरिनवरसजाना २८ तियगनकोरतिपतिसरव्याता गोपनिकौनिज
सजनसुहाता दुष्टछितीसनदमिप्रभुरेषा सकलनियंतापुरुषविसेषा २९ नेदादिक
सिसुसमहरिलेषे कंसमनुसमनयननपेषे अविदुषजनजेहैतेहिठामा तिनरदेष्यो

हरि ४

नहिहरनकामा ३० कहामनसकहियेसुकुमारा नहिकरिसकैगुहनिरधारा प्रेमीजनकोप्रे
मदरसायो भक्तिजननकूंपुरुषलषायो ३१ दोहा परमतत्वयोगिनलषेवृष्णिवंशजेको
इ कुलदेवतितिनदेषियोनिजनिजनयननजोइ ३२ सोरठा हन्योकरीमयमंच अतिदुर्ज
यहोऊनंदसुत हैवलदन्हेंअनेत देषित्रासतभाकंसहिय ३३ चोपई रससोइअद्भुतश्रृं
गारू हास्यवीरकरुणासुषसारू बहुरभयानकरसकोइदेषी कोउविभत्सनिजनयननि
पेषी ३४ सांतसुभक्तप्रेमगुनकाहूं जसजेहिभावलषानसताहूं रंगभूमिराजतदोऊभ्राता
भुजअजानसवकोसुषदाता ३५ अतिउनमप्रभुवेससुहावन निरषितसवकेचितहिचु
रावन निजमिमंचनगरनरनारी प्रभुमुषनिरषतअतिसुषकारी ३६ अनिमिषगान
लषैसुषरीती मनहुपानइवकरतसुप्रीती रसनाकरिवाटितइवतेऊ स्रघतनासाकरिद
मिजेऊ ३७ भुजकरमनहुंआलिंगनकरही एहिविधिहियअनंदरसभरही पुनिप्रभुके
गुनसुनसप्रभाऊ सुनेलषैकोनकसतभाऊ ३८ कहतपरस्परसवपुरवासी अतिआनंद
मगनसुषरासी एदोऊश्रीपतिश्रीभगवंता अजअनादिअषिलेसनियंता ३९ इतिअव
तारलीनअनतिसेतू नहिपालनिजपानिकेतू वजकीतुमनेकरीसहाई इदुकावलच
लानहीआई ४० दोहा प्रगटदेवकीउदरतें गोकुललेगोतात गूढरहेइतनेदिवसनंदगेह
सरव्यात ४१ सोरठा वकीप्रानकरिहानि तृणावर्तपुनिनासकिय धेनुकवधोसुजान
केशीजमअर्जुनवधे ४२ चोपई शंखचूडकोहन्योप्रचारी पुनिकालीकोदियोनिका

श्री भा०
१४५
145

री रावानलते गोपवचाए पुनि सुरेसकौ गर्वनसाए ४३ दिवससात गिरि धरिए कर हाथा
पाल्यौ गोकुल कियौ सनाथा श्रपर श्रघासुर श्रादिक जेते इनमारे व्रजमहि सब तेते ४४ ल
ही गोपिकान्ह वनलाहू लघिहि कृस्नमुषसहित उछाहू विविध तापविनु श्रमत दिजा
ही भवदुषतिन्ह परसकछु नाही ४५ इनकरि रछित जदुकुलसारा बहुविस्रुत जसस्त्रीस
ग्रभारा कुलमहलउ निविविधप्रकारा येहै सवश्रनमास्वश्रपारा ४६ यह ब्रह्मरेव वेधु
वदुतास्व इनि प्रलेवमार्ग सौ हुढि भास ताहि विधपुरजनविविधप्रकारा करत परसपरव
चनविचारा ४७ सेयनीनश्रदुमरमुचेगा तुरहीनारगावैसुरसेगा वजतवजानै श्रमि
तिंतभोती ढोलदुंदुभीगनिनेसरती ४८ सुनिजनन गिरा श्रसहिं दुषमानी कहवानूर
कृस्नसौ बानी नेरगुण्श्रनहिहै बलराम तुमहो कश्रानतश्रहो बलधाम ४९ दोहा मल्लजु
रमहकुल दोउ सुनी नृपनि यह बात सो हे येन चित चाह करि तुमहि बुलायो तात ५० चौ
पई मनवचकाइ नृपतिहिमकरई तौवह प्रजासकलसुषभरई गोपजात प्रमुदितवन
चारी मल्लजुद्धकीड़ा सुषकारी ५१ गोवछरा चारत सव काला गिरिवरगहनफिरहुनेर
लाला तेहि ते तुमहमहिमिल कै दोऊ नृपहि प्रसन्न करिय सुषसोऊ ५२ नृपहि प्रसन्न क
रिहि जे प्रानी ताप रसवप्रसन्नजनमजानी सर्वभूतमयनृपसव कहही नृपहितकिये
तुम्रसजनेनलहही ५३ तासुवचनसुनिकृस्नकृपाला वोलेवचनरेसजसकाला मन
महमल्लजुद्धहितमानी ऊपरवचन कहत सनमानी ५४ तुम नृपप्रजाप्रवीन सुषारे

145A

हम गिरिवासी पशु रषवारे भूपति प्रिय करि वोसुषकारी परम अनुग्रह प्र नहि सुधारी ५५
हम वालक निज वल सम होई तासौ भिरहि पयो चित सोई होइ परस्पर वल वध नासू ल
रिये तासन धर्म विलासू ५६ होइ अधर्म कियेविपरीती मल्लसभा मे होय अनीती जैसे क
लि मे धर्म न साधै धर्म पंथ द्विज नाहि गवाधै ५७ छंद यह होय मल्ल सभा विषै जन करहु तुम
निय ज्ञानिकै यह वचन सुनि चाणूर वोल्यौ वचन मद रस सानिकै ५८ नहि वाल नहि कि
सोर तुम सब वलिन के वलि तुम अहो जे हिसहस द्रुम को उषल निरंतर हन्यो तुम किमवा
लहो ५९ दोहा एहि ते तुम अति सिवली मो सन भिरहु निसंक नहि न अन मन हि होय कछु
नहि तहि सिरस कलंक ६० सोरठा हम सो भिरिये गोपाल मुष्टिक तै वल देवलरु देषहि कंस
भुआल इमि कहि कै सो खुपरत्यो ६१ ते मालिसकेमाहि कहे दो हराय हू सुभग छंद एके चि
त चाहि सुभग सोरठा पंच पुनि ६२ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा भिवेरे
कुवलयापीड़ा वध तेतालिसिमो ध्यायः ४३ दोहा कंस मल्ल अरु मारि कै अरु मरे वसु धाके
हं कंस नारि समुझाइ प्रभु पितु मिलकरन अनेर १ एत नी कथा पवित्र यह चोआलि को
माहि सुक मुनि नृप सो वरनि हैं सुनन पापन सजाहि २ चौपाई हेनृप तहं स्वदेव भगवंता
निश्चि न मन न सकल्य अनंता सुनि चाणूर गिरा गंभीरा तासु निकट चलिगे जदुवीरा ३
मुष्टिक निकट गए वल आए जासु तेज वल अमित प्रताए हाथ हस्त पग तै पग वांधी था
कर्षन हठि करि दोउ साधी ४ त्यागिक निज अंगुली कर की वांधे मुष्टि मल्ल नल कर की

ताही अस लीक कहत बखानी मोकों ऊ बिदुष संत समुझानी ५ एहि बिधि बांधि मारि किरो ऊ
हनत परसपर छल बल सो ऊ जानु जानु ते सिर ते सीसा उर ते उर भेद भिरत महीसा ६
अंग अंग ते हनत कठोरा हाथ पानि गहि करि अति जोरा इति उत ते चित वल नहि थोरा प्रे
रत आगे कहु करि जोरा ७ रिस करि भुज सो पीड़ित बाहू छल करि उरस रेत छिति माहू ब
ल करि निकस मानि पुनि सो ऊ भूपरि हा बिलि यो जेहि को ऊ ८ कबहु कनिक सि प्रब्ल को
धो भिरत परसपर पुनि करि जोरा कबहू चरण रहक मपे धावै आय करि सनमुख उर छ
म चावै ९ दोहा दोउ जानु निरोउ पारगहि पिंडी करत बनाइ भूपरि गिरि सो ऊ तेहि पुनि
उठि आइ तसु सुख पाइ १० चौपई कबहुक कर मैं तन गहि नास लेत उठाइ परसपर आस्र क
बहुक कंठ परसपर गहही इहि ते छूटि बेचना करही ११ कबहुक पाद हिक मे अंगा ता
हि मरोरि चहत निकि पभंगा एहि बिध करत लरत का रोसा भिरत परसपर पुनि सह रोसा
१२ इहि बिकला बल जुद्ध कठोरा पुरति मगन नहि बैरन थोरा बोली सर यह दुख मइ बानी
ह्म बिरय थन यद्ध बखानी १३ जेत हुम सह रस कूर जदु मरा तिन हि अधम परस दुख देहा
एक बली एक अति बलहीना तासु जुद्ध एल बहि मलीना १४ जो कदाचि राजा है कोई
तो अस जुद्ध लपि नहि सो ई करै निवारनि हुठि करि आइ मोलि है जग कौ सेना पू १५
ल बिकस निज रगसरख्याता एह के मन भावति यह बाता महा धरम हो तन इह कामो सो
भयति लहद बिनु के तन कामा १६ कहो मल्लरो ऊ मल्ल समाना कठिन अंग सकंप युध जा

146A

ना कहा नंदसुत होऊ सुकुमारा अति कोमल सब अंग सुधारा १७ दोहा धर्म व्यतिक्रम एहि सम आनि
अयश भो सखी जानु उपजै जहा अधर्म कछु ठाम तजे सुखमानु १८ सोरठा अपर सखी कह बैन क
हो सत्य हे मात सुनु जे है मति के ऐन ते नहि राज सभा लखै १९ चौपई सभा होय जानहि बुध
वेता सभा न प्रविसहि जे जग संता गए सभा पूछहि तेहि कोई जानि बूझ कहै न सोई २० रहै
मौन गहि जो वह प्रानी अथवा कछु विपरीत बखानी अथवा जानि बूझि करि कोई कहै न मैं जा
नो कछु जोई २१ सब प्रकार अघ परसै ताही सभा मा जप्रविसहि वित चाही सभासद न बदन
सुख रासी देखउ जन सुमति तन मधि विलासी २२ असि द्विगदति उनहो रत आए सोरवू हमसुख अ
मतन आए कंस कोस पर हिमकन जैसे सोहन देखियमुख छवि तैसे २३ अपर कहत सखि ल
सुख विधामा जे बलि राम नाम अभिरामा मुष्टिक पारिकिय क्रोध अनेता हास्य क्रोध जुत मुख
सुखवेता २४ अरुन नयन सोभत मन हारी देखु देखु री बदन सुधारी अपर सखी सो कहहर षाई
धन्य पुन्य व्रज भूमि सुख दाई २५ जवधारि मनुज रूप हरि गूढा गोप मात क्रम तकर्म अरूढा बन
के सुमन विचित्रन माला मनहरिनी पहिरे गोपाला २६ सहत भ्रात पालत निज धेनू बन बन
फिरत बजावत बेनू नारद मुनि सनकादिक देवा अजा सारदादिक करन जुसेवा २७ दोहा पू
जत रमा गिरीस करि अंघ्रि जुगल है तासु धन्य व्रज भूमि वह अंकित है पद जासु २८ सोरठा
धिग सब सभा कहत धिग हम कों लखु पुन्य सखि व्रजजन सब वै सहत ऐन अवसर हम प्रभु
लखे २९ चौपई अति बहु पुन्य गोपकनि कीन्हा इमि बरनन कह मन अवरीन्हा अहो गोपकन

सँत

कानपकीना कहोंलानविप्रनकौदीना ३० कछमुखारविंदुनिजनयना करहि पान नितप्रति
चितचयना सोभासारअंगसमतास्र सकलसामनिघटवदिकास ३१ विनुआभरनसोहम्र
तिनाकी घटएश्वर्यधामसुषमाकी अधिसिसरूपनितनितदगांदेषी अतिप्रमोदसुषहृदयवि
सेषी ३२ धन्यधन्यसबब्रजकीनारी गावहिंकृष्णसुजससुषकारी दोहनकंडनकरतीवा
रा दधिमथनलेपनग्रहद्वारा ३३ पलनाबालझुलावहिंजवही सेचनकरहिंगाइगनतव
ही ग्रहमार्जनआदिविविहारा करहिंगाइगुन अपरनसारा ३४ अतिअनुरक्तबुद्धिस
व काला सजलनयनगावहिंइमिबाला प्रातकालघनस्यामसुजाना वनकहुंजातसषा
संगनाना ३५ दोहा मुनिसंध्याकेसमयजबगोधनसंगमुरारि आवतवेसीनादकरिसो
सुनिकैंव्रजनारि ३५ सोरठा ग्रहतेनिकसिअनुरंत जाइपेंघघटादीरहहि आवतकमलाकंत
वदननिहारैराकटक ३७ चौपई स्वरूपविलोकिनहसनिअनूपा देषहिनितिप्रतिकृष्ण
स्वरूपा अहोभाग्यगोपीजनजेती इनिहमवंशीभाग्यमततेती ३८ एहिविधवचनकह
तपुरनारी वामसमयजानीगिरधारी तोकहिनिमभयकरनविचारा अरिमारनकह
नवउरधारा ३९ सुनिवसुदेवभयतियवानी सुतमहअतिसनेहमनवानी देपनिह्यि
भालापचिसिषी सुनवलरगभरहिमनहिपेषी ४० मझेगुरुकरिनानाभांती दोउभ्राता
दोउमल्लसुहाती भगवनजानुमुष्टिवरघाता वज्रपानिइवनिठुरनिपाना ४१ चूरचूरसा
गूरगातसव सिथिलअंगमल्लयथाकिगयोतव सेनरीतिप्रभकैचहुंओरा फिरैदुहूंचहे

147A

मल्लकठोरा ४२ दोउकरिक्रोधमुष्टिकाभारी हरिकेओरतिनरोरप्रहारी जिमिगजहनैसुम
नखचंनकोऊ तिमिहरिउरजानहुतुमसोऊ ४३ दोहा चपरचल्योचाणूरजब करिहियमुष्टि
प्रहार एकमल्लयोतबकृष्णतेहिनिजकरिपरमउदार ४४ चौपई एकरभुजानेभ्रमनकरा
ई भूपरिपटिकारियोजदुराई सपदिप्राणगतिभोअरिसोई देतहतोसुरमुनिदुखजोई ४५ सि
थिलकेसरचगछितिपरता जो मनहुपाकध्वजभूपरिछायो तिमिबलिनिकटसमुष्टिकआ
ई हन्योमुष्टिकाप्रभुउरधाई ४६ तबबलभन्योतबताही कंपतिश्रवणरुधिरमुखवाही
रहितप्राणभूपरिगिरपरेऊ जिमिद्रुमगिरेवातसंचरेऊ ४७ तबबलदेवनिकटचलिआयो
कूटनामजोमल्लकहायो वाममुष्टिकाकरिबलिताहू मार्यौतुरततलगेजनताहू ४८ ऐसेह
सलगोकृष्णसुपासा मार्योपगतेहिसीसविनासा तोसलकेकरकैदेषंडा देएहिविधहनकृ
ष्णप्रचंडा ४९ मरेमुष्टिचाणूरदुधारी सलतोसलअरुकूटसंघारी प्राणलोभभाजेसवरेषी रहे
मल्लजेकछुअविसेषी ५० तबश्रीकृष्णअनुगसबटेरे नाचहुसबमिलहरिहमिप्रेरे बजतदुं
दुभीबहुविधपेषी नचेगोपनूपुरधुनिपेषी ५१ दोहा निजजनिमनूपुरधुनिनचेगोपसहित
जदुवीर हरषतसबसंसारमौ कंसहियेअतिपीर ५२ चौपई जनहरषेसबकौतकदेषी
रामकृष्णबलिरधिविसेषी भलीभलीकहुसाधुपुकारे कंसहियअतिदुखभारे ५३ मरेमल्ल
कछुभाजगेरेषा कंसनिवारतवाद्यविसेषा कहतक्रोधयुतवचनकठोरा काढहुप्रहनेदोउ
वरजोरा ५४ सोरीसुतदुषदनिहारी हरहुगोपधनविनुहिविचारी अतिदुर्बुद्धीकुटिलस

२८६

पाँने नैताहिकवो धहुसुषमाँने ५५ अनिमतिहीनहू मोरे आज़ु यहवसुदेवरोषकरसाजू
उग्रसेनपितुअनुगसमेता मारहुवेगकुबुद्धनिकेता ५६ एहिविधजेसोउविविधप्रकारा
सोसुनिकोपेउनेरकुमारा अतिलाघवतेहितरकिगुरंता चढेमंचपरिश्रीभगवंता ५७ कं
वामकरमेंढालसियेसनाथा ५८ छंद गहिउद्यो अतिसठचरमलेहाथा
तसो जिमिसेनखगननभधमनहरिबरनिमिभ्रमतरछिताससयसो ५९ अतिदुसहउग्रसु
भावसठनेहिगह्योप्रभुदिसवाइकै उरमारजिमिगहिवालपन्नगधेनुसहजसुभाइकै ६०
निमिषकरकेसगुकेसकै हरिमंचितेढिगरयो नेहिऊपरआपुसुअषिलउरनेहितरेते
हिसटकरहकियो ६१ एहिभांतिसोनेहिरंगभपरिद्वारनिजजनसुषदियो पुनिप्राणगति
नेहिकियविकर्षनहांहनस्वरसबजगकियो ६२ सोरठा जिमिहरिमारिगयंद बैसजाति
लेस्वहजहो तिमिजसुतकेनेर कंसमारिप्रनिसेचिनेहि ६३ चौपई सदाकंसभयमुनवहु
औरा देषितरह्योजुनेरचिंतोरा पीवतषानकहतकछुवेना विचेरतस्वाससेतअरुसपना
६४ चक्रायुधसववदोरनिहारी अतिदुर्लभपरलहहनिरधारी तासुअनुजजेअष्टप्रधाना
कंकअरिनिग्रोधसमाना ६५ तेभ्रातावरलोहितहेतू निसिकरिधाएकुमतिनिकेतू या
एयहिरि पहरिरनसाजू जिमिमृगपतिपेवहुगजराजू ६६ आवतितिहिदेषिवलिरामू
हन्योसकलछिनमहसुषधामू परपकलैसबसंघारे जिमिमृगपतिवहुगजहरिडारे

148A

६७ तब ब्रह्मादिक सुरेस महेसा। प्रभु बिभूत जे सकल नरेसा। सुमन बर्षि दुंदुभि नभ दीनी
सुरतिय गान प्रसंसा कीनी ६९ तब कंसादिक की बरनारी निज पति मरण सुना दुषि भारी
सिर उर ताडन करत बिलापा। धाई सब हिय बहु संतापा ७० छंद हिय बहु संतापा करत बि
लापा धाई तन सुध भूल गई निज निज पति रे षी सोच बिसे षी आलिंगन करि ताप नई ७१
अति दुष हिय भारी रोदित नारी बदति गिरा सब बिकल भई हे धर्म धुरीना नाथ प्रबीना हम
अनाथ अब कीन दई ७२ तुम प्राण जु त्यागा हे बड भागा तिय गन सब बिनु प्रान करी तुम
बिनु बिनु हम दीना परम प्रबीना नाथ प्रभा सब आजु हरी ७३ यह पुर अति पावन सुषद
सुहावन सो उ तुम बिनु छबि हीन हमें तुम बिनु अपराधा कान जग बाधा भूत द्रोह अति के
नामे ७४ दोहा सकल जीव कह दुष दियउ बिनु अपराध जु कंत ता कुल है फल आज तु
म प्रभु सो पेसु षवंत ७५ चौपई करि परद्रोह कवन अस बानी लहै कहै को सुष जग जा
नी लोक चराचर लह लगि आही संभव पालन नास करि ताही ७६ ऐसे प्रभु कर चरहु अ
पकारू सो कि मिलह सुष पाहि ससारू हम पर स्मरे ब करुणाकर नारि रूप सब गुनि के
बरजनागर ७७ तेहि दिग आइ बोध करि तासू समुझायो कहि बचन बिलासू पुनि सबम
तक क्रिया जग जेती करिवाई प्रभु बिधि करि तेती ७८ पुनि पितु मातु बंधु सब छोरी निज
सिर धरने हि पद कर जोरी तब बसुदेव देवकी माता सुत ईस्वर जान्यो दोउ भ्राता ७९
बंदन करत देषे सुत दोऊ हिय सकित कै मिले न कोऊ भक्ति बिवश लहरि है अबनासी

श्री·भा
१२४९
149

सब गोपीजन भा सुखरासी ८८ दोहा एहि विधि सब कहि सुषित करि मन ज्ञाना के सारि
राम स्याम जा तासु पर नहि पहिरि सेभ व वारि ८९ कहे सोरठा चार सुभ चार छंद सुषकारि
अपर दोहा राग्या दश वर कहे सुने अघ हारि ९० इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा
विवेके चौतालिसमो ध्यायः ४४ दोहा अब पेतालिस के विषे पिता मात ढिंग जाइ तेहि समुझे
है विविध विध पुनि नेरहि समुझाइ १ उग्रसेन कहि नृपति करि पुनि गुरुकुल करि वा
स विद्या पढ़ि पुनि मधुपुरी आइ है रमा निमानि वास २ इतनी कथा विचित्र सब कहि है श्री
मुनिराज नृप सुनि है सब प्रेम जुत अरु जे संत समाज ३ चौपई हे नृप कृष्ण देव यह
जान्यो देवनि इन ईश्वर मोहि मान्यो तब निज हृदय विचारे उ ताता इन नहि नश्वर समुझ
सुखदाता ४ ताहि गुप्त करि विवेक हेत निज माया प्रगटी गुनिसेतू प्रथम हि प्रबल बुध जोर
हई तो संसार क सुष भल लहई ५ ईश्वर ज्ञान प्रथम नहि नीको अभिप्राय यह हरि कि ही
को मे प्रसन्न इन पर मो अहउ दुर्लभ कहा ज्ञान सुष कहउ ६ दुर्लभ प्रभाव मो माही
ताहि ते ज्ञान अब हि भल नाही तब निज माया प्रभु विस्तारा जा करि मोहि त सब संसारा
७ यह विचार प्रभु निज मन राष्यो सादर प्रणय मद इम धुलानी बोले मंद मुसकाय सया
नी ८ अहो तात हम ते सुत को ऊ लहे न तुम कबहु छन सो ऊ जद्यपि तुम उतकंठित हो
ऊ नहि दिगर हे यह सुष कछु को ऊ ९ बालिक सो रादिक सिसु लीला सो ऊ नहि तुम हि
होन गनि सी ला होन हार कर्म गति भारी मिलन वियोग विपरीत करन्यारी १० दोहा है

144A

बीगतिहतभागहमनवहिगलहौनिवास होइ वालपितुमातुरिगतवस्तुयवहिंअनया
स ११ चौपई तवपरिचर्याकरीनकोई धर्महानहमकहसवसोई इमिअवकहतनाथपि
तुपासा धर्मकौनकीसवघरवासा १२ होइपुत्रतनधनसवलायक मातपिताकीसुधन
सहायक जोनिजपितुकोवचननदेई याइमारनिजजमपुरसोई १३ मातापितावधनिजना
री साध्वीहोइवालसिसुवारी गुरुअरुविप्रसेगुणागात होई होइसमर्पसिकनविधजोई १४
एतेमेकहमोवचननदेई जीवितमरेजानियेतेई इतिनाहिवससेवकंकेहेतु नितउरवेगसहे
दुषकेतु १५ तवसेवनहमकछुअनकीन्हा मोघरिवसइतिनाविधकीन्हा हमपरिनेत्रर
हहे ताता छमाकरहुतुमहेसुषदाता १६ सहेवहुतदुषतुमवहुकाला पाइनिमित्रकंसभू
पाला हेनृपभगवतवचनअनूपा सोईमायासस्यातसरूपा १७ मोहिगएहेपततनका
ला अकधरसोहोउवंधुरयाला अतिआनंदमभोसुषभारी सोच्योसुतनिजलोचनवारी १८
गदगदकंठविमोहतहोऊ तुपकुंहरहेवदननरगहोऊ निरषरामकृष्णसुषअतिहोई जन्म
जन्मकीविपतिसववोई १९ दोहा पितामातुचितसोतकरि एहिविधवचनवनाइ उग्रसे
नकहराजरैविधअभिषेककराइ २० सोरठा प्रभुवोलेमृदुवेन महाराजहेराजवर
आगुसुधोसुषअैन तवनिदेसकरिहेजुहम २१ चौपई तुमअसादेवेमोहिजोगा मेतु
मकहिकिमिकरोनयोगा जोकहाचित्रैसेतुमकरहू तोममवचनचित्तरेगहहू २२ नृप
जजातिस्रापितुजदुराजन तहितेहमहिनहेनृपआसन जादवकुलयद्यपितुमअहहे

प्रा॰भा
रधि
२५०
150

मम अशोक छूटो घनल्लह हूं २२ मेरी कहा शत्रुघ्न प्रभु ऐसी राज्यभार पालन मति जैसी औ
करा चित्र ऐसी मन आनिय तौ मम वचन सत्य सुनि मानिय २३ मै तव भरत्य भाव जव कीना
नवहि सुरारि कनव आधीना तुम कहुं सव वलि रिहै आनी अपर भूप की कहा कहानी २४
पुनि हरि ज्ञान वेधु ने कोई कंस त्रास मैं भजगे जोई जदु मधुत त्रुजु अंधक जानी भजि
भजि रिपु सौ हि सिव से सुहानी २५ कृष्ण रेवनि निज कोसन मानी सुवस वसाये पुर मह आनी
हे धनु माने आपु जदुनाथा मधुपुर वासी करे उ सनाथा २६ प्रभु भुज रक्षित सव पुरवासी
लहे मनोरथ सुर गो नासी सुर नर मुनि जन महा सुख पाई महा पवित्र भूमि अति हरषाई
२७ दोहा निज निज गृह सुख सौ रमें नित प्रति हरि सुख देखि कृष्ण मेरह सिला हित न हे देखि
हि हरख विसेषि २८ चौपई श्री मुकुंद मुख पंकज देषी सुधा रूप रम पिवहि विसेषी भये
वहु सव जु वासमाना वलि अरूप आनौ कि कजाना २९ पुनि हरि नंद निकट चलि आ
ए देखत नियरे सुख पाए करि आलिंगन अति सुख मानी बोले कृष्ण रेव मृदु वानी ३०
अति सनेह तुम तुम महे ताता मम पालिन किय तुम सुखदाता नित नन सव कह पिय अति
आहो हम कहुं तेहि ने अति प्रिय चारी ३१ नित नन ते सुन पर अति प्रेमा सव कह अध
कहा तय ह नेमा न व व कुरे व सु अन हो रो क मम सुत न हि इमि कहो न सोऊ ३२ सोई पितु
सोई जननी हे ताता पुत्र अस रिस पोष्यो जो जाता पाषन रक्षन वलि ते हीना शिशु क हत्या गि
त न अति दीना ३३ पालत पोषन करे जु तासु सोई पितु मातु अपर नहि कासु ताता जा

150A

हुतुम व्रजकहर्षजू हमसानिनकहूं कारिसुषसाजू ३४ अतिसैदुषितरहे वहुकाला अव
इनकौतजिसकौनहोतो निरभयरहेसकलजगछाये अतिसैमग्नसुहृदसवभये ३५
दोहा तवदेषिनहितआइहै इनकौसुषउपजाइ एहिविधनेहारिकानसौवचनकहेमुस
काइ ३६ सोरठा मनिगनवसन अपार अलंकारवहुविधरचे भाजनविविधप्रकार
कंचनरजतसवारभुज ३७ चौपई एहिविधपूजनंदकहिआए अतिकोमलपुनिव
चनप्रलाए नंदप्रेमचितविह्वलह्वैकै मिलेअंकभरि दोउसुतगहिकै ३८ सजलनयन
सवगोपसमेता व्रजकहगमनेवुद्धिनिकेता हन्दपपुनिसौरीसुषमानी निजगुरुवोल १
लियोसनमानी ३९ दोउसुतकेउपनयनकराये वेदविहितजसगर्गवताये तिनकहं
कंचनधेनुअनेका दियोदछिनासहितविवेका ४० पुनिसौरीवहुधेनुमगाई दियेद्वि
जनकहअतिसुषपाई पूर्वकियेमानसिकदाना कृष्णजन्ममहुवहुसुषमाना ४१ सौ
सवदियैआलंकतकरिकै वेदविहतहियआनंदभरिकै संसकारजुतभेजदुनाथा कु
लाचार्यतेहिलहिसुभगाथा ४२ ब्रह्मचर्यव्रतजगहितचाही करनचाहजदुपतिअव
ताही कृष्णजगदीसब्रह्मसनातन नरतनवपुधरेपुरातन ४३ दोउसर्वज्ञजगतकेईसा मो
विद्यासकलमूलपरमीसा स्वतहसिद्धज्ञानघनरासी परमगुरूयकरुणानिधरासी ४
४ दोहा नरलीलाकरिजुप्रक्रियानिजऐश्वर्यअनूप गुरुकुलवाहतवासकियेगए आप
सुषरूप ४५ चौपई गएअवंतीपुरीसुहावनि संदीपिनद्विजगृहअतिपावन प्रथमहु

श्री·भा·
१२५१
151

तौकासौकौवासौ पुनि अवंतीवस्योसुधासौ ४६ यथायोगकरिवासक्रपाला गुरुसेवा
कीकछुकाला अपरनगरनिसिक्षाकेहेतु गुरुसेवाकियक्रपानिकेतु ४७ सुद्धभावदोऊ
ध्यानन्दरयौ सेवावसदिनरे ववितसैयौ अखिलनिगमहीन्योहितमानौ सांगोपांगपदेगु
नवानौ ४८ सांगउपनिषदसहितकहावै अंगनामसिक्षादिसुहावै मंत्रदेवनास्नानसमे
तौ पढेधनुर्वविद्यासवजेतौ ४९ धर्मशास्त्रसवपढेविचारी मनुआदिकमुनिनउचा
री बहुविधराजनीतिकभेदा न्यायशास्त्रवहुविधगनिषेदा ५० पढेतर्कविद्यासवजेतौ
अपरमिमांसादिकसवतेतौ विद्यासकलमहांलगिकोई तासुप्रचनकहेएकसोई ५१
सांहसिगुरसनपढेविचारौ सकलमहेवहिलेमनुधारी अहोरात्रिएकदिवसमझारा चौ
सठिकलापढेनिरधारा ५२ तिहा चोसठिकलाजुप्रभु पढेतासुनामकेहेतु शिवतंत्रके
वचनकरितासुनामकहहेतु ५३ चोपई गीतवाद्यअरुनत्यप्रकारा नाट्यभेदपुनिअहै
अपारा लिषनप्रकारअहेवहुभांती जेहिविसेषछेदनजगख्याती ५४ तंदुलकुसुमावा
लिकीरीती सुमनविछोनासुघरसुप्रीती दसनवसनकेरंगअनेका अंगरागविधसुभगन
एका ५५ पुनिमनिभूमिककर्मसुभायक सयनरचनविधसुहायक उदकवाद्यअ
दमलकोघाता चित्रयोगविसिरचनसुहाता ५६ मालाग्रथनविकल्पनथोरे अनुनेप
थ्योगवहुतोरे शेखरयापीडुनकेयोगा करनपात्रभंगादिप्रयोगा ५७ गंधयुक्तभष
नपहिरेवो इंद्रजालविद्याभनहरिवो अपरकुकुमारएकयोगा करिलाघवकेविवि

151A

काल
धप्रयोगा ५८ साकविचित्रकरणकीरीती श्रॅंक्रियाप्तिषीकरिपीती भाछविकारा क्रि
यावहुजाती पानकरसरागासवभाती ५९ स्त्रीकामकर्मगुणजेते करनसुत्रक्रीडाबहु
केते वीणडुमरुवाद्यजहांलौ प्रतिमालारिकसीखितहालौ ६० गजप्रहेलकारिकसव
सीखे सीखेदुरवस्त्रकेजेदीखे पुस्तकवाचनविधएकन्यारी भाटकअर्थकथनसुषकारी
६१ दोहा काव्यसमस्यापूरवोपलेगविनबोराज वाणवेचकीवमुक्ति याविविधविकल्पगु
साज ६२ सोरठा तर्कमर्कसवगार तनछनवास्तुककर्मजे सीखेसकलविचारि रतन
रूपपहिचानवो ६३ चौपई धातुवादमतिज्ञानपरिछा आकरज्ञानरुवतहनिजइछा आ
पुर्वेदवछकेसारे कुकुटलावलराइनिहारे ६४ मेषभ्रारिसवनुद्भवधाना शुकप्रलापक
रिवोगुननाना अपरसारकावचनप्रलापू उत्साहनविधगुप्तप्रलाप ६५ केसमारिजन
विधवहुभांती मानसीकअछरवहुख्याती सुछिचितवनकथनप्रकारा अरुमलेछगुन
तर्कविचारा ६५ सकलदेसभाषाकोग्याना सुमनसकटिकारविनविधाना सकलनि
मित्तज्ञाननरईसा सीषेगुरुपहिअगजगईसा जेत्रमनकावाचनरीती सोउसीषेप्रभुक
रिमनप्रीती धारणनामममात्रकाभया तासुवाचवोतेहिअनुरूपा ६८ काव्यमानसीकि
याअनेका पुनिअभिधानकोसनहिएका छेदज्ञानअरुक्रियाविकारा छलतजोगगु
निविविधप्रकारा ६९ वसनगुप्तकरिवेकीरीती धूतविसेसषेलवोजीती आकर्षनक्री
डाएकनामा अपरवालक्रीडासुषधामा ७० दोहा वैनायकविद्यासकलवैयासिकए

भर्त्तीपंचनद्रोपद
कहीये।।जिहांदेव
सर्पनीलहीये।।क
रोसुषमंत्रारीला
हीं।।जोबूकेसो
पंडतसाहीं।।

क नाम जो सर बिद्या एक कहि पढे़ कहूँ गुन भाम ॥७२॥ चौपई पुनि गुरु कोमल अरु मम वृंता
बोले बचन सरस सुख देना मागिय जो कछु तव मन होई देहूँ सकल सिद्ध सब सोई ज
पमो गगुरु कहमो देई विद्या फल पावहि नर तेई हे नृप सुनि हरि गिरा अनूपा महिमा
अतुल अखिल सुखरूपा ॥७२॥ नर तेवु द्ध बिलछि न हे थी हर्ष न हिय भावि प्रवसे थी निज तिय
सौ निनमे अविचारी मा पाप न तक प्रबल सुख कारी ॥७३॥ मेरे प्रभास छ अमहते ऊ काल निमि
त लिखि मुख ले ऊ सुनि द्विज बचन कह्यो जगरीसा हूँ हे न बचन हि गिरा मुनीसा ॥७४॥ इमि क
हि के गुरु सन कहो उ श्याना रघु च द नुरत स ले मन ज्ञाना गए प्रभास सिंधु के तीरा पैठ कृ नम
र तहूँ भए धीरा ॥७५॥ सुनि धक जागमन जानी इनि उपाय नरिय सनमानी तासन
क एक कह्यो हु स बानी गुरु सुत रे उ वे गि सुमत्यानी ॥७६॥ निज मन रंग कहि विप्रकुमारा गुरु स
अधिकारी नेसो चारा कहु रे व मोक हो व बानी सुमन सुमर अस्तुति निद्धानी ॥७७॥ सो०
सुनत सिंधु हरि की गिरा बोले उ हो उ कहि जोर नाथ न मे दि न सुत हस्यो विनय सुनो प्रभु
मोर ॥७८॥ चौपई इसु अंपे च जनन नाम व कारी अंतर जल नर बसे सुरारी शंखरूप धर पे
रि जल माही हरयो बालक तिन बस मो पाही ॥७९॥ सुनत बचन सत्वर जदुनेदा प्रविसे जल म
ह्य अनेर कदा नाहि मारि तिहि उदर मझारा लख्यो न बालक तह निरधारा ॥८०॥ शंख
नाम सुनत सन बसोई पांचजन्य जाने सब कोई शंख कूप नि रघु चेहु जदुनायक संजम
नी पुर गे सुख दायक ॥८१॥ नाम सु द्वार पहु चेरो उ श्याना कियो उ शंख धुनि जन सुख दाना

152 A

सुनत श्रोंवधु निसपरितुरेता। आएउ जहं श्रीकृपा अनेता ॥८२॥ पूजनीय विध करहोउ जो
री बोलेउ प्रभु सन वचन विहोरी हे अघिलेस सकल घटवासी लीलामनुज सकल गुन
रासी ॥८३॥ नाथ जानि निज किंकिर मोही करिय निदेस करौं सोई जोही तवभगवंत गिरा सु
निता सू बोले कृपा देवजम पासू ॥८४॥ तिन केकमनि वंधन पाई गुरु सुत तुम आना एहि
ठाई मम अनुसासन मानि तुरंता आनहु तुम जिन कहहु धवंता ॥८५॥ दोहा धर्मराज सुनि
प्रभु गिरा अवसि नाथ यह लेहु इमि कह गुरुसुत आनि दिय प्रभु लैगे गुरू गेहु ॥८६॥ चौपई
गुरु कहह रघु गुरु तन पमुरारी पुनि कह मोंगहु वर सुषकारी सुनि प्रभु वचन विप्र सुषमा
नी बोल्यो वचन मृदुल सनमानी ॥८७॥ अहो कृपासनु मसब कछु दीना गुरसेवन तुम अति सम
कीना तुमहि सरिस सेवक मय जासू सकलें मम पुज्यो आसू ॥८८॥ जाहु भवन निज होऊ तुम विध
भ्राता पावन सुजस होउ सुषदाता पातयाम स्रुति सब तुम लहहू संतत निजकुल जस।
विस्तरहू ॥८९॥ गुरु तें लह असीस होउ भ्राता पवन वेगि रथ चढ सुषदाता आवत लषि पुरज
न होऊ भाई अति आनंद उमग अधिकाई ॥९०॥ जिमहि देषि सुष होइ न थोरा गयो ऊघ्य जिम
लहवर जोरा देव किन्नर नाग हि राजन लषभए उ हरिकों सुष भाजन ॥९१॥ दोहा एहि।
कों विधगुरु देइ सुष श्रीपति कृपाकेत आए मधुपुर में नरपति निजजन न कह सुष देत ॥९२॥
सोरठा श्रीपति सबसुषदानि भजहु कृपामन कायवच तजि जगलज्या कानि वेद कीन तं लमन की
जहु ॥९३॥ दोहा एकादस सोहा कहे अपर सोरठा चारि येता लिके ध्याय महं कथा सु भाग ॥

153

श्री भा०
द० ४५

घडार ६४ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषायां पंचचत्वारिंसोध्यायः ४५
दोहा उद्धव कहत श्री कृस्न सुनु ग्रवन मस्य मुष हिय जानि कोर निदेस तेहि प्रेर है ब्रज क
हु अति सुघमानि १ आसालै निज नाथकी नेह गेह को जाइ नेह जसोमत सो कस वह हरि
हे वचन वनाइ २ बहु अरु वालि सकों विषे इतनी कृपा अनूप सुन तनसे अघ अघौघ सब
हरि पर सीन अनूप ३ चौपई गहि उपन यन धर्यो वनम्रूपा कामचारन जिसु पयनूपा
गुरु ते विद्या पढ़ ग्रह आए व नकह उद्धव प्रेर पठाए ४ सषि निलो यकरि चें अति गूढा
अतिरहस्य को उत्तम न मूढा अति प्रवीन उद्धव कहं जानी जहं मैं धीवरसु घरानी ५
सुर गुरु सिष्य सषा अति प्यारो रहस्य बुला यो अनन्यारो गहि करमानि प्रनन दुषहा
री बोले गिरा मधुर सुषकारी ६ अहो सषा तुम ध्वजकहं जाहु नेह जसो मति हिय अ
ति लाहू मम निदेस करहु व परहर हूं एतना का नमिलम मकरहूं ७ अरु गोपन हिय पम
निस नापा मम हित जिन तजु त्रिया कलापा मम संदेस कहे उनिन पासा मोनि मित वा
धा करि नास ८ अति सिये तिन को प्रिय मानू मो विनु तिन कहि तन सुध कछु आन अति उ
त कंठा विरहि न घोरा कसत नमन उपज्यो दुष घोरा ९ मो प्यारि सुमर सुम दि चितये
सुध भली वारे अपर न वेसता सुप्रना मन मो महवास मम हितन ज्यो लोक पथ श्रा
१० दोहा इहे लोक परलोक सुष साधन ता सब कोइ सकल न ज्यो जिन मोहि लगि त्रिन
सम सब जगनोइ ११ चौपई महि है उसु पथ अमित प्रकारा यह मम वचन हे सषा।

पियारा मम वलिभा गोपीसव जानू अविलंवन तिनकौं मैं मानू १२ औपरि आलरह्यौ तन न तासू
एक भरोस अहै मोहि आसू गोकुलतें मैं चलती वारा कह्यौ छबेन निज सुख निरधारा १३ ऐसे
होरी धुरकथु कोरिन माही दूत पठाइ कह्यौ तिन पाही अवधि आस अवलंबन ताही एहितें प्रान
रह्यौ तन माही १४ जाहु वेगतु म भस्म सयानें करि हौ तासु बोध सन मानै उद्धव सुनि प्रभु गिरा
अनूपा रथ चढ़ि चल्यौ तुरत ह भूपा १५ नेर वास रजनी मुख गएउ धेनु गेह सबि सितिदन लहेऊ
गोधन रेनु छप्पौ रथ घनासू लरत वृषभ षरकन चहु पासू १६ पुष्पवती गोधन के हेतू लरत प
रस परम न्न अचेतू निज वछरनि हित बोलत धेनू दोहन रवि वहु बाजत वेनू १७ राम कृस्न कृत
कर्म सुहावन व्रजजुवती गावहिं अति पावन सुभग अलंकृत छवि मद छाकी हसनि मंद गत
चितवन वाकी १८ दोहा गो गोपी अरु गोप गन वंदर वंदर वहु पास सुभग अलंकृत वहुत विधदे
ध्यानंद अवास १९ सोरठा अग्नि अर्क महदेव अतिथि धेनु अरु पितर गन ग्रह ग्रह सव कोउ
सेव धूप दीप उपहार जुत २० चौपई एहि विधि गोप सदन सुदिनी के मुनि मन मोहि भावस
वहीके आस पास पुष्पत वन सोभा देषित मीन केतमन लोभा २१ पद्म षंड मंडित मन सोह
न द्विजगन रव सुनत जन मन मोहन उद्धव नंद सदन ढिग जाना नेहलष्यौ आवत ते हिताना २२
कृष्ण रव कौ अनुचर जानी उठ्यौ तुरत हरषित मन जानी प्रीति सहित आलिंगन करिकै पू
ज्यो कल्पवृक्ष हिय धरिकै २३ षटरस जुत भोजन करवायो सुभग सेज परि मुनि वैठायो पग
सेवा करि गति श्रम कीन्हा पूछत कुसल ताहि सुषदीन्हा २४ महाभाग हे उद्धव प्यारे सूर

154

श्री·भा·
१२५४

सुअन जे सखा हमारे कुसल अहे सब बंधु समेता। देव योग गति अस न निकेता। २५ निज अ
घ मस्यो इह अघ रासी कंस नाम सानुज भौ नासी। धर्मसील जदुकुल बड भागी तिन हि दि
यो इ सम इ अभागी। २६ कबहु कृष्ण देव हितोता। मान सुहृद जन जे इत तिरछाता। सुमिरत कब
हु गिरिवर धेनू हमरे ह्य नाम परे नू २७ कबहु कृष्ण जन हेतु एक बारा। खेहैं इति भगवंत
उदारा। कबहु कहूं ब्रज मे मन लाई हमरो अरु ओ सुरत लगाई २८ दोहा तब हम बदन बि
लोकहि मे दहसि न अभिराम कमल नयन करुणा अयन सुभग रूप घन स्याम २९ सोरठा
सुमिर कृष्ण उपकार उमग्यो अति आनंद उर धर्मसील आगार हरखत बोल्यो नंद पुनि ३०
चौपई वर्षा वात अग्नि अमि घोरा वृष अरु वृष धर कठिन कठोरा अपर अनेक मृत्यु स
म घाता हम हि बचायो निज सम ताता। ३१ कृष्ण पराक्रम लीला हसनी वंक बिलोकनि
मन दुख हसनी सुमिर सुमिर मद वचन लाल के सिथिल क्रिया व्रजगोप वाम के ३२
उद्धव सिप लम माव जनि मानू रसरस कियाना सस बमानू राम कृष्ण व्रज प्रगटे ताता। हम मा
न्यो इन के सुर त्राता ३३ बेरन के इ धरा रनि हेतू प्रगटे होउ जन सापानि केतू नीन ताल को ध
गुअ अति भारी सार भूत गहि करि गिरधारी ३४ कमि है हूं कडार माहि रीना रंग भूमि को तु
क अति कीनो। चिनु श्रम मल्ल लोग भुव सचउ। जिमि इभि रामन पाल कृत पंडु ३५ सप्त बिस
एक हाथ कृपाला। राख्यो गिरिवर श्री गोपाला। पुनि प्रलंब धेनुक बध कीनो मार अरिष्ट।
लषा सुख दीनो। ३६ दोहा तृणावर्त वक अशारिष्ट महाप्रबल पर चेद दुस्सह सुर सुर अजि

154 A

तसहि विनुस्रमकियपरोरखेद ३७ चोपई क्रस्नसुभावरूपगुनसीला ब्रजवसकियोसुषरव
हुलीला वारवारसुधकरिचितमाही प्रभुपदरतिमनुअमेतनसुधनाही ३८ प्रेममगनमतिविह्वल
चितभएऊ वचनश्रावनहिंनृपकहेरहेऊ नसुमतिसुनतिरहीसुतकेरमा वचननेरमुषके
नुतधरमा ३९ मुंचतिवारधलोचनवारी स्रवतपयोधरपयसुषकारी श्रतिसनेहरूप
तिकरिदेषी उद्भवहियश्रतिहरषविसेषी ४० महदुलमनोहरमंजुलवानी कहेलागनंदहे
सनमानी श्रहोनंदतुमसोऊजगमाही पावनजसतुमसरिकोउनाही ४१ प्रभुरमेसश्रखिले
सश्रनेता तामहिश्रसस्नेहबुधवेता रामकृस्नएदोऊजगजोरा विस्वबीजरसोईश्रपरन
होरा ४२ पुरुषप्रधानजगतकहहेतू इमिकोउकहिहेकपानिकेतू तहासुनहुयहवच
नहमारी इनव्यतिरेकनश्रपरनिहारी ४३ श्रगजगमहसोईश्रंतरजामी पुरुषपुरातनई
सजगस्वामी श्रवनासीनारायनस्वामी श्रंतरजामीश्ररुनिहकामी ४४ दोहा श्रंतकाल
हुकेविषेजोकोउनरवुधवंत कछुमेहवपदकंजमह सोनमनधरैगुनवंत ४५ सोरठा श्र
मितजन्मकेदोष सहितवासनामिटहिसव विनुश्रमलहइसुमोष पुनिनलहेभवसिंधु
सोइ ४६ चोपई श्रखिलजगतकोसोकोउहेतू नारायनगुनश्रमितनिकेतू कारनमनुज
रूपदोऊ परिहरतलषिसकेनकोऊ ४७ तामहिकियोप्रेमश्रतिभारी कल्पकल्पतुमदोउ
सुषकारी श्रवकछुकरनकल्पनहिंकोई धन्नधन्नतवजसजगहोई ४८ श्रल्पकालमह
श्रीजदुनंदा ऐहेंव्रजकहश्रानंदकंदा निजपितुकहश्रानंदकराई ऐहैंइतिकहश्रीजदु

से

१५५
श्री·भा
९२५५

राई दुरुह कै सहत न भ्रम सेना। रंगा भ्रमि मन हि कृपा निकेता। पुनि तुम सो जब मिले कृपाला। क
हे वचन जो कछु तेहि काला। सो निज निगिरा सत्य सब करि है। इहां आइ तुम कों सुख भरि है। कां
जानि यह हरि कब धों ऐहै। हम को इति आनंद उपजै है ५१ जो कराचि ग्रैसे तुम कहहू। तो मम व
चन रहस्य तुम गहहू। महाभाग तुम एहि जग राऊ। कस्मरे वनिज हिग तुम जो ऊ ५२ सकल भू
त महि अंतरजामी। तहू अग्नि इमि सब जग स्वामी। मयन कि ये विनु सो नहि लहई। तेमि श्री।
कृष्ण भाग वस ग्रहई। अति प्रिय मात पिता कहु त्यागी। इहं ऐहै कि मि मोह त लागी। भक्ति प्रि
य अति कृष्ण गुसांई। जहां तहां ब्रुग दोस्तु भगासु हाई ५४ दोहा जो कराचि ऐसे गनहू तुम अ
पने मन माहि। प्रिय अप्रिय अति मित्र कछु सो तिन के कछु नाहि ५५ चौपई अग जग विष
म अहै सब जेतो। हरि सम मान सब मे है तेतो। उत्तम अधम वस्तु सब जेती। प्रभु कह एक सरस
सब तेती ५६ नहि पितु मातु सुता दिक नारी। नहि प्रिय अप्रिय स्वजन सुखारी। जन्म कर्म कछु
सो नहि ताही। सत असत ग्रसत रहनाहि वाही ५७ तदपि सो हरि साधन हेतू। धरै वडु तन वपु।
कृपा निकेता। रहित गुन कारिक गुन सब भजई। जन पालन हित कौतुक करई ५८ अग जग
सम च करि उनि सोई। पाहि परहित यकरता जोई। प्रभु के कहे विषमता कोई। सो सब भ्रम वि
गुन्य परन होई ५९ नयन दोष करि जिमि नर कोऊ। देखे भ्रमत भूमि सब लोऊ। ताहि प्रतीत
सत्य सी भासे। सो लोन यन रोग नहि नासे ६० जैसे अहं बुद्धि कर कोई। मन तन मय आतम
सो होई। कर ता मान लेइ सो प्रानी। अहे न कर ता हे सु पतानी ६१ प्रभु कह विषय को उ मूढा ९८

सो अति अस मोहि आरूढा मायामोहि प्रबलता भारी नरि नारीन्ह हि छूटै दुखारी ६२ दोहा
अहो नंद श्रीकृष्ण प्रभु नाहि न निज सुत मानु सकल विश्व के सुअन के आतम तिन कहु जा
नु ६३ सोरठा जगत चराचर कोइ सब के पितु अरु मातु सोई अविनासी लखु सोइ ईसनि
यंता जानियहु ६४ चौपई भूत भविष्य सुना जो देषा वर्तमान जे वस्तु विसेषा थावर जंगम
अल्प अनेका थूल जहां लगि सब महि एका ६५ कृष्ण विना कोऊ वस्तु न याना एवि विदुषज
नन पहिचाना परमार्थ श्रीकृष्ण निहारू एहि विधि तुम निज उर महु धारू ६६ नंद कृष्ण अनु
चर इमि दोऊ कहत सुनत निसनी दन सोऊ वीती निसा गोपिका जागी कृष्ण रूप ध्यान सब म
ह पागी ६७ ग्रह ग्रह करि दीपक ब्रजनारी धरे देहरी मध्य वास री लागम घन दधि विविध
प्रकारा अति सोभित निज सदन मझारा ६८ कटि किंकिनि मनि जटित सोहइ अति दीप प्रभा
करि ललित मोहि मति रजु आकर्षन भुज बर कंकन स्वज कुच हार चलत सोभा घन ६९
चलित नितंब हलित कुंडल बर ताम्बूल आइ पर सुभ कपोल पर अरुण बदन कुंकुम कर
सोहन कोटि कोटि निसिपति छवि मोहन ७० दोहा गावहि गोपी सरस सुर धुनि परसी
दिवि जाइ दधि मथने के शब्द मिलि कृष्ण सुजस गुण गाइ ७१ चौपई जासु गान सुभ मंग
ल षानी सामवेद धुनि सुनत लजानी भए उ प्रात रवि उदित निहारी ब्रज जन नंद द्वार पग
धारी ७२ कंचन जटित दधि रघनी को ब्रज तिय हिय आकुल सब ही को बोली रिस करि
गिरा अनूपा जिन कह कृष्ण प्राण धन रूपा ७३ अपुरी कहा आयो हय क्रूरा कंस निधन सा

श्रीभा
११५६

156

धनकहुसूरा कुस्मकमलदललनयनेकृपाला पुरीगयो लेगेतनकाला ७४ लेकैकंसघात
करवायो अबधोकोनहेतुइनआयो हेनृपकिंकरयहधोसोई जान्योपरैकोजनहिकोई
७५ यहअनुमानआवहियमोही सोमैकहौंजानिप्रियतोही मर्योकंसतेहितनकहुजा
रीइनआयोअबहमकहुमारी ७६ ममतनमांसपिंडकरताही देहैनिजपरतहिचिनचा
ही कहनपरसपरइमिव्रजनारी जिनिकेप्रानरूपगिरिधारी ७७ तेहिछिनउद्धवकरिअ
सनाना आइगयोतहचतुरसुजाना निरमलहृदासकलनियंता विश्वरूपजानिहरि
केता ७८ दोहा ताहिदेषिव्रजसुंदरीचकितचित्रपुनिचाहि करतभईअनुमानहियकौ
नदूतयहआहि ७९ सोरठा हरिकिंकरकहिदेषि गोपीहियहरषतभई तिमिहरिजन
कहुपेषि हरिप्रिमनसोमुक्तलहु ८० रामकृपायहजानु संततहरिजनसंगकरि पैहोस
बसुषषानि कल्मषकेनपरसहुमिजु ८१ दोहा कहदोहरासुभगनव षट्चलिकैमाहि
बहुरसोरठाषट्कहुसुनतहिपापनसाइ ८२ इतिश्री भागवतेमहापुराणेदसमस्कंधे भा
षानिबन्धे व्रजनंदस्नेकायन पननामषट्चत्वारिंसोध्याय: ४६ दोहा अबकंसारिनिदे
सकरिउद्धवपरमप्रवीन सकलगोपिकाबोधिकरिनेहहियअतिसुषदीन १ सुषसोम
धुपरुआइकेसमाचारसवगाइ निजप्रभुसोकहिहै सकलगोपीगीतवनाइ २ चालि
सवाधिकीसोतकौयह अध्यायपुनीन गोपीगीतपवित्रपुनि ताहिमहबसुरीत ३
चोपई व्रजजनियकल्मसअनुगकहइरेबी असुतइवसववेषविसेषी वहनसदनसोमा

156 A

सुषरासी नयनकंजजन सरद विकासी भुजप्रलंव उर पंकजमाला मकराक्रत कुंडल
छविसाला मंदहसन अ तिलसनअनूपा देषिचकित वोलीएअनूपा कोयह आइकहांतेआ
यो हमसरिससवतेसवनमेयो कासुहूतमहल छेयोनजाई इमिकहसव वोलीवहुधाई
हमऊपसरविरमनजास सोइआम्रयनेअपरनकामस साहर प्रलयसहितमटुवानी
वीडाजुनहसिचतुरसुजानी ७ उद्धवकोपुनिअतिसनमानी पूछनलगीहूतहरिजानी
मुरार तुमवंकारसेवकहमजानी किनआएतुमहिसुषदानी ८ निजपितुहितकरितुमहि पठा
ये अपरहेतुनासुकछुपाये वजमहतिन कहप्रियनहिकोई मानपितावितु औरनहोई
९ वंधुसनेहवंधुअतिभारी इसहमुनोसनकहहितकारी निर्गुनसगुनवपुतनधारन
संतनकारनजगविस्तारन १० छंद अतिसेहढकारीवंधनभारीसुहदसनेहन त्यागिस
के जेअपरसनेही वजमहतेहीतहायाप्रयोजनमानतके ११ जिमिलपटकोई परतिय
भोईत्यागिदेइपुनिअर्थलहे निमिसुमननिहारी षटूपरचारी रसलेतेहितजिअपगे है र
धनहीनसयाने पुरुषसुजाने गनिकातेहितजिदइतवे नरपतिवलिहीनाजवलागि।
लीनाप्रजातजेनेहितपरिसवे १२ जिमिलपटविद्यारहतअविद्यानजिगुरुग्रहनिज
गेहगयो जिमिद्विजमषकारी आहुतसारी लहिरछिलाग्रह जातभयो १४ तेहा जि
मितरुगतिफलदेषि केविहगनुरत उड़जाति जिमिआम्यागतिअसनकरिगेही ग्रहन
रहात १५ सोरठा जरयोग्रहनजिमिदेषि जातमगादिकभाजसव नारिपुरुषतिमिलेषि

श्री·भा·
द१५०

157

नारि भोग करि जाति चलि २६ चौपई इमि गोपी सब तन मन बानी कृष्ण विषै मिलि सिरिन लप
टानी लोक लाज मरिजाद त्यागी कृष्ण चरनहुं न परब भागी २७ बाल किसोर कर्म हरि
कीने सुमिर सुमिर तिंह रिस बरीने ताहि माइ ललना करि भंगा रोइ उठीं सब एक ही संगा
२८ रुदन करत पुछन सब लागी कृष्ण रूप रस मैं नित पागी परयो दृष्टि कोउ मधुकर तब
ही प्रीतम दूत कल्प मैं हि सब ही २९ बोधा कृष्ण संग की जिन ही पूछन लागी दूत करि तिन
ही हे मधुकर स्वामि पुरुष मम गहिये धूर्त बंधु तो हि अस सिन हि बहिये ३० मम पर बाहु क
छु कहु न निर्मोही काहे कुटिल लख्यो मैं तोही अरुन मुख परि हिगलखिलाके वचन अंग बर
न हि सब वाके ३१ सो तिनके कुच कुंकुम लागे प्रिय बन माल परसु बडभागे तार महतुम
मधुप लुभाने रादीन वरंजन तहम जाने ३२ ताहि मना व हुतु म अब जाई कृष्ण प्रसाद जासु
पर भाई हम नाहि प्रमार कि पे काला हूं वे प्रवीन प्यारी पिय चाहूं ३३ ब्रज गोपी सब बिह्वल
भई महा विरह मति पत उर जरई तिनहि मन वहु नहु चलि जाहू जानि बूझ न तर पिल
जाहु ३४ ताहा यदुकुल सकल सभा सह मिला जत जा चतन सोइ तुम उत कौ के सेल यो
जो तू इमि कह कोइ ३५ सोरठा मधुकुर बंदे प्रवीन जाके ऐसे दूत तुम हम ऐसे लखि
लीन तासु चरित्र विचित्र अपति ३६ चौपई अहो कहा जान्यो तुम तासु का अपकार कीन
तब आप सु जो इमि कहे दूत तू बाता तहो सुनहु उनके गुन ख्याता ३७ अधर सुधा एक बा
र पिवाई तिय गन करहु मोह क अधिकाई सौ इमे छोरु गे ह यान ले सा ताहि हे तुम सह

157 A

हिकलेसा २८ तुमहिसरिसमनदुरषकठोरा लैरमसुमनजानिकितघोरा अहोदेवपद
पंकजतासु किमिसेवैबुद्धिहैनहितासु २९ जान्योहमसेवैएहिहेतू कृष्णकृपासुनिसुन
हतचेतू साषीतासुजल्पनामानी गईभूलसोअहैअयानी ३० हमकरमासरमाममतिमो
ई किमिसेवैपदपंकजसोई भवरभूमिपरकरगुंजारा तासुनिनिजहियकरतविचारा
३१ ममप्रसादलाभकेहेतू गावततासुहहिप्रभानिकेतू यहअनुमानमानअनुअपने वोली
वचनमदुलकरिरुषैने ३२ हेयदूपदहमिसेवैंगुणगावहु हमहिसुनाइलाभकापावहु
जइपतित्यागिगएगहअगाना तहांजाइसुषसोकरुगाना ३३ विजयसख्याकोसखीस
यानी तासुनिकरमानहुसुषमानी जिमिहरिभगतत्यागिग्रहपेषा तिमिजदुवरकरुएल
उरकंपा ३४ छंद सुषमानिगावहुनिकटतिनकैजेप्रियाउतहैमानिनी पियकरिअ
लिंगनसुषतनितिरिमोहजुतगजगामिनी ३५ निजकुलनिरुजसवनासछिनमहुम
गनप्रिपसुषचाहिके तेदुई हितुमकहहरीजकैमनभाविलोअसुषपाइकै ३६ हेमाततुम
जनकहोअसैंमिलसुमिरितुमहिकौ एहिहेतुअगंगअतिहियविकलचिंतनितउन
हिकौ ३७ तुमकहप्रसन्नकरायवेकहुमोहिइतिपठियोहरी यहहेतुउद्धवहृदयकी
लषिकहनलजतियअनुसरी ३८ दोहा दिवसआदिकलोकमहतियगनजेतिककोइ
तिनकहमिलइनकौनअसिभूलेलषिमतिभोइ ३९ सोरठा कपटीमदुमुसकानिसुं
दरभूलोचनजलरुह अविलोकिनसुषपानि देषतहीवसहोतसव ४० चौपई रमाचर
जे

श्री॰भा॰
द॰ १५८
158

नरजसेवनजान्‌ हमयुग्मीनगनेकोकान्‌ जदपिहैयहसत्यसुजाना रूपुनपछप
हतदपग्रमाना ४१ जेकृपालजनहैजगसोई तिनकहउचितग्रहैयहसोई येनते
नविपहरिगुनगाना हेकरनीयकरोहमजाना ४२ भ्रमरपातलप्रविसतदेवी छमा
करायनहमहिबिसेषी ग्रसुग्रनुमानग्यानिहियमेपी कहनलगेहरिरसहियग्रेपी
४३ ममपदलिमकेपाधरहूहूता छोडुछोडुहेसुमनेसदूता त्यागेपापरलविकहतेहि
पाहीजान्योहमग्रपनेमनमाही ४४ तुमकारेद्विगतेचलिग्राए तेतिनसिखग्रसकत्समि
याए दूतकमंतोहिमिपुनमिहारी हमउइरचनासुखकारी ४५ ग्रनुनयविदुषसक
लगुनतोरा उनलिपईमाननमनमोरा जिमिउनकोविस्वासनकरिये तिमितोहिसक
लभांतिपरिहरिये ४६ उनग्रपराधकहानबहीन्हा जाहिहेसनुमएहिविधदीन्हा जो
इमिकहदूततेवानी तोउनकेगुनसुनसुधमानी ४७ छंद तेंसुनुसुयमानीमोमुखबा
नीतासुलिखावनसुनिग्रायो उनकेहितलागीसुतपतित्यागीचरणगहोसोइप
लपायो ४८ ग्रनिपयनहिमानालोकनमाना ग्रपरलोककोकाहचलो रूसिसविवि
धहीना हमकहहरीनात्यागगयेरहुकोनगली ४९ दोहा ग्ररेदूतकहुमाहिसोकित
मिलापकीवात पिछलेउनकेकर्मकोसुधग्रायेभयगात ५० सोरठा ग्रपरजन्मके
कर्म सुनहुदूतमनलाइतुम रघुपतिजनसधर्म वालहन्योतरुग्रोटदे ५१ चोपई
ग्रतिदेकूरकर्मयहजानू लुब्धकहहनेमासहितमानू कपितनग्रघगयोविनुकामा

रघ्याकठिनताकियश्रीरामा ५२ सियाग्रधीनसरावरितेभू वोलिनचलिनसरूग्रजिमि
158 A जेभू पुनिराघनिग्रनुजाग्रतिरीना श्रवणनासिकाबिनुतेहिकीना ५३ पुनिवलिद्वारमां
गियोदाना तिनसर्वहियोहूजेसनमाना पाइदानवांध्योपुनिताही प्रथमरीनहैजात्योजा
ही ५४ जिमिवायसभोजनकरिजहवा पुनिहठिवीठकरैसठतहवा कस्मरूपतेसंतनत
डारिये तिनसोप्रीतिभूलिनहिकरिये ५५ ग्रेसोमनकिमिगावहुताही जोकहत्वितुमकह
वितचाही तहांसुनहुगुमवचनहमारी कथाम्याकिग्रतिदुखकरभारी ५६ जानहिहमहु
रिकपाप्रभाऊ हरैत्रिवर्गललताकोनाऊ जानबूझिहमसकहिनत्यागी कहोकरैकहूहेव
डनागी ५७ हकम्मचारिनलीलागुनकारी कमैपियूषसुषदडुषहारी तासुसुधाकोकने
काकोऊ करैपानिसुकृतनरजोऊ ५८ दोहा नसहितुरतरागादिसवसपरिगहितजिजा
इ हीनदुषितसुतदारूसव ग्रहकुटेविविलषाइ ५९ सोरठा रंचकरध्याननाहि ग्रसन
तेज वसनहीनमन तिनतनफिरिनहिचाहि प्राणमात्रकीरतिजाहि ६० चौपई विचरहिभू
परतेसवप्रानी जिमएकवारसुनीग्ररुजानी त्यागिनभोगहमेवजुजानू त्यागिनसकै
करैपुनिपानू ६१ तासोयहहरिकथाग्रनूपा ग्रहैपरमपरब्याररूपा दुहुकरित्या मों
गितासुकोजानिय छुटेनहमसोयहमनग्रानिय ६२ ग्रेसेवचनकहेतुमकैसे कहि
येयोगनुमहिनहिग्रैसे प्रथमरहेववचननतवसंगा कहनविविधविधग्रमितप्रसंगा
६३ जोकहत्विमधुकरइमिकहसी तोसुनितासुनिरहसी ग्रहोदूतयहरहोसुवाना ग्र रंतर

श्री॰भा
६२५९
159

परसुनौ उन केगुन रव्याता ६४ जिमिलुब्धक कौगान अनूपा म्रगो सुनै विसरै सुधरूपा
वहमरगवधू सत्य नेहिमानी सादरसुनै त्यागि सब कानी ६५ सुनन मात्र सरहत न
नता सर लहैमहादुषदारुन त्रास तिमिहम ना सुवचन सुनि कानी कुटिलमहा मन
स्याम सुजानी ६६ ता सुगिरा मानी हम साची करि विस्वास न हाम तिराची लषहिहनि
रैतरहु षकीवानी महामलहिय मन अप्रेरुवानी ६७ दोहा कहाक ह तुमको अहै का
दषदुदुषषानि मो करतिविस्वैसेकहै तो सुनिम सुषमानि ६८ सोरठा ता सुनषनके
थेक ताकरि व्याप्यो विरहनहिय सुमिरनियदनमयंक पीडा संननलहहिहम ऐचोप
ई वान चलावहु जननुमनाकी कहो अपरभावेजियनाकी इनने मोऊ भवरउड्गए
उ पुनिपि रके नहघागिरपरे उ कहनलगी तासो पुनि तेई ल्सभावमनन मेगई ह
प्रियकेतुमसरवासुजान पुनि प्रीतम पाहिलसुषमान ७१ अहो दूत तुमहो सबलायक
हजनी यहमव हसुषदायक कहा चाहनाहे चित तोही मोगोसाइ सकुचो जनमोही ७२
कहाहम इतितेलैजैहो उनलेकैतुमका फलपैहो हमहिकहिनलागततहजहवो स
दावाम नेहिनिकिट सुहेवो ७३ हमहिमासुदिगवपोलेजाई से मनसिधुसुतापरिचा
है रहैन दूरवमैसअरमाही हमकेसमहनेहि पाही ७४ करिमिलाप पुनितेहि सनमा
नी बोली पुनिमे जुलमदवानी हेसोम्पन मर्वतभनेता चियापरिश्राएगुन चेता ७५
मधुपुर मोजअहेसुषरीती बसतवे पुननसेगमसुप्रीती कवहुकतासिसपागएसंगा

स्म्रंव

चलतवातकछुअपरप्रसंगा ७६ कहहिहमारिवातकछुकोई कहौसुनीजोतुमकछु
होई भ्रमरसुगंधसरसिमुअरंडा जोकरिरलेहुजवरिवेंडा ७७ जैसाचाएरमज्ञतो
मारे सोंहमदुषनिवारोहरिप्यारे सोभुजमममग्रेससिनिकरवधरहै निजकृतसकलतापप
रिहरिहै ७८ दोहा हेनरपमोपिनवतिगिरासुनिउद्धवसुषमानि कृष्णदरसकोलालसा
सकलतियनवहुजानि ७९ सोरठा प्रेमदेषिअतिताासु सवप्रियकेसंदेसकरि वोधकर
त्यवश्रासु प्रथमवचनवोल्योमदुल ८० चौपई अहोगोपिकातुमवडुभागी कृष्णक
पहरिपदअनुरागी लोकहुन्तुमजगकियपावन नामलेतअघओघनसावन ८१
वासुदेवभगवेनरमेसा तिनिमहतनमनकियआवेसा तपव्रतदानहोमजपजोगू सं
जमादिसुकृतिभ्रमितनियोगू ८२ कहेअनेकजन्मचिततवाही कृष्णभक्तिउपजेतवताही
कृष्णदेवभगवेतसुषाकर सकलनियंतासवगुनसागर ८३ नामहअसितुमभक्तिदृ
ढाई मुनिदुर्लभसवकहसुषदाई स्वसुतपतिस्वजनत्यागि निजगेहा कृष्णदेवपदकिय
उसनेहा ८४ परमपुरुषजाकहकहवेदा नामलेतनासैभवषेदा तोप्रभुमैंतुमअति
प्रियमानी भक्तिअनन्यामनक्रमवानी ८५ महातुमहेंव्रजनारी मोकहकरयोअनुग्रह प्रेम
भारी कृष्णप्रेमसुषप्रगटवषानी करयोमोहिप्रतिहसुषदानी ८६ दोहा सुनहुकृ
ष्णसंदेसअवतुमसवकोसुषमूल सुनतहोइआनंदअति मिटैमोहिसवसूल ८७
चौपई तुमतेनिष्ठनाएकनन्यारो एहिविधतुमनिहृदयविचारो जोतुमकहोजानि मे

पो॰मा॰
९९६
160

ये कैसे तो मिअहि यसमुखीतुम ऐसे ८८ जैसे घटादिकारनमह अहई घटमह भिन्न महु कोउ
कहई मनतें आदिकासजगजेतो सबमें अनुगति होमैतेतो ८९ तहाँ सुनो रसभ अनूपा ए
हि विध जानहु मोरि सरूपा सकल चराचर मह जिमि अहई पंचतत्व पह स्रुति मुनि कहई
९० छिति जल पावक अपय नअकासा सबतनमें तुकीरहहि विलासा तैसेहि मैं सब प्रानेनि
माही मनअरु प्रान बुध केपाही ९१ इन्द्री अरु गुनके जेकामा सबकह आश्रय अरु सब
सामा सबमें अनुगतिमें इह भोती मोहि जानि अपन दुनिमसोमी ९२ सबमें अनुगतिकार
नजैसे जोकोउ कहे बचन पुनि ऐसे तहाँ सुनो प्रसुमधकी बानी कहौ नमें अपन मनमानी
९३ सोहा जगसंभव कारिपालिनिहि पुनि मैं करौ सुलीन सबमें सबतें दूरि मैं प्रेसोपरम प्र
बीन ९४ सोरठा पंचभूतको रूप आत्मा जो तन मेल है सोयप्रसंग अनूप जो पुनि कोउ ऐ
से कहै ९५ चौपाई ताहि कहत मन नमानि सुमेता आतम एक अनेक निकेता आतम सुख
सरूप सदाही सबगति रतन हि रहै ते हि माही ९६ होइ अवस्था अमित सुकैसे जो कोउ बच
न कहै पुनि ऐसे ताहि कहत ऐसे करि जानू एहि विध बहुत अवस्था मानू ९७ जाग्रत सु
प्रसुखो प्ति रीतो माया गुनकरि होति प्रतीती जेजस प्रासे विश्व तानीनी सत्वादिक गुन क
रि तीनी ९८ वसु सुखकरूप तेजानू अपरने मैं अपने मन आनू जाइ द्री करि अर्थ जु
च्यावै सपनमो जस ताचीन न पावे ९९ पुनि सपनालै जागे जबही सोसब जानै सत्पन त
बही मनकारन यह भेर अनेका मननिग्रह तें लखै सुएका १०० याते मन निग्रह भल जो

160 A

गा श्रुतिपुराण इमि जा रतनि योगा अस्टंग करि योग वषाना वहुरसांख्य कत्य वष गुन ज्ञा
ना ११ तव संन्यास करन वस करनौ मन आधीन सकल यह वरनौ मन वस होइ सफल तत
व सारे मन वस विफल निरधारे १२ दोहा साधन सफल अनेक विध मन आधीन एक अं
त जैसैं सरता अमित जग वारि रासि परिजंत ३ चौपाई अपर जगत इव हम कह नाभी आ
नम विपाक हहु विषानी सह कह सो भरि पावहु हम हो सो तो हम महि नभावे कवाहि ४ सुंद
र स्याम सकल गुन रासी सोभा सदन वदन की प्यासी सखी न जाइ विरह तन वनाया जो क
दाचि ऐसी कहु गाया ५ तहां सुनौ यह वचन हमारी राषहु तुम अपने हिय धारी अहो
प्रिया तव इगि तेहु री वसीं आइ सुषन वर इमि भूरी ६ मम अनुध्यान करति नित तुम हो नव
मन निकर हो जनित सव ही तिय कह प्रीतम जिमि हुई दूरी संतत मन तिह वाह रहू री ७ तै
से निकट रहे हु दिगि आगे मन नेह परम हि नहि अनुरागे मन मो मैं जो कर आवेसा त्यागि स
कल नस क्रिया निकेसा ८ करन विंत वन नित प्रति मोरा मोहि मिले नेहि सुषनहि घोरा
प्रीतम विपोग महा दुष भारी विनु नैन पत दुसह अति कारी ९ दोहा वेसा वन निसि रास स
मे सुषन स तुम कह लाहु सो सुष तुम कह अनुभवत अव हु तव चितचाहु १० सोरठा
को उ एक सषी प्रवीन वोवे तेनाके कंत ने मो कहि करि मन लीन आइ मिली सो प्रथम ही
११ चौपाई हेन सुनि सनेह सोप्रिय केरे उद्धव रसि कज गव तिन हेरे [illegible] स्वरूप हिय अव
वेसा संतत जिन के रहि न नरेसा १२ उद्धव प्रति वोली व्रजनारी. मंगल मइ लागि रा सुष

भा॰
२६२
161

कारी भली भई हे दूत सुजाना हन्यौ कंस कह श्री भगवाना २३ जदुकुल कौ अरि अतिदुख
दायक अनुग सहित मार्‍यौ जदुनायक लहे सकल बांछित मन भाऊ बंधुन सहित करत सु
भ चाऊ २४ निज निज सदन हानि कुसल जदुनंदा अहे बसत पुर आनंद कंदा अपर सखी क
ह वचन रसाला सुनहु दूत तुम बुद्धि विसाला २५ पुर तिय परम प्रवीन सयानी हाव भाव गु
न मंजुल बानी ता हित ते प्रिय बसत सकल नाही हे बसत रहि हैं तिन्हि पाही २६ रति विसेष
के जानन हारू रहि हे छवि लखि के सिंगारू अपर कहै हे दूत सयाने हम तुम कहु अब है
पहिचाने २७ हम अपुर बसत मुरारी पुरतिय हसनि कटाक्ष निहारी निरखे कहू स रू
प बरनारी सुभग किसोर देव मुरारी २८ दोहा सोइ हू जो लेहि ताहि तें रू नित देंनंद प्रीति नंद
करन नित प्रति सदा हरख मगन मन नैन २९ सोरठा हम सों जो करनीय प्रीन हुतो घनस्याम
को नेकु वनी कमनीय देखि सुजानै ऊनकारी ३० चौपई अपर गोपिका कहन लगी बचना
ऊधव प्रति करि कै कछु रचना अहो साधु तुम दूत प्रवीने अरु तुम हो अब सब बिधि भीने ३१
नेरसु अन प्रेर जु बनिन माही करत रहस्य बात तिन पाही नहु कछु ग्राम बधुन की बाता
चलै सहु मही हे सुष दाता ३२ तहा कबहु सुमिरे हम ही को कहौ सत्य एक तुम ही को तु
रत हू अपर नारि एक बोली ऊधव सौ निज हिय की खोली ३३ अहो दूत बहु कुवरक
न्हाई सुमिरन कबहु निसा बहु आई नाम लिये दावन के महि पा रमै संग मम भुजग
हि गाहिया ३४ कुमद विकसानि ससि पति उंमियारी बरनन नूपुर की झनकारी रास

सभामेहमसुभगाथा कहीअनेकसुनाजदुनाथा २५ सोमिससुमिरतिहूकेनाही क्यो
सुमिरैबेचतुरकहाही तिनकेतुनापननतबही इतिश्रैहैकपटीहरिअबही २६ हमत विनं
161A ननिजकारजपरलकरिकै निमहितताप जानियरिहहरिहै जिमियाकारनप्रवनहेयी
धनिकरिहहरैसुनापविसिबी २७ अपरसखीबोलीसुषपासा अवनजिनुआवनकीआ
सा मधुरागागरसुभगसुहावन रमारवनमहसुषअतिपावन २८ छेर नजिआसआ
वनकीअवैपुरसुबसवसकितआवैने कछुहुमोहूरवभागपपरमअनन्यसुषउपजावैं
२९ तोहिहेतुकछुरिमरहे इतिअबजाइपुरअरिमारियो लहिराजकेंहकरहिनपुरऐ
श्वर्यबहुविधपाइयो ३० पुनिव्याहसुभगनरेंद्रकन्याश्रीतिसोमनिमानिके सुहृद्बं
धुसमेतपरकरवसनपुरसुषजानिके ३१ नहिंयाइहैइतिजानुसजनीकछुसहितवि
नचाइके यहुवचनसुनिपुनिकछुनहितिविति चाइके ३२ दोहा हमवनबासिनतेकहाका अंबर
जसरेनअकाज अपरभूपतनयानतैनहिकछूलाभसमाज ३३ सोरठा श्रीपतिहूर
नकाम धीरसुतेअसुजानप्रभु हरिसबसुषकेधाम नहिंकाहूसनकामकछू ३४ चोपई
अघटितघटितायहसषिहमही कछुसंगसुषलहहमसबही सोअबव्याकुलकरिव
हुभांती घटैआसतजिबोसुषसोनी ३५ सहायवतेत्रपिंगुलानामू तिनहूकहीआसदु
षधामू कहेनिरासपरमसुषरासी सोसुषमानतकोउसंन्यासी ३६ सोहमजानता
हीदुषकारी कछुअसितजिबोअतिभारी कछुमरहिसबोलनअरुहसनी कौनजिस

श्री·भा
१२६२
162
कृनि

कैसुभगगतिलसनी ३७ जासुअंगसीतजैनकवहूं नहिंसतकारकरैप्रभुतवहूं जो
हमभूलजाहिहरिकरनी तौनहोइअसिदुखकविवरनी ३८ सो उनहिवनैकहाहमक
रियै पुनिपुनिसुधआवहियभरियै सरसैलअरूवनमहदेसा फिरतवजावतवेनुसुदेसा
३९ ग्वालसहितगोचारतनाथा परसअंकितभूकरेउसनाथा देखिदेखियहठौरअनूपा नहि
भूलैहमकृष्णसरूपा ४० सुमिरनफेरफेरहठतास हमहिकरावतिएसवआस स्याम
सरूपसुभगसुहावन चितकनगानअमितललचावन ४१ तेहा ललितचालवोलनह
सनमहमधुरअवलोक एहिविधिहमसव रैतेहिहमसकैनरोक ४२ सोरठा रमानाथ
हनाथ व्रजमनिअरतिहरनप्रभु दुखनिधिमगनअनाथ गोकुलजनउद्धरिहरि ४३
चौपई हमयुतहिविधकहसववाता प्रियसंदेससुनौसुखदाता कृष्णअधोछजसव
घटिनाना सकलनिषेनापुनितेहिमाना ४४ विरहरूपज्वरकोकरिनास उद्धवकीए
जाकरिआस उद्धवव्रजमहरहकनमासा गोपिनिकेसवसोकविनासा ४५ कृष्णकथा
लीलागुनगाई रमनरह्योगोकुलसुखदाई जेतिकदिनउद्धवव्रजरहेऊ छिनसमव
सवासनकहगएऊ ४६ सरितावनगिरिद्रोनिहारी कुसमतिद्रुमलखिकैसुखकारी
ठामठामनहांकृष्णप्रसंगा पूछतकहतभरेरसरंगा ४७ व्रजवासिनकहहरिसुमि
राई रमनरह्योव्रजमाहिसुखपाई देखिप्रेमव्रजनितियकहभारी कृष्णविषेआवेसनि
हारी ४८ नोकरिमनव्याकुललखितास मोरिपानपरखेध्योनास गोपनारपरवेहन

162 A

कीना अहैं पाय पद जानु प्रवीना ५० सो उद्धव वरनत बहु भांती नहिं अस ह नियहु अ
हैं सुहाती सुनियेगोपवधू ममबाता सत्य कहौं मैं यह अब जाता ५१ दोहा तनधारी
जे है जगत महं हैं लाभ तेहि जानु करैं कृस्न अखिलेस मह भाव अनन्य सु जानु ५२ सोरठा
सतकमुमुछू जाहि हम नहि आदि जे भक्ति जन चाहत नित प्रति ताहि हो हम भाव कि मि कृस्न मह
५३ चौपई जाहि अनेनत कथा रसरागू भयो काहु विध जागे उभागू तौ सोइ सव गुन आगर
ग्यानी भूमि देव ते बहु वर जानी ५४ अछ सुचित्र जन्म अधकारी भूसुर यह भाजन्म सु भ्या
री कृस्न देव मह भावन जाही तो वह व्यर्थ जानियह तु माही ५५ कृस्न अनुग्रह ज्या पर होई
अहि महत कुल न्यान हु सोई ताहि न जाति प्रयोजन हेतू नहिं आचरन ग्यान गुन केतू ५६
केवल भजन प्रयोजन राषा श्रुति पुरान सेतन मुनि भाषा कहा नारगति गहन निवासी दु
ष्ट पुनि व्यभिचार सुवासी ५७ कहां कृस्न अखिलेस अनेता परमानन्द मनु म प्रभु भगवंता
ता महि कियौ भाव अति भारी अहौ भाग्य ए व्रज की नारी ५८ भजे अजान ईस कहु कोई अ
तिकल्यान अहै नर सोई जैसे अगद हो दगुन भारी बिनु रुचि षाइ कोउ कन नर नारी ५९ कु
रै सुषाकर रोग विनासी तिमि हरि भजन नरई सुषरासी कहाँ अनुग्रह आस नहि काहू
जस गोपन कह कियपरिवाहू ६० सो उद्धव अब कहन बषानी महा हरष मन कृस्न सु
वानी लषउन की जो प्रेम लताई विह्वल भई तन सुद्धन काई ६१ छंद मनहरष जन
कह दास उद्धव परम पावन गोपिका प्रभु उर बसे नित सिंधु जा सुर यो षिना आप सो पिका

श्री·भा·
६१६३
163

६२ तेहि कौन कियो परस्वार्थ ऐसो सुभगतन जनु के जैसे पुनि जलजन पनसरोज आनन
गंधननख वधु से ६३ कियहु पाउ सवरासि मैं भुज रेउ गहि उरला इयो जो सुख उहो
कमलाहु पिकन सो अपरन काउ न पाइयो ६४ कहिये कहां लौ भाग्य उनके रहो गोपिन
की कथा मोहि अहे बोछति सो सुनो यह सत्यभाय उहिय जथा ६५ दोहा गोपिन के पदकं
ज की रेनु चाहुं नामोहि वृंदावन मैं जन्म हित विधि बिन वो मैं तोहि ६६ सोरठा गुल्म लतात
न को इ अन्नादिक तन नेरउ विध लेहुं चरण रजसोइ कल्पकल्प यह अमित फल चौपई
ऐसो करो प्रसे सा ना की कौनिकंठ नगमै सरिता की अनिउभार यह स्वजनसनेही तन
सम त्यागे उधर्म निवेही ६८ भजी मुकुंद चरन रज कौं जा बिनु प्रयास जो करभव भंजा रमा
आदि सवै नित जा ही जो गेश्वर सेवे मन मा ही ६९ सो चरण रज विदुषवरासी रास सभा म
हुं करि निय हासी धरत भई निज निजकु च आनी पुनि परिरंभन करि दुख हानी ७० अ
हो भाग गोपनि के वरनै पुनि लागे पद वंदन करनै बारबार गोपन पद रेनु वंदो जो जन को
सुरधेनु ७१ पुनि पुनि वंदो सोई पद धूरी जो भव रुज कहं सुरमूरी गोपी हरिकथा कथा भव
तरनी तीनलोक कहं पावन करनी ७२ हे नावत हि विध करि गुन नाना आरि गोपिनि
को करि सनमाना पुनि आग्या मागी तेहि पाला पुर चलिवे कहुं धरहिय आसा ७३ पु
नि उद्भव जसुदा अरु नंदहि पूछहि चलन हेतु सुखकंदहि सब गोपिन ने पायनि रेत सु
र घकहुं पुर कहं चले उ नरेस ७४ दोहा करम परायो देखि सब नंदादिक गोप वि

163A

बिधउपयनआनदियकरिहियअतिसैचोप ७४ चौपई नैरलाहितवचलितनिहारी
जलजनयनभरआएउवारी वोलेवचनप्रेमरससानी कृस्नचरणरतमनक्रमवानी
७५ मेरेमनकीप्रतिअषेडा नैलधारवतपलहुनछेडा कृस्नपदारविंदमहरहऊ वानीते
हिगुननामजुगहहू ७६ ईहयादितनहरिपरिचरजा सेततकरहिरहहिजिनवरजा
निजकर्मनवसलहिसंसारा जन्मधरततननवारहिवारा ७७ पुन्यपापवसनहोइकछुमोरा
वहुतहोइअघवाकेघोरा तोकरिकृस्नचरणरतिहोऊ अपरनैमैमागौकछुकोऊ ७८
एहिविधगोपनिकियसनकारा परमभक्तउद्धवअतिप्यारा पुनिमधुपुरआएउसु
षपाई सहाखुहावनसवसुषदाई ८० व्रजतियकीसवकथासुनाई वडेप्रेमरसहि
यकेंछलमाई कृस्नदेवभुजपालितधामा देषेउप्रभुपदहरनकम्मा ८१ दोहा धर
पदपंकजसीसनिजजोरिपानप्रभुपास व्रजवासिनिभक्तवरवरनीसुभगसुरास श्री
८२ सोरठा गोपिनकौअतिप्रेम वरनेउसवभगवंतप्रति कहिकुसलअरुषेम न
पहिउपायनदियेउसव ८३ दोहा अष्टादसप्रसोदाहाकहेछेदसुभगनवजान पेंद्रहक
हेजुसोरठा अघहरिविकरिकस्यान ॥८४॥ इतिश्री भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषा
निवद्धे उद्धवप्रतियोनेसप्तचत्वारिंसो ध्याय ॥४७॥ दोहा एहिअरुतालिसकेविषे ३
कुवरीग्रहकरवास ताहिदेदसुषकृस्नप्रभुगएअक्रूरनिवास १ ताहिहृलनाउ
रपरेपोहुननयसुपलैन एतनीकथापवित्रअतिसुननहोइचितचैन २ चौपई

श्री भा०
३१६४
164

कृ

हेनरूपश्रीभगवंतकृपाला सवघटव्यापकरीनरपाला कामतरुश्रकुवनाजिनजानी तो
केग्रहचलिगेसुषसानी ३ सकलश्रमोलवावरजुश्रनेका ग्रहउपकरपालकतेएका व
नौविश्रमारीसुद्धिलोची मुक्तादामपताकसंवोती ४ जाहिलियेउभ्ररतिनाथा श्रपररे
षिनेहिहाहसनाथा सुभगवतानासपनसुभंचोकीवर मनमयकंचनवनीधरीधर ५
सौरभधूपदीपस्वनगोधा सुमनसुगंधभ्रमरमरश्रंधा श्रेसौसुभगसदनसुषरासक
तहश्रावतरघ्योजदुनायक ६ संभ्रमसहितउठीततकाला पाणिनिजासनसपरसुबा
ला सषिनसहितश्रच्युतहिश्राई सादरसहनसदनमहल्याई ७ यथायोगश्रास
नदैमाना मनमान्योकरिप्रेमविताना नंदिपुकाश्रउद्धवकहरघ्यो श्रच्युतसमकछु
भाविनहिजो ८ उद्धवकहिवेठारिसुभासन निजग्रहगईपाइश्रनिसासन कंचनमरा
गमनरतनिसतोजी तव्यासुभगचित्रगनराजी ९ रेसमवसलरसुभगसुहावन रत
नजटितछविश्रलिसोपावन सतस्पेरवककहसोलेरोनी शांधुनार्घवेदरसभीनी १०
तहा सोरईतनवनाहिकछनमजुनकरिसुभरीन लेपफुकूलवनाइवपुभूषनसजेयासु
प्रीत ११ सोरठा सवनश्रसुगंध श्रनूप वानिसुधाकरिसेवसुभग सतप्रेमसंगश्रनुरू
प निजमनसाभ्योसकलविधि १२ चौपई श्रीडाजुतगतिललितरीतवर चलीसतप्रेमप
हिमनधीरजधर विभ्रमसहितलषिनमुसकानी नवसंगमसंकितसकुचानी १३
श्रचलनलषीनाहिजिनइनाथा केकनभूषनकरिगहहाथा तिनसञ्यापरिनेरहिवेठाई

मे

रमेरमाइंताहिमंइनाई १४ वेदनमाञ्चहीनउनसाना प्रभुबहुउन्यनासुकरिमाना चित
तनापकरितपतउरोजा हृदयछुभितकियताभुमनोजा १५ प्रभुखरलगरविंदक. रथा
ना पुनिनिजकुचपरिधरिसुखमाना परमानंदरूपभगवेना पाएकंतिश्रीपतिसुषवे
ता १६ होउभुजगहिपररेमनकीन्हा जन्मअनेकसुकृतफललीन्हा एहिलागादहृदय
सुषपायो बहुतकालकोतापनसायो १७ कुब्जाहभनईस्वरअखिलेसा पाएउविभुअमगे
हनरेसा गंधमाल्यअर्पनकरिनारी दुर्लभलाभलहीगिरधारी १८ देबहुभागपहीनमति
नासी मागेउकामपादअविनासी जैसेशिवकेविषेप्रसंगा कुवजाभईजुहरिकेरंगा १९
दोहा नाहिंगोपिनकेप्रेमसमप्रेमाकियोहरिमाहि यातेकहोगुहरभगापरसोहिसमकोउ
नाहि २० चोपई कुब्जाअवस्यकहेतेहिपाही बसेरमेसजासुगृहमाही अहोकोनकछुहि
नममगेहा बसहुइहाकरिकेप्रभनेहा २१ रमहुनाथमोसंगप्रवीना नाहितनिसकोअ
नेगअधीना सुनिकेतासुवचनघनस्याम देएउसकलजेहिमोमनकाम २२ मानदमा
नताहिहियभारी पूजितह्वैतासोगिरधारी उद्धवसहितगएनिजगेहा सर्वईसमबसो
समनेहा २३ दुराराध्यहरिकोआराधी मनवचकेसाधनबहुसाधी विषइकम्मागेसु
षसोमूढा महानुछवहमोह्विअरूढा २४ हरिउद्धवबलिदेवसमेता कवहूकंगेअक्रू
रनिकेता गजपुरमाहिपठावनहेतू किंकिरप्रियहितकृपानिकेतू २५ लखिअक्रूरह
रतेनाहीं सुषअपारनोकेहिममाही उठेउशीघ्रअतिप्रमुदितसोई आलिंगनकरिचि

श्री॰ना॰
१८६५
165

पावनजोई ॥ ३८ ॥ सहित भ्रात कह किएउ प्रनामा तिन्ह प्रभि वारन हूं गुन धामा बिधव
त पूजा करि पुनि तासू हितउ सुभासन बैठ सुपासू ३७ धोये पद पंकज सुख मानी
धरे सीस परि पावन जानी दिव्य बसन भूषन स्रग सूरर अर्चन किएउ जुगल भ्राता
तर ३८ दोहा पुनि प्रभु चरन सरोज बर धरि सिर कियो प्रनाम सोध पद पंकज अंकध
र राबन लवसुख धाम ३९ सोरठा नम्र भाव अक्रूर मृदुल मंजु बोल्यो गिरा कंस महास
र क्रूर देखयो गसानु गहन्यो ३० चौपई असन समुद्र मगन महुसारे हे प्रभु तुम तिहि तु
रनउ घोर सब जग में तुम थाता दोऊ नगन हे तुम अपरन केरे ऊ ३१ कारन कारन तुम
बिनु कोई अपर न हे स्रुति सें मनि सोई देखिय जग यह प्रगट पसारा नाहि न कैसे कर
हु बिचारा ३२ जो को उ कहे यहि बिष बानी ताहि कहत से का करि हानी हे परि ब्रह्म
ईस जगनाथा तुम अबिलेस नाथ अकृति माया ३३ निज माया गुन रच संसारू नाम हि उ
निप्र बिलेसु बसारू ता करि यह प्रपंच बहु भांती देखि परत नाना भांति सुहाती ३४ एक
बस्तु बहु धा परिलीनी सोइ स्रोत सुन कुत्तारि हीनी जह लग यह चराचर कोई बपुधारी न
पुरी रघ जोई ३५ पावक जल नभ पवनि अप्रकासा नाना बिधि मिलि बिबिध प्रकासा
माया गुन सें रहित अतीता सकल ब्यापक महा पुनीता ३६ निमिस घट भीति कम
हि मानु आत्म तत्व बुद्ध परमानू अंतरजामी तुम एक रीती कहे उनि गम सब मोहि प्रती
ती ३७ दोहा निज माया गुन करि जगत संभव करि ते हि पालु पुनि संघारत करहु प्रभु री

165 A

नपालु जनुपालु ३८ सोरठा तेगुन अरु सब कर्म तुम हि न बंधन करि सकै अतिक हुं जं
हु लसि धर्म सब कहु आश्रय नाथ तुम ३९ चौपई तुम स्वतंत्र अरु ग्यान सरूपा अमित
अै इ नाथ कस्यप रूपा मायात्व आधीन गोसाई रहे हूर ते हूर सराई ४० वास्तव करि
यह जीव गोसाई सुद्ध रूप बंधन नाहि काई स्वयं रूप ईश्वर परकासक दुस्सन कौ जोक
रत विनासक ४१ देहादिक उपाधि कसि ताही जन्मादिक सब घटे न वाही नहि सख्यात
जो जन्म अरु मरना देह संग सब लह आवरना ४२ मुक्त बंधु तुम कह हुं कि मि होई वास्तव
जीव लखै है नहि सोई बंध्यो उलूपल मो हि तुम रेषा जमुना हर पुनि मुक्ति सुपेषा ४३ किमि
मोहि मुक्त बंधु नहि कहहूं ऐसे जो करत विचित गहहूं तहं भ्राथसु नियै मम बानी कहौ
सत्य मुनि जन हु बषानी ४४ निज निज अश्रमि श्राप जस जास सो इमि कहे सत्य नहि कास
सब जग स्वर स मो रि मन स्वामी अनन पाल है अंतर जामी ४५ तो यह मम अवतार अनूपा
तह पुनि लीला नहि अनुरूपा कहा सुक्त रूपा वत भएउ जो करत विभ्रम ऐसे कहेउ ४६
ता तें सुनो विनती प्रभु मोरी मैं जन दीन मोहि गति तोरी तव सुख वचन वेद यह स्वामी कहौ
जगत हित श्री नरनामी ४७ दोहा श्रुति पथ जब पाषंड करि छिन हो तहे नाथ तब तव
तुम धर सत तन न पालन हेतु जदुनाथ ४८ चौपई सो तुम ईस्वर प्रभु भगवाना सो री यह ह स्र
ग देह मजाना असुर जात न पजे जग माही प्रगट मही दुस्ट गुन जाही ४९ अश्ध उहनी संतन
प्रवेश सब कहु हूषसाई वर वेश तासु भार भूद षितनिहारी प्रगटे जदुकुल हे गिरधारी ५०

श्री॰भा॰
१२६६
166

ताहि ना सिंगमन सबिस्तारो निजजन सुष बिस्तारेउ मुरारी तव आगमन हेतु जदुबीरा मैं
कन्य कल्प लहौं सुष भंरा ५१ धन्य भयो मम ग्रह प्रभु पावन सकल मई तुम परपन साव
न जा पद सलिल लोक त्रय पावन हरि सिर धरें अघ ओघ नसावन ५२ तव जस निर्म
ल है अति पावन गंगा सम अतुल पाप बिनासन अषिल जगत गुरु तुम जदुनायक क्रपासि
धु तुम मन सुषदायक ५३ कोपे दुति अस आसन गगम हना पा स लष बचन मे अति पघ गा पा
षा दुसरन तव अपरग हाही महा मह तेहि कुमति कहाही ५४ सदा भक्ति प्रिय जन सुष
कारी सुहृद कल्न नरासदु बहारी ऐसे प्रभु तुम कहं जो मन जाई रहु नाहि मन बंछित सब
ई ५५ ऐन अपर जो परम क्रपाला को अस नाहि जगत निदयाला तव सेत बोउ पकार अ
नेना बो रहस बैंलहै नहि ऐना ५६ सदा देवयोग तेना पतु मम मगह किये अस नाथ यो
ग स्वर विनि धाहि कहं तव गति सुगम मने नाथ ५७ सोरठा सो मेरे ब्यौं आगु निज नयन
निरषौं न प्रभु कल्प कल्प मैं आजु भयो सकल परिवार जुत ५८ चौपई सुन कलि अप
रमन पन गेहा रहा दिक मह अधिक सनेहा तव माया कृत मोहि गुसाई छरिय आस
सेन सुमदाई ५९ ताहि विधा कि य अस्तुति अक्रूरा पुनि हस्यो हरि कहि मति रूरा प्रभु
तेहि रोबिमे रमैसकाई कहन लगे कछु बचन सुहाई ६० हे अक्रूर सुनहु मम बाता तु
मम मम जनक तुल्य हे ताता गुन रमनी पसुधा करि मेता मम पोष्य कर षक बुध बेना
६१ हम तव सुअन सरिस सुषदानी तव गुन कहु सको न तव बानी महाभाग हे संत सुजा
वहु।

166A

नृी तुमसमानजगअपरनआनू ६२ निजकल्यानचहैनरजोई सोसेवैनवपदमनजो
ई नरकहविबुधसोइवेयोगा नरकहनरकिमिसेवैलोगा ६३ सुरसेननानिजस्वार।
थचहहीं साधुसदापरदुषपरहहीं यातेसाधुसेइवेयोगा मिटैमहाभववारधरोगा
६४ दोहा तोइहनगमहिमइसिलादेवभयेविनुकाम जोकदापिइमिकोउकहै नहोसुन
हुसुखधाम ६५ चौपाई नहिजलादितीरथजगमाहीं अहैसत्यकोउसककहु
नाहीं सिलामईकादेवनअहहीं सत्यअहेंपरनाहिनकहहीं ६६ नहायसुरसियताते
जानूं साधुनतेबडअंतरमानू नाहिंसबजगकोबहुकाला नचपुनीतवेकरहिंविसाला
६७ दरसमात्रसाधुसबकाहू करहिंपवित्रचाहनाहिंजाहू यातेतुमहेसाधुसुजाना नंदस
रिकोपूछेउनगआना ६८ हमरेसुहृदमांजहेताता तुमतेंअपरनकोउसुषदाता या
तेयंडूननियहितकाजा जाहुहस्तनापुरसुभभ्राजा ६९ पंडूनिधनसबबालअपा
ने कुंतीदुषितभईहमजाने दुरजोधनपितुनिजपुरआनी सुतनसहितनजोसुनी
जोवानी ७० वसतगजपुरमहसचहीं नहाजाहुचलिकैतुमअबहीं नेमहीननृपनि
जसुतमाहीं भ्रातपुत्रमहिसमतानाहीं ७१ दुरजोधनबसहिंअविवेकी नाहिसंगक
रिसुमगनिश्चैकी नहाजाइकैतासुविचारू साधुअसाधुजोनिनिरधारू ७२ सोस
बजानिवेमिटनिअघावहु समाचारसबहमहिंसुनावहु सुहृदनकोजेहिविधसुष
होई पुनिहमजतनकरवहींसोई ७३ दोहा एहिविधकिहउनिदेसप्रभुअक्रूर

हि सब मुनाइ उद्धव अरु बलदेव जुत ग्रह आए सुधपाइ २४ कहे हो हरि आठ वर सुभ
गसोरहोयारि तहि अठनालिके विघे कथा सुभग अयहार २५ इति श्री भागवते महा
पुराणे दशमस्कंधे भाषायां टीकायां अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ दोहा कृष्ण वचन अक्रूर
मुनि गयो सु गजपुर माहि समाचार लैबिन्र पतिकौ समझ तिरचक नाहि १ पांन
पुत्रनि जुत असहि वडो विषमता भाव जानि श्री घु पुनि आइ है कृष्ण देव प्रतिगाव
२ बीस बीस मन व अधिक पुनियह अध्याय पुनीत विस्मु रानप्रति वरनि है श्री सुक
करि अतिप्रीत ३ चौपई हे नृप सुनि प्रभु को सुभ वानी गजपुर गए उहर सुख
धृतराष्ट्र मानी कौरवेंद्र कन भसुर धामा बहुत सुरालय अमित नितनामा ४ तहां ग्रेविका
सुत कह देखा भीषम विदुर एह थाक हुपे खा सोमदत्त पितु सहित निहारो करहला सु
पं॰ योधन कुमति दुधारो ५ कृप अरु द्रोण अपर बारा पांडु बाहि जे सुहद सुधारो प
छी कुशल प्रश्न मिलि जेसे कहीं अनामय तिन सों तैसे ६ रहो मास कैतिक पुर मा
ही नृप ह्रिय की गति जानन चाहीं अप्रसन्न पुत्रन को केमन ही ना धनु अस्तावती व
लिछीना ७ अस्त्रशस्त्र बल अमित प्रभाऊ वीरय नम्रता सद्गुन पाऊ पंडुतन
यमसगुन नयसागर प्रजा करहिं अनुराग उजागर ८ करुणारिक हिंसक केन
रखी दुर्भावनि तक रै विसेखी दुर्योधन कृत कर्म अनेका गरदाना दिक अ
पं॰ नर्थन एका ९ पृथा विदुर सब कहे उबखानी सुनि अक्रूर महाद्युमानी एथा

167 A

वहुरि अक्रूर सुपासा वैठी जाइ निकट सुखरासा १० जन्म निलय सुमिरत दुख भारी कलह क
लना दुख अतिकारी विहवल मोहि महा उर धारी वोली वचन नयन भरि वारी ११ दोहा हे सो
भनपितु मातु मम वाच हु क सुमिरत मोहि भ्राता भगनी अन सुत कवहु कहै क धु तोहि १२ सो
रठा कुल तिय सब विम कोइ भ्रात पुत्र भगवान पुनि कवहु कइ निकह जोर सुमिरत मम पुत्र
न कवहु १३ चौपई सरनागति पालक भगवाना कमलनयन बलराम सुजाना कवहु क
सुमिरत है धो मोही तात सत्य कहु पुछु तोही १४ सौति वीच सो चित दुख भारी जिमि वृक
मध्य परी मृगनारी कवहु करति अ है जइ नेरा मोहि वोध दैहै सुखकेरा १५ पिता हीन मम
वालक दीना करिहै इनि पर कि कपा प्रवीना कृष्ण कृष्ण हे अग जग नायक हे योगी स योग
फल दायक १६ सिसुन सहित दुख सहित मंझारा महाविपति जल धार अपारा ता मह मग्न
जानि मोहि नाथा जनि प्रपन्न पाहि भो नाथा १७ यह नरम्य तु रूप न वरै षी उर पावै जो हिये
विसेषी तो तु अचरन कंज विनु आना अपर सरन नहि लहि कल्पाना १८ सुद्ध सरूप व्र
ह्म असुरारी नमो नमो तव चरन मुरारी योगेश्वर पुनि योग सरूपा हे परिमात्म सुखद
अनूपा १९ उग्रसेन भक्ति रिछपारी संकट दुख टारो गिरधारी सरनागति मैहौं प्रभु तोरी
वेगि नाथ लीजे सुध मोरी २० दोहा सुमिर सुमिर वहि भाति नप स्व जनन सगे जगदीस त
व पितु पितु की मा न पुनि रोवत भई महीस २१ चौपई तव अक्रूर विदुर लवि नाही सम
सुख दुख संतत निय जाही समुझायो वहु युत ता वनाई कहो सुअन सेभव सब गाई २२

वि॰मा
२६८
168

अवमैंनाउनृपतिकेपासा विषमसुद्भमेकूपरदुरासा कहिहौंसभामध्यसववाता सुदर
नकहैवचनमोरव्याता २३ अस कहि गयो नृपतिके पाहीं कहनलागउनिपुनिमनमा
हीं ओनृपतुमकुरकुलकेकेतू सुमतिसुजसकेअहोनिकेतू २४ भ्रातनधनजवभाहेरा
जन तुमतवमयेनृपासनभाजन धर्मसहितमहीपालनकीने सुखसमप्रजापालसुख
दीने २५ निजसुतबंधुसुअनसमदेषी एहिविधकरिहौराजविसेषी तोजगसुजसव
हुरकल्याना पैहौअनायासफलनाना २६ जोतुमकछुकरिहोविपरीती त्यागिन्यायप
थचलवअनीती धिकधिकलोककहैगेताही पैहोनिरयवासकुलद्रोही २७ यहनर
ननेमममउदुआरू यानैतुमसवभावनिहारू धनसुतनमेंएकनिहारू निजपरिजन
महएकविचारू २८ दोहा लोकरचिविधिसेकहै निजसुतपरसुतमाहिं किमिसमलग्रा
नियसमनममहिंयउपजतनाहिं २९ सोरठा तहांमुनियममवेन कहौनोहिंसनसत्य
रूप गहहु होनचितचेन उपजैसमतातासुहिय ३० चौपई अहोनृपतिएहिलोकमझारा
नहिंसंततनसेगतसंसारा जायापुत्रधनादिकजेते नस्वरसकलजानियहुतेते ३१ नि
जवपुनहिंसमोपुनिकासू नाहिंहेतुसुनसारविलासू संभवमरनभोगसुखदोषा रा
सिद्धि अरुवैरागतिसंतोषा ३२ एहिमहसंगनसहाइनकोई सुषदुखभोगेएकसोई एक
जनमरवस्तोलहई जनमरनादिकेसोगहई ३३ भोगेसुकृतएकवहप्रानी सोईभोगे
दुसकृतअघखानी जरपिसहहवासीसुनदारा नरदिकेलेसमोनिरय[illegible] धनउपरा

जनवहुदुखलहई पुत्रादिककहपुनि हरई पुत्रनाममिसिअरि तेहिजानू एहिविधितेअ
वकरतविधानू ३५ दोहा धनऔरैनजिधर्मनेरकरअधर्मजियजानि हर तताहअरि
पुत्रमिसकुमतीतेहिनिजमानि ३६ सोरठा महामूढमतिमंद हरतनजानतविज्ञनिज
सुतलखिमानिअनंद कहहिमैपोषनघटै ३७ चौपाई जिमिजलहरतमीननहिलख
ई सुखिजाइतवअतिदुखलहई तिमि पुत्रादिकहरिधनयांको लखैनमूढअधमति
काको ३८ करिअधर्मपोषैनितजाही मानैअपनोनिजमतिचाही तेमरिजाहिं त्यागि
ताहि धनमें तवसुहिदुखपावैअतिमनमें ३९ अघवाजीवतहीतनिहीं राजासुतादिक
पलमहएही रहौमनोरथमनकौमनही मरिगौआपुत्यागिसुतधनही ४० केवल
अघकीधरिसिरपोटा चलैआपुदुखलहौनछोटा धर्मविमुखफलपुरसंजमनी गएस
हे दुखनिजतनकरनी ४१ सोनैहैन्रपयहसेसाढू ग्रहसुतादिकसुखसत्यनिहारू ४२ सप
नमनोरथसवतुमजानहु सत्यतीनकालननमानहु मननिग्रहकरिलखहुविचारी सां
तचित्तसमद्रष्टिनिहारी ४३ दोहा सुनिसववचनविसालतववोलेन्रपसुभवैन अ
होतनपतितवगिराअुननहोतमनचैन ४४ सोरठा तववानीसुखरूप सुनतहोइन
तरत्रनहि पापपियूषअनूप जिमिनरगहैनतोषमन ४५ चौपाई नरपतिववानी
सुखतनी ममहियचंचलअोगुनखानी नहिथिररहैगिरातवताना विषमभावन
हिवृद्धिदुखदाना ४६ जिमिसुतामगिरिदामिनलसई तिमिनवचनहियेममवसईजा
सुनविनजाणहुसकलअसारू यहसवमायाकेरपसारू

श्री भा
१२४
169

नवूझिकसमोहनतनहूं जोकहाचित्रसैंतुमकहहू ४७ तहांसुनोयहवचनहमारी स
न्यकहौंमैंजोहृदयधारी ईश्वरजोकछुविधरचिराखी ताहिटारिकोसककुतिभाषी ४८
भूकोभारउतारनहेतू जदुकुलप्रगटेकृपानिकेतू निजमायाकरिरचिससारा अगा
नगसोपुनिविविधप्रकारा ४९ तामहिपुनिप्रविसेहरिसोई कारणकरनईसहैजोई
पुनिसबजीवनकेगुनकर्मा विविधप्रकारवरनिकेधर्मा ५० सोअबवनकेपंथकरि
सबही देतसुभासुभफलमसमिनही अतिअगम्यकौतुपुनितासू लहेअंतनाहिअज
मुनिजासू ५१ तहिंसंसारचक्रकोहेतू थहेप्रधानकहेश्रुतिसेतू सोअधीनजाकेनि
तरहई रमाईलमाकोश्रुतिकहई ५२ छंद श्रुतिकहईजोकहहरमारमनबिरंचवं
दनपदसदा तिहिपदनमामिनमामिसंततसुमतिममकरिहेसदा ५३ यहवचनक
हतपवनसुतपरसोअकूरसवसमुझीगिरा तेहिहृदयकीसवहेतुजानीवहुरनिजपुरकहु
फिरा ५४ पुनिसुहृदयमननेंतमोगअयासुसीघ्रमधुपुरआइयो राउवपुटिगसो
जाइतुरताहि समाचारसुनाइयो ५५ निमिपेइपुत्रनसोवियममनाकरतनप्सोगाइ
यो तहिंभांतिप्रभुहिसुनाइसम्यकसयरिसावसिपाइयो ५६ सोहाताहिलियेअ
क्रूरकोगजपुरपदयोसपाम समाचारसोसवलसौरीनवेधुअभिराम ५७ कहेहो
हुराबहुसुभमादेनुगलसुयताय अपरसोरठाचारवरसुनितिहरोसुनस्ताय
५८ कल्मवरिच विचित्रअतिकहतसुननअघनास रामकृपायहजानियभाषार

चेखुरास ॥ ५८ ॥ योग जग्य तप दान व्रत इन्या नियम बिधान । बनत न एहि कलिकाल मह
नाम करत कल्यान ॥ ५९ ॥ नाम सरिस कलिकाल मह अपर उपाइ न कोइ । राम कृपा ताके
नाम कर पावन सब को होइ ॥ ६१ ॥ इति श्री भाग भागवते महापुराणे दशमस्कं. पे भाषायां
वेदे अक्रूरागमो नाम एकोनपंचासतमोध्यायः ॥ ४९ ॥ दशम का पूर्वार्द्ध समाप्तम् संवत् १८
७९ ॥ वैशाख शुक्ल चतुर्दश्यां रविदिने समाप्तम् ॥ लेषक हरिगोविंद वैद्य पामलनग्रे ॥
राम राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ ॐ नमः ॐ नमः ॥

श्री·भा·
१७०

॥ स्वस्तिश्रीगणेशायनमः दशमस्कंध उत्तरार्द्ध लिष्यते दोहा यह अध्याय पंचा
सकोनाम्महि कथा विचित्र मुनि कहि है भूपाल सो या सुनि होहि पवित्र १ मनहु भयातुर
इव विभो अजरा सुअन कहि देषि स्यो दुरग अति सुदृढ वर सुषमा अधिक विसेष २ तहनि
जजन सभ राषि प्रभु पुनि श्रीमधुपुर आइ हन है भूपरि भार जे दानवनर समुदाइ ३
कपटी मारे कपटि करि विनु श्रम श्रीजदुनंद जरासंध धर्मज्ञ लषि विविधयुत कसोनिकंद
४ इति नीचि कथा विचित्र वरहु है परम पुनीत पंचासतके माहि सव मुनि कहि है जुत प्रीत ५
चोपई सुकु मुनि कहहि सुनहु नरराया भोजराजकी दुइ सुभ जाया नाम अस्ति प्रापति व
रतास निज ग्रह त्यागि गई पितु पास ६ सोक मोह जुत ये अनेरा निज दुष वरन्यो सकल
सवेरा निज विधवाको कहत सव हेतु सुनत हि पितु भ्यासो वकनिकेतु ७ पुनि भ्यो क्रोध अला
सुहिय भारी जादव कुल स्व हनो प्रचारी एकन वचे करे उनि रमला उद्यम करन लागहि
पखला ८ तेइस अक्षूहिनी सेना साजि वजाइ दे विचित्र चेना मधुपुर अयो निजसघन स
मेला घेर्यो दृढ करि कुमति निकेला लषि रिपु सेन नाथ तिह काला त्यागि सिंधु जनु सीव
विसाला तावलि करि घेर्यो पुर देषी पुरजन व्याकुल लष्यो विसेषी ९ दोहा अगजग का
रनईस प्रभु करन विचार अनेत देस काल गुन नीत करि किया विचार भगवंत ७ सो पढा नि
ज अवतार यो हेतु सो विचार मन कीन्ह प्रभु जन कहत कृपानिकेत जे मस केसे होइ अव ८
चोपई विनु श्रम जद्यपि कीरत मिमि होई मोहि उपाय करनो अव सोई सुरद्रोही छिति र

लै

170 A

प

हैनकोई यहविधजदुपतिनिजजियजोई प्रेमहन्यौसबसेनसमानू नहिमगधेसह
नोअबआजू अघबामागधनवकहुमारी गहिराघौसेनायहभारी केसबसेनसहित
मगधेसा मार्योसकलसपरियहहेसा त्रिविधविचारकीनइहहरीती प्रथमपक्षानिस
चयकरिप्रीती जरासिंधुआनीयहसेना प्रथमहिहन्योहोहिजगचेना मिलेइसरन्य
बहुमहठाई भूमभारअतिजगदुखदाई गजपदातिरथतुरगसमेता हन्यौसकलसठ
कुमतिनिकेता आजुहेउनजिमागधभूपा करहिंफेरउद्यमबहुरूपा निजहलनाशदेख
हिमूढा आनहिंपुनिदलमरथारूढा ९ दोहा एहिविचारदृढआनिमनअपरगिनत
मनमाहिं भूमभाररहितसाधुके त्राणहेतुचितचाहि १० सोरठा जदुकुलममअवतार
धर्मत्राणअधर्मनस्यो अपरनकछूविचार सकलहेतुइतनोअहो ११ चौपई अ
सविचारहरिकरतनरेसा तबहिंआउरथसुभगसुवेसा सहितसारथीधुजाअनूपा
नभपथआएउसुभगसरूपा दोऊरथारिआरिआसबसाजू तरनिसरिसतेहितेजविरा
जू दिव्यसस्त्रसबधरेसुहायौ देषिकृपानिधकेमनभायौ पुनिहलधरकहुहरिसनमा
नी बोलेश्रवणसुधासमबानी हेबलजूयहव्यसनअपारा देषहुजदुकुलकोअतिभा
रा तुमरथकुजोंकेहतात निनकहुघेरेनअसिदुयभ्रात सुभगारिअरथआस्त्रसमेता
तापरिचढिहेकृपानिकेता मारहुसकलदुष्टहअघरासी निजजनसुषितकरोदुषना
सी नवममप्रगटहोनकेहेतू अपरनकछूहेकृपानिकेतू १२ दोहा करिविचारइमि

श्री भा॰
६२७२ २२४
171

भ्रात सों रथ चढि होउ जनु बीर बहिर त बेतन कवच बर सोभित भये रघुधीर १३ चौपई
सपरि नाथ पुनि बाहर आए अस्त्र अनीनि जसरथ सुहाए अरिसन मुख आवत रोउ भ्राता
कियो शंख जन प्रभु जनु आता मुनि सिंसनमो उजन जेते अतिभय कंपित हिय सब तेते जरा
लिपु होउ भ्रात नदेषी कहन लाग सठ पुरुष बिसेषी कपटी नाहि दयानहि लेसा है पु
रुषाधम कुलन सुबेसा बानी अवपर अघ कहयो को मगधपति मुष कहो जु ताको
प्रभु ते अधम अपर जग सारो हरि पुरुषोत्तम सब कहत प्यारो कुमम संदेह बाल अया
नासदा गुपत रहत जग सब जाना बंधु उदाहि करि छली सुभाउ लखैं न तो सन मोएहि
दाउ है वल जो अब क्षाव कछु तोम्ही धरधीर नहि यन सकहु मोही करहु जु कृतु मसमो सने
आई जो मन उपजन का रर दाई १४ दोहा मम सर में हतत बसु भगत नु पे हो सुरघु
रबीर के तव सारि ते मरन मम हु बैहे जगन सधीर १५ चौपई प्रभु कहु कछ्यो वच
न बिपरीती करि गिरा बरनत करि प्रीती कहे उ गुप्त नो बचन बनाई हरि अंतर जामी
सबदाई १६ कहि हमेर जोह रि कहत बानी प्रभु अमंरजगम रवबानी कहिउ बंधु हन
बचन बिलासा कुमति हरन हरि हर जन त्रासा पुनि मगधेश बचन जगदीसा बो
ले बचन सुभग नर ईसा नहि को उसर कहै असि बाता जिमि तव बचन कहे मर माता
निज मुष निज गुन कहत न सूरा प्रगट देषाइ देत गुन सूरा आनु रमरन हार न भएउ
नहि न वचन नहि यमे ग हेउ कहत बचन न हरि अंसे जो लो रिपु दल चपल आइ गो तो

सो प्रभु कह सैन्य समेत तुरंता । घेर लयो बैरी हलवंता ॥ २६ ॥ छंद ॥ बलवंत रिपु लिय घेरि प्र
भु कह सहित सैंन छपि गये । जिमि जलद रवि कह घेर राषत भसम पावक पर छये । च
ढि चढि अटा रिन लषहि सुवनी एक रकत नमय भई । उर मार ध्वज अरु लाल अंकित सु
भगार घ अति सुषमई ॥ २७ ॥ जवन घन गोचर भयो नहि रघनाथ सव दुषन न छई । तिना
कीरमा कोक है कवि जे रहहि संतत सुषमई ॥ २८ ॥ अदिस घनल षि जिमि जलद घेरि कठोर सा
यक जरमैनो । तेहि हेतु व्याकुल निज अनीलषि कह निहूरि सव घल हनो ॥ २८ ॥ सोरठा ॥ इमि
कहने हकिसोर गह्यो सुभग कोदंड कर । तह धरि विसिष कठोर रिपु हल सव काटन लगे
॥ २९ ॥ चौपई ॥ गहि निषंड तें करि संधाना । बैं विचलाइ हेत विधनाना । रथ कुंजर भट वाजि पदा
ती । कहत भत नहि अगनित जाती । गहत चलावत करि लघुताई । जिमि अलात चक्र भ्रम
माई । लाघव जा कौ निज जन ज्ञाता । वाण वृष्टि करि नतुज निपाता । करी कुंभ कटि गिरे भ
यानक । अस्व गिरे कटि कटि लगि सायक । रथी सूत संजुत ध्वज मारे । गिरे अवनत लि भट
अति भारे । सिर भुज विनु नर नाग अनेका । घायल कहू रन रहित विवेका । गज वाजी नर अ
मित मरे जे । लागे वान गिरि अवनि परे ते । तिहि तन स्त्रवत रुधर नहि थोरा । चली सरत अति
घोर कठोरा । नर भुज अहहि सिर कमठ समाना । दीपी दीप सरस जग जाना । वाजी ग्राह सरिस
तिह माही । वहे जाति मिति कहहि सिराही ॥ ३० ॥ छंद ॥ मिति कहू कोतिहि सरित कौ जेहि लसत क
रउर मीन से । नर केस सो इसैवाल सी धनु मनहु वीच उतंग से । आयुध मनहु तरु गुल्म

श्री॰भा॰ गॅम
१२७२
172

सेकुलधामरंभयानकी ॥ आभरन कौमनि प्रवरसोभित सरकरा दुषदायकी ॥ २२ ॥ हलध
रहुने बहु सैन रिपु हिग मुसल सों भट मारियो मगधेस पालित अनी दुरगम छन कमहु
सब मारियो रनभूमि महं बहु घोर सरता भीरु कहु भयदायिनी ॥ अतिसर कहु सोसुभ
गभूपति निरषत्रिनि सुषदाइनी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ रामकृष्ण मिलि छनक महु मारी अनी अनेक
सो क्रीडा नहिं श्रम कियो यदुमन गह्यो विवेक ॥ २४ ॥ चौपई ॥ त्रिभुवन संभव करि तिहि पालो
उपसम करे अनंत वनमाली लीला एहु विधि है वरजासु नहिं अचरज अरि किया विनासु
अचरज समकि मिलहु गोसाईं अस लिसि संसय कोऊ करै वनाई मनुज सरिस लीला गहि
कीना अचरज तिहि कहा प्रवीना मरी अनीक अनेक निहारी विरची जरासु अन दुषभा
री पकरि लियो हलधरि तव ताही बांध्यो वरुण पास करि वाही मारण कहं चाहत सब
कोऊ नरासु अने अतिबल है सोऊ नहुं नं हनत वहियो छुडाई आगिल कामना निज
डुराई लोकनाथ ने छुट मगधेसा अनि वीडा मनि भएऊ कलेसा मानी सूर पराभव पा
वा ग्रह परित्यागि तप हिमन आवा चलत पंथ सब नृप मिलताही धर्मनीत कह बहुवि
धवाही मनें कीन लौकिक कहवानी सुनहु भूप हे मम सुयतानी जहु अनितु छअल
पमति भोरी तिनके कहा पराभव तोरी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ देवयोगतें भएउ असल नहिं आनहु जि
यसोच भीरु सदा जदुवंस यहु अरहस वमति के पोच ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ इहविध तिह समुझाइ
नृपति गए निजगेह सब अनिलज्जित दुषपाइ जरासिंधु निजभवन गो ॥ २६ ॥ चौपई ॥ अ

172 A

रिवलग्ररए ब्रसरिसनरेसा ग्रनामासहरितेरेसु देसा मिनवलछन वितुसहितसमा
जू निजपुरप्रवसे प्रभु जदुराजू साधुसाधुसवत्रिरसउचारे पुसपवरषिहरिपैमिनवा
रे मागधस्तुतवंदिजननेते प्रभुरनेविजयकहृतभएतेते शेरवदुंदुभीयंरिसुहाई वेनु
मरंगसुभगसहिनाई वाजाविविधभांतिकेवाजे हरषतजनसमाजसुभसाजे वी
थीसुभगसुगंधसिंचाये धवजपताकितोरनछविछाये ब्रहमघोषग्रतिसुभगसुहा
वना मिथगनलिपेवसतुकरिपावना दधिग्रछितग्रंकुरफलफूला सकलवसुतेह
मंगलमूला ग्रतिसनेहजुनसमपुरनारी निरषप्रभुमुषजगसुषकारी सुमनवारि
तरलतारहिवाला सकलग्रसीसदेहृतेहिकाला ७ दोहा पुरप्रविसेपहविधकरिउ
वरूलाकरिभगवंत रलमहुलसोजदुव्यवहु भूषनविविधग्रनेत २८ सोरठा सोसव
ई इहिविधसत्रहिवारनरेसा मधुपुरचढिग्रायोमगधेसा जदुनसाथकरिविविधल
राई पाइपराभवनिजग्रहजाई दसग्ररुग्राठयुधकीवारा भावीहोनहारग्रतिभारा
ग्रनायासवीचहितनकाला कालजमनले सेनविसाला सुररिषवचनमानग्रतिक्रोधी
ग्रायोमधुपुरसंतविरोधी तीनकोटिसंगग्रसुरग्रनीका चहुदिसपुरघेरयोतजिली
का माहिदेषिहरिग्रनुजसमेता करतचिंतवनबुधनिकेता ग्रहोग्रहुनकहुवजिन
थपारा उभयप्रकारभएउग्रतिभारा पुरसोवैयोयहयवनसुरारी ग्रावनहारमग

पं

नं

धपतिधारी आनुकाल दिन मह है सोऊ औहैं लघिति हिमतिन हि केऊ हमतुम करहि
रारि यह संगा आइ जाइ यह समदम रंगा सोवहि वैधु हनै हठि आस्ह के निजपुर लैजा
इ सुपास ३॰ दोहा यह नेंदुरग वनाइ प्रभु सुभग सिंधु के तीर अति अगम्य नर असु
रनै तेह अवर वरिका रिभीर ॥ चौपाई तव जमना सुर हनोम चारी यह विचार जदुनाथ
विचारी सुरन जाइ भगवंत अनंता रच्यो दुर्ग सब कह सुभचेता द्वादस जोजन सुभग सु
पावना मध्य तीर मन हरन सुहावना जेह अति अद्भुत भवन अनेका विस्वकरमा गुन
अगिनन एका राजपंथ अति सुभग वजारा वीथी चौहट पुरट सवारा ग्रह निरमान न्या
स्व जिमि गावा तिह विधि सकल बनाव सुहावा सुरद्रुम लता सहित उद्याना उपवन अति
विचित्र गुन नाना धवल धाम अति ऊंच विराजा तापरि अटा फटिक मनि भ्राजा ताप
र कंचन कलस सुहाये नभ परसत जनु अति छवि छाये अस्वसाल गजसाल अनेका
अन्नसाल रथ सुभग विवेका रचि नृप सहित नरसना रचि सोला हम कलस जुत लो
लित विलासा २४ दोहा परम राग के भिन सहित तोरन नमन सुनहोर रचो भूमि सम
लिख्यकल्प ढमि ग्रह ग्रह अगान पार २५ चौपाई सुधर्मा हरि वहु ललित ललामा रचे
सुर द्वारिका सुभग सुधामा चार वरन गुन श्रम प्रवीना राजधानी सुर प्रति छबि छीना
तहां सुधरमा सभा बनी वर जिहि सपरसत सुपत लहे तुरत नर पटरानी ग्रह अनि सुं
दर तर कार्जानेले धारि हे हरि वर अति प्रियमान निग्रह की सोभा कोक हस्त कमुनि

173 A

जनमनलोभा वरकरि मोहय अमितसुहावन स्यामकरनतनुससि दुतिपावन मन
गतिचलतसहजअसतभाए मह्हिनपरसपग अतिछविछाये धनपतिहीन आठनिधजा
नी नामतासुकेकहौंवषानी महापदमसंकुपद्मसुजाना कमठमीनअरुउदकप्रमा
ना नीलमुकंदशोरवसुषदानी आठपरमलनिधिजगजानी अपरसिद्धिगनजेजेहा।
मा प्रभुअधिकारीकियसुषधामा तेतेनिजविभूतिसुषमानी प्रभुकहुअपरनकिय
तिमआनी ४४ दोहा ऐसोपुरवरद्वारकापावनपरमपवित्र तंहनिजजनराषिसक
लयोगप्रभावविचित्र ४५ कह्यौमंत्रइमिध्यानसोप्रजापालयदुतात हौंभजिहौंपुरते
निकसहोतवडेपरभात ४६ सोरठा इमिकहवचनविचारि निकसेहोतप्रभातहरि
उरपेकजकोहार विनाशास्त्रभुजचारवर ४७ दोहा चारछंदसंदुसोरठा दोहाशिवसुष
कारि वरनेयह अध्यायमहि सुंदरसुभगविचार ४८ इतिश्री भागवतेमहापुराणेदशम
स्कंधेभाषानिबंधे पंचासतमोध्यायः ५० दोहा अववरनावनकेविषेकथासुभगचित
चाह मुनिकहिहेहेरिषराजप्रति कस्मलवसनहियेजाह १ जवनासुरमुचकुंदद्दिगहनक
राइजदुनाथ हरिअस्तुतिमुचकंदकरि कैहेंहोहृदयसनाथ २ चौपई एतनोकथसके
लयहमाही कैहैमुनिवोलेनृपपाही हेनृपसुनिएककथाअनूपा हरिपरिब्रह्मनाथ
सुषरूपा भागेकौनहेतुतिहआगे सोप्रसंगसुनिहेवडभागे गारगीनामरूपगुनभूरी
जदुदीनीनिजकंन्यारूरी सोतकरिवससमुरग्रहआवा सगोदेषिसवकेमनभावा

श्री॰भा॰
१७४
174

जदुकुमार बहु मिलत तिह आरा गारि देत तिह सहज सुभाए काहूं कहै न पुसिक वाहो अतिरि
सभ स्यार स्यो विप्र चाही निज गृह नाइ करी शिवसेवा गुरन अग्न जन भयो तिहि देवा मोगिलि
यो वर मिज मन भायो उमारमन अनि कहस समुझायो होइ पुत्र अतिसै भट भारी डरै देवि।
तिहि जदुकुल झारी सब मसुन वरकस्यो गिरीसा हरष्यो सो सुनि महीसा तव जवनेइ पास
सो गएऊ जवनरेंद्र तिह नाचत भएऊ ३ दोहा ममपियवचोंध तिहानेर पुत्र करहु हमित्र
जदुकुल को भयभीत सों जनम्यो जवन विचित्र ४ सोरठा ताहि देखि जदुवीर भजिहै।
वितु परस्त्राणही हरलहार भवभीर भगाति गिरा सो चौकरत ५ चौपई पुर वाहर निक
से जदुनाथा अंधिश्याम वरन अमितायुध हाथा ताहि देखि कालजवनेसा उठो स्यामस
रूप सुदेसा वसन पीत श्रीउर वर रेषा मनिमुकुतालंकधर सुभवेषा पीन अजानु भुजाव
रचारी अरुनकंज लोचन मनहारी सुभग कपोल मंद मुसकानी निरधर होइ गएल
कलम्यानी स्याम सरोज वरन अतिसोहन मकराकृत कुंडल जग मोहन वासुदेव निश्च
य यह आही नारद कह्यो सो सब यह माही अवर अस सुंदर नग कोई ताहि देखि मो मन
वस होई अहे निरायुध यह जदुनाथा लरौं कोन विध यह के साथा विनु आयुध मै
भिरौं प्रचारी इह विचारि इन निज उन धारी तासु विचार जानि जगदीसा भजे नाथ तव वहे
नरईसा प्रभु पाछे धायो सो मूढा गहन चहै सो मद आरूढा जोगीजन जेह सके न गा
नौ महामद अनिसै अभिमानी निज वपु परम करावन ताही पदहसौमेद्रमि जवनउ व

महीं ६ दोहा एहिविध छलकरिनाथतिहि लै गुगए अतिदूर पीछेलग्यो सुकहतवरपरु
षवचनसरभूर ७ सोरठा जदुकुलधरीजुदेह भजवोनाहिन उचितयह सकलधर्मको
गह छत्रीभजैनरनसमै ८ चौपई एहिविधवचनकहतवहुतेरे हरिपीछेचलग्यो हरिप्रे
रनासुगिराप्रभुकस्योनकाना प्रविसेगिरिकंदरभगवाना ९ सोजहं हरिपीछेग्योतिहठा
मा अपरपुरुषसोवनलखिधामा कहिलागमोहि आनिसिदूरी सोवतसुषमहंननुगुरए
भूरी मानिकरमनितिहिमूढगवारा परप्रहारकीनसि अतिभारा चिरसोयोजाग्यो सोवीरा
नयनखोलिहि निरख्योरणधीरा आगेदृष्टि परासोठाढा देखनहृदयरोसकछुवाढा रोसदृष्टि
अरितनकीआगी जरिग्योतुरतविलंवनलागी विस्मुरातसुनिमुनिकेवैना पूछतमधुपु
रवचनसुषऐना हेमुनिकोवहुपुरुषप्रतापी जासुदृष्टिकरिजरिग्योपापी कवनवंसका
नामगोसाई किहिकारणसोयोयहठाई सुनिनृपवचनकहितमुनिराया सुनिनृपभूप
सोरघुकुलमाया तिहिमचकुंदनामजगख्याती महावीरकुलरेवढिजाती ९ दोहा एक
समैसुरसकलमिलनिजरख्याकेकाज असुरनतेभयपायसवजाच्योतवजगलाज सोरठा
सुनीसुरनकेवैन असुरमाररख्याकरी दियोतिनैसुषचैन वहुतकाललौहेनरपति ११
चौपई शिवसुतसेनापतितिनपावा तवनृपसोनिजवातजनावा वहुतकाललौतुमकसश्र
पारा हमरेहेतुलरेहुवहुवारा केटकरहिततजानिजराजू पाल्योसवसुरराजसमाजू
सकलकामतजिजनरसमनपागा परिउपकारहेतुमनलागा सुततारापरिजनपरिवारा

श्री भा
६ १२५
175

मैत्रीमित्रकलत्रअपारा जेनवसकलसमाजगोसाई सोसवनसिंगौकालनसाई कौनका
लअसप्रवलकहाई प्रजामोहिनासैहहिनाई गोकराचियेसैप्रभुकहहूं तोविनतीममचित
प्रभुगहहू जेजगवलीवालिनवलकालू सोअनेनभगवंतकृपालू सकलप्रजाकीड़ाजग
जाम्र जोगवियोगकरैहठआस जिमिपसुपालपसुनकहघेरी लैरायतनिजमतिगति
हेरी महनेवरमांगोनरदेवा वहुतकालकीनीममसेवा मुक्तविनाजोचहहुगोसाई सोस
वलेहुनाहविकछुकाई १२ दोहा मुकतिदानभगवंतविनुअपरनहैकोभूप ईस्वरकरु
णासिंधुसोइनिजजनकहुसुषरूप १३ चौपाई इमिसुनकैसुरगनकेवचना वोलेभू
परहितकरवना सयनकरोमैनिजरुचिमानी कौउनगावनिहितनदेहानी सोइ।
हिगुहासयनकियआई जवनविरंचिहिहिदिगयपथजाई जवनिद्रिहरसरैनिजदुनाथा
भगतिजानिनिजकियसनाथा सोविलोकघनस्यामसरूपा पीतवासश्रीवत्सअ
नूपा ललितकौस्तभमनिदुतिकारी चारुचारभुजभगसुषकारी वैजंतीवनमाल
सुधारी वदनप्रसन्नसकलछविहारी मकराकृतकुंडलमनमोहन जनभयहरनकं
जसमलोचन दसनदीपतवरसवअंगा देषिसमूहमैनमदभंगा देषिप्रतापतेज
वलरासी हरषतचित्तनयहदयहुलासी करिसतकारमेदसदुवानी वोल्यौनरपहरि
पेसुषमानी कोनुमगाहुनविधिनकिमिआये वरपंकजविनुतणसुहाये कौनहेतु
विचरौवनमाही अनिकटकदुमघनवहुपाही १४ दोहा जेमखनकेतेजनतुम केतुम

रवशशिकोऊ कैपावककेसकतुमलोकपालनहिसोऊ १५ सोरठा इमिजानेप्रभुनो
हि तीनदेवमह रिबिभतुम जानिपर्यौ श्रबमोहि गुहानामतमनसिगतऊ १६ चौपई सुमि
ममोरकुलजनमगोसाई नपद्धाकमयोइकहाई घ्रुवबंधु गुवनारवकहायो तिहिकु
लमोजन्ममैपायौ नाममोरमुचिकंदनरेसा चिरजाग्योकछुपाइकलेसा निर्गुणजन्म
करमहेताना जोरुचिहोइकहौसुखदाना मेचिरजागरहेश्रमपाई अपह तइंद्रीदतवन
श्राई सयनकरिउइहकंदरमाही किनहूजगायोलख्योसोनाही सोनिजपापजर्योमेरे
या तिहिपीछेलबहदरसविसेया दुसहतेजनवश्रइभुतरूपा इबिनसकोसरूपश्रनूपामा
नसीपसवकहसुखदायक नीवमात्रकहतुमसवलायक इहिभूपवचनसुनिनाथा
बोल्योमधुरगिराजदुनाथा जन्मकर्ममम्श्रगनितजानू नहिसंख्याकरिसकोप्रमानू गु
नप्रनेममममकर्मनघोरा बरनतसवेत्नहतनहिछोरा कोउकविवेकीजन्मसवकाला छि
तिरजमितिकरिसकनरपाला ममगुणजनमकर्ममनामा बरनसकेनहिकोऊबुधा
धामा १७ तेहा तीनिकालिकोगानजिहि श्रेसेखुनिजनकोइ बरनेममगुनकर्मनेऊ श्रंत
लहतनरसोइ १८ सोरठा श्रबयहप्रगटश्रहोमेताता श्रीवसुदेवगेहसुखदाता तहते
वासुदेवसबकहही श्रपरनाउकोऊजानिनसकही कालनेमकंसारिप्रलेवा हन्यो
बेगिनहिकिमोविलंबा यहयवनासुरश्रतिसिनीचा सोतुश्रनेनतेजलहमीचा नवहि
नहेतुइहातिहिल्यायो तुममोतेछूरखवरपायो श्रबकछुबरचहहुसोलेहू जानिजिय

मी॰ना॰
१२७६
176

कछूसदेहकरेहूं जेनरसरनगहेममकोई सोचनपोगहोइनहिसोई प्रभुबानीसुनिकै
सोभूपा ज्ञानीध्यानीश्रीपतिदेवअनूपा कहियनामबोलामनभाऊ गरगवचनसिमरनतिहिभा
ऊ तवमायामोहितसबतेने अहोईसनारीनरजेते भईविपरीतिवहिसबकेरी अरयत
भाहिअरथकरिहेरी अरथरूपतुमभजेनताही जगसुखचहिदेवाहनाचाही सबदुखरो
हगेहधनदारा तहप्रेमसकनिहोइरहितगवारा कामसुखादिमिलैसबठामा सकरादिव
पुलहिपरिनामा १९ दोहा भगवतभजनमनुष्यबिनुकतहूलहैनकोइ सोलनलहिन
हिहरिभजेमहामेरमतिसोइ २० चौपई इहभूखंडपाइनरदेही अतिदुर्लभबिनुपतेन
लेहही भगवतभजनकरतनहिमूढा सुनदाराप्रियमोहिआरूढा तुच्छविषयप्रियअ
तिसुखलागे परेअंधग्रहकूपअभागे जिमिनरलोचरनलोभपसुकरई तिमियहविष
यलोभफलमरई नहिकछुसबजनकीयहरीती मेतिहिसरनकरउविपरीती राज
बिकलपाइमकाई भयोमतिमेरअतिअधिकाई निनवपुमेआतमसनमाना सुनदा
रादिमाहिपटाना इमनीकालभजनविनुमोही गयउबधाविनबोधप्रभुतोही कुलपतु
ध्ययहहेयदुरवा ताकहिमेंप्रतिसेवकरिसेवा होउविहीसयहअहमिनिवाढी सुनदारा
दितसोरुचिगाढी हयरथकरीपदातिअनेका ताकरिसंयुतरहितविवेका २१ दोहा पि
त्योअचनिपरिमाहिजुनकालरूपतुममाथ गनिउनतुमकहकूरमतिप्रभुमोहिकी
नसनाथ २२ चौपई अतिउमममहाअउप्रानी गनेनतुमकहहेसुषदानी विषयभोग

मह अनिरुचि पागी तासु हेतु करि कर्म अभागी सिधन होइ मनोरथ तासू तदपि न जिन
हि भोग विलासू कामरूप तव सकल निषेता सहसा करै तासु को श्वेता जिमि मूषक सं
तत चित लाये ब्याल रहै देखत मन भाये ग्रसै अचानक जिमि तिहि आई तिमि नरगति
जान हुअ दुराई कामि विद्या के भस्म समनि हानी मह विचार जिन हूं उर आना तेऊ न हि जौ।
हरि पद भ मही तौ निज आतम को अरि अहिहो अमित योनि मह लहव हु वारा सहै महादु
षक ए अपारा दैव योग तेन रतन न पावा नाहि हरि भजन मोऊ मन लावा तेऊ निज आतम
सत्रु समाना वृथा गए उहि नमन पछताना रूज पाइ सब कह सुष होई तुम किमि दुष पा
वा मन जोई जो करावि इमि कहि प्रभु गोसाई न होसु मन हु बिन ओ मन लाई २३ दोहा प्रथ
म वा जग म जन रघुविपुल लिये संग बहु सेन जी त्यो च हरि सकेन्द पति तदपि लहौ नहि चैन
२४ चोपई नव हू मै परितं जनि दाना विषयी लोलुप निपट अयाना जौ तिहि सा अरि रहा
न कोई चहहि न्रपस वमो मुष नोई तदपि मैले परअनि कामी नियम आधीन तासु अनुगा
मी क्रीडा मृगसम मोहि नचावहि जिमि चाहहि तिमि मोहि चलावहि सदा रहौ मैं तासु अधी
ना कहहु कहा सुष भएउ प्रवीना तृष्णा आकुल जो नर होई नाहि न सुष सपनि हु कहु
कोई करत करम जपत पव हु भोनी तजत भोग दुष सहहि दिन राती पुनि चाहत सुरपति
पुर वासा केय बनी पहो उयह आसा कहहु कहा सुष तिन कहु भएऊ फिर संसार स्व
क जिन लहेऊ जे हरि विमुष होन जग प्रानी तिन कहु सं सत कहौ बषानी अव हरि भ

श्री०भा०
१२१७
177

गतिकरतजेकोऊ भवसरनेमैं कुमतिलहुसोऊ इमिविधवरनतहैहरिपासा प्रभुचरण
रविरजिहिआसा २५ दोहा भ्रमतिजीवयहभवसरतजवभवकरभाग्येत अवहोति
हिकहसहजसंतमिलनआइकोऊसंत २६ सोरठा संतमिलहिजिहिकाल छूटिजाइसव
विषयसुख उपजैभक्तिविसाल तवपावैयहमुक्ततेनर २७ चोपई तवसेगमतेप्रथम
हिनाथा हस्योराजसवकियोसनाथा सोमैतवअनुकंपामानी अनाथासनगवंधनहानी
जाहितजिनहितसाधुविवेकी वनवसवेकहुनिजमतिटेकी त्यागिनसकहिमनोरथ
करहीं विषयासुखदुखसननतमरहीं ममबंधनप्रभुविनुश्रमकारा छूटिगयोसवकुम
तिकुवारा प्रभुइमिकहालेहुवरमोसे वहुअनाथकरूणानिधपोसे मैंतवपरसेवन
विनुसाई अपरनवरमांगनदहराई तुमअपवरगदानजगनायक कृपासिंधुजन
पालसुभाइक तुमहिप्रसन्नपाइजनकोऊ किमिमांगोवरवंधनसोऊ जोविवेकयुत
होहिप्रवीना नाहिवरवाहितनहिकछुकीना इहतेमैवरचहहुनकवहूं ब्रह्मलोकलोव
धनसवहू तुमपरिवल्लभपानघनरासी अव्ययएकसकलघटिवासी तवपदकंजस
रनविनुचाहू होहुसत्यसोईऔरनचाहू करहुभोगननिमनअकुलाहू मुकतिहसत
संचितनोममवासनापरिखोतासुअधीन नानाविधिकेतापनितिसहतरहोंअति
दीन २९ सोरठा नदपिलोकअपार यद्दपिरुसेततदेहिहठ नहिमनतोवगवार

तुमसरन्यजनपालप्रभु ३० चौपई तवपदकंजसरनमैपावा अभयकरेजनसोकन
177 A सावा वहुदुखभस्योनाथमोहिजानो पालियअवहेजनसुषदानी सुनिमुचुकुंदगिरादीन
जनपाला बोलेहरिजनपालकृपाला हेमुचकुंदविमलमतितोरी वहुविधवरहित
तोहिनिहोरी वहुविधलोभदियावतोही कामदेवकछूदवितनहिमोही रहितप्रमादहोत
चिततोरा एहतैहेनलग्योवरजोरा जोअनन्यजनहैजगमेरो अरथादिकतिनभूल
नहेरो तासुबुधनाहिचलिनचलाए जासुपतुछजानितिनपाए जेअभक्तनरहैजग
कोऊ प्राणायामकरतहैसोऊ तदपितासुमनसुधिनकवहू करैजतनपचिपचिमन
नवहूं सोमनविषयमाऊचलिजाई पुनिसंसृतिपावैदुखदाई निजमनरावहुमोपद
कंजा विचरहुछितिभवरुजतवगंजा अससुअनन्यभक्तिनितमोरी जोभवतरुहरि
डारितोरी तुमछत्रीमृगयावहुकीनी वधेजंतुवहुदुखतिहिदीनी अवमनरोककरहु
तपजाई अघपरिहारकरहुमनलाई यहशरीरतजिद्विजतनधारी सवकहसुषद
संतहितकारी ३२ दोहा तासुत्यागिकरिताततुमपैहैममपदजानु कह्योतोहिमोकर
हुअवगिरासत्यममानु ३३ कहेदोहराशुभगअतिदादसपरमपुनीत अपरसोर
ठाअरुकहेहरिगुनसहितसुरीत ३४ इतिश्री भागवतेमहापुराणे दसमस्कंधे भाषावि
वेके मुचकुंदस्तुतिवरननोनामएकपंचाशतमोध्यायः ५१ दोहा वावनकेअध्या
यमहिभजिचलिहैजदुवीर पुरुषविसमयभीतइवप्रभुकरतारणधीर १ महाव

श्री०भा०
११७८

178

सनादिनरु कमनी पठए कहलं देस सो सुमिहैं मनलाइ हरि हर हे तासु श्रं देस ३ ६
तनौ कथा बिचित्र बर मुनि कहि हैं नृप पास सुनत कछु गुण लाइ चित तासु होत भ
वनास २ चौपई कहत मुनीस नृपति के पाही कछ स्वरूप जासु मन माही हे नृप प
द विप कृपानिधाना कृपा करी तिहि निज मन जाना तब मुनि विवेक जोरि जुग हाथा
कृष्णदेव कहना ए उमाथा कस्यो प्रश्न बहु विधि ताही बाहर गुहा ढाढ भा माही
हत्यो नर नरु वर जग जेते पसु ते श्रादि रूप लघु मेते जान्यो सकल जुग भयो प्रवेसा
तब उन्नद रिसि गयो नरेसा श्रद्धा सुत श्रनि धीरसमाने रहित संग हैं कियो पिया
नो प्रभु चरण लाइ विद मन राखी काहू सन कछु गिरा न भाखी नाम गंधमादन गिरि ग
एऊ तहां जाइ श्रसि करत सुभ एऊ नरनारायण पलसु भजानी देह सहित भ्या श्रनि सु
खमानी करत भयो तप हठि कठिभारी हरि पद लह्यो हिये हरि धारी कृष्णदेव पिरम
धुपुर श्राए जबन श्रनीपुरु स हु स्विछाए मो हि मारि ने धन बहु पाए बधम मरिसो
सकल चलाए चलित माहि छन नृप तन नरेसा श्रनी साज श्रायो मगधेसा अधमसेन
जेति कल श्रायो तिहि समान सब कादि कसु हायो ४ दोहा रिपु सैना लखि भ्रात दोऊ
नरलीला मन लाइ भय हारी भय भीति इव तुरत हि चले पलाइ ५ चौपई त्यागि स
कल धन बल श्रनेका भगे नर लभ यमाहि नएका बिनु पर श्राप भजे श्रनि दूरी ह
स मगधेस दोरि मग तिहि रूरी नृप मगधेस मग देव करि श्राछे धायो रघमनी कसुत पाछे

178 A

भजत दूरि चलि गयो होऊ भ्राता। पकै नुर ग गिरि चढि जग त्राता। नाम प्रवर्षण गिरि बर भा
री वर्षत सघ जहा निति वारी गहन सघन हरि यो जन आवा अरि बल वेतन हरि कहु पा
वा समिधि समेटि कीन बहु रासी पावक वारि दियो चहुं पासी पावक जरत तिरेखि होऊ बी।
रा कूदे तर किन हाने धीरा ऊचो गिरि यो जन दश एका पारगए न पिके कोस ग्रने का भूप
रि आइ रहे होऊ भ्राता अरि दूहु तव न मह जग त्राता सो जल हा अरि गयो नहि पायो इति हो
ऊ भ्रात सु पुर नि पठायो मगध राज प्रभु कहि नाहि देषा जान्यो जरि गयो दुरु षबिसे षा निज
सेना ले मगधभू आला निज पुर गयो अम पाइ बिहाला निज पुर वासि सुष सोज दुवीरा प
रि षास रिस सिंधु गंभीरा नेह वि विहवार चलहि प्रसंगा सो कहि हरि मुनि हरि रस भंगा
दोहा प्रथम हृ श्री बलदेव करि सु भगवि विवाह अब नूप कहे न बमके मो ऊ औ वरनन सो सु
षरूप ७ चौपई सोध प्रसंग फिर कहत बखानी हरि रस प्रिय भूपति कहु जानी सौरठ मा
ऊ भूप एक भारी रैवत नाम प्रजा सुषकारी कन्या सु अनिहि आयसु दीनी नव कन्या प
रूपरम प्रवीनी सोवलि देवहि लै गुमरो कू दीनी लवतिहि सकूत सने हू कृष्ण देव सव सु
षमय नागर ब्याही भीषम सुता उजागर नाम रुकिमनी श्री अवतारा हरि आनी रप
अमित नमंकारा नरा सु अन सिसुपाल नरपाला सभ के देषत रहै हापाला विहंगराज
लवसुरमथि जैसे आन्यो सुधा हरी प्रभु तैसे नृप बोले हे मुनि सुषदानी भीषम सुता
सुभग गुन षानी किमि वर न लग आनी हरि ताही श्री अवतार कहा तुम जाही कृष्ण च

श्री॰भा॰
१२२९
179

रिव विचित्र गोसाई सुनित चाहि मम चित अकुलाई किमि सिसुपाल नृपालनि गोती
हरि ल्याए कन्या किहि रीती रुक्मिणी व्याह पावन सुखदानी अति सै मधुर अमल मलहा
री ६ दोहा प्रति छिन पुनि आचरन सो जो रसमगन नर होइ कहे ब्रिपति कै सिलहै लहै अ
प सु व्रत सोइ ७ चौपई सुनि भूपति के वचन रसाला बोले मुनि अति परम कृपाला हे नृ
प रे सविस्तर सुहावनि भीषम नाम भूप नेह पावनि तीके तनय पांच नय नागर कन्या
एक रूप गुन सागर रुकमी एक रुकमरथ नामा रुकमबाहु एक सब सुखधामा रुकम
केस सुंदर गुन हंता अपर रुकममाली बलवंता नाम रुकमनी कन्या तास रूपसील गु
न अपरन कास सो मुकंद गुन रूप सुभाऊ सील सनेह प्रताप प्रभाऊ आए गृह मुनि जन
तिन गावा सो सुनि निज पति मन ठहरावा तात मात निज सुतासयानी देषि विचार हिये
अति स्यानी रूपसील कुल धामनि उदारा बलि प्रताप जस सल ह को पारा ताहि मेरव दहनेगु
न भारी तिन्हहि सुता निज रेनवि चारी ८ दोहा सुनी बात यह नृपसुअन रुकमनी जाकै
रि नाम जन्म कहो निज तात सों क्रूर महामति वाम ९ सोरठा मम भगिनी है तात रेन
त्वहत तुम जाहि कौ सो नहि लायक व्याम दैवों मैं सिसुपाल कौ १० चौपई प्रभु सों देष
रि साहुज कुटिलाई रोके मात पिता सब भाई जाइ तिलक सिसुपालहि कीना सुदिन सु
धाय लगन लिषि दीना समाचार रुकमन सब पावा भए उकलेस हृदय दुष छावा
नृवल कहि जसोधापुर माहीं पठ्यो रुकमपास न बनाही चलियो सी घ्रपुर पहुंचो सोई

प्रतिहारनसनसुधिकहसोई प्रभुतिहिछननिजनिकटबुलायो देषिद्विजःअतिमनसु
षछायो कंचनजटितसुभगसिंघासन बैठेतहजहनाथवरासन लषिभूदेवहिशीषप्र
मुरारी उठरिवरासननेहिसनकारी बहुपूजाकरिद्विजसनमानी जिमिपूजहिसुरह
नपाहिचानी पुनिभोजनबहुभांतिकरावा सुभगसेजआसनपधरावा नवविश्रामकी
नमहिदेवा प्रभुजाइकरतम्पासेवा निजकरिचायनपदद्विजकेरा पूछतकुशलनाहि
ड्रिगहेरा १३ दोहा हेद्विजवरनवधर्मजे श्रुतिपुरानयुतआहि वरतमानसोसवकथ
हेकेकछुघटदोनकाहि १४ सोरठा द्विजमनसेतनतोष कीनेकरमनिजधर्मसब तो
निहिकरतलमोष अहसवकहहवहकामधुक १५ चौपई अससंतोषवकोऊकिनहो
ऊ लहेसुरेसपदसुषनाहि कोऊ होइअकिंचनजोमनमो कहहरितितापतेऊसुषमय
कोषु जेमि जलाभतुष्टमनसाधू भूतसुहृदअहिमिमिसव साधु सोतसीलगुनजेभू
देवा मेजहि पदरजचहोंनितसेवा हेद्विजतवभूपतिसुषराशी कुसलअहेजिहिपुर
तुमवासी जेनपप्रजापुत्रसमपालू सोमोहिसेततप्रिंदचतिकालू आयेवहुरदूरच
लिआए मारगविषमकलेसकलाए कवनकाजसोकहहु गोसाई कहहुमोहितुम
सकलवुझाई जद्यपिनृपतिहोइ कछुवाता सोपिकारूपकरिहोमेंताता यहविधि
कृपारवभगतिरीती पूछेद्विजवरकहुसुनप्रीती बोल्योद्विजप्रसन्नसुभवानी स
मानारसवकहसिविधानी रुकमनभ्रातिकेरिकरनूती कहसिराजसुषनपति

श्री॰भा॰
६१८०
180

विप्रसौं रुकमिनीनिजकरि लिषीजुपाती प्रभुकौंदियो हृदयसुहाती ॥२६॥ दोहा ॥ लिषीपत्र
कोप्रेमजुत विनयअनेकप्रकार प्रभुमुद्राषोलीनवहि उमग्योप्रेम अपार ॥२७॥ सोरठा ॥
पातीलिषतीवार अश्रुपातलिषिवरपरे जानीप्रीत अपार दीनबंधुनहिवाचिसक ॥२८॥
चोपई ॥ तबदीनीहरिद्विजबरहाथा वाचहुतुमद्विजकहिजदुनाथा वाचनलागिविप्रवर
पातीसुनतनाथमनरहेबहुभांती रूपमतिश्रीगुनलसुरमेहिय हेअच्युतकरुनाकरिसे
दर तुमअनेकगुनहेमनरंजन प्रभुमहिमाभवरुजकहहुगेजन कहातुछमैतियमनलिहे
नो नरपतिसोंलवबयषिषिमोहिहिदीनो नरपतिजाजगतिमेंजदुनायक प्रभुसकलसनुम
सबगुनलायक तबसरपलतचिरमनमोरा अटक्योतहंतेंनंदकुंवरजोरा रिविमुषसुन
नविरूपनिधाना रुद्रतातिभयोसरूपसुजाना दृगिगोचरकहियेगिरधारी नयन
बेनकहयहसुषधारी जोकदाचिकहियेइमिवानी कुलकंन्याकिमियहमनिठानी अ
ससाहसयहघटेनतोही अबकहोमोहरितुममोही नहोसुनहुविनतीप्रभुमोरी
हेमुकंदजनदीनियचोरी कुलवंतीकंन्यागुनभरी सीलबेनसुररमतिरूरी त्रिभुवन
मे असिकोजदुनंदा बरेनपतितुमकहहुसुषकंदा मेपतिवीरकहाकहोंमोहिहिरघू
गुरूपसीलगुनलछिसेतोपू ॥२९॥ दोहा ॥ अषिललोकनरनारिमेनवसुरूपसुनिनाथमो
हिजानतिमनवचक्रमत्यागिदेहिनिजसाष ॥३०॥ चोपई ॥ अषिललोकमनहरनसरूपा
मेपतिकौंन्यानिजअनुरूपा निमषविवाहअवसरजियजानी नाथवरीमैमनक्रमवानी

180 A

ननमनमेंअरपामननोही अबइति आइबि वाहियेमोही जोइहि अवसर आपुनआए
सुनिपरोषमेंकहेवु साए अहोभागमेतबजदुनायक यातेसी घ्रआए खंघायक सिसुपा
लाहिगहेनहमोही गहैलाजदूहैसबनोही मिगपतिभागस्रगालविचारे गहेनत्योप्रभुव
नैसुधारे अपरजनमकछुसुकृनहमारो तोप्रभुइनकोवेगिपधारो कूपबाटिकाबाग
अनेका रचीहोइजोसहितविवेका अग्निहोत्रयस्ताहिसुभायक नियमदानव्रतकरिजो
लायक तीरथअटनदेवद्विजपूजा गुरुहरिसरिसभेदनहिदूजा जोइहविधकछूपु
न्यहमारे सकलसिद्धफलहमनिरधारे तोइतिकस्मदेवपगधारी पाणिग्रहनममकरौ
मुरारी २२ छंद ममपाणिग्रहणलक्षपालिकरुणासिंधुकरिहैआइकै जेअपरसिसुपाला
रिचलबरन्याहिघरपाछितोइकै जोकहियकबहुकनायइमिनबबंधुसिसुपालहिरई
अबकरियकवनउपाइतौसुनियेप्रभोअगजगमई २३ ममब्याहकेदिनदेकजानोसु
पतनुमइनिआइकै पीछेअनीकबनाइबहुविधिअसुरदलविचलाइकै सिसुपालबल
दलमलिसबेमोहिब्याहीयेसुखपाइकै इहवचनमेंजोन्योगयेनिसिचरविवाहसुभा
इकै २३ दोहा तबअंनहदुरआइकेबंधुहनोबिनुनाहि किहिविधिआनहिब्याहितोहि
कहहुउपाइकछुमोहि २४ सोरठा जोइमिकहिलरेह बचनकहेममनाथप्रभु तोसुनि
येयुतनेहि सहितसुभायकसुगमअति २५ चौपई ब्याहिएकरिमप्रथमहिसाई कु
लदेवीयात्राचलिआई बाहरनगरसुगमसुरधामा गिरिजाकोमंदिरसुभठामा महन

श्री भा॰
१२८१
181

ववधू नाहि कुलरीती उमा हरजन्ग्राव हि मुनप्रीती तह ते मोहि हरस्याम नपास्या नहि को
अमरेन अपमेक्षास्था कि मिश्रे से हाहि निजमिय स्वानी है सिसुपाल रव्यात जगजानी हैत
बचोम्पता हि तुम वरहू जो कहा चि ग्रे से पुनि कहहू तहां सुनहु विनती मम नाथा जानिधि
करी कथियसनाथा कमल नयनहु आने रकंहा गोपी हगि चिकोर के चंदा तव पद कंज
रेणु अति पावन सव कहहु सुख रस्लोकन सावन ताहि महत मुनि जन जे कोई शिवह
ग्रैसेतनु मन त्रिभुवनपति ईसा तव प्रसाद सव मोहि न हीसा नौ ब्रत करि निजननहि सुधा
ई तजि हीं प्राण सकल न दुराई तौ तोहि लाभ भाकहहू सुनि यवात मम निमम न
ग हहू ४४ सेरहा धरेहु पुनि माणिनतु चार वारम्म गरीस कवहु कस पाकदाछ्यत वज
भसनतनि मे ईस ७ सोरहा हैं जदु देव कू पानि ग्रसकहो सेरे सयह तव ब्रत है जेन
पाल जस चाहे तस कछियप्रभु ४८ सेरहा कहे सोरहा पंचवर हास्य सोहाजानु वाव
मकेअ ध्याय महि ध्यर जुगल कियगानु ४९ इति श्री भाषा भागवते महापुराणे दशम स्कंधे
श्राव्यवि वोधि पंचाशतमोध्यायः ५० सेरहा तिरपनके अध्यायमहि हरि विदरभपुर
जाइ हरि है भीष्मक की सुता अरि जे है सबकु चाइ १ सोरठा इति नीक थाव बयानि मुनि
कहि है भूपाल प्रति निहिरस तजि यजाने करुणासिंधु हयाल प्रति २ चौपई पानी
सुनी विप्र सो वानी भीष्मसुता प्रीति निमति जानी करसों करि गहि द्विज सनमानी वो

181 A

लेरमारवनखुषरानी जान्योमेरुमीकरहोया होवैयो व्याहिमोरकरहोया महतेनीद
परीनहिराती तबमुखवचनसुनीसवरव्याती दुसराजमहमघकरिताही आग्निहैभी
वमसुताविवाही जिमिमघहारुअग्निछिजलेही तिमिश्वानवमैप्रियासनेही एकअ
नन्यअहैचितजासु ममपदअतिसेहढविसवासु रुकमिनीव्याहिलगतहरिजानी क
सोसानुरघहारुकआनी सुभगवाजिहयपरमसुलछन पवनवेगिगतिसुगतिविच
छन छिजहिवढाईचढेहरिआए वलेपुरीनेप्रवलप्रताए एकरातिमहिहरिसुषहाय
कुंदनपुरुपहुचेयदुनायक अतकुंडिनपुरकेजोभूपा सुतसनेहवससुनाअनूपा
निजकंन्यासिसुपालिहिमानी व्याहिहेतुहितकारजठानी मगरगरधीचोहटाचारु
सीचेसोरभरुचिरवजारु ३ दोहा पुरविचित्रकियठोरसव ध्वजपताकवहुभांति
ग्रहग्रहप्रतितोरनललसनमुकतामालसुहाति ४ सोरठा खगसुगंधवहुभांति भूषनवि
विधविचित्रवर नरनारीसभनाति सजीफिरहिजनसुरवधू ५ चोपई भूपतिग्रहअ
तिसुभगवनाए नानाविधकौतककरवाए अगरधूपधूपितवहुओरा देखितमुनि
जनकेचितचोरा पितरदेवविधवनकरिहूजा जिमिश्रुतिकहिउभेरनहिदूजा विप्र
निवाइदीनवहुदाना जथाजोगसवकोसनमाना छिमनिसवलिमेगलजनवकीनी क
न्याहेतुअसिसादीनी पुनिनवसुतहिकराईमंजन व्याहिसूत्रमंगलकरिमंजन
चूननभूषनवसनअमोला पहिराईमिनएकअडोला पुनिसुयवेदमंत्रसुभठानी

श्री भा
१८२
182

सोलिपढी कंन्याहित जाको तेहि विधरच्यो विविधप्रकारा पढी दिनन वहु वार अपारा पुनि
गृहस्थो निहोनहि यश्रानी कस्योहोमकुलगुरुसुधमानी वहुरनपनि कंन्याहित लागी दा
नरियो विप्रन अनुरागी कंचनवसनधेनुगउरूपा अन्नविविधविधसुअनुरूपा ऐसे
सहिचेरिरानमकुतहेतू मंगलकरिवामेकनिसेतू मममतंगअस्वरधमारे वहुपर
निगनगनेनपारे अनीविलाससमानवहुरीती कुंडिनपुर पड्योपुत प्रीती तवभी
षमानहिमिलिसनमाने कहिहूजाविधवतसनमाने ६ दोहा आगरवतिवरातने
तिनको सुभगनिवास दियोसवनिसनमानिकै सुंदरसुघरअवास ७ सोरठा जरासि
धुतेंआरि दंतवकअरूस्योतनप लिख्योनभागसुधारि जे पढिकैसिसुपालके ८
चौपई सवकुंडिनपुरको चलिआए रूक्मरवप्रनिद्विषसुभाए जोवलिरिवरूक्मवल
आवै नहलैनासवपुरकहुछावै तोहमकरैमारिहदभारी कंन्पाछीनलेहनिरधा
री यहुविचारकरिभुजभारे आएकुमतीक्रूरविचारे अतिउधमसवहलिध
रमाना रूक्मणकावीगेपुरआना कंन्याहरणहेतुरणहोई यहसेकाउपजीमन
कोई सेनसाजिवहुविधिकरिआए थाननेहरुअभिप्रवलप्रताए गनरयहयपदा
तिवहुलीने कुंडिनपुरगत परमप्रवीने भीष्मसुतारूपगुनवानी
वाहिमनआनी सोवहिहियहरि किमिनहिआए समाचारकछुकनहुनपाए हरिआगमन
सुरसोउरआनहिअजहू कारनकोनसोचममनमनहू भू
निसामाव्याहकारिरहि

182 A

ऊ मंदभागमैंहरिनहिंहेरिलहऊ पातीलैद्विजवरजोगएऊ सोऊनहिंफिरयोकहाधोंभ
एऊ किधोंभ्रष्टितामोहिनिहारी द्रहिनैनहिंआएगिरिधारी ९ दोहा किधोंचलनिकैो
मनकियो द्विजकोविरानकीन चलिनसकेकछुदेषिममतऊ पासिंधुलषिलीन १० सो
रठा उत्तरद्विजकहुहीनसोपिनआयोसकुचिहिय मनक्रतकर्ममलीन अहैंकछुकहूरव
जन्म ११ चौपई मंदभागमैंपरमकुशीली विधिमहेसमोयैप्रतिकूली गौरीगिरिजाअंबु
भवानी देवीउमानुकूलनहिंजानी एहिविधिसोचितहैंसोवाला दरसौजासुमनक्रतसत
पाला अजनहूंआइजाहिंममनाथा देनिजानिमोहिकछुहियसनाथा इमिसोचाकुलसजल
सुनयना लगेद्रगंबरिजनवितचयना एहिविधिप्रभुआगमनसुआसा फुरकेवामअंग
दुषनासा नयनभुजाऊरूएकवामा फरकतिहीसुषमिलेललामा तिहींसमेंतारूकोप्रे
री आयोद्विजउपवनकोनेरो काहूसषीलषीमहदेवा आयानिवेदनकियकरिसेवा ना
होछिनाद्विजवरतिहिद्वारे आइगयोतिहिसषिनतिहारे करिसतकारभलीविधताहू
लेचलिगईरुक्मिनीपाहू देषिप्रसन्नवदनद्विजकेरा नहिंमनव्यग्रदेहदुतिहेरा जान्यो
कामकीनइनमोरा लछ्लालषिसुषभयोनथोरा जोरिपाणिसुगपूछीवाता कह्योमक्रम
आवजनत्राता १२ दोहा आएकहोजवहूसकलकरुणासिंधुसुनिसुषमयभई पुनिकहीप्र
भुकेवचनमुषकीआनिहोवहममभई यहसुनतिहीतिहिमाननोरुह हरषवसआकु
लभई कहहुउद्विजवरसुतितिहिसमजगतमहुनाहिंहेदई १३ सरवस्वजोअरपनकरो

सीता
९८९३
183

तिन्हि कामरतमनहि लेषि २३ इहि भांति करमन सोच पोचन यसतु ताकै छुहि यदेषिउ तव
जोरि पानि प्रनाम सिर धरि कस्यौ मनु सकुचाइकै पीछि अनेक सोरह्यो वहु विधि इम अस्तुति
सुषपाइकै २४ दोहा कै धन हियो न याहि को हेतु अपर जियजानु सीजू परको जेनमति हो
तसुनवनि धियानु २५ सोरठा याहि मोरि जुगपानि पग वंदन में वहु कियो वेंपा न होइ सु
षषानि योने हियोन प्रगट कछु २६ चोपई श्रीषमसुनामकै समसनेसनें आए पुरमम ज
न सुषदाता सुता विवाह उछाह विलोकी परम भाग हियमान विसोकी सुभ निसान व
जाइ अनूपा मंगल द्रव्य लियो वहु रूपा मधुपरकादि विधान अनेका लियो वसन मन
सहित विवेका इहि विधि प्रभु आगे चलि आवा देषि नायक हर अति सुष पावा पुनि वि
धवति पूजा प्रभु कीनी विविध उपायन हरि कहि दीनी मन जानी कन्यापर दायक
ले जैहि हरि जन सुषदायक मन विचार यह कहान काहू हरि कहि वासि दीन चित चाहू
वधु सहित सेना प्रभु केरी दियो निवास सुषल मन हेरी पुनि नाना विध भोजन कीना
जो जिहि रुचे तिनहु तस लीना अपर भूप जे जुर पुर आए अति सनमान तिनहूं तह पा
ए जथा जोग पुनि सम सब काहूं पुन्यो विविध चित चाहूं आये सकल सुने पुरि वासि
न नरनारी सब सहित सवासिनि आई सुरि नयनो जनलि कीने पीवहि सफल सरूप
दसिरीने २७ दोहा कहन लगी सुनि हि सषी रुकमिनी इनको जोग अपर निवरतिहि
जगमहे इमि कहहु पुरसव लोग २८ सोरठा सव्य कहीते वात प्रभु अनवद्य सुषाक

क

183 A

रो त्रिभुवनपतिअनुराग इनहियोग्यभीषमसुता १९ चौपई बोलेपुनिपुरकेनरनारी
हमकछुसुकृतकियोसुषकारी तौकरितोषलह्यौजगदीसा तेसौप्रभुयहदेउअसी
सा भीषमतनयाकरकरिव्याहू प्रभुलेजाहिलहेहमलाहू इहिकहतपरसपरबानी
भरेप्रेमभरिअतिसुषमानी इतनेमांजसुतानृपकेरी चलीगौरिपूजनहियहेरी महा
वीरभटसंगअनेका अस्त्रशस्त्रगुणभरेविवेका तिनिकररछतचलीसयानी उमाच
रणहेषिनहिनमानी विनुपदत्राणमहासुकुमारी धरतध्यानहियचरणमुरारी मो
नगहैवृतसषिगनसंगा धाईशिवासननगानतुरंगा बजतमृदंगशंषअरुभेरी बहु
उपहारलियेकरचेरी सजिसजिवारमुषीबहुआगे करहिगानमनअतिअनुरागे
वसनविभूषनसोरभमाला सजिसिंगारचलीद्विजबाला मागधसूतबेदिजनजेते
जथाजोगगावहिगुणतेते रुकमिनिबहुघेरेचहुपासा गयेशिवाकेसदनसपासा च
रणपषालआचमनकीनी सुचिमनह्वैसोपरमप्रवीनी कीनअंबिकाभवनप्रवेसू व
धिनारितिनकरयोनिदेसू २० छंद तिनिकियनिदेसपुजाइगिरजासहितपतिबहु
काइकै हेशिवातुमसंतानयुतफलरतनकहिकृतिगाइकै बंदेचरणनवबारबार उ
तारतुमसबलाइकै पतिहोहिहमकपालिवारिलोभिषेचितचाइकै २१ सुभरीन ८६
अछतधूपदीपवनाइसुभवरवसनसौ एहिरीतिप्रीतिसुभावयुतपूजीशिवासत
कारसो २२ दोहा पुनिसोभागिनविप्रतियतिहिपूजीचितलाइ लवणरूपवीरीद
करिरुचिरसुभगसिंगारविधवतशिवाकोसनमानसो नानाधरयोउपहारलेदीपावली
चहुपाससो २

श्री०भा०
१२०४
184

ई कंठसूत्र पहिराइ २३ सोरठा फूलधर विविध प्रकार वसन विभूषण लञ्भरिय ति
नअसीस बहुवार दई हरष हिय प्रेमयुत २४ चौपई ओढनियन सब रीति कराई दि
वा प्रसाद रुकमिनी पाई पुनि देवी कह कर्यो प्रनामा ले प्रसाद निकसी लहि कामा
स्यामा गिमोन छूटत बाहर आई संग सखीगन सुभग सुहाई निज करि कंज गहो अलि
हाथा ललित नअपार सखीगन साथा वीरमोहिनी सुभग सरूपा कुंडिल मंडित चर
नअनूपा स्यामा छ्वी जित ललित उरोजा कटितट छीन सुनयन सरोजा चिकुन चि
कुर सुभग सरकारे अलिके मुलो अधर अरुनारे लबिव धूपविविमनहारे कुंर
सुमन छविदरन निहारे नूपुर नन नेर सुषकारी पदकंजनि सोभाग्य अतिभारी च
लित हंस गनि सो कहि अपारा देषि वीर मोहे एक बारा केवल मोहन पाये ते ऊ पर अ
स रुकमिनि निगरूपा प्रभु हि समर्पन करन अनूपा ताहि विलोकि मंदमति प्रानी
भए काम वस विवुध गुमानी गजर धनुरग वद बहुमानी भये अचेत मोह मति सानी
कहि ते मि स्यो प्राचर अनयासा गिरि गिरि परे अवनि चहु पासा २५ दोह चहुं पास गि
रि गिरि परे मदन नाहि सुभटन को परी भीषम सुमासन भा यसो चलिन क तचितचा
यन भरी निज कर जेसो सुभ अलिक टारित समन लचित चाहत हरी निमिरे वियोग
भुकमन व आमि सुदरी चि नमे अरी २६ मिहहनु स्वाजिवरा ते आयो वे रहि सुनहूलह

184 A

बनौ तिहिसंगमानी युधहितमराधे संग्रायो सजियनी सो बलिन चाहित राजन के न्या
ल कैयो तिहि त्रिभुवन धनी करिकै मनसो गहि लाहि गिरिधर धस्यो निज रथ सुषमनी २७
श्वरि मेदुली के हे बिने चलै तिहि करुणा करा तव अपरम पश्रनेक हो रे छीन लेहमम प्रे
न धरा तिहि आनि हलिधरि बीस्थिरो कैयो मारि हल बल भंजन परा हरि गये लैन व रुकमि
नी नहि श्रम कछु अति सुषभरा २८ दोहा जिमि सृगाल के बंद मैं मृगपति इक लो आ
इ लेइ जो इ निज भाग वह वै सब है लै लाइ २९ तैसे जदुपति लेगये भीषम सुता उठा
इ सह न सके मानी नृपति जरासु अन पछिताइ ३० सोरठा धनुषवान करि धारि आ
ये हम मानी सकल चले मानि मन हारि धिक धिक सब जगत महं ३१ भीरुक कहै गे लो प्रेमो
ग कंन्या ले गये गोप बह जिमि मम पति को भाग मृग इक लो लेवो भजै ३२ कहे दोह
रा सात सुभग सोरठा नव कहे मुनि सुभ छंद सुहात कहे याहि अध्याय महि ३३ इति
श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषायां रुकमिनी हरण त्रिपंचाशत्तमो ध्याय
५३ दोहा दुष्ट नृपति सब जीति के रुकमिनि करि बिंद रूप पुर लेके तव रुकमिनि
हि करिहे व्याह अनूप १ इतनी कथा बषानि है यह चौ वन के माहि करुणासिंधु उ
दारमति बिमल सुराति के पाहि २ चौपई मुनि बोले सुनि नृपति प्रवीना दुष्ट सभा सब
हूं अति हीना निमपो रुकमि रहि धिक मानी महा क्रोध उमगा उर आनी पहिरि क
वच धरि थरि धनुबाना सिमिट बहुर बीर बलवाना प्रभु रथ पीछे धाये मृदा म

श्री॰भा॰
११८५
185

हा भेर मतिमोहि अरुढा चढे अरव गज रथ भट भारे करये जाइ वणिइ कवारे भूधरिस
रिसअनीजदुकेरी वानव्रह्मि घनसम मनिहिं वेरी पतिरथ वान व्रह्मिनेहि धायो देषि
रुकमिनीभयमनआयो कहिनसकैलजुतेनहिंगवाही प्रभुमनकीलषिवोलेवाही हेसुद
रननभयमनआनू छनमहनासशत्रुतेमानू तालुपराक्रमयदुनहिहारे गहसंकर्ष
पतालिमिरकाटी छनमहिरियोमहीसवपाटी कुंडिलवागिकिरीटिसमेता परेअमि
वेसरउरदरस्थिर विनहिभूपरिपषिवे छिनएकमेंअरिसैनसिगरीमारिजारवज
यलेह रनविमुषजेमगधेसआरिक गएगहअरोगुनगेह ४ सवक्षिमिदिकैसिसु पा
वैषाजुआननभयोमीहनप्राणत्यागिनचितचह्यो नवहींगएसवभूपनापैदविदुपति
नहूगसो ५ दोहा कहनलागममगधेसनवसोचलागिहिमित्र सुखदुषसंपतिखेग
तिकोलषिसकेविचित्र ६ सोरठा होनहारसोहोइ टारसकैअसिकोनजग शिवविं
रंचिकिनकोइ भावीटरैनकहूप्रति ७ चौपई गोपतुछसेनाअमिपेषी महाभीरुअ
समतिअमिमोरी सोभयपायजाहिदुनआगे सोदेवीगतिहवडिभागे दारुनारिते
सवजगजानू सूत्रधारईस्वरकहमानू इहतेसवअधीनहेतासु हानिलाभदाता

185.A

सबकासरु तहद्दलौंनग्रहौमैभूना शत्रहवाररलरयोहेतानी जीत्यौ हास्म पराजयमोरी
नहिकछूजतनकरीमै घोरी अना पासजीत्यौ एकबारा नहिहरष्यो कछुसोच विचा
रा दैवाधीनजगतसबजानी यातेमे कछुसोकनिमानी अबहहवैरबीर हमजेते जू
घपजूयबलीहमतेते सैना अल्पसन्य प्राधीना जीतनगएरिपुहमहि प्रवीना कबहु
कहहमजीतेगेतिनही सानुकूलदैवीगानिजवही इहिविधतिहप्रबोधबहुभांती नि
जपुरगौनेसबआराती चेदिसुअननिजपुरचलिगएऊ महासोचनिजहिमनमैलहिऊ
भीषमसुतभगिनीकोहरना सहनसकामानहुभामरना अछुहिनीसेनातिनलीनी
अस्त्रसस्त्रसमाजनिवीनी ॥ दोहा पहिरकवचसिरत्राणधरि धनुषबानकरलीन
महामूढ अमरषजुतयहपनसबसोकीन ॥ ९ ॥ सोरठा सुनहुसकलहेभूप समरजीत
मैकृस्नबहु निजभगिनीसुषरूप लैआवौग्रहआपनै ॥ १० ॥ चौपई जौहतिनौकारज
नहिकरऊ कुंडिनपुरमहि पाउनधरऊ महपनसत्यजानियहुमोरा इमिकहवच
नरोसिनहिथोरा रथचढिकहनलागिइमिवानी अरेसूततेहेसुषदानी छनकमाजरु
थलैचलुनहवा अहैकृस्नवैरीममजहवा आजुमारिसंगरहैतासौ ममभगिनीहरि
लैग्वालासौ गोपवंसवहसुमतिविहीना हरैताससमर आजुप्रवीना इहविधकरतप्र
लापअनेका कुमतीकूरविवेकनएका इस्वरबलप्रमाणनरूका इकलौरथचढि
चाहनजूआ इमिकछारथकहनकुबानी यरोयरोराहिहैअभिमानी असकहतीनि

॥

श्री॰भा॰ ६२८६

186

वानकसमारा जाइकहा तें अप्रबलहि वारा जइकुलइ बलए अवछनरएका हाढरहे तोल
बेअविवेका भगिनी मम हरि तू किन नासी जिमि को ऊकार जगग्रह विनासी ॥ दोहा क
पटनुद्ध जाने वहुत मे रमहा मरतोहि आशुहरोस वनो रमद समविर वीरत वमोहि ॥ २९
सोरठा मोलमिकटै न अप्रेग ममसरतेन प्रथम ही त्यागि खसाम निभेग नतरतू वचिहे
नही ॥ २३ चौपई तासु वचन सुनि प्रभु मुसुकाने तीछन सरि कारि धनु संधाने काटिध
नुधिनिह थष्ट सरमारा अप्रवान पुनि अपरसु डारा रघपय वास्तो मारि गिराए पुनि ८
देवानिसकनहियलागा तीन वान ते ध्वजा विनासा अपर धनु थले धावा चाप्र पांच।
रा॰ ५ वानको निनमारा लगनन पाव वीचहीदारा तासु काटि धनु अवनि गिरायो अपरध
नुथले सो पुनि धायो सो अप्रभुन काटि गिरायो अपरसरस चले हरि पे आयो पट्टिस परि
घनसधारि धावा सो सो प्रभु माहि काटि गिरावा नवरथ तेउन रैयो मति मूढा खडू पा
णि गहि मरु आरूढा चल्यो छिम पाहि क्रोध अभंगा जिमि पावक परस्व लइ पतंगा
आवनहीं अवलि निलसमनतास काटि गिरायो हरि महि आस ॥ १४ छंद हरि काटि डारे
थडगमाहि वर मिरि तिल सम तासु के तिहि मार वे कहय दूली ने सहे कदु वहु जासुके
लोथिन्हानेच धउधोग प्रभु को रुकमिनी भय पाइके हरिखर पापे गिरपरी आतुरभी
रुचिन अकुलाइके ॥ दोहा बोली वचन विनीत गुनरदेव देव मम नाथ हुनोगीखर
जगतपनिम्भानव धोजन नाथ ॥ २६ सोरठा भयते कंपित गात मुपसु क्यों हियसोच

186 A

भर दुखिन हि हृदय अमात परी विकल हरि चरणा पर १७ चौपई देखि दसा करुणानिधि
तासू मारन कीन्हा गीमति आसू तासु वचन करि क्रोध्यो नाही मरन सरिस कीन्यो हरि वा
ही तासु ग्रद्ध लेह हरि तिहि काला वपन कियो अप्रतिरूप कराला सिखा स्नान धरि तिहि सिर
माही आर्द्ध मोछ रा बिकरि ताही इतने में हलि धरत हथाए परसेनार लेके सुखपाए
भानन कर रुकमी कह देखी रथ सेंव धो कुरूप नबिसेखी मरण तुल्य तिहि हेरि कृपा
ला वेधन छोरि दियो तन काला बोले वचन उचित सत कारी अहो तात यह अनुचित भारी
अनिज कुल उचित करी नहि ताता सुहृद लीस मुंडन जन ज्ञाता मरण समान दंड प्रभु दी
ना वहीं येन यह न चापि अघ लीना पुनि रुकमिन सो कह तव भाई लिये नीत कहु अनिसु
खदाई हे साध्वी तुम सील निधानू मन जनन कफूक असत्या आनू निरख आननि जि विकित
रूपा लह सुमद दुखानि जहन अनुरूपा सुख दुख जग हा तानहि कोऊ जो न सकरे लहि त
स सोऊ १८ दोहा लहु भी वयह जगत महु भिन्न भस जाविधि कीन ग्यानिल हे खन यास
सो सोचन करहि प्रवीन १९ चौपई पुनि भ्राता सन कहयह दीनी अहो तात तुम कीन अ
नीती वेधु करे वेध लाय कक करनी तदपि वेधु वध ऋतिनहि वरनी दीजे त्यागि हो ब यु
त वेधू निज अपमन कसरि समरं ग्रेधू नहि मारिय जो निज अपमारि ऊ जनन मप्र जे
तसो कहियभ रिऊ पुनि रुकमिनि प्रति बोलेवानी हे देवी यह विधि कृत जानी छ
त्री धर्म धोर अतिभारी रथि अवि घाता ऋति तिनि रधारी जाहि मान भाता को भ्रानू करे प्र

श्री भा
९२८७
187

चार प्रचारि निपातू घोरि धर्म यह विधि नेकीना २ पापरोग दहन कौ हम हीना पुनि भ्रातास
नकहहु भाई सुनियमात यह बचन सुहाई सुनहारा धनराज समाजू इनके हेतु का
नत जिलाजू मारत मरत मे रमतिहीना नहिं समुझित भलि मे रमलीना तद्यपि हम हि
घटे नहिं श्रैसो कियो नात अनुचित तुम जैसो पुनि रुकमिनि सो कहह जदुनायक बचन स
त्यनि के हित लायक सकल भूप कौ अति दुखदायक बंधु तुमार अघन को नायक
तासु भद्र चाहहु मन माही यह तव बुध न सम्यक आही २० दोहा कुमती कूर कपूत सठ
कायर कलमल गेह तासु चहत कल्यान तुम ध्यान जानि करि नेह २१ सोरठा जो सब को
दुखदेत बंधु होइ किन मातु प्रिय तासों करै जु हेतु सो अविवेकी जानिये २२ चौपई नर
कहं मोयह मोह अपारा माया कल्पित सब संसारा शत्रु मित्र जे भाव अनेका मानहिं
तिन्हि नके अविवेका एक आत्मा सब घट वासी अग जग जहं लगि है जन दासी नानाले
बहिंमकै प्रानी एक निस्चा करि भिन्न मिदमानी ते बहो घने दै करि जानी शत्रु मित्र अपौ
यह जग नाना त्रिविध मात पिता पित सब काला फिरै जीव यह जगत विहाला तासो श्र
तम बुध नहिं लहई याते जनम जनम यह मरई देह वियोग योगि नहिं याही जनुस
तौनि भ्रम मन माही पंचभूत यह रचित सरीरा नस्वर तुछल बहिं मतिधीरा आतम
सबतें भिन्न रहाई नहिं सो लिपत रहै सबठाई इन्द्रीद्वार क्रियाको देत एक आतमा
सकलनि केतू है प्रतीत आतम की जानिय कैसे करि तिहिं भिन्न बखानिय मोरमोर

187 A

सबकोयहकहई कहोभिन्नकैसेबह अहई इमिसंदेसकरैजोकोई ताहिकहत अैसेतिहि जोई
रूपवघुहोऊ है जिमिसाचे एकअरकविनु अहे प्रसाचे २३ दोहा रवसकासनेसत्यसेरू
पवघुएहोऊ तिहिव्यतिरिकनसत्यए निश्चैमानहुसोऊ २४ सोरठा पांचभूतकोगेह इंद्री
अरूकारजसकल चेरदोषअरूनेह चेतनकेआधीनसव २५ चौपई जैसेरविनभक
रैनिवासा सवघटिसवतेभिन्नप्रकासा अैसेआतमकीगतिजानू सबमेसवतेभिन्न
प्रमानू जन्मादिकयहतनकोधरमा नहिआतमकछुगहेनकरमा अरूबालमेजुवा
सयानो भयोवृधिमेयहसवजानो होतप्रतीतआतमाकेरी जोइमिकहैसंसयहियहेरी
ताहिकहतदृष्टांतअनूपा सुनुगेहोइसुघरसुभरूपा इंदुकासाजिमिघटिसवजानै घ
टइनघटेसुवेदवषानै कलानासकूहूतिथिआई भयोचंद्रछयकोउनलषाई तिमिज
नमादिसकलविकारा आतमकहतनपरमनिरधारा जिमिसोयोपहपुरूषअयाना
स्वप्नमांऊभोगेफलनाना सत्यभोगनहिहैतिहिपासा सत्यसरससवकेरैविलासा अै
१ सेअवुद्धिपुरूषजेकोई विषयसत्यकरिभोगेजोई २६ दोहा अससनसत्ययहमानिजोभो
गेभोगअनेक तेभवनिधिपुनिपरैतजैनजोअविवेक २७ सोरठा तासोयहसवसोक
अहैसकलअसोकृत तलसानकरिमोख सोकछेदचितस्वस्थकरू २८ चौपई इहि
विधहलधरग्यानसुनावा सुनतरूकमिनीअतिसुषपावा वेरत्यागिमनभाआनंदा
सुनिप्रभुवचनसुभगसुषकंदा रुकमीप्राणमात्रअवसेषा वलहतभ्यामनभंगविसे

श्री॰भा॰
१८८
188

या रुक्म बांधि बलदेवनै छोरी अनिरुद्ध भयौ को धन हि घोरी निज विदरूप सुमिरम
न माही कुंडिनपुर न गयौ पितु पाही निज निवास हित नगर बसायौ नाम भोजकट ता
सु धरायौ करी प्रतिग्या चलि नीबारो भूप सभा विच वचन उचारो जौ निरुक्म रुकमि
निहीं आनो तौ यह पुर फिर करौं पयानो ना तरु नहिं यह पुर पग धरउं सत्य प्रतिग्या
हें न पकरउं यह तें अपर निवास बनाई रह्यौ मरद न हसो सुख पाई श्रीभगवत जौ तस
व भूप सें आयु रुकमिन अनुरूपा पानिग्रहण कीन पुर आनी यदु ग्रह ग्रह उतसव सु
ख घानी नर नारी सज सिंगारु भूषण वसन परकि मन हारु मंगल द्रव्य मेट वि
चि नानां लेले रहि वसन मन मानां पुरी द्वारका अति सुठि सोभा देषित मुनिजन को मन
लोभा ॥ २९ ॥ छंद ॥ मन देषि तें लोभा अति सै सोभा ग्रह ग्रह प्रति सुषमा छाई सुभ केतु विताना
अंकुर आना सुमन माल चहुं दिसि लाई प्रति द्वार धराये कलस सुहाये रंभा खंभ लगाई
स्याये सम भूपा जग सुखरूपा मनु बैकुंठ चन छाई ॥ ३० ॥ तिनके मंदिर धाम धुप सु अ
धा फिर हिं चहूं दिसि सजत नहीं तिन मरकत वीथी सुभ गति सी ची चलत रहा द सुगंध म
ही कुरु सृंजय आदिक अपर नृपादिक उमग्यो सुर उर मात नहीं सुष संभ्रम भारी पु
नि नर नारी लख्यो निना सु नहिं जात कही ॥ ३१ ॥ सुनि रुकमिन हरनो मुनिमुष बरना इति
उन गाथे सषी सवै अति विस्मित माना हरि सतनाना नाचरि तनसु मैं मिल म्व वाणत वे सो
सौ मे सुहानी अति सुख चहानी वर निरखें के कंम निधारी निरख्यौ निजन यना हरि मुख

188 A

अथनारमासहितजोरीप्यारी दोहा देषिरूपउतसवसुभगनरनारीसवकोइ रमा
सहितआनंदघनदेषिमहासुषहोइ ३३ कहेआठवरदोहराशुभगछंदषट्जानि
वहुरसोरठाआठसुभसोसवसुषकीषानि ३५ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कं
भाषानिवंधे रुकमिनीविवाहवरणनोनाम चतुपंचासतमोध्यायः ५४ दोहा रूकम
तनयप्रद्युमनवरजनमनहीतिहिकाल हरिलेजैहैदनुजपतिसंवरनामकराल १
ताहिमारितियसहितसोऐहैपतिनिजगेह पंचावनकेअध्यायमहिकथाकरतक
रिनेह २ पुत्रहानिअरुलाभपुनिसंवरमरणप्रसंग सकलजीवहितकहतमुनिजे
नतजनतसुषसंग ३ चौपई सुतदाराधनधामसुषप्रदहेवहुदोषजुत यातैतजिसुषका
म ऋस्नभजनतेअमितसुष ४ चौपई वोलेमुनिहेभूपसुजाना ऋस्नकथाकल्याननिधा
ना रीछराजकंन्याकरिब्याहू पीछेभयोसुभगउतसाहू प्रथमहिसुअनरूकमिनीजाए
पीछेनामवतीहरित्याए तापीछेसंवरकहमारी ऋस्नसुअनआएसुतनारी सोप्रसं
गअवसुनहुनरेसा सुनतिमिटैकलिकलुषकलेसा रिसकरिशिवजोकामजरावा
सोइतिआइजनमफिरपावा ऋस्नवीजयुदारेसोआई रूकमिनीगर्भजनमउनपाई
नामप्रद्युमनस्वरूपउजागर पितासरिससोसवगुनसागर संवरनिजअरुजन्मसु
जाना हरिलैगएउजुमूढअयाना वालकलैजलनिधमेडारी निजग्रहगमनेउहियसु
सुषधारी सोहरिवालमीनगिलिगएउ दैवयोगतेहकोऊकभएउ कौऊकमीनव

श्री॰भा॰
१२८५
189

जीवनहारा महाजालतिनसहितपसारा नामहिमीनवडेवहुजाती सोऊवाझजिनवा
लनिपाती सुंदरमीनपीनतिनदेषी हेनपयोगभोगतिहिपेषी सोसंवरनपकोलैद
एऊ तिननिजपाकहेतुतिहलहेऊ नाहिसुआरशस्त्रलैछेदा उदरनिहारभयोति
हिषेदा ५ दोहा अदभुतवालकदेषितहसोहरष्योसुषपाइ लैदीनेमायावतिहिलो
नैउनहरषाइ ६ चौपई महांनाहिछलनारदआए कथासकलतिहिकहसमुझाए
वालकजन्मनलसवगाएऊ मीनउदरतिहिविधवरआएऊ मायावतीकामकीनारी
रतितिहनामसुभगसुषकारी पतिवपुवस्योमानिदुषपावा मायावतीनामसोइगावा
अगिनेजन्मनामरतितासू सोसंवरसुरकेरहपासू संवरकीसोकरैरसोई निजपति
जानिसुषीमनहोई अतिसनेहतेइसिसुमेकीना पालनाडिसेवामनिदीना थोरेका
लऊमसुतवाढा नवयौवनगुणगनिअतिगाढा कामदेवनिश्चयतिहिजानी हावभा
वपतितिपहिचानी स्यामसरूपकमलदललोचन भुजाप्रलंवपीनदुषमोचन अ
नीडीडारहितहासरसदानी भकुरकटाछविलोकनिवांकी सुरतिभावगतिउनति
हितांकी तासुजानिगतिलऊमकुमारा वोलेवचनसुमतिआगारा अहोमाततनवग
तिविपरीती मातभावतजिकामिनिरीती रतिपतिकेसुनिवचनअनूपा वोलीवच
नसुपतिअनुरूपा ७ दोहा हेप्रभुतुममहोलऊमसुतसंवरहरितिहरिआनु मैमायारति

नाथतुमकामदेवजगजानु ८ सोरठा हेपतिमहअतिदुख मारहुनिजअरिप्रबलअति
मायासतकरदुख हनियेनाथहदेवमीरे ९ चौपई मायासबजानैयहमूढा किहिविध
हनोअसुरमहरूढा इमिजोकहियसुनौममबाता तुमअघिलेसअनजनत्राता कुररी
इवतवमातुप्रवीनी पुत्रसनेहाकुलअतिदीनी धेनुवतसबिनुजिमिअकुलाई तिमिम
वमानसोचअधिकाई इमिकहिमायावतीप्रवीनी क्रस्नसुअनकहविद्यादीनी नाममहा
मायातिहिकेरा क्रस्नसुअनकहुदियतिहिबेरा सकललोकमायाहेजेती नाहिदेविभा।
जेसबनेती क्रस्नसुअनसंबरढिगआई सेयुगदेहिमूढमोहिआई कहेबचनअतिक
ठिनकठोरा रेरेदुष्टदेखिबलमोरा ऐसेविषमकहीबहुबानी सहिनसक्यो संबरअभि
मानी जिमिपन्नगपरनररदवजाई घोरक्रोधयुतआवतधाई अतिअमरखयुतलोच ६
नराते गदापाणिसोनिकटसमहाने गदाभ्रमाइजोदिकरिभारी आवतक्रस्नसुअन
पैडारी गदाचलाइनाहकियघोरा असनिपातसमपरमकठोरा १० छंद कठिनाहप
रमकठोरसंबरगदाहरिसुतकोहनी तिहिआवतेनिजगदासोंगदाकरिडारीकनी अ हू५
तिशीघ्रसौंजदुनाथसुतनिजगदातिहिउरमेहनी हुगयोअंतरध्यानसठमैरचितव
हुमायाठनी ११ छंद अन्धचंचदिगयोसठआकासबरखैजुअग्निचहूंपास पुनिबर
खिअतिसेबालुजदुसुअनकरिउविहास प्रद्युम्नतबधारिधीर तिमिरीसविद्याबी
रतवभयोसुभगप्रकास अरिमममभयोसबनास नेदबानगुह्यकडारहइनिकियोस

बा॰भा॰
६२७॰
190

वसे धाए गंधर्वसबबहुबरषि इनदूरकियआकरषि पैसाचउनबहुकीन इनछनक
महहुरिलीन उनउरगकियअतिवेर इनतुरतकीननिवेर १२ दोहा अमितनिसाच
रकीननेइ इनिकाटेछिनमाहि अपरकरीमायाबहुत एकऊलगीजुनाहि १३ सोरठा
तीछनअसिकरिधार लछमनअनअतिक्रोधयुत नाहिप्रकारप्रचार सिरकाटिउभूष
णसहित १४ चौपई संवरअसुरहन्योयहकाला सुरनरमुनिसुषलहेविसाला विबु
धनहरषिदुंदुभीदीनी सुमनवृष्टिहरिसुतपैकीनी तियलैगगनपंथघरआवा वंदीज
नमिलिसुभजसगावा प्रभुअंतहपुरतियगणवृंदा वधुसहितनतहगोसुषकंदा जिमि
घननद्युतिएकहीसंगा उभरेनभपथसुभगसुरंगा जलदस्यामद्युतिरूपअनूपा पीनबा
हुकटिनटिअनुरूपा बहुप्रलंबनयनअरुनारे सौरभचिकुरसचिक्कनकारे वदनसरो
जमंदमुसुकानी अलकमधुपनसुषमाषानी लछमनामिनियगनसकुचानी लखि
तहेंग्रहओटदुरानी पुनिछनएकरहीनिहिदेषी कंचुकविलसितएलष्योविसेषी
वधुसहितलषिद्विगसबआई सकलअनंदकेहियछाई तहांविदरभसुतालषि
नाही निजसुतनसुमिरमनमाही पयस्रुतभयोपयोधरताल देविरूपगनिव
रनविलास कीनवसनरवरयहकास अहोरूपयहप्रभानिवास १५ दोहा अहोभा
गनिहिगरदनेप्रगटभयोयहवाल अदुनसोभाषानिवपुरामवनयनविसाल १६
सोरठा धन्यसुभागिननारि वडेपुन्यपहेपतिवरी विधिगतिकोलषिपावि ममसुत

190 A जनमतकिनहरयो १७ चौपाई भागजोगजोजीवतहोई इतनौवयआकितभयोसोई है
गौरंरसरिससवरूपा इनकैसेकरिलरयोअनूपा चलतचालुनवीवपुगतिअंगा रुचिर
अविलोकिनहसनिसुरंगा अहैअवस्पननयसहमोरा माहिदेषिमनप्रीतिनथोरा षिन
षिनप्रीतिहोतिलषिपाही कुरकतिवामभुजासुभचाही इहिविधकरिविचारमननाना
रुकमिनिनिजसुतसमअनुमाना इतिनेमोजरेवकीनेहन आहितमातुपितुशत्रुनिकं
इन आइगएतिहिठाममहीसा हरिभगवंतअषिलजगईसा जानतअषिलवातसव
आए नहिवोलेवैठेचुपचाए सुररिषिआइकहीसववाता सोवरवधवौनकुविष्याता
सुनिआचरयभयोसवकाहूं अंतहपुरतियमनलहलाहूं नस्नसुअनवहुवर्षनपाछे
श्री० मिलयोआनेदलहआछे श्रीवसुदेवदेवकीरानी मिलीअंकभरिभरिसुषमानी रुक्म
देववलजूवहुभांती मिलेसुअनकहप्रेमसुहाती पटरानीअंतहपुरजेती मिलीसुअ
नकहपुनिपुनितेती रुकमिनिहियेसुषमयोनथोरा इषिवधूसुतजिमिघनमोरा पुरि
वासिनजानीयहवाता करहिंअसीसहरषमनराता अहोदैवगतिप्रवलप्रताप नस्नसु
अनआएचलिआप अतिसुदरताअवधनिहारी रुक्मसुअनसवकहसुषकारी १८
छंद सुषकारहरिसुतसुभगअतिसैनिरषजननीतासुकी पतिसरिसरूपनन्यूनरंचि
कअमतचितमनिजासुकी हरिभामिनीतिहिरहसिदेषितभजीमनसुविलासुकी
सोनहीअचरजमातिदेसव्यानमनासिजुगातकी १९ जिहिवरणश्रीनहितजित

श्री भा०
१२६१
191

रंग

रंच कछु स्मर करुणासिंधु को निहितनयसोइ तिविंवसोभाषानिसवदुंघकंद्को कोऊ
नामलेतसुभावनेहिलिमिरनकरे कोऊ तासुको ततकालमननिहिछुभिन्हे विषयाच
हेतजिलानुको २० दोहा कृस्नसुअनकोरूपलखु जेतिहुं पुरनरनारि सहसामोहित
होइसव धीरजमनसकेनधारि २१ सोरठा जासुरूपकोरेषि कृस्नप्रियासेभ्रमलही अप
रनारिनिहिदेषि नेपोनहि चितसंभ्रमलहै २२ दोहा कहेसोरठाचारचर दोहाकहेजेवान
वारि०२यहअध्यायमहिकथासुभगहरिगान २३ इतिश्री भागवतेमहापुराणेदश
म स्कंधेभाषानिबंधे प्रद्युम्नागमनेनाम पंचपंचाशमोध्यायः ५५ दोहा मिथ्यासेकापा
इहरिमनिहितकियउतयोग ल्यायेमनिकंन्यासहितलखिचकेतनयोलोग १ छपनवे
अध्यायमहि इननीकथाअनूप रोष राजेकहुंनीतकरलियपैहेअनुरूप २ कहेप्रथ
सुषवपलअलिकमिनिसुअनप्रसंग अर्थअनर्थनुमानियहुसत्राजितसुषभंग ३
चोपई हतपशशाजितजदुबंशी प्रभुकहमिथ्यावचनप्रसंसी नाहिकानिकरसुतासु
मेला मनिरीनीबहुइव्यनिकेता सुनिमुनिवचनभूपतवबोला कृस्नचरितमहिचित्तअ
डोला वहमदुवंशीसुमतिअगाधू मनिकहतेआईगहमाम्र कंन्यासहितदियेप्रभु
पासू यदसवनाथ कहीमोहि पाही कोनहेतुनिजकंन्याब्याही मुनिबोलेसुनिन
पतिवयना कृस्नकथामिनकेचितचयना रविसेवकशत्राजितजानू परमभक्तिल
यितिनहितमानू मनिप्रसन्नकरिदियमनरीनी उनअतिप्रनपसहितसोलीनी सो

मनिकंठ बांधि एक बारा गयो द्वारका जिहि सुषभारा ताहि दूरते सबहि बिलोका अतिसै
तेज दृसज नु रोका बेलत अछ जहां हरि आहू तहां गये जन जुत सनाए कहन लगे संभ्रम
जुत बानी हम सरमापति हि सुषदानी हे गोविंद कमल दललोचन हा मोहर हे जन भय मो।
चन ५ दोहा हे प्रभु पायन आऊ चलि रवि तव दरसन काज सब के नयन प्रकास की गति
हरि लीनी आज ६ सोरठा निज गभस्ति बारि नाथ हरयो सबन के नयन जन सत्य जानिये
गाथ यह आयो चलनि कट प्रभु ७ चौपई हे प्रभु बिबिध ढूंढ तिहि लोका लषेन तुम कहु
जन बस व औका जान्यो जदुकुल तव अवतारा याते रवि इत कीप गधारा सुनि हरि ज
न निकी बानी बोले कृपासिंधु सुषदानी नहि सबिता यह निश्चै जानू सत्राजित यह है उर
आनू मनि युत तेज प्रताप अपारा जन से कामन करहु कुमारा हे नरपसो मनि संतत
तास रहै तासु ग्रह सुष दरसु पास आठ भार कंचन निति देई लहै न दुषना के हस जेई
होइ अकाल मत्यु नहि तहवा दुष नहि व्यापै मनि रह जहवा एक दिवस सत्राजित पा
स बोले जदुवर रमानिवास यह मणि नृपति योग तिहि देहू सुजस सुहावन सब जग
लेहू अति लोभी मणि दियो न ताही प्रभु प्रताप गुन सुधि नहि जाही सो मणि एक दिवस
हि भूपा पहिर प्रसेन कंठ निजरूपा हय चढि गयो बन मृगया हेतू जहं बहु जेतुन केर नि
केतू ८ दोहा तहां आइ एक केहरी हय समेत तिहि मारि मणि लै गयो गिरि गह न सो सो
इ उपाय बसारि ९ सोरठा तहां रीछपति आइ मणि हित मारयो सिंह कहं लै गयो सो

श्री॰भा॰
९१९२
192

सुषपाई करि दीनी सिषु रूमका ॥ ९ ॥ चौपई बीता दिन प्रसेन नहि आवा सत्राजित अति
से दुष पावा करन लाग निज ग्रह अस बाता बांध कंठ मणि गो मम भ्राता कृष्ण मारि
तिहि मणि लिय आहू सो कहु हरि एउ परम सताए चली बात इनि उनसन हुं ओरा सुन्यो
नाथ अपजस जह घोरा अपजस दूर करन के हेतू तिहि यो जन कहि कपानि केतू चले
लवाइ लोग बहु संगा षोजन गे चलि गहन अभंगा मर्यो प्रसेन सहित हय देषा षोज
सिंह करल है उ बिलषा मृगपति विधौ जानि सबकाहू चले षोज लै मृगपति पाहू त
षत कगिरि ऊपर चढि देषो मृगपति मर्यो सवनि तिहि पेषे रीछराज कर षोज नि
हारा मृगपति इन मारि उ निरधारा रीछराज पग षोजत आगे चले जात प्रभु मन अ
नुरागे तहा जानि इक बिल लषि भारी भयाभयान क अति अंधारी रीछराज तहस
हम सुवास प्रभु पैठे इकुले तह आस ॥ ११ ॥ दोहा प्रजा सकल तंह राषि प्रभु गएउ गुहा के
मांहि तह मणि रूमिक पालने हरि देषी सिसु पाहि ॥ १२ ॥ सोरठा हरन चाहि मणि नाथ
बरे भल सिसु ढिग जबै बाहत कियो सनाथ धाहि पुकारी बिकल अति ॥ १३ ॥ चौपई न
रसरूप तिन ते नहि देषा भई भीत हिय कंप विसेषा धाहि शब्द सुनि अति रिस धारी
धाएउ जामवंत भट भारी आवत हो किय रण अति भारी नहि निज प्रभु निज हृदय बि
चारी प्राकृत नर पुनि जनाथ हि जाना दंद युद्ध अति तुमल सुदाना आयुध नरू बर उ
पल अनेका लगे बिबिध बिध पचे नपका उभय सेन जिमि आमिष हेतू लरहि पर

192 A

सपरगगननिकेता मुष्टियुद्धपुनिलरअपचारी वीसग्राहरिनकियतिनरारी वज्रपातसम
मुष्टिप्रहारु सहयोरीछपनिवारहिवारु सिथिलअंगवंधनम्पातारु वलिघटिग्योभाहिये
हरारु विस्मयचित्रवोलाइमिवानी कोमोसरिसवलीजगजानी इमिविचारमनप्रभुसो
वोला निजहियकीमतिच्चरणअडोला जान्योमैतुमत्रिभुवनईसा पुरषपुराणविख्जग
दीसा संभवपालकरहुसंघारा एकअनेकसकलआधारा २४ दोहा जान्योमैंहेनाथतु
मइष्टदेवममराम नाविनुकोअैसीकरै स्वनिकृपालगुनधाम २५ सोरठा देवककुटीवे
क छुभितनक्रुरुषव्यालवहु वारधयरथरकंप जनसोथोअवनाथमोहि २६ चौपई
विप्ररूपधरिप्रभुवहआयो पाहिपाहिइमिवचनसुनायो सपदिपधारिनिउहरषाई
प्रभुतिहिअभयकीनमुखपाई तिनिपुनिकहीसनुप्रभुकीजै वहुतकालहरिअसमोहि
दीजे कीनसेतपुरलंकाजारी सहजरोषरणरावणमारी लेश्रीनगरपधारेआए
जानामैनिजनाथप्रनाए इहिविधरीछराजमवजाना हरितववोलेकरमनिमाना निज
करकंजप्रथमतिहिमाता परस्योरीनवंधुजनत्राता परमकृपालभक्तिभयभंजन मंद
हासजुतकहनदुनंरन अहोरीछपतिमेइहआयो कारणतासुनितोहिसुनायो यहम
लीकारनमोकहिलोगू मिथ्यादोषलगावहिरोगू सोवहिरोगमिटैमणिपाए देउतिहै।
जिनदोषलगाए वचनसुननहरष्योरीछेसा हरिषतचितसिरधरिउनिदेसा निजकेन्या
प्रभुलायकजानी मणिजुतनिजकरअरप्योआनी गुहाद्वाररावेजेलोगू प्रभूनफिरैतिा।

भा॰
२८५
193

नकहिभासोगू २७ दोहा रहेतहासबलोगमिलबारहरिवसप्रमान गएपुरीफिरसोकयुत
मुख्यअतिभयोमलान २८ सोरठा सुनीहियकीबात पतिपुतअतिसेदुखभयो भईबानपुर
ख्यातगुहागएप्रभुनहिफिरे २९ चौपाई यहसुनिअंतहपुरनरनारी पुरीमध्यपरिजनस
बझारी सत्राजितकहआपहिलोगू अरेदुसरसबकहहरियसोगू कसमअगगमनहितपुर
वासी फूलिअंबकहसबसुखरासी तिनप्रसारहलिसबकोरीन्ह अहैसठसमुचितमन
कीना आमिसठमसहिनवरनारी सबकहसुयशउमगेपोअतिभारी सत्राजितकहसभाम
ठारा बोलपठायोकरिमनकारा जिहिविधमनल्यायेजदुनाथा नपदिगकहीसकल
सोगाथा सत्राजितकहरियप्रभुआए लज्जितचितमनभ्यासनाए लेमनगेपोनिजगेहअ
भामी तिनअघनेभाअवजसभागी अतिअकुलचितलहैनतोषो अतिसेवलीनासुक
रतोषो कौनप्रकारमिटेअघमोरा सबकहमैंदुखदियोनघोरा मोपरप्रभुप्रसन्नकिमि
होई लोकअपदेइजिमिकोई मेंअरीरघरस्वीअतिमरुढा लोभीलंपटमोहिअरूढा
३० दोहा इमिसोचेनिसिदिवसबह दृढविचारयहकीन कन्यादेउकपालकंह मनियुत
गहैप्रवीन ३१ चौपाई औरभांतिनहिममअघजाई एहिनिश्चेनिजहृदयदृढाई सत्रा
जितयहमनअनुमानी निजकन्याअतिरूपनिधानी कहिउरमआपहियुतप्रीती
सुनाईहरिकोसुभरीती नामसत्यभामागुणभरी कसमरेवलीनीलखिहरी यथायोग
प्रभकरिउविवाहू भयोसकलपुरमोदउछाहू सीलरूपगुणललितललामा प्रथमहु

बहुतनवारीवामा तिनहुंवंचहरिकहिवहुरीनी निजकुलंकेकमेटनहितकीनी कंन्यारेम
निदाइजरीना सोतवत्सहमरेवनहिलीना मित्रभततनुमयहमनितोरी कहीब्यंगयहु
वचनमरोरी फलभागीहमहेयहकेरे कहतकटाछवचनकरिफेरे नहिसंतानयहै
कछूतोरे नवधनमालअपाईहैमोरे जोकेपुत्रहोइनहिभूपा कन्यासवधनहैअनूपा
कन्यासुअनपाऊधनमाला यहकटाछकरिकहिउकृपाला २२ दोहा इहिविधकस्य
कृपालप्रभुमनलेआएभूप सतभामाब्याहीभवनेजानिरूपअनुरूप २३ कहेसोरठा
पांचसुभअपरदोहरासात छपनकेअध्यायमहस्त्रमककथाविख्यात २४ इतिश्री
भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबंधे स्यमंतकाहरणंनाम षट्पंचासतमो
ध्यायः ५६ दोहा अबसतावनकेविषेसतधनुबधिभरावंत मनिपैहैनहिलाहुपुनि
अनसरूकामिनीकंत १ पुनिनिमअपजसनासहितअक्रूरहिमनमानि मलिकरि
प्रगटहेषाइहै मनिभाजनहरिजानु २ सोरठा भगवतअग्रअपाभंग सत्राजितकहमुष्य
करिसोइतकहतप्रसंग विफलहोहिफलहरिविमुख ३ चौपई मुनिबोलेसुनिनृप
तिप्रवीना हरिचरित्रसवनितनवीना पांडववातसुनीजरिनाथा लाक्षागृहजरिगयेअ
नाथा अभिप्रायजानतसवआहू नघदिनरगतिकृपाकलाहू कुंतीहितकारगजपुर
स्वामी गएभ्रातयुतअंतरजामी भीषमविदुरद्रोणगंधारी तुल्यपीरतिहिमिलेमुरा
री अहोकसहैवीगतिभाई पावकबरिगेहमसुधिपाई कृतवरमाप्रतक्रूरौरेषी

२४

श्री॰भा॰
६२९४

दुरमति रिपु नारि चाहि सेषी । तहँ अक्रूर रहे हित बहु बाना । कृतवर्मा मुनि याइ सरता । स
तधन्वा करु पास बुलाई । कहन लगे निज मन की भाई । अब मन लेहु दाव भल तोरा । अ
वसर सूके छूट पछोरा । हमहि बिचाइ मान कर भंगा । कन्या दियो कृस्न सुख संगा । सत्राजि
त जीवन मम निवेकेसे । हमहि देइ अस मम नस जैसे । इमि जो मन सकाउ मम आनो । तहँ उपाय ।
सुगम यह जानो । सत्राजित हत मनि तुम लेहू । बद सु यत्ना हु सजनन कह देहू । इमि सो ऊ मिल
तहु भ्रम उपजावा । मूढ सतधन्वा सुनि सुख पावा ॥ ४ ॥ दोहा महा अधी अति दुरमति नाम
सतधन्वा जासु । सो बत सत्राजित बध्यौ लोभहि लोक बिनासु ॥ ५ ॥ सोरठा नियगनवंत र
अपार रहन करहि बिनु नाथ सब । निठुर गनन हृदय सार सत्राजित कहँ मारि सब चोप
ई । मनि लै गौ सतधन्वा सुख पाई । रंच करयो हृदय नहिं आई । पितु बध सतभामा अब जा
नी । करि विलाप बहु दुखमानी । अहह तात कछु कहिउ न मोही । अधम जीव जिन बध की
नो ही । इमि विलाप करि विविध प्रकारा । पितु सरीर को जतन बिचारा । तेल माँ ऊ पितु व
पुधरवाई । गई हस्तपुर दुख पाई । सर्वज्ञ प्रभु जान सब बाता । कहि ऊ प्रिया पितु सधि
विख्याता । अखिल ईस नट धपि नर लीला । किमि मारयो पितु परम सुसीला । बर मानिज
लहु जन भरि नैना । प्रिया बुझाई कहि बर बैना । आन प्रिया तुम निज पुर आए । सतधन्वा
बध हरि मन भाए । मन को हरन हार मति मूढा । हनौ बेगि यह मर आरूढा । हरि उद्य
मर यातिन जाना । बिनु मारे न नन मे भगवाना । प्राण लोभ मगिकि के पिन गाना । कृतवर

194 A

मापह म्यो अकुलाता अब का छु करौ सहाइ हमारी बचै प्राण मम होए उपकारी ७ दोहा

नाम काम सनकावहु मै नहि प्रतिकूली होऊ करि अपराध जु ताम्सु कारि कहो लहै सुष को

ऊ ८ सोरठा कंश सहित परिवार ताम्सु देष करि नास गो जरासुअन बहु बार विरथी

एकलो घर गयो ९ चौपई कृतवरमा उतर जब दीना म्यो अक्रूर गो हिमानि हीना तुम क

छु करौ सहाइ हमारी अहो मित्र यह संकट भारी कहे अक्रूर कहो मैं साषी प्रभू विरोध मी

च सिर नाची अमित पराक्रम युत भगवंता तासु चरन को लहै न अंता यह जग सभ पालि

बिनासै रहे दूर पुनि सब घट वासै बिधि ईहा जाने नहि तासु प्रभु माया मोहित चित

तासु बरष सात बय गिरिवर भारी ताहि उपार एक करि धारी बिनु श्रम दिवस सात प्र

नि राषा देषि चरित सुर मुनि जय भाषा अद्भुत कर्म भक्ति भय हारी हरि अनंत बलह

लन मुरारी बारबार बंदौ पद तासु कृपानिधान अंत नहि जासु तासन को बिरोध करि

प्रानी प्रभु महिमा जिहि रंचक जानी इहि बिध जिह अक्रूर सुनावा नहि आश्रय कत दू

इन पावा तव अक्रूर पास मन राषी सत धन्वा भाज्यो इमि भाषी नहि सहाइ कीना तु

म दोऊ मन ग्रह धरहु मतन करि सो ऊ अंत नौमी प्रभु सबठाम प्रेरित महि मन धरि ऊ

सुधाम १० दोहा सत जो जन गामी तुरंग सो निज रथ महलाइ तापरि चढि भाज्यो तुर

त प्राण बचै इमि भाइ ११ चौपई गरुड ध्वज रथ जोरि कृपाला चढे भ्रात युत है नरपा

मं ला श्रत्राजित को मारनि हा तापी छे धाए सुषसारू मिथुलापुर उपबन महि जाई ध

श्री॰मा॰
६१९५
195

केअस्वमोकेदुखपाई अस्वत्यागिपायसरासोधावा ताहिदेखिप्रभुकेमनआवा निज
रथत्यागिचलेप्रभुपायन चलेसो प्रीतिहितबधकेचायसो तोइधनेच कमाहिकरितास
सिरछेदनकियपरमानिबास तसुबसनहेराहरितवही मनिनहुलसोरेखिरिसिसब
ही कहौ आइबलिपैजनत्राता वथाहनेउसनधनुहेताता नहिमनमिलीताहिकेपा
स नबबलिकहनलोहुपुरआस सोमनजाइ कनहू धरिआयो सनधनुयहमोरमन
भायो मैंनेहोमिथुलापतिपाही मिलिअहौ औसुरपुनिनाही अस कहिमिथुलापुर
पगधारा लखिमिथुलेसमबौसुखभारा उठेबिरेहुनृपनहरखाई मिलेघनीविधते
सुखपाई विविधप्रकारउपायजेदीना इन्हाबहुप्रकारपुनिकीना रहेचर्यकछुनेह
नदुनेरन पुरबिरेहुमहसुनिकहन नेहदुरमोधनम्पोहिनमानी गरापुरसीध्याग्र
मिमानी २२ सेहा रथचढिउन श्रीप्रभु गए द्वारकानाथ शतधनुबाधिमनहि।
मिल्यो कहोप्रियाप्रतिगाथ १३ चोपई करीअस्वसरवीतिपरसपाला वेरविहतविध
सकलबिकलाला कनवरमात्रकूरसुजाना सनधन्वाबधिसेकसुनकाना श्रीपु
रनेभाजेतेराजन मनिहरिवेकह प्रेरकभ्राजन नहकारकजान्योअसिजाई गयो
गाइनीसुनहरखाई प्रभुअसलाकरिसचकजानी इमिचकूरगयोसहमानी कृतव
रमाहरिकोइमिमाना भगनपरपामीभगवाना भोज्योग्रपेछितरथभयमानी कि
मिप्रभुकोवेरेसहप्रानी नेसर्वनरसिगुनधानी बसतिद्वारकाजनसुबतानी वा

नारसीगयो॰अक्रूरु भयो॰आरिएकारका क्रूरु कोऊ कहइमिभाषहिमतिहीना पूर्वकिया
नमनजिनहीना मुनिनिवासजामहि सबकाला कस्मरेव अतिपरमकृपाला बसैरमा
पतिजिहिपुरमाही तहां॰आरिएए कछुननाही तहं॰अक्रूरगयेकाहानी बसैजहांप्रभु
जगसुषदानी अपरमतांतरपुनिताहिठामा कहतकछुकमुनिवरसुषधामा एकसमै
कासीकेमाही वरषाभईनहांकछुनाही जवइतनेसुफलकसुतगएऊ कासीपतिकं
न्यानिहिदएऊ १४ दोहा नवहीवरषेउमेघवहुसुषीभएसवलोग अतिसुरभिसजुसेप
दालगेसकलसुषभोग १५ सोरठा महिमाअमितनिहारि नघपिसव॰अक्रूरकी आवन
हीसुषकारिसुन्यो वधसुषकेवचन १६ चौपई नघपिलोगनमानहिवाता मनिप्रभा
वमानहिजगख्याता यहजीयमानिसेनसुषदायक अक्रूरहिवुलाइजदुनायक व
हुसनकारकीनसुषमानी मेरमुसकवोलेमदुवानी सकलजीवमनकीगतिग्याता
हरषितचितवोलेजनत्राता हसिवोलेकारनकातासू महाभागवत अतिप्रियजासू
जोमनिपासहिरेउमेतवही तदपिनराषेचाहनकवही वोलायहमनिसहितसुहावो
वहलषिअरि॰अतिसेसुषपावो अहोदानपतिपूछेवाता संतकहहुसकुचहुजनत्रा
ता सनधन्यामनिहैगोतीही सोतोषवर॰अहेसवमोही सत्राजितकेसुतनहिंको
ऊ दुहितापनपावैसवसोऊ क्रियाकरमकरिबवधनजेतो रह॰अविसेससुता
लहतेतो यह मरजादाश्रुतिमनिगाई कंन्याधनपावैसुषपाई औरनपैजोमन

195 A

श्री·भा·
१२६६
196

यहजानी देवोकहउननताहिंसुहानी भलीभलीमनरहीसुहाम इतिउनकितहूंसुखपरिना
म १७ दोहा तदपिसुनिमैदानपतिइमिमनकारणजात नहिमाननतविस्वसमम बलहा
ऊसेभ्रात १८ सोरठा धानेतुमसुखमानि मणिवरसवनरिपायो सबकोयहहितनानि
श्रानहुमितवहहेधरी १९ चोपई तुमकाशीमाहिंजाइप्रवीना मखबहुरियोदानवहूरी
ना कंचनरचीमखविबहुभांती पात्रअनेकजुपुरटसुहानी चामीकरिकेपटाअनेकारचिना
करितुमसहितविवेका निजमनमानिअनेकप्रकारा अमितभोतितुमरचिजिव्हासा पा
हूरसपुनविंजनपुनिनाना पायसनानाविधपकवाना अमितवारमहदेवबुलाई सो
जनदियोकसोकिमिजाई वसनधेनुविधवतकरिपूजा इरहेवसमजानिंदूजा ऐसे
अमितवारतुमकीना कासीवससवकहसुखदीना वहविधिसामवचनवहूदीनी क
हीनाथअनिसेकरिप्रीती सुनिप्रभुवचनेसपरिहिभूपा सुफलकतनयमानिसुखरूपा
वसनतपटीमननिहिपाल बोल्यदीमनिपरमप्रकास प्रभुकहसोपिरइतिहिका
ला देखिसानजननभरतविहाला मिथ्यादोषनासकरिनाथा मनितयपुनिदीनीतिहिहा
था २० छंद तिहिहाथदेमनितबदसकसवविमलजसससवजगछाये जेहिसुनहिगाव
हिवरनअरुसुनतपरमपावनमितनये जेमिथ्यादोषनिवारहिनिजमननापत्रयुतिन
कोगयो श्रवहहरनमंगलकरनपावनसुयससवजगकहमयो २१ दोहा हरिचरित्र
कलिकालमैमलहरजनरंजनरूप श्रवरनकोइहसुरससजनगममुनिवरनीसुखरूप २२

ने

195 A

कहे दोहरा सातवर अपरसोरठा चारि एक छंद वरन्यो विमल यह अध्याय मंझार २१
इति श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा लिखते स्यमंतकोपाख्याने सप्तपंचाशत
मोध्यायः ५७ दोहा अव वपंचास अरु आठ को यह अध्याय अनूप कालिंदी ते आदि वर
पांच व्याह अनुरूप १ सत्या भद्रा लछमना न कन्या शुभ जानि अपर मित्रविंदा कहे पांच
व्याहि सुष वानि २ एतनी कथा पवित्र सव वरने तमुनि नृपपास सुंदर यह अध्याय महि
सुनत होइ अघनास ३ चौपई हे नृप एक समै भगवंता इंद्रप्रस्थ गे जन सुषवंता पांड
व कहु देषिन हित हेतू सात्यक सहित नाथ सुषकेतू पांडव नन मन लषि प्रभु अपिलेसा
उठे सकल इक वार नरेसा जिमि गनि प्राण फेरि तन आवा हरिहि हेरि हिय मिहरष छहा
वा जथाजोग मिल सव कहु नाथा रूपा रहि कर किदो सनाथा सानुराग प्रभु वदन
निहारी परमानंद लहे सुष भारी वधन कह्यो किय आप प्रनामा समक हं अंक भरे सु
ष धामा लषि ते वरि नवे जग दीसा सुष आसन आसीन महीसा श्रीउ जुत अकस्मात ह
आई वंदो चरन कंज कर लाई सात्यकि आदि पाइ सनमानू वैठे सुषद सु आसन जा
नू प्रिथा आदि अति सहित सनेहा मन लेने न जनु नेह सनेहा अंक लगाइ मिली सु
भरी ती वैठी हरि ढिग मनि करि प्रीती पूछी कुशल प्रीत वढु भांती उन पूछी जनक
दु कुसलाती अति भरि प्रेम सहित अकुलाती गदगद कंठ कहित सकुचाती दोहा
नाथ कुसल तव ही सकल जव देषत तव पाय भक्तन को भय हरन हित प्रगट होत सत

श्री भा
११६०
197

भाय ५ सोरठा सब घट व्यापी ईस सकल जीव कहँ सुहृद सम नवावहि जग तीस भ
गति देहि वसि हृदय हरत ६ चौपई धर्म सुअन कहँ हेम उनेरा विनय करौं हे आनंद कं
दा इह व जन्म सुफल कीको ऊ अनिगारि स्नत पलेषेउ न सोऊ जोगी मन कहँ हर सनु
मारा अनि दुर्लभ को लहि हिउ सुखारा विप्र यास ऊ विन प्रभु मोरा कौन हेतु प्रभु दरसन
तोरा यह विधि नृप सेनन वहु भांती हरि सन कार करन दिनराती सुबस नरहूं नाथ व
हु मासा मन सोचन कोय सकल सुवासा विप्र जिम्मर करि वसन पाओ चढि सुरर
थ पर मनकू पाला ब गारिव धनु करि चाल सुहाये अछ्य तून करि पर छवि छाये ग
ये गहन वन मग याहेतु मग गन आलन करि निकेतु तहाँ सरभ महिषा मृग नाहूँ ग
वय रुरु मृग सुभग वराहूँ मारे मेध्य जीव वहु जाती पढये नृप ढिग सजि रथ पाती पु ९
धा न्र घाव करि स्रम पाए रव तन मान दिगेह ख्वाये तहँ न हाइ कीनो जलपाना ६
नि उन विन मोहि भ्रम गवाना कन्या रक्षि परखि अनि लोनी सुरन रमें अमिअ परन होनी
पढयो मनघार द घय वह कोहै तहाँ सुकरी चित के मोहै गुड़ाके सतां के ढिग नाई पूछत म
धुर वचन सुख पाई ७ दोहा हे कन्या नो कि तरहौ मानत तानन व कौन तहाँ चाहहु चि
तन व अहै सकल कहो तजि मौन ८ सोरठा सुनि अध्रुजीन के वैन कालिंदी बोली व च
न रवी पिता मम अैन नल मीत रस तत रहो ९ चौपई पिता रिवा करम मते जानू प
ति की कहि इ ध्यान पुठानू अधि लई सब वरनन अनेता बरु गुण युत मरून कहन गवेता

नाहिवरोपतिअवरनकाहू स्रीनिकेतुविनुअपरनचाहू कबहुंकहुं प्रसन्नजगनायक क
रिहैनिजदाससोसुखदायक कालिंदीअसिनामहमारो बरौंताहिनहिंअपरनिहारो जौलग
प्रभुरसनमोहिदेई तौलगिइतरहहौंग्रहसेई वचनमासुसुनिअर्जुनआए समाचारस
वप्रभुहिसुनाए कृस्नदेवनहरषधरआसु लेआएतेहनृपतिसुपासु तबहौअर्जुनह
रिप्रतिकहिऊ नगरखंडइमिमनमहगहिऊ तवहिनाथसुरसिल्पवुलाला तिनदाककुर नंवचन
आन खनावा स्वजनहेतुंहवससभगवंता भयेसारथीजनसुषवंता पाइंवचनकृस्नानुकहही
ना सोभानुदमानसुषलीना मानितोयरथहयसुतआनी अक्षयतूनचरमगुनषानी
धनुषविसिखतूनयुतअभिरामा एसववसनुदई सुषधामा १० दोहा मयरथ्याकरिअगनिते
सषाहोनुनिजजानि सभासुभगकराइप्रभुलंबहिदीनसुषषानि ११ चौपई जाहिसभा
मैंकरतप्रवेसा कुरुनृपलषिमनभयोअदेसा जथमहथलथलमहजलदेषी भयोहदय सं
अतिरोषविसेषी पुनितहनेप्रभुविदाकराई सातिकसहितचलेजदुराई पुनिद्वेपुरीद्वार लं
कानाथा निजपुरजनसवभयेसनाथा सुभगमासतिथिलगनसुहावनि नषतवारपा
वनसुभदायनि नारिनकालिंदीसनव्याहू कियोकृपानिधिपरमउछाहू पुरवासिनकह
परमअनेदा अतिप्रमोदहियआनेदकंदा पुरीअवंतीकरइकुभूपा तेहिकेकन्यातिहिपर
मअनूपा दुरजोधनवसतेहिजानी कृस्नविवाहलीनघरआनी निजपितुभगिनीकं
न्यातासु नाममित्रविंदाहैजासु नृपसमाजमेंमहाअतिभारी कंन्याहेतुजुरेअधिकारी नृ

रामा
२६८
198

पहलदेखतहीं।तिहिकाला कंन्यालैगैतकरमरूपाला निजगृहलैविधिवततिहिब्याही
अतिआनंदभासवघरमाहीं २२ दोहा ॥ अतिपवित्रश्रीअवधपुरभूपनगनजितनाम ता
कीसुताअनूपअतिसत्याजांकोनाम २३ चौपई हेनरपवनअतिकरखोकठोरा वृषभमत्ता
तजीतेमोमोरा ताहिदेउकंन्यानिजरूरी परमसुंदरीतिहिगुनभूरी तीछनश्रंगमहाबल
वेना अतिदुरधरमपुरुमपमंता वीरगेधनहिंसकेसंभारी अवनहीहिगठारतमारी
ऐसेघ्रत्रतिहिएकहिवारा जीतेनोकोईइहसंसारा सोनौवरेकुंअरयहमोरी विनुजी
तेनहिंमिलयकिसोरी ताहीनुरेनृपभजिगेदेखी कौनसकैतिहिजितिनृपपेखी सोसुध
पाइरेवकौनेरन ससेनहांकोकंसलनिकेतन वृषभजीतिकंन्याकरल्याऊं सुनिकेमनअति
सैचितचाहुं सेनाबहुलनलियेप्रभुसापा पहुंचेअवधपुरीव्रजनाथा सुनिकोसलपतिहर
षितगाता आगेचलिआन्यौजनभाता वहुतउपायनविविधप्रकारा पूज्योहरिकहअति
अनुसारा ताषिअभिमनिवरसुखमयवानी कन्याहीयहरखीमनवानी जोमैंव्रतनतपसन
सुभायक. पम्योफलकधुकपूरवजगनायक तौसोविधमोकहिअनुकूला यहवरमिलेमि
टेजगसूला २४ दोहा हेनाथजगतपतिपरिपूरनसबकाम कहासुपूजनयागमें
अलपबुद्धिमतिवाम २५ चौपई ग्यासुपारदेवकनरजपावन सिरधरिश्रीअननकी
यपावन सनतशिवरजपरिनिजसीला प्रभुआदिनसईसकेईसा निजजनसुनिसनुपालिये
हेत प्रगटनरमनवपामियेकन सोममभाग्यपद्हावलिआयो जानिमोहिनिजजनअपनायो

198 A

सुभग आसन जहँ पति बैठारे मुनि नाना विधि मन पसत कारे हरि बोले तब भूपति पाही
मेरे मन रह हसि तिहि तन चाही हे नरेंद्र दूह जग मे कोई छत्री बंधु के सो कि न होई मागन
घटे न तिमि कह हक बहू हे असि नीत सुनी जग सब हू संभावित जाचे जो काहू [illegible]तपुरा
णनि रत नर नाहू तह पिय हषि सुभाव तुमारा तब कन्या जाचौ निरधारा सुनि प्रभु गिरा
हरष हिय भूपा बोल्यो बचन विनीत अनूपा सब गुन धाम सकल हितकारी सुरन्ह की
अवधि मुरारी तुम ते अधिक न वर जग माही प्रभु ईह लायक दूसर नाही सुनिये मोरि
विनती जदुनायक मै पुर बधन कि मो सुभायक छितिपति बले हेयन के हेनू यहु अ
ण कियो मै हू पानि केतु वृषभ सान दुरत मे जग दीसा दुनहि हे यिबहु भजे छितीसा
२८ दोहा भगन गात तजि मान निमर गये छितीस बहु मीरि हमन कियो नाहि वृषभ महही
यह वृषभ यो अपार २७ सोरठा हमन करीय वृष भाग अभिमत वर तुम या हि को मिटै
मोरि सो ताप अपर कारन नायक भु २८ चौपाई सुनि नृप पन गोपीजननायक करि प
ट बांध परे सुख दायक सपत रूप धरि करु एक करि लियो वृष बल जिह बेरा
लीला मात्र छूट निहिं नासा दाम बांध धरियो बहु पासा भगन दरप बल भयो बिनास सि
थिल अंग सब हू गये आस दारु वृषभ जिमि बालक खेलाऊ तिमि हरि तो कर ना सनया
ऊ हे बिन्र पति विसमय अति मानी कन्या दीन कृष्ण कर आनी विधिवत करि विवाह
गुन प्रीती पुरनारि कर भयो भल रीती नृपति यदे बहु तह रानी कन्या योग मि।

श्री॰रा॰ लिउ बरमानी श्रेरवभेर आनकसहु नाई बेलावेलमु रंगसुहाई वाज्याब जे अमित इ
१२८९ कसा घा बंदीजन नगावहिं गुन गाथा पढहिं वेद द्विज ह्योयहर बाने दानमाम भेरे नृप स
माने भवन नवसन अलेकन ननारी प्रमुदित फिरहिं भये पोमुख भारी कन्या हित राइ
११ नृप कीने धेनु सहित वछरा संग लीने १९ छंद सेंगलीये व छरा स्व छत न यन स्व
वन पय ऊधोन भरी दसम हस हीनी सा अे गो खुर धेनु सी सोभित वरी नवसहस्र गा
सं॰ग सी सुभग तन नवयप के हम मणि कंचन जरी नवसहजजनु मेघ सम धरि चलत नछित
घरभरयरी २ नवलछ रथ कंचन जरे सब साजु सुंदर से रहहीं नवकोटि वर सुभगा।
दीय जिन्हि देषि रविहय मोहहीं नव पद्म किंकर सुभग गुन वेय काम जनव हुवपुध सं॰ग
री यहदई कन्या हे तु नद मनि वसन वहु सुख माभरी २ दोहा बरद लहिन वहुसा।
मिल जिमुभगण कर घमानि तहा वदाये मानयुत वहुत भांति सनमानि ३२ चौपई से
ना वहु तसाज वहु पासा रचये भटवलहिं सुपासा अतिसे प्रेम भस्यो महिपाला
पं विदा कियो व जइ लहलाला चले मानके सवक हुमानी त्रिभुवनपति जे अतिअभिमा
नी यह दायश्या भवम हा रथ लखि भंभे मोहि अरुढा ते सब मिल रोक पथ जाई
जह मग चले जान मदराई तिनहि देषि अर्जुन अति माथा गरब सहित तिन सो पुनि
भाषा अरे मद किनि जादु आगे वाणा व सिकीय रन अनुरागे एक कहि वार अमित
स्व रडोर बेरी अमित मारि महि डारे भजे षपर पीछ न दिहे ये जिमि मगभ जे सिंह द्रि

199 A

गपेषे सखाहेतु सबवीर भजारा जयजसबहुत धनंजयपाए हयगजरथसमेत भगावं
ता पहुचे निजपुर जनसुषचेता रमत भये श्रीपति बहुभाती सबे सुषी परिजन दिन रा
ती अपरसुनहु हरिव्याह अनूपा निजपितुभगनीसुतासरूपा भद्रानामसीलगुनभूरी
छेर गुनरूपसागरविदित जगमह नामसुंदरलछमना पितुकनरूपसंवरपिरेदनिउत
सुंदरीजेहन रूपघना तेहजाइजदुपतिएकलो हरिलई सुरमुनिजयभना जिमिसुधाह
कलोउरगथरि हरिल्याउसुरचकनमना २४ दोहा एहप्रकारजेनारिके व्याहअपर
वहुभोति भोमासुरवधनपसुता आनिहेसुभगनभाति २५ सोरठा सकलसुंदरीजानि
कारागृहतेआनिप्रभु व्याहकीनसनमानि जनमनफलदायकहरी २६ सोरठाकहेउ
आठअपरसोरठाचारवर छंदतीनसुभपाठ कहेयाहिअध्यायमहि २७ इति भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे भाषाभिवेअशपंचाशतमो ध्याय: ५८ दोहा हरिभोमासुरमा
रिहेतागृहकंन्याभूरि सोनिजपुरमहआनप्रभुनासुमनोरथपूर १ पुनिजदुपतिच
र इतनीकन्याबषानिहे मुनिभूपतिकेपासे उनसटकेअध्यायमह हरिचरित्रप्रप
नास २ चौपई सुनिमुनिकीमदमंजुलबानी नृपपूछतसुंदररससानी हेमुनिभोमा
सुरकेहिहेत हन्योकृष्णअतिकृपानिकेत जिनाजीनेछिनीसखअतिभारे सुनाथा

श्री० भा
८२००
200

ननिन की हठ धारे। ताहि नाथ मारा कहु कैसे। कहीये मोहि समुझावौ कैसे। हे न्रप सुनु सो	से
कहे बखानौ। जाहि हनु मारयो अभिमानी। भौमासुर रक करि बसन रेसा। गए आपु जंह वस
त नरेसा। आनप अकुंडिल हरि तासु। हन्यो कूदम निसुभग निवासु। सो कुचालि सुरप
ति एक बारा। नरसमदेव पहि जाइ पुकारा। सो सुनि प्रभु अतिसे करि रोषू। करण गए सुर
पति मन तोषू। चढि उरगारि सहित प्रिय नारी। भौम नगर चलिगे अघहारी। सतभामा
ग्रह वैं हनाथा। कहीं तहां सुरपति वह गाथा। नाहि हेनु कौतुक चित चाहि। गए प्रिया युत
हरि पुर ताही। पुर नीकर अनिक रतन नरेसा। गिरि अरु शस्त्र अग्नि चहु देसा। वातवार
सुर पास कठोरा। इहि विधि नगर घिरयो चहु ओरा। ४ दोहा। गिरवर डारयो निज गदा(?)
स्त्र छेदनि निज वान। अग्नि बात जल चक्र सों सोख्यो सारंगपानि धाम। ५ सोरठा। कटि लीनी क
र वाल छेदि सुरम नपास हरि। जे ग्रमे अग जग माल भने शेष धुनि सुन तही। ६ चोपई।
दुरग प्रहार गरा नेहि ठाही। गए गदाधर पुर के माही। धुनि सुनि शंख असेनि समनाम(?)
ना म्हैसो सुर दलन प्रमारा। सो वैन न तपर था न लमाही। पांच सीस अति बलि जियजा
ही। ते चित सकल घावा सन्द आस। अति दुर धर घिते ज वल नभ सू। प्रलयकाल को भानु
समानु। ताहि लखि सररल अति बन मानू। पंच वदन करि मन हु त्रिलोका। ग्रसन चाह
सद आवे सोका। जिमि खिय धर उरगारि सुपासू। आयो हरि ढिग तन कन बासू।
तो लखि त्रिभुल गरड कहमारा। पंच वदन करि घोर चिकारा। अवनि अकास नारदि

सरसहू छूरगईधुनिवन्धोनकिनहूं तासुत्रिमू लनन्प्रायेगोलो हरिसारित्रिधाकरि
नेलो भुजपसारहरिकहजवधावा वज्रछेरसिरपुहमिगिरावा करयेोमंगनिमिगि
रिघसपरई त्योमहीपर्योमूढफरफरई तासुतननेपितुवधमुनिकाना सोधसहि
नधाएवलवाना सानवीरवर एकहिसाथा सुभियेनामतिनकेनरनाथा एकतामइक
खवएसुनामा श्रनरिछपावकवलधामा नवस्वानवसुश्ररुएसुरारी पीरनामसेना
पतिभारी भौमासुरप्रेरेवलिश्राए प्रभुपरिवाणवरहिझरलाए ७ दोहा गतासकति
श्ररुमुसलवहुडारिएकहीसाथ मूढनजानहिहरिप्रभा गरजेकूरश्रनाथ ८ सोरठा
हरिश्रमोघगुणराशि एकबाणकरिनासकीय गयेमानमहनीस तिलसमकाटे
सरचलघि ९ चोपई पीरश्रादिसेनापतिनास मारेछिनकमाहिप्रभश्रास देखिहा
निनिजभौमप्रचेडा गजचढिचल्यागहेकोदंडा गढ वाहरसुग्रामहवादा गरूडारूढह
रिहिलषिठाढा प्रियासहितसोभनप्रभुकैसो जनघननडितमिततसिवैसे श्रावनही
एकसकतिकठोरा प्रभुपरिडारेसवलकरिघोरा श्रपिरलसिमिटिसकलएकवारा
श्रस्त्रसस्त्रवरषेजनुधरा देषितासुवलप्रभुरिसमानी मार्योवाणसुवएलगिनी।
नी श्रमितवाणतीछलसेहाथा मारेसवरलभौजइनाथा कटेवाहुसिरउरभुजहड़ा
छितिपरिपरेवीरवरिहेडा जिननेश्रस्त्रशास्त्रश्रारिकेरे श्रावनहीहरिकाटिनि
वेरे विहंगराजनषबुचककठोरा श्रपिगजसिरविदारवरजोरा पक्षघातसहिस

आ॰ भा॰
२०१
201

कानसोई गजभजग्योपुरव्याकुलहोई भौमरोषिनिजदलसबभागे कोऊनजानअंड
जपतिआगे कठिनकठोरआकृतिकरिलीनी रिसिकरपतगरि सिरिसिरोनी वक्र
हुतेअनिकाढिनछिनीसा अनिवलितेडारीतिहिसीसा नहिरथकंपितभ्यागामा
मालाहतनगनरवसकुचामा १० दोहा निजउघमसबबघालविभोममानमनहानि
प्रभुहिमारिवेकहुलियो झलमहाअघघानि ११ सोरठा जोलगिमलननडारि ह
सिनिहिपहिलेचक्रगहि सीसकाटिमहीपारु कुंडिलसहितकिरीटजुत १२ चौपई हा
हाकारभयोपुरमाही सुरगनमुनिहियहरिषेउवाही हरिसिरसुमनवरषिझरिकीनी
परमानेरहुदुभीरीनी अस्तुतिकरिसुरनानाभांती निजनिजग्रहगेजसकरिख्याती
ताभूमातुआई प्रभुसरणा पाहिपाहि प्रनतारतहरणा कुंडलकंचनमरतअमोला
लैआईकरिचितअडोला वरुणछत्रवेजेतीमाला अपरअनेकजातमनिजाला प्र
भुपरअरपनकरजिनआनी हाथजोरिअस्तुतिवहुठानी देवदेववरदेवगुसांई
प्रभवनचक्रधरहेजदुराई भगतहेतुकरितुमजगदीसा धरतरूपईसनकेईसा प्र
नावौवारवारपदकंजा सिमिरतहौभवरुजभयगंजा पंकजनैनाभजलजसमन
यना पंकजमालप्रभाकोअयना नमोनमो जयसुरसुखकारी पदजलजातभक
भवहारी वासुदेवभगवंतअनंता पुरुषपुरानविधागनवेता आरिवीजपरण
सबकामा ग्यानानंदरूपसुखधामा १३ छंद जयजयघनगननायकजनसुखदाय

कजगकरताजगहरतहरी जयदेवअनंतालहिकोअनेताजयजिनरुकमिनपीरहरी
तुमसबघटिवासीवेदप्रकासीमैंअबलाअतिमलिनभरी ममपुन्यअपारालखिको
पारानाथहरसहो इतहिकरी १४ नगसेभवपालननिजजनलालनलयकरताजग
ईसहरी सबतेतुमदूरीसबमहपूरीरहितनिरंतरवासकरी जलअवनिप्रकासा।
अनलहुनासापंचतत्वबपुसबकालकरी सोऊजगतअनेकानहिव्यतिरेकातुमतेअ
निकहटेरिकरी १५ मैंनारिमिलीनीसबविधिहीनीइमिकहपँदकंजपरी पुनिदैकर
जोरीकहतबहोरीनाथनमैंकछुचूककरी मोहुतमदमंदानुमसुखकंदा तासुतनयय हरि
हवालहरी तुमदीनदयालाहोकृपाला सबनागतिप्रतिपालहरी १६ दोहा नरकासु
रकीमातुजबबिनयकरीइहिरीति सुनिप्रसन्नतिहिअभयदिय करुणाकरिकरिप्री
ति १७ सोरठा पाइअभयवरदान मोदमानभगवेततब प्रभुचहिकियकल्यान जेरोके
तिनगेहहिनिज १८ चौपाई तबतिहिगेहगएजदुनाथा अमितभूतयुतहैनरनाथा कं
न्याषोडशसहसअनूपा भूपजीतआनीसुषरूपा तिनिदेखेप्रभुमंदिरआए रूपम
नोहरअतिछविछाए देखिनहीप्रभुचरणसरोजा तनपुलकितभरनयनसरोजा स
कलबरीपतिजानिअनूपा मनवचकायजानिअनुरूपा सानुकूलअबहोइविधा
ता एहपतिहोहिहमहिमनआता ऐसेहिसबनिमानमनमाही इनतेअपरहूमे
कोऊनाही मनगतिजानितासकलभगवाना सुभगमंजारअमितनरजाना अनिक

श्री भा.
२०२

202

मनीयवसनपहिराई भिन्नभिन्नसवज्ञानसजाई बहुसुभटतिहिसेगलगाई नि-
जपुरकहसवदीनपठाई बहुरथकोसवाजिगुणवेंता नागसेनयुगदेसुभवेंता
एरावनकुलकेमरमाते साठचारिअधिकीसुखमाने २९ दोहा ऐरावनीपठाइस
वरपनिचढियगोस ग्राकुंडलीकहुप्रभुगएसुरपतिहेतुनरेस ३० चौपई इंद्रभवन
चलिगएमुरारी आदितिदियकुंडलहितकारी सुरमातिकियपूजाहरिकेरी बहुत
भांतिसजवसनुधनेरी पूजितहुइग्रहचलेकृपाला सतभामाप्रेरयोतिहिकाला सुर
तरुवल्लिचलहुलेनाथा सुनिप्रियवचनहसेरघुनाथा कल्पवृक्षएकलीनउपा
री परिविहंगेसशीसधरमुरारी चलिनीवारदेवमहिभारे प्रभुकह्योदेवायीमनिवा
रे सहितसुरेसविविधगनजीती लैआएसुरद्रुमसुनप्रीती सतभामग्रहपरमसु
हावनि नहुविचित्रउद्यानसुपावन तहांआनिसुरद्रुमप्रभुराख्यो मधुकरिगाना
कर्यहुप्रतिभाष्यो करयोइंद्रउपकारमोसाई करतहासिधुहासमुखाई तासनइं
द्रयुद्धकियदाना इमिसदेहजोकोमनआना ताहिकहतउत्तरमुनिराया ताहिरी
ननगनपरअतिदाया तासुवरणरजशिवविधसीसा धरिबचहतनरिषीसमुनीसा
सो सोश्रीकृष्णदेववलिआए गएतासुग्रहपरमप्रताए तासुकाजहितसहिजसुभा
ये रेनमयेकुंडलसुयसराये ३१ दोहा तवप्रभुइंद्रकाजहितकरिविरोधविबुधेस
मनमरअभिमानमटमानिफलसोलेहुनरेस ३२ चौपई पुनिएककहिदिनशुभ

202 A

तिथिवारा लग्नपवित्रमासरिषवारा एकहलग्नव्याहसवकीना सोरहसहस
रूपधरिलीना ग्रहोभागजिहिगेतिहगेहा वसुईसधरनरवररेहा एकरूपवय
एकसुभाऊ एकचलनएकचितवनचाऊ सवकेयहवसरमतअनेता सवक
हकियोसुषतभगवंता निजानेहपरिहरणकामा गहोधरमकरतसुषधामा
निमिप्राकृतनरकरगहकाजू करनभएतेसहव्रजराजू ब्रह्मादिकजिहिध्यान
नपावै वहुउपायकरिमुनिजनधावै तहपिहरसनलेहेननाही सोनितकरहि
प्रियाप्रियचाही धन्यभागइनतियगनकेरे वसतुजासुसंगनेहारिनेरे अतिअनु
रागहासमदरीती निरवहिप्रभुनितनवप्रीती नवसंगममहितहीमनआनी वोलेवच
नअमृतजनुसानी २३ छंद सावीअमृतरससरसिवानीकहहिमनसचाइकै स्यामा
सुरनिगहस्यामसोकहिव्यंगवचनसुनाइकै कोकहैतिनकेभागिकीपरब्रह्मसव
जहजाइकै इकएककेगहसननिरासीहुनगसभगुणलाइकै २४ नवधिकरा
हिसवस्वपंतनकरहासमृतचितचाइकै आवतलषेनवजाहिआगेआनिगहय
धिराइकै पुनिसुभगअवासनेरे इअरहनधोइपगसुषपाइकै करिसुहृषचीरी
देहिसुंदरविजननगंधवनाइकै २५ पुनिकेससुभगासेवारिनिजकरमालउरचाहि
राइकै फिरसेजरचनारचहिमनुपयफेनसरिससुभाइकै पुनिविविधविधभोज
ननहाधरिपानसप्रिसजुल्पाइकै इहविधकरैसवकृत्यनिजकारितकाम परमनु

लाइकै ॥२८॥ दोहा ॥ धन्य धन्य ते धन्य सब जिनके यह नित भाव राम कृपाते धन्य जग मे सेवे हरि पाद ॥२७॥ कहे दोहा रामलाल वं अपर सो रहा चोरि कहे छर यहु रुचि अति मूल कथा सुख सार ॥२८॥ इति श्रीभागवते महापुराणे ॥ रामलाल कृत भाषायां दशमे एकोनसप्तमोऽध्यायः ॥५९॥ सोरठा ॥ शुभग साठके माहि कृष्ण चरित परिहास करि प्रिया रुकमिनी पाहि गिरा कहे गूढ अति ॥१॥ दोहा सो सुनि ताकहु रोय अति प्रेम करन लाहि गुल हरि पुनि तोकहि प्रभु बात करि प्रेम गिरा सुख भरि ॥२॥ चौपई साठ मांझ यह कथा अनूपा मुनि कहि है भूपति अनुरूपा है न यमकारि वस जे गनायक वैठ रुकमिन रहे सुभायक सुभग सेज राका सन होऊ करत विलास हास रस सोऊ रुकमिनि व्यजन करे तिहि ठामा श्रीनि मुख निरखि छवि धामा लीला जासु अमित कवि कहही संभव पालि नास जग सब ही सोजग सेतु पालवै हेतू जन्मे जदुकुल कृपानिकेतू तासु भवन सोभा कोबानी मुकताहल ललित बहुतानी मणिमय दीप लसत चहु ओरा सुमन अनेक प्रकार न थोरा मधुप गान सुनि मुनि मन लोभा अति अपार मंदिर की सोभा अगर धूप धूपनि चहुं वास मनि युत जालरं ध्र सुभ रास साल कपि नाभीतरि वलि आवे अगर धूप वास हरक हुवावे दुहु मिलवनी अनूप मसोभा वरने को वानी मन लोभा क्षीर फेन सम तलप अनूपा उपवरहन सो रम मजु सरूपा हाति नूलिका रचित सुभाव रवैठ तहां रे पति गुण आगर ॥३॥ दोहा रुकमि दुमनि जारित वर बालव्यजन सुषा

203A

स नासौ लैकरि द्रुकमिनी पवन करै सुषहास ४ चौपई सो प्रभु द्रिग वैठी जुत प्रीती
व्यजन करन लागी सुभ रीती भूषत भूषन विविध प्रकारा नूपुरादि धुनि सुषद अपारा
अंगुलीयवर वलय सुभायन कंअपालि करि व्यजन फिरावन कुंकुमयुत उरोज अग्र
तिलोने अंचल गूढ भाल वरि सोने कटितटि ललित किंकिनी राजै सोभा तनु धर मन
हु विराजू देषि सरूप छके प्रभु आए वरनै को तिहि प्रभा प्रनाए मंद मंद हस सषी जदुना
यक वोले वचन सुभग सुषदायक लीला हित तनु धरि जगनाथा तिहि अनुरूप कहत
भए गाथा हे नृपेंद्रतनया दुक वाता कहीं तोहि प्रति सुमुषी सुहाता भूप अनेक वीर
वलभारी लोकपाल सम विभव सुषारी रूप सील गुण वय वसु होवन अति गरिष्ठ स
वलायक पावन सिसुपालादि भूप गुणवंता दियो तवानुज नल विबुधिवंता पितु से म
तरे वे कहु तिनही तव अनि चाहती नहि नित नित ही ५ दोहा तिनहि त्यागि हम कहु वरी
कहु कहा यह रीति असमजानि तुम हम महि कसि चहेहु यह विपरीति ६ चौपई भ
पवसई होवसे हम आई मगधईस डर चलि उपराई वलवेतन मो सम विमारू नहि
नप आसन भूमि मांडारू नहि आरल व्या तुम मन कोई जिय परि ते त्रैदेषि जिय जोई ति
हि अनुसरै नारि को जानी दुषित हैं वह मन क्रम वानी निह किंचन मे सहार हाऊ नि
हु किंचन मोप्रिय सव दाऊ महते जे अति से धनुवेता तेनेहि भजहि मोहि मय सेना
जन्म वंत ऐश्वर्य स्वरूपा एक सरिस सव निज अनुरूपा तासेन व्याह मित्रता करही

सी॰भा॰
८ २०५
204

तौसोसबसुषसोभाभरई असमबिबाहुमिजनाकीने सुषनलहै असिकहहिप्रबीने
असजानेबिनुतुमअकुलाई नहिबिचारकीन्योकछुकाई सबगुनरहितअसमवर
मोको पाइकहाकासुषभातोको नहिबिचारतुमकियमनभाये भूलिहुमिछुककेबोरा
ये अनहूतवमनहोइ बिचारू भजहुअपरकौऊअनूपभरितारू ७ दोहा जाहिभजेरति
उतसदासुषपैहैसबकाल सोबिचारअबहूंकरहुनहि बिलंबकरूबाल ८ चौपई जो
ऐसीकरबेमनरहि ऊ तौइतलाइकहाफललहिऊ जोइमिकहे प्रियामोहिपासा का
रनसुनौसान्यमहमेपासा ऐनवककअसिरुपालनरेस सालजेरासुतकरममदेस अ
परनरेसमहमतिजेते रुकमीआदिकुमतिग्रहकेते जेमहअंधगारबअतिमहा नहि
समुझयपलुमोहअरूढा मोसुगरवकहैकियहानी पानैमैंतुमकोहरिआनी उदासीन
सेवतनलखदामा दारागारपुत्रधनकामा मोहिनममताइनकेमाही सत्यकहौतोहिसंस
यनाही आनमलाभसेतनभरहूरा रहितताहिश्रमसुषरूरा पिहमेरहौजानुइहहरी
तौ दीपकजिमिघरमैंनहिप्रीती ऐसेपतिढिगरहैजुनारी ताहिकहौसुबरेबुविचारी
सुनिकरुणानिधिकीयहबानी त्यागिजानिनहियअकुलानी ९ दोहा अबिलेरव
रपतिकीगिरासुनीअधिकरिमरल हीयकवृथाननसुधनसौसबसुबतिहिछिनमरल
१० सोरठा चिंतालहीदुरंत सुनिउनपूरबबैनअसि कहौतुमपपरकंत जलकननपन
धारावली ११ चौपई परनवअरुनधामछबिकेरे लिषतिभूमिदृगअधगाति।

हरे अश्रुप्रवाह धोइ द्विग अंजन कुचकुंकुम मानहु करि मज्जन रुध कंठ मुख वच
न न आवा दुख समुद्र हीय मे जनु छावा भय दुख सोक बुधि भई हानी बंधन वलय
सिथिल सब जानी करते अंजन छूटि गोत वही ब्याकुल चित वन भूमि रज वही
पवन वेग रंभा जिमि गिरई तिमि अवनी पर तन घर घरई विथुरे कच मुख अधरे
सुखाने प्रीतम त्यागि भीति भय माने देव प्रिया गति सकल कृपाला प्रेम तासु लखि
मगन विसाला अति गंभीर हास्य रस रीती भीरु न जानति होय की प्रीती करुणा
करत हृच्छन भुज चारी भये आपु हरि कृष्ण मुरारी सहसै ते लपटाय गि जगनायक
प्रिया उठाइ लई सुखदायक वैकर के सुधा से तास बदन पोंछि लिय अंचल सुपास
लोचन जल भरि बहु नीरा पोंछे निज करि श्री जदुवीरा आगिन करि पुनि सन मा
ने एक अनन्य सरल निज माने १२ दोहा भक्ति वस्य भगवान प्रभु दीनबंधु जगस
तु अनुनय करी प्रकार वहु प्रिया प्रीति के हेतु १३ सोरठा प्रौढ हास सकल न मोह नान
प्रिया मन दुख भयो देखि वर न युत को ह हसि बोले भगवान तब १४ चौपई हे विदर
भनंदनी सुनु बाला हास्य कीन मै सहि जग हाला जनु मन आन अस्त्र स्यामो री जानउ
सकल प्रकृति मै तोरी तव मुख वचन सुनन के हेतू कही गिरा मैं तजि अति सेतू
प्रेम कोह युत वदन अनूपा फरकत अधर विवस धरूपा वंक विलोक निचारु वि
लोचन भृकुटी कुटिल मादि तिय मोचन कहि प्रेम युति पति सो वचना गृह मे धी सु

श्री भा
२२०५
205

यसीवसुरचना रंवतिखेलकरतिदिननाही ३ हनुमसमनग्रहीकछुकाही इ
हविधनाथप्रियाससुखाई गतिसंकाजवभईनेरराई जान्योहास्यकीनहरिमोसों
भाजीत्यागिभयभयोभारेसो प्रभुसुधदेखिकहनमृदुवानी श्रीडायुतसनेहरससानी
निजश्रेयसुनप्रभुषोडशावरना सवंनाथजनआरतहरना नाहिकहतगनगुनअति
भूरी प्रभुमहिमानलखिअरभुतरूरी कांहिवरहुअसमवरमोही प्रभुअसकहिउगिरा
निहमोही ४५ दोहा कहतरुकमिनीसुनियप्रभुतुमत्रिभुवनकेईस गिरिजापतिवि
धआदिसवतवकिंकरजगदीस ४६ चौपई सकलनियंतातुमसवलायक कृपा
सिंधुहेजनसुखदायक कहांतुछमेंरूपनकुमारी कहिअखिलेसदीनहितकारी
असमसत्यतुमकहांसुवानी सोप्रमानहमरहुविधमानी तुमहूंपदरानीजगजानी
तुमहिंउपासनसवजननमानी जोकहताविश्वेसप्रभुकहहूं तहांकहोंवानीममगहहूं
जेसकामसेवेतेमोही हेमतिहीनदीनजनद्रोही भूपविरोधमानेभयतासू वासु
करयोजलनिधिकेपास हरिहसिकहावचननतिहिकरी कहतरुकमिनीनिजमति
केरी विषयपेचयहभूपसमाना सोतवनिकरदनेकवहुजाना छीरसिंधुतुमकरहु
निवास भयदवमनदुखतेअसुबासा वलवेतननैवेरखढाई इमिमोवचनकहौ
जदुराई नाहिफेरकरिगुरुकवनाई करतरुकमिनीनिजमनभाई ४७ दोहा कुत
लिनाई जमसुकीसोवलिछअतिजागु तासोतुमसोवेरनितचल्पोनाइयहमागु

205 A

१८ चौपई नहिंमृषासनहमकहुँआही प्रभुइमिकहावचनचितचाही तहाँकहूँ
तहँरामबलोचन दीनबंधुअरुणनारतमोचन जानिगाउतमन्दपपहआसन बहुअवि
वेकअभयसुषनासन जैंनन्यातिनतुएसमत्यागा तौतुमईससहजगतिरागा म अं
मपघजानिसवैनहिंकोई ममईहाजानियकिमिसोई प्रभुइमिवचनकहुजेपा
छे उलटरूकमिनीकहुइतिआछे तवपदकेंजरत्तासबपानाकरहिंसहाजेसुनित
जिमाना तेतवपंघजानेनहिंकवहूं नरपसुतवगतिलहकिमिकवहूं अपरसु
नीयइकवातअनूपा जोतवपदरजनेवअनुरूपा तिनकोईहितलघेनेकोई तौतु
मगतिजानेकिमिसोई मैंनिहिंकिंचनअहोसताही निहकिंचनममहृदयरहही
इहुनेश्रीमदअंधतमोही भजेसमुषसत्यकहोताही इमिपीछेप्रभुकहींजुषानीता
हूँप्रियाअवकहतवषानी १९ दोहा निहकिंचनजुहरिइतासेप्रभुधरैनताहिं क
होवेदपधरीतिसुनिमतिजसउपजीमोहि २० सोरठा सवजगनेवलपाइ विधेते।
आदिसुरेससवतवपदअरमहिंआइ अहींनिधनाकिमिघरै २१ चौपई निहकिंच
नजनप्रियजनवतोही तौसवसेपतिपतिहिंओही जेधनअंधभजेनहिंनाथा तेसत
नजगफिरहिंअनाथा इंद्रीपोषकअनिमनिमंत्ता छूटैनरवसुतकारिवडुफंदा ब्याह
मित्रतासमसोकीने लहैंमोरइमिकहतप्रवीने उलटिप्रियातंहुकहतवषानी सुनी
पनाथसेतनसुषहानी पुरुषाधेननचारिप्रकारा सोतवचरणकेंजआधारा तव

श्री भा
६ २०६
206

परउं जन्मामि मुनिहारे तजहि रूपग्रह परिजन चारे सो न बचन एकं जिन पावा (न)
सेवक सेव्य भाव बिनु तावा नहि तिय पति की रीति चलाई तिन कहं संतत फल अधिका
ई तिय पति भाव होय अकुरि मूला सेवक भाव नसे सब मूला हे हरि तुम जो कहा बषा।
नी निसुक मिरा कहो नैचो मानी सुनी ये न होना थम मवानी कहो सत्य स्वजन पय अनु
मानी त्य कम हे डुने मुनि जन कोई तिन के बचन न बृथा नाहि होई प्रभु कह हम जे न जे प्र
भुनाही हे अपन पौ नि ज चिन वाही २९ दोहा असे सगुन मुनि मे बरी सो सब सत्य सु।
जान वाने मे न हि मृगाधपति तुम कल्यान निधान ३२ सोरठा तुम जो कही कृपाल
नहि विचार ही रघुपति यो सुमिथे दीन दयाल मम बिचार अति सुद्द प्रभु २४ चौपई
तब मन कुटी प्रभु काल कराला तासु वेग कर सब जग जाला ध्वंसन होइ छन क महं ल
मी ब्रह्मलोक लो सुयपदि नामी श्र जेने श्चादि न मो मनभा न श्र पर एक को कहा चो।
ला न यह तेस कल भू पिपति हो मे तुमहि मनो मे सुमति प्रबीने निज अस्तान करत
परिहाह प्रभु मुन चरनन न करि सुषसार हे प्रभु श्च मिनि भ्र पग न जेते छिति मह पा
रघुराम बने ते सारंग धनुष ना इ सुनि काना भंजि मरु बोध्य मरमाना बिनु श्रम तु।
महि लीन अमो हो नीमि ने लोक माहि को सम तो हो सो न तुम कहहु भूप मय मानी मे इ
तब लिउ क हो इमि वानी सो न हि घरे सेन सुषदानी श्र पल ईस तुम बेर वषानी हरि
गुन गुनि उत करि घरसमेता कहे न लगी सुनि कृपानिके ता तब पर भजन चाह वहु मर

206 A

पा नजिग्रहराजगएसुषरूपा पृथुगयभरतजजातिसयाने अंगगआदिजेवीरवषाने
तवपदआश्रितभएतपाला नेकिमिलहेहोषदुषजाला २५ रोला विनुपदआश्रयपञ्च
मलेहैतवपदरूपअनिकेत द्दहप्रतापतवचरनसरजविनचाहेसुषदेत २६ चौपाई हेगुन
आलयतवपदकंजा नासुगेधमाभअगवंता सेतवहनमुषईरतवानी सुनेस्रवनभर
अतिसुषमानी श्रीआलयछननतनैनताही रसअपारहियवसतिनवाही नाहत्यागि नभंजा
कोनारिमलोनी मेरभोगिसेनतसुषहीनी भजैअपरमानुषतनजाई सोतोसुमतिन
मोहितषाई वहुभयलहैतहोसोनारी अतपुरानइमिकहनपुकारी गुनसागरतुम
कहतजिस्यामा कस्मैकाहिमजिन्नहिसुषधामा जगआधीसजानिमैतोही भजीना
थसवसुषलहमोही सुनियहचरनसरनमोहिनाथा होउजनमजनमहितवसाथा
सुरनरअपरमोनिजिहिजाऊं तहानाथतवचरनलहाऊं जोहिमजनतभवतुरनसाई त
यानेतुमहिभजीसुषपाई वहुतमपगुलवानअनेका जगमहिवीरएकतेएका राजकु
वरितवजोगघनेरे तिनिहिसागिद्विजकेहइतिप्रेरे पीछइमितुमकहावषानी तहां
सुनीउत्तरसुषमानी २७ छंद सुषमानिउत्तरसुनहजइवरगिरामससतभाइकै वार
कंनउभयकपोलधरिकहअंगुलीचटकाइकै तुमकहेतेपतिहोहुतिनकेदुरमगा
दुषसहकै बरस्वानवृषभविडालसेअरुभनपसेवालाइकै २८ जिम्हिकरलरंधुनगा
एउतवजसभूलेहूसुषपाइकै जिहिविधिगिरीससुरेससंततगावहीमनलाइकै

श्री·भा·
४०७
207

घरभावबाहकरत बभमनिन अतिदुषित मन बच काइ के जे ग्यान ते तन मानगत न मे जारहुँस
क काइ के ४८ दोहा जे तियके किंकर लरिस ते तिनके पति होहु जे अस हम नि मनि भामिनी म
रीरहे निनमो हु ४ सोरठा तव पद के ज सुगंध एक हु बारन घ्रान करि लई न निन मति
अंध वे ल न के पति हो हु ते ई ४ चोपई सो ऊ ति यम रहु नाथ मैं जाना जीव न सब समजे
पति माना लचा रोम नख के श्रग अनूपा ता कहि ऊ पर म दै वो सरूपा मांस रुधिर मज्जा कम
ज्ञाना पित्त कफ क फ मूत्र मल जाना भीतर यह सब वसत जु अपावनि पर सत पाप पपोर इ उ
प जावनि अैसे हु नर पसु को पति वर ई मे रमा ग बहु नियस रव अहई उदासीन मे रहहु
निरंतर गति सने हुं अरु रहो सु ते नर इमि मो ग्राप क हा हरि बानी न हो सुनो हे सार ग पा
नी अपवित्र अैस गुन सा चो नर बिना ग पम मन म हि राचो तुम हि नाथ अैसे मे जानौ
जे सब तुम निज कियो बषानौ ग्यान मरति तुम सरासुत जू तव आपीन न गहे परि ते जू
ता कहो कहो लाभ मानो हि जो कदाचि इमि ए हो मो हि न हो लाभ बरु यह मो हि न इ ऊ
तव पद के मन हढ़ होय ४९ ऊ इ हते लाभ अपर न हि है या सुन्यो क बहु म हि अवलि विस
वा आरु इक लाभ अपर मे जानी सुनि ये मम प्रिय कृपा निधाना जे वे ज हर विश्व भूनि के
हेतु देव हरु मम हित कृपानिके तू सो मे पर म अनुग्रह माना इ हते अपर लाभ नहि ध्या
ना ४ दोहा इह विध प्रभु के वचन न मे हो य गुर तिसु निकानि बरन्यो सब गुन युक्त क
रि मानि परम कल्यान ४३ सोरठा अति प्रसन्न जिय जानि कहत मम सेवन न अव सु

207A

नीयनायसतमानि कहौं तुनिजमनकीकथा ३४ चोपई तुमजोकहाअपरजोभूपा
वहुरजाइतुमनिजअनुरूपा सोऊतवगिरासत्यइहिरीती कहोनाथमैमनकरिप्री
ती कवहुंकरौविकारनपाई कंन्याचितचलिजाइसुभाई कालितानकंन्यानिमि
तीनी शंवामलिगोरसभीनी सालवभूपमहकीयअनुरागा कंन्यावहैयमहतहचि
तलागा तेसेकवहुकरौचितनाथा जोमनगातोकहुकिहिहाथा व्याहिभयेपीछेअ
तजाए जोचलिजाइअपरपतिपास तिहिअसतोकहजेकोईराषै उभयलोकन
सिगोम्रनिभाषै सुनियहवचनप्रियाकेश्राछे वोलेहरिजिहिअमितप्रताछे हेभी
षमतनयाइहकाजा कहौवचनमेतजिजगलाजा तवमुषवचनसुननकेहेतु
इहिपरिहासकीनतजिसेतु सोपुनिजोतुमवचननकीने सवालसत्यहपरमप्रवीने
एवअनन्यमक्तितवदेषी मोमनअतिसेहरषिविसेषी सकलमनोरथहरणतो
रा होउप्रियेअनुसासनमोरा ३१ दोहा कहेउतोहिप्रतिवचनवहुवंचितप्रियेवनाइ
नहिमममपरतेचिंततवनेककहुंटरिजाइ ३६ सोरठा जेहपतिसुषहेतु भजेमोहित
पत्रतसहित तेनरमहअचेतु ममभायाबंधोतिने ३७ चोपई निजमायामोहितजे
प्रानी तिनकीनिराककहतवषानी हेमानेनिनेरहजगप्रानी मोहिप्रसन्नकियोसुष
मानी मेअपवर्गहानजेगजाना ऋनिनिनिरहविधिकरेवषाना विषयहेतुसंपति
चहमूढा महामंदसोमोहिअरूढा सूकरस्वानपोनियहजाई विषयभोगनिहिमि

श्री॰भा॰
६ २०८
208

लिसचदाई यहतेनुमअति परमप्रबीनी मनबचकरिमोपदमनदीनी सोअपबर्ग
हेतुकरिमूला सुखप्रदअसमेंदेमबसूला अतिदुर्लभयहबलकरमानूं जेमानतेनपो
बहिनिजप्रान् परिवेचकचिनहूपनकठोरा तेनभजहिंकबहुंपदमोरा हैजगमें
मतिकामअनेका भजहिंमोहिंजेसहितबिवेका पदितेसरिसअहैनहकोई हैमा
ननिचरमोअबसोई १८ दोहा मिछुकमुषममरूपगुनसुनीअबलएकबार मनब
चकरिमोकोवरीकोतवसरिकरिपार ४१ सोरठा निजव्याहकेकाल आएनपबहु
भूपदचि नाहिस्वामिनूंचालि बिप्रपठायोपत्रिलिखि ७ चौपई प्रेमसहितनिजक
रलिखिपाती सुनितमारसोतलभईछाती हहुंअवेविकागहमाहिसाई कोअसकहेनु
महिबिनुकोई पुनिनवआनपुधमहजोती कीयोकुरूपबहुतबिपरीती पुनिअनि
रुद्धबिवाहमकारा बेलनघुनभयोअपारा रुकमीवधकीनाबलितहु सोकअपा
रउपजनिहिदाऊ सबतुमसहामोहहितलागी कोइइहिविधिममपरअनुरागी
ममवियोगनिहिकारकपेषी सहालकेतनुमदुसहबिसेषी आमितअहेतेजीता
मोही किहिसमकहोंबरनिमेंनोही मोहिलेनभूसुरइतिआवा व्याहलगनतिहि
प्रानसुहावा छनविलंबतिहिअवसरजानी जातसरूपतुमनिजहियमानी अ
रुपाहिलेपातीसहकाहिऊ तोप्रसादनीमनहिंलहिऊ बतकरितनसुकाइबहुबारा
नजोप्रालधरिमनमअपारा तवअनकरमनुमहिंचनिआयो प्रनिबइलोकहुयोज

नपायो ४२ दोहा केवलमैनहवचनकरिहरषकरावोभीर तोहिसरिसकोउहैनहीभ
योनकहेहेधीर ४२ इहिविधश्रीअविलेसप्रभुरमतरहेतियसाथ केलिवेलवहुहास
करिरसिकसिरोमनसाथ ४३ सोरठा अपरभामिनीगेह रमतनभयेनगहीसप्रभु सह
भक्तिसोनेह अपरनइनिकारनकछु ४४ चोउभारेहाविमल वेइसोरठाजानु कहेहे
रहेसंतननयहअध्यायप्रमानु ४५ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेभाषा
सिवेंद्ररुक्मिनीकृष्णसंवादवर्णनमोध्यायः ६० दोहा अवइकसठअध्यायके
मोजकथासुषरूप कृष्णसुतनकेसुअनवरमुनिकहिहैवहुरूप १ पुनिअनुरुद्ध
विवाहमहकथहपुतनमिलपाइ रुक्मीवधवलदेवकरिकथाकहतचितलाइ २ चो
उ शाखहिजुएककसतंग्याइ अधिकचरनादि तिनकेपुत्रनकेसुधनकोटिकोटिसुषकार
३ चौपई कहतमुनीसमुनहुनरराई कृष्णचंद्रकेसुतवहुभाई एकएककेदशादसढो
टा पितुसमसवगुणएकनछोटा सकलप्रियाप्रभुकीइमिमानै ममग्रहवसतनिरं
तरजानै हमसोप्रियमतमअहैनाकिनहूं नितसोभागपलयेनितनितहूं सवघरनीइ
मिकरहिप्रतीती भगवनगतिलखेनुरीती प्रभुगतिप्रगटकहतमुनिरायो जासुह
दयवहरेवसिकरिहायो सरदकंजसमवदनअनूपा वाहुनयनवपुसुंदररूपा प्रे
महासरलितुनवरवैना वंकविलोकनिसवसुखदैना हाविभावअतिसलिततलसो
मा चाहहिप्रभुमनवसकियवामा नचपिप्रभुमनलसुअधीना भयेनहीहेरपत

·भा·
२०६
गु॰
209

प्रवीना पुनितियगुनवरननतसतभाए प्रभुमहिमासुचकमुखपाए गूढहासयुतवित
वनिवांची करहिकटाछमयनरसवोकी अपरसरनकेभाविअनेका नागरचतुर
नवनेवका ४ दोहा सकलनारिअंगागरीइहिविधनित्यविलास प्रभुमनछुमिननक
रिसकीरहहिसदाहरिपास ५ चौपई ब्रह्मादिकगतिलषहिननास सोपतिमिल्यो
भागवडनास दासीसनसतहिसवकेरे करहिअपरयहकाजघनेरे हरिसेवासवनिज
करकरही अनिआनंदसदाउरभरही इआरहपुत्रएककेभएऊ ऐसेहितुमप्रतिपाछे
कहिऊ पटरानीनिअरवधानी तिनसुअनसुभगसुषदानी कहौनामतिनकेहेभूपा
चंद्रयुनीपिनुसरसरूपा चारुदेस्नसमुदेस्नअनूपा नामसुचारुचारुवररूपा चार
गुप्तपुनिभद्रकचारू चारुचंद्रइकसुभगविचारू यामदविचारनामहेनीके प्रियप्रद्युम्न
भावसवहीके यहदसपुत्ररुकमिनीजाये अपरकहौहरिसुअनसुहाये भानुसुभा
नुअपरसुरभानू नामप्रभानुवीनुइकजानू त्रिहभानुशशिभानुसुवाकर रमाभानु
रतिभानुप्रभाकर पुनिप्रतिभानुनाममुनसागर सतभामाकेसुअनउजागर स्रो
वसुमित्रसुबरलवकारू पुरजितसतजितकरतउछारू पुनिसहस्रजितविजयवीर
वर चित्रकेतुवसुमानधीरधर द्राविजामइकचकनवरजाये नामवेनीकेसुअनसुहा
ये ६ दोहा वीरसुसेनगुचेडवर चित्रगतितिगभीर वेगवानरूपनामवर कुवरसु
सतनधीर ७ सोरठा श्रामयकुंतगुनाम नगनजितीकेसुअनरस अजितसकल

209 A

संग्राम पितुसमानगुनरूपसब ८ चौपई कविस्रुति वृषअरु वीरसुजाना नामसु
बाहुभद्र बलवाना संतहरस राकावरनाम सोमकदे सस्वगुनधाम कालिंदीकेसु
अनबुधाने पितुसमानगुनजगजसजाने गात्रवानअरुनामप्रघोषा पितुहिंगहेबि
हितमनघोषा सिंहप्रबलमोवृषतेआरी लछमनासुअनरणबारी बकअरुहदर
बअनलक्ष्मणाके वरधनगधुनसमकौउनाके नाममहीसअग्निअरु पावन सुधी
नामरुकुवितुमनभाविन नाममित्रविंदाहेजास एहसतुअनभयबरतास रणजित
वृहतसेनगुनरूरा अरिजितसूरनामरणसूरा जयसुभद्रअरुवामनामवर आयुना
मसत्यकसंगरकर एभद्राकेसुअनबखाने नामसंग्रामजितजगमाने कालसुअन
प्रद्युम्नअनूपा गुनअपारसोहरिअनुरूपा धीरधुरंधरपरमप्रवीना रुकमीतिहिके
न्यानिजदीना ९ दोहा इहिविधपुत्रपौत्रबहुकोटिकोटिबहुवेर थोडप्रभमहसवरो
गनापतिरुकुम्हीगोविंद १० सोरठा सुनिमुनिवचननरेस बोलेवचनविनीतहै मन
हरिभगतअवेस कृष्णकथापैरुचघनी ११ चौपई हेमुनिमैपूछौएकवाना भवभंज
नगुममनसुखदाना निगमअरिसुनकहरुकमिनआना दीनीनिजकन्याकिमिताना
पारपरामवहहरितेमूढा प्रभुवधमनयहमोहअरूढा यहमोहिकहहुनाथसमुझाई
अरिसनब्याहकरीकिमिजाई रुकमीमनकीगतिकिमिजानी कहसजानिउहिब्याह
सुहानी जौकरहुचितहमिकहहुगोसाई तहोसुनौममवचनसुहाई भईहोतहैजो

श्री·भा·
१०२१०
210

आगे दूरनिवारकौहिय अनुरागे जोगीजनजानतसबअैसो करिगति अमलकी
गनिजैसे सुनिनैरसकेवचनसुनीक्ता कहनलगेसुनैहैनरईसा राजम्रपेवरमहव
हकंन्या रुकमि कंन्यासुमननधन्या काहूनपकहवरीसयानी कुलमननपतहमो
पहजानी रुकमीसबनिजीनहरिल्याये पीछेरुकमीसुधियहपाये भगिनीप्रीतेहे
नुपहिचानी हियानाहिकहहियरुचिमानी १२ सोहा रुकमीकीकंन्यासुभगचारुम
तीगुनचारु कृतवर्माकेसुअनकोहियोरूपलखिचारु १३ सोरठा कहौनेहबसब्याहु
रुकमीरिसहियमेरही अद्यपिकरयोउछाहु भयोपरंतुनसुफलवह १४ चौपई सो
प्रसंनअबकरमनिरायो तिनैदीनजनपरिअनितायो तासुबिवाहमोगहेभूपा मये
भातसहनारिअनूपा नामभोजकटिरुकमीकेरा पुरनवीननहदीनबसेरा सोवप्र
धुमनआदिसबबीरा भयोविवाहबेदविधधीरा नहांअनेकनृपनेवनेआये जाक
हरुकमीनेवनिपठाये तेकलिंगपतिआदिनेरेसा भरमोहिमसुधनिलेसा तिन
रुकमीसोमंत्रविचारा यहअवसरहैदाऊमुमारा बलनुकोबोलहुदहदाऊ बेलहु
अक्षलेहितवदाऊ तिनैखेलआवनहैनाही रूचिअतिअहैखेलकैमाही करिवि
चारबलदेवहिबोली खेलननलगेअक्षहीयबोली सतसहस्त्रबलअयुतलगारा
रुकमीजीतदाऊभलपाए हस्योदंदोहिकलिंगनरेसा बलसुकेमनरोसनलेसा
तक्षदाऊरुकमीनबनाया जीतेबलतिहिदाऊमुआवा नेकपदीसहमूढगवारा

जीत्योरुकमीवचनउचारा अतिसैरोसछुभितवलरामू अरुणनयनसवगुणकेधा
मू पुनिप्रातकोटिदाउवललाए जीतिवलनृसहितसुभाए १५ दोहा तेसवछलीरि
रुकमीलेगेराऊ जीत्योमैएछोड़नहिं वलकहहरमिलसकुचाऊ भईविमलवानीगग
न १७ चौपई जीतेवलनृसत्यसुभाए सवणकहहिंगूढ़सनभाए सुनिनभगिराअ
नाहरकरिकै वोलारुकमीसठहठधरिकै हलधरप्रतेवोलायुतहोसी येलिकहा
नेव्रजवासी अठखेलमानैरुपवालू एकाजानहिंअंतगोपालू रुकमीव्यंग
वचनइमिभाषे सुनतहलायुधअतिमनमाषे परिघउठाइहनासिरतासु परेउस
भागिरिप्रानविनासु भज्योकलिंगराजनकुथहूरी येदुत्याढरशागौअघहरी पकरिता
सुसवदंतउषारी डुरिरियेछितिपैअसुरारी अपरइछत्रपजेभटमानी मारेवल
लाई कोऊधरकरेरुधरस्ववभाजे कोऊविनघायभजेअतिलाजे मारारुकमहिंह
लधरजवही लषिउरुकमिनीनिहिंकोतवही साधुअसाधुनवलकहिंकहिऊ नै
हमंगहरिभयउरवसिऊ तवअनिरुद्धसहितसुकुमारी रथचढ़ाइजादवकुलेगारी
गपुरीनिजसुषनुतराजन सकलसिद्धकारजसुषभाजन मापुरभोजैकेदार
रिकजैते हलधरसहितसुषीमनतेते १८ दोहा सुषसंपतिकेन्पालई अरिमारसो

श्री॰भा॰
६२२२
२॥

अनयास प्रभुभुजआश्रयसकलथहअपरनकारणकास १८ वहुरिदोहावरलेवि
मलसुभगसारदाचारि कहेनृपहअध्यायमहिसुषकरिसवअघहारि ॥ २ ॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणेन दशमस्कंधे भाषानिबंधे अनुरुद्धविवाहएकअष्टितमो
ध्यायः ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ पुनिअनुरुद्धविरोधअघकथाताजुविस्तारि वाहरिके अध्याय
महिवरननमुनिसुषकारि १ वाणासुरअरुजदुनकोजुद्धअनेकप्रकार कृष्णजी
नहिमारिअरिवाणभुजापरिहार २ इतनीकथासमस्तमुनिकहिहैनृपपास क वैर
हतसुननसुषसंपदाअनकटैभवपास ३ चौपई वलिकेसुतअनभयेसुजाना
तिनमेवडोवाणकहमाना सोशिवभक्तिअनन्यप्रकारा मनवचकायसत्यउरधारा अ
तिउदारधीरजधवंता द्रिढव्रतशिवरनिजनसुषवंता सोशोणितपुरसोवससु
षपाई सुनतसमप्रजापालनमनलाई संभुप्रसादपरमवलताके सदाअधीनअमर
सवताके सहस्रवाहुकरिवाघवनाई तांडवनृत्यकियोसुषपाई शिवकहतिनसे
तोषकराया भक्तआधीनसंभुमनभाया कहिउप्रभुवरमोचितचाहू देउसकल
तोलहिउनकाहू तिनमांगेउममपुरपतिहोहू तोमोपुरअतिसेनवछोहू एवमस्तु
शिवकहिउकृपानी आसुतोषसतितमनमानी एकदिवसशिवहिगगणउक
मायनाइ ... अतिभएउ हे प्रभुतवपदकेजनमामि अषिललोकगुरअंत
रजामी ... सुषपुरनेमभवभयकेदरना इहसहस्रभुज

रएऊगोसाईं व्यरयभावमेवहिऊसहाई ४ दोहा फिरिऊत्रिलोकोढूंढसभ भ्रतिजो
धानहिकोऊ लरेजुमोसोतुमविनाकेसोकिनकोऊहोऊ ५ सोरठा करहिभुजाम म
याजुलरनगयोहिसगाननते भजेगोसहितसमाजु लरेजनमोसोएकप्रभ
रहुयुद्धमोहिनुमचयकेन हसबोलेतवकृपानिकेत ६ चोपई कछुककोयकरिहहरिहियजानी
धुजाएकदीनीतिहिआनी जवयह ध्वजागिरेअनयासा तवतुममरजानहुभानासा
सेयुगाहितजाचातेमोही मानेसरिसमिलेगोतोही सोतोहिसहितसकलपरिवारा
भंजहिगर्ववमानमरसारा सुनिशिववचनगयऊनिजगेहा ध्वजागिरेकाबियहनि
नमेहा तासुसुताइकपरमप्रवीनी ऊखानामसरूपनवीनी सेनमोऊस्वनिरुद्धहि
पाई करयोभोगतिनसोमनलाई जागिपरीसोप्ररूपनपावा कहोकहांगोवचनसुना
वा सषिगनमधपउठीसोजागी उनविहवललज्जासीलागी मंत्रीवाणकेरिगुणसा
यक नामकुंभांडसवहिसुखदायक परमचतुररमनयाइकुमारा नामचित्रलेखाव
रनारा सोऊखाकीसखीसयानी अतिप्रियतिहिसंततसुखदानी पूछनलगी
मदलकहहवैना अहोसखीकहिहिचितचैना कोंतिकोंतकिमिकहहमगनैनी अति
प्रियतिहिसंततसुखदानी ७ दोहा हेनयनेरनिस्वप्नहितवपाणिग्रहनभानाहि
कोनकानयहकिमिकही कोनरेमनमाहि ॥ ८ सोरठा सखीवचनसुनिकान ऊषा
बोलीप्रेमयुत तोसमाहितूनअ्यान कहोंसत्ययहसपनसुनु ९ चोपई स्यामसरू

श्री॰भा॰
१२१२
212

यपुरूपछबिधामा सुतहिनएकअंगसमकामा सुंदरकमललोचनअनियारे पीनवा
सपरितइबहुवारे बाहुबिलासवाममनहारी सकलअंगसुभचारुनिहारी ताहिकों
नहिरोमनवानी निजसपनेमेरतिरसदानी एकवारअधरारसप्याई जागतरहोपी
बिनकोमाई बस्योहृदयमेसोसवआली हियोव्यसनमोहिउरसाली सुनऊषाके
वचनचिनोनी बोलीसखीगिरासुबरोनी जोत्रिलोकमहहोइहबीरा तौतिहिआन
हरोतवपीरा अलिकहबित्रलिखिनसोलागी सुरगंधर्वलिख्योरसपागी चारनसि
द्धअहिसअनेका रजनीचरकिंनरगनएका मनुजलिखिनयादवकुलजेते वृष्णि
सूरआदिकसबतेते रामकृष्णहोऊलिखिबनाई लखिप्रद्युम्नकोहियसकुचाई
जबअनुरुद्धलिखिउनदेषा लजुनहेंद्रिगअपनसुपेषा यहेआहिवितचोरहमा
रा यहेकोनमनकोतिषकारा ॥ दोहा ॥ तबहिचित्रलेषाजुवहजानलईसबवात सं
ग्वननयकोसुअनवरछबिधायोसबगात ॥ चौपई ॥ महाजोगिनीबहुगुनखानी
नामचित्रलेखाजगजाना सोनभपंथगईनदगेहा तितहिऊषासनपरमसनेहा अ
नहपुरबसतीसोजाई निसिनिसीथकोवनसुपाई लखिअनुरुद्धसजनिजसो
यो निजमायाकरिचिनमतभोयो सोनिजपुरलेगईहरेनी मायाचलतिहिअ तुं
हिअनवा सोनिजसखीरिबायोनाही सोअतिमुदितभईमिनमाही सोनिजगेह
ऊपतिनिहरोषी रमनभई पियसंगुनभाषी वसनअमोलकभूषनमाला बहु

212 A

सुगंधअरिपानिरसाला भोजनभछ्यअनेकप्रकारा सेवाकरिनितवहुउपचारा निज
ग्रहराखलहिसुखमारी अतिसनेहवढगईसुखारी ऊखानिहिरसवसमतिभूली ग
एऊवहुतदिनछनसमतूली जडकुमारनिहिसनदिनराती करिउविहारसुनानाभांती
पुरषसंगकरिवयगतिन्यारी भईप्रभाहतराजकुमारी १२ छंद हतप्रभाभईवहरा
जकंन्याराजभटजहंनेरहे तिनलषीकवहुकदूरतेवहवरणकछुलपटेलहे तेभ
दपुकारेनाइनरपसोंसुनियप्रभुसाचीकहे तवसुनायहकेद्वारसंततरहेहमअप्रापु
सुलहे १३ सोअनुहमविपरीतलषलखेकछुओगुनसही हमरहेवोकसभली
विधिजहंगम्यविहगनहकीनही परिदुखकोऊनिहिसषीकोगति लषीनहिकाहूक
हो जिहिपुरषसंगनजानियेचलिहेविधियेनिजनेनही १४ दोहा द्वारपालकेवचन
सुनिभयोनरपतिमनक्रोध कंन्यादूषणश्रवणसुनिहोइनहहै प्रवोध १५ चोपई व
लिऊनुरतकंन्यागहिगएऊ जडकुमारवेढ्याविहिलहिऊ अखिलभवनसोभासो
सागर कामसुअनअतिरूपउजागर मे घस्यामवुजदललोचन पीतवासदुति
नद्रिताविमोचन भुजप्रलंव कुंडलछविछाये वदनइंदुउपमालजाये स्याम
सचिकनसोरभकेसा अहिसिसुमनहुसाहमधुलेसा मंदमंदमुसकनिछविसी
वा गजमनिमालसुभगपनग्रीवा प्रियासहितषेलततहपासा कामसुअनअत
हियेहुलासा अंगसंगकंनलछनदेषी कुंकुमलासुमालमहवेषी सुमनमा

श्री भा
९ २१३

लउरसोहविसेषी बैठेदोकंन्याहिगतिन्हिपेषी अतिविसमयचितभए ऊनरेस क्रोध
भर्योहियअतिसदेस पैठनतनाहिंहेविनेदुनेरा सेगदुहमटलियेसुर्वेहा परघउ
ठाइलीनतिहिकाला मनुकोदुलीयेमनमकाला चहुदिसिअसुरविलमनवघेरा
नदुनेदनचहुदिसिनवहेरा पकरनचाहतएसवमूढा महामंदसठमोहिअरूढा मारि
परघसठदुहविडारे भनेसकलननसुधनसभारे हरिसानकलषिजिमिमृगजूथाति
मिमानेसठअसुरविरुथा कटेसीसडरकेधरवाहू आयेवीरजहांनरराहू नृपनिमसे
नवीरसविनाथा भयोदुखिचितअतिसिरनासा ॥ २८ ॥ दोहा नवनपअतिसेक्रोधकरिना
गपासकरिताहिं बांध्योजदुकोवुअरवरअतिसुदरवितचाहि ॥ १७ ॥ सोरठा ऊपाना
हिनिहार मनविषादतननविकलअति सजलनयनभरिवार रोईअतिसिसोकहोय ॥
८ ॥ दोहा कहिहेहिदमपांचवर छोरयुगलयहमाहि तीनिकहेवरसोरठा सुनतहुअघन
सनाहि ॥ ९ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे स्कंधे दशम स्कंधेभाषानिबंधे अनुद्धबंधनोना
मद्वियष्ठितमोध्यायः ॥ ६२ ॥ दोहा वाणसुरथाटवसमरवरननमुनिनृपपास शि
वकोज्वरअर्जुनकरिहिबाणबाहुकरनास ॥ १ ॥ निरस्तह केअध्यायमहइतिनीक
थाअनूप सुनतसुनततसपनसेलहअपवरगअनूप ॥ २ ॥ चौपई जदुपुरकेनागस
वलोगा नाहिंअनुरुद्धकेभोसोगा सोवतमासचारिचलिगए उसमाचारनारदतेहि
लहेऊ वसिवेसससबसमेसनाहूं एककपटअपसानिजनाहू सोणितपुरपहुंचेसव

नवही सुनीवाननारदमुषतवही सुतप्रद्युमनसोवुग दसरिण अस्त्रयुद्धधानवीर
रणधरिण नंद अपर उपनंद समेते प्रभ असावरतीन्रपजेते बलअछेमहिनीसुभग
सवारी दाहसंषाभट अनिभारी वाणनगररोकातिननाई भजिऊपुरउघानवना
ई गोपुरपुरप्रकारसवढाही अटाअटारीरजकरिताही दबेउवाणदसागुरकेरी
महाक्रोधकरिदुंदुभिफोरी आनुनगरमेंगुरषनरहई समरहेतुसबबाहरचलईज
दुसमानसेनानिजसाजी गजपदातिरथसुंदरवाजी वाणनिकसपुरबाहरआवास
माबारयहसंकरपावा वाणहेतुसुनसहसस्समाजा चढेसवहगनभूतविराजा ३
दोहा करित्रिशूलवाहनवृषभनृहितुशोभकपाल लरनभएश्रीकृस्नसनमनहुअप
रकोकाल ४ चौपई भयोजुद्धअतितुमलकठोरा कृस्नशंभुदोऊसुंदरजोरा सुतप्र
द्युम्नषडाननदोऊ लरेउभयअसलरेनकोऊ कूपकरणमंत्रीवरतोके लरेहैरेहलायु
धसोंअतिवांके सोंबवाणसुतभिरेप्रचारी सात्यकिवाणासुरभटभारी ब्रह्मादिक
सबसुरमुनिजेते चारणसिद्धगंधर्वननकेते चढचढजानसकलनभआए रणकौत
करदेषिणमनभाए भूतप्रथमगणगुह्यककजाती डाकिनजातुधानगणध्याती प्रेत
पिसाचमात्रगणजेते बहुवेतालविनायककेते प्रभुकोदंडबाणजवछूटे शिवअनुच
रणकेरिसिरफूटे उरभुजकटेविकसिरहीना फिरहिरुंडमहिपरअतिदीना सकल
भाजेगइकछिनमाही जिमिघनअनलवेगतेजाही अस्त्रशस्त्रबहुविविधप्रकारा

श्री·भा
६२२४

शिव डारे हरि पै बहु बारा। सो सब हरि काटे इक बारा॥ बिनु श्रम बिफल कियो सर धारा। ब्रह्म
शास्त्र बिधि शास्त्र ते कारे। अनिल शास्त्र शर बन धरि पारे॥ बाण कृसानु मेघ शर गंनिउ
एक एक सब के मरि भंजिऊ॥ संभु पासुपति अस्त्र चलावा। नारायण शर नाहिन सावा
॥ दोहा ॥ इह बिधि शिव कहु बिकल करि मोहनास्त्र प्रभु डारि। मोहित है डाढे रहे रण भू
पर त्रिपुरारि ॥९॥ चौपई ॥ पुनि संभन इक अस्त्र अनूपा। हरि डारिऊ शिव परि अनुरूपा॥
पुनि बाणासुर अनी अनेका। प्रभु मारी सब रहीन एका॥ दुसह बाण प्रद्युम्न चलावा।
शिव सिन उर लाग्यो दुख पावा॥ मुख ते रुधिर बमन करि सोई। रण ते भज्यो लखे नन्द को
ई॥ कूपकरण मे श्री बहुनाथ के। हलधर मारि यह कियो बाके॥ भजी सेन हत नाथ निहारी।
बगन हिटिके भ्रम भय भारी॥ निज रण बिचले देखि सुरद्रोही। अति सैरो सभयो जीय
अरो हो॥ तिहि छिन त्यागि लाज कहि आए। आयो प्रभु परि करि बल राए॥ धनुष पंचशत
लेइ कर चारा। है है सर द्विग धनुष मकारा॥ अति दुरमद रण रंग कठोरा। बीर बली जिहि
मन नहि योरा॥ उधम नासु देखि जदुनाथा। धनुष बाण सब एक हि साथा॥ काटे बोएक
बाण करि स्मारे। उधम नासु बिफल करि डारे॥ सहित सारथी रथ अरु घोरे। मारे छि
न कमाहि बरजोरे॥ ९ दोहा॥ कियो शंखधुनि नाथ जब जय पानी सब लोग। न बहि
नासु मन नी बिकल धाई सुन हित जोग॥ ८ सोरठा॥ नाम कोटरा तासु पुलेके शातन
बसन बिन कच छोरे बदि नगन आसु घरी भई हिन सुअन के ॥९॥ चौपई ॥ नाहिन गन लखि

कृपानिधाना अथोदहिदिदेवभगवाना तवहवाणअवसरभलजानी रणतेभाजिगए
उभयमानी विरथीवाणधनुषतेहीना पुरप्रविसेऊसहुपरममलीना भनेभूतगा
णजवशिवकेरे त्रिसिरनामज्वरहरतवप्रेरे आवासमरमोऊसोनवही हसउरि
सानापितभई तवही तवजदुनाथतासुहितलागी ज्वरतवशरदकीनअनुरागी हरि
हरज्वरदोऊविविधप्रकारा लरेभलीविधतैवडवारा प्रभुज्वरप्रवलप्रतापविसेषी
भजिऊशिवापतिजरनिहिदेषी पाइपराभवगैयोसवलोका जहांजाहितहताहि वि
लोका तवभयभीतहोइप्रभुपासा अयोअभयदानकीआसा जोरिहाथनिजसिरध
रिधरनी प्रभुमहिमानिजमुषतिनवरनी १० छंद वरनीनुनिजमुषतेसुभायक के
पतनव्याकुलमहा जदुवीरकरुणासिंधुतुमभयहरणतवपदस्पृहतिकहा मैवारवा
रनामभिगिरिधरअखिलभवसुषावहा ब्रह्मादिकअगजगईसतुमसर्वसप्रभुमे
सहमहा ॥ तुमज्ञानघनपुनिजगतरचिमिहिपालिनासकुहेविभो गुणकालकरम
सुभावसुतयहजीवजडुभटिकतप्रभो निजदेहगेहसनेहमयसनकरतमूढनजान
ई तवप्रवलमायावसपर्यौतवचरणगहनपावही ॥ सोहा अखिलनियंतानाथतुम
वंदौतवपदकंज जासुशरणब्रह्मादिशिवअभयलहतसुषपुंज ॥ चौपई मैवसु
देवसुअनजगजाना तुमिइहिविधअस्तुतिकिमिठाना जौकछाचिहमिकहियगोसाई
नहांसुनियसेतनसुषदाई तुमजगदीसजगततेन्यारे जगसंभवथितिकारिसंहारे

श्री०भा०
१२२५
215

नानाबिधप्रभुकरिअवतारा पालहुसुरगनरिषगनझारा लोकसेतुवरणाश्रमध
र्मीजेनरिकरहिबिहिनअनकर्मी तवचरणनिबिरहनिहिआसा तिनकहुजेउपजा
वहित्रासा तिनकेहेतुरनुजसभमारी निजजनसेततकरहुसुखारी तदपिपरंतुहे
तुवहुरेखा अपरनकारननाथविसेखा दुसहभारमहिसकइनधारी तवतुमप्रगट
होतभयहारी नहिकाहूकेसुनतुमनाथा अनतपुराणगावहिइमिगाथा मैंअग्यान
मूलमति-मेरा तवअपराधकरीजहुतेरा छिमाकरहुप्रभुचूकहमारी मैंअतिदुखि
तभयोअसुरारी तवज्वरसीतप्रतापनघोरा तासुतापव्याकुलमनमोरा परमतनाप
करयजोप्रानी ताहितापुरेनोगुणजानी जोकवहुकइमिकहियगोसाई तहोसुनौविं
नतीजहुयाई २८ दोहा तापरेविसहिहोऊचिततवचलगिहेनगरीस जोचबितवपरवं
जरनमस्तुधरैनहिसीस ५५ चौपई सुनिआरतज्वरवचनअनूपा बोलेहरिप्रसन्ना
हूभूपा हूशिवज्वरप्रसन्नमोहिजानू ममज्वरतेंअबभयजनिमानू ममआसापाल
नतुमकरिहू निरभयजनगनतुमविचरतरहहू तवहमारसंवादसुहावनि सुनैस्रवण
चितदैअतिपावनि ताहिनभयउपजायोकवहूं मनवचकरिसंततदिनसवहूं सुनि
श्रीकरुणवचनमृदुलीने गहिउपाइद्रिगजलभरिलीने वारिवारिकरिविनयप्रनामा
गएकृशोभुज्वरपुनिनिजधामा वाणसुररथसाजिवहोरी हरिसनलरनआउमति
भोरी सहसवहुआयुधवहुधारे प्रभुपरिअमितवाणतिनडारे विषमवाणआवहु

215 A

रिहेरा उरस्यौ कारिए कही वेरा करि गहि चक्र नासु हरि अस्त्र बाण भुजा करि कीन्ह वि
नासु छिन्न भुजा हरि हेरयौ जबही भक्ति दया करि अस्त्र उनबही श्री भगवंत अनंत नहि
देषी कहन लगे शिव वचन विसेषी १६ छंद शिव वचन कहन वे नाइ प्रभु सो नाथ य
ह श्री गुन भरा न वर रूप गुन जाने विना मन नि मूढ सद तुम सो लरा पर ब्रह्म तुम अखिलेस
कारन करन तुम मन न सुखकरा करि जगत संभव पालन तिह संहरन हे जगदीस्वरा १७ स
व लोक मय तुम लोक बाहर नित्य पूरण काम हे मुष अहै पावक नाभि नभ जल रेत हि
विसिर आतिक हे अनि दिसा छिति पति चंद्रमा मन नयन रवि सो पद लहे अहंकार मैं यह
जलधि कुछि सुविरुद्ध तन रुह सुभग हे १८ दोहा मलर के सहरि के कहे वुधि विरंच
जग जानु अपर देव गन सकल प्रभु न वतन आन परिमानु १९ चौपई नंद सुअन मैं प्रग
ट सरूपा किमि वरनन तुम किए अनूपा जौ कदाचिद मि कहि पगो साई न हो सु कोवि
नती चिन लाई हे प्रभु अनंत गुन सागर तुम अवनार लीन नयनागर नाम सु हे तुम्ह हहे
जगदीसा धरम पाल मुनि पालि महीसा हम सब को पालि कतुम एका नव किंकर ए।
अहै अनेका जह जह दीन नाहि अधिकारा सो तिहि ठाम रहि तन निर धारा आदि प्रभु ब
तुम अपर न कोई कथन मात्र ने सुत सुनु सोई नहि परि वु लषहि जे मूढा भयो मोह
भ्रम लषहि न गूढा जिमि रवि निज छाया करि छायो छयौ रूप सो सबनि लषायो त
दपि रूप कर्यो नहि तासु छाया महि सो लषहि प्रकारु
ऐसेहि माया सकल तगुन छायो

श्रीभा
१२१६
216

भगत श्रेधनवरूपनिपायो तेमायागुनकरहिंनआदर तेतवरूपलखहिंनितसादर
तुममायापतिसदासुतेतर अगजगसबतेअहैपरतेतर २० दोहा तबमायामोहितस
वहिंपुत्रदारधनधाम तामहकरमतसमेहमतठफिरैनलहिंविश्राम २१ चौपाई हैवपो
गतेनरतनुपावा अतिदुरलभसुरदुसुभगसुहावा इंद्रीवसहैबुधअतिहीनी तबप
रमंजिनमतिनहिंहीनी सोचनयोगपुरुषमासोई निजअज्ञानमबंधकजोकोई भजि
उनतुमहिंपाइनन अैसो सोपसुबिनुबिषानलषुतैसो तुमसबकेअज्ञानमप्रियरूपा
सकलनियंताप्रभुसुखरूपा तुमहिंत्यागिइंद्रीवसपरिऊ सुतदाराधनमेंचितधरिऊ
जिमिकोऊसुधात्यागिनिजहाथा करैविषयापानअनाथा हमविरंचसुरमुनिजे
कोई अपरसत्यगुनमुनहैजोई जानिइष्टप्रियईश्वरनाथा तबपदकंजभजहिंन
हुनाथा भजनयोगतुमअगजगस्वामी तवपदकंजनमामिनमामी जगसंभवआदि
ककहहतू समप्रसोनतुमकृपानिकेतू भजनयोगजगअपरनकोई सबजगकरह
आश्रयतुमसोई भयअपवर्गहेतुजगदीसा भजोंक तेपदधरिनिजसीसा यह
ममकिंकरसबविधरेखा इमिकीनीममबहुविधसेवा अभयदानमेयहकहदीना
तमहिंसत्यतुमकरहुप्रवीना २२ दोहा नाथतिहारीसरनयह अभयकरहुनिजजा
नि जिमिकीनीप्रहलादपरकृपाबहुतसनमानि २३ सोरठा सुनिहरिकेइमिबैनक
दयासिंधुकृपालप्रभु बोलेराजबनेनबचनसुभगकामारेसन २४ चौपाई हेकामा

रिसुनहुममबानी जोतुमबचनकहासुषदानी सोसबसत्यहोइयहजानू गिरानुसार
सुवेरश्रमानू जेनबमनकाछुबसीनिरीसा सोईकारिहौमैहेसुरईसा बैरोचनसुनहेज
हजानी नहिमारोयहतेसुषदानी मैप्रहलादहिबरअसदीना बचनप्रबंधताहिमनकी
नं ना तिन्हिरेबंशमोऊजेहोइही बधोताहिजरपियनिकोही जोकोउकहेभुजाकिमिकाटी
नहांकहहनयहअक्षिपरिपाटी भुजछेदौमरगेजनहेतू अपरनकारनहे यषकेतू
अतिबलभारभूमिकहजानी भुजछेदेहैहैमरहानी भुजाचारराखीइहकेरी भवदुष
यहकहहोइनफेरी होऊपारषदमुख्यनुमारा अभयभयोयहसकलप्रकारा हरिते
इमिपायोवरदाना करिउप्रनामबहुतसनमाना पुनिअनुरूधसहितनिजबाला रथ
चढाइआनि उनिहिकाला ४५ छंद तिन्हिकालआन्यौसहितकंन्याकुंअरअतिसनमान
केकरिजोरिप्रभुकहअरपतनमनगरवगंजिनमानिकै ऊषासहितअनुरूधकह
लेचलेहरिसुषपाइकै गगननापनिजपुरविमलअतिसिरत्योसबसुषपाइकै ४६ होत
बाजाबजेअकेविधशंखदुंदुभीभेरि पुरवासीमहिदेवमिलहरषनगरबहुफेर ४७
प्रगेहैप्रभुबरुलियोहरषनपुननरनारि बषबरनरेसिहिजबतिदेहिवसनमनवा
४८ सोरठा कृष्णविजयकल्यान शंभुपराभवयुधयह गावहिचतुरसुजान तानरके
संततविजयभ ४९ कहेसोरठातीनि दोहासुंदरदसकहे छंदएककथ्यारसभीन कहेछंद
बरपंचइति ५० इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषायांनिबंधे त्रिसठमोध्या

श्री भा
१२२७
217

नृग

य: ६३ दोहा चौसठके अध्याय महि नृगनृप दुरित मिटाइ बसेउ अंसमहदे बिवर क
हिहैं कथ्य बुझाइ १ भूतिभाग पभोगादि मद हन करिकै द्रिग हीन तिनहि सिषाप न रे
महहरि नृगभूपनि मिसकीन २ चौपई सुकमुनि बोले बचन अनूपा सुनहु कथा चित
देहे भूपा इक समै जदुभौन कुमारा नाम प्रद्युम्न सांब गुणभारा चारुभानु गद आदि
कसाथा बिहरन गे उपबनन रनाथा क्रीडा करी बिबिध सुषरीती भयो परस्रम न
लपरि प्रीती ढौंढत गए उपवन के माही मिल्यो कूप निहि महू जल नाही क्रकलास
परयो निहि ठाऊ भूधर सिसौ लषि चित चितसनि चाऊ ताहि काढिबे कहु सब लागे रज्यावेन
चिनमन अनुरागे भीतर पोहिवो लरस भीने बांधा चरमन तुगहि सीने करयो जतन न

नौं

बहु निकसनि सोई गिरि समदारिल सकै नहि कोई तब सब हार कलम पहि आए सभा
चार सब प्रभुहि सुहाए तहां आइ भगवंत अनेना देष्यो जेनु पराइ सबै ना बामपानि
सें सो गहि ताहि बाहर परयो आइ छिनमाही प्रभु कर परस पाइ सो जेतू भए उदिब्य
बपु भूपन रेतू सुरव सु अनेक बिधि नाना पहिरे बसन अमोल सुहाना जानि तू
ऊ प्रभु बूझि मन माही लोकरीत कौतुक चितचाही ३ दोहा महाभाग तुम को अहो सु
दर समरूप लषाइ पहिलो बपु किहि करम नेहि लह्यो कहो मोहि चाहु ४ सोरठा
निजमति कहीयं बनाइ सुमन जोग पजो नानिये देषि भयो चितचाइ याते पूछत है
तुम्हहि ५ चौपई इहबिधि प्रभु पूछयो जबमाही जोरि पानि बोल्यो नृपचाही हे प्र

217 A

सुहीनवंधुजनपाला भयोएकइक्ष्वाकनृपाला तनयतासुमेन्दगअसिनामा करिउ
करममैसवगतिकामा रानिनिकीगननाजिहिहोई नामहमोहगननहैकोई कव
हुकजोप्रभुस्त्रवणनमाही परीभनककैधोअसिनाही नाथपरंउकहतसकुचाऊं
तुमअखिलेसवसहुसवठाऊं बुधिआरिसाछीसवकेरे कतपुराणइमिकहसवटे
रे तुमतेछपीनरंचकुवाना तद्यपिकहोसुनिमैजननाता भूमिरेनदिविउडुगनजेते
वरषावूंदकहैधोकेते इतनीधेनुविप्रकहदीनी पूजिपायवहुविनितीकीनी त
रुणीपयपगुणसीलसरूपा कपिलावत्ससहितसुररूपा कंचनअंगदकूलसमे
ता दयीविप्रजिहिसुभगविवेका गुणअरुसीलसुभगआचारा दूषितकुंदवीवहु
पारिवारा रहितदंभुनपरसतसवकाला अतिउदारचितपरमकृपाला ६ दोहा ग्रे
सेद्विजवरनतरुणवयनाहिवहुनसनमान ईर्षवैरविधसमयलषिदेसकासगुन
जानि ७ चौपई कंचनगोछितसदनअनेका रूपगयकन्यासहितविवेका तिलि
गिरिसिज्यावसनअमोला रत्नपरीछदवसुअतोला रथअनेकसवसाजसमेता
दयीवहुतमैकृपानिकेता कवहुककोउइकद्विजकीधेनू भजिआईममघर
कसुधेनू मैअजानतिहिविनुपहिचानी दईअपरद्विजकोसनमाने सोनि जगो
हसनालेनाही पहिलोद्विजमिमआरगवाही वोल्योइहतौगोहमारी तूंकिमि
लेसलुरेअविचारी तववहकहनभयोरेमूढा वोलतकैसमोहिअरूढा येहमम

श्री भा
६ २२८
218

धेनुन्रपति मोहि दीनी कहत कहा कछु मति भई हीनी करत बाद इमि रोऊ महि देवा भरे
तुरंत क्रोध भूसी हरि सेवा आये चलि मो पास रैं भूपा भरे क्रोध अति लही यन अंता मो सन
वचन कहत रिसमाने जद्यपि मै अति खेरि समाने नहीं दीनी नृ हैरें भूपा दैकरि लेहि
परहि भव कूपा सुनत मोहि भ्रम भयो नघोरा परयो धरम संकट मन मोरा अनुनय उ
भय विप्र की कीनी छिमि करहु निज सेवक चीनी ८ दोहा लेहु लछ गो विमल वर
देहु एक सुख मानि निज किंकिर मोहि जानि नृप कृपा कर हु सुख खानि ९ सोरठा मै
अजान मह कीन मोहि विचार इयनि रयते गिरान मम मग हि लीन कहि न लागि द्विज रोस
जुत १० चौपई लेउ न लछ लछ दे यारी इमि कहि मो द्विज भवन विचारी अपर विप्र
कह अस सुनन लेहू यह ग्नि जधेनु नहि लेर कूं इमि रोऊ कहि के गनि जग हा मो मन भ
यो बहसंदेहा काल पाइ मम पुर जव भए ऊ धर्मराज मोहि पूछन भए ऊ हे नृप प्रथम
असुभ करि भोगा कै सुभ करि हो कर हु नियोगा नहि तव दान धर्म करि अंता देषहु
सुभग लोक सुख बेता तब मै कहा रे व प्रतिवाली प्रथम असुभ भोगो सुख रानी पतन
होहु उ नच चनउ चारा कृकिलास नन भानु रमह मारा इ ब्रत वमहि रव हमारे रयोरा
नलिहि अति सन नकारे तवकि करमि मन कम वानी निहि कारन वहु सुधि न भुलानी
तव दरसन की आस मोसाई रहि उ काल बहु मै इह ठाई अहो भाग्य मम पुन्य अपा
रा तव दरसन पावा इह बारा मम लोचन गोचर किहि हेनु लख्यो न पुन्य प्रभाव नि

218 A

केनू २२ दोहा योगीजनवहुजतनकरि हृदयकरहितवध्यान सोममहृदिगायघनाथ
तुमसवकरुनानिधान २२ चौपई जयतिजयतिजयदेवमुकंदा जयगोविंदचंदमु
षकंदा जयरमेसजयजयगुनसागर जयजयरिषीकेसवजनागर पुरुषपुरान
दीनहितकारी जयवृजेसअच्युतगिरिधारी आपसुरेद्रजाऊं सुरलोका नवहरसन
तेभयोअसोका सुरपुरनरतनजहजहजाऊं निजकरमनवसदेहगहाऊं नवपदकं
जसदादिनराती रहोमोरमनअसुरअराती आसिकहिवहुरजोरिजुगहाथा प्रभुपद
कंजधरेउमाथा जगसंभवकरताजनत्राता नमोनमोहेममसुषदाता हेपरव्र
ह्मरूपसुषदायक अमितशक्तिहेजदुलनायक नमोनमोहेकुंजविहारी अधीस्व तुम
नेकवकीसोमारी इमिकहकस्योपुरछनलीनी आपसुमोगचल्योरसभीनी वद्रि
विवानसुरपुरचलगइऊ सवकेदेषितअचरजभईऊ श्रीभगवंतअमेनकृपाला
वोलेपरिजनहितनरपाला हरिवृह्मन्यदेवजनपालक राजनीतसिषवतअरि
साल्क २३ दोहा व्रह्मअंसअमितसहजगरंवकहूजोपाइ अहेअग्नितेप्रवल
अतिधुअनप्रालधुदिजाइ २४ सोरठा तेजवंतजेकोइ ताहूकोअतिहसहयह
रपमानीजेकोइ तिनकौयहकैसपचै २५ चौपई गरलषाइतिहिप्रानविनासू
निकटरहेतिहिहोयनकासू अग्निहोइसमनाअुरे व्रह्मअंसविषनेइयकारे क जल
रैसमूलसकलकुलनासू वचैनसोजोरहेदिगतासू हालाहलविषगनोमनाही

श्री भा.
६२२९
219

जासु निवारन है जग माही ब्रह्म अंस सविष कहि निसु भाए जासु सो निविधि नहि नवनाए
हि व चारु चार द्विज अंसा नहीं देव अंस कहत प्रसंसा पुरुषानी नि आगति चलि जाही
सहहि कल्प बहु जमपुर माही हठि करि जो द्विज धन को ऊ हरई तासु पितर रह संरौरव
व परई खल विछले करि जमपुर वासा सहहि निरंतर बहुविध त्रासा भूप भूप किंकर
जे कोई बुध अंस सइच्छा करि जोई निरय वास इच्छा तिन चाही जिन अंसी मन में अव
गाही ते अति निअ श्रम महा प सु जानू निरय पात तिन नहि पहिचानू ए दोहा व्रति हरे
भू देव की अघ बाध न हारि लेत हरन करे द्विज दुखित चित निसि दिन विकल अचेत
१७ सोरठा अश्रु पानि निहि होत तिन ते भीजत भूमि रज तितने वरष उद्योत सहि
हि निरय सठ मल हुवै १८ चौपई आपु रिमो परि दियो जो कोई विप्र विभ्र हरि लेन र जो
ई सा हि सहस्र वर्ष मलो पानी विष्टा कृमि मित्र है सुषमानी पाइ पराभ वषु नभा रानू
गहि अन द्विज धन भाजन नाकुल द्विज अपराधि सहिय सभ भांती पुरुष मार जे रह
सुहाती न दपि जाइ गहि ये पर तास देहि अना गम दुख जो आस निमि मे द्विज पर
ह जन करि ऊ आयसु नासु सीस नित धरि ऊ निमि नुमस तन तरि ज सन्नमाना कर हु प्र
नाम म वचन प्रमाना अपर भांति को ऊ करहि विचारू तौ मे रहु वस सब परिवारू हू
रै विप्र धन नर मति मंदा सहै निरय दुख अति सैगे दा विनु जाने नगरा धन माही
विप्र धेनु एक सहज न हाही तासु अवस्था सब तुम रेषी प्रजाग हहु मम बचन वि

219 A

सेषी द्विजकुल द्रोह देव मम जानू सुधा वचन मम करहु न मानू २९ दोहा पुरवासि
न प्रति वचन दूमि कहे हम समुझाइ पुनि पठै निज भवन महँ गए नाथ सुख
पाइ २० कहे दोहरा सात वरस सुभग सोरठा चारि चौसठिके अध्याय महि कस्लक
षा अघहारि २१ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे स्कंधे भाषायां चतु
षष्ठतमोध्यायः ६४ दोहा पैसठके अध्याय महँ कथा विसाल अनूप वरन श्रीसु
कभूप प्रति प्रभु भनति हि अनुरूप १ श्रीवल गोकुल जाइकै गोपीजनके संग क्री
डा करत न आइ है रवितन याम इ भंग २ यह सब कथा वषानि है मुनि अति कृपा
निधान केवल हरिरस मैं मगन करत जीव कल्यान ३ चौपई हूनर यए कदिवस
मन आई वल भूरथ चढि चले सुभाई व्रजगोपन देषिन के कामा पहुंचे जाइ नंद के
धामा गोपी गोप देषि सुषरासी मिले रहसि सगरे व्रजवासी चित उतकंठा प्रेम अ
पारा देषि नंद कहहु सुष अतिभारा मान विना पग परस प्रनामा कर्यौ भली विध हे सु
षधामा आसिष दीन नंद वहुभांती हरष लगाइ लीन पुनि छाती वहुत काल रषा
मम करहूं भ्रात सहित आनंद सुष भरहूं दूमि कह अंक राषि सुन पारा सीचो नय
नके न जलधारा पुनि जो गोप वध वलि आए तिनको वरनत कियसत भाए जया
जोग मिलि सवहि कृपाला गोपवंद आए तिहि काला करि गहि हसन हसि सुषमा
मी इहविध सकल गोपसन मानी हेस्मर सहित अति चिन जासरू नज्यो सकल

श्री॰भा॰
१२२०
२२०

जिनभोगविलासू गदगद प्रेमभरे मृदुबानी बोलेगोपसहित अग्यानी हे बलनृप्रि
यबंधु हमारे कुशलअहेसबजनपरिवारे ५ दोहा सहितदारसुतपुरबसतहम।
हिजानिप्रियहीन कबहुकेसुमिरनकरतहरि वनलीलाजिनकीन ५ सोरठा भली
भईबलवीर देवयोगनेकसहत दुरदसकलजेधीर क्यों वेधुसुषसबलहे ६
चौपई देवयोगअरिसकलविनासी बसेजाइतुमपुरसुषरासी बलदरसननेतबदेदोअ
नेहा गोपनसुषअतिपानेरकेरा बोलीबचनमंदहसिगोपी सदारहितजेहरिरस
ओपी पुनिरानीबल्लभनभागी कुशलअहेहरिनिजजनभागी कबहुकनिजपितु
मातपियारे सुमिरतहेनिजसषिहिहुलारे हमननमनसेवाअतिकीनी कबहुक
सुमिरतनहिसुधिलीनी मातपिताबंधुनिजभामा पतिअरुपुत्रसजनसुषधामाजि
नकेहितहमसबकहत्यागी मनबचकरनितिहिपरअनुरागी महादुसहलजाकुलत्या
गा सोकहमननाविलबनलागा सोहमकहहरितजिगेऐसे कुसुमनगंधगहिमधु
करिजैसे गनिसमेहअनितहरयकठोरा बचनमधुरजिमिकुहककनिमोरा चलनी
बारकलकलमिलतबदी राषेयोकिमिनहिहरिकहुजबही जोकहाविइमिकहहुअ
नेता हमविश्वासकीनतुध बेता तुमविश्वासकीनकछुनाही नहीसुनियहमक
हाहुबयानी ७ दोहा मदमेदसुसकानमय प्रेमलपेटेबैन कौनकरेविश्वास।
नीगनिरखबलसोमैनेन ८ सोरठा अपरडदीदकुबोलि अतिकतबूवचननिठुर

226A

कहैनहीयकीबोलि पुरतियकिममानहिवचन ९ चोपई बोलिउठीइकुअपरस
यानी हेसखितूं अतिपरमसयानी गहैनकिमिवानीकहुतासु मुसुकिमेरहतहिमन
लैनासु वंकविलोकनिजिहिननहेरी चितनकरैतिहिविकुलघनेरी चित्रकथाअ
निकयनप्रवीण पुरवनतासवकिइयोअधीना बोलउठीइकपरमप्रवीना किमि
नेनासुकथामनरीना अपरकथाकछुकहैनभोरी कृष्णकथासुनिसुनिभईबौरी
जिमिहमबिनुउनकोंदिनजाई तिमिहरिबिनुहमधोसगवाई अहैपरंतुबीचयह
मानू उनकोंसुखहमकोंदुखजानू दिननौरहेनरोवयोआली चल्योजातदुखबिनुव
नमाली इहिविधिकृष्णविरहरसभीनी कृष्णचारुगनिहसनिप्रवीनी वंकविलो
कनिहासिमइवैना मिलनअंकभरिकारिछलसैना प्रियगुणसिमरसिमरमन
माही रोइउठीसबननसुधिनाही नवबलरामताहिसमुझावा कृष्णमनिरेसभ
लीविधगावा नानाविधअननयजुनवानी कहेकृष्णसंदेससबयानी १० दोहा मधु
माधवदेमासबद्दरहेनहोबलअपु निसिमोपनकोंहेतसुखमेटविरहसंताप ११
सोयदा नहकोऊकरिसंदेहि कृष्णकरीरतिजाहिसो बलकोधरैनएह नाहि
संगरसमासकछु १२ चोपई नहोसुनहुउतरयहअैसे करयोविलासरीतप्रभुजे
से कृष्णविहारसमैजेकोई अतिसेबालअवस्थाजोई अपवाजनममयोन
हिजासु तिननेकियवलिरेविलास इकुरिननिसारेविशारिभाशोभा फूरणाक

श्री॰भा॰
६२२१
221

ताविपिननवभोगौ ॥ अतिउजलसवभूमिसुहाई जमनाकूलसुभगफलदाई
कुसुमगंधजुतसुभगसमीरा त्रिविधगुणसहितआपुवलिवीरा रमतभयेतंहश्री
वजराजू गानवाघनहुअमितसमाजू साधुवारुलीवरुणपठाई सोचलतहउ
पवनमहिजाई तरुकोटरतेचलीजुधारा अतिसुगंधचहुंदिसाप्रचारा तासुसु
गंधपवनजुतपाई गगआपुवलनृतिहिताई करतेपानसवजुवतसमेता वनवि
चरतिप्रभुकृपानिकेता ॥ २३ ॥ दोहा मदविह्वललोचनअरुणस्वर्णवेजंतीमाल
एकस्ववणकुंडिलललितगलसोभितवनमालि ॥ २४ ॥ सोरठा मुखपंकजकनस्वेद
अतिश्रमजसोभावनी रमनभयेतनघेर कालिंदीकहिंटेरिप्रभ ॥ २५ ॥ चौपाई जल
कीडाहितनाथवुलाई लखिउनमत्तसोनहिंचलिआई नहिंआईजवजानानाही
रचकरोसआनिमनमाही वंधोहलकरिहलधरवाही करसोंअनादरजिनचित
चाही रेपापिस्वकरौसतखंडा कोवचावैमोहिंदनिजदंडा इमिवहुवचनकहीतिहि
काला पडयरोसजुनहृदयकृपाला सहमातकतिकंपतनभारी रामरामहेरा
मधुकारी आइगिरीपदपंकजपासा बोलीदिनकरसुधाभुराला महावाहुवलि
रामगोसाई मेंअवलामतिमंदसदाही नहिंमवबलेजानामेंस्वामी पाहिपाहिहे
अंतरजामी मैंअजानतवकियअपराधू भक्तपालतुमवोधअगाधू मेप्रसन्न
नचरणअनेता छिमाकरिमयवहुविधवंता सुनिवानीकरुणारससानी

छोड़ि दियो जमुना सुखमानी १६ छंद सुखमानि दियन व छोड़ि जमुना आपुन हम जनकिये
सब जुवति सह जलि केलि करि इमि राज जिमि करनी लिये फिर निकस बाहर पहिर भू
षन सुभग जे कमला दिये पुनि नील वसन विराज अति से पुरट माला वर हिये १७ सु
भ पीत चंदन अंग भूषित नलसित अति सोभावनी इह भांति करत विहार नित प्रति व्रज
वधू रस महुसनी माधुरपना लखि लाल की कुल कानन हि कित हूगनी द्वै मास इह
विध रास क्रीड़ा करी नंद नंद कुकलमनी १८ दोहा गए मास द्वै रास निसि करत निरंत
र केलि भई एक नि[illegible] सतिय गनै रही सकल सुख ओलि १९ सोरठा अन्न हूं न मु
नाभूप वलि पौरुष सुमिरि अहे रही महा निहिरूप संकरषन के धारजह २० कहे
सोरठा पांच वर या एदो हरा जानु छंद कहे दे विमिलें वर यह अध्याय प्रमानु ११ इति
श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे रास भाषायां निबद्धे बलदेव विजय जमुना क
रषण पंचषष्ठितमो ध्यायः ६५ दोहा षट् अधिकी अरु सठि को यह अध्याय अनू
प नाम पौंडुक भूप इक तिहि मारि है सुषरूप १ कासीपति को मित्र वर नाम सुदछ
न जासु कृष्णदेव तिहि मारि है चल जै है पुरु तासु २ इतनी कथा प्रसंग सब यह अ
ध्याय मझार मुनि कहि है नरई स प्रति प्रभुगुन करि भव पारि ३ चौपई हे नरप सुन
हु कथा यह पावनि रोग दोष भव सोक नसावनि जब बलिदेव गये व्रज माही १
है मास द्वै तिन के पाही नृप पौंडु नव दूत पठावा सो तुरंत श्रीपुरु चलि आवा सभा कं
मैं

सोऊ बैठे जहँ नाथा आइ दूत तव नायो माथा हे हरि मम न पकरी जु बानी सुनिय नाथ मैं
करौ च धानी बासुदेव तुम प्रभु जगदीसा प्रभु अवतार लीन सुरईसा इमि सेवक हे अग्र
जे ग्यानी नव अस्तुन यह सुधाव आनी निमि बाल कइ कन पति व नाई येलाहि सेना
सा न सुख पाई निमि तुम बासुदेव अवतारा असत वार सब करहि प्रचारा बासुदे
व मैं श्री भगवंता जग अवतार लीन हित संता सकल भगत सुखदायक एकू बासुदे
व मैं लघु हु विवेकू तुम मैं मिथ्या नाम धरावा तजहु बेगि कोऊ कहन न पावा अरु
मम आयुध जो तुम धरहू मृढ नरं तनाहि परिहरिहू कै मम सरन बेगि चलि आऊ
कै लेग्राम रहु सनभाऊ इहि विधि दूत कही सब बाती अति विभ्रम सब अवगुन सुख
दाता सुनि यह वचन सभा महं जेते हसि सकल नृप आरि कतेने ४ दोहा तिहि पीछे
भगवंत प्रभु बोले हसि मृदु बैन छरिहौं आयुध सकल सठ तव कूहे हे चितेयेन ५ सोर
ठा मूढ वकन निहुरीति करिहौं सोई मैं सत्य सब तव मति भई विपरीति कालनिकु
टि आनन नहीं ६ चौपई सर हूतन तव तन अवनि मंझारा गीध कंक वटक करहि वि
हारा स्वान सरन करिहैं तन मोरा जानहु सत्य मंद पुन मोरा सुनि प्रभु वचन दूत
उठि गएऊ समाचार निज प्रभु सन कहिऊ इहाँ कुमार यसा जनुरंता काशीगत
नाथ भगवंता कासीपति लखि प्रभु उनयोगा नुरत महारथ बदि सो भूपा निक
स्यो एक वाह हरसु बरूपा लै करि अपछ छुहिनी सेना प्रभु सन मुख आयो फलले॰

 नियोगा २

222 A

ना तासुमित्रतिहिपीछेरहेउ त्रिगुनसैनलैतिहिहितचहेउ कासीपतिहिदेखिभ
गवंता हसेकृपानिधिजनसुखवंता दारुमयीभुजसुंदरचारी शंखचक्रगदाआयुध
सुभधारी श्रीरेखाछतिसुभगवनाई वनमालासुठिसुभगसुहाई कंठसुभगमनि
छविमयनीकी पीतवानदामिनिद्युतिफीकी पन्नगारअंकितध्वजजासू सुभगअ
मोलआभरनतासू मकराकृतकुंडलअतिसोहन कपटवेसशिवअरिमनमोहन
७ दोहा देखिआपनेसमसकलवेसिअलौकिकरूप दारुमयीसवसाजिवरवि
हसेहरितवरूप ८ चौपाई काशिराजआवनहिंगुरंता हरिपरिद्वारेशस्त्रअनंता
हरिसवशस्त्रतासुकरिदूरी काशिराजवलमारेउभूरी हयगयस्पंदनवीरअ
नेका हनेचक्रकरिवचोनएका निमिषुमांनसवहनेकृसानू प्रजारिविधतिहि
समजानू तिमिचतुरंगनसकलविनासी कृपासिंधुप्रभुहरिअविनासी सोरणभू
मिसोहवहकैसी शिवगणकीद्रुघलसमजेसी काशिराजहलहलिजदुनाथा
रथगजवाजहनेइकसाथा हसिवोलेहरितासनवानी भोभोकाशिराजअ
भिमानी तुमजोदूतमुखकहावखानी त्यागहुशस्त्रहमारसुजानी वासुदेवजन
नामधराऊ वेगिआरनमेरीचलिआऊ सोमैंसत्यकरौंनववाना द्वारउशास्त्रक
रऊसघाता जौतुमसौंसंग्रामनकरिऊ नवतूआसिरनआनिमेगहिऊ इमि
कहिकृस्नविषमसरलीना विरथीकाशिराजकहकीनी ९ दोहा पुनिगहि

श्री भा
६२२३
223

चक्रनु तासु सिर काटेयो श्रीजदुनाथ जिमि पाकारसु वज्र गहि खंडहि गिरि एक सा
थ ८ सोरठा पुनि सुंदरीक कुलीन काशिराज शिरा नुरत ही पठे तासु ग्रह हीन लै डारयो
तिन नुरत ही ११ चौपाई इमि हरि निज अरि नुरत विनासी गए पुरी निज सब सुखरा
सी हरष सकल सुर हनि उ निसाना करत सिद्ध मुनि हरि जस गाना करि अरि भाव नि
रंतर रूपा करत ध्यान सहि अहि सुख रूपा भए उ सकल अघ संचत नासा पायो हरि
पुर सहि जनि बासा काशिराज सिर निज ग्रह द्वारे पर्यो देख पुरजन परिवारे कहा कौन
को सिर यह आई कित उ आयो इनि मे चिन चाही काशिराज सिर जब पहिचाने पुत्र रा
रस बन्धु अति अकुलाने रोवहि पुरवासी नर नारी अहह नाथ तुम कीन दुखारी नाम सु
दछिन तनु महा ता रस पितु परिलोक क्रिया करि आरस निज पितु अरि मारो हढि जब हो
पितु रिन उरन न होउ मैं तब ही यह निश्चय करि मन अनुमाना शिव पूजा करि विवि
ध विधाना आसुतोष शिव अति सुख मानी मांगु मांगु वर इमि कहवानी तब तिन।
वर मांगा अवचारी मारे पितु अरि सिर हने सुखारी सो उपाय कछु देहु वनाई यह
वर मांगो अपर न काई १२ दोहा दक्षिणाग्नि कहँ सेवनं करि अभिचार विधानु रि
लि जन करत भरेव वर क्रिया सिद्ध सब जानु १३ सोरठा सो कृत्या नु तव काजु साधिहि लै
स व प्रथम गगन जेहि जस सेवक राजु तिन ते अपर जु विमय कोउ १४ चौपाई शिवया
सा धरि सिर यर मरदा करन भयो सोइ मोहि अरूढा कृत्या रव पारि करि अभिचारा आ

हुनदीनीविविधप्रकारा ताहिकुंडितेअग्निसरूपा उठ्योएकअतिविकटकुरूपा उग्र
दंतअतिभ्रगुरकठोरा नयनज्वालवहुतेजनघोरा भयाभयानिकमुखअतिघोरा रस
नाचपलचलतचहुंओरा तपततामृसमसिखासमूहा मनहुअरुणव्यालकरिव्यूहा
कुटिलिशूलअतिघोरविसाला मानहुभिजगनासहितकाला तालप्रमाणचरननिसो
धायो संगभूतगणअवनिकपायो जाइद्वारिकाचहुदिसघेरी अग्निज्वालकोसकति
हिफेरी पुरवासनिआवतितिहिदेखी भयोकंपअतिहृदयविसेषी जिमिवनदाहदुषी
मृगजाती तिमिपुरजनव्याकुलसवभांती वैठतसारसभामहनाथा तहांगएसवम
नहुअनाथा त्राहित्राहिअषिलेसगोसाईं अग्निदाहचहुदिसापुरआई २५ दोहा पुर
जनवानीविकलसुनदेषितासुननत्रास अभयकरोगोजनडरोवोलेरमानिवास २६
सोरठा अंतरजामीईस सवघटिव्यापकनाथहरि जनत्राताजगईस शिवकृत्याही
यजानिप्रभु २७ चौपई ताहिनिवारनतिहिपहिचानी विकटचक्रठादेतिहिजानी
आयसुपाइचक्रतिहिकाला चल्योवेगिजिहतेजकराला कोटिकोटिरविसरसप्रका
सू प्रलयानलसमहैवलजासु दिसाव्योमरवितेजप्रकासा भजीअग्निकृत्याडर
त्रासा चक्रतेजकरितापितगाता काशीपुरीगईअकुलाता काशिराजसुतमहतपु
रोधा जार्योतुरतहियेकरिक्रोधा पीछेगयोसकहरिकेरा सकलपुरीजारीतिहि
वेरा सहितसभाघरिअटाअटारी गोपुरगलीबजारअजारी हयगयरथभंडार

ॐ

श्री भा.
१२२५
224

समरहु अन्नसालवारे धनत्र्युहा उलटि पलटि पुर मल्लजराई गए ऊचक्र फिर जह
जहुराई कृष्णचरित्र पवित्र सुहावनि सेचित अघमल मल्लनसावनि अद्भुतजनय यहसु
न जे गावहि ते अनयास परमपद पावहिं २८ दोहा कृष्णचरित्र विचित्र यह अघवन र
हन समान रामकृपा कलिकालमहि इहिसम अपर न आन २९ सोरठा त्यागविषयर
सभोग भजहु कृष्णपदकंजवर फिर न वनिहि असियोग अव विनु मांगे ते लहो ३० सु
भग दोहरा यह कहे पंचसोरठा जानु यह अधिकी यह स्वादि को सुभ अध्याय वखानु ३२
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबंधे पौंडुकवधषट्षष्टि।
तमो ध्यायः ६६ दोहा साठिसात अधिकी गनहु यह अध्याय अनूप नामहकयावि
विध वरवलि मरि विमसुखरूप १ रेवतगिरि कहुँ जाइ बल नेह करि आसवपान रमत
युवतिजन संग लेमरि है द्विविद सुजान २ इतनी कथा पवित्र यह इहमहुँ कहुँलव
खानि श्री शुक परम कृपाल प्रभु नृपहि रसकीय जानि ३ चौपई मुनि मुनि वचन
बोलन वगुपा हु मुनि मो परि कृपा अनूपा पुनि वलिरेवचरित कछु मोही कहिय
नाथ पहु मा चो मोही सुनि मृपनि वानी रससानी बोले मुनि रसगनिहि जानी नर
कासुरको मित्र नरेसा वानर द्विविद जानि सवरेसा सो सुग्रीव सचिव वलिवेना ता
सुमैर भ्राभानु धवेना सो निज सखा केर उपकारा करन चहे मतिमूढ गवारा कृस्न
चेद्रसो करि अरिभाऊ इति उतप्रजाना सकारिन्वाऊ नगरग्राम पुर आकर घोषा

224 A

अग्निलगाइकरैपरिहोषा कबहुकगिरिउपारिअतिभारी डारिदेइपरजननरनारी
करैनिरंतरअतिसिसमानी सयावैरिसमुझैअभिमानी ४ दोहा कबहुकजाइद्वार
वतीआसपासजोग्राम तिनकहुपीडारैइअतिकोकरसकसंग्राम ५ सोरठा अयुत
नागवलताहि परमभयानिकवीरवर देषिनहीभजिजाहिसनमुषकोठाढोरहै ६
चौपई कबहुकजाइजलधिकेमाही दोऊकरजलउलेचैनरपाही देइवहाइततटन
केग्रामा रिषिआश्रमभंजैअभिरामा कंदलीपुसपवाटिकाभंजै अग्निकुंडदेवीव
हुतंजै जहमुनिकरहिजोगजपजागा तहांजाइमलकरइअभागा नरनीरहिनलेजा
एउठाई गिरिवरगुहाधरैतिहिजाई तासुद्वारधरसिलाविसाला मूढकरैयहभां
तिविहाला एहिविधगएवहुतदिनवीती करनिफिरयोइतिउनविपरीती एकदिव
ससुनिगानरसाला देवनगिरितेहगोकपिवाला तेहवैठवलिदेवहिदेषी कंजमाल
हियसुभगविसेषी अतिकमनीयसुभगसवअंगा ललिनाललितलियेवजसंगा
पीयवारुणीमदभरिलोचन करतिगानरतिपतिमदमोचन सोभिमानवपुजनुद्रमि
राजू करणवंदनवहुंदिसजनुराजू ७ दोहा सोठिसाषामदगमूढमतिचढ्योवछप
रिधाइ तरुकंपितकरिकिलकसासवदकियोकिलकाइ ८ चौपई देषिताशु
अतिवंचलताई तरुनीजातिचपलप्रकृतिगाई हसीसवेइकवारपियारी कपिकी
नकदेषितभईनारी भूयाछेपकरैकिलकाई निजगृहसवनिदेषावेधाइवल

श्री·भा·
१२२५

नूकेदेषितकपिमुद्धा कोतकवहुविधिकियमरुद्धा वलदकपाहनफेर्योनाही गयो
वचाइछलीगुलजाही विनुछलकरि वलदिगस्योगएऊ मरिराघटिसोफेरतभए
ऊ महाधूतहसिकोपकरावे किलकिलाइदतिउतसोधावे पुनिनारीनकेवसनय
नूपा करगहिफार्योकपिअनुरूपा इहिविधिकियोवहुतअपकारा तववलकहुभा
योसअपारा हलमूसलकरिगहिजदुवीरा उठेआपुअरिगंजनधीरा सोकपिद्विवि
दमहावलवाना तालपानिगहिआऊसिसाना आवतहीतरुवलसिरडारा वहुरना
दकोमिसिअतिभारा अविननरुवलदेषविसाला गहिलीनियोवीचहिवहुसाला र
ताहा मुसलएकनिहिसिर हन्योवलीरुधिरवलधारि जिमिगेरुकीधारवरगिर
तेगिरीसमुद्धारि ९० चोपई सोप्रहारनहिमनकछुआना अपरवृछलेचलुवलवा
ना आवतहीवलक हतिनमारा वलशनखंडवृछकरिडारा पुनिएकअपरको।
धकरिआनी वलसिरहन्योतुरतअभिमानी सोसमखंडकीनजदुनाथा जुद्धकर
तइहिविधिकपिसाथा जोजोतरुआनेकपिमानी सकलछेद्योप्रभुसुषमानी
इहिविधिवलरतवृछकरिनास विनुतरुविपनभयोवहुपास तवकपिरिसकर
सिलाऊपारी वलपुरवरर्ष्योवलकरिभारी सोहलधरिचूरणकरिडारी विनु
प्रयासवहुवारिनिवारी मुष्टिजुद्धपुनिकरियोकपीसा तालप्रमानवाहुजिह
रीसा मुष्टिवकवलिकेउरमाही मारिसिमरमहामलयौही जदुपतिभोकहेमो
नो

धविसेषी देऊकरिमुसलडारितिहिदेषी कंठवाहुकेवीचसुलागा कंपितह्वैगिरिअ
वनिअभागा २२ छंद गिरिपर्यौमहिपरविकलतननमुषरुधिरधारावहुचली गिरिग
हमकंदरजलरछितिसवघरभगेरिगानवली जिमिपवनप्रवलप्रतापतेजलरासमैत
रुनीहली नवभयोजयजयसवदनभसुरकहैप्रभुकीनीभली २२ दोहा वजीव्योम
वहुदुंदुभीसुमनवृष्टिझरलाइ गावहिंसिद्धमुनींद्रजसअतिप्रसन्नसुषपाइ २३ दु
ह्मास्योविधिद्विविदकपिजगदुषदायकजानि परिजनसवअरुमुनिकरहिंपुरगम
नेसुषमानि २४ कहेदोहरापांचवरएकछंदसुभरीत अपरसोरठाएकसुभेयहअ
ध्यायपुनीत २५ इतिश्री भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषायां द्विविदवधोना
मसप्तषष्टितमोध्यायः ६७ दोहा अठसठकेअध्यायमहि सांवुसुतकुरुसाथ रथी
पांचमिलरोकहेसांवहिगजपुरनाथ १ नाहिंछडावनहेतुकरि औअनंतसुषमानि
जैहेंवलपुरहस्तनाकरषणकरिहेंजानि २ सोरठा इतिनीअनूपह्वैहैंइहअध्या कथा ६
यमहि अघहरियहसुभरूप कलिमहअपरनमतनकछु ३ चौपई वोलेमुनि
मगुए नृपसोमृदुवानी स्वकथकरहुचितिहिजाही दुरजोधनकीसुताप्रवीनी नामलछम
नाअतिरसभीनी पितास्वयंवरकियचहतासू सांवहर्योतिहिसुठकरआसू सु
निकौरवकोपेसववीरा कहनलगेवानीरणधीरा अहेनेडरयहवालकभारी
दुरविनीतिअनिसेंदुषकारी सवकोमाननमारियहएकू अतितिनिसेकैयहहरनवि

श्रीभा० ह० २२६ ११६

वेकूं हरि करि कंम्पा हरियो हमारी बालमहा अतिसै अपकारी बांधहु इहि सबमिलि
ननकाला दुरविनीत बालक उरसाला जो कोउ कहै यार व बलभूरी नहो सुनो बा
नी यहरूरी हम भूपति तिनको माहि हीनी भोग नहि सो छिति नृप नहि कीनी का करिस
कै सकल जदु जेते हमरी कृपाल हत सुबएते बध्यौ सुअनसुनि कै जदु सबही जो
कदाचि इति आवहि तबही भगन मंजन सम यो अपारा फिरि गे हे निज ग्रह तिनि वा
रा ४ दोहा इमि विचार करि अंधसुत करण सल्य रण धीर जस केतु भूरी स्रव बादुर
जो धन रन धीर ५ सोरठा सो व पकरि बे हेतु उद्यंत अविवेक निधि अपर एक
बल सेतु भीष्म अनुमोदन कियऊ ६ चोपाई देख्यो निज बांधव के हेतू आवत ये सब
कुमति निकेतू गहि कर दिव्य चाप अरु बाना सनमुख थयरो सो व बल बाना महा
रथी पंच असाधू हरि सो व कहै व सो व अवाधू बलेग हनेको कुरु मिल सारे घरो
घरा रहे हरि वारे इहि कहि सपदि गणति हि पासा बाण वृष्टि अति से दिय आसा
कर ल आयुध कि मशस्त्र प्रहारा नैनेक संकि उरु कुमारा जिमि मृग नृप दे बिह
रि बालू बकि न चिनव नहि हिहिसि जनु कालू रुचिर चाप करि सर संधाना वे धे कुरु
सब जे बल बाना कर नारि कियद्व रथी अनूपा महावीर बल बल बल अनुरूपा चा
रि बाण सर बाहु न्यारी रथिन एक सर हन्यो प्रचारी एक हि बार सो व सब काहू वि
गुवाहन की न्यो कुरु नाहू रथि सो व बल को रव जेते रहे प कित हू जित करिते

नं ५

नं

226A

ते पुनि कौरव सब सिमिट मुरे ता चारि रथी जे अति बलवंता बारह मिलि मारा हय चारी एक सारथी बाण प्रहारी एक जने छेद्यो धनु धाई घेरि लीनो इहि विधि बहु घाई ७ दोहा कर कलेस कुरु सकल मिलि हरि सुत विरथी कीन गहि बांध्यो मनव पास करि यह गम ने सुख लीन ८ चौपई समाचार जदुकुल सब जाना सुररिपु सकल नहां किय गाना उग्रसेन सुनि अति रिस माना कौरव प्रति रण उद्यम ठाना सैना साजि सजे पहरि सनाहू चरन नागपुर कहु चित चाहू समाचार बलभद्र पाये जब ही करि सनमान निवारे तब ही जदुकुरु कलह मान अनरीती बरज्यो सांति सहित करि प्रीती लै अबै हैं बालक हम जाई अस कहि निज रथ तुरत सजाई रवि सम तेज हि व्यर्थ जास गए हस्तनापुर बलि आस विप्र बृधि कुरु बृधि अनेका ग्यान बृधि स्तुति दिन यविवेका तिन हि समेत सोह बल कैसे उडगन मध्य निसाकर जैसे जाइ नागपुर उपवन माही बैठे बल सुंदर नरनाही उद्धव कह पठवा तुम जाहू अभिप्राय बल बिष्णु बहु बाहू गंधारी पति पै सो गए ऊ माथा नाइ अस कहत सुभ एऊ नह बैठे सब राज समाजू भीषम द्रोण करण जुराजू बल आगम कह वो सब पाही हरषे सब सुनि प्रीति उमाही ९ दोहा उद्धव को सन मकार कर मंगल द्रव्य अनेक बहु प्रकार के भेदिहि तुल्ली ने साहित विवेक १० सोरठा गए सकल बलपास जथा जोग पूजा करी गो अरघ्यो सु मरास अरघि निवेदिन पुनि किमो चौपई जे प्रभाव जानहि बल केरा जथा पिवृधि परमहि बहु वेरा बंधु कुसल सुनि हरषन गा

श्रीभा॰
द २२७

ता अनरूपछीडनिकीकुसलाता भयोपरसपरसुघरहिरीती मुनिबोलेबलदेवसुनीती
उग्रसेननंदनमसनभाषी सुनौतासुश्रायसुचितराषी सुनिविलंबलावहुजनभूली
करहुवेगिसवमिलतनफूली वहुतजेनेमिलतुमरकुवालू वधर्मनजिकीनकु
वालू वांध्योभ्यरयसुलंभनहिकीना श्रानहुवेगिचाहोजसलीना सुनिजदुनाथव
चनकुरूम्हढा श्रनिप्रभावमरमोहिश्ररूढा करिहियक्रोधवचनविपरीती वोलेकू
रकठोरश्रनीती श्रहोलषोश्रचरजयहभाई दुसहकालगतिकहीनसिराई सिरपर
वहनचहिनपरत्राना श्रनिश्रनीतसुनिसकौपनकाना करिविवाहहमसोजदुएते था
सनश्रसनएकभएते ते हमनिजसमकीनेसवकाहू जदुसिगरेकविकेनरनाहू २२
छंद नरनाहिकवकेभयेजदुसिरछत्रचामरढोरहीं वहुदंडभीयहश्रंरवसोमितेसं
पत्यचहुश्रोरहीं सुलेनसपुरदकिरीटसवकेकवहुकछुहमनाहिकरहीं श्रवधरहिंगे
हमरहिहेनदुवंसनपभूषणसहीं २३ नरदेवभूषणरयोतिनकोहमहुनहिनीकीक
री पयरेइकोमिमिपन्नगहिफलपावजसकरनीकरी हमनेलहेसुषसेपराजस।
राजन्हवनछविषरी तेऊदेनश्रासाहमहिश्रवगनलाजजदुगनिमनिहरी २४ सोर
सेनमसुनद्रोणरिमिलगहिराष्योहमवाल कौनछुडावनयोगश्रसिसकश्रारिज
मजाल २५ सोरठा नहिसमरथकोउश्राहि श्रानिछुडावेवालसोऊ मगपतिजिमि
गहिलाहिछुटनेनुकिमिजाहिदिग २६ चौपाई जनमवधननराजसमाजू तेनप्रना

227 A

पविभूतिविराजू इतनेमरकरकुरुसवछाके वचनपरुषवोलेअतिवांके कटुवा
नीयदुपतिहिवनाई गयेदुइसनिजग्रह सुषपाई कुरुकुसीलतालषिजदुनायक
सुनेवचनअतिसेदुषदायक छुभितक्रोधविनमुषहसिवानी वोलेजदुनायकसु
षदानी नानामरकरिछके असाधू नसनचहतनिजकुलनयपराधू चहतनसंनकव
हुमतिमंदा कूरकपूतसहितजगदुंदा देदुउपायअहैइहिलायक पसुकहजिमिहै
लकुटसुभायक जदुसवछुभितभयेसुनिवानी कसमरेवचितअतिअकुलानी इनके
छुतमेतिनकहुरोकी कस्योसोतकहवचनविसोकी एमतिमंदकलहिरुचिइनही
निजगुनतंजेनषलहहिकवही ममअपमानकीनइनऐसे वालवचनकोगहैनजै
से ममआगेअतिपरुषकठोरा अतिमानीसठदोषनघोरा १७ दोहा उग्रसेनकव
केनृपतिइमिवोलेसववैन सक्रसहितलोकपसकल जाहिनवैरिनरैन १८ सोरठा
जदुसमकोजगआहि अरेधरम्रिमदअंधतुम लजातमहिकाहिंभूलिगएउपकार नं
सठ १९ चोपई सभासुधरमाहैग्रहजासू किनआनीकिनकीनसुपासू पारजात
सुरद्रुमगुणसागर आनकरतजगभोगउजागर तेनृपआसनकेनहिजोगू देसठ
कुकद्धिगभामरोगू रमासेवपरपंकजजासू निमिषनतजेसदारहपासू तेनरदेव
विभूषनलायक नाहिनअहैइमिकहसठवायक जासुपारपंकजरजपावन लोक
पालसिरधरहिसुहावनि सुरसरिआदिसरतजगजेते तिहिरजपावनभेसवतेते

श्री॰भा॰
६२२८

नासुखरणरजनीरपभारी धारहिशिवविरंचजेभारी मैंशिरधरौकल्यहिंतासू सुजससा
सुखुनिवेरप्रकासू नेकुरुदियेभोगभकरही श्रसरकताकसनिरयनपरही पारस्त्राणहि
मकुरुसिरलायक श्रहोभ्रतमरपीयेसुभायक श्रनुचितगिरापरुखसाने कोनसहहि मति
समरथसुनिकाने इमिकहिरोसभरेद्विगराते हुरौंसकलकुरुवंशजहांते ॥२॥ दोहा उ
ठेहल्लायुधरोसिकरिमनहरहहिहिपुरनीनि धसिल्लहल्लाग्रबेचोरागरगजपुरश्रति
मरभीन ॥२॥ चौपई द्वारिरेकंइहिसुरसरिमाही जहांजेनुरविवचेनकाही बेंचतन
लं गरकेपभईभारी जिमिहलजानहिप्रचलवयारी गंगापतनदेखिनिजग्रामा गये
भाजिकुरुजहंबलरामा सहितकुटंबसरणगहिलीना श्राहिश्राहिप्रभहमनहिचीना
कंन्यासहितसोवकरिश्रागे करिविनतीप्रभुपायनलागे मूढकुबुद्धीसठहमभारी
तवमहिमाहमउरनहीधारी तुमकृतसृष्टिरचनपाला छिमाकरहुप्रभुदीनदयाला
जगसंभवपालनलयहेतू एककईसतुमकृपानिकेतू तारुजेत्रइदेवसबजगस्वा
मी सकललनचावहुश्रंतरजामी भूमंडलसबजीवसमेता भूधरसरसरितापतिजे
ता तुमसिरकनसमलसतगुसाई हेश्रनंततवलमितिनहिपाई श्रंतकालसबनग
संघारी धरतश्रापुनिजउरमिझारी शेषसलपकरिसयनकरंता सोतुमहीप्रभुस
हस्रश्रनंता तुममोकोपकरतहितलागी अबकोपचलतकुपथमगत्यागी ॥२२॥ दो॰
नाहिसिखावनदेनहितरचकरोषरिषाइ लाइपंथसुभकूरकहछमाकरनजदुराइ

२३ चौपई सर्वभूतमहिं करननिवास् वंदौतवपरसुषदसुरास् सरवसकनधरिवि
स्वनियंता वंदौतवपरहें भगवंता सरणपालहमसरणतिहारी प्रणतारतहरिहें अस
228 A रारी मदछलहीनहीनरससानी सुनिकौरवकीसुंदरवानी प्रणतपालजदुनाथकृपा
ला बोलेवचनसांतभूपाला धरहुधीरअवभयजनिकरहूं जुतपरिवारसुषीपुररह
हूं दुरजोधनतवराइजहीना कुंजरसतरिनअरूसाठिप्रवीना छाहसअयुतपुरटजुतसा
जी चंचलसुभगचालहियवाजी षटसहस्त्ररथकंचनसाजी रविशशितेजमहाछ
विछाजी दासीएकसहस्रगुनलोनी सुरकंन्याछविहोहिनहोनी कंठपदकभूषनव
रवानी कंन्याहिमरीनीसुषमानी कारिसनकारलईजदुनाथक साहिनवधूसुतसुंद
रलायक दुरजोधनसौंअयसुमांगी निजपुरगयेप्रेमरसपागी २४ दोहा समाचार
सवकुरूनकेवरनेसववलदेव जदुपुंगवकीसभासव हसीतासुसुनिभेव २५ अज
पुर हूंलौंअजगराजप्रभ विक्रमकरिहेत दछिनदिसिअतिऊंचवहसुरसरितटिसभषेत
२६ सोरठा सुभगसोरठाचारि नवदोहावरनानियहु छंदयुगलअधिहारकहेयाह
अध्यायमहिं ॥ २७ ॥ इति श्री भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबद्धे बलभद्रवि
विजयोनामअष्टषष्ठितमोध्यायः ॥ ६८ ॥ दोहा एकऊनसपननविषेप्रभअग्रहस्थके
कर्म करतदेषिहेदेवरिषिमनहहेतिहिंभरम ॥ १ ॥ पुनिग्रहग्रहप्रतिजाइतवचितअ
नविस्मययाइ अस्तुतिकरिनिजनाथकौपुरजैहैंसुषपाइ ॥ २ ॥ चौपई इननीक।

श्री·भा·
द २२९

227

यासुभगएहिमाही मुनिवरननकरिहैनरपपाही हैनरपनरकासुरहरिमारी कंन्यास
वव्याहीग्रतिप्यारी क्रमएकवहुतियगनव्याही मुनिनारदरेखएचितचाही सोरहस
हसएकुलतग्राठा एकसाम्मतियगनयहुठा सा ग्रचरजमाराग गयेहरिधामा जहप
रजनहरनसवकामा जहउपवनग्रारामग्रनेका गननाकोकविलहैविवेका म
हावसंतसुमनद्रुमसोभा निरखतमारतासुमनलोभा विहंगग्रनेकभांतिरवकरही
ग्रलिगुंजहिसुरमुनिमनहरही सुभगसरोजसरएवहुफूले जाहिदेखिसुरपतिम
नभूले जहवरलायसुभगवरधामा रचेफटकमनिललितललामा वीचवीचमणि
मरकतलाग कंचनभीतमहाछविधाग गहुपरिकरतसवपुरदसवारे नानाविधि
चित्रतग्रतद्यारे सुभगवजारचौहटाचारू वीथीललितसभासुखसारू २ तोहासु
रमंदिरवहुविधरचेमारगसीचसुगंध फिरतमुलानेभ्रमरितहमंतभयेमदग्रंध ४
ग सोरठा तोरणध्वजापताक ग्रमिभोनिसवसदनपर सुरपतिपुरीवराक ताहिदेखिल
जनभई ॥ चौपई तापुरवीचसुभगवरधामा प्रभुमंदिरग्रतिललितललामा चित्र
कर्मानिजसवचतुराई हरिमंदिररचिसवहिदेखाई सोडससहससदनसुखकारे
एकएकसनतुमहिनसवारे एकभवनपैठेमुनिनारद देखिनहितग्रतिसुमतिविवि
सारद विद्रुममनिवरथंभसुहाये मनिवैदूरजघातिहसवछाये इंद्रनीलमनिग्र
टनिग्रटारी सुभगवतानतनेछविभारी मुकतादामविलंविनचारू वडीवारिमु

229 A

निताहि निहारू गजदंतनपरयंकसवारे मनिमयपजटितघटितसुषकारे हासहास
सुभगासवसाजू भूषनमनिहिजसजोतिविराजू वयकिसोरसुंदरसवअंगा देषिता
सुछविथकतिअनेता रतनदीपतंहनिकरसुहावेन सहाप्रकाससवहिमनभाविन
अगरधूपधूपितसवधामा जालरंध्रनिकसततहुंजामा घनसमानकेकीलषिता
ही कुनकहिं अदनिवेहिसुषमाही ८ दोहा माहिभवनपरिजेकपरसहितरूकमि
नीनाथ नषविहासीवंदवहुपवनकरहिंनिजहाथ ७ चौपई निजवयसरिसरू
पगुनसीला भूषनवसनगानगतिलीला अयुतसहस्त्रनिपुनछविरासी सेततरहैं
निकरगहदासी तद्यपिकरहिंनिजकरिप्रभसेवा अहोभाग्यलोचननिहिरेवा मुनि
आयेनिजग्रहलषिनाथा उठेरूकमिनीपनिदकसाथा मुनिपदकंजपरसनिजसी
सा जुगकरिजोरिजगतपतिईसा निजआसननैकरवैठाये चरणप्रछालवहुनसु
षपाये मुनिचरनोदकप्रभुसिरधारा जासुचरनरजसुरसरिधारा प्रभुब्रह्मन्यदेव
भूतनभाषा कहीसत्यसवनिगमसुसाषा पुनिसुररिषिहिहूजवहुभांती आशिताप
नकहे वचनसुहाती देवयोगतेतवआगमनू पावनकियोसकलममभवनू मैंस
त्कृत्यभयोमुनिरावा दुरलभलाभसहिंजहमपावा पूरनकामधामसुषरासी
मुनिसनविनयकीनअवनासी ० दोहा निजपूजालषिदेवरिषप्रभुविनतीसुन
कानि मनिमहअनुचितमानिअववोलेवचनप्रमान ९ चौपई अषिललोकप

श्री॰भा॰
१२३०

९३०

तितुमन्ह नारी सा सब जननि जइ ईस केई सा मम मन कारकी न तुम साई नहि अचरज
नु अहै मो साई जगत न मि अहहि नेकी यह दूजा सब महि तुम को ऊ दैवन दूजा के सख अहहि
न मन सुख हीना जगत नमि न तुम किहिहि विधि चीना जो करा चिअ से प्रभु कहहू तहीना
पा विनती मम सुन हूं भल है उ न कह अपर ने सांई यह निमित्त प्रगट तुम आई जगत
छन पालि नहित स्वामी स्वेछा वपु धर अंतरजामी अव यह कृपा कीजिये मोही ए
कु वात न जा चो हरि तो ही जन अपवरग ग्यान पहलो रा दे खेउ अगनस फल तनमो रा विधि
मुनीस योगी जन जे ते केवल ग्यान महि ध्यावहि ते ते जे भव सिंधु परे अस्तानी ताक्षुतर
ण अवलंबन जानी अस प्रतापन व चरण सरोजा भजन न ने मे मम हो हि मनोजा नव
परकंजन न भूले नाथा यह वर दे मो हि करि यसनाथा १० दोहा यह कहना रद ऊहि ग
ये अपर धाम वर देखि करि प्रवेस देषन चहत माया योग विसेष ११ सोरठा हरि
ईसन केई सनामु जो गिमाया बिपुल कि मिलह अंत मुनीस अपर गे हहे बिन भयो १
२ चोपई तेहहरि उद्भव प्रिया समेता षेलन पासासार नि केता जदुपति मुनि आवत
जब देषा उठे श्रीधुमाहर खविसेषा परम भक्ति जुन पूजा कीनी सादर सुभ गदवास
न दीनी पुनि अस्नान इविधिपूछी वानी कवआये तुम हे जन ग्याता सेव कसदन स्वामि
आगमन् मंगल भवन अमंगलहर मन् है मुनि तुम हरण सबकाला सुखनिधान
पुनि परम कृपाला अहहि अप्रहरण हम सब भांती कहा दहल नव करहि सुहाती

नथपिनाथकछूआयसुदेहूं करियहोइयहपावनगेहूं होइजनमनवसफलहमारे
सेईजवपदकंजनिहारे सुनिमुनिहियअतिविसमयमानी उठेतुरतकछुकहीन
वानी गयेअपरगृहजहांनिहारी सुनहिबिलावतहैअसुरारी तारहितेउठिहकभव
नअनूपा तहांगयेसहजहसुघरूपा तहमजुनउघमपुनिदेषी गयेअपरहकाभव
नविसेषी १३ दोहा तहांजाइदेषितभये करतजग्यक्रतिरीत अपरगेहहिचलिदेषि
योजनजंजाइकरिप्रीत १४ सोरठा अपरसदनकेमाहि भूसुरजेवतविविधविध अ
परगेहमाहिचाहि अचवसेषतजेवतरही १५ चौपई अपरगेहसंध्याप्रभुकरही कि
तहूंमोनजापसंवरही कतहूंचर्मअसिसीषनआए कतहूंहयगयककयाकलाए
रथचढिकतहूंचलेतिहिकाला कतहूंसयनपरजेकविसाला वहीजननसगावह
कतहूं मेचकरनमंत्रीसनमनहूं जलकीउमरतकतहूंनिहारे वारमुखीसंकतहूंपा
धारे कतहूंदेतद्विजवरकहधेनू अनेकारधनदेसुषेनू सुननकतहूंइतिहासपुरा
ना कतहूंप्रियासंगहसतसुजाना कतहूंधर्मसेवनहरिकरही अरथकामकतहूं
संचरही कतहूंध्यानधरेकरिजाए कतहूंगुरूसेवाकरआए कतहूंवेठिविग्रहकी
वाता कतहूंसंधिवहुतननग्याना कहूंवलदेवसहितसुषरासी निजजनसुषचिं
तनअविनासी कतहूंसुनअरुसुताविवाहूं करतविचारअषिलनरनाहूं कतहूं
करनहारिकन्याराना कतहूंरहेजोरेतविधनाना सुवनवधूकतहूंतेआनीहिजके

श्री॰भा॰
६२३१
931

हृदानरेतसतनमानी कतहूं निजजामान बुलाई करतविहारनिहि प्रतिसुषपाई २६
दोहा जोगेश्वरकेईसप्रभु उतसवनासुनिहार चकितलोकविसमयकरतमुनिहि
यप्यकतविचारि २७ सोरठा कतहूंजाइमुनिदेषु करतजग्यसंभारजुत जगतरे
वगनपेषुगयोअपरगृहकौनकी २८ चौपई कतहूंकूपवापीसरबागा करतसु
भगसोपानतड़ागा सुरआलयआरामसुहावन चित्रविचित्रधामअतिपावनि इहि
विधिदेषअपरगृहगएऊ तहांवीचइककौतकलहेऊ करिछलवेसककुपुरमा
हीं घरघरफिरतदेषसबपाहीं पुरजनभावजानवेहेतू घरघरफिरतजुकृपानिके
तू मेहमअपरगयेमुनिनायक तहांतुरंगसाजनदुनायकु मगयाहनतकरतपसु
पावन संगलियेजदुसेनसुहावन यहविधिलषिमुनिप्रभुकरिनूती हरिमायाव
लप्रवलविभूती बोल्योवचनविनयमधुसानी कृपासिंधुहेजनसुषदानी तवमा
याबलअमितगोसांई मोगिनकहुं अतिदुसहसदाई तवपदकंजसेवजेकोई जा
नहितवचरित्रककुसोई तवमनुजनलीलादेषी होतमोहममहृदयविसेषी आ
यसुदोइजाऊंसुरलोका विचरउंतवजसकरतविसोका २९ दोहा सुनिनारदके
वचनवरहसबोलेजदुवीर सुनियरेवरिषिवचनमम जनमनहोहुअधीर ३० सो
रठा सकलधरमकोमूल मोकहुजानहुदेवरिषि चलेऊंपथ्यप्रतिकूल तौसवजग
हूंपाचरत ३१ चौपई सकलधरमसंभवमेकीना पुनिसवकोआचरसुमेदीना ता

231 A

हिहेतुसवकरेउसुकर्मी जीतेजीवनहोइविधर्मी जगनग्रहहएहिनमेसवकरिउ सिद्ध
छिननहिपथपरिहरिऊ हेनृपइहिविधिमुनिसनमानी विदाकियोसंतनसुखदानी ग्रह
मेधीकेकरमसुहावनि करतरहेप्रभुमुनिसे पावन नानाविधिनानाग्रहजाई करत
करमदेखेमुनिराई कहुंमएकरेखेसवठामा करमअनेकभांतिबहुधामा जबजिहिवेर
जाहिघरमएऊ करमकरनतहप्रभुकहललहेऊ साधिरहूजितहुंसवठाऊ मनविसरयय
हसहजसुभाऊ प्रभुचरित्रसिमरनमनमाही भयेविरंचलोगपितुपाही इहिप्रभुकौत
कनरीती करतरहेसंततजुनप्रीती रमानाथअखिलेसअनंता सवघटिव्यापकह
रिभगवंता षोडससहस्रनारिसुठिलोनी भईनअहैअरूअपरनहोनी तिनकंतहावि
भावरसरीती सुरनसंगसंततयुतप्रीती इहिविधिविविधविलासप्रसंगा नघपिअपु
नसदाअभंगा २२ दोहा जगसंभवपालनकवहुरलयकरताभगवंत इहिविधिलीला।
जासुकीगावहिंसुनहिंमेसंत २३ सोरठा जेकोऊनाहिसराह भागिअनन्यालहतसो
ऊ कहुंसकथाअवगाहि सुननतहोइससतनसमन २४ दोहा कहेदोहराअठवरकहुंमध्च
रित्रविचित्र सुभगसोरठासहकहे यहअध्यायपवित्र २५ इति श्री भागवतेमहा
पुराणे दशमस्कंधे भाषायांनिवद्धे एकोनसप्ततमोध्यायः ६९ दोहा श्रीजदुवीरक
नकरमवरएकदिवसकेजानि समरकेअध्यायमहसोवरनतसुखमानि १ अरूना
रतनपढूतहोकहुंसभाकेमाहि गेहेकारजमहेतुजिहिसोविचाररचिजाहि २ सो०
चित।

श्री॰भा॰ ९३२

इतिनीकथसकलग्रहिमाही मुनिकहिहैसोभूपतिपाही करमकरतप्रभुकहरिषि
नारद देखिगयेकछुबुधिविस्तारद सोसवएककरिकैसकेकर्मी वरनतहरिभक्तजेगृह
धर्मी एकसमयअग्ररूलोदयकाला अरुणचूडकीयनादविसाला कछुमप्रियातिह
सापनलागी रहीकछुमरसमहजेपागी श्रीनिमउरलपदीजेभामा माननवियोगवडे
दुखधामा वेरीजनद्रवविहंगअनेका बोलउठसुभशवदअनेका मानहुकछुमजगा
वनहेतू बोलहिविरहलियोश्रुतिसेतू वनमेहारवायुकरिजागे बोलेखगपदरस
अनुरागे सोमनकालिनमिनिहिसोहाना प्रियभुजअंतरगतिसुखमाना ३ दोहाप्रिय
परिरंभनतजननिहिमहादुसहदुखखानि उठेनाथवरकालेलखिब्रह्मसमहूरतजानि
४ सोरठा वारिपरिसतवनाथ सावधानमनसुथिरकरि ध्यानकरतनिजदुनाथ स
हास्वतंनरईसहरि ५ चोपई एकअभेदअनीहअनूपा नित्यनिरंजनवेदनिरूपा
रहितअविद्यादूरसदाही परमब्रह्मअनेतकहाही पुनिमज्जनकियआनिरकेरा
संध्योपासनकियवरजनचेरा आहुतअनलसमोकरियआपू इहविधिसवकरिक्रि
याकर्लई निजनविमलतसुरविप्रगनमेते तरपनकरसवपितरसमेते वधविप्रह
नेचितचाही जप्योयोगत्रनिविधजसजाही धेनुदानपुनिकरनहुराया सुभगासु
सीलप्रथमसुतजाया कंचनश्रंगसहिंखुररूपा तांबुपिठगलघंटअनूपा कंव
नअजिनसहिनेतिलरासी द्विजनकहुदईसाजिसुखरासी नेरहसहसलाखदस।

232 A

चारी पुनि सत एक जु अधिक विचारी चौरासी पुनि अधिक निरूपा
ब्याति हि भूपा दिन प्रति वेध वेध किय दाना प्रति गृह जानि यक रि सनमाना कहलवंध्यासे
रविप्रबंध गुरू राजन नमस्कार किय लषि गुन भाजन ६ दोहा पुनि कपल्ला गोसु
सकरि भूषण दिव्य मगाइ अखिल लोक भूषन सुव प्रभू बिन तक स्यो वनाइ गोपर
निज मुष आप्यमांऊ प्रभु देषी पुनि आदर सहस न लेपे षी फिरि गो दृष भूदेव निहा ७ चौपई
री अंन हु पुर चर का ज सभारी बर एच्चार निज प्रजा विसोकी वंछित फल हिय तिहि
अविलोकी स्वक तांबूल दीन सब काहूं प्रथम वि प्राक हिय करि चाहूं सुन दारा
रि सव हि सनमानी आपु लीन नव अति सुष मानी तव हि भूत सपे दन वर आनाल
गेनु रंग मसु भगा सर्पना जो रिपा नि सुग सी सव नाई घरो भयो ढिग चरणन लाई
गहि करि कंज सार थी हाथा दृष परिच दे अखिल नग नाथा जनु उदया चल दियेनि
देसा देषि च कन चिन होन सुरेसा ब्रीडा प्रेम सहित सब नारी रही एक टक रथ पहिनि
हारी हसि करा छ प्रभु हरि मन नारसू गये सभा ढिग अति से आसरू सभा मांऊ एक सु
भगवरासन वेठे तेह जनु वीर सु षासन ता हि सभा वेठे ने कोई षटू उरमी तह परस
नहोई ८ दोहा वेठे जदु कुल वंरव हू आस पास चहुं ओर तो विच राजन न क स्वा विधु
उडुगन सुन छवि योगि ९ चौपई प्रभु छवि ते सव दिसा प्रकासी नम सम दुरुस्वो
रगनि नासी न हं परिहास करन बहु वे दा आएव न द नि करत आनंद पुनिनर

श्री भा
१२३३
१७
233

केसुखयावहुजाती तांडवनृत्यनिपुनजगख्याती तासुमृदंगमुरजवरवीना वे
नुशंखधुनिपरमप्रवीना गानवाद्यकेभेदअनेका कीयनृत्यतिनसहितविवेका
मागधसूतवंदीजनआये निजनिजसवप्रभुहिसुनाये तहांविप्रकोअविद्दवविवे
की कहतकथारिषिराजकियेकी तहांएकपुरुषअछूरवआवा द्वारपालतिन
वचरजनावा आयसुपायसभामेंआयो जोरिहाथतिनसीसनवायो जरासिंधु
रोकेजेभूपा तासुकह्यवरणेसुखरूपा जरासुअनरिगजीततनगएऊ जेनहिमि
लेनधनकछुदयोऊ तिनहिजीतहठिगहमहिआनी । नृपदिअयुतरहेजेमानी
१० दोहा तिनहिवांधदुखदेतहै कारागृहमहराखि तिनकीनीविनतीघनीसुनी
यकहेमैभाखि ११ चौपई कृष्णकृष्णहेभवभयमोचन जनत्राताराजीवविलो
चन ए(?)थिगवुधहम अतिमतिमंदा भयभंजनतुमआनंदकंदा यहनरलोकपा
इसदुमरुढा हीनकामकरमनआरूढा परमधरममहंरुचिनहिवाही श्रीमुखव
चनगहतसदनाही जोअर्जुनकहअसुसुनावा सुगमउपायसोपिनहिभावा
असनवसनजपदानविधाना तपजग्यादिकर्मजोनाना सोसवमोहिसमरपन
करहू यहविधिअनाध्यासभवनरहू सोनहिकरहिमूढनरलोका होहिविषय
रनिघुटेमएका रहितअसेकनसुधकछुनाही कालअनाचकग्रसतिनचाही
कालरूपतुमअगजगस्वामी तवपदकंजनमामिनमामि यहसवलोकनकी।

गनिगाई हमनव चरणसरणजदुराई हमकहग्रसदुखघटैनहेवा सहहिसोक
सोलहहिनभेवा सोवरनतग्रथरजजियमानी सुनियनाथसंतनसुखदानी १२
सेहा ग्रहेसीसतुमग्रखिलपतिनिजजनरछनहेतु तुमलीन्यौग्रवतारग्रवकिमिदु
षसापानिकेतु १३ चौपई षलनिग्रहकहतुमदतिग्रायेसोतोसुषीरहितसतभा
येजरासिंधुतवग्रयसुलेयो चलेकुपेघलहैसुषसोई तुमजगरछकहेजगदीसा
निजकृतदुखहमकिमिसहईसा षलकहसुषजनदुखतिरहाही उचितनभयग्रयु
हैसुषजेते सयनसमानजानिचलितेते विषयसाधुपरितेजसहाही संततभयसुष
लेसनकाही मनकतुत्यतनधंधकिधोरी पुत्रदारविंमानहिथोरी जेगतिकामभज
तकीउप्रानी विनुप्रियासपावैसुषषानी सोतोहमनहिकीनगोसाई मानेहमदुष
सहहिसदाई तवमायावसफिरहिभुलाने कपनिमूढविषयालपटाने तवमाया
कृतवेधनभारी तुमकाटोतवकटैमुरारी प्रनतसोकहारीवरकंजा दीजियदरसा
होइभवभंजा १४ दोह दीजियदरसजननजानिजदुपतिदुखितहमहहिनिहारकै मगधे
सरूपीकर्मफासीछोरियैतिहिमारिकै गोसुनियविनतीनाथममसबकहहिदुषि
नप्रकारके १५ वहजरासुनग्रतिप्रवलजानियग्रयुतगजबलजासुकै तिनरोकि
यानिजभवनमभुजमत्तकोसरितासुकै मगराजजिमिरोकेग्रजाकिमिछुटैवहु
२ जोकहहुतुममनिजकरिप्ररावमहनौग्ररिहियधारिकै २

सुखपाइके तुमहीनवंधुदयालजगममनिछोरियेइतिआइके २८ दोहा देतहमैं अति
कठिनदुखतवकिंकरजीयमानि भज्यौ आइहस्तवारजोतुमनेतमएउरमानु २७ सो॰
जीत्योसोइकवारि भाज्यो सत्रहवारसठि लखौजुगरवअपार पीडितहमकाहजा
ननतव २८ चौपई जससिय आवे अजितअनंता करियनाथतसहेभगवंता नृपसं
देसकहौयहभांती कहतदूतिनिजहृदयसुहाती प्रभुतवदरसचाहचितभारी जो
योकेमगधेससुरारी नवपरपेकजअपरनआसा दीजियसुखमेटियमनत्रासा रा
जदूतइमिकहतसुवानी आइगयेनारदमुनिग्यानी ताहिदेषिआवतभगवंता उ
ठेसभासदसहितअनंता अखिललोकपतितिनकेईसा पुनिपदवंद्योधरिनिज
सीसा सादरसुभगसुआसनदीना मधुरबोलिपूजाबहुकीना भयोहमहिअति
लाभअपारा निजइछामुनिइतिपगधारा तीनिलोककरिसुषसंचारु सुनवसह
जकृतमुदमना रू हेमुनिकुशलअहेत्रयलोकू अविदितनुमिनहेदिसिओकू पं
डुतनयकीकुशलगोसाई पूछौमैसवकहियवुझाई २९ दोहा प्रभुसर्वसुअ तै
गुरुइवपूछीनपयहबात जरासिंधुकेवधनहितपेडुतनयकुशलान ३० सोरठा
मुनिनामीसबबात कहनलागिकरिजोरितव नहिंअचरजहेतात पूछौमाहि
अजानइव ३१ चौपई हेप्रभुतवमायावलघोरा कोअसलोहैतासुकेछोरा शि
ववरिंचमोहिकगुणजाल सवघटिवासनहोतप्रकास सवघटरहेलखौकिमि

234 A

नाही इमि जो कहहु नाथ चित चाही तहां सुनहु कारण है ईसा सकति प्रताप न लखिहि
मुनीसा जिमि कृसानु छार कीय धूरी लखत न को प्रताप गुण भूरी तैसे हि तुम सब मा
हि रहाहू जानि सकै अस किस कतनन काहू निज माया कृरि रचहु बिलासू जग संभव पा
लन करि नासू तब चरित्र को जैन न योगू भयो न है ह्वै है कोऊ लोगू अस तब स्तुति हि
सत करि मानै सत्य वस्तु तिहन हि पहिचानै ऐसे जग तकता तुम स्वामी नमो नमो हे
अंतरजामी ईश्वर करि वरना तुम मोही तहां वात पूछो इक तोही ईश्वर जो वेसा किमि
करई वेसा करि सो का कछु चहई तहां सुनहु उतर इह नाथा विनहि चाहि जगकर
हु सनाथा जीव अविद्या जुत सब काला भवनिधि परयो सहै दुख जाला घिरयो महा
तम फिर बहु वारा। नहि जानै कछु निज रिसि तारा ताहि हेतु लीला तन धरहू चरि
त्र विचित्र दीप सम करहू २२ दोहा मम गुन जस जड जीव सब गावत रहि भवरूप
याहि हेतु लीला करत धरत न परम अनूप २३ सोरठा ऐसे तुम जगदीस वैदो न
वपर नाथ नित तुम पूछी मोहि ईस कहौ जो मैं देखी दृगन २४ चौपई पंडु पुत्र तव
बंधु पियारे पुनि अनन्य प्रभु भक्ति तिहारे राजसूय करि जनन तिहारो करन च
हत निज उर उन धारो सो अनुमोरन तुम प्रभु करहू तहं चलि सब संका परहरि
हू तब तिहि मख सुर गण सब आई तब रक्षन करहु हि जदुराई नर नारी जु
त नृपति अनेका ऐहै मुनि जे सहित विवेका तब पर कंज रेख हैं जेते पावन सब नि

श्री·भा·
६ २३५ सं०
935

हूँ है जन नेते रवव लकी रतनन तव हे नाथा । अनरथ धाको ऊ सुनइ जु गाथा स्वपच
आदिक पावन सोई । अघी अनेक तरे सुनि सोई । नाम सुने अघ ओघ न रहई । रस
परस कवि को फल कहई । द्विव भू अनंतरि छेजस तोरा । परम पवित्र लसत चहुं ओरा
अखिल भुवन कहु मंगल रूपा । मानहु तनऊ वितान अनूपा । तव पद कंज पाइ अति
पावनि तीनि लोक अघ ओघ नसावनि २५ छंद अघ ओघ नास कसुनस तव अ
निकहहि संतन गाइ के तव रस समहिमा कहे को पकर है अहिपति भाइ के इमि वच
न कहनार रहे चुप सुनो प्रभु सुषमा निके तिहि सभा जे जदुव संवे देता सुमन की जा
निके २६ ने गुवाने सुनि अति उमा हे जरा सुत को मारिये हरि तासु हिय की जानस
व अनुचित हिये न हि धारीये टिग वोल उद्धव सो कहत कहहु मित्र का विचारीये
तुमहि तू हम कहहन यन मम अव कहहु कि तिपग धारीये २७ दोहा मंत्र अफल अफल
न तुम जान तहे स व मित्र कहहु मंत्र सो करहि हम सुखद पवित्र विचित्र २८ सोरठा
इमि कहि श्री भगवंत हूं सर्व ता सु अनंत इव कहन लाग उधवंत प्रभु अभिप्राय सुनि जसी स
धर २९ यह सब नर के माहि कहे सोरठा पांच वर छंद चारि चित चाहि अय दोहरा नव
कहे ३० इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा निबंधे सप्ततमो ध्या
यः ७० दोहा सुनि उद्धव के मंत्र वर इहु प्रस्य प्रभु जाइ धर्म पुत्र कहवे धु जुत अति
सहर बचकरा इ १ राजसूय मख खाजकरि भीम अधसुत माहि कलहवी ज उमप

सहजराजरछावनिजाई ६

235 A

न्नकरिछितिनहिभारउतारहि २ एतनीकथावषानिहै एकासनरकेमाहि जानिप
रमकल्याननिधिमुनिअघअौघनसाहि ३ चौपई सुनिप्रभुवचनकहतमउवानी
उद्धवप्रभुहियकीसवजानी पांडुतनयकेकारजकरना सुरहियमतपहिलेमषगम
ना सकलसभासदकेमनअैसी करीयेभूपरछावितवैसी हमरेवहिनहोऊहित
होई उद्धवकहतजानिमनिसोई नारदकह्योनाथसुनि कीजिय धर्मसुअनकहसु
अत षदीनियमषसहाइकेकरनगोसाई जीतेहिसाजसकरिसोई जरासुधनसहज
हिवसहोई इहिविधिसधैनाथदोऊकाजू यहमनतमोरअहैव्रजराजू हमसेवक
हवडुलाभअनूपा वंधेनरपछूटहिसुषरूपा तवजसहोइसकलसंसारा गाइअ
पजननलहभवपारा सकलयारवअतिउनसाहूं हनियेमगधईसपहूचाहूं २
विनासुहिमकीगतिजानी वोलेपुनिउद्धवमउवानी जरासिंधुअतिदुसहकठो
रा अयुतनागवलहैअतिघोरा ४ दोहा कोकोकहैकिनाहिसमवलीअपरको
नाहि तहांहेतुअैसोकहै भीमलरैतिहिपाहि ५ सोरठा दुंदजुद्धकरितासु मरनवि
हतहै भीमकरि अपरभांतिनहितासु कोटिकोटिदलपचमरों ६ चौपई जुद्धहेतु
सेनासजिनाना मारहिनाइवीरवलवाना दुंदजुद्धकीकेतिकवाता जोकोऊधमिवो
लेजनत्राता तहांसुनोकारनजदुईसा अपरभांतिनहिमारिमगधीसी हैव्रह्मन्य
देवमगधेसा विप्रजाइकछुकरहिनिदेसा सोसवसत्यकहैसिरधोरी द्विजआ

श्री॰भा॰
६ २३६
236

त्रामहितजेसुरारी भीमग्राहकरिभूसुररूपा मांगेहुंदजुद्धसुषरूपा हनेताहिनि॰
श्चैसोश्रास नबतुमनिकटरहोतिहि पास मैंकछुकरौंलरौंनहिकबहूं निकटरहे
तिहिकापलकहहूं कबहूं कनाथकहौंइमिवचना तहांसुनियतसगुनगणरचना
जिमिनबरूपकालस्तुतिगावा जगसंभवकरहेतुबतावा तहविधिहिंनिजमनजज
गनानू तिमिलयकारणसंभुबषानू तबसमीपमाचसेमरई भीमनिमित्तजुद्धतह
करई ७ दोहा जरासिंधुबसजेपरे तिनकीतियनिजगेह गावहिजसनितरावरो
सनतहियकरिनेह ८ सोरठा मनिरोवहुरेबाल तबपितुकहप्रभुधीरिहैं हरिका
लहुकेकाल श्रबमारिहेमगधेसकहह ९ चौपई इमितबजसगावहन्नपवरनी नि
जपतिसंगचहेसुषकरनी जिमिमोधननिजबेधनहेतू श्रोबचरुबधकियश्रुति
सितू ग्रासिकग्राहिकुंजरतबगायो प्रभुतिहिमारनुरंतछुडायो जनकानेहिनीरि
पुबधहेतू गायोतबजसकृपानिकेतू श्रीवसुदेवगावगुनतोरा कंसागाररहित
दुषघोरा कंसमारिसुषदीयजिमिताही निजमाथोनवततबतिनपाही तैसेश्रव
बलिकृपानिधाना राजसूयमषकरियविधाना जरासिंधुवधमोऊगोसांई श्रर्थ
भूरिकछुलाभलषाई सिसुपालादिकवधिश्रनयासा नपछूटहिसबविनहिप्र
यासा पुन्यविपाकनृपनकरजबही गमनतुमारतहांहरितबही श्रधिपरिपाक
हमामगधेस जबश्रैहैतबछुटहिनरेस उद्धवबचनकहाइहरीती सुनिजदु

236 A

वधहरखप्रतीती कुसमदेवनारदसुषमाना सोदरहरिसवविधमनमाना १०
दोहा सवकहआसाचलनिकीहईदयानिधिहंस पितुआसाआपुनिलईजोर
हाथधरिसीस ११ चौपई सहितहारसुतपरकरजेता सहितपरीछरखलुसमेता
वाहरनगरवाससवकाहूं कियेउजाइजहरविजसजाहूं उग्रसेनसोआयसुमां
गी वलसोंवचनकहोरसपागी सूतआमिरथसुंदरवाजी सकलविधानसहित
सवसाजी चढेगरुडध्वजरथजगदीसा निकसेपुरवाहरनवईसा हयगयरथ
भटभीरअनेका चलीअनीकप्रकारनएका भेरमृदंगशंखसहनाई वाजेअमि
तवजंतिहिठाई कंचनशिविकासुतनसमेता चढीवामपतिअनुगतिचेता वसन
आभरनरुगवहुभांती जथाजोगजसजाहिसुहाती औरसेभटचहुंदिसरथवारे ग
हचरमअसिसुभगसुधारे घरगोमहिषऊंटचढचलहीं अस्वतरीकरलेकोऊ
सजही परिजनवारमुषीसजिसाजू पृथकपृथककरिचलीसमाजू रविकरिय
रासिसेनछविछाजी मनहुंभयोदिवसोदहविराजी १२ दोहा ध्वजापताकाचैवर
वामध्यमनअनूप सुभगकिरीटआयुधवरवभूषनसुभगसुरूप १३ सोरठा भयोश
वदचहुंओर मानहुंअवरजुनीरनिधि उठीउरमिअतिघोर भ्रमिततिमिंगलमीनक
रि १४ चौपई सुररिषकोसाररमदुवानी विदाकीनहरिअतिसुषमानी हरिनिज
यसुनिकेमुनिनारद पितुग्रहगमनेउवुद्धिविसारद राजहूतहरिलीनवलाई कहिम

नर

श्री·भा·
२३७
237

हु गिरा माहि समुझाई। मारिहौं मगध भूप कहं आई। निरभय रहौ सकल तुम जाई। य
ह सुनि दूर गयौ निज धामा। हरि मुख वचन कहौ सुख धामा। सुनि नृप सुखित भए सब अं
गा। प्रभु दरसन की चाहि अभंगा। चलौ सेन न हतें रस भीनी। बहु पुर ग्राम अतिक्रम की
नी। शक्रप्रस्थ पहुंची सब जाई। सुनी पंडु सुत अति सुख पाई। आगे चले लेन कहं तब
ही। भूसुर वृद्ध धर्मसुत हरि मिलन सब ही। गीत वाद्य युत मंगल साजू। ब्रह्म घोष सचन नृपति
समाजू। देखि कृष्ण कहं हरषे न थोरा। निमिल विजल रहे हरष मन मोरा। गदगद कंठ प्रे
म रस पागे। गहे अंक भर अति अनुरागे। पुनि पुनि मिलित कृष्ण उर लाये। उमग प्रेम
न हिरदै हि उपाये ॥ २७ ॥ दोहा ॥ मिले भूप हरि उरपरस भयो अमंगल नास। भयो तनूरु
ह लल जरि गये जी मन की आस ॥ २८ ॥ चौपई ॥ मिले भीम पुनि अति सुख मानी। वहे प्रेम
मई दृग अकुलानी। मिले अपर भ्राता पुन प्रीती। जथा जोग जैसी श्रुति रीती। कुरु संज
य केकय नृपने ते। सादर जुत सब हि न मिलते ते। शंख मृदंग पणव सुभ वाजे नाना
विधि सुभ मंगल साजे। विप्र करहि असुनि बहु भांती। सुर दरसन परिजन बहु जाती
सुभग अलंकृत पुर सुख वंता। नेह प्रवेस किय श्री भगवंता। सुभग सुगंध सींच पुनि
वारा। चित्र ध्वजा घर घर सुभ द्वारा। कनक कुंभ तोरण सब धारे। मन हुं मयन नि
ज हाथ सवारे। भूपसदन सोभित सब भांती। कनक कलस चित्र तब हु जाती। हरि आ
गमन सुनत पुरवासी। नेह महा सुख याने रासी। तिय न सुनी आये पथ माही। लोच

237 A

नपानिपावचितचाही अतिउनसवचितरहैनरोका उमगचलीतजिपतिनिजओ
का १७ दोहा गईराजपथपुरतहींतहांदेषिअतिभीरि हयगजरथसंकुलसुभटच
ढीअटायरिधीरि १८ चौपई चढीअटापरिहरिमुषदेषी वरषहिसुमनआनंदवि
सेषी हियधरिप्रभुकोरूपअनूपा सुषमयभईथकितचितभूपा कहनलगीआप
समेवानी सषियेधन्यसहितपटरानी वडेपुन्यकीनेकछुभूरी पतिपायेयोजेजि
हिसूरी इहिविधिनिरषनिरषपुनिनारी लहीमहासुषसंपतिभारी जेहजेहपंथ
नाथपगधारे तहतहप्रभाप्रेमभरभारे कहहिविविधविधिभेटआनेका मंगलवस्तु
एकतेएका अंतरपुरवासिनप्रभुदेषी भयोसवनआनंदविसेषी अतिसंभ्रमजुत
आगेआई भूपतिभवनमांरूपधराई कुंतीनिजभ्रातासुतदेषी भयोमहासुषहर
षविसेषी तजिपरिजेकउठीततकाला कृष्णहिमिलीमिल्यौसुषसाला दूनाकहु
कछुमिल्योनकोई अतिप्रमोदविभ्रममतिभोई पितुभगिनीकहकियोप्रनाम
कृष्णदेवसवपूरनकाम १९ छंद सवकामपूरणकमललोचनदेषितियहरषत
भई परगहेआइसुद्रोपदीभगिनीसुभद्रासुषछई तवद्रौपदीसुनिसासुआयसु
कृष्णपटिरानीसवै सनमानकरिसतभावजुतविधिसहितपूजीसवतवै २० जेअ
वरतियगनवृंद सवमैंऊपूजियोसनमानिकै सुभवासभूषणरत्नस्वगमंडना
विविध
दिवनाइकै पुनिधर्मसुअनिवासप्रभुकहिदियोअतिसुषपाइकै सानुगसु

श्री॰भा॰
१२३७
238

मंत्री सैन जुत तियन सहित नाम सब सारके नेह रहे केते कमास प्रभु हित मान भूपति के
लिये रथ चढु धन जनयन सहित हरि विहरत फिरे कौतुक किये सुभग हस्तनापुर बना
म बर सोना पहु नभु कहु दिये मयनामम सुख चाइति हित सभा तिन निरमित कि
ये २२ तेहा रचीसभा महि सुभग अति धर्मसुअन कह नाथ जह कुरु नृप कहं भ्रम
भयो जलमहि थलपं पाथ २२ कहे तो हरां सीतवर सुभग सोरठा तीनि कहे छंद त्रय।
बिमल श्रति कृष्ण कथा समीन ३२ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे
भाषायां ऐंद्रप्रस्थ गमनो नाम पंचसप्ततमो ध्यायः ७५ सोरठा धर्मसुअन प्र
भु पास विनती करिहै विविध विध सुनी कृष्ण सुखरास जरासुअन प्रति दुविन ल
खि २ इति नी कथा अनूप कहहि बहु नर मो गमुनि निज बुधके अनुरूप भीमसुभ
ध मगधेस बध २ चौपई हे नृप एक समय सुत भ्राता धर्मसुअन परजन सुखदा
ता विप्र आदि मुनी ध्यावयवरना अरु कुल वृद्ध सुभग आचरना अपर सानि सब धप
कन्ने ते वैठे सभा मा जस वन्ने ते सबके सुनन सब हि प्रभु मानी धर्मसुअन बोले मृदु बा
नी हे हे ना धर्म रव सुखकंद भय भंजन जन सोक निकंद राजसूय मख अति से पाव
न करन चहो मै दुल न सावन तव विभूतिसुर गण सब जेते जन जन चहो विध सुत
सब ते ते सो सब पाइन करिय गोसाई यह विनती मम है नइ राई एक छत्र छिति पति
आ हाई करे मनोरथ यह परिसोई जो करानि ग्रेस प्रभु कहहूं न हां मोर विनती।

238 A

हीयगहहूं जेतनकरितवकरमकराही मनकरिध्यानकरहिचितचाही नसैग्रमंगलवि
विधिप्रकारा जौवानीतवनामउचारा तासुछूटैभवसागरभारी कहनवेदमुनिगनसव
वकारी जौकछुग्रपरग्रासिषाचहई सोऊग्रनयासताहिकोलहई नहिछितिपावैफ
लग्रैसो तवकिंकरविनुश्रमलहजैसो ३ दोहा तवजनमहिमामैकहीप्रगटलहैसव
कोइ सोउपायग्रवकरियविभुकुरुकहुनिश्चैहोइ ४ सोरठा भक्तग्रभक्तप्रनीत होइ
दर्षिइनसवनकौ मेरेहियकीप्रीति नाथकिजियेसफलसोइ ५ चौपई मेरागारिरहि
तसवठामा भईविषमनामनहुसकामा जैतुमकहहुनाथतुमवानी तहांसुनियसंत
नसुषदानी तुमपरिब्रह्मसकलघटवासी तुमहिनरवपरभेदग्रवनासी समदृष्टीस
मतासवठाम परिहरणतुमसदाग्रकाम तदपिजेसेवैतववरना तासनवेदप्रीति
इमिवरना जेसेवैफलपावैसोई नहिविपरीतिग्रहैकछुकोई जिमिसुरद्रुमसवकह
समग्राही जोढिगजाइदेतफलताही तोसुरतरुनविषमताकोई तिमिकछुपरसतु
महिनाहिहोई हमवोलेतवश्रीजदुराई ग्रहोभूपभलमतिठहराई ग्रतिकल्यानरू
पजसतोरा होइहिदहिजगमहिवहुग्रोरा सुरसिविपितरसुहिदगनजेते राजसूय
चाहतसवतेते जीतीयसकलनरेसवनाही जीतीमसकलग्रवनवसभाई मष
सभारग्रानियेराजन कीजियराजसूयमगभाजन ६ दोहा जौकरतिग्रैसेकहो
किमिजीतैन्रिपवेर किमिग्रानौसंभारसवमेग्रसवयजदुनंद ७ चौपई तहांसुनो।

वति

श्री॰भा॰
६ २३९
239

यह वैन हमारी देव अंस आता तव चारी तुम संदेही जित है हे भूपा मो हि किये निज वस सुख
रूपा नि जसंदेही जिन के बस नाही तिन को मैं दुरजय घट माही रहो वान यह तव सम कोई
पति भय संका किमि होई अहहि अकिंचन जे मम दासा तिनं लोकपाल भय नासा के
ते अघता प अनीक अपारा वहु रंग अनेक भांति अभिचारा नहि करि सके पराभव तासू
अहै अकिंचन जे मम दासू सुनि प्रभु गिरा सहृद हितकारी हरषित हिय पुलकावलि भा
री आनन बोल कहो नृपवाला जाहु हि सा जो तन हे ताता दक्षिण दिसि सहित वपु धाये से
न्य सहित सम्राज सुहाये पश्चिम दिसि कहि नकुल पधारे संग मत स्यंदन गज तिमि भारे
बुद्धा के सउतर दिसि भेजे कोकरा अनसंग वर रेजे प्राची दिसि कोभीम पठाये सह बल भूप सं
ग सब लाये नि जनि जनि दिसा जीति चय आता स्याये भरि द्रव्य असुख राता दोहा स्यंदन
न व हु भांति के सारथि नृप कहु दीन करहि जग सुषमा जिमि जिमि उत्तम बस्तु प्रवीन ९ सो०
भई खबर तिहि काल जरासुत्र न नहि वस भयो चिंता करत भुआल बोले हरि सम य तिंह
लखि ॥ चौपई अहै आय एक महिपाला उद्धव कही जो वचन रसाला अर्जुन भी
म सेन जदुनायक बल वेष्टित धारहि सुभायक राजगिरी तिहि ग्रह चलि जाही निर
भय नरा सुअन के पाही आपा गन बोल्यो लघ नहवा गेही कर्म करे वह जं हवा है ब्र
ह्मणरे देव वह नृपा मांगहि भिक्षा निज अनुरूपा ह्वरा मन हम अति प्यति हारे आ
ये है कछु अरथ विचारे दूर देस ते हम चलि आये देहु दान कछु हम हि सुभाये कहि

239 A

हुनामकाजाचहुभाई विनानामनहिंसानसुहाई इसहवियोगसुअनकरिआहीमां
गेहियोजाइकछुछाही नपमंडिनकिरीटमनिभारे वहुनअमोलआभरनविसारे
निजसुतहेतुवस्तुवहुपियारी हैअरिदनुमकहहुविचारी जौकहाहिंरूपतिइमिकहहुं
तौमिछुकवानीउरगहहूं जेनिनिछुजनहैंजगमाही तिनकहुंइसहवस्तुजगनाही ११
दोहा जिमिअसाधुनरकेहुसहापरिकारनकीहानि तिमितितिछुजनकोसहापरिहि
तमनक्रमवानि १२ सोरठा अतिउदारजोकोइ तिनकहुनाहिंअदेयकछु जिमिसम
दरसीहोइ ताकहुनहिसमअपरकोइ १३ चोपई जेकोधीरजगतकेमाही तिनके
गृहअरघीचलिजाही मइजलतरुणपाउतजेसरीरा अरघहिअरघेहिमतिधीरा
हेअनित्यपहदेहनरपाला तोकरिरघौनसुजसुबिसाला हैसमरथसुभकरेनक
रनी हेनिंदतसठहैश्रुतिवरनी रंतिदेवहरिचंदउदारा ऊंछवनिशिविव्याधिविचा
रा वलिकपोतआदिकवहुतेरे गयेपरंपदहानघनेरे अधुवतनकरिधुवजसकी
ना तहेलोकविनुजननप्रवीना सुनिअसिवचनकरतअनुमाना स्वरआकृतकछू
छियपहिचानी उरतवानविहूनकरदेया ध्रुववंधुकोउअहेविसेषा हुव्याकवहुक
मेकोऊटामा हेराजन्यवंधुपरिनामा आएहेद्विजवेषवनाई देहौंइनेरुचेजोका
ई इसहसरीरदानजगआही सोऊदेऊंमोमांगहिंजाही १४ दोहा रहतदइअै
श्वर्यलषिवलिअतिप्रवलविचार वटुसरूपगाहिछलकियोमोगीभीषमुरारि १५

श्री॰भा॰
६ २४०

240

चौपई बलिविमल तह रिलीन्यो आइ तह विजसभा सुभग प्रताप गुरु की गिरा टारि हरिजा
नी दियो दान बलि मुनि सनमानी छन भंगर सब जगत विभूती जस कह काल सकै
नहि धूती छन भंगर यह पाइ सरीरा छत्री वंस कहा इहु धीरा भूसुर हित कर ज
सन बटोरा छत्री वंस धुम कहु अधम कठोरा इमि मिश्र पकरि वचन उचारी मांगहु
हे दिज मन भावचारी दिज कहु नहि अरे यकु मोही सिर चाहौ निज देहौ तोही सुनि
नरसके वचन अनूता बोले कृष्ण देव भगवंता इहु जु कृष्ण जै नरराई औरे वे पारिन व
मन भाई जु कृष्ण अघ मोगन केहतू आये हम तब सुभग निकेतू हम राजन्य वंस नै
जानू नहि मांगे भोजन भूदानू यह लघु विभीम धरम सुत भ्राता गाडिव धनु अर्जुन
यह ताता इनि करि मातुलेय मोहि जानू कृष्ण नाम तव रिपु हियमानू इमि कह सम
रहे नृपजब ही हस्यो ठठाय नरासुत तब ही २६ छंद मागध कियो नव ऊच हांस सं
भारि कहि बानी मुखा रे मंद तौ तोहि जुद्ध देहौ भीरु तै संतन सरा रणविकल तू वेनक
सहान जिहि सिजलनिधि तट गयो लघु वय सुयह नहि तुल्य मम यह जिष्णु नहि
जोधा भयो २७ दोहा अहै भीम मम सम सबल दैहौ मम रण याहि यह कहसुर
स्वर गदा दयी भीम कहु चाहि २८ सोरठा अपर गदा लै आप निकस्यो पुर बाहर तु
रत महावीर कर रिदाय गदा युद्ध लाग्यो करन २९ चौपई रण दुरमद रोऊ वीर प्रचं
डा इन नहि पाय सपरत न भुजदंडा मंडल फिरहि विविचित्र बनाई रण श्रण वाम वचाइ व

240 A

चाई रंगभूमिनटवर छवि छीनी लरहि वीर दोऊ अतिरसभीनी होहि चटाचट सब
दनघोरा मनहु असनकरि नाद कठोरा जिमि द्वै करवर लरहि सुभाये दंत दंत धुनि सु
नियसुभाये अतिभुजवेग गदाकर घातू कटि पटि करि ऊरजत्रनि पातू गदा चूर ह्वै गे
दुहुकेरी वज्रसार सम सुभग घनेरी अरक बाघ लै जिमि द्वै नागू लरहि परस्पर करि
अनुरागू जिमि वह चूरण होइ तुरंता तिमि फर गई गदा गुण वंता छिरद मत्त द्वमि हो
ऊ मद भारे लरत मान है हैरू विकारे करत ताल ताडुन जब दोऊ असनि समान नाहुं
सोऊ करत प्रहार प्रचार प्रचारी समसिछ्या बल गुण अति भारी महविध लरत गयो
दिन बीती सपत विंश संख्या करि प्रीती २० छंद करि नीति युत नित लरै दोऊ निसा इ
कठै वैठही जिमि सुहृद मिलि वैठहि सदा तिमि उभय मद नहि अैठही एक समै कह ज
दुनंदसौ अति बली भीम जु अर के नहि सकौं मैं मगधेस सोर न जीति प्रभु सुष पाइ के
२२ तब वचन सुनि प्रभु भीम के निज सक्ति हि तन महु दई अरि जनम विध जानत
सबै पुनि मरन कौ सै सा दई करि गहि पदै री आपु ले जिमि मेक रो द्वै षंडु जू तिमि मा
रि होनु मम आनु अपनो सुषत सब भूषंडु जू २२ तब भीम लह कल बल अमोघ सुग
रजे करण महु गयो अरि आवन ह पद गहि तुरत हि पट किनिहि महि पर दयो निज
बौं पद सो अरि पाद इक जुरा वियो अति जोर सो गहि हाथ सो पद दूसरो तिहि फार डासे
वी चसौ २२ तेहा एक पाद उर वष एक कटि एक वाहु एक नैन महु विध कीने दूक दे

श्री भा॰
दं॰ ३२

241

रविसवैहीयंवैन २३ हाहाकारभयोमहामर्योजवैमगधेस हूनिवाहुवलभीम
केश्रचुतमिलेनरेस २४ सोरठा तनयतासुसहदेव तासुकियोअभिषेकहरि म
योमगधनरदेववंधेभूपसवछोरप्रभु २५ दोहा कहेदोहराआठवरछंदकहेवर
चारि सुभमसोरठापांचवर कृस्नकथासुखकारि २६ इति भागवते महापुराणे
दशमस्कंधे भाषानिबंधे जरासिंधुवधोनामद्विसप्ततमोध्यायः ७२ दोहा न्रप
छुडाइभूषणदयोभूपनोगजसनाहि सारखहुतेमानरै पहुचायोचितचाहि १ ज
रासुश्रनअनिसिप्रवलजवमार्योजगदीस आपुहिचलिद्रसनदियोजवसवरहेम
हीस २ सोरठा इतिनीकथापुनीत द्वैहैयहअध्यायमहि मुनिकहिहैसुभरीत सतर
त्रयअधिकीविधि ३ चौपई जीतेजुद्धमाहिन्रपजेते गहिआन्योनिजग्रहसवनेते
बीससहस्रआठसतभूपा गहिवांधेनिजवलसुखरूपा गिरिद्रोनीमहितेसव
ससुखभानन दुनिघनस्यामसुभगसवअंगा पीतवासदामिनदुतिभंगा उरविसा
लभीरवसुहावनि कोटिवितनछविछविछिनहिनि ललितप्रलंवभुजाचवरचा
रीकंठसुभगमनिमुनिमनहारी जलरुहनयनअरुनसुखकारे चारुप्रसन्नवद
नअतिप्यारे मकराकृतकुंडलस्त्रुतिराजत करसरोजसखधारिकधाजनसीसकि
रीटहारउरसोहत रविसीरिमारिअगनितमनमोहत कटिकिंकनसंगरभुजचा

241 A

रू उरवनमाललललितसुषमारू नयनकारयीवनइवरूपा परेचरणपरतेसवभूपा
कृष्णहरसुखभाअतिभूरी कारागृहदुषनसम्पोहूरी जोरहायमृदुवचनउचारी अ
स्तुतिकरनतुभ्रअनुसारी देवदेवदेवेससहाई वंदौतवपदकंजसदाई ४ दोहा हे प्रसन्न
आरतहरनअच्युतअव्ययईस याहि घोरसंसारते शरणजानजगदीस ५ सोरठा
सदाअसहायाभूप करतरहैमगधेसप्रति सदाभोगसुषरूप केसेतवसंस्मरनमैं ६
चौपई जोकदाचिदमिलाहहूं गोसाई तहां सुनियविनतीचितलाई नहिहमकीनअस
याकवहूं मगधराजसोहैप्रभुअजहूं हमअपुनेमनयहअनुमाना सुनियनाथसो
करउवषाना होइराज्यतेभ्रष्टभूआला तवहीकृपातुमदीनदयाला राजभोगकरिमद
यहभारी होइअंधमतिमंदसुषारी हैअनित्यसंपतसुषजेते माननमूढसवैसत्यतेते
लषेअवस्तुवस्तुतिहिजानी पीयोमोहिमदहियसुषमानी मृगतृष्णाजलअहैसोचा
ताहिदेषिजिमिमूरखराचा तीनकालजगसत्यनआही माननअसासत्यकरिताही
राजवियोगयोगसुषजेतो हमनिजनयनलषीसवतेतो श्रीमदनष्टद्रिष्टहूजानी
नरहिपरस्परनिअरूरानी रहितदयामदहिवडुजेतू लषेनफलपरिपाकसुअंतू
कालरूपतवनिमिकिदाहिदाढा वासुनहियअतिसाहसगाढा ७ दोहा पहिलेहमऐ
सेकियाअवमदभा सवछीन कालकृत्यकरिभूतगतिरहितमरवतनवीन ८ चोपई
अवतवचरणभजनचितचाहूं देहुकृपाकरिहोहिनिवाहूं मगतस्मासमराजविभूती

श्री भा
१२४२
242

छिनछिनघटैहोइबिपरीती भोगजोगभाजननरदेही हमनहिसिवहहेप्रसुतेही
स्वर्गभोगतिहुक्रियाकलापा सोनहिरुचैअंतल्हतापा अस्तनिश्चयजोहियहेभूपा
सिमरहुचरनसदासुखरूपा सुमिरतभयछूटैअनयासा तुमनहिचहहुअबकछु
मोहिपासा जोकछुचहिअमिकहहुमुरारी तहोसुनियप्रभुबचनहमारी तौउपायअसि
होनियनाथा जिमिनभलयहयदुजदुनाथा तबतबकृपाचरनमैकबहूं होइनप्रीत
जननकरिलबहू अस्तकरपुनिपरबेरनकीना कृपापरावरिमनदीना जयबसुदेवसु
वनृपरमीसा जयमोबिरजमतपतिईसा जयप्रगुनारनहरिजदुनायक जयमोपी
जनकेसुखदायक धर्मिकहहसबनगहहरिचरना मोहिजननसंसतभयहरना सुनिति
नकीबानीसुखदानी बोलेकृपासिंधुसुखमानी ४ दोहा अहोभूपगनसुनहुममजोक
छुनिश्चयकीन होइसनासबबचनसबयहबरहमनोहिहीन १० सोरठा भक्तहोहदृ
ढतोहि जनमजनमअनुपायनी सोअनिप्रियहेमोहि गिरासत्यसहुजानियहु ॥ चौ०
हनरपतीछकहीजुबानी सोमैसकलसत्यकरिजानी जेअग्रैस्वर्यभूतिमरमाते जाहिस
रगपुनिगिरहितहोते सोतेमैनिजनयननदेषा कहोनामबिलगाइबिसेषा हेहयन
हुषबेनुदसीसा नरकासुरअरुअपरछितीसा श्रीमरतेभ्रमनहैकेते देवदनुज
सुरपुरनलहते तुमयहभलीरीनकरिजाना उपजेसोनसुरकरिमाना न्यायसहित
धनपायनृपाला जननकरहुममबुधबिसाला पुत्रसमानप्रजाकरिपालन प्रजा

242 A

नेनुकरियहुतुमलालन सुषदुषलाभहानिसमजानी कामादिकसेवहुमनमानी मेरे
रूपमोऊमनलाये विसरहुछितिसेतनसुषपाये देहादिकमहरहुउदासा मनधरि
मोपरतनजगश्रासा २२ दोहा अंतकालतुमविनहिस्त्रमयेहोंपदनिरवान गिरासत्यम
मजानियहुनहिंभूलेममस्तान २३ सोरठा न्रपकहहरिसमुझाइ पुनिप्रेरेवहुनारिनर
मंजुनितिनहिकराइ वसनविभूषनवहुदिये २४ चौपई पुनिसहदेवभेटवहुदीनी न्रप
मंडनभूषणरसभीनी पुनिनानाविधिभोजनपाना दईन्रपनकहुरसजुतनाना चंदन
चर्चितमालपहिराई पुनितांबूलदयोसुषपाई भयेअलंक्रतअसिछविछाये वरवाग
तउडुगनजिमिराये मनिकंचनभूषणरथघोरे कंवललसितपटोदनथोरे वहुनरजा
नचढायेभूपा विदाकियेसवसुषअनुरूपा निजनिजग्रहसवगयेनरेसा गावतप्रभुक
तसुजससुदेसा निजपुरजैपरजनजेकोई वरन्योप्रभुक्रततिनप्रतिसोई कृष्णदेववजि
मिआयसुदीनी सोसवतिनंतेसीविधिकीनी भीमहाथमार्योमगधेसा आयेपंडुतन
यकेदेसा वहुपूजामागधसुतकीनी तासुमनंहिंनप्रभुसवलीनी नगरनिकटपहुचे
जवनाथा प्रांषनारसुनिप्रजासनाथा हरषेसुहृदअरिनदुषमाना प्रभुमागधमा
र्योहमिजाना सहितभीमअर्जुनजदुनायक आभिवेदनकियहससुषदायक २५ दो०
निजक्रतकरमनरेसप्रतिकहीसकलजदुनेर सुनिहियहरष्योधर्मसुतउमग्योप्रेम
अनेर २६ सोरठा भयोतनोरुहगात केदमस्यो प्रभुवदनलषि कहनसक्योकछुवात

श्री·भा·
१२४३
243

जलजनयननवनजरलगी ॥ १७ ॥ दोहा कहेदोहसायीचवरसुभगसोरठाचारि यहतिह
तरमोऊवरसुभकथाश्रघहारि ॥ १८ ॥ इतिश्री भाषायांमहापुराणेदशमदशमस्कं
भाषानिबंधे धेरानसूयरिमविजयनरासिंधवधंस त्रिसपतितमोध्यायः ॥ ७३ ॥ दोहा
बोहनरकेमोऊश्रवराजसूयमखमाहि शृजाप्रथमप्रसंगमेहरिमारिहेविनतेहि
॥ १ ॥ मगधहन्योमख्यआरद्दीमध्यमाहि सिसुपाल अंकुरभारतकोकियोअंतमाहिं
दलोन ॥ २ ॥ चौपई मुनिबोलेपुनिनृपकेपासा जिनकहुलखकथाइकआसा हेनृप
धर्मसुअनमुनिबाता जरासुअनजिमिकसनिपाता निजपरिसकयामानिअनिर्भरी
हाथजोरिनृपवचनउचारी हेप्रभुजेसनकादिकदेवा लोकपालतवपदरजसेवा
तवअनुसासनधरिनिजसीसा पालहितवयावसुजगदीसा अैसेनुमनुयसमको
नाहीमेंश्रातिदीनहीनकिछिपाही सोनुममम श्रायसुहियधारी करहुसोयहअचर
जहियभारी अननुरूपयहकर्मतिहारे मोहीयकलेकरगनिद्यभारे नेधपितुम
परब्रह्मगोसाई नहिसमविषमकतहुकछुनाहीं सकलनियंतासबघटवासी
सबतेभिन्नसदासुखरासी करहुकर्मसबपरिहितलागी नहिकछुकर्ममोऊअनु
रागी कर्मकरनतवतेननकबहू घटैनबढैएकरससबहू जिमिरविउदयअस्तनि
नहोई नहितपनेजहानिकछुकोई ॥ ३ ॥ दोहा जोमेईस्वरजगतपतिकर्मनीचजब
कीन नौअजोगपमनजानिकेकाहिहोइनवीन ॥ ४ ॥ सोरठा जैकबहुकरवनाथ कहो

म

गिरा जदुवंसमनि तौ सुनियै यह गाथ जैसे मैं विनती करौं ५ चौपई सुनियई सजेभ नहीं
कतनिहारे अहमम तिनक वहूनहि धारे निजपरि भेद तिनहिं नाथा लखिय एक स
मनाथ ग्रनाथा उनकौ कर्म न वाधक होई तौ तुम कहू परसै कि मिसोई यह कहू ज
ससमय जव आयो प्रभु आज्ञा लै अतिसुख पायो विदुर विवेकानुकनि द्विज जानी व
रणकियौ नर पश्न निसुखमानी व्यास वसिष्ठ सुमंत सुजाना भरद्वाज गौतम तुम सोना न
ग्रयवन कुन्य मित्रा सुत धीरा विश्वामित्र सुमति गंभीरा इनहि आदि वहु भूसुर मानी
वरन कियौ सब कहूसन मानी भीषम द्रोण कृपादिक जेते नित भली भांति सव नेते
गांधारी सुत विदुर कमेते पसमाकू आदि सव तेते वरन चारि मध्ये वन काजा आये न
प वहु सहित समाजा जसभूमि द्विज श्रम लव नाई चामीकर हल भूमि सोधाई दीधा
करी वेद विधि चाहि यथाजोग सव करम करहि ६ दोहा सकल पात्र केचनमई जिमि
जलेसमथमाहि तैसे इनि सव विधरनी भूरे वन चितचाहि ७ चौपई शिव विरंच सुरप
ति दिगपाला सिद्ध मुनीस जञ्च पयग व्याला विद्याधर गंधर्व समाजू चारन किन्नर
छवि अति राजू सकल देस राजा रनिवासू आये मखदेखन सुखवासू देखि युधिष्ठर
जस अनूपा विसमय जुत चकित भये भूपा पुनि हरि भगत जानि नरपालहि गति विस्म
य सव भए तत कालहि द्विज न जन्म कीनी श्रुति रीती अति मन हरख प्रेम वहु प्रीती ज
व सोमाभिषेक दिन आवा पावक द्विज सुभ अवसर पावा वहत सभासद पूजन की

श्री भा॰
१२५४
२५५

ना मुनि बियाहेरनकोमन दीना। निश्चै होत एक नहिं काहूं॥ प्रथम कहि पूजिये जिहि सब ला
हूं॥ तहसहदेव बोल सुभ बाना॥ प्रथम पूजियै हरि षिपसना॥ सकल देवमय स्री भगवं
ना॥ छ्माफल सोल है तुरंता॥ सकल विश्वयह हरिमय जानू॥ सकल जगसतननाकरमा
नू॥ श्राहुत अग्नि मे असबु नेते॥ तृप्तमयो जानहु सबतेते॥ ८ दोहा॥ एकईस परिब्रह्म
हरि सकल जगतमय सोइ॥ जगसंभवु करि पालि तिहि अंत तहां लय होइ॥ ९ सोरठा॥
जासु अनुग्रह होत करहिं भोग तपदानमख॥ सबको अहै निकेत धर्मादिक आचरणजे॥
१० चौपई॥ पुनि फलदाना है हरि सोई॥ ता बिनु अपर न दूसर कोई॥ सर्वभूतमह व्यापक
अहही॥ सबगत सब रत अकृति इमि रहही॥ प्रथम रूप नव भोग सरूपा॥ इमि कहि सिंह केस
हरे बचन बोला॥ साधु साधु दिज बचन अडोला॥ सुनिहि जगिरा नृपति हरषाना॥ सक
ल सभा सत्कौ गनि जाना॥ प्रथमहिं कै कौ उम्पकौ पूजा॥ सकल देवमय देषन दूजा॥ ता
सु चरण जल अघ दुष हारी॥ सानुज सहित प्रिया सिर धारी॥ पीतबास भूषन बनमा
ला॥ भूषन किये नरेकै उताला॥ अतिभर प्रेम तनू रुह गाता॥ सजल लेन पन मुष आव
न बाता॥ यहबिध सादर पूजन कीना॥ सकल सभा फल नप भल लीना॥ देषि सिंह मुनि
अनिद रषाई॥ जयधुनि गगन सुमन झर लाई॥ यह सब चरित देषि सिसुपालू॥ महा
ग मोह हिय क्रोध बिसालू॥ निज आसन ते उठि कै आए॥ भुज उठाइ कहि परुष प्रलापे॥ ११
छंद॥ कहि परुष बात सुनाइ प्रभु कह रहित भय सेकानही॥ देषहु दरत्यायकाल कीग

244A

तिवुधिमनिसवहीवही हेसभापतितुमसुनहु सिगरे वालभाषितजनगहो तुमहु गुनि
वेकेपात्रसिगरे अपरपूजाकिमिकहो १२ तवश्रीन विथाजुक्तिमुनिगनलोकपा
लनछाडिके सवसभापतिकरि करहिं अति क्रमगोपपूजहु चाहके मषभागजिमिको
ऊकागपरसेकरीतुमसतभाइकै यहगोपवेसकुजातिहू षनभसोमनवचकाइकै
१३ दोहा वरणाश्रमतेरहितयह सकलधर्मनेहीन सवइछाचारीरहित गुणकिमि
पूजाचहलीन १४ सोरठा श्रापितकुलयह आहि नृपजजातिकनजानिये वृथापान
रतिआहि पूजाप्रथमनयोग्यमह १५ चौपई द्विजसेवतनिजहेसमुहावनि परमप
वित्रसकलमनभाविनि ताहित्यागिगेपोजलनिधितीरा वसेतहांचितअहेनधीरा
चोरनप्रजानामकीयाकी ऐसौ गुणचारकु धुरहीनवोकी एहिविधवहुतअमंगलवा
नी वोल्योंजोकछुहृदयसोहानी नहिं वोलेकछुतासुजाना शिवाशबमृगपति
जिमिमाना हरिनिंदासुनिजेतिहिठामा तिनकहहुसहदुःषपरिनामा कानमूंदउ
ठगएअनेका जिनकेहियकछुअहैविवेका सिसुपालहिसापतअतिभामे भयो
देवहतदुरन्तिनलागे भगवतनिंदाकेजनमास्र सुनियनकानतजियषलआस
उततेउठिनहिंजेजनमाही भोगहिंसोषनिरयकेमाही सुनतपांडुसुतअनुचितवा
नी महाक्रोधजुतमनअकुलानी उठेसकलमिलएकहिसाथा पांडुतनयकैक
यनरनाथा शस्त्रपाणिलेलैसवठाढे सिसुपालहिमारकरिसगाढे अतिसंभ्रम

श्री॰भा॰
द॰२४५
२४५
नं

245

तुरतनवसिसुपालू गहेउचर्म असिउदतनकालू १६ दोहा रामचंद्रके पछजेभूपनपरमप्र
वीन तिनहिनिदरिअतिप्रहृ अकारि गरजिनअतिसेकीन १७ सोरठा तुरतउठेम
गवंत निजजनरोक्योक्रोधयुत हरिगहिचक्रअनंत सिरछेद्यौसिसुपालको १८ चौ
पई निजजनरोक्योसोकिहहेतू करिसेसस्पेअसिबुधिनिकेतू ताहिकहतनरोक्योहि
तजानी महावलीइहहैअभिमानी ममकिंकरसोसवदलल्याती मारहिसवनिवचै
कोउनाही यातेसवकहरोकतुरंता छेद्योअरिसिरअतिबलवंता भयोकुलाहल
अतिसेभारी नचमारयोसिसुपालमुरारी तासुरहेजेपछकजोई भगेजीवलेलेसव
सोई तासुदेहतेजोतिअनूपा लीनभईसोप्रभुमहिरूपा सवकेदेखतगईसमाईउ
लकाजिमिनभमाजरहेराई करतरहानितसवपोला विस्नुद्रोहअतिमोहविसाला
निसिदिनकामकोहचितभायो वासुदेवमहलछिकिमिपायो असिसंसयकोउम
नमहुआने ताहिकहततउनरसनमाने जन्मतीनिकृतवैरअपारा विप्रश्रापकरि
वारहिवारा अतिसैक्रोधकियोदिनराती तनमयचितनहिछिनविलगाती १९ दो॰
यहतेप्रभुमहलीनहै फेरिगयोतिहिंठाम द्वारिपालहरिकोभयो लह्योपरमविश्रा
म २० चौपई मुनिभवकारणसुनहुसुजाना जहंजासुमनलागेनिदाना निश्चय
गहेरूपसोताको श्रीगीतोकहन्यायगनियाको अपरनकारनदेसंसारा मोहिहे
तुजन्ममेवहुवारा मुनिनपसवद्विजगणसनमानी विपुलरचनोदियमनमानी

245A

जथाजोगजिननसकछुमोगा नसानितिहिदियोविलंबनगाना सबकीइछाकरिसुषरू
पा वध्यिघनहानकीननवभूपा इहिविधमषकरायनगरीसा क्रष्णदेवईसनकेईसा
कछुकमासतहंवसेय्रनंता नृपविनतीनिनकरिवुधवंता नवनृपसैअासाहरिमा
गी जादुनकहसकअतिअनुरागी अनुइछनहरिकपिपियाना सहितभांममेचीग
ननाना नवपुरीनिजअतिसुषपाई कहीकथामेतुमप्रतिगाई धारपालप्रभुकेअनि
प्यारे विप्रस्रापकरितिनतनुधारे मजानकरियीछेसुभरीनी वैठेसभामोरुन्नतप्रीं।
नी ब्रह्मछत्रविचसोहनकैसे देवसभामहिसुरपतिजैसे २१ छंद सुरसभावीचसुरे
सजैसेसोहइविसोछकिरह्यौ निमिधर्मसुतसंपतिसभासवरेषिकेसुषमनलह्यौ
लहिमानसुरनरउमगाहियआनेरनिजनिजपरकह्यौ कलरूपदुरजोधन विनास
वनगरवाजनगहिगह्यौ २२ दोहा अतिविभूतिईस्वरजवरिधर्मसुअनकीरेषि अं
धसुअनउरतापवडउपज्योसोकविसेष २३ सोरठा कुरुकुलआमस्जानु परिसंप
निरेषिजरै दुषसोलहैनिरान जोकोउ इमिनरकरै २४ कृष्णचरित्रविचित्रकहेसु
नेअघओघहरि पावरहोहिपवित्र अमृतसुनकीकाचली २५ दोहा कहेदोहरासा
तवरछंदरकहेवरतीनि वरनेयद्दुसुभसोरठाकृष्णकथारसभीन २६ इतिश्रीभाग
वतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषाविवेके सिसुपालवधः चतुःसप्ततमोध्यायः
७४ दोहा राजसूयकेअंतमहन्हवमजो नकियेवेग दुरजोधनहियतापवडलषिसं

श्री·भा·
९·२४६
246

वनिचहुंफेरि १ परमसुअनकीसभामहि निजलोचनभ्रमपाइ मानभंगपुनिपाइ
सहगयोक्रोधउरछाइ २ पचहतरकेमोऊ अवदतनीकथाअनूप मुनिकहिहै
भूपालप्रतिकृस्नकथासुधरूप ३ चौपई विस्नुरातसुनिमुनिकीवानी बोलेवचे
नजोरिजुगपानी हेमुनिधर्मसुअनमखमाही आयेसुरनरजेतिहिपाही अतिआ
नंदभयोसबकाहू दुरजोधनद्दमिकिकिमिभाताहू यहतवमुखमैसुनागोसाई कार
नतासुकहियेसमुझाई सुनहुभूपनोहिकहौंबुझाई निमिदुरजोधनउरदुखछाई
नवपितुपितामतसकैमाही सकलवंधुतिहिपासरहाही करहिसकलसेवानितनास
पालहिआयसुरहिनहिपास भीमपाकसालानहरहही पाकविधानजुकनसव
करही धनाध्यक्षदुरजोधनभाऊ अतिआनंदहियेसुखलहिऊ सबकोसादरहि
तसनमानू करतटहलसहदेवसुजानू नानाभांतिवस्तुलेधरही नकुलअहेपरिच
रजाकरही संतसमाजसेइवोनास अरजुनकहहराख्योनिदपास फूलपानिचदन
वहुभांती भोजनसादरसुभगसुहाती कृस्नदेवभसुरजेसाध पगधोवतनितसुम
तिअगाध दुपदसुतापरिवेसनकरही करलहानपरसेततरहही नामविकरन
अवरसुधुभानू विदुरादिकजेचतुरसुजानू नानाभांतिकरमसबकरही नृपआय
सुसीसनसिरधरही ४ दोहा इनेहत्वजभांतिवहु अपरसभापतिजोन दानमान
भूखनादिसेजेपानाजानवहिपान ५ सोरठा सोमासुभगवनाइ हयगयचरपचनृरंग

246 A

नी सुरसरि परसी जाइ धर्मसुग्रनइहिरीतिकरि ६ चौपई ग्रलेकारजुनसवनरनारी
गंधमालग्रतिसेसुषकारी जलविहारतहकरहि सुरीनी लेपहि ग्रभिषिंचहि जुनश्री
नी गोरसनैलहरिद्राभूरी लेपहि पुरुषतियन विधरूरी बालकयौलेपहि हसिताही
जो उनसो येसे चित चाही नरवरनियसवसधिनबुलाई सीचे रूपहेवकहु जाई हे
वरजे तिनके निहिहाई तिननेसिंचन वामसुहाई भीगे वसन गात्रसुठि सोहे निरषतका
मनकेमन मोहे इहि विध करि विभ्रतग्रसनाना वेहविहनद्विजवरगननाना कंचन
रथहयसुभगलगाये तापरिसद्विनरपग्रतिछविछाये देवदुंदुभी वजतग्रनेका सुमन
वरषिजुतकरहि विवेका नरदुंदुभितह विविधप्रकारा वसननभई सुषसवरसुषारा द्वि
जबुलाइ दीने वहु दाना भूषणवसन ग्रनेक विधाना सुहृदवंधु जे मित्रसुजाती पूजेनर
पतिनकहु वहु भांती ७ दोहा मणिकुंडलमालाललित वसनविचित्रग्रमोल पहिर
पहिरराजन भये सोभित वरनतमोल ८ चोपई नरनारीराजनयह भांती जनसुभ पुरते
सुरगनपाती रितजग्रादिविप्रगनजेते छत्रीवैस्यसूद्रगन केते सवकहषूजितनृपत
सनमाने पूजितहै तिनकियोपियाने धर्मसुग्रनमष करतप्रसंसा निजनिजगेहग
येग्रवतंसा करतप्रसंसा नृपतनलहही नरनिमिसुधापानिसुषमरही नवनेसुह
दवंधुजनकोई प्रेमसहितपरमानितसोई राघेमिनयग्रहविसर्जिनकीना कृष्णहरसम
हमनग्रतिदीना कृष्ण देखिनृपप्रेमग्रनूपा रहेकछुकदिनसुषग्रनुरूपा सोवुग्रारि

श्री भा॰
६२४७
247

जइ वीरन्ह अनेका पठिये निजपुर सहित विवेका यह विधि धर्मसुअन मन कामा सफल
भयो विनु श्रम अभिरामा एक समै अंत हपुर लोस्र दुरजोधन तेहं पों अनयास्र देखिना
सुरै स्वर्य अनूपा दुखित भयो अनिसै हि भूपा सुर पति नर पति भवन विभूती ना सु सह
सगुन सम करनूती ७ दोहा कृस्न कृपा विभ अति धर्मसुअन घरि देखि गंधारी सु
त विकल अतिमान दुना पावक सेखि २० चौपई जासु भवन मह सहस सुदामा कृस्न
हे वनिय अतिहि ललामा श्री मुनवदन कमला दुतिहारी कुचकुंकुम सोभा अतिभारी
कुंडल पल्लन यत अनपारे कुंतल सुभग सचकन कारे पगनूपुर धुनि सुभग सुनी
नी तिहि लखिमाकिंतिया वहूपा की इति उनपि रहहिं वेदरके वेरा वदननासुकोटिकज
सुवेदा मयनर मैं जो सभा सुहावन अति पवित्र सुरनर मन भावन धर्मसुअन सवअ
नुज समेता तहं वैठ विलि कृपा निकेता केसन सिंघासन तह राजत धर्मसुअन तिहि अ
तिछवि छाजत जनु सुरसभा सचीपति सोहत तिरवलोक पति सकल विमोहत अस्त
लोक सम विभव अपारा वंदीजन गावहिं गुनभारा दुरजोधन तह सभा मझारा गयो
बंधु जुत निहि मरभारा सीस किरीट सुभग उरमाला हस चलिये अलि सुभग विसाला
द्वारे हरी पमिल लगि मास्र गिर मिला गिपुनि रहहिं गांध्रास्र २१ दोहा थल मह जल भ्र
म भयो तिहिं लीन सिंचल न उठाइ जल मह थल ले धिम ठमति गिरे उतहां अकुलाइ
२२ सोरठा मयरचना अतिगूढ़ नं घमहिं पलैघ लेनीरसम अहमितमन अतिगूढ भ

247 A

स्यो क्रोध विषधर मनहु १३ चौपई हस्यो भीम तिहि गिरत निहारी हसे अपर सब भूप सुधा
री हसी नारि सब जे तिहि ठामा नृप वारत नहि भल परनामा कृष्णदेव अनुमोदन कीना अ
तिल ज्ञान गति तिह हम हि प्रवीना भीम हास्य पुनि उमग्यो क्रोधा महामूढ जिहि लेस न बोधा
अतिल ज्ञा मानी हिय माही अंधो वचन बोल्यो कछु ताही उठि तुरंत नह सोत व मानी गयो
हस्तनापुर दुख मानी हाहाकार भयो तिह काला अतिसे दुख मान्यो नरपाला रहे मोन गहि
कृष्ण कृपाला छिन भर रह रन चहत गोपाला कलह बीज उपजायह आजू हरो दुष्टकुल
करे अविराजू दुरजोधन द्रिग भ्रम उपजाई भारन सहित बीज जनु माई मय माया पारथ नास
व जेती अह ह निमित्त माय सब नेती कारण करन कृष्ण जगदीसा सकल पान कौ है नर
ईसा यह सभ कथा कही मै तोही पूछेनू पूछा जो मोही १४ दोहा दुरजोधन के ताप को का
रण कह्यो बुझाइ राजसूय की विविध लखि दुख हिये अकुलाइ १५ सोरठा पचह तनके
माहि कहे रोहरा पोचवर सुनत सुख रस वकाहि अपर सोरठा जुग कहे ॥ १६ इति श्रीभा
गवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषानिबद्धे दुरजोधन मान भंग पंचसप्ततमो ध्या
य: ७५ ॥ दोहा ॥ अब षट् सतर के विषे सात्व भूप जदु वेस जुद्ध कहत इन दुहून के श्री
शुक मुनि अववनेस १ ॥ करत जु ध प्रद्युम्न सो युद्ध महा गहि घोर कृष्ण तनय के हिय
हन्यो बीर बली कहि जोरि ॥ २ ॥ मूरछित लखि तह सारथी रथ से गयो निकास इति नीक
था जु या हि मह कहि है सकल प्रकास ३ चोपई पुनि बोले मुनि कृपानिकेता बिनाचा

श्री॰भा॰
९२४८
248

कहनन कहुं सुयरेता हिन्दपञ्चपकथा हरि केरी सुनदसम मयगुनमय सुखदेरी नाम सा
ल्व सिसुपालसनेही बडो वीरमानी मदतेही रुकमिनव्याहमो ऊसोग्रावा जदुनेतहा
मरामचपावा तहासाल्वप्रतिसाकीनी सकलमहीसन सोसुनिलीनी नहिराखो जादु
वछितमाही यहपनकियोमूढसुधनाही शिवग्रारधनकरनसुलागा महाकठ्ठग्न
तिकरदग्रभागा भोजनकरै मुठिभरधूरी संकरध्यानकरैविधपूरी संवतसरभरद
ननपकीना ग्रासुतोषशिववरतिहिदीना मोगुमोगुजवकह्योपुकारी कहनसुमलो
गगिरासुयकारी देवग्रसुरनरकिन्नरनाभा इनतेमिरैनहेवडभागा ग्रसविमान
दीजेएकमोही ग्रपरवरजाचहुकछुमोही एवमस्तुशिवकहापुकारी पीछेमयकहुलि
योहंकारी लोहमयीकरिपुरनिरमानू दियोसाल्वकहतिनसुधमानू ४ तहापायो
कामगजाननतिनसोभानोमहेजासु ग्रंधकारकोमूलजनुहैग्रगम्यसुषवासु ५ सोरठे
भयोजानग्राश्रूढ चपगयोचलिद्वारिका सुमिरैबैरविमूढ घेरिलियोपुरचहुदिसा
६ चौपई सेनालेगोग्रमितवनाई हयगयरथपयदलसमुदाई पुरप्रकारगोपुरव
नवागा सुभगग्रदाग्रारामतडागा भेजनकरैलागग्रभिमानी जदुवंसनकंहत्रलस
म जानी ग्रापुनिचढिविमानपुनिगएऊ शस्त्रवृष्ठिमनभकरतजुभएऊ पुनिदुरमसि
लाउपलवरषाई पुनिजलकुपलधारझरलाई चकवातग्रतिचल्योसुघोरा राज
छादितभातनमिचहुग्रोरा यहविधसाल्वनगरहरिकेरो महादुषितकियकपरघनेरो

जिमित्रिपुरासुरतेनरनारी दुषितभयेकंपितहियेभारी तिमिव्याकुलपुरजनहुकोभयऊ
विसरगयोसुषदुषतनभरिऊ लषिप्रद्युम्नप्रजाअकुलानी तिनहिकहीवानीरससा
नी जनिभयकरहुधीरमनधरहूं कायरतामनकीपरिहरहूं असिकहिभयोसुरथअ
सवारू चलेअपरभ्रातारणसारू सात्विकचारुदेसरणधीरा सोवचलेपाछेहिमतिगंभी
रा ७ दोहा हारदिक्यअक्रूरउतभानुविंवअरुभानु चाढिचढिरथनमहारथीधरेशास्त्र
धनुवानु ८ सोरठा महाधनुधरिवीरसजिवाहनतनत्राणधरि चलेवदेरणधीरवंद
वंदजदुकुपरसव ९ चौपई प्रवलअनीकयादवनकेरी चलीचहूंदिसकुअरनघेरी
होनलागरणपरमकठोरा जनसुरअसुरभिरेवरजोरा मायाप्रवलसाल्वकीभारी सो
प्रद्युम्नछनकमहिटारी एकवाणमायाकरिनासी जिमिरविकरतमरहेनरासी वान
पचीसकियोसंधाना तीछनतेजकसानुसमाना सेनापालसाल्वकोदेषी हन्योतासु
हियमांऊविसेषी पुनिशतवाणसाल्वकहमारी एकएकवाणसकलउरडारी दस
दसवाणसारथीजेते रुकमसुअनमारेसवनेते तीनतीनसरवाहनव्यूहा मारेएक
हिवारसमूहा लाघवरुकमसुअनवलदेषी अचरजसवकहभयोविसेषी मयककनमा
माजानअनूपा कवहुकएककवहुवहुरूपा कवहुकप्रगटकवहुंदुरजाई अहेअ
नरकनमनठहराई कवहुकव्योमकवहुंभूमाही कवहुकजलभूधरसिरपाही
फिरेअनालचक्रजिमिफिरही कतहूनघरूछनएकसुरहही १० छंद छनएकरहे

श्री भा०
१० २५९
249

नखधिरश्रविपुरदे षिजहु विसमतभये चलि जाइ जेहं जहं साल्व सेना सहित तहं तहं ए
गए मारहिं जुवानकसानुसम कोऊ विषम विषधरसे हुने तवसाल्वको मंत्री प्रवरगहि
गदा आयो वीरहे अतिभार लोहमयी गदा प्रद्युमन उरमारत भयो करि घोरनादविषा
दसवके सुन न हिय धीर जगयो २२ दोहा लगी गदा प्रद्युमन उर विकुल भयो रथमाहि
जान दसा तव सारथी सकल नीति जिहिं पाहि २३ चौपई त्यागि भूमि रणकी तिनआ
न रथ लेगयो नको निसिवासर गये दंड है हरिसुत जागा दारुक सुत सो कहन जु लागा
अहो असाधु कर्म तें कीना अपजस मोहि बडो तें दीना जदुकुल मोऊ भाग्य अस कोई क न
रत जुद्ध रण छांडे जोई मोहि बिना कोऊ अपर न भएऊ जु जसंग्राम भूमि को गएऊ काइ
रतू भयसु तचित नमोरा अपजस तव कृत भा जग मोरा जैहौं न व निज पितु के पासा पुछि
हैं मोहि सहित उपहासा रणतें भजे कहु किहि रीती उत्तर कौन देहु किहि रीती पुछिहैं
भ्रात भामह मम मोही हरिवर जीते कोऊ तोही कहे आनु केसो रण भएऊ को कु जीत्यो
को ऊधर भजि गएऊ तव मैं कहा कहहु उन पासा तीर कौन यह जग उपहासा सुनि अ
सि वचन सारथी बोला सुनियनाथ यह वचन अडोला २४ दोहा महवचन अडोला आयु
हद अमोला सुनियनाथ यह नीति सत हैं सत विहाल्नार थी कृपाला करैता सुत नत्रा
तमुदा लखि रथी अवेता बुधिनि केता सूतताथु हठि जतनकरै जिमि रहत न तासु
करै सुआस गुण श्री ग्रमात न हिधरै २५ दोहा धर्मज्ञान निजनाथ में रणतें रथ

हिनिकास लै आयो यह ठौर महँ को करि सक उपहास १६ सोरठा परनै पीड़न मा
धनु मकहँ जान्यो विकल अति कहौ जो रिगु गहाय मोनेर धआप्योत हों १७ कहे हो
हराचार अपर सोरठा तीनि वर कृष्ण कथा अघ हारि ध्वंस सुभग अध्याय वरन्यो १८
इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे भाषा मिश्रे षट्सप्ततितमो ध्यायः ७६
दोहा सतसत्तर के मांझ हरि आइ तहां तिहि मारि मायावी सठ साल्व को सौभ चूर्णि क
रि डारि १ इति नी कथा वखानें हि श्री शुक कृपानिधान नानि नृपति मति सुदृढ अति
कृष्ण कथा कल्यान २ चौपई हे नरपति कृष्ण तनय सुख पाई परसि वारि सब सस्त्र म
गाई कहन लागि हे सारथि नेरन वेगि हांक रथ चपल तुरंगन जहां द्युमनि ठाढ़ौ अ
नि भारी तहां पहुंच पल में हितकारी जाइ लख्यो अति द्युमन प्रचंडा मारत जदु सेना
वरदंडा लखि प्रद्युमन ता हर घोरा भयो क्रोध अति प्रबल न थोरा जानमहि आठ
वाण तिहि मारा महा धीर अहि विष इव भारा चार बाण हय चारनि पाना एक बा
ण करि सारथि घाना द्वै करि छेदे धनु अरु केतू एक बाण सिर काटि निषे तू सांव सा
त्यकी गद रण धीरा इन मारा रिपु दल गंभीरा छीन कंधरा कर भुजदंडा परे सिंधु
तट वीर प्रचंडा इमि जदुभूप सासन सारी भई परस पर अति भयकारी सप्त विंश
ति न राति लराई भई अमित विध है नरराई ३८ प्रद्युम्न अरु कृष्ण जब पधारे पंडु सु
अन जब नि व निह कारे ३ दोहा मय वसा ध्यो सिसुपाल हित नृप सन आयु सुमानि

श्री॰भा॰
६२५०
250

चलेनाथद्वारावती हरषसहित अनुराग ४ सोरठा चलत पंथके माहि सगुन भ
लेनहि हरि लख्यो कहत अमंगल सुभनाहि है अरिसकछु आगमन ५ चौपाई हम हे
रु बंधु इहा चलि आये जे मम अछित तिन औसर पाये जो सिसुपालरु नेही मूढा म
म पुर भंग्यो मोहि अरूढा इमि मन गुनत गये पुर पासा दिखित गो पुर बाग विनासा
आगे चलि देख्यो संग्रामा तंह प्रद्युमन आदि वलधामा देख्यो पुर व्याकुल सब लोका
गा तासु जान हित करै अविवेका पुनि लखि सोभ सा ल्व वलभारी हरि हारुक प्रति
वचन उचारी अहो सूत मम स्यंदन आसू लै चल अवहि साल्व के पासू जानि विलं
व करू अरि यह भारी छलो महामाया कहदिकारी सुनि प्रभु वचन सारथी तवही
रथ ले पहुचायो तिहि छिनही करन अचेस तुरग्म कहु देखी धन्नगारि कहहे उर
लपेखी देख्यो साल्व तुरग्म कहनवही मनकसमान भयो सढतवही सकति घोर
अनि भोमकढोरा मारि सितारुक उर कारि जोरा ६ दोहा आवत नभपथ सो चली
मनु कस्मानकरि पुंज कस्मणवसरनु रत लै करि सिव घट विभंज ७ चौपाई नभ
पथ भ्रमत सोभ कहु देखी मारयो घोरशरायान विसेषी साल्व हि मारयो सर सेरोहा
धुमन अकास न मन न कछु मोहा साल्व कोह करसर संधाना मारयो सारंग धनुक
प्रवाना हरि करतें खसि गो भुमाही हाहाकार भयो सब काही घोर नाद करि सा
ल्व पुकारा परुष वचन कह मद हगवारा रे स्मम्मदरे मूढ मम वानी है प्रमत्त

तूं अति अभिमानी मम सिसुपाल सखा अति प्यारी तासु हरी तिय है तनकारो पुनि तै ना
हि सभा में मारी फिरत निरंकुस है मद भारी तो बल सार तोक हहरि आजू सुखित करौ
निज सखा समाजू तहां पठाइ दैउं अब तोही जहां गये तूं मिलत सन मोही जो परि रहै ये सो
मम आगे प्रिया बंधु जो नहि प्रिय लागे सुनि प्रभु वचन परुष सठ कोरी लागे कहन न सं
त्यन सम घोरी अहो मंद कसि करि सि प्रलापू वृथा जलपना कहि सि प्रतापू ८ दोहा सू
र करत नहि जलपना निज पौरष प्रगटाहि मेदनि करत न वकाल यह तूं हे खित तिहि ना
हि ९ सोरठा इमि कहि सुभ कर लीन गदा परम रिपु हमन हित ग्रीव कंठ विचरीन
साल्व हेत कंपित छनक १० चौपई गदा पौर जव रह गो तासू अंतर हित ह्वै गो सठ आसू
गई घरी द्वै सो पुनि आवा माया आगम तहो प्रगटावा करी देवकी माया रूपा प्रभु ढिंग पदे
दई अनुरूपा रुदन करत बोली प्रभु पासा कृष्ण कृष्ण मेटहु मम त्रासा पिता तुमार बांध
इन आना देत त्रास जिमि बधिक अपाना सुनि अप्रिय वानी विषसानी मानुष लीला क
रुहिय आनी मन कर भेद हीन सम भाखे निज प्रताप अंतर हि न राखे सकल सुरासुर जी
तनहारे श्री बलदेव बली अति भारे साल्व तुछ मम पितु गहि आना अहो लखो विधि
गम बलवाना असे कहत तेक छमरन माही तेहि साल्व आऊ निहि पाही वसुदेव हि
लीने इमि बोला यहतव जनक चपल मति लोला बधो याहि अब तोहि देखाई जो बल
हे तो लेहु छुडाई ११ दोहा असे कहत वह मंद मति तीछन लै करिवाल सीस छेद वसुदे

श्री रा०
९६ २५१
251

न

वसुदेव कर नभ चढि गो निहि काल १२ चौपई रहे धरी द्वै नर अनुहारी स्वजन संग इव
भये दुखारी अति प्रभाव नहि कुंठित ज्ञाना माया असुर करी पहिचाना नहि तहं तनु हि पित
चरित सीसा सपन समान चरित सब ही सा देषि वाम पथ अरि सठ भारी तासु बध न कह
जतन विचारी यह कोऊ भ्रिषि को मति दृभरूपा कहत सो निज मत के अनुरूपा निज मुष
वचन विरोध न जाना तेइ मिक रति बषान अयाना अहै तहां कारन यह सुनहू नवयह
कथा भाव मन गुनहू रानस यम यमह जगदीसा इक ले कृष्ण गये जगदीसा यातय हस
वचारै न कोई सोक मोह दुख परस न होई अस गुन करुना ब्रह्म को परसै माया कृत वसुदे
व न हरसै मम पुर का दुभेजि उ आई सार गाधनु कगि स्यो भूजाई यह निमित्त जो भय को
उपहही नहि संभवै वातय हस वही १३ दोहा वान धीरई स्वर जब लसत अथवेउ अनूप
अघबल लोक पति ईस हरि ति नहि सोच मिमि भूप १४ सोरठा जासु चरन रज पाइ मि
टहि मोहि कलेश सब तासु निकिट किमि जाइ करम अविद्या कृत सवे १५ चौपई मैं ह
को उन कहे सत्य का आही कहत मुनी सत्य अवता ही कर प्रहार शाल्व हरसूढा नभ पथ
अरि पुनि सोच अरूढा हरि अमोघ विक्रम तिहि देष्यो मारयो सर इक नु रिति विसेषी व
रम कारि सिर मनक दुभेदा साघ वन्न विग्ररि उरभा घेस नवहि नाघ कि यगदा प्रहा
रू अरि पुर भंज्यो अयमय सारू ता गिनाहि भ तल पर आवा ले करि गदा कृष्ण कहु
धावा धावन हीं हरि ताहि निहारी गदा सहित भुज काटि निवारी ताहि मारि वि कहत जइ

251A

नाथा वक्रलियो प्रभु जब निज हाथा अतिसै तेज पुंज छवि छायो प्रलयकाल रवि सहस
लजायो तां करि हरि सिर काटे ऊनास महावीर अरि करि उविनास जिमि सुरेस वज्रमा
सुर मारे अतिनि कार सिर भू परि डारे हाहाकार भयो भूलोका भयो देवगन सकल वि
सोका २६ छंद जब कियो सकल विसोक सुर मुनि कृष्ण कारज एक है जू बाजी गहागह दुं
दुभी सुर गेह भर सुख पुंज जू सुरवधू वरषहि सुमन जय जय कहत जय वजे वंदे जू ह
महीन करुणा सिंधु तुम दह हन्यो गोदु षदु दे जू २७ दोहा करी सुरन पुनि वेनिती सुनिय
नाथ इकुवात हंत वक्र अव आइ है सषा वैरि हित तात २८ कहे सो रहातीन वर षड है
हा सुभरीन कहे छंद एक अंत महु सुनत संत मन प्रीति २९ इति श्रीभागवते महापुराणे
दसम स्कंधे भाषा निवेद्ये सौभवधो नाम सप्ततमो ध्यायः ॥७७॥ दोहा अब यह सत्तर
आठ को है अध्याय अनूप दंतवक्र को हु मारि है अपर विदूरथ भूप १ उभय मारि पुर
रमत हरि सनहि हत बलदेव सुषदे है निज जन न कहुं पुनि तीरथ सुभ वेस २ इत नी
कथा विचित्र सब यह महकाहु बवनाइ कृष्ण कथा के सुनन नही पाप पहार वलाइ ३
चौपई हे नृप कथा कहो बरतोही नू अति प्रिय लागे नित मोही हरि सिसुपाल साल्व
जब मारे गये धाम निज हो पनिहारे तासु मित्र सुनि के दुष पायो दंतवक्र इक लो उ
ठ धायो मित्र ऊरिन है के काजू आयो कृष्ण पास गति लाजू गदा पानि जिमि मत्त ग
यंद चल आयो अति से मतिमंद इहि विध आवत लषि जदुनाथा रथ ते उतर परे न

श्री॰भा॰
६२५२

252

रनाथा आगेजाइरो कलियमाढे जिमिसरजाइसिंधुकेवाढे गराउवाइकहतकटुवा
नी देतवकआयुवसियरानी हेहेकछभलीतैकीनी मित्रमोरिमोहिहरसनहोनी
मानुलेयममवंधुदुवारी मार्यौमित्रमोरिअसुरारी मोहिमारिहैसोऊमैजाना या
तेमोहहनेकल्याना यहममगरामाहिकरितोही हन्योमेंरतवसुयहैमोही ऊरिनीहो
ऊमित्रतेआनू यहसुखमनहुमिलाजगराजू वंधुरूपनुआरिअतिघोरा नोहिमरे
सुखहोइनघोरा जिमितनउपजैरोगकुरोग करइहरनिहिनववहभोग ४ दोहा इहि
विधकसमकपालकहुवचनकहतविषरूप जिमिअकुसगजराजकहु हनेअनोसग
रूप ५ सोरठा इमिकहिकैमतिमंद मार्यौप्रभकेसीसपरि जिमिकोऊमत्तगयंद
ताहिहनैजलरुहमनो ६ चौपई लगीगदाजनुसुमनसमाना नहिरंचककछुजानीभग
वाना तवतिहिहहनननहेनुजइनाथा लगीगदानिजपंकजहाथा द्यौनासुउरमधारि
साई विधिनहृदयसुवरूपिरवहाई गिर्यौधरनिपरभागनिप्राना पसारिपर्यौभुज
कमसुजाना तासुसरीरमांगजनेजू निकस्योअतिलघुदिसाविरेजू सवकेदेखितह
रिमुखमाही गयोसमाइअसवहताही जिमिसिसुपालभईगतिजानू निमिसाकीगत
जानुप्रमानू तामविदूरथवलअतिभारी तासुसहोदरजनदुखकारी भ्रातमरनसु
नि हियअकुलाना आयोरिसभरकालनजाना हाथचरमअसिलैनहआयो हनो
कसमकरअसमरछायो आवतदेखिलियोहरिताही नान्योमरणचाहविनआही

असित चक्र करि सिर हरि नासू कुंडिल सहित छेद्यो आसू ७ दोहा ऐसे मार्यो साल्वक
हू सौभ तासु करि धूरि दंतवक्र भ्राता सहित हन्यो सुजस जग भूरि ८ सोरठा अपर हने
बहु बीर सुर मुनि सब अस्तुति करहि कौ जदुवर सम धीर गावहि गुण गंधर्व नित ९
चौपई सिद्ध महोरग अपसर नाना चारन किन्नर जक्ष सुजाना जय जय धुनि चहुं ओ
र सुहाई जदुवर जस गावन मन लाई छुमन वृष्टि जरि करि हरि सीसा करहि सब हैं जय
जय जगदीसा इहि विधि सकल देवन रईसा गये पुरी जगपति के ईसा जीते बली अनेक
अपावन दियो धाम निज करि तिहि पावन जरासिंधु तिहि सके न जीती काहन मेद कोऊ
मति विपरीती सुना जुध कर उद्यम जवही कुरु अरु पांडु तन घटे जल रही सुनि वल
देव तुरित तिहि काला चले तीरथ मिस विहीन स्याला गये प्रभास छेत्र अति पावन को
द्विजन्म अघ ओघ नसावन तहां नहाइ दीन बहु दाना नित्य नेम करि वेद विधाना चले
विरंच सुता तट देखी संज्ञा विप्र बहु विद्य विसेखी गये पृथोदक तहां नहाये तहां दान
बहु विप्रन पाये गये विंदसर परम पुनीता चक्रतीर्थ सपरे सुखरूपा १० दोहा देखि
सुदरसन तीरथ वर रवि तनया तट जाइ तहां नहाये विविध विधि विप्रन सहित बनो
इ ११ चौपई तहं ते चलि गे सुरसरि तीरा तहां देखि गण को भीरा करि मज्जन भूदेव स
मेता तहं ते चले सुक्रपानि केता नैमष वन रेवा प्रभु जाई जह बहु तीरथ मुनि समुदा
ई तहां वसत जे वनु र मुनीसा पूजित है आसन आसीना बहु हरि सिर दैव्यो परम प्रवी

श्री॰भा॰
१२५३
253

ना नामरोमहर्षन है जासू आसन बैठ उरहे उसु पासू नहि सादर उठ कारि प्रनाम

म्र देषयो गमनि हूं गई वामू हलमा बजोरयो नहि ताही बैरत सह है बमुनि जा ही है

खिना हिकोप जदुनाथा भूदेवन सौं कहुइ मिगाथा कि मिम्रध आसन यो को हीना है

प्रतिलोमज बरन विहीना धरमसेतु पालन के हेतू होहिमही पति बुधिनिकेतू हे यह

बधनयोग अतिमूढा महा गरबमोहि आरूढा हे अजानयह जो द्विमिक हहू नहा सु

को असिकि मिकरई असिसे सयमे कोउ मनधरई १२ दोहा नहा सुनौ यह वचन

ममजे अघोन अवनीत पंडितमानी जेजगन करहि सदा विपरीत १३ सोरठा अैसेसठ

जेकोइ तिनको अधिआसन कि्या विफल जानियहु सोइ जिमि नटकौतक विफल स

ब १४ चौपई माकहु अधिआसन हम दीना अरुसतकार सबन मिलि कीना निज

हु न कर्म भोग हे प्रानी तुम कहु कहा सत सुष दानी जो करा चि अैसे तुम कहहू नहा

सुनौ बानी मम गहहू याहि हेतु यह मम अवतारा चले जो कोउ तजि पंथ गवारा जे

नम्र नौ बधरकि याहि जानी धरध्वजी नर मोर अराती सोइ हे बधनयोग नरमूढा

चलै त्यागि पथमोहि आरूढा असि कहि अपुर हे चुपई सा बधन रतिमन हे नरू

ईसा होमहा रहै मिटे न सोई कोटि उपाइ करउ किन कोई करगत कुस वधहू

गोमासू को भेट भावी वल आसू हाहाकार भयो तिहि काला मुनिन भयो मन षेद

विसाला कहनलगेवलजूसोवाता कियोअधर्मवडेहैताता याकहुव्रस्नासनहमहीना
अरूशरीरगतिचेरमवीना ओलीयहपुरालसवकहही आयुरवलसुषसोयहरहही
१५ दोहा जिमिअजानकोऊ विप्रवधतिमियहप्रभुतुमकीन जयपिईस्वरनाथतुम
परसनपापप्रवीन १६ सोरठा तद्यपिकरऐआहि पापहेतुउपचारकछु नहिश्रुति
सेतुमिटाहि तवअनुसासनवेरयह १७ चौपई सुनिद्विजवचनअनेगोसाई वोलेप्र
भुनिजजनसुषदाई पापहेतुउपचारवनाई करिहौमैंजसतुमहिसुहाई वेदविहित
उत्तमसवभोती कहौविधानकरौंअवसोती हेमुनियाहिआयुवलहीनी इंद्रीयपार
वंजोतुमकीनी सोसवमैंनिजजोगप्रतापा करिहौसत्यनेसुधाप्रलापा सुनिअनेत
केवचनअनूपा वोलेरिषिप्रसन्नप्रसन्नह्वैभूपा अस्तिनृपराकेमनुधानहोई
हमजोवचनकहोइहिकोई सकलसत्यजिहिविधिप्रभहोई करियेनाथकृपाक
रिसोई सुनिवोलेभगवंतअनेता सुनहुसकलरिषिहेवुधवेता प्रत्यथात्माकृतइ
मिकहई सत्यगिरायहमनधानअहई १८ दोहा यातेयाकोपुत्रवरउग्रस्रवाजिहिना
म सोपुरानवकृतजुतवआनकरहुइहठाम १९ सोरठा निवेनमहूसख्यात पुत्रहा
रसवसत्यलषि नववानीहैतात सम्यमोरिसवसत्यभा २० चौपई अपरकामनाजेक
छुहोई कहोसोकरिहौमैसवसोई कस्यौअजानपापमैजानू तासुहेतुविधवेदप्रमा
नू जोतुमवचनउचारणकरहू करौसत्यसंततदिनसवहू सुनिअनंतकेवचन।

श्री भा.
१२५४
254

सुहावन बोले रिषि प्रसन्न मन पावन इल्वल सुत वल्वल तिहि नाऊ दानव कुल म
म जग पन सो ऊ परब हवस ग्रोवे चलि पापी करै थी सम बज जन परितापी ताहि हने
उ तुम हे जदुनायक यह मम सरहल य है तब लायक ज बहि करहि हम जग्य श्रंभा
श्रीवे दुख भरयो मरदमा सोनित पूय सुरा पल डारु विट ग्रद मत्र कुं उ भरि भारुता
हि मारि नीर य पतु मकर हूं भारत भूतुम सब संचर हूं बारह मास फिरे उपरु थंडा पु
न्य लहे सो सब बुद्ध लेडा २२ दोहा सुनि अनेन रिषगन बचन रहे न हो कछु काल
करि विप्रन को तोष न व करिहे पुन्य विसाल २२ कहे सारदा पांच वर शुभ गति होहरा
मान ऊ इमि कथा विस्वास करि सुने होत अघ घात २३ इति श्री भागवते महापुराणे
दशम स्कंधे भाषा निबद्धे बल्वल वधतीरथ यात्रा नाम एकोनपंचाशत्तमो ध्यायः ७९ ते
अब उन आसी के विषै कथा विचित्र वनाइ कहिहैं मुनि रुचि मानि के भूपरस मे
लयाइ १ बल्वल बल कहमार बल रिवि उर श्रीमानें रहे तु सत बध के होय ते वि
परन पुन्यनि केतु २ चौपाई इतिनी कथा सकल यह मोही कहि हे परम सुषद स
व का ही कहि मुनी लहे सुन हुन रेसो बलतू रहे सुभनि हिदेसो शुभ गप बनी निधि
नव श्राई ब लौं प्रचेद यव नदु यपाई बरबे पूरन बान भसा रो भयो घोर र
व अनि भय भारो अनि दुरगंध बात चहूं ओरा अनि अमेध्य बरषा भई घोरा
बल्वल कत यह भीम यसा ला पुनि प्रगटयो वहरूप करा ला कठिन करा लीया

254 A

रतननाख्ल करत्रिसूल आयो अति आसल कैंमलगिरिसम रूपसोहायो सिषानामअ
नुपावकतायो उग्रदंतभ्रकुटीमुखक्रूरा देष्योरनुज असहैगणरूरा हलधरहलम्
सलहिवलायो दैंतहमनआयोखितभायो वल्वलनभपथफिरतनिहारी हलतेवैंच
लियोअसुरारी मुसलउठाइहन्योतिहिसीसा फटिलिलाटगिरपरयोमहीसा गिरि
नीवारसवरकरिघोरा आरतसुरवोल्योवरजोरा ३ दोहा मनहुवज्रहतभूमिधर
लसतअरुणतहधार चलीनिकसअतिघोरसरि अस्त्रिछविलसतलिलार ४ सोर
ठा करीमुनिनवहुभांति अस्तुनिश्रीवलदेवकी आसिषदईसुहाति वस्योवहुतअभि
षेकविधि ५ चौपई हन्योसुरेसविप्रजिहिकाला देवनतुततवकरीरसाला निमि
हलधरकीपूजाकीनी दिव्यवसनभूषनवरदीनी तवरिषगनतेआयसुमागी
महाविप्रसाम्रज्ञतनहकरिके गयेव्रतसर प्रेमसुभरिके तहतेचलीधारअतिपा
वन सरजूनाममुनिमनभावन तासुतीरतीरहिचलआये तीरथराजप्रियागन
हाये नियमसाधिपुलहाश्रमजाई नामगंडिकीसरितसुहाई सोणवियासाम
ज्जनकीना सुषयुतगयापथगहिलीना गयापितरगणतरपनकरिकै गंगासगर
गेसुषभरिकै श्रीगिरिजाइदरसकरिवेरे गोदासपतटेरषिआनेरे भीमरथीवेना
सरपंपा देष्योजाहितिरथअतिकंपा गयेषडाननछेत्रअनूपा श्रीभूधरपरसे
सुषरूपा सेस्याद्रीकहुजाइनिहारे अतिसमहाउन्यगुणभारे कामकोस्थीपुरचल

श्री भा०
२५५
पं

देषा कावेरी जेहु पुन्य विसेषा ६ दोहा कांचीपुरी विलोक बल गये जु पुनि श्रीरंग त
जन नताकह एकछन हरि निवसत अभंग ७ सोरठा रिषभाचलि गे नाथ पुनि हरि
क्षेत्र जु देषि अभ लिये विप्रगन साथ ह छिन मथुरा कें हगये ८ चौपई देष्यो सेतु बं
धु अति पावन कोटि जन्म अघ गौन सावन अयुत धेनु हलधरि नह दीना अति स
नमान द्विजन करि कीना कृतमाला बल आपुन हाये तह ते ताम्रपरिन चलि आये
मलयाचल आये अति पावन जह अगमति मुनि वास सुहावन बंदे मुनि पर धरि
निज सीसा मुनि प्रसन्न ह्वै दियो असीसा आज्ञा मान मुनहि सिर नाई दछिन सिं
धु गये सुष पाई नाम कुमर कन्यका जाही हलधर बलि परस करताही गये जि सुस
र सुभग सुहावन पंच अप्सरासर अति पावन तह मज्जन करि दियगो दाना अलेका
र पुत अस्थ सुन प्रमाना तह ते चलि गोकरन पधारे केरल देस देषि सुष भारे संभु छेत्र
परसा पुनि जाई धूरजटी तह नित्य रहाई ह्रै कवन परसे अति पावन तापी नदी ल
षी मन भावन रेवा देषी परम पुनीता करि मज्जन विधवत सुभ रीता ९ दोहा माहि
षमती विलोक बल मजु नीर थक हरेषि गये प्रभास अनंत चलि तीरथ जहां विसे
षि १० सोरठा कुरु पांडव संग्राम सुन्यो विप्र मुष ते सकल जानि गये बलराम भूमि
भार सब हरि उहरि ११ चौपई लरत भीम दुरजोधन मानी सुन्यो श्रवन ते वच हम
न आनी बार कं जाइ दृहन कहु आजू गहे गदा जह उभ समाजू धरम सुअन तह था

वनरेषी भयोसोककछुहरषविसेषी कृष्णजिष्णुमाद्रीसुतदोऊ चरणवंदवोलान
हिकोऊ मोनरहेसववदननिहारी आयेधौकिहिहेतुविचारी गदाजुधदोऊकरत
निहारे अतिविचित्रमंडलरिसभारे महावलीजिमिदोऊगजराजू वहनपरस्परज
यसुषकाजू वोलेवचनसहजसतभाई सुनहुवीरदोऊहितिचलआई एकअधक
वलहैसोऊजोना सिछावलइकअधिकप्रमाना दोऊसमानतुमलरहुनवीरा करहु
विरामत्यागिरणधीरा कोऊनहिगहैवचनवलकेरी भरेक्रोधक्रतवैरघनेरी विष
दानादिकरतकितअपारा लरतदोऊनहितनसंभारा देवअद्रिहिइमानवलरामू उठि
गेद्वारावतिसुषधामू २२ छंद उठिगयेश्रीपुरद्वारिकाभावीप्रवलहियजानिकै
नृपउग्रसेनहिआदिदैसवजदुनकहिसनमानिकै पुनिआपुगेउठिवनसुहावनना
मनेमषजासुकै तहकरयोमषविधिसहितपावनसुजससवजसुजासुकै २३ सव
ग्यातमिलिनेसुहृदसजुनवम्रतमजुनतहंकियो वरवसनभूषणपहिरिसोभित
द्विजनकहवहुधनदियो इमिचरतिवलकेअमितजानहुसुनतमलगतहै हियो
कोऊकहैसकतनभूरिफलतिहिमानहरिअपनोलियो २४ दोहा कृष्णचरित्रविचि
त्रयहपावनसुषदअनूप धरमादिकजेचारिफललहैविनाश्रमभूप २५ कहेसोर
ठानीनिवरसुभगदोहराचारि अपरकहेद्वैछंदवरकृष्णकथाअघहारि ॥२६॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबंधे एकोनसीतितमो ध्यायः ॥७९॥ दोहा अ

श्री·भा
६ २५६

256

बअस्सी कैमाहि मुनिवर लन कथा अनूप श्रीरामाचलि आई हैं कृष्णगेह सुषरूप १
कृष्ण देवति हिहमि कैगुरु गृह कथा चलाइ अर यह हेतु आगमन लषि रैहैं विस्मनेमा
६ २ चौपई सुनि वलदेव विचित्र अनूपा कृष्ण कृष्ण चरित पुनि भूपा हे मुनि कृष्ण दे
व गुण सागर तासु अपर सुभ चरित सुहावन सुनि न चाहि मोहि दोष न सावन कृष्ण क
धाम नहू रमणसुहावन विषय निवारक पावन पावन कृष्ण कथा अति पावन जानू
त्रिविध ताप वन रहन कसानू ते रस भयको अहे गुण धाम सुनि हरि कथा न लहहि वि
राम वानी सफल तासु गुन गायो पान सफल हरि करम हिलायो अग जग मोउ कृस
कहे रषी सुमिरै मन सोई चतुर विसेषी सुनै कथा हरि की सोई कोना नान रूमुजगु
रेधु समजाना वरश्रु अविर विस्मुमय जानी नमैसी मसोई है सुषदानी हरि विग्र
ह अरु हरि जन रूपा निरषै सोई द्रिग है सुषरूपा हरिहर जन पद सुंदर वारी परसै अं
गु स है सुभकारी ४ दोहा विस्मु रात के वचन सुनि मुनि अति परम प्रवीन कृष्ण रसा
लवमगन चित तजैन जिमि जलमीन ५ चौपई हैनृप कृष्ण सषा इक सुंदर भूसुर वे
द सील गुणमंदर मन विषयारिकरन नहि जास मन गोसु वस अहै निजनास हरि
इच्छा मुनमिले जु आई तन निरवाह करै सुषपाई तासु नारि पतिव्रता प्रवीनी कृतस
न सेतनत है मलीनी दैव यो गक छु मिले अहारा पति कह परस दे इ सो सारा आप छु
धा जुत रहै निरंतर पति सुष चहै सो चहियम्भेनर अति दारिद्र पीड़ित सो नारी पियसु

256 A

बचहै पीर हियभारी एक दिवस सो पति ढिग जाई सूखबरन कह वचन बनाई
है ब्रह्मनन तव सषा अनूपा श्रीपति जदुपति सुषदरूपा अरु ब्रह्मन्य देव जग ही
सा सरन साल तसु रईसा हे पति तासु पास चलि चाहू देहै भूर द्रव्य विनु चाहू अंत
र्जामी अति वरवानी जानत है तव गति सुषदानी वसत द्वारका श्रीजदुनायक
सो संतस संतन सुषदायक ६ दोहा जे अनन्य जन भजन को ऊदे तन अपनपो नाहि
अरथ काम की का चली भक्ति देत सकुचाहि ७ चौपई इहिविधि तियविनती बहु की
नी पति सुषचाहि चाहन भीनी तब दिज निज मन कियो विचारा परम लाभ इक है मो
हि भारा मह मिलि प्रभु दरसन वरु लाहू इहि निश्चय करि उमग उछाहू चलन चा
ह चित अति अकुलाना बोले तिय प्रति करि सनमाना अहो प्रिया कछु है घर माही
जाऊ भेट लै मैं तिन पाही ल्याई मो गि कछू ते भामिन चिरुवा मुठी चार सुभ गामिन चे
ल षंड महं धर जुन प्रीती बाधी भली भांति जस प्रीती पिय कर दिसो उपायन हेतू
चले उ विप्र जे ह कृपा निकेतू चल्यो जात मग करत विचारा प्रभु दरसन मोहि कौ
न प्रकारा गयो द्वारका पुर छवि देषी भयो विप्र हिय हरष विसेषी तौ निद्वार
चलि गयो असंका औरन कहु दरगम मति वेका भूदेव कों अटकन कोई गयो सु
निज मंदिर ढिग सोई ८ दोहा मंदिर सुंदर विमल सुभ सोरह सहस अनूप देषि वि
प्र कम भवन मह प्रविस्यो सो सुषरूप ९ सोरठा सुष नितहि भयो न थोरि बल्ला नेर

श्री·भा·
१२५७
257

समानरोऊ प्रभु देख्यो तिह घोर उदे उभय पखि जेकत जि १· चौपई सहित सद्विजह
रि गे द्विजपासा मिले प्रेमकभरि सहित हुलासा प्रभुतन नयरसलिल सौं प्रतिलाई मग
न सिंधु सुषमा चित चाई प्रभु प्रसन्न थनिमित्र निहारी नयन सरोज बिंदु बहवारी
निज पद संग कसु आसन दीना पाद अरघ प्रभु निज कर कीना निज कर विप्र चर
न प्रभु धोई धरयो सीस निज पावन सोई दिव्य गंध चंदन शुभ आनी चरचित किये
हि जहि निज पानी धूप दीप विधवत करि पूजा इष्टदेव जिहि अपर न दूजा है तांबू
ल सुरभि सुभ दीनी बहु प्रकार विनती प्रभु कीनी अनिक्रसतन करि मल्लिन दकूला
रुक मिन करहि अजन सुषमूला अनेह पुरवासिन लषि रीती मिले कुचील हि प्रभु
करि प्रीती विसमय मानक कहहु तसब लोगा बड़े पुन्य कछु कियसुभ योगा रहित बिभू
ति हीन सब भांती लषि न परे कछु सुमन सुहाती ११ दोहा प्रिया सहित पद जे कनते उ
ठि करि कर पानिक तु मिले हीरय हप्रेम भरि लषि न परयो सो हेतु १२ चौपई द्वि
बिध लोग कहहि तसु भगाथा कहन लगे प्रभु कहहि रिजहाथा गुरु कुल कपा चला
सु प्रीती कहन लगे हसि करि सुभ रीती हेरि जगुरु कुल ते तुम आई करयो ब्याह नि
ज सदन सबनाई कै धीना हि करियो तुम ब्याहू सदा काल तब चित उछाहू गेही
चित हनर छिद्र हरि तासू भोगरहित तन नर ब्यो जासू याते एथ्यो गृत सनेहा अहै
विप्र मोहि यप्र तिने हा आसनबसन न सौ तुम दिन प्रीती मोहि विरति न वग्रन सबरी

नी भोग अभाव ग्रही जो होई सहै गेह दुष किमि कहु सोई औ कदाचि ग्रैसेहु तुम कह
हू सुनिये मम प्रमान विन वहहू कोऊ इक पाइ मनुष्य सरीरा विषय वासना तजिम
ति धीरा गेही धर्म करहि मन लाये जिमि मै करौं करम मन भाये करौं लोग संग्रह के हे
तू मिटहि जिमि यह अति पथ सेतू तैसे जो कोऊ विप्र सयाने करहि ग्रहस्थ करम सु
षमाने हैं द्विज गुरु कुल वास अनूपा हम अनुभव से तहां सुष रूपा गुरु सकाम ते लह
सुभ ग्याना जाहि पाइ भव सिंधु नसाना २३ दोहा गुरु महिमा सब ते अधिक कहन
चहन हरि ईस ताहि हेतु भय गुरु कहत करुणा कर नर ईस सोरठा जह संभव तही
इ सो नहु पितु है परम गुरु द्वितीय अपर गुरु सोइ लहैं जहों सत करम नर २५ चौपई
पितु गुरु के अधिक कीय हज्ञानू सुनहु सान प्रद कहो बषानू आश्रम चारि ताहि है ज्ञा
ना सो गुरु सब ते अधिक बषानी सान दान गुरु सो सम जानी औ भवन रहित ते है गुरु
बानी जे ग्रहस्थ के धर्म बषाने उपनयनादिक अगुन जग जाने ब्रह्मचरज फिर बहु
विध कीना बनवासिन के धर्म प्रबीना पुनि संन्यास धर्म विधि नाना करहि भली वि
ध जे जुत ज्ञाना इनते मै प्रसन्न नहि जानू जिमि गुरु सेवन ते सुष मानू मो हित वेहनि
ज वस किय कोई छल तजि गुरु सेवै नित सोई हम कह गुरु सेवन जो मिलऊ देव
योग ते बहु सुष लहि ऊ एक दिवस गुरु ग्रह की बाता अहे कछु सुध तुम कह ताता
गुरु तियई धन लेन पठाए गए गह न हम तुम सुष पाए गए विपन जह घोर विसाला

श्रीभा
१२५८
258

बरब्यौजलअनिसैतिहिकाला चल्योपवनअनपरमकठोरा गरजेघनदामिनव
हुघोरा अस्माचल्लनकहिंगयोहिनेस्मा भयोघोरतमसूझनलेस्मा छितिजलमैनहिं
पंथलखाई कुछनीचकछुसुमुझनजाई १६ छंद कछुसमुझिनहिंपरिरिवससरिसम
हिंसबचलेनहूंछनजलमई अतिअंधुअलिनकठोरघायनकंपतनसुधिचलगई त
बगहेहमनुमहापरेउजनफिरतवनवननिसिगई जबउहिउरिनपतिसीलनि।
धिगुरुसिष्याहितकरुणाछई १७ तबचलेघोजनसिष्यकरहवनमिलेहमनुम
बीचहीं बोलेदयाकरिपुत्रहेहेदुसहदुषममहितसहीं जगजहांलोप्रानीसकलनि
जदेहसमप्रियकछुनहीं निजदेहतुमनिहिनुछकरिगुरुदहलननमनकरिगही १८
दोहा अहोपुत्रमेसिष्यवरतिनहिंभोगसुनबात गुरुसेवाउननीसकल तनअ
रपनदेहताता १९ सोरठा मोबलहोमैतात होउमनोरथसत्पतव कहोएकयहवा
त सुनतमानविद्यापुरी २० इहिविधिअपरअनेक गुरुकुलबसुक्रियाकरी
तुमलोसहितविवेक हूंसुमिरणवारिबसको २१ दोहा सुनिप्रभकीबानीविमल।
द्विजबोल्योहरषाइ रहेसंगहमसपप्रभुनहिनिश्चिंतआइ २२ बेदमयीबपुना
थनबअरुककल्याननिधान करतचरित्रविचित्रवपरगुरुगृहहलहिमोहिआनरु
कहेदोहराआठवरसुभगसोरठाचारि छदकहेयामहिसुमलकुछमकथाअघ
हारि ३८ इतिश्री भागवतेमहापुराणेदसमस्कंधे भाषाकनिबंधे भगवद्गु

सएसंवादेअसीतितमोध्यायः ८० दोहा अवरथवासीकेविषैकहम्हरेबसुषमान
निजकरविरूआमित्रसनलैहैनिजहियजानि १ सोलेकेनिजमुषहियोपातस
राहिसराहि हैहैताकेगेहप्रभुसपतिनिजचितचाहि २ जाहिदेषिसुरपतिचकिता
असोभवनअनूप रामकृपातेसहजहीदिमहूँहैसुषरूप ३ चौपई इतनीकथायाहि
केमाही मुनिकहिहैभूपतिकेपाही हेनृपसुनहुकहृगएगाथा पुनिहसिबोलेश्री
जदुनाथा अहोमित्रकछुहमकहंल्याये निजगृहतेजवचलेसुभाये प्रेमसहितयो
रोकछुदेई भूरिवहैसोकोप्रियतेई देइअभक्तिभूरिवहुभांती नहोंतोमनहिवसु
सुहाती पत्रपुसपफलपुनजलदीनो अरपैमममनजोजहरीती करोंसकलभो
जनसुषमानी यहममव्रतजानहुसुषदानी सुनिप्रभुवचननदिजवरवोला नउ
तरुदैविमरह्योअडोला श्रीनिवासकुहकिमियहदेऊ छितिलषिरहाविप्रयहभेऊ
सर्वभूतमहिजासुनिवासा जानिगयेसवहियकीतासा नहिश्रीकामभजेऊपहकवहूं
आगेतेजानेउअरुअनहूं ४ दोहा याकेकछूनकामनासदाभजिननिहकाम देहों
कोकासंपदाजोनमिलैसुरधाम ५ चौपई नामपतिव्रतहैप्रियाकेरी पतिसुषचाहई
हाउनप्रेरी आयोमित्रमोरममपासा देऊंसंपदाअचलविसाला सुरदुरलभवर्सिक
लविभूती लहैमित्रसुषसुभकरनूती यहविचारजदुपतिहियजाना वसनलपे
ट्योचिरुयाआना निजकरिवैचलईभगवाना बोलिउहसप्रसन्नश्रीकंता विरूपा

श्री·भा
१२५५
2,59

देषि बहुत सुषमा ने अहो सषा अरभुत यह अने असि कह मुनि एक मुषडारा जब हू
जीकह हाथ पसारा रमा गह्यो करि सो प्रभु हाथा यतनो नो षहे तुहे नाथा सकल संप
दा कह यह हे नू तुम प्रसन्न जब कृपानिकेतू किमि करि गयो रमा प्रभु केरो कहहु हेतु
सो सुनहु निचारो मुनि एक नाथ जब आये सकल संपदा यह अहृ षाये दूसर मुनि ना
थ नो आही मोहि अधीन करै यह पाही भूसुर रहो नाहि निसितह वा अच्युत मंदि
र सुष सब जेहवा भोजन पानि कियो बहु भांती स्वरग भोग सुष सब अराती ६ दोहा
प्रात काल रबि उदय लषि कृष्ण चरहि गि आइ बिदा करी सन्मान करि प्रीति रीति बहु भा
इ ७ सोरठा निज गृह चलु सुष पाइ विनय उकत युत वचन सुनि लह्यो न धन कछू
काहू नहि मांग्यो इन वचन करि ८ चौपई बीडा युत निज सदन सिधारा करत विचा
र सुपथ मझारा प्रभु रसलन हत नहरष अपारा कहन लाग निज मन सुविचारा हरि
ब्रह्मन्य देव श्रुति गायो सो मे सत्य नयन फल पायो मे दरिद्र अति परम मलीना श्री
निवास उर भुज भरि लीना कहा पाप युत मे मति मंदा कहहु श्रीपति वे जदु कुल चंदा
ब्रह्मबंधु मे सब विधि हीना कृपासिंधु असि आदर कीना प्रियायो गपरके अंग्र नूप
त हनि वाल मो हिदियसुष रूपा भ्रात सरि सम मकरि सत को रा श्री करब्यजन पव
न सुष सारा चरण पषारे उनि ज करि नाथा निज सिर धरयो नाथ बहु पाथा सुस्तू
षा कीनी बहु भांती परसे वनि निसकि यो सुहाती दूब्यानि दियो हेतु मे जाना करुण

252 A

5 सिधु भगवंत सुजाना भूमि स्वर्ग अपवर्ग सुहाई अष्ट सिद्धि अनमादिक गाई सब को।
मूल सकल पद दूजा अपर न यह जग मे कछू दूजा ९ दोहा अधन विप्र धन पाइ यह म
हं उँहै यह भूरि सुमिरन जो है भूल मम धन्य हियो यह पूरि १० चौपई इहि विधि करत
चिंत वन माई गयो सु निज ग्रह है जिहि ठाई रवि सम नु शशि सरस प्रकासा दिव्य विमा
न लख्यो चहुं पासा अति विचित्र उपवन छवि छाये सुरपति वन तिहि देषि लजाए हूं
जहि तहा विहंग अनेका फूले जलरुह रंग निएका मृगनैनी गजगामिनि भामा वसन वि
भूषन जुत छवि धामा पुरुष सहित इति उत सब फिरही देषित मुनि के मन हरही प्र जन
थम हते जप जज वरेषा अति प्रकास यह कहा विसेषा लख्यो विमान थये हे पहका को
निज ग्रह जानि अचंभो या के यह अैसो भाग्य ह किहि हेतू तरक करे दिज बुध निकेतू
इतने माझ पुरुष अरु नारी अमर तनु स्य वर सुंदर कारी लीने द्रव्य मंगल अनेका चले
लेन सब सहित विवेका पति आगमन जानि दिज नारी उमग्यो अति आनंहि य भारी २
निज ग्रह ते निकसी हिय चाऊ रमा न हु अपर रमा सम भाऊ ११ दोहा पति कहि देष्यो।
द्रिग न भरि उमग्यो प्रेम अपार जल ज नयन जल उमग भर नैन रुह अवलसु ढारि १२
चौपई कर्यो वुधि करि पति हि प्रनामू मिली वहुर मन करि वरनामू निज तिय देषि
हरष महि देवा जन सुख पून चं नक मेवा दासी अमित परकम निग्रीवा रूप रासि जनु
छवि की सीवा नासु मध्य लषि ललित ललामा निज तिय जन सुषमा कर धामा प्रीत

श्री भा.
६२६०

260

सहित तवनाहिं समेता प्रविस्यो हरिजन वर सुभग निकेता देखि विभूति न रहन निज केरी क
हैं तर्क मन माहिं घनेरी सत सहस्त्र मनि खंभ लगाए तिन्हि लखि सुरपति सदन लजाए
छीर फेन सम सयन सुहाये कंचन करी दंत सब पाये चामर व्यजन सुभग सब साजे
चामीकर मिनि हिं दंड विराजे आसन ठौर ठौर रचवाये परम रुचिर छवि जाहिं न भाये मुक्ता
दाम किंकिनी वन तोरा ललित वितान निगिरा मन लोभा स्वच्छ फटिक मनि रचित अटारी पर
कत मनि मय जालि सवारी १३ दोहा बीच बीच मनि जटित गृह दीप माल सी मोति भ्राज
त निसि दिन एक सी जगमग जगमग होत १४ चौपई ललित नाचें रवें रव हुताती वयसि
सोर गुन सुभग सुहाती देखि विभूति गेह निज केरी चकृत चित द्विजराज केरी एक चि
त करि करत विचारा मम विभूति कि भई अपारा मैं दरिद्र दुरभाग गुन हीना यह स्व
प्न जि कहो कि भिकोना कस्म कथ [illegible] विना असि भूती तिहि विनु आसि को करत करतू
ती आंवि लोकि नमैं सपति दीनी कहौं न तो सो कस्र सभी नी इमि सदेह कहे को ऊ वानी
महा मुनी मै कहौं बखानी सखा हमार अमित को दानी देइ बहुत थोरा करि मानी घन
समान घनस्याम सुभाऊ बरषै निसि घन कहे न काऊ तिमि लखि महीपति सखा सु
जाना दियो भूरि मनि लघु अनुमाना याने कस्यो को लिन हि मोही दियो पुरा रघ कहुँ
मितो ही जलधर सरसन को ऊ जगदाता बरषैवार अमित जन ताता माने अल्लप
लाज इव करई प्रगट न वरबैदिन परहरई १५ दोहा निसि कि मान जब सोइ गो

धो

घटावोंघघनघोरि वरषैवारिसुषेनमैहि वोरिहेरु चढुंग्रोरि १६ सोरठा ग्रैसेहिहि
समसुजान ममरछिनघरहीरियो लज्जाइवग्रनुमान प्रगटनमोसोकहिउकछु १७
चौपई हेदुरलनपरजोप्रभुकाहू गनैतुछहरिग्रतिसैताहू भजनग्रधकप्रभुकेमनमा
ही ग्रपरनुछसुषहै जगमाही जनकहुदेनथापुगनभूरी माननग्रलपनुछन्नहिरू
री प्रभुकहहकौरैग्रलपजनकोई मानितभरिभूरिकरिसोई ममविरुग्रामुरलीभरि।
लीना साहरजुननिजमुषमहिदीना ग्रपरनग्रसक्तनजगरेषा नहीसवगुणहम
सुनिउविसेषा तासुहासमोहिकरहुविधाता हैग्रनुकूलहेहुयहताता जनमजेन
मजनमोजहंनाई भगोक्तमपदकंजसहाई हरिचरणरविंदरतहोई सुद्धहोइ
मननजोनजोई तवहैतासुभक्तिकरिसंगा तासुसंगकरिभवरुजभंगा भक्तितासु
फलसेपरपाई पुनिकुसमागतिभक्तिबनाई जोकोउइमिसेसयमनग्राना ताहि
कहितसुनियोरैकाना १८ दोहा विपुलकोसग्रैस्वर्यसुषनिजभक्तनकहदईस
देतनकवहूजानिहीयमभक्तिहेतजगदीस १९ सोरठा हरिग्रतिपरमप्रवीनजानन।
हेग्रविवेकजुत धनमदछकिमतिहीन गिरतलषैजदनाथवह २० चौपई मोहिन
भक्तिलेसकहुंग्राई यातेयहदीनीजदुराई यातेहैजदुनंदकपाला भक्तिमोहिदी
जैग्रनपाला यहविचारदिजवरहेभूपा करीग्रननपभक्तिसुरूपा विषयभोगत्या
गिनकीरीती गहीसुषभोगपाजनप्रीती करैगहस्थकरमसवसाधू रहैधर्मनिजस।

श्री॰भा॰
१२६१

261

ताश्रवाधू हरिश्रबिलेसहीनहितकारी जपहिंजासुपद सेवसुरारी सोद्विजसेवन
करिनिजहाथा दीननवेधुसावीकियगाथा श्ररुबुलन्यदेवसवकहहीं देष्योद्विज
निजनयननसवहीं श्रवरदामहरिश्रजितसदाही सोदासनजी त्योछनमाहीं श्रैसे
वसुदेवकहमानी संततध्यानकियोसुषमानी तोकहिहियकीग्रंथहेदानी वंध
नषुट्योवसुपहिंचानी विनुश्रियालहिंजलहप्रभधामा इहलोकभोगोसवकामा
॥२२॥दोहा॥ विप्रदेवश्रुतिमुनिकहहिं वसुदेवकहभूप ताकीयहवुलन्यतासुननं
लहैसुभरूप॥२२॥सोरठा॥नरसरीरश्रेसिपाइ कृपाकृपाकरिनहिंभजै हीरारतनगं
वाइ गुंजागहिनविमूढमति॥२३॥दोहा॥सुभगदोहरावसुकहेचारिसोरठाजानु
कृपाकथारविकरनिरविपापकुहेरुनसानु॥२४॥इति श्री भागवते महापुराणे दश
मस्कंधे भाषानिबंधे श्रीहामाउपाध्यायनेनामएकासीतितमोध्याय॥८१॥दोहा
श्रसीदोइकेध्याययहं श्रुतिमुनीसुषषानि कुरुछेत्रयात्राग्रहन श्रेहेहरितेंह
जानि॥१॥वसुदेवहितसवरविसिकुलमिलिहैभूपतिश्राइ कहतपरसपहरिकथा
प्रेमश्रधिकश्रधिकाइ॥२॥सवादिप्रग्रहसवदादसीसकेसमचाहिं श्रवसुहर
नसुषदेनहितयाश्राभिलियहं श्राहिं॥३॥चोपई॥ इतिनीकथाकहववमनिगाई इह
श्रध्यायवीचसुषपाई द्वारामतीवसतजदुनाथा एकसमैसुनहेनरनाथा ग्रह
नपरयौरविकोश्रतिभारी सरवग्रामसुनिकैनरनारी देसदेसकेभूपतिश्राए कु

सं० ह

रुछेत्रमहिं जनु भाए जब छत्रीछितिपकन राषा ६ सम्भूपस वरज करि नाषा तासु रुधिर
करि सरतहु कीना नाम प्रसिद्धि राम सर दीना निज अघ ओघ नवारन हेतू जग्त कियो तह
भृगुकुलकेतू हरि ईश्वर इनि को नहिं रेषा प्रभु अवतार धोहि नहिं रेषा करहिं कमनि
जग हित लागी चले न जिमि को अभ्रलिप घ्यागी जान्त्रा पर्व जानि सवशानी आरतव
रषप्रजा सुष मानी आये सकल राम हरि भूपा आयो वसिष्ठि वेश सुसरूपा निज निज
अघनासन के काजा आये गुरसमाज सवराजा आहु कारि अक्रूर समेता आये वि
नसन बुद्धिनिकेता ४ दोहा कुम्भन नय प्रद्युम्न वर सो वनिसाकर धीर इनहिं आदि
जे अपर स्तुत रथ चढि आये वीर ५ सोरठा पुरवासन कहु भूप राष्यान हु अनुरूप के
ह कनवरमासु सुषरूप चम्पा लिपुर राषि हरि ६ चोपई चढि चढि रथन चले जदु
वंशी छवि अपार कोसल के प्रसंसी हय गय चढे कुअर विधनाना वसन विभूषन ते
जनिधाना चले जात पथ सोहत कैसे विबुध अवल सुरपुर महं जैसे तहां जाइ वि
धसहित नहाये दई धेनु विप्रन मन भाये कंचन क्रत विषाण षुर रूपे सुभग माल
जुत वासन रूपे दई राम हरु मह दहरी ती फेर कियो मज्जन अनुमप्रीती कियो फेर गो
दान उमाहीं मो गहि कस्म भक्ति प्रभु पाही सिगरे दसिवेस सुषरूपा भोजन सब पि
लिकियहे भूपा सुंदर सघन रुछवर छाया बेठे तह नह सुषमनमाया तहां आये
वहु अपर नरेसा दे षेसुहर वंधु निहि रेसा म तस्प उसीनर कोमिलवासी कुरु

श्री॰भा॰
१२१९

२६३

कोबोजविदरभनिवासी कैकयकुंतभोजसुषरासी केरलभद्रकदेससुपासी अपर
भूपअगनिततहंआये दविझ्ससकहंसवसुषपाये तहनेहारिगोपअरुगोपीबाल
कवधघररहानकोपी ७ दोहा गोपिनकोचिरकालकीउत्कंठाहियमाहि भयोपर
मपरलहियहरषदेषिउमगाहि ८ सोरठा विकिसितहरयसरोज मुषसरोजअ
तिसाहमुरि वोध्योअगममनोज सुधिआईचितचोरकी ९ चौपई मिलेपरसपरअं
कलगाई उमगप्रेमनहिहृदयसुहाई नयनसरोजचलीजलधारा रोमावलीकंट
अनिभारा तियसबमिलीअपरजेआई निरषहिद्रिगछबिकहनसिराई मेटमेट
मुसकनिप्रियबोला लषहिपरसपरचितअडोला कुंकुमभरेसरोजसुहावन धो
इगयेजलनयननिपावन करतअलिंगनउरगहिराषी प्रेमभारकछुसकहिनभा
षी वधूनकेपगवंदनकीने हरिहियेउनआसिषादीने पूछपरसपरकुसलप्रसं
गा कृष्णकथासुनिहरषनअंगा कुंतीद्रौपदीवधूसमेता हरषभूरमाहरषनिके
ता रविसुतापरकरसुषमानी उरआनंदअनिमिटीगिलानी बोलीप्रेमसहित
मृदुवानी अहोतातममवरभुलानी सुहृदग्यातसुतपितुअरुमाता जोमहिनसु
मिरतहैनिजभ्राता तासुदैवअनुकूलनजानू वाहितरेतैतुसनमानू आपरकाल
मोगहुमाता सुधिलीनप्रतिकूलविधाता १० दोहा सुनकुंतीकेवचनवरवोले
श्रीवसुदेव हमगिनीमनुअनुहियकपकअसयदमेव ११ सोरठा अहजगप्रभु

262 A

आधीन जिमि पेषन नट को सुबस अनि पुरान कह हीन करत करावत ईस हरि २२ चौ०
मानिकं सभय हम सब जे ते भाजि गये दससिर सब तेते दसा हमार छपी नहि तोही
मिलो आइ सु षद बचन सम मोही देव नाग ते अब जदु सारे मिले आइ इक ठाम सुषारे
अधुन रस नहित जे भूपा आये नह निज निज अग्र रूपा उग्रसेन बसुदेव सु भायक
पूजे सब कहु जो जिहि लायक भीषम द्रोण पंडु सुत धीरा धृत अंबिका को गंभीरा
गंधारी सुत सहित समाजा कृप संजय तह विदुर बिराजा नृप भीषम अरु अवधनि-
वासी पुरजित द्रुपद सु सुभ रासी काशिराज दम घोष नृपाला मैथिल मद्र कभूप
बिसाला सुधामन्य आदिक बहु नेरे आये नृप बहु भांति घनेरे धर्म सुअन के सब अ-
नुकूला राज राज घर सब कह मूला श्री मिके सु बपु सुंदर स्यामा नर नारी मन कहु अ-
भिरामा तियन सहित लषि भूपति बंद अति बिसमय जुत आनंद कंद रामकृष्ण ते
लहसन मानू करहि अनेक भांति गुन गानू २३ दो० गुन गान करहि अनेक भांति न
धन्य जदु कुल ले यही निसि दिन सदा मुष्ट लोचन प्रभु को सफल द्रिग भरि पि यहो जिह
हेतु जोगी जन सदा बर ध्यान हिय मह देषही सो कृष्ण करुणा सिंधु इन के सुक्स
जनुहि यरे यही २४ जिन की अमल जग सुजस रूपी सरत पातक हारिनी पद कंज पा-
रन पाघ जो करि अमित औघ बिदारनी श्रुत से तरूप बचन जो करि सुभ गप यथ अ-
नुसारही जिहि अधि सुभ गा सरोज से सुतन सरत बेगि निबारिनी २५ दोहा कृष्ण

श्री भा
द.स्कं
263

रलजनचपरिसकरिसेपनिसुमवकुभोनि लहेअमितजनमुकृतवरजिनहिनसुकृत
मुहान १६ चौपई धन्यधन्ययहजदुकुलआही कृस्नहरखनितसपरसजाही जो
सुखगनितकरतविहारा बोलनसयनअसनविवहारा पुनिविवाहमिसिगहजिहि
जाही धन्यसकलजेजनजगमाही जासुयेहबलकरनविनोदा नानमानिहसिकर
तप्रमोदा जनमलाभविधुजुमकहदीना भागवंतकोअपरनकीना स्वर्गआदिअप
वसमेना तुमकहतलसमबुधिनिकेना हरिअखिलेस्वरविस्वनियंता जासुगेहन
खवुभगवंता तासुभामजसरूपवडाई सहसाननअनंतसकहिनगाई जदुआग
मननेदसुधिपाई आवतकृस्नसहितसमुदाई गोपनसहितनहोचलिआये जेहजन
दकुलउनेरसनभाये सकलभारभरभरिसवसाथा आयेतहांजहांजदुनाथा मनय
हसाहचलाद्दिनपासा सोकुलपतिआयेयहआसा ताहिदेखिजदुकुलहरषाई उ
दमनदुननप्राणसुपाई १७ दोहा मिलेसुभुजगहिअंकभरि प्रेमनहृदयसमात सु
मिरताबलबकसकलगरगदहियसबगात १८ सोरठा दोऊसुतमिलेबहोर नेरज
सोलसुखभरे वंदेपितुकरिजोरि दोऊभातदृकसाधदी १९ चौपई प्रेमभरेमुखआ
वनवचना जलजनयनलखिप्रभुककमरचना पुनिदोऊसुतनगोदभरिराखी विरह
जनितदुखरिपसवनाखी कृस्नमातिदोऊआनिहरषाई मिलीजसोमतिसोअरलो
ई विविधप्रकारतासुउपकारू सुमिरतहियआनेउरपारू सजलनयनतनरु

263 A

हतनभारी कंठमन्यौकछुवचनउचारी तुमजोकरीमेवीहमसौ कहिनजाइसोसहस
वदनसौ संपतसतसुरेससमहोई प्रतिवदलौकरिसकैनसोई लेसमात्रसवजनवकरा
न्ती हमनकरीकछुलहिहुविभूती हेऊसुनउनपितुमातुनदेषा जानहिसवविधतुम
हिवसेषा पोषनपालनतुमहिनराती करीघनीविधकहनिसिराती नयनपलकइ
वजननसदाही करतरहहुसेननदनपाही भयगनरहेसुषीतवपासा नहिपरस्योक
छुतातविनासा संतसुभावअहैव्रजरानी जसतुमकीनतनयनिजजानी ॥ दोहा ॥ व
छुनकालकीचाहनाहमरससकी जाहि देव्योतिनवहस्यामवपुरहीएकटकचाहि
॥२२॥ चौपई नवगोपीरेषहिव्रजमाजहि पलकपरेदुषमयतनछाजहि तिनदेव्योजव
सुंदरस्यामहि द्रिगनपंयाहियकरिअभिरामहि मिलीअंकभरिभरिसवगोपी रहीसदा
हरिभावनओपी रहीछनककनमयहै ओपी जिहिजोगीसनपावहिकोपी देषिदसा
नं यहगोपिकेरी रहसिमिलेतिनकोहियहेरी मिलेलाइलीनीउरमाही पूछीकुसल
प्रसन्नतिनपाही अहोसखीयहुदिवसबेताये लईनसुधिनहिदतिचलिआये सव
यछछयउनमनलागा आयेदतनहिहे वडभागा हेसषीजोअहैसमनयुनहूं हरिके
तेघ्रसंततप्रतिसवहूं नहिकैतध्रनरनकमनमोरा संतनमेसिमरनकियतोराम
धुपुरगयेसवनेकहुत्यागी किमकुनध्रतातुमहिनलागी महोसुनोकारनअस
आही सोमैकहौसवनकेपाही करिइकवप्रनिकरेविछोहू विछुरगएआनेदिग

श्री भा
६२६४

264

श्रोहू जो भगवंत चहै सो करई नहि हरि लीन सुनो यह अहई धनानीक तरण रज अरु क
ढामा करै पवन परिसों उपरिनामा विधुर माहि जिमि मिलकर सोऊ तिमि सब प्राण
न की गति जोऊ २४ दोहा भली भली है गोपिका तव कल्यान विसेषि मम विछोह कार
न तुमै प्रेम अधिक भा पेषि २५ सोरठा भक्ति मात्र जो कोइ मो पद करै अनन्य है मोष
लहै नर सोइ सत्य वचन मम जानियो २६ चोपई मो पद भाव सनेह अति भारी अहो भा
ग्य कल्याण सुषारी मो पद भाव सनेह जव जाही तुरित हो उमे वस तव ताही आदि अंत
सव भूतन केरे मै हो सव मे लघु हुनि वेरे जिमि घट मृण मय लघु अरु थूला नाम भे
द करि सव भूला जिमि नभ आदि पंच सव माही पुनि सव ते ये भिन्न लषाही तिमि
सव मे सव ते पुनि दूरी इहि विधि रहो सकल घटि पूरी भोग्य भोगता वस्तु अपारा आ
तम न त्तर कछि निरधारा सो सव मो मे लषु निरधारी ज्ञान रूप निज हृदय विचारी य
हु विधि मम स्वरूप सव गोपी किय प्रवोध अगपना लोपी वारि वारि करि सिमरन ता
सु नीच कोस सव जरि गो आसु भई सकल मम पन हि लेरे दोहा वोल पुनि अति सै कदिने
हु नलिन नाभ हरि आनेर केरा नव वर लोर्वि दस्न व केरा अह सेवो हम रूं जदु नायक
तो मन वस उ सदा सव काला नव परकमल भंगगो
पाला २७ दोहा पर जु हि भव कूप प्रभु नादि नर न को हेत नव पद नो कासु ध्द अति ग
द नमा वस्तु सहेत २८ कहै दोहरा आह वर वा लसा रहा जानु केर कहे है विमल अति

264 A

इहि अध्याय प्रमान ॥ ७ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे भाषा निबंधे कुरु
छेत्र नीरघजा आदि दे असी नतमो ध्याय: ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ असी तीनको ध्याय वर नाम हि क
था अनूप तियगन मिलि कहिहै ब्याहि रीति सुषरूप ॥ १ ॥ दुपदसुता जब पूछहै कृष्ण
प्रिया चित चाहि कहिहै निज निज ब्याह सब जिहि बिधि भयो उमाहि ॥ २ ॥ इति नीकथा
बषानि है मुनि भूपति हेत अति कृपाल सब कहनु पर बिनु मांगे फल देत ॥ ३ ॥ चोपई
गोपिन को इहि बिधि सनमानी कहे उ स्यान सुंदर सुषमानी धर्मसुअन करि कर सन
मान कुसल प्रस्न पूछी करि न्यारा अषिल लोक पति कृस्न कृपालू पूछ्यो जब
इहि बिधि नरपालू बोला अति हरषत मृदु बानी मन हु सुधारस में सो सानी तव पदकं
रत मनोरथ जे ऊ पवि न होत नुर नन ते ऊ महत पुरुष के हृदय सकासा मुष द्वारा तवकं
था प्रकासा सकल न सुने जो कहु जब कोई नसे अविद्या कोन इ्यसोई निन प्रति कारन अं
जुली भरि के सादर जो पीवे हि मन करि के कालरूप भय निन कहु कबहु परिस न स
दा जिन किन हूं वेदीन वपर है जइ नाथा विधि बिचगा वेन व जस गाथा हरि परि वृ स्व
ईस अघ लेसा सकल प्रकास क गुमस व हे सा नीनि अजस्या जे गुमहू री रहो सकल
घाट में परपूरी अषिला नेर कें रसमहा सदा अषेड ग्यानगुन बूहा ॥ ४ ॥ दोहा ॥ जो को
मन संका करै हम रे व को रूप असो तुमके सो कहो सो नो मम अनुरूप ॥ ५ ॥ सोरठा
मासु कहत समुझाइ असी क बहुन गुन जिय ईस्वर जगसुषदाइ नरबपु धर पालत

भी॰भा॰
९२६५
265

अवनि ६ चौपई धर्मसुअनविनतीइमिकीनी सुहदबंधुजनकौसुषदीनी जइकौ
रवनियमिलीअनेका रूपभावगुणसुभगविवेका करहिपरस्परआपसमाही
कृस्नकथाकहहीयहुलसाही सोतुमपेवरनोहेभूपा सुनतमहुमिटैअंधभवकू
पा द्रुपदसुताबोलीहरषाई कृस्नरवनियसवनिसुहाई हेविदरभननयापटरो
नी भद्रामामवनीगुणषानी हेसैब्याकालिंदीधन्या हेकौसलनृपकीवरकेन्या
अहोलछमनारोहिनरूरी सिगरीकृस्नभावगुणभूरी कहहुजुनिजनिजब्याह
बषानी जिहिविधिकृस्नब्याहघरआनी द्रुपदसुतावानीरससानी सुनिसुनि
सबमुखकीपटरानी भीषमसुताकहनतबलागी प्रेमसहितवानीमधुपागी सिसु
पालहिब्याहनकेहेतू आयेदुष्टनृपतिदुषकेतू लेलेशस्त्रअनेकप्रकारा इतउ
तफूलेफिरतलवारा ७ दोहा तासुसीलनिजपावदैलैआये मोहिनाथ तासुचर
नजुगनसदामेकरहोकुलनाथ ८ सोरठा मेषमूथकेमाहि मृगपतिजिमिनिजभा
गलेज्यौंआनीनिजपाहि वरलछमनसैबोसरा ९ चौपई सत्राजितकीसुतासुलछ
नि बोलीबहुतवचनविचछनि ममपितुमातगयोवनजबही मृगपतितिहिवध
कीनतिनतबही तासुहनुममपितुअकुलाना दुरजनसप्रभुकहदियोआयाना सो
अपजसधोवनकेहेतू बिलप्रवेसकीअइकुलकेतू जीतिरीछपतिमनिग्रहआ
नी ममपितुकहदीनीसुषमानी तबममतातभयोभयभीता निजकृतपापसु

265 A

मिरविपरीता नवमोहितकस्मरेव कहहीना दीनबंधुसमिताकरिलीना नामवेनवोर
सुर्तप्रवीनी वोलीवचनसुधारसभीनी अहोद्रोपदीसुभगासयानी सुनहुव्याहकी
कहुकहानी मोपितुमहावलीजगजानू लख्योनायसोविशुपहिचानू फिरनिजसखा
मीर्इस्वरजाना सीतापतिप्रभुरूमिपहिचाना विनुजानेउनकरीलराई सपतविंशहि
नेरैनरहाई ९० दोहा जवनिश्चैकरिजानियोदसरेवममनाथ तवरनकोमनिसह
तमोहिहीनीगहिनिजहाथ ११ सोरठा अहोलुनोयहवात नौकुमसवतेअधिकअ
ति पुनिवोलीमुसकाति ऐसीसंकाजनकरहु १२ जोसवममसिरमोर मेरासीर
नसकुलकी कहौनहियकछुऔर नयेकामसवकोसरत १३ चौपई रविननया।
वोलीमदुवानी सुनियद्रोपदीकहौवखानी मोहिनपकरतजानिजदुवीरा व्याहतमम
परजमतिधीरा सषापदत्रदुकछुसववाता पानिग्रहणकीन्योजनभ्राता प्रभुमोहि
ग्रहणावनहारी जनमजनमविधिरवेअविचारी वोलीभद्रानामसुसीला निजवि
वाहकीजोकछुलीला सुनिमोस्वयंवरममजदुवीरा नहोजाइजेनरपरणधीरा स
वनजीतिआनीग्रहमोही जिमिनागारिभागिनिजजोही स्वानमध्यमगपनिवल
जाई किमिन्यागेजगवलीकहाई ममभ्राताअतिसेवलकारी ताहिसहितजीत्यो
नपजारी मोहिआनिग्रहकियोविवाहू येअविलेसरमाकेनाहू ताकुकेजपदधो
वनहारी बहुजनमविधिरेअविचारी कौसलेसकीसुतासयानी सत्यानामरूप

श्री·भा·
२ ६६ ६०

266

गुलषानी मम पितु कियो प्रतिग्या भारी सातवर्ष भजी तें इक वारी तें अति बलीष नव
रद्दा विषम विधान घोर प्रचंडा २४ दोहा जे छिती स अति सिंव धी इनें करे वस आइ
ताहि देऊं मैं निज सुता यह मम नियम न सन भाइ २५ सोरठा तहां जाइ भगवंत गुरन पकर
सिहि बांध लिया बलि अति सैं गुनवंत अजा नो कजि भिसि सु गहे २६ चोपई वडो पराक्र
म सोइ पन जानू मोहि लियो जनु मोलु भिरानू दासी अमित अनीक सवारी पिता दी
न प्रभु कहु सतकारी चलन पेषय यह अरि जीत अनेका आन्यो ग्रह निज सहित बिवे
का तासु सेत हारी पन मोही देऊ विधाता विन वीर्य जो ही नाम मित्रविंदा सुभ नारी
बोली फिरा सुभग सुषकारी पिता हमार सु सोलसयाने मातुले इक हगुन निधमा
ने सह न वुलाइ दियो मोहि आप कृष्ण रे ब बल विदित प्रताप बहुत सषी गण सुभ
गल भारी सेना अमित महाबल भारी इह प्रकार मोहि अपर न कीना मैं निज भाग्य मा
नि उर लीना निज कर मन वस मैं जग माही जनम लेऊं जब जब दें जहा ही कृष्ण पाद
पंकज की धूरी मम सिर पर सहो ऊ गुण भूरी नाम लक्ष्मण गुन अति भारी कृष्ण
चंद की भामा प्यारी कहन लगी निज ब्याह बात सब सुन हु द्रोपदी चित दे इति अ
व २७ दोहा कृष्ण जन्म अरु कर्म सुनि वार वार मुनि पास मनमु कें रमहि परिग
या सब मन भयो उहास २८ सोरठा लिये कमल कर कंज कमला सब सुर मुनि
न जे रह्या सुषमा पुंज वीर एक अथिलेस को २९ चोपई यह विचार करि हे वडु

266A

भागी श्रीमुकेहआसाहियलागी पितुहमारअतिसैसुषदाता जानिगयोममम्मनकी
वाता कहमहिमिलैसुताममजैसे करिहौंसोइउपाइरचितैसे नवविवाहहितितज
मितवाता कुरबोमतस्पसोजगविष्याता पारघहितउनजतनवनाई तिमिदनकस
देवमननलाई अर्जुनविशिखवेध्योनहियाही जोकोइमिसेकाविनचाही तहांसुनिय
यहभेदमतसकर महाभाग्यकोउलषैनन्नयवर वाहरग्रपतमनस्पनिमायिऊ नहि
अंतरअरिदलसोभइऊ षभलागिऊर धद्रिगरेषे सोप्रतधभनिकदतिहिपेषे य
हवैसोममपितुनहिकीना रचनाअमितभोतिमनहीना घंभमूलककलसोइकधरि
ऊ नासुमध्यसुभनीरजुभरिऊ कलसनीरमहिसोलषिपरई अपरभांतिकोऊ
नहिपरिहरई २० दोहा अधोदृष्टिजलकलसमेऊपरलछ्यवनाइ कहमदेवदि
नुअपरकोऊनहिलषिसकैउपाइ २१ चौपई ममपितुगेहस्वयंबरसुनिकै आयें
अमितनृपवरजुरकै अस्त्रशस्त्रविद्यासवलायक महितपुरोधामनिगणनायक
ममपितुबहुतसैनजिहनाऊ सबकरिसनकारसुहाऊ जथाजोगगृहजासबकाहू
आयेजेचलिकैनरनाहू धनुषवाणधरिधरिरणगाढे नृपवहुशीघ्रभयेउठहा कँर
ढे सभामांझचितवहचहुओरा मनमत्स्यवेधबाहैवरजोरा मोमहबुधिसवनकीला
गी रहेसवेतनमनअनुरागी योकोहेमुखनोहेरानी परवसचित्तभयेजेग्यानी
मतसवंबधतिनसीनहिहोई करैजतनतनमसफलनहोई कोउकरिगहिधारिरे

स्री॰भा॰
६२६

267

हिसुचाए किनहूं चढाइ सकेनहिं हाए किनहूं चढायो हसि धरि दीना नहिं न लछ्यात
अहे अवीना मागता छिवे हियजे वीरा चापचढाइ शक्रर लुधीरा नहिं नमत सगते जान
नहारे वैठि रहे सुपछै मनहारे भीमकरण दुरजोधनमानी नहिं ताको धिति इन हूं
जानी ॥२२॥ दोहा नीरमाउ जलविमतसकी जाई धितिपुनि जानि सोविधान हूं जिष्णुते
वशरद्वारस्यो धनुतानि ॥२३॥ चोपई मत्स्यपरससर चलिगोपारा करयो परंतु न सोनि
रधारा इहविधसकल भूपसव हारे मानी मान गलत भे सारे सहि जहउ दिभगवते स
पाला धनुषवान करि गहे विसाला सन्मुख नेरे षि जलमे जहनाथा सरसंधान कीन
नि जह हाथा सरिसो काटि मत्स्य महि डारे जयजयकार भयो पुर सारे वजी दुंदुभी नभ
पथरानी देवन सुमन वरषि कियअग्रोनी कमलप्रापति लषि हरष अपारा भूलि गई नि
जतन सभारा आपुहि अपनी रूपलीनाई वरनन करल लमी सुषपाई नाहिसम
यमेनह चलि आई रंगभूमि जह सुभगवनाई पगनूपुरकल सुभगसुहाये कनक
वसन वर ललित वनाये क्रीडा जुन सुषसिसिछवि हारी सुमन सहित कवरी इतिका
री कुंडल छवि सुमगोरु निजाई मधुर हास्य लषितापनसाई वेकविलोकि नमोह
सुवंकी हियआसकतिनापकहू ताकी अपरघने नृपत हचलआये तिमहि
विश्रामि पगनाये ॥२४॥ दोहा आगे चलि मैं देषियो कृष्ण रेवछविधाम पहिराई
जयमाल में पूजी सव हियकाम ॥२५॥ सोरठा वजी दुंदुभी घोरि शंखभेरि वा

267 A

जेविविधि अरुमदंगधुनिसोर भूनभजयजयकारधुनि २६ चौपई नरनारीजु
तनाचनलागे गायकगानकरहिरसपागे यहविधभयोउछाह समाजू मैजबव
रीक्रमतजिराजू तवसवकुटिलनृपतिमनमाषे जिनकेमानभंगकरिनाषे प्रभु
ग्रेस्वयंदेषिअतिभारी किमिईरषाकीनीइषकारी जोहमिसेसयकोउहियकार
ई सुनहुवचनसेकापरिहरई कामातुरअतिविविसगवारा समुझतनहिपरिना
मविचारा यातेकरहिईरषाद्रोही काममूलअसिहनअतिकोही इतनेमोऊनुरत
जगईसा धरयोमोहिरघपरिजडईसा रतनअस्वलागेवरचारी सारंगधुनिकरि
गयोसंचारी भयेचतुरभुजरूपनरेना हरिस्कपालिभगवंतअनेता देभुजमोहिअ
लिगनकीना द्वैकरिधनुकवानगहिलीना हारूकरयहाक्योअतिश्रासू पवनवे
गिपहुचेनहितासू जिमिदेषितहरिचलिजाई तैसेचलेजातजडराई दुसभूपह
रिपाछेपाये अपरनिरोधकरहिसनभाये क्रूरधधनुकलीयेसठमूढा ग्रामसिं
हइवमोहिअरूढा तिनकेदेषतहरिइमिजाही जिमिमृगराजगनेनहिकाही अ
ताहा गएमिकरजोनाथकेमूढमहीपतिमेर कारेउरसिरवाहुप्रभवरपवाणवहु
तेर २८ चौपई गिरेभागगतिहेवहुवीरा भजेन्पागिरणअमितअधीरा तवनि
जपुरपहुचेनइनाथा धेनुमतीजहपावनपाथा धुजपरतोरणचित्रवनाये रविक
रजहोप्रवेसनपाये सकललोकवेरितअघहारी पुरीपविचित्रविचित्रसवारी स.

२६८

हाथ वेस कीन हरि जाई। जिमि रवि ग्रसत ताचलि कहं पाई। पीछे ते मम पितु सब लायक प्रभु
पूजा कीनि जमन भायक। वासन वसन विभूषन नाना। वस्त्र अमोल विचित्र विधाना। दासी
सुभग संपदा भूरी। हय गय रथ पदाति गन भूरी। आयुध विविध वनाइ तें हीने। पूरन काम
कहहि परसभीने। हरिश्च काम काम हं सब काला। तिन कीह मह सासी सब बाला। हम
आदि तपका प्रिके भूरी। सर्वसं गन जितन मनिहूरी। हेदेव पदकी दासी विध कीनी स
प्रब कृत्य हम भई प्रवीनी। अब रसाम कैन्या तह बोली। निज विवाह की वाते खोली। छि
तिज पकहु छितितन पग योजब रण करहु तोरे भूपघने तब कन्या ता सुआनि सब
रोकी। मान्यो जब हिय भयो विसोकी। जान्यो हरि निहि गए जु तमारी छोरे हिमहि
ना प्रभय हारी ॥ ४२ ॥ दो० भय हार हरि सुख कारि जनक हूं जानि सब ममहेत जू। ह
म वरी लव इक साप लविक रण करा श्रुति सेत जू। व्याहो सवै इनि आनि के कंसा
रि मदकुल केतु। सो पायपावन अघ न साधन सो इह मसुबले तजू ॥ ४३ ॥ सुनिये वदे
न मह द्रौपदी रस रमादि सुख हम नहि चहै। पद कंज रज अभीनाथ की निज सीस
सतन मन यह है। नहि एक छितिको राज चाहैं इंद्र पर सुख नाहि गहैं। अन मादि केति
कवात जानहु वस्न पर अति लख अहे ॥ ४४ ॥ जो मुकति चारि प्रकार की सो चार नाक
वहू नहीं। पद कंज रज निज चाहना कहें तुम निज मनन गही। वेस्वादि सेवत सिंधु
जा सो नरगन रज सेवे सही। व्रज गोपि कैन कौ मुरारि जी वनेह मही सब सुख मयह

हूी २२ दोहा इहिविधिनिजनिजव्याहकरि कृष्णवामसुषधाम भूपतियनकोसुष
दियोकीनीपूरणकाम २३ सोरठा कृष्णकथाइकवार सुनैश्रवणकोउलाइचित
तेलषुभवनिधिपारि रामकृपाश्रुतिमुनिकहत २४ दोहा कहेदोहरानवसुभग
छंदतीनपरिमान अपरसोरठानवकहे जाहिसुननकल्यान ५४ इतिश्री भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे भाषायांनिवंद्रे निवासीतनमोध्यायः ८९ दोहा चारिअ
धिकअरुअसीकेमामहिकथाअनूप मुनिजनकोआगमनतेहसोरीढिगसुषरू
प १ जगउछाहअनेकविधरामसरोवरपास वेधुनकोसनकोरमुनिविदाकि
योगृहवास २ चौपई इतनीकथायाहिकेमाही मुनिकहिहैभूपतिकेपाही डेरपए
यासहितरनवास गांधारीकेढिगगहिसुपास कृष्णवामसवसुषकीवानी दुपदसु
तातनयाहिकरानी गोपिनसुनिप्रेमप्रतीती कृष्णरेवमहतनमहप्रीती सुनतभईवि
समचितनसेरी नयनसरोजनभरिगोभारी इहिविधिनरनारीतिहिठामा कहतप
रसपरहरिगुणग्रामा आइगयेमुनिजनकेवेरा वैठेजहंजदुकुलकेचेरा नारद
व्यासच्यवनमतिधीरा देवलअसितगाधिसुतवीरा भारद्वाजअरुजनकपुरोधा
गौतमगालवतिहिंश्रुतिवोधा रामसहितसिष्यनतहंआये विधसुतसवआये
सतभाये सुरगुरुअपरअगस्तिनरेसा जाग्यवल्कआयेतिहिदेसा आवनति
नहिदविदेहराजन उठेसकलनरपतिसुषभाजन कृष्णसहितपाडवबलरामसी

श्रीभा

सनाथपरकीयोप्रनाम विधवत पूजा करि सनमाने अरघ पाद्य आसन वर आने
चरनमाल धूप गुण भरी आनि समान की निविधि करी ३ तेहा बैठे देखि सुपासने
मुनिगन सकल प्रवीन बोले तव भगवंत प्रभ धर्म रेतु करि पीन ४ सोरठा सुन
तसभासद लोग मौन गहे तक चित है मान भागि सुयोगि सफल जनम निज मन
गुनी ५ चौपई अहो आजु भा सकल समाजू जनम लाभ फल हमकहं आजू सफल
जनम फल लाभ अनूपा हमकहं भयो सहि जेसु सरूपा योगि न्ह करत वह रसन मोही
अल्लभ लाभ सन भाष्यो तोही सुरकहं दुरलभ दरसनु मारा हमकहं दरस परमगुण भा
रा अधिरन घटिना विधसवकरई तव दरसन जनपातक हरई मज्जन तीरथ मा
त्रजलपाना ताकहि न पवनत वुधनि दाना प्रतिमा माच देव मति जासू अपर ठाम
नहि है कछू आसू अ सन कह हरसन जवतोरा अहो भाग परनो का मोरा दरस
नपरम पुनन वहुरीती परमपरचिन तव निजक प्रीती अधिरतसी यह लागे मोही
यह मैं सत्य कहा सब तोही कहा जल्लाहि तीरथ्य जगनाही है परंतु कारण ते माही
मृणमय सिलादेवन हि सांचु सत्य अहेह्यारथ्य मतिरांचे देवन हालगि तीरथ भा
रे करहि पवित्र कोलन बहु डारे दरसन मात्र साधु सव काहू पावन करहि रहित सचि
त काहू ६ तेहा पावक रवि शशि नखत गण भूजल व्योम पवन तास मन वानी करि
चक्कोउ करन सके अघनास ७ सोरठा साधु करे अघनास सवै जो छन मात्र को

२६९ A

८

७ यातेसाधुसुपास तजहिमंद तेमरहुमति ८ चौपाई अहंबुधिजिनकेतनमाही
पुत्रादिकमहममताजाही भूविकारविग्रहजेते देवबुधिकारिमानहितेते जलमह
तीरथबुधिजिगजासू नहिअभिज्ञजनमहिमनितासू तेमनुसरिसजानेषुप्रानी य
रसमअतिहारूनयम्मोनी इहविधिधरसुनिवानीप्रभुकेरी नहिअनरूपमानिमनहेरी
भ्रमनिविनुधिरतानहिगहई रहेमोनकहुनहिसुधिलहई वडीवारलगिकरेउवि
चारा जगसंग्रहहितवचनउचारा मुनिहसिकहनगेप्रभुपासा हेहरितुमसवजग
तसयाने हमिविधानअखिलमतिजाने मायावामोहितहमिकहही ब्रह्मादिकअ
धिपतिहमअहही सोहमिप्राकृतनरसमवानी कहतलोकसंग्रहहितमानी जोई
घरजोहमिकयकहहु अलपवातकहकासुखलहहु हमिजोकहीयनघममथा
नी तहांसुनिमकरूणानिधिवानी ९ दोहा तुमअनीहहरिएकप्रभुरचिअनेकवि
धधाम पुनिपालनकरिसंहरहुनहिवेधनसुखधाम १० सोरठा छितिविकारघट
हाट नानाविधकेनामतह अंतहुमरूणमयसोइ तैसेतुमवहुएकप्रभि ११ चौपाई
हरितुमअखिलईससुखदायक धरहुसतनननहेजइनायक जनपालनखलना
सनहेतू लीलातनवयहकपानिकेतू कोजानेतवचरितगोसाई अतिविचित्रज
नकहसुखदाई जोनिपालननहितलीलाकरहू धरमसिखाइतापपरहरहूं
वेदप्रवरतकद्विजकुलजानी सनमानहुअतिसहमानी जेब्रह्मण्यदेवजगको

श्री॰भा॰
द॰ २३०
२३०
३७०

ई तुमहि रमोर द्रिगन हम जोई आजु जन्म भा सफल हमारा निज जन नयनन को यह रस तुमा-
रा देतन की तुम गति मति नाथा तव संगत हम भये सनाथा सकल श्रेय कारण तव चरणा
जनम सुखप्रद अरु भव रुज हरणा वंदौं तव पद वारहि वारा प्रगट प्रभु भंजेउ महि भारा
निज माया करि प्रगट अभाऊ हरेउ गुपत संतन सब ठाऊ एसव जदु तें अपर छिति तीसा न
हि जाने कोउ तव गुण ईसा जग कारण ईस्वर भगवंता तुमहि न जानि सके बुधिवंता
अजा भव कासव द्रिग लागी तुमहि न जानत मेर अभागी २२ छंद जानत न गुमक
हम अति अगपान भर विषयासने निमिष पन मे कबहूं नहीं विषयासत्य तिहि मन तुम
हगने तह आइ मग पनि घेर्यान वरूह तप रव सपर पने तिहु ते अपर जो रूप अपने
सनपारि तिहि नहि गने २३ निमिस्य न समय हविषय हे हरि तासु हित भट कै घने
सापु बल माया सचरी पद परसि तव सुकुमान री २४ दोहा सुधहि जोग जोगीस जे केव
लहि यय पर ध्यान नाहि देखन प्रत्यक्ष सा पद कल्यान निधान २५ सोरठा सो तव चरण स
रोज हम देखे निज नयन भरि मिटे पाप मोहि मनो ज पिछले के पुन्यन तव दे २६ चौपाई
करि य अनुग्रह जदुकुल नायक जस निज भक्तन कह सुखदायक को यह अनुग्रह को
कहहु कीना मोइ मिक है नाथ प्रवीना देहु अनन्य भक्ति पर कैजा जासो भव रुज तेह बवि
भेजा इति नेमो ऊर्पव ढु आये निज ग्रह चलन चित्त ठहराये मुनिगण हु के मन य
ह आई चलिये निज ग्रह बिदा कराई लपि वसु देव तासु रुख जानी आये मुनिन पास

सुषदानी धरिमहिसीसजोरिजुगपानी वोलेअमियवोरमदुवानी वेहोमेसवद्विजप
देरेनु सेवकसुषदु मनहुसुरधेनू सकलसुनहुविनतीएकमोरी तुमहकपालकीहापा
नथोरी जरहिकर्मकर्म नकेकीने सोइउपायमोहिकरहुप्रवीने सुनिवसुदेवगिराइ
हिरीती नारदहसिवोलेजुतप्रीती हरिजगनअवरजनहिकोई कहवसुदेववचन
द्रमिजाई कर्मदेवकहानिजसुतमानी पूछतनिजकल्यानवषानी २७ दोहा गुनी
विवेकीसीलनिधिसंततवसहिसुपास अवअसनादरहोनहेजिमितीरथकरिवास
२८ सोरठा वसतसुरसरीतीर अपरजलासयपुन्यलषि मानपापभयभीरुनाहित
होमजुनकरने २९ चौपई सकलदेसिपतिसुतदनमाना हमकहपूछतनिजकल्याना
सोअग्यानमूलयहवाना ईसरकहमान्योजवमाना जासुग्यानतिहुकालएकरस
सकलचराचररहितजासुवस रागद्वेषवसपरमूढनर काहितकसकहिहेवोनरव
र जिमिरविनेघनहेतुअपारा रविहिलोपकरिजगअंध्यारा तिमिअरीरकतअोगु
नभारे नाहिलषिसकेन्लसअधिकारे यहिविधिकहवानीसुषदानी पुनिसोरीसनक
हमनमानी सोरीसुनहुकर्मकीहानी करमकियेइमिसुननवषानी जगपईसभगव
तअनेता अग्यानुमनजियेभगवेतो षुतिलोचनजेमुनिजनकोई तिनयहपंथसु
गमकरजोई चितकहुउपसमजोकियचहहू करमजोगसवविधवतकरहू करत
लहेकल्पानअनूपा चितुप्रियासनिजलहेसरूपा जगहमधीअहेद्विजाती तिनक

श्री भा०
२ ४७२
२७१

हृयहूपपग्रहैंसुहानी अध्यात्मगतिकामविचारी सुधविन्नकरजजग्रसुरारी सोरठा
जग्यदानकरिविन्नकोकरेईषणछीन गहवस्तउचितजुभोगकरिपुनईछनाधी
न ४४ सोरठा लोकईषणजानु सोहैउभयममकारकी कालवलीअनुमानु करेपलक
महनासखव ४४ चोपई इहिविधितजेईषणातीनी नवतपहितमतिद्राहमूवीनीज
नेमदिनअपरिनजुतज्जानू विनुदीनेतपजोगनमानू विनुदीनेजोकरेउपाई मोछहू
नुकरिजननवनाई पतनहोइनहिमुकतनलहाई ऐसेकहतवेदमुनिगाई तुमंद्वीरि
तारीनीभलिभांती रहीउरहेवरिलरेउसुहाती देहुनीनिरतगहकहत्यागी जननकरे ग्र
पवर्गहिलागी यहसाधारणककमंमवरना तुमकृतकृत्यदेवि हरिचरना तुमग्रनन्य
प्रभुभक्तिसुजाना नाहिहेतुमवेसुतभगवाना सुनिवमुदेवरिषनिकीवानी हरषत
हीयेनारिजुगपानी रित्वजकरवपायपरिताही मुनिप्रसन्नमानपोचिनताही उत्तम
विधिमिनिकरवाबा नाहिहेयमहिनिमिन्नकतिगावा जेसग्रहंममोजसवभूपा भयेग्र
लेकृतजगसुयरूपा तीमसनिभूषणविविधप्रकारा लेलेमंगलवस्तुग्रपारा दोधा
सालामहिसवग्राई गावतमंगलहियहरषाई ४७ दोहा वाजेपटहमर्दंगधुनिसंख
भेरसहनाइ नटनाचेअस्तुतिकरेसूतमागधगुनगाइ ४८ चोपई गंधर्वीगावहिकलवे
नी निमनिमयानिनसहितमृगनेनी रित्वजनिनकहुसिचनकरऊ नेत्रांजननवनी
तनभरिऊ नाहिसहितनारिहिकिग्रतिसोहै देषतमनिजनकेमनमोहे ग्रष्टादसतिय।

गुनहेराजन सोहत सौरी जग सुषभाजन उद्गण जनु नराजन तनि सिराजू निमि सो रीतिय
मां ऊ विराजू विभवन्ग्प्रनेक गलेको पारा जनु सबे सबसुदेव उदारा रिलजस हित सोहसो।
के से सुभ सुर सहसिपा करि पुंजे से राम कलमनि जबंधु समेता सुनहा राजुत कृपानिकेता
सकल जीव के मन है ईसा इहि विधि राजत भय महीसा एकाहर सजग पश्कातिरीती रि
जनक राइ मन करि प्रीती वेद विहि मरीन्पा बहु दाना अलेकार करि युन सनमाना पुनिम
जनकिय बधपय विधाना विप्रन हाये जुत जनमाना बंदीजन पाये बहु दाना जे जस
लायक तस सनमाना २५ दोहा अलंकार अरु बसन बर रानि समेत बहु भांति पाये माग
धसूत सब जन लजिहि हृदय सुहानि २६ चौपई बंधुन सहित रारु सनमाने प्रीत दान
लह हिय हुलसाने कुरु कोसल विदरभ के भूपा कासिराज केकय सुषरूपा सकल स
भा सद सुर गन जे ते भूनपित रचारणर नके ते जथाजोग पूजेन रनाहू अति प्रसन्न ल २
हि दुर्लभ लाहू आयसु श्री नीके तुसनमागी करत प्रसंसा गे बड़ भागी जे द बंधु जनु वि
दुर प्रवीने भीषम द्रोण सहित रस भीने सुर रिषि व्यास अपर जे कोई पंडु सुअन जनि नी
जुत सोई गद गद कंठ अवक भरि गहही प्रेम विविस मुष वचन न कहही विदुर तब विरह भी
रमन जासू गये जुनि जनि जरेस सुबासू नेरस हित सब गोप अनेको पूजि ऊजद तिहि स
हित विवेका उग्रसेन श्रीपति बलरामू राखो नेरहि सुखनिधि धामू उदधि अपार म
नोरथ भूपा बिनु श्रम सो री तरि गो भूपा सुहृदनि सहित बसुदेव दयानिधि बैठे आसन सु

श्री·भा
६२७२
५१३

भगनयथाविधि २७ दोहा प्रीतिसहितकरिनंदकेगहिवसुदेवप्रवीन कहनलगेवानी
विमलरसमयसुष्टनवीन २८ चौपई आयेतातयहप्रभुहमतगाढी नेहरूपफांसी
जगवाढी महादुःसहयहटरेनटारे जोगीस्वरवलीपचिहारे तवहमतजेउपकारअ
नेका हमनहिंजानेअहितविवेका परमसाधुतुमकरीमिताई परमअनूपवरनंसिरा
ई प्रतिउपकारचाहनहिलेसा अपरकरेकोसुरनरअंदेसा सोतोतीनकालमहि
कवहू टारेटरेनआगेअवहू नाहिसमरथपहिलेहमथाना तवप्रियकछुनकर्यो
सुखदाना अवश्रीमदकरिनयनविहीने करनसकेकछुमेहमलीने निजकल्यानचा
हचिनजिनहीं जाकरिनयनहीनहूजाई सजनवंधुदेखेनहिकाई आसिकहासिथि
लचित्तहूगएऊ सोप्रियपविविवद्धवमएऊ सुमिरनेदहमतसुहृदमिताई रूदनकि
यौअतिसेअकुलाई २९ दोहा जलजनयनजलउमगअतिसुमिरमेत्रीनेह रोयो
हीयकीनापगोविनेदनिजगेह ३० चौपई रहेनंदवसुदेवहिचाही रामकृस्नपर
प्रेमउमाही जदुकुलनेहनित्यनवजानी प्रानविरहदुहोसुषदानी आजुकालकहिकेत्र
यमासा रोकिउगोकुलपतिहिसुपासा पुनिनानाविधवस्तुअपारा दईनंदकहवहुसुष
सारा अतिविचित्रआभरणअमोला वासनवसनतुरंगनलोला उग्रसेनवसुदेवसमे
ता कृस्नदेवउद्धवमिलिजेता हियप्रीतिजुकरिसनमाना लईनंदकल्यानविधाना
अनीसंगदीनीहितमानी पहुचावनकोपदसनमानी नंदगोपगोपीजनजेते कृस्न

९७२ A

चरणमधुकरमनतेते ताहितजनकहिसमरथहीने अनरुधनपुरगयेप्रवीने गये
बंधुजननिजनिजगेहा कृस्नदेवमहिसबकरिनेहा लखिवरषाआगमहेभूपा जहु
सबगयेपुरीसुषरूपा ३२ दोहा कहतपरस्परवातमगजनपदानिसुषरीति सुहृद्हमि
लेजिहिभांतिसब गयेराविजिमिप्रीति ३२ कहेएकादससोहरापावनकृस्नचरित्र
छंदउभयषट्सोरठायहअध्यायपवित्र ३३ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदश
मस्कंधेभाषानिबंधेचतुरासीतितमोध्यायः ८४ दोहा पंचासीकेध्यायमहिकृ
स्नसहितबलदेव पितुपदवंदनकरहीबचनकहतबसुदेव १ तबनिजपितुकहआ
नदेमानुस्तकसुतथानि इतनीकथावषानिहेमुनियामेसुषमानि २ चौपई कह
हुप्रातिसुषपाये मुनिकेवचनसुमिरचितआई हरिपरब्रह्मदेवइमिगाई हेस
सीसकरप्रतिसनकारा मधुरप्रीतियुतबचनउचारा कृस्नकृस्नप्रभुहेजगदीसा
हेबलदेवदेवजनईसा इमिजगकोकारणजोआदी कहहिप्रधानपुरुषसबताही
तुमकारणदोऊउनकेनाथा तीनबंधुअतिमावहिगाथा यहतोविस्वबहुतविधभ
एऊ बहुकारकपाकहिअतिकहिऊ मोहिकहोकारणतुमकैसे इमिजोकहहुना
थमोहिअैसे तहांसुनियहेनाथकृपाला तुमसबकारणरूपविसाला जयजावि
धजोकरतारू यहजगभयोअनेकप्रकारू कारणहूकेकारणआप तुमबिनुमिथ्या नव

श्री·भा·
६२७३
973

कृपाकलाप नानाविधयहजगतजहालौ तुमविनमिथ्यासर्वतहालौ ३ दोहा जगरच
नारचितमहिमहिंआपुकीनपरवेश ग्यानकृपाहूंसकततवव्यापरहीअविलेस ४ सोरठा
प्रानआदिबहुभाइ शाकतिअमितकरजगतयह मोहिकहोकिमिगाइ जोकरतावित्रैसे
कहहु ५ चौपई नहासुनौकरुनानिधिवानी जैसेमैहरिकहौवषानी प्रानसूत्र
आदिकजेहेतू कहौविरचकहकृपानिकेतू सोसबकेसबसकतितिहारी स्रूतिकहसव
पारिनत्रपकारी वेथकप्राकतिवालकीनाही पुरुषशक्तजानौतिहिमाही जैसेदूसि
कलसकतितवनाथा तुमविनुयेसवअहैंअनाथा प्रानआरिवेशजोकोई तवक
टाक्षविनुसफलनसोई ६ दुकौतिअरुतेजकृसानू आतिसैप्रभावतजोभानू तड़ि
तरिरूगनतेजअनेका विनुतवसक्तिसत्पनहिएको धारनशाकतनभममहजेती
अरूगुनगंधसहितसवतेती सोसवप्रकतनकृपालअनेता तुमविनुअपरनकोऊ
भगवंता तपतिसकलजेजगकेमाही जननीवतगुनहैतिहिपाही रसजलमाहिस
कतिसवतोरी वायुपराक्रमसहितवहोरी ६ दोहा दिसाव्योमअवकासजेसवर
सहितसवसाजि वषपतीअरुमधमापरावेषरीकाज ७ सोरठा सवमहिसकति
प्रताप तवजानौकंसारिमे विनुजानेसहितापु हेविकारयहजगतसव ८ चौपई
विषयप्रकासककोगाकृ तकहही सुरइद्रनमैअधपतिअहही सोतवसक्तविनाछ
नाका करिनसकेकछुरहितविवेका निश्चैसतिआहिजेकोई प्रतिसेधानसक

तिजेहोई तेजसता मंक्तजेकरमा अरुवैकारककेजेधरमा अहंकारजेतीनप्रका
रा अरुप्रधानकारणजगसारा सबकेकारणतुमजदुनेदन अपरनकोऊहेकंसनि
केदन नस्वरवस्तुअहेजगसारी तुमहिअनस्वरएकमरारी निमिकंचनमंइकारनए
का तिनकेकारनवस्तुअनेका घटिमू षणकछूसत्यनजानू मृइवामीकरनप्रासितने
मानू एकसत्यतुमखंतमिराना अपरअसत्यजगतयहजाना गुणयहसंसारुवषा
ना सवढामोहि काहिउपरधाना तौसवजगतसत्यकिनहोई जौइमिवचनकहोप्रभु
कोई तहांसुनोविनतीएकमोरी श्रुतिइमिकहैमोहिनहियोरी ॥ दोहा तवमाया
कृततीनगुन ताकृतविविधविकार सवगतसवतैदूरतुम यहश्रुतिकृतनिरधार ॥
सोरठा गुणकृतयहसंसार तामहिभटकतमोहसव नहितदरूपविचार अहमिन
सततवहिरिरही ॥ चौपई इमिकरतेतलनिरूपणतासु जेनहिभजनरूपसुषरासू ता
नसुपदइन्द्रीसुषदाई भयोभ्रमततलोभगोमूली महामंदतिहिविधिप्रतिकूली मैंयह
मोरवस्तुसवभांती देहगेहसतलषैकुजाती दृढसनेहरूपायहफासी वांध्योतहां
कोसकेनिकासी हमतवननयककहिइयाकिमिअ्रेसे तहांसुनियप्रभूहैयहजैसे पु
रूषप्रकृतनहोऊजगकहहेतू तासुईसतुमजदुकुलकेतू भाररूपजेनपअघरासी
हस्योभारसवतिनहिविनासी यातेमैतवपरजलजाता सरणापन्नभयोजनत्रा।

श्री भा॰
द॰ २७४
२७४

ता सेवत भय नासक जदुनायक पाहि नाथ निज जन सुषदायक तुम सम सुषी जगत न
नहि कोई किमि निरवेद कहौ जीय मोई अलेअ लेंइ तेनो जदुनंदन इंद्री सुष सब व
री निकंदन २२ दोहा जाइं द्री सुष हेतु करि तन कहिं आतम मानि तुम ईस्वर अविलेस ह
रि तुमहि तौ कहम जान २३ सोरठा तुम ईस्वर भगवंत निज मुष तुम मोसो कही सतीभ
द गुनवंत भये चतुर्भुज प्रगट जब २४ चौपाई अनजुग जनम लेहं हम तोरे अज अ
चय मम गुन नहि थोरे सुत पाए हिमि गर्भ हम जाये पुनि कस्यप अदिती गृह आये अब
वसुदेव देवकी दोऊ तव ग्रह जनम लीन हम सोऊ नाना तनु धुनि धरि तुम दोऊ पालहु
धरम नसैन हि कोऊ नभइ बसेन त दूर रहाहू लषि न सके अस सिसकन काहू तव विभू
ति माया गुन भरी नहि बिरचल बिजिहि मति रूरी देन पए हि विध पितु सब बानी सु
नि भगवंत हृदे सेसुष मानी विनय सहित सुंदर रस भीनी बोले वचन सुमति हारि लीनी
हे पितु तव यह गिरा सुहावन कही सत्य यह सब मन भावन ततवेसा तुम सकल वषा
ना मो हिमु कहिय चतुर सुजाना हम तुम सब ये पुर के वासी सब महं एकत लषि अ
बनासी लषहु चराचर महं इह रीती एक ईस सब मह दिकरि प्रीती २५ दोहा नाना वि
ध को जगत यह बहु बिकार बहु जाति किमि कर जानिय एक यह भिन्न अनेक लष
नात २६ सोरठा जो इमि हिय संदेह करे कहा चित तात तुम सुनहु वचन करि नेह
मानहु इह विधि जगत सब २७ चौपाई पंच भूत तिस तन अभिमत सरीरा नाना आकार हे

मतिधीरा बसुएककलपविपरे अनेका तिमिआतमकहुजानियएका इहिविधसाध
देवसबवानी देपतिसुनिस्रुतिसेसुषमानी नानाबुधमेरमिटगएऊ अनिमिसरत्नमन
बुधकेरहिऊ देप्रभुपतियहवातसकलसुनि देवकतनयानिजमनमहिगुनि गुरु
सुनअनिरियसनभाये यहमनगुनविसमयचितपाये निजसुनसुमिरविकलसवगा
ता नयनवारभरिकै मरहुवाता रामरामहे अमितप्रभाऊ नवगुनअमितसुषरसव
काहू जगकरताकेतुमतेउईसा अवजान्योतुमहेपरमीसा उनपथगामीनेमही
पालो ननिअतिसनुकरहिकराला जेथितीसमहिकोअतिभारा तासुनासहित
नवअवतारा जासुअंसयहपुरुषकहावे तासुअंसमायाअतिगावे तासुअंसश
नतयनेअहही तासुभागपरमानजुकहही ताहिलेसकदिजगवहुवारा उपमेवि
नसेअपरनपारा १८ दोहा सोतुमहेजइदेवसमनि दुषहरमनभगवंत मोहिजानौनि
जसरनअबआरतपालअनंत १९ सोरठा गुरुकेमरेजुवाल आनिदियोतुमश
नमह मंरेभयोवहुकाल त्याइदईगुरुरछिपा २० चोपई जिमिगुरुसुनआनेजदुनं
दन तिमिममकामकरियअबिकंदन मोजराजमारेमारिममवालू आनिदियावहु
नाहिकपालू इहिविधिविनयकरीजबमाता हेनरपताहोधनदोऊभ्राता सुतलगाय
जोगीसगुसाई वलिदेष्योअवतदोउभाई उठेउसकलपरिवारसमेता बंदोप्र
भुपदबुधिनिकेता साद्रसहितवरासनदीना पदपषारिसवरसोदकलीना पुनिपूज

श्री भा.
१०.२७५
975

नकीनीविविधभांती भूषनवसनअमोलसुहाती सुधामयरुचिरबहुपरकारा चेरनेच
रचिनगंधअपारा देताबूलजोरिजुगहाथा ननधर्नमि अरज्योहेनाथा दमिकहम
तुमरूपपावननीरा करयौपानअनेरजुनधीरा अतिअनेरसजलजुगलोचन तन
रोमांचरविभयमोचन गदगदकेहजोरिजुगहाथा वोल्यौवचनरनुजकुलनाथा न
मोनमोहेनदुकुलचेरा नमोकृस्नमनिजकंसनिकेरा जयपरब्रह्मअखिलजगना
यक जदुकुलकेरवचेरसुहायक ॥२२॥छंद॥ जयचेरसुभायकजदुकुलनायकतव
दरसनअतिकठिनहरी रजनमअतिघोरा प्रकतनकठोरा नवहुनरंचकपुन्यकरी
तुमदीनदयाला जनप्रतिपाला ममग्रहपावननायकरी सात्विकजनधीरामनिगं
भीरा हरिनिहिममघरिविधिभरी ॥२३॥दोहा॥ देतदेवगंधर्वमुनि विद्याधरउपदेव
निसिचर यछपिसाचगन एकुसदिसकियदेव ॥२४॥सोरठा॥ नित्यकियोअरिभावु
कोऊकभावजुनभनहिपर कामहेतुकोऊधाव सकलकियेप्रभुएकसे ॥२५॥चौपई
बेरिभावसिसुपालनिवाही गोपिनकामभावचितचाही निमिहनतावसरस्यपहरि
पावा तिमिकोऊअपरनिकरनहिआवा दीनजानिमोहिपावनकीना कृपासिं
धुअपनोकरिलीना जद्यपिदेवभावकरितुमही मिलेबहुतजगतवजितकितनही
नरपतिनाथलालिकमोहिकीजै यहमांगोंअवकोपाकरीजै जनिहिकामभगत
नबकोई तबपदकेजमजोहिनितजोई नासुसंगमोहिहोऊकृपाला त्यागिक्रोध

275 A

ग्रहकूपविसाला तवपदकंजभजोमनलाये कामकोहमदमोहनसाये अलपपुन्य कहकिमिद्दू ऐसे तुमनिजमनकियचाहत जैसे जौकरतचिदमिकहदुगोसाई तौमोहिसिध्याकरियवनाई तवरघ्माम्ना अम्भाजुतकीने विधिनिषेधसवषुदहिप्रवीने सुनिवानीवलकीरससानी वोलेक्रम्मसतसुषदानी तवमनवाछ्छतहोउसुजाना भक्तिहोउसुषसेपतिनाना २५ दोहा ग्रेसेकहजदुवंसमनि निज प्रागमनसु हेतु कहनलगेवलिपासग्रवसहिजाहिकृपानिकेतु २६ चौपई उरूनानामसुभग वरनारी सोमरीचवामासुषकारी भयोसवयंभूसनिजिहकाला ताहिसमेकीकथा रसाला उरूरलाग्ररूमरीचिनेजानू भयेपुत्रषटूसवगुनवानू कंजसुग्रननतनयानिजेदेषी रूपसीलग्रतिसुंदरपेषी केरनचाहमैथुनहदतासो तहमरीचसुतषेदलषासो हसिसकलतिनसंकनग्रानी विधितिहिहिनग्रापदषमानी होहुग्रसुरतुम मदग्रभागी हसिहुवेरदपयलजुताताकी तेनिजग्रघफललहेतुरेता जनमेदनुजकुलेहवुधवेता कंचनवपुग्रहजनमेजाई तिनहिजोगमायाहरिल्याई भयेदेवकी उदरमभारा तिनहिकेसजनमतहठिमारा तिनहिदेवकीसोचनथ्रहही तनयमानप्रतिदुषमनलहही तेसवदेहादेतवपासा लेजाऊनिजमातसुपासा तासुसोकसवमेकरिदूरी पुनिइनकोरहैगतिरूरी २७ दोहा समरएकउरगीषपुनिपरीष्वंगदकनाम ग्ररूपतंगाक्षुद्रभकघृणीनामसुषधाम २८ चौपई एषटू

ती

श्री·भा·
६२७६
276

ममप्रसादकरिभूपा पैहै पुनि निजलोकअनूपा सापअंतआयोअवजानू वचनस
त्यममसवहुप्रमानू वालकदेवलिए नाकीनी जनमसफलनिजमनकरिलीनी लै
निजपुरआयेजदुनंदन हियेमानुकहसोकनिकंदन देखितनयमानाहरषानी सव
नपयोधरनहनहवानी करलगाइअंकवैठारी पुनिपयपानकरावसुषारी हरिमा
यामोहिनहेभूपा सकलजगतमुतवितसुषरूपा अपनोकरिजानैयहप्रानी नेहपा
ससवदृढअरुझानी पीनसेषप्रभुकोपयपाना कियेवालकनहियसुषमानाजान्यो
हमसुरवालकअहही परिमुषसोकवचननकहही कछहदेवपरवंदनकरिकेमात
पितापरपंकजगहिकै सवदेषितगेनिजधामा वारवारसवकरतप्रनामा देविमा
तसुतआगमनगमनू प्रभुमायानान्योदुषसमनू इहिविधिकृष्णचरितअनेकाली
लाअमितकरमनहिएका ४१ छंद नाहिकर्मएकअनेकलीलानायकरसकासिंधु
की जेसुनहिगावहिपरमपावनसुजससमदुतिइंदुकी मुनिकहीवारहवारअघ
वनदहनपावकसमअहै यहभक्तिजनकहुकरणभूषणसदामनवचकरिगहै
४२ दोहा नासुनिवहहरिगुणकरकोसोअवस्यकरिभूप। पावैहरिपुरवाससोविभु
प्रियासुषरूप ४३ सोरठा हरोहायहमाहि कहेसारदासातवर सुनततोषनजाहि छंदकहेदेसुनमअति ४४ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दशमस्कंधेभाषायांवंदि मृतानामप्ापयनयनंनामपंचासीनतमोध्यायः ८५ सोरठा

276A

ता

षटू आसीतकोध्यायमैमहु अपरजुनकपटकरि द्वारामतीसुजाइ हरिहै भगिनीकास
की १ मिथुलापुरहरिजाइ विप्रभूपहोऊसुखितकरि यहसवकथावनाइ मुनिकहिहै
रिषिराजप्रति २ चौपई सुनिमुनिवचनसुधारससानी बोल्योनृपतिजोरिजुगपानी
हेमुनिपूछतहौइकवाता कहिवकथाकरिहेजनत्राता कृष्णदेवभगिनीकिहिरीती
गुडाकेसव्याहीकरिप्रीती सुननचहौंमेचक्रपानिध्याना जोममपितामहीजगजाना
सुनिभूपतिकेवचनविनीती बोलेमुनिमनअतिसेप्रीती तीरथघटनगयेइकवारा
गुडाकेसअतिसुमतिउदारा फिरतअवनचलिगयोप्रभासा सुनीवातकोऊविप्रप्र
कासा श्रीपतिकीभगिनीगुणभारी नाहिहेनकहूमेअविचारी दुरजोधनकहदेनअ
नंता हृदयविचारयोइनबुधिवंता नाहिविदेहुभाजनीसरूपा मनअंकनलखिरूप
अनूपा द्वारामतीगयोचलिआसु वरयावरितुमरिकरयोनिवासु कन्यालेनचाह
विनवाढी अतिसनेहवामेरुचिगाढी पुरवासनसाहरजुतराखा लेयानकिनहूअस
नसनभाषा ३ दोहा एकदिवसवलदेवतिहिनिवंगमेलेगेह भोजनदियोविविधभ त
नस्वधारसहितसनेह ४ चौपई करिभोजनअर्जुनसुषरूपा देषीकंन्यासुभगअनु
रूपा शशिवदनीमृगसावकनैनी सकलअंगवरकोकिलवैनी करिरतिभावछुभि
तचितभएऊ मनगयरवयोओसनहिलहेऊ कंन्यालषिअरजुनतनसोभा सकु
लभोतिमाकहूमनलोभा मंरमुसकयोडाजुनदेषी करिकटाछपुनिपुनितिहिपेषी

श्रीरा
६२२७
९७७

गुडाकेश निहि दिन अरु राती चिंतत रहैं न अपर सुहाती काम विवस मन से भ्रम तासु
हरन चहे अवश रनहि कासु भई देवयोग कोभारी निकसे पुर बाहर नर नारी कन्या
चढि रथ परम अनूपा गई वाहर आई है भूपा तहं ते रही धनंजय नाही सौरी को सेम
न कछु चाही कृस्न रे व अनुमति कछु पाई कन्या हरयो आइ वर आई रथ चढि धनुष
वाण गहि लीना हांक्यो रथ सो चतुर प्रवीना रोकन कह आगे नो कोऊ सर हत लहे
पराभव सोऊ जिमि मृग नृप माऊ निज भागा मृगपति हरि लेयुत अनुरागा ५ दोहा
समाचार बलि देव सुनि छुभित भये मन कोह परगहि श्रीपति वचन कहि समुझाये के
रि छोह ६ सोरठा हय गय रथ अनरनारि वसन विभूषन वस्तु वर दायज अमित सुधा
रि दैप ठये चल देवकरि ७ चौपई भयो व्याह इहि विधि हे भूपा अपर चरित्र सुनहु सु
वरूपा कृस्न रे व करि को ऊ निज दासा केवल हरि पर महि जिहि आसा वसय सु भूसु
र मिथिला माही सील सो नमन ले परनाही रहें गेह महु उपमत्यागी विषयन ते मन
ना सुविरागी अनायास आवे सो लेई नाम हस बनि रवाद करेई तन निर्वाह मात्र सो
राखे अधिकन गहे सत्य नित भाखे इह विधि करे क्रियानित सोई मन हरि चरनन के म
रहपाई नाहि नगर को नृपति सो ऊ आनि अनन्य जाने सब कोऊ नाम तासु बहुलाश्व
महीसा दूजे हरि जन पर धरि सीसा दोऊ हरि प्रिय नित हि दिखाल हे तै गये आपु चल
कृपानिकेतृ रथ चढि मुनिन सहित नदुनायक गये सुमे पलन गर सुहायक

277A

नारदवामदेवभृगुनायक सुरगुरुअरुनिजगतिसुषदायक च्यवनआदिमुनिअप
रघनेरे गयेसंगहरिपदरसघेरे ९ दोहा जिहिजिहिपथहरि गयेचलितहतहपुरजन
लोग अरघपाद्यकरिविविधिविधिवकुदेहसुभयोग ९ चौपई आनरतककुरुजोग
लेहस्व मनसअपरपंचालनरेस हरिसुषदेषिदेषिहरषाही निजद्रिगसंपुटपानक
राही तिनकीआरदेषिजगहीसा चितिवतहीतिहिनमकरिषीसा सालिसालतिहिहद
यप्रकासी आगेचलेसंतसुषरासी निजजसमुनेतंजाहिमगनाथा अघनासकपा
वनवरगाथा इहिविधिजनकनगरप्रभुगएऊ समाचारमैथिलपतिलहिऊ लेपु
रजनकरिसुभगसमाजू आगेचलेऊलेनसजिसाजू मंगलद्रव्यअनेकप्रकारा ब्रह
मघोषधुनिमंगलचारा देषिकृष्नमुषपंकजसोभा थकनरद्योमनमधुकरिलोभा
धरिजुगपानिसीसपरिभूपा करेऊप्रनामदेषिसुषरूपा एअषिलेसजगतगुरुस्वा
मी कृपाकरीहरिअंतरजामी मैथिलपतिश्रुतिदेवसमेता आयेयहप्रभुकृपानिके
ता एकहिसंगचरणगहिदोऊ जनमलाभअसिलहानकोऊ १० दोहा मैथिलपति
श्रुतिदेवदोऊ करिजोरप्रभुपास कह्योनिमंत्रिलनाथकोहियमेहिपरमहुलास ११
चौपई प्रभुतिनकेमनिकीलषिलीना दोऊनकोचाहनहितकीना दोऊनकेगहगम
नेआए उभयनजानतहरिपरिमाए असतनकोसंततहारिदूरी दोऊमनगुनेभा
गमभूरी इहिविधिसारंगजुननिजगेहा लैआयेमुनिसहितसनेहा सुभगवरास

श्री भा
६ २७८
९७८

नलेइ वे ढारे वार वार सुभ चरन निहारे बढी भक्ति हिय हरष अपारा पुलकित अंग नय
न जिद्रिग भारा कस्यो रदु वत वारहि वारा निज कर प्रभु को चरन पखारा तीनि लोक पा
वन सो नीरा सहित कुटुंब पान करि धीरा गंध माल वर वसन मगाये धूप दीप पुनि अ
रघ कराये भोजन बहु विधि करि हजे इस्टदेव मम अपर हूंने मधुर बचन कहि विनय
समेता भोजन रुचिर रचो जग जेता पाट अनेक धरि चापन लागे रस रस दावत हिय अनु
रागे बोल्यो नृप हरि सौं वर भागी उमगा अनेर प्रेम हिय पागी हे हरि सकल भूप जे प्रानी
सब के साखी जन सुखदानी १२ छंद सुखदानि सब के बसत हियमह आजु मोहि पावन।
कियो बहु [illegible] तिलत आजु प्रभु दरसन दियो निज बचन साचु करन हित
इनि गमन किय [illegible] हियो तुम दीन बंधु दयाल जन प्रतिपाल तुम सब को [illegible] १३
मम बधुवल नियमसि धुन नया सु अनेक विध जग जानियो तेन हि लगे प्रिय मोहि कबहू
से न प्रिय मोहि [illegible] मानियो मह बचन निज मुख [illegible] अति हरि सत्य साधि बखानियो
[illegible] कियक कृपानिधि सत्य सब दिन मुनि हु इमि गुन गाइयो १४ दोहा जो जो नेपन राव
रा सहस सन जन कोइ तो छोड़े किमि चरन तव परि सुकृ की जो होइ १५ सोरठा जेनि
हि किंचन होइ [illegible] सुभ आचरन चरन पराय न होइ ताहि हेतु तुम अपनयो १६
चौपई निज [illegible] कर्म ना सु फल चाही जन मन मरत जीव जग माही ताहि नारि वेहित
नइ नाथा जइ कुल जनम करि सुभ गाथा ताहि गाइ अघ ते घन घोरा त जे जीव वह

सेसनिघोरा १७ छंद जयसकलकरुणाकंद हरिकहतनवकंदिकरभवफंद जयरमापति
सुषरासि सुरपालबहुगुनधामि कछुदिवसबसइतिनाथ गहकरियमोरसनाथ द्विज
सहितनिजपदकंज मषदोषदुषहरिभंज सुनिवसननृपकेरीनि नहरहे सकलप्रवीन
मिथिलेसपुरनरिनारि सबसुषकीनमुरारि १८ दोहा इहिविधिनानासुषहियोवरभू
पतिकेगेह सकलदेवकरुणायनजाहिहीनपदिनेह १९ चौपई हरिमिथिलेसलरन
गेजैसे द्विजस्रुतिरेवधाममहतेसे देविकेसिहनकौसुषमानी मुनिकहकियप्रणामयु
गपानी कहियाहिवसनधमाइध्रमाई नचिकुपरेकरअतिहरषाई धरितप्पीरस्वरम
दवानी स्वागतिपूछअधिकसुषमानी धोयेदंपतिमिलप्रभुचरणा सोसुषभूपजाइनहि
वरणा सोपावनजलधरिनिजसीसा पावनभाकुलसकलमहीसा अमलकअरुउ
सीरधरिआगे जलभरिकलसअनिवहुभागे अतिसुगेधमदकुमादेचारी तुलसीहरि
तकेजसुषकारी यहसवभेटधरीप्रभुआगे हरषतदंपतिहियअनुरागे अनापासउर
ने वेगविहीना सतसुधगुणअनप्रवीना सोसवकरअरपनमनभाये भोजनकरिनमअ
मिसुषपाये करलागमनमाहिविचारा अहोभाग्यममपुन्यअपारा २० दोहा परयोअंध
ग्रहकूपमेकहापुन्यधौकीन कहासकलपरिब्रह्महरिगहचलिदरसनदीन २१ चौ०
करिअतिथ्यकेसरिउकेरी बैठेयानिकरविप्रमुषहेरी स्वजनअपत्यसहजवरनारी
यरलाअकधरिसेवसुयारी बोलाभसुरसुषमयवानी हेकेस्वारदीनजनदानी रस्योवि

श्रीभा·

स्वनयवहेजगनायक तामहिकरिप्रवेससवलायक नवहितहोमैहरसनपावा सत्ता।
मानवेरनिहिगावा अवरसनयहलघाअनूपा छविनिधानस्यामघनरूपा स्ववनम
ननगुनकथननिहारे करतरहेनितप्रतिमनधारे हियप्रकासरूपहियतास भलीमां
निमनपावनजास ममलोचनगोचरप्रभुआगे मोहिसरसकोअवबडुभागे सवकेहि।
यप्रभुवसनसतहीं कोअरेयकोऊलपिकिमिनाही इमिसंदेहकरैकोअप्रानी तहांके
हनसुनियेसुवानी करतकरमचितधामहेजास वसतईसजघपिहियतास अहं
कारकमिलयनसोई तासोदूरसदाहरिहोई २२ दोहा नवगानप्रसारमानस्ववनकरेगु
नमोरि रहोतासुसनननिकरमेटहुभवघोर २३ सोरठा भयेजेतनगतमान अहं
कारममनामिहो नाहिप्रकासकज्ञानलषिसरूपअपवरगलह २४ जेअभिमानीजी
व नहिरघनवरूपसठ तमेनविषयासीव नाहिहितेभवसिंधुपुनि २५ चौपई न
मानमोभगवंतअनेना चलहोजनरेनननिजसेना जयकेसरिकेसमरगाजन सुघ
प्रेमदुकुनचिवपनिविभंजन देवकृपाकरिसियबडुमोही किहिविधामिलोनाथमै
नाही निजमहप्रीतिअधिकहरिदेषा मसुरमाजन्पूनकछूपेषा सोस्तुतिदेवहिकहत
वषानी मोतेअधिकविमसनमानी हैदिनलषहुविप्राचलिआये सदाविद्रुमापद
येलाये विचरनिमहिपदपावनधूरी करहिपवित्रलोकअघदूरी सुरगनछेत्रनीर
पवरजेते दरसनपरसअसिकरतेते वहुतकालकरिपावनकरहीं अघपरिताप

2?9A

तुरत नहिं रहही जस पितु रारि क करहिं अघ दूरी सो प्रताप मुनि जन पग धूरी जग लगि
जगत मो ऊ जे प्रानी सब ते अधिक विप्र अग जानी विद्यानय अरु तोष समेता मोर दास सम
म चरण निकेता महिमा तासु कहा लौ कहिं ऊ कहत कहत मैं अंत न लहिं ऊ यह तन सु
भग स्याम भुज चारी मो हिं न प्रिय द्विज अनि हितकारी मे सब वेद मई जग जाना सर्व वेद
मय विप्र वषाना २६ छंद सब वेदमय द्विज रूप जानो मोहि सेतत प्रिय अहै कौऊ अप
ते महद रूढ भूसुर होवित न अोगुन कहै अरचा विषे अति दृष्य मति ते वृा वहून हि कथू सुष
लहै अग जग महा लोका जकारण तासु हि तु द्विज वपु गहे २७ इहहे तु हे महिं देव संत
त सुनि नि दूजहु चाइ के मम रूप जानो सर्व घा मे करीय य समुझाइ के मम भाव के द्विज
राज पूजहु सहा मन वच काइ के द्विज भाव गत मम करहिं सेवन ग हो नहिं चित लाइ के
२८ सोरठा ऊ स्व वचन सुनि कानि पूजि सहित रकार द्विज सब कर करि सनमानि मे
थिल वासी गति लहे २९ इमि होऊ भरत न भूप ऊ स्मरे वउपदेस किय कछु दिन वस सुष
रूप वेद विषय वरननि कियो ३० वेद विषय त्रय जान कह्यो प्रवृत्ति प्रकार वहु पुरुषा
ये सुष दानि करुणा सिंधु कृपालि हरि ३१ दोहा कहे आठ वर दोह रा सपत सोरठा जान
महं अध्याय मंजार गुनि छंद चारि सु वषान ३२ इति श्री भागवतेम हापुराणे द
शम स्कंधे भाषानिबंधे षट् आसीतमो ध्यायः ८६ दोहा सपत असीके ध्याय म
हि स्रुति अस्तुति वहु भाइ नाराय ण विधि तन यकरि सुभ संवाद सुहाइ १ सोरठा इ

श्रीभा॰
६२८०

२८०

इप्रसंगइहिमाहि कहतमुनिअतिपरमकृपाल पुछिहै जवभूपालअववकरिविनतीर
ववाल २ चौपई मुखवाणीसरसउरवासू सुभगग्यानजिहिहृदयनिवासू वंदौनरहरि
परगुनभरी करतध्यानअघभाजनदूरी पुन्पावन्यासुयहससवभोती नहोनामहरिव
सतसुहानी जासुनारसुनिअघइभराजू भाजनभतरिआगिसुखसाजू वंदौमुनिनर
हरिपदकेजा दासराविश्वरि दलसवगंजो पूरवजोगअध्यायवखाना नासुअतियहक
घासुजाना ब्रह्मपरलवेदसुभगाये मुनिमुनिसवअतिहरिध्याये सोमुनिनृपअघ
दितइवमाना सेवाकरिपूछितसोइग्याना हेमुनिअनिरहेवभगवंतो करनसकैनिर
इसनअप्रेना सकलवेदगुणत्रयजुनजानिय त्रिगुणरहितपरब्रह्मवखानिय परिवसा
नअक्षनिकरीकिमि नहवा अकलअनीहरूपहे जहवा नहपुनिवानीत्रिविधप्रकारा
मुख्यागोनी अपरविचारा नामलक्षणहे एकवानी तीनिभेदयहरिवनविधानी मुख्या
नामभेदहै ताही एकलहहि एकगोणकहाही ३ दोहा कहीलहहिजोप्रथगिरासोउनक
हसब्यानइहमिध्याननहिकहिसकेपरिमानमकीवान ४ चौपई सम्पाकरिसकेनव
तावेनहिमनथजुप्लदिगजावे धनसकलयहधरीलषाई इमिपरिवलनसकेवता
ई ऐसहिनामलक्षनावानी जुतसकेतकहेमनआनी निमिगगाकोघाघवषानानत
हलकेतकरीअनुमाना ऐसेहिगौनीगिराप्रमानू करणसकेसव्यातवषानू दुहिव
निकहसकेनसोई तेसख्यानकहेकिमिकोई कारजकारणरहितअनारी सेवकेप

रेसवनकेआही यहतेंश्रुतिगोचरनहिंईसा जोपरिब्रह्मअखिलजगईसा मुनिभूप
निवानीरससानी बोलेमुनिनृपकेमनमानी हेनृपसुनियकहौतोहिपाही जेअनुसा
ईजीवकहाही तासुमनहितश्रीभगवाना रच्यौबुधइंद्रीगनप्राना चहननतासुसबवि
धकल्याना जथाजोगतनदेतसुजाना विषयभोगभोगनकेहेतू तिनकोनफलनस
लहतनिकेतू जससिजिहिजनमकरमनसकरही नहिंश्रुतिसेतुकवहूपरहरही जोअज
सकरैकरमतनपाई सोतिहिलोकभोगहितजाई गहेनिवृतिजवहिंजनकोई ता
हिमुकतितववतिहिछनहोई ५ दोहा करताईस्वरजगतकोसोसवतेहेहरि कहेक
रावेनहिंलियेरहेसकलघटिपूरि ६ सोरठा सगुनईसकरतारि गुणप्रेरकगुनतेर
हित सरवसक्तिसुखखारि सकलनियंतागपानघन ७ चौपई संसारीजोजीवकहा
वे जीवभेदअैसेमिटिजावे तत्वमसीयहवेदप्रमाना तासुअरथलखिएकनिदाना
सोसमानअधिकरणप्रभारा मुनिजनयहसिधांतविचारा अघटितइवईस्वरकेमा
हीपरिवसानकहुकिमिमिहिपाही ताहिकहतअैसेकविजानू इहिविधपरिवसा
नश्रुतिमानू नीलसरोरुहजिमियहदोऊ अहेविसेषविसेषनदोऊ अजहतस्वा
रथलखणाकेरिके जानहुवस्तुएकउरधरिके जिमिदेखिमिलेविप्रएकठामा एक
वालएकजुवासकामा जोअरभकसोदारिदघोरा तरुनअहेसोधनीघनेरा विधु
रमिलेबहुरिमगनिदोऊ भईअवस्थाअवरैकोऊ जोदरिद्रसोभाधनवेता धनके २

एकभौ बचदुषवंता चीनेमिलतवभासेवाहू कहीकियारोऊहरषविषादू अहोदेव
दत्ततुमश्रोही एचकहम अवलषाननतोही ८ दोहा ऐसेसहित्यागिउपाधिसवचिद
घनएकसरूप देषैसवठांअपरनहि घटघटिपरमअनूप ९ सोरठा निरगुणब्र
ह्मसरूप नामहिसवकीएकता इमिग्यानहुहेभूप कहेसमानाअधिकरन १० चौ
कहिहैपुछिबेरयहरीती ईश्वरअवलेवनजुनप्रीती परंपरायहबुधिजनवानी न
हिसंदेहहियेकछुआनी वचनउपनिषदकेप्रतिपादन ब्रह्मपरत्वसुमोहनसावन
साहरखुनेसरामनलाये विनुप्रियासप्रभुलोकसिधाये अवश्रुतिअरथनिरूप
नहेतू कहनेलगेमुनिकृपानिकेतू हेनपयहइतिहासअनूपा वदरीपतिनारदसुअनु
आई लखेसनातनरिषिमिजाई नामवदरकाश्रमअतिपावन सुरगनसिद्धकेमनभा
विन जगकल्याणहेतुहरिआए करनमहातपआरिहियताए धरमग्यानसमताजु
तदेवा करहितहामुनिजननितसेवा तहाकल्पपर्यामुनिदेहा वेदचहुदिसिआनेर
पान्हहू वाहीब्रह्मकीगाथ जेजनलोकनिवासकीकथासुरसरीपाथ ११ दोहा नवभगवंनसकौ
हिभगवंतसुनहुमुनिनायक कहौएकइतिहाससुभायक एकसमेजनलोकमझा
रा ब्रह्मसत्रभासुभगविचारा मानसमुनिअरु ऊरधरेता अपरग्यानघनवुधिनि

281 A

केतानहोस्खोतावक्रतासमहोऊ सीलसुभाइवालगुनसोऊ ब्रह्मविचारकरहिमनलाई
ब्रह्मसत्यसोईनामकहाई ब्रह्मशास्त्रमेकिमिनहिजाना जोतुमनिजमनइमिअनुमाना
नहांसुनोकारणअसिभएऊ तवतुमस्वेतदीपउठगएऊ ममसरूपअनुरूपवखाना तासु
ररसहितकरेउपयाना ब्रह्मास्वतवभयोप्रवीना तिहितेस्ववणनहोतुमकीना इहैप्रसन
नहवाभाजानू अवतुमपूछाजोमोहिग्यानू स्वुनमपसीलएकसमसवहू उदासीनअरिमि
त्रनजिनहूं छिगरेकहहनजोगवलसीला परिकोउकौतुकसीयहलीला एकसहिजवके
रिमानी पूछनलागएकसनमानी लागेकहनसनेहनताही जिनपूछाअतिसेचितवा
ही निजरचनाप्रभुतजगवहुभांती अगजगनानाविधिवहुजाती एतेहा प्रलयकालसे
धारसवसयनकरतजगदीस सकनिसहितनिद्रामनहुकरनईसकेईस २४ चोपई प्र
लयअंतनआवेजिहिकाला ताहिसमयहेवुधिविसाला प्रथमसामप्रगटितजोवेषा प्रभु
कहकरिप्रवोधनजिवेषा प्रभुप्रतिपाद्यवचनवहुभांती नाकरिकारियविनयवहुभ्राती
एकचक्रछितिपतिजिमिकोई सयनकरतनिसिगतलषिसोई ताहिसमेतिहिकिंकार
आई तासुकीर्तिवहुगुणसुभगाई करहिप्रवोधनित्यप्रतिआई तिमिश्रुतिगणसवा
हरहिजगाई कहतवेदहे अजितगोसाई जैजैजयकरुणानिधिसाई अगजगजी
वजहांलगिजेते करियनायसुकृतीसवतेते मेटोसकलअविद्याइनकी अपरनको
ऊसहाइहारितिनकी अहैगुनवतीपरमप्रवीनी किमिमारोसवघटिरहिभीनीजोक

श्री·भा·
६२८२
283

ताकिंइसे प्रभु कहहू तहो नाथ विनती मम गहहू दोष भरे सब गुण हू याको नाम अविद्या जगक
हे जो को आनंदादिक गुणवहु रीती घेरि लेइ मति विपरीती २५ दोहा तो मोहू को षञु तक
है प्रवल यह अविद्या· तो मेरी का सकति अव किमि नासी मैं ताहि २६ चौपई जो करता विह्रमि क
हहु गोसाईं तहो सुनहु अखिलेस्वर साईं निज सरूप करि तुम है नाथा वर ऐस्वर्ज सदा
तव साथा माया तव अधीन सवकाला कहहु सुकृपा तुम दीनदयाला निज वैराग्य ज्ञान कै
दिने ऊ किमि नहि हैं न है अविद्या ते ऊ तिन सवके तुम अंतरजामी सकल सकति दाता जग
स्वामी याते सब तेरे तव आधीना नहि स्वतंत्र परवस अतिदीना ज्ञान वृत्ति नहि तिनके हाथा
तव तुम करि कृपा करहु जग नाथा मम स्वतंत्र ज्ञ कृत सव नायक जीव अविरोधन सायक क
हा प्रमान आहि इह दाम इमि जो कहो नाथ सुख धाम तहो सुनहु यह अहै प्रमाना वेद वरो म
ह भगवाना असो मै जो सब गुन आगर अरु अयन सकल सुख सागर तहो तोरि किमि
विधि संचारु किहि विधि मम पावै न पारु कवहु कराविस्द्धि कै आरी तव लीला जो अ
है अनारी २७ दोहा नहि है तुम माया सहित कौतुक करै अनंत सन चित अरु आनंद घन पा
लन गोहि जसन २८ सोरठा ताहि समै है नाथ वेदकरै निज दहु लन तव सत्य सत्य यह गाय तु
म सर्वज्ञ सुखर व विन २९ अग जग की दुख हानि हरहु अविद्या नाथ तुम महादोष की षानि
तुम विनु को ऊ मद हरकरि ३० चौपई इमि प्रार्थना करि किमि तुम करहू नाना कारण मो कहू
किमि गहहू ह ह कल्याण है तुम जग केरे कहहु न वेद वहु विधि कहि टेरे जो इमि कहहु नाथ म

282 A

नअग्यानी तहां सुनौ किंकर की बानी शाक्त शारिका रमा सब देषे नहि स्वतंत्र परिवस सब लेषे व
हत ब्रह्म तुम एक गोसाईं संभव लय सुरगण समुदाई सब कहं उपादान नहिं तुमही नहिं वि
कार परसे कछु कबही जिमि मद तें घट विविधि प्रकारा नाम रूप गुण लहीय पारा सब मह
तुम सब तें नित न्यारे तुम अग्यानी हु अग जग रचि भारे या तें रिघगण जे जग को ऊ मन वच नात
परज सब सो ऊ घरहिं नाथ सब तुमरे माही बहत ब्रह्म को ऊ दूसर नाही भूचर जे नगजे तु
अनेका लघु अरु थूल जाति नहिं एका जो को ऊ जा विधि जह पग धरही छिति तें अपर
टेम नहिं परई तिमि सब वस्तु जहां लगि जेती तुम तें भिन्न नहो प्रभु तेती २२ एहां विधि क
सानुर विसख सुर यह जग यह जग माहिं तुम तें भिन्न नहें कछुक किमि वरनें का ऊ काहि स
तो रहा मंत्र देवता ईस सबके कारण एक तुम मे जानी जगहीस तुम तें भिन्न नहें कछुके २
२ चौपई सकल निगम गोचर तुम नाथा इमि वरनत पुनि श्रुति पथ गाथा हे त्रय अधिपति
ईस गोसाईं माया मम गी अधीन सदाई अखिल लोक मल नासक हेतू कथा सुधा तव कृपानि
केतू सो इक सुधा सिंधु गुण रूरा नाहिं रस अव गाहहिं सूरा सुधा सिंधु सेवे नित नासम न
सहिं ओघ अघ स्नान प्रकासा श्रवण मात्र करि यह परितापू रूप अनेक सब मिटे कलाप
रोग तेब मिटि जाइ तुरंता नरामर गण सब पावहिं अंता हे हरि जे तव रूप अनूपा सरण अये
ड अनेर सरूपा भजहिं ताहि जे संत अनेता गो पद सरस ताहि भव अंता जो लगि विचरहिय
हम माही जिमि सरोज जल सपरस नाही तुम कल्यान अमित गुण सागर कहे वेद जेमु

श्री·भा·
६२८३
283

निधिरनागर अवलादिकजे तव पद भजनहीं तुरत नाथ भवसागर तरहीं २४ दोहा भजनहीन
जे नर जगत भोजन वसन कराहि तिनकी निंदा करत अव श्रुतिगुन सव चित चाहि २५ चौपई
जे नर तव कृष्ण भक्ति कराही ते जीवत यह जग के माही सफल जनम जानहु ते प्रानी तव प
द के तबुधि लपटानी ध्यान न नम जे भजहि नसाई वधा स्वास भस्ता इव जाई संतत जे अभ
कत जनन कोई कामादिक सुष भोगे सोई कि मि जीवन तुम अफल वषाना जो इमि श्रुति
कहै को आना तव करा अवरि सुयस सवा को भजहि न नाहि विफल सुषता को महत अहं
कृत जग कहहेत् तामहि प्रवेस कृपानिकेत् तव पद हे अं इ स्त हि तिनना सो तव पद हु पंच को
सभा जाको पंच कोस अन्नादिक जेते तह प्रवेस प्रभु तुम कियने ते सवक हहु तुम चेतन्य क
राई रहित भिन्न सव तें सच दाई अन्वय पुनि व्यतिरेक कहाहू पंच कोस पुनि तहं न लषाहू
अन्नादिक जे कोस वषाना उपदेसन के हेतु सुजाना २६ दोहा तह तुम अन्वय मात्र प्रभु स
वतें भिन्न रहाहु तुम विनु सरे न काम कछु हीनि पाल जन नाहु २७ चौपई निहि ते चरम ब्र
ह्म जो गावा सव ते भिन्न नाहि ठहरावा सन अरु असन ताहि ते दूरी रहौ निरंतर सव घट पू
री जो अवसेष अतसन सोई तुम ते अपर सत्य नहि कोई तौ तुम अन्व करि किमि गावा
चरम ब्रह्म ले पुनि ठहरावा इमि जो कहै को ऊ मन आनी ताहि कहत वानी सन मानी दु ती
या वर मर निहिं मोती द्रष्टनपरे विकल्पमति होती इद्दुल षावन हित तेनि हि को ऊ परे वह
वट वरि है जो ऊ तव ऊमव छहार हूं देषा षछे रूप निसपति ऊन पेषा कहा पंचनिन।

कोसबषानी ब्रह्मलषावनहितसुषमानी नरवपुपाइतुमहिजगनायक तवगुणकथ
नआहिसुषदायक इहिप्रकारतवभजननकीना सोसबद्याभसोइवलीना बिफलजन
मसबजानियतासू जोनिभजेपदकंजसुवासू २८ दोहा सर्वजंतुव्यापीअहैहरिईस्वरभ
गवंत सबकोभजवेजोगप्रभुअपरनकोवलवंत २९ सोरठा जेअभकतननरकोइ तिना
कीनिंदाद्दढकरी महिमाअतिसैजोइ सोवरननन्कतिकरतअब ३० चौपई रिषिगनवहु
तबुधवहुतोकी संशयायजसिहैजगजाकी पूलहृदयमुनिहैजेकोई मनिहृदयकसुचक्र
कहमोई तहपरिब्रह्मध्याननेकरई इहिविधितेभवसागरकोतरही मुनिइकआरुण
मनिकेजानिय हृदयमांऊध्यानतिनठानिय सूक्षमब्रह्मउपासनसोई जाहिभजेउत्तम
गतिसोई कैसोहृदयआहिजहधरही सबनाडीजहनितिसंचरही तहितेचलीनाइनि
हिठामा नामसुषमनाहेसुषधामा मूलाधारआदितेचलिके हृदयमांऊपुनिसपरसक
रिके ब्रह्मरंध्रकहंतबचलिजाही सोतबधामकहेमुनिवाही जाहिगयेपुनियहभव
माही गिरेमलिकवहुसोनाही यहसंसारघोरदुषकेरा तहांगयेपुनिपरेनफेरा ३१
दोहा पुनिमारगपुनिविविधिविधिउद्दरादिककरिध्यान नासिदेइसंसारभयपाइसुष
रसुभेगपान ३२ चौपई उद्दरादिकमहईसवषाना रिषिनध्यानकरिकियकल्याना ए
कसरिससजानाइमिजाई कहोविसेषईसकिमिभाई जोइमिकरिसंदेहसुजाना ताहिक
हितकरिकेसनमाना निजकृतजीवधरेतनताना ऊंचनीचमध्यमपरिमाना तहवस

यहभोगैनिजभोगा सहैकष्टवहुनितिप्रतिभोगा। ईस्वरतेहमवेसइवकहिऊ मुष्यप्रवे
शनहांनहिलहिऊ क्रपारानजेजगकहकोई अनुप्रवेसतामहिहैसोई प्रीतिसरीरम
हरोइकठामा अधिकअन्नभांसेसुषधामा वस्तुएकनानाविधिदेषिय सोउपाधिकृत
नेवहुलेषिय जिमिकृस्नानुहैएकअनूपा दारुभेदकरिसोइवहुरूपा सहनेसन्यनहैत
ननाना सन्यएकतुमकृपानिधाना जिनकीनिरमलमति जगनायक उभयलोकसुष
तजेऊसुभायक ३३ दोहा जेनानहिप्रभुरूपनवसवईस्वरजसमेत सवकहसेवन।
जोगतुमईस्वरकृपानिकेतु ३४ सोरठा निजनिरमतसंसार नारतम्यसोरहितसव अ
नुकरिसवनिमगार सन्नामात्रप्रवेसप्रभु ३५ अैसेईसकृपालि भजियतासुपरकंजनि
त तजिसवजगतजेजाल तवपावैयहजीवसुष ३६ चौपई श्रीभगवंतअनेतगुणाक
र निजजनसुषकरहेतुकृपाकरि देहादिकउपाधियहजेती जीवनपरसतेहैसवतेती
नोईस्वरमेकिमिसंभवई देहादिकउपाधिजेअहई निजकृतकरमअमिततेनजेते
सुरनरपसुपन्नागमनकेते सकलसक्तिधरितुमनवअैसा जीवताहिकहमनिअवतं
सा तासुकियोयहअषिलविकारा यहलगितनरचनासंसारा वाहरभीतरसोहोऊदा
मा रहिनावरनअहेसुषधामा उभयशरीररहितसोअहई इहिविधिजीवतत्वसवक
हई ताहिजानिजेचतुरसयाने नवपरकंभजहिमनमाने निगमउक्तिजेकरमअ
नेका करहिसक्तिकोऊसहितविवेका नवपरकंजसमरपनकरही अमितहोइफलसु

284 A

हरलहई ३७ दोहा इहिनेकरिविस्वासनित पूजनवंदनतासु करैसदाजहजीवप्रमतवप
वैसुभवासु ३८ सोरठा यातेहेजगदीस तवमायाकतवंधसव हेतुकृपाकरिईस सेवानि
जपरकंजकी ३९ चौपई भक्तिअपरकरिसाधनआही इमिसुनिवचनकहतश्रुतिना
हीगुरुईसवतेसकनिवखानी कहतरेखगनजगसुखदानी हेईस्वरजेसुभवरमाना
ग्यानमनतनवकोइकजाना नाहिजनावनहितजगदीसा तुमप्रगटनकरुणकरिईसा
सुधासिंधुनवचरनसुहाये तहकोऊसुकतीजाइनहाये अमगनिभयोकामनानासी
मुकतिनचाहतनेसुखरासी भक्तिरसकविरलाजनकोई जाहिमुकतिकीचाहनकोई
तेतिहिअवरचाहिकछुआही इमिजोकोऊकहमनअवगाही अरपनतिनकौसपनेचा
हीं रेवकहूतिनचाहेकाहू तवपदकंजहेसमनजासू रहेनिरंतरढिगकरिवासू ता
सुर्वहतिनकौकरिसंगा कोइजोनियग्रहारिसुखसंगा भक्तिमुक्तितेअधिकवखानी श्रु
तिपुराणमुनिवरजेग्यानी मुकतिभयेतेऊतनकहधारी भजहिनाथपदपरमसुखारी
४० दोहा कथाअमृतरावरीसिंधसुखदअवगाहि महामोदभरसकतकोऊ अरथवा
रिलगाहि ४१ सोरठा विषयमगननेकोइ भूल्योहरिपदकंजसुख अंधहोऊदगासो
इ कहहिवचनविपरीतसब ४२ तिनहिदेतश्रुतिदोस उपदेसतहरिचरणरति बुनि
करिकैसहदोस कहतमूढअजहूसमझि ४३ चौपई यहनरदेहपाइसुखरूपा भजन
जोग्यनवचरणअनूपा तुमयाकेसनतनअनुकूली सुहृदभ्रातमाप्रियसमतूली अहो

[illegible] भा॰
१२८५
285

कहहु दस इमति मोहा भजेन तव पद ग्यान न केहा देहादिक लालन लपटाना भयो ग्यान
महत मद उग्र याना जालालन पालन के कीने रही वासना तिहि रस भीने सूकर हित न
फिरहिं भुलाना याते ग्यान महत किय माना तुम अप्रेन रजामी जगनायक सकल जी
वगन के सुखदायक मानुष तन नक वहू प्रभु मोरा होइ नाथ पद सेवक तोरा इमि कहि श्रु
ति पुनि कहत बनाई ध्यान अप्रेग सब विधि सुखदाई रोक प्राण मन निरोक हियोगी विषय
न ते करि करण वियोगी रहि कप्रि जोग जतन सब सांधी तिहि पीछे फिर करहि समाधी द्वे
से ते को ऊ परम प्रवीने तव चरणन रविर चित दीने जोउन को गनि मिलइ अनेना सो गति
तव अरि लहहन तु रेता व्रज तिय तव भुजदंड निहारी भई अप्रसक स्याम उरधारी ८८ तेहा
काम भाव भुजे भुजग सम्म देखि भई मन लीन सोइ गति तिन को तुम दई अप्रेसे चतुर प्रवीन
८५ सोरठा हमन तव किंकर देव प्रकृति अभिमानी देव जो तव पद सेतन तसेव सिगरे तुम व
हएक सम ८८ चौपई अंघ्रि सरोज सुधा तव नाथा तासु प्रताप कहै को गाथा जो मीजे
नव दुज तनन कराही दुर अवलेयन ध्यान धराही हम सब दीरलयै समई सा काम भाव
तिय गन मन ईसा द्वेष भाव करि जिन मन लावा एक सर सम गति सबहिन पावा प्रेम स
हित तव पद को ध्याना सब ते दुर्लभ मम प्रभु जाना करि कर छक बहु क प्रभु मोही रीजै सो
इ पद जाचो नाही भगवत तत्व न जाइ लखाई अप्रति दुरगम मसमुझित कठिनाई भक्ति म
ध्य अप्रनि मुनि गविचारी कहत हेतु सोई श्रुति निरधारी हे भगवन सब के तुम आगे ग्प्र

२२५ A

होसनातननहिवअनुरागे पीछे उपजनाम जेहोही तेकैसेकरिजानहितोही तुमतेविधिउ
पजासवजाना तिहितेहे सुरप्रगटवषाना अधिदैविकअध्यातमएका तिनतेभयोसु
जै गतअनेका अंतकालसवकरिसेहारा जवराषहुजगहहरयमफारा तहंअनुसाईजीव
अनेता तहांनसाधनहेभगवंता नहिसत अरुथूल लघुहीना नहिसाधनकछुवनेप्रवीना
४७ दोहा उभयसाध्यतनहरितयहुनाहितहकालरहाय इंद्री प्राणहुतेरहितनहिसतसा
ध्यसहाय ४८ सोरठा जवजननमेजगफेरि रहेवासिनामलिनजिइ तिहिपुनिअहममघो
रि ग्यानसधेनहिताहिको ४९ चौपई इहितेएकसरनगहितोरा श्रवनकीरतनकरेनथो
रा यहतोसुगमवेनेहेईसा ग्यानकठिनपथकाहुकरीसा मेवुध्याहिवध्योसमाला तुम
अतिकृपाकरीजनपाला दीनवंधुयहदयाकरीजे तिनपदकेजेमकतिमोहिदीजे जग
महिमानसुगमनाहिनाया उपदेसकवहुभ्रमतिहिगाया स्रुतिइमिविनयकरतप्रभुपा
सा सरातिनहिपदपंकजआसा जेवेसेषकमतिहैकोई जगसेमवसहिजेकहुसोई जे
पातांजलमतिहे प्रानी असतजगतिनिश्चेकरिमानी कहेवचनपुनिभ्रमकरिसानी ब्रह्म
कहे उनपतवषानी जेनैयाइकमतिहेराये सतयदुसवयोस्तेउनभाये इषजगएक
विधप्रकारा ताहिनसोयहमोधसुधारा सोअगहे मतिविचरतजोई आतमभेरवनावत
सोई जिनकोउगहामिमोसाजानी करमसकलफलसत्यवषानी येसवकहेवचमजे
गाई भ्रमसुनेकहेनतेलषलषाई ५० दोहा त्रिगुणमयीजोपुरुषकोकहतअसजेकोइ

श्रीभा॰
१२८६

286

सो तो नहि इनि खंभवे ग्यान दृढ करि जोइ ५२ सोरठा तुम सुस्रीलवते दूर सदा ग्यान घन रा
करस प्रकृति पुरुष महि दुरि रहित निरंतर नाथ तुम ५२ चौपई मिथ्या नरक असु करक
स धारी महा वाद तस अंतर भारी तासु वचन कि मिलागे काहू महामोहि जिहि हदय ग्र
याहू ग्यान वंधन तिन को अति दूरी वदित मानी मद अति भूरी केशव कृष्ण गोपाल मुकं
द श्रीपति माधव बाल गोविंद इमि तव नाम जपत के सारी कवपे है अपवरग मुरा
री ऐसे कहि श्रुति फिरि कछु कहही अपरभोति गुण गण चित गहही जग को जो उत
पति नहि मानिय त्रिगुणमयी नहि पुरुष वखानिय तो प्रपंच अरु पुरुष न न्यारे
एक होत कौन यह धारे उभय प्रतीत सत्य सो लागे इमि संसय जो कहि अनुरागे हरि
रि मन विलसत जगसारो त्रिगुण जुक्ति यह अहै असारो अहै असत्त सत इव सो लागे
कि मिसत जो पूछत अनुरागे अधिष्ठान सत सत इव भासे नहि इकलो इहि सत्य प्रका
से ५३ दोहा पुरुष प्रपंचक को असत कहै सो न प्रपंच असत्त आइ माया विलसित जानियै
सब प्रपंच सत नाहि ५४ सोरठा आतम वित जे कोइ देखहि सब जग सत्य सोइ असत
कहो किमि होइ ऐसी जो सका करिय ५५ चौपई आतम वित जे है मति धीरा अग जग
जहं लगि अहै सरीरा भोग वस्तु यह जग सब जेतो आतम महि देखहि सब तेतो आत
म कार जे है जग जानी पृथक न जाने जे मुनि ग्यानी उपादान जो को जो याही तासु रूप
नाहि पृथक कहाई कनिक विकृत कुंडल जिमि होई स्वरणकार तिहि तजे न कोई हो

286 A

एकज्ञानिग्रहै है सुषमानी कुटिलविलक्षन त्यागि पहिचानी प्रभु कन विश्व सकल पय हृज्ञानि
य तामहि अनुप्रवेस सोऽहमानिय इहि ते ज्ञानमविनि नेकोई ज्ञानममे है यह जग सोई
तीनकाल जगसत्यनकवहूं लागे सत्य सो सवकह नवहूं जासु सत्य सो सनइ व भास वं
दो मैं संतत पहतास ज्ञानमज्ञानवाह सुभ जाही सुभग उपाय कहित है ताही भक्ति मुष्य
श्रुति कहत विचारी होइ ज्ञान सहज है सुषकारी ५६ दोहा जे परिचरज्ञाकर हित व अग
जग साधित वदास मत्यु सी स परिधारप गमे डि हिनि हि भवपास ५७ सोरठा जे अग्नम क्त
जन कोइ गिरा राम करि वांधि निहि सुरतन कल के हि होइ नहि छूटै भव वंधतिहि ५८
चोपई जे तव पद पंकज अनुन प्रेमा भजहि निरंतर इहि दृढ नेमा ते पवित्र पावन वपु ताम्र
करहि अपर कह पावन आस्र जे नर विमुष कोऊ किन होई नहि भव तरहि रहे इति।
सोई भक्ति मात्र अथ वलै वै कोई सहज विराग ग्यान निहि होई करहि विविधि तप जत
न वनाई गिरि ते गिरै प्राण नसि जाई नीर पयपटन करैं व हु काला पढै अग्याग मवि
विधि विसाला मष वहु करै योग विधि साधी प्राण जीतप्रनि करै समाधी विनु हरि
भक्ति न भवनिधि तरई इमि कह श्रुति हरिपद उर धरई सर्व भूतमहि हरि कह भज
ही इमि वरनन कीना सुषलहही सवमह वस किमि लिपै न दोषू वस्तु सकति से न तत्व
हलोषू तो तह जीव सा जिन हत तेसी कहा अधिकता किमि भई कैसी सेवक सेव्य भाव
किमि होई इमि संसय आने जो कोई तुमहूं गिरा रहित कृपालु भ्रमि तस क्रि धरि नि

श्री·भा·
६२८७
287

जननपालू ५८ दोहा अखिलजीवजेजगतमहु कारणईश्रीनास कारणताकेतुमअ
होसकलनिरूपकरिवास ६० सोरठा अचलशक्तिधरिईस करहुसकलचेतन्यतुम
तुमविनसकलअनीस नहिरचककछुकरिसकै ६१ चौपई इहतेसुरगणहैसवजेते
तवपूजासंततकरितेते निजनिजसहितअविघातिमसी सेवहिपरसंततप्रियपमि।
सी एककछुचयातिकर जिमिकोई मंडलीकवलआनहिंजोई हव्यकव्यजोनरकछुदेही
सोसवभोजनआपुकरेही देहिकहा वलविधिकहहुकैसे सुनियनाथवरनौवि
धि जैसे जानाकरमवियेमहुराषा सोसोधकरैस्वहितअभिलाषा तुमतेसंततपति
भयभीता करेसोइनहिचलिविपरीता इहीरहितकरैसवकरमा सवकहप्रेरकरावे
धरमा जोसर्वजसकलकोकरता सवकहसेव्यसोनभयहरता वेदासोइईश्वरपर
कजा अनिरयातजनमनवरूजगेजा ईश्वरकरणप्रवरतकवरना इहीवसनर
मनहारिहरिचरना इतमोमाजेह तनहिआही सवकोपितुश्रुतिकहनिततारी ६२
दाहा हेविमुक्तिजिहिकालजवनिजमायाढिगराखि चाहतकीडाकरणतुमप्रग
टसवरूघराचि ६३ सोरठा अगजगसवहूजाग तवईयरणलवलेसते नहिकोयल
सव्यान किनकीनोकेसभयो ६४ चौपई जगतलीनसवमोमहररहई किमिजननैम
सनवलेमरई इमिसदेहकहैजोनाथा नहोसुनियप्रभुयहजेमाथा तवइच्छातेसक
लभोसाई जीवकरमसंचितसमुदाई जिहिअनुकूलकर्मतनलहई यहनिमित्तता।

सवकंहअहइ यहकारण उपजैसवजंतू नहिखतेत्रयहअहै परंतू ममइछातेभासं
सारू तौगुणदोषमोहिसवभारू इमिकवहुककहियेंजगदीसा सुनियैनाथइसिकेइ
सा सकलसहितेतुमहोदूरी वारूनीकपुनिसवघटिपूरी उत्तमपुरूषसकलजगनाय
कनमइवकछुनपरमसुषदायक नहिपरअपरभेदकछुतुमही सवमहसमसंततप्रिय
सवही मनवानीगोचरनहिकवहू हैतहरसजनकोहरितवहूं तवइषल्वसघोभितमा।
या पिछलेतिनसवकर्मजगाया ६५ दोहा ताहिहेतुतेसवजगतउपजेवारहिवार नाम
वसरमहमैपयौनाथउतारियपारि ६६ चोपई जीवअविद्यावससवकाला फिरहिंजो
निवहुवहुतविहाला जीवअनंतहोइजोनाथा नित्यस्वरगतिजोध्रुवगाथा तोतुमरी
समभ योगोसाईतुमहिंनियंताघटैनकाई इमिकरिघटैनियंतातुमही सवकहसव
विधहेजसजिनही निजउपाधिजुतजीवजहालो अनजननेमैवसकरमतहालो करम
धंकहिसक्तिनकासू जेकहमैजानौप्रभुरूपा तेनहिजानैब्रह्मअनूपा कहेनहोहमजा
नोताही जेजानतहेसंततताही बिनुवोलेजिमिउतरहीना जानैतिनहुमौनगहिलीना
सरवसक्तिजुतसवघटिवासी प्रभुसर्वसरवसुषरासी श्रीपतिकरुणानिधिजगदी
सा मेतवसरणइसकेईसा ६७ दोहा जीवसहाअजएकरसस्वप्रकासमुनिगाव वा
रवारयहजगतमहजनमकमनविधपाव ६८ सोरठा प्रकृतवरगजडरूप ताकुहो

श्री·भा·
६२८८
288

हरिकि निजजनजूगत देषियजगत अनूप अघटितघटनासीलगे ९९ चौपई इमिसेका
कहूमनआई तहोकहिन उत्तरसमुझाई केवलआतमजननमनकोई केवलप्रकृतसं
भवहोई उभयमिलेउपजैसवप्रानी वेधपरसपरसवजगजानी जिमिजलबुदबुदअग
टदिषाई उभयमिलेउपजैसवठाई पवनविनाबुदबुदानहोई जलविनुकवहुनउप
जैसोई जलअरुपवनमिलेजिहिठामा उपजैबुदबुदसहजसकामा अनिलनिमित्तथा
हिनिहिकेरा उपादानजलहैतिहिकेरा वासतवजनममजीवकोनाही कृतउपाधिजन
मेजगमाही अंतकालमहिजहलगिप्रानी तुमरेविषेलीनसवजानी विविधिनामगुन
कारजजेते नाहिसहितलयतुममहतेते जिमिअसेसरसमधुमहलीना अगजगतिमि
तवउदरप्रवीना पुनिविसेषलयअवरप्रकारा जिमिवारधमहसरनप्रचारा एकप्रलय
अनिप्रलयवपाना द्वैविधिलयवातेकियगाना १०० छंद वातेकियोइमिगानद्वैविधि
सुमतिजननुमजानियो जगहीसनेसवहोइजगवहुभांतिभांतिसोइप्रतिपालियो जिहि
सत्यतानेसत्यभासतनित्यनाहिनिहिमानियो अषिलेसत्रिभुवनगुरसदाअवनाथमोव
हिपालियो १०१ दोहा जिमिसरतावलितिसिंधुमहनिसिदिनचलेप्रवाहि तिमितवचरण
सरोजममनिनसदाअवगाहि १०२ सोरठा जीवसहायरतेच करेकरमयहदृसभाव प्र
भुनिनरहिनरूवनेच नाहिभजेनरसुगनिलहि १०३ चौपई अवस्तुतिकहतजीवसमुदा
इ हरिकहमजेमेसत्यतुरकहाई तवमायाकृतइहिभवमाही भ्रमतजीवसेरायकछुना

हो इहिविधिजानिविवेकीज्ञानी तवपद भजहि जानिसुषदानी होइसरणछनभरिपदकें
जा भजहिनाथतिहिभवरुजगंजा तवभ्रुभंगरूपत्रयकाली वरषासीतउस्नअतिज्वाला
नेमीकालकेरियहभारी कालचक्रयहमहादुषारी जेनवसरनगहितनहिचाही देत
महाभयसंततताही देषिकालगतिहियभयमानी तासुनवत्रहेतुजियजानी करहिभाव
पदकेजतिहारे तेभयगतिहमवहुतनिहारे यहसंसारचक्रवतआरा तिनममसरवहुला
रविसारा अवमैलषितवसरणमुरारी भवनिधिनारियहेअसुरारी ७४ दोहा होइभक्त
भगवंतकोजवगुरूसरणगहाय सोवरनेतस्तुतगणसवेनिश्चेयहठहराय ७५ सोरठा
मागनकठिनकठोर जीनेतिहिकहप्राणजुत वाजरूपमनघोर सुवसभयोनहिजासुके
७६ चोपई अनिचंचलवसहोइनकाहू जिनवहश्रुतिपुराणअवगाहू तिहिवसहेतुज
तनवहुकरही जोगसाधनाकरिपचमरही श्रीगुरूचरणसरननहिगहिऊ करिउपा
यअतिवेहसुलहिऊ सहितवेदवहुव्यसनकठोरा औसोजोभवसागरघोरा नामहिसेतन
करहिनिवासू नहिसेओगुरूपदजिनआसू वहिवोहितचलुसिंधुमझारा वनिकमहडम।
तिमंदगवारा करनधाररवीन्योनहिसंगा कष्टोपोतदुषलहोअभंगा गयोहव्यादुषलहो
नघोरा जिमिवहवनिकमंदमतिघोरा तिमिगुरूचरणविनुकोई करेउपायविफलसव
सोई इहतेगुरूपदरजसिरधारी करेकरमफलपावसुषारी हेहरितुमगुरूरूपगोसाई कमल
जवमोमनतवपदलवलाई भिटेसोषवसुषलहेअपारा जवहिकृपादृगनेकनिहारा ७७

दोहा गुरु उपदेस विचार मन नहि करि दृग विस्वास करै भजन सो सुख लहै सो रजा हि भव
पास ७८ सोरठा उभय लोक सुख त्यागि भजिय सदा राधा रवन सो हम सुकृती बडभागि इ
मि स्तुति करन न करत अवि ७९ चौपई सजन हार सुत तन धन धामा रघुपति तिमहि प्राण
सुकामा तव पद कंज सेव मनवानी तिन पद हम सब तन सम करि जानी तव पद कंज सक
ल सुख रासी नहि जाना जिनकी मति नासी रघुपति विषया रति सुख मानी सदा रमत विषयी
अघ खानी तिन कहु लेस न कछु सुख होई जह जग मेह तन भागी सोई शान चित आने रघुन
चि रूपा लिपत न कनक कुसु कुस रूपा तव चरण रवि रकिय ध्याना सजना हि कति हितन
सम जाना इहि विधि कह्यो गिरा सुत गाई सेवे गुरु पद निति चित लाई तव स्तान सो लहि अ
नपासा जिहि जाने छूटै भवपासा ताहि ज्ञान दृढ करि वै हेतू विरति गहै सो बुद्धि निकेतू
महत संग करवे के काजा वसे संत जिहि छिबे समाजा ८० दोहा उक तलष नामु नि वडे र
हित मान मद मोहि तव पद पंकज हिय धरे सपनेहु जिन्ह हि न कोइ ८१ सोरठा पावन पद
रज तासु जो परसहि निहि अघ न से जद्यपि गुन इमि तासु न इपि पुन्य तीरथ वसे ८२
चोपई करें सकल पुरुषारथ हानी गहहु पाहि जिनि इमि करि जानी हे रिन नाहि उपा
से कव हूं विगमं गुन सुख रुचि मिहि सव हु सक्त न जासु मन तव पद कंजा वसैता सुसह जे
भव गंजा सो गहा रिसु वल लेवे न भूली मान हित रण मन लारि सम तूली तुम अंतर जामी
हे सव के रे सदा नित्य सुख मग सव चेरे तुम मोके हिय वसहु सदाही पावनता किमि कह

२८९A

सकजाही जिनत्यागाग्रहसुतधनदारा संतनतनवपहनिजउरधारा जिहिजिहछेव
वसहितवसेता तेहतेंहकरिसुवासबुधिवेता तिनमुखगलितकथामृतपाना सुनोनि
रंतरक्तापानिधाना ताहिसेइसंततजगदीसा छूटेममभवसरकविईसा तबसानंद
करवेकाजा तीरथवसमुनिकरहिसमाजा तहांदैतअद्वैतविवादा करहिपरसपरसु २
भगसुनादा ८३ दोहा सोवरननतइतवेदन वहूछनकहनसुवैन समुझेतवव्यानेदृष्टांत
लहैसोनचितचैन ८४ सोरठा सततेयहजगजानु उपज्योयातेंसत्यसोऊ चामीकर
तेमानि कुंडिलकीन्योकनकसोइ ८५ चोपई जोजासोउपजैजिहिभांती तासुरूपवहहै
सहजसुहाती तदपिभईभेदपरतीती कुंडलकंचनद्वैयहरीती तहांकहतमैसोनहिक
हहू अवरभांतसमझोचितगहहू कुंडलमात्रनामगुमत्पागी कंचनगहहुजानिमनपा
गी उपजैवस्तुजाहिसोजैसे तासुरूपहैलघुवहतैसे तहांकहतऐसेकिमिकहहू व
चनहमारसत्यकरिगहहू जोजासोउपजैकछुकवहू तासुरूपवहलहैनसवहू लखि
यतद्वैविपरीतसुभाये पितापुत्रनहिसवइकदाये पितागौरसुतस्यामलपाई किमि
तुमकहतएकतिहिभाई तहांकहितेमैइमिनहिगावा पितापुत्रजिमितुमठहरावा
उपादानकारणमेंभाखा तुमनिमित्तकारणगहिराखा तहांकहिनसमुझोतुमऐसे जि
हिविधितुमभाषामृषजैसे उपादानकारनतुमकेहहू तोममवचनहितूकरिगहहू
८६ दोहा उपादानजिमिजेवरी अहिकहमईप्रमानु भयोनविषधरसत्यवहमिथ्याअ

श्री·भा·
६२५०
290

तनिदान ८७ सोरठा तहां कहत पुनि बैन कहौ वचन तुम जुक्ति करि अपर सुनहु सुखपये
न गहो नाहि तुम चित्त रे ८८ चौपई उपादान गुन मात्र न तास्त भयो ब्याल कह मोहि वि
लास अहै मोहि गुन जे कोउ प्रानी गुन ह्के तस रूप सत्य उन मानी ताहि कहत उत्तर समुझा
ई सोइ वररीति इहां चलि आई अहै अविद्या गुन जे कोई उपादान सत ताकह होई त
वसि ह्रौत सत्य नहि आही व्यर्थ प्रलाप करहु चित चाही पुनि बोला ऐसे जनि होऊ
अपर भांत सत साधो सोऊ सुकति माहि जिमि रजत प्रतीती जानहु जगत सत्य इह रीती
महा कहत ऐसे किमि होई तुम रकहे सत्य बहु जोई है सब अर्थ क्रिया व्यहारू सो विक
लप सत भ्रम संसारू खोटो द्रव्य बनाइ सुनी को कारज करत सिद्धि निज ही को है अस
त्य वह द्रव्य न सांचा सत प्रतीत करि तिहि मन राचा तैसे असत आहि तिहू काला सत
सो लगे सकल भ्रम जाला पुनि बोला प्रतिवादी ऐसे कहहु असत होइ यह कैसे ८९
दोहा सुकति मो जन्म महो नन तव नवरो व्यसन आहि व्योम सुमन इव असत किमि कहो
सत चित चाहि ९० सोरठा असत विश्व यह आहि जैसे ग्रंथ परंपरा देखौ किन हू नाहि
कहत ब्याल के हम रूप सम ९१ चौपई पुनि बोला प्रतिपक्षी ऐसे वेद वचन किमि क
हे अनैसे सदा करम फल सत्य लघाई असत नाहि तुम कैसे गाई इमि कहत होमो
नगहि नव ही उत्तर रेन उनहि ने न वही वेद गिरा यह बहुत प्रकारा मोह करवानी अमि
त न पारा कर्म विधि जे हि रुचि अति भारी महा मंद अति सुमन न धारी तिन कहु मोह करै

290A

वह वचना अपरनकह वहरचैन रचना करम जनित जे लोकु अनेका है नरवर क
ल बहु विवेका करम विषे महा जड जे ऊ भ्रमत रहैं सेतन नरत ऊ तीनकाल जग सं
तन आही जुकति अनेक कहो चित चाही एकसत्य तुम है भगवंता तुम ते जगत होत पु
नि अंता सत्य नहीं जको आहि जैसो तिमि यह जगत सत को ऐसो कूटनक जिमि का
रज कारी है परं तुनहि सत्य विचारी सत्य एक तुम सत गोसाई परमानंद हो निसु षदाई
वंहोत वपरवार हिवारा मेटिय भव दुष मोर अपारा ८२ दोहा वरन्यो जगतन सत्य य
ह तीनकाल महि कोऊ फिर वरनत यह सत्य नहि प्रलय परीनकरि सोऊ ८३ चौपई
यह जग पहिले हुतो न कबहू रचो महि जबतुम यह सब हू पुनि यह प्रलय भये के।
पाछे रहै न जगत यह दुह गआछे वीच लषिय यह जग अति काचो तव सत्ता ते लग जनु
साचो जिमि कंचन मह वस्तु अनेका है परं तु वह वस्तु सु एका कुंडल घट पट सत्य न
कबहू मह अरूकन कसत्य लखत वहू महत अहंकत आदि विकारा नहि येस
त्य कबहु निरधारा जो तुम जगत सत्य नहि माना मिथ्या करि तुम सकल बिषाना
जो वे तत्य सुद्ध सब काला नहि संबंध लेस अग जाला तो किमि संस्र्तदुष सह भारा
मोहि द्रोह किमि गहे विकारा महा कहत थे सी है वाता सुन हु चात है हि सब हाना।
जीव अनादि काल को जानू गहो अविद्या करि अभिमानू तन इन्द्री सियो सुष मा।
नी ताकहि आतम करि इने गानी नाम हन नम मम है गोआप सेवत विषया करत

श्री॰भा॰ ८२८२ २९१

प्रलाप॥ भयो भाग्य हत सुधि सब भूली जग भट के पह सह सम तूली ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ रहै ग्रजा
न हि निकट तब तुम सब तेच भगवंत ग्रहै पास मम इमि कहो सुनि ये ता सु ग्रनेन ॥ ८५ ॥ चोपई ॥
जिमि यह प्रभु जग के सुखीन न नमें ग्ररूप ध्यान रहित उवन मे नहिं गुन बुधि को चुरी मा
ही ॥ ग्रहि ग्रपुने मन ग्रानन नाही ॥ तिमि तब निकट ग्रज्ञा गुन हीनी परी रहो सो का
म विहीनी ॥ विरह गार हि तन मे सब तन माही ॥ तरु ते भिन्न पर मति हि नाही ॥ तब ग्रानंद सक
ति लव लेसा ॥ ग्रखिल भुवन ग्रानंद प्रवेसा ॥ वंदवं हनों के सुर धेनू ॥ एक ग्रजान के का
ति हि लेनू ॥ षड ग्रैस्वर जु कल तुम साईं ॥ ग्रपर कुल तग्रन मारि क ग्राई ॥ करहि निरंत
र ज्ञा पद सेवा ॥ ग्रस तुम पर वन के देवा ॥ सकल वस्तु परिपूरन नाथा ॥ तुम ग्रखिलेस वेद
इमि गाथा ॥ तब ईश्वरता सोई प्रभु पस्तु हाव न माया न रीना ॥ चमन मावन ॥ काल स्वभाव
भाव सो इ नाना ॥ ग्रपर गुन सो इ कर्दा ॥ छ ॥ गति गाना ॥ तो रे तान ग्राइ मम सीसी महाभारय
दितमिर सा ॥ ग्रार न गहो ग्रातुर ह्वै तोरी ॥ मेरहु विपन जान प्रभु मोरी ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ साधन
कहे ग्रनेक विधि तिन्हि मार्ग नेकाइ ॥ भजे इस पद कमल जुग निश्चै मुक्ति सु होइ ॥ ८७ ॥
सोरठा ॥ जो नर तन भव लपाइ ॥ भजे न हरि के सारि पद ॥ ते भव लोह सदाइ ॥ सदा नाहि जम
सरन ते इ ॥ ८८ ॥ चोपई ॥ इहि विधि पीछे ग्रस्तवन कीना ॥ ग्रीर भांति ग्रस्तुति कहन प्रवीना ॥
जो निज राज सु नारिक सगा ॥ बाहर विषय के भोग प्रसंगा ॥ चलेक धुक भगवत पथ
माही ॥ ग्रंतर काम तहा मिन नाही ॥ बानो सो जे नर पसुमूढा ॥ तिहि विधि भय मोह ग्रा

291 A

रूढा तिनक हम भगवत पर अति दूरी यह जग महसुष लहै न भूरी केवल परहि कुजै निनि
रंतर जेइहि विध हरिभजन पद तेर सो सुनि वरनत है प्रभु आगे जन्म न हि हारि पद अनुरा
गे हे हरि जेत जिके गह हारा जतो कहाइ करत से चारा ह्रह म हकाम जटाइ के भारी तासु मू
ल जिनानहि निउपारी तिनके हृदय वसत तुम स्वामी तुमनि मिलहु तिहि अंतरजामी
जिमि मणि के ढ धरै को ऊ प्रानी कहि न फिरै मम मणि भई हानी तैसेहु हगति तुम अनुकूलो
तुमहि न पावै फिरनरभूलो इतनो मात्र भूलनहि नास अपर होय इहि कर उप्रकास तेई
छेह तिहि अपर होय प्रकास करवर नौ सुनिये विनलाइ कै अनुन प महा सट कपट जोगी
उभय सुषहन भाइ के तुम्हि ग्र सत कालग्र व्यालग्र घनहि वचै कोटि उपाइ के अरुलो
करंजन करत निसिदिन सहित कलस अघाइ के १० कष्टभोग अपरविभूत न हि कारि स
के प्रगट विलासनू इहि भांत तेइ हि लोक सुष सवग यो व्यारु घहु लास नू पार लोक के
सुष गयो प्रभु जव मिले ऊन वनहि पोय जू निज धर्म त्यागि सुहे षिवहु विध वस्यो जम
पुर जाइ नू १०१ दोहा हे भगु क्ति संन्यास गहि वंध्या वहु जन जानि रह्यो रिवसनि समोह
वस भोग सोच अघ षानि १०२ सोरठा प्रभु अस्मो हत मंद लह्यो मान नर मूढ तै वह ढ्योग्य
धिक मरवेर नाय पाहि मै सरन मम १०३ चौपई जो संन्यास ग्रहण करि कोई दोषता हि के
छु परसन होई निज घर वसे संचित करि भोगा पुन्य पाइ गति होइ निरोगा कैसे गयो उभ
य सुषनास इमि जो को ऊ कह वचन विलास तहा कहत स्तुति हरि सन गाई हे भगवे

श्री·भा·
६२८२
२९९

तेऽस्रनेनृगोसाई जिनकहृतवसरूपकोग्याना तिनकहस्तुयद्यएकसमाना सुभअरुअ
सुभकर्मफलहाना तुमअखिलेससकलजनत्राना भगवतेग्यानवानजेकोई तिनकहसुय
दुखअग्रावनजोई तासुनतेस्मधानकराही जगसुखतिहिसवनुछलयाही विधिनिषेधव
ब्पणवानी सोनहिउनाहिकछूमनग्रानी तनअभिमानुजासुकेग्राही ताप्रतिवहसवव
वनसुहाही गनिअभिमानभयोजेमवही तवसरूपम्मानातिनितवही अत्रदिनसवए
कयागुलमाना फिरनवन्दपलताकियवाना २४ दोहा तिनकहतुमअपवरगप्रभदेत
विनाहीचाहि सप्रदाहसुभरीतकरिमनन नसदत्प्रवगाहि २५ सोरठा मानीहेजेकोइ
तवपदकिंकरग्रासजिह उभयएकसमसोइ दोऊभयेग्रहंडप्रभ २६ जोगछेमदकरमू
ढ वानहिनिजतननचितेरे भयोमोहिअरूढ तिनकोइतिउतसुखनही २७ चौपई ही
जैतलसानप्रभुमोही अपरवातजांचौप्रभतोही देहुअनन्यभक्तिनिजपावन संतति
दजसवमोहितसावन इमिकहिश्रुतिपुनिअपरप्रकारा प्रभुमहिमाकहुकरतअपा
राहेभगवंतअनंतकपाला तवमहिमाअतिपरमविसाला महीरसातलनाकनिवासी
नाहिकोउअंतलहेअविनासी इनकोरहोजानिहोवाना नहितुमनिजविभूतिकेग्याना
जोमनिजंविभूतनहिजाना तोसर्वत्रनहोइसमाना जोकदाचिअसेप्रभुकहहू तौम
नवचनक्रमवगाहेरहहू देहअनेकनकअमितविभूती अमितनामअरुसवकरतूती स
सवधानजानानहिजिनहो कहाविदुषतोपरगोतिनहीं नमकोसुमनमिलानहिजा

292 A

ही। नौकछुवलघटिगए उनताही। तुमसर्वसहासवकाला। अमितकोटिब्रह्मांडविसाला
१०८ दोहा तुमरेमध्यब्रह्मांडावालनिधिअंडकटाहअनेक वसतआवरणसतजुतहसहस
गुणअविवेक १०९ सोरठा कालचक्रकरिहेतु भ्रमतएकहीवारबहु जिमिरजव्योममनि
केतुपवनहेतुकरिकैफिरै ११० चौपाई ऐसेसुनतुमकहसवकाला गावहिजसप्रभुप
रमविसाला तातपरजवरनहिवहुरीती कहनसकैसघ्यानप्रतीती सगुणरूपतवगु
णनहिथोरा कहिकोसकैऔरनहिछोरा। निरगुणगोचरहूनहिहोई कोकहिसकैल
खैनहिकोई तातपरजकिमिवेदबखानै निजलोचनगोचरनहिजानै इमिसकाकरि
पूछैकोई नाहिकहतउत्तरजियजोई विरतवस्तुनहिअवहितमाही धरमवस्तुनाहिअ
धरमवाही। थूलवस्तुजोअनहूतताही अनुनहिथूलकालतिहुमाही इहिविधकहल
वणकरिकै तत्वमसीवानीसुनिधरिकै सत्पकवहूस्रुतिगिरानभाषी अविधिनिषेर
सिधिकरसाषी सकलसमापतिहोइतवमाही। जहनिषेधतहसिधिलहाही। सिधिवि
नानहिहोइनिषेधा अवधिभूतितुमहोतिहुंलोकाला इमितवस्तुतगणकहेबिसाला
१११ छंद स्रुतिकहैगुणगणअमितप्रभुसकलसरनहिजानही। तिनकीकेहाकहियेज वे
थाजेसरातवगुणगानही। उनहीकहीहरिअमितमहिमापानकिनहूनहिलयौ तुमहु
नजानतअतिअपनीसकलमुनिहमहूकहो ११२ दोहा इहिविधसबकेलसुदेवगणता
नपरिजकरिनाथ परिविसानतुमरेविषैहोनसत्यपहगाथ ११३ सोरठा हेहरितवपर

श्री भा
२२९३
293

केहि भजन माया भव निधन से संचित अघ जे पुंज नाम लेत गल जात सब ११४ चौपई बो
ले श्रीपति कृपानिधाना सुनहु बिरंच सुजन सुभगाना केहि सुजन सुनि गिरा सुहावन
ग्यानमय बिषय वचन अति पावन तब हि सनेह न कहत समानी पूछ्यो सब मिलि अति सु
यमानी ग्यान मत तब भली बिधि जाना रहत सदा मन ब्रह्म समाना तुम ते बड़े योग ब्रत धा
री ध्यान ज्ञान जग के हित कारी वेद पुराण सास्त्र सब सोधी तात पर जस सेवक सो प्रबो।
धी केहि सुजन तुम हृदय हृदाता अधा गुन धारहु है नाना जप्य काम बिचिरहु भू माही
कामादिक भय तुम करू नाही हे भूपति सुनि भगवन वचना सादर मुनि निज हिय धरवना
कृत्य कृत्य मान्यो मन आपू जान्यो ब्रह्म सरूप प्रतापू महावीर ब्रत हिय हरषाई बोल्यो
वचन सजन सुखदाई नमो नमो जय जय भगवंता जय निःकाम जय जय तिश्वनेता
अमल सुजस जय जय गिरिधारी जन हित हेतु भयो कंसारी बार बार कैहै पद तोरा स
रकाम निरछय ब्रत मोरा इमि कहि मुनि हरि पद धरि सीसा चल्यो तहा ते है अवनीसा
तप तहा तब आयो मम पितु सरन आश्रम परम पुनीत सादर सहित सनेह उन आसन दि
पशुभरीत ११५ चौपई बैठि सु आसन अति सुखमानी बरन्यो यह सब कथा पाछे यानी जोहरि
मृग्यते मुनि उनगावा हेतव सोमे तुम महि सुनावा अनिरेस जो बुल्ल कहावा तामहि मुनि
मि मोचर गावा ऐसे तुम पूछ्यो जो मोही सो पद मोतिन कहा मैं तोही तात परम करि सुति
कहत बानी तहि सब ज्ञान बतावे आनी सब कल्यो बध्य सुनि को सारा नाहि फेर अब करि नि

रधारा कहहुनभूपपतिश्रीमुनिराई कहिसंक्षेपरीतिसमुझाई अगजगजीवजहांलगि
जेते हरिमायासोवंधितनतेते तिनकेपुरुषारथकेहेतू सोभवविधितिलयकारकसेतू हरि
निमित्तकारणयहरीती इहिविधकरुविचारगहिप्रीती आदिमध्यअरुनिधनमझारा
वरतेजोसववठोमसुधारा उपारानहरि इहिविधिसोई जानहुतुमकोअपरनहोई प्रक
तपुरुषकारनजगकेरो सोनिमित्तकारणहोउहेरो ११७ दोहा इमिसंसयकरिवचना
कोऊ जोभाषैसलनभाय प्रकृतपुरुषकोमूलहरि नाहिकहतसमुझाइ ११८ चौपई जो
अव्यक्तजीवकोईसा रहैसंगअतिदूरनदीसा जीवभोगहितरचवहुधामा वसैसंगति
हिगतसवकामा नाहिभोगरैपुरकहुपालहि सदाकालनिसिदिननहिछाडहि जेकोऊ
भजहिजानिजगनाथा करैप्रणामजोरिजुगहाथा तासुअविद्यासवनसजाई सहसा
पावनभासवदाई तोहरितेयहजगजेप्रानी भिन्ननअहैएकहोउजानी हरितेहैसंवं
धकहासो सोसमुझाइकहोतुमसोसो इमिसंसयकरिपूछेकोई ताहितेउत्तरजियजो
ई जिमिकोऊनरसोवैसुखमानी अपरनाहिरैयेपहिचानी सोनिजतनदेखैनहितैसें
जोवह अपरलवैसतजैसें जीवनमुक्तिभयेजेकोई अपरमनुष्यजहांलगिजोई ति
नकहुदेहवेनसवरेषै वेकवहूकाहूनहिपेषै ऐसेसिसवजगमहसवठाऊं हरिसवा
लविनिहिलंषैनकाऊ ताप्रभुकोकरिनितप्रतिध्याना तवभयहरणहारजगजाना ऊ
हरिअच्युतअनंतभगवाना मायातनिकल्याननिधाना ११९ दोहा सवश्रुतिगणम

श्री भा
२२८५
२९५

लि रीवकरिनीराजिनपदकंज वंदौ श्रीपतिके चरन हरनमहाअघपुंज १२० सोरठा
निजभक्तनकहनाथ भोगजोगअपवर्गकहँ नरकहुकरतसनाथ सरनागतिकेहै
नही १२१ दोहा इहुदेषु वेरदोहाकहे छंदकहेसुभचार गुनशिवलोचनसोरठा व
रनोविमिविचारि १२२ इतिश्री भागवतेमहापुराणेद्वादशमस्कंधे भाषाविवृते
राय्यसन्नारदसंवादेसपनासीतितमोध्यायः ८७ दोहा अवअसीनअरुआठवोअ
ध्यायअनूप विस्नुभक्तिअपवरगलहि प्रभुसमसुंदररूप १ अपरदेवकेभ
क्तिजेतिनकहनहैविभूत इननीकथावषानिहे बहुविधिशिवकरतूत २ चोपई
सुभाग्यक विलेविनाश्रमकहिमुनिनायक सोमुनिपुनि वोलाभूपालू हेमुनितुम
अतिदीनदयालू इकवैमेइकवातगोसाई संकाइवकछुमोमनआई देवअसुरनर
किन्नरकोऊ भजेअपासि सिवकहजवजोऊ तेधनवंतभोगजुतहोही सुनदारापर
संसयमनभारी उभयविरुद्धसोलगतिप्यारी मुनिमहीपवानीमुनिग्यानी कह
अहंकारभयभाइहिभोती मनइंद्रीअरुभूततुहाती इहिविधयोइसमथोविकारा
इंद्रिनकेसुरविविधिप्रकारा जोउपाधिजुतभजेजुजेसे लहविभूतवांछितमनतैसे।

294 A

से ३ दोहा सकलनियंतागुणरहित पुरुषप्रकृतकरिईस सबकोसाषीकृपालप्रभु।
सोइकारणजगदीस ४ सोरठा नाहिभजैजेकोइ अवसहोइसोगुणरहित हरिकृपा
लजियजोइ देतनाहिनहितुछसुष ५ चौपई तवपितुपितासजनकेमाही सुन्योभा
गवतपरमउमाही पुनिमहप्रसनकीनहरिपासा सतग्रनन्पसुमतिप्रभुदासा जा
नितदासनिजअतिसुषमानी बोलेकृपासिंधुहितवानी जोंपरिमैंअतिहोऊंकृपालू
हरोंतासुउत्तमधनमालू तासुअर्थअैसेपुनिआही सुनहुलाइमनइतिचितचाही
तासुअर्थअैसेपुनिआही सुनहुलाइमनइतिचितचाही विषयभोगजोत्यागनचहै
ही विद्यामानधननिहिकछुगहही नाहिगहततेलहहिकलेसा हरोंतासुधननसेअं
देसा यहममजानिअनुग्रहभूपा अपरसुनहुएकहेतुअनूपा अपवानिजजनकी
लषिआसा देतभूतनिहिबिनहिप्रयासा विषयभोगलहहिनितदाना हरोंतासुकरि।
धनअनुमाना विरततासुहियमेउपजाई परमअनुग्रहहिनिचितआई जबधन
हीनहोइयहप्रानी नहिआदरहिस्वजनदुषमानी पुनिबहुवधुहेतुमनगुणकेक
रैसुउपमस्वमननमनुकें ६ दोहा धनकोकरिहियकामनोकरमकरतवहुभांति
उपमस्वस्तुविफलभौतवहियललैहैनसोति ७ सोरठा भईविरतिपुनिताहि तवम
मसंततसोमिल्यो कृपाकरहुमैजाहि तवचाहैसततसंगवह ८ चौपई सतचितमै
आनंदसरूपा अजअव्ययपरब्रह्मअनूपा इरारापमैंसकलप्रकारा मोहिष्ण

श्री·भा·
295

दिमनिमेरगवारा तासुतो पसुरगलजे कोई भजहिं भलीविधि सुषहित सोई राजवि
भूत पाइ अभिमानी होहिं प्रमत्त मद अग्यानी भूलि जाहिं मोहि सुधि नहिं कासू चाह
हिं नित प्रति भोग विलासू हेनूप आप अनुग्रह भारी विस्नु विरंच अपर त्रिपुरारी सह
जसाप अनुग्रह हेतऊ शिव विरंच हरि कवहु न केऊ तहं इक सुनि इतिहास पुरानू क
होतो हिं प्रति भूप सुजाना नाम वृकासुर वल अति जाही स्यो उमापति वर तिहि चा
ही देवर संकर लहेउ नु आए निकट देहु एस नव कहहु सो नाए सकुनि पुत्र वृक नाम असुरा
री चल्यो जात पथ मुनिहिं निहारी हे सुररिषि दूछौं इक वाता कहहु वुझाइ मोहि सु
षदाता तीनि देव महिं को यह काला आसुतोष सो कहिय कृपाला मुनि बोल्ले सुर
अरि प्रतिवानी आसुतोष शिव सव गुन षानी ४ दोहा ताहि नाइ भजु तुरत नेह होइ सि
द्धि नव काज अलप तोष गुन तेस हारो घतो पसुषसाज ९ सोरठा अस्तुति करी वा
नाइ वाणारसासन आसिवहु इंद्र विभव मन भाइ आसुतोष सहे संकट वहुत ११ चोपई
सुनि नारद उपदेस सुरारी भजन गयो जहं वस त्रिपुरारी निजतन काटि काटि निज
हाथा आहुत देन लाग दनु नाथा कहहिं शिव नाम मंत्र वहुवारा आहुत पावक म
हवहु डारा वासर षेप गयो षट् वीती नहिं प्रसन्न शिव कहं लषि रीती ज्ञानि सा
त वो रिव सम सुरारी तीरथ मज्जन करि व्रत धारी लै निज कर तीछन इक छूरी
करो काटि सिर धरने दूरी तव होनाहिं अनल ते आए प्रगटे शिव जहं अमित

295 A

प्रताप्तू अतिदयालकरिपकस्योनास्त अस्लेअलेवरमागहुआस्त शिवकेछुअतनासु
सवअंगा छूटिगयेजेउनकीयअंगा पुनिवोलेशिवकोमलवानी मांगहुवरजोतव
मनमानी नहिंअदेयमोरेकछुकवहू जोचाहोदेहोमेसवहू तोपमाअअरपेजोमा
ही मनवंछितफलपावेसोई तुमनिजतनजेयहवधासेतायो मोकहअतिसेकोचक
रायो २२ दोहा सुनिगिरिजापतिकेवचनवोल्योकुमतिमुरारि वरमाग्योसवजगत
कोअनहितहृदयविचारि २३ चोपई जासुजासुसिरमेकरधरऊ सहसासोजरिम
नपरिहरिऊ सुनिवानीशिवमनअकुलाने दुरमनइवमनमहपछताने एवमसुपु
निहसिकहनाथा जिमिपयदेकरउरगसनाथा महामेदसठसोअपकारी सनीहर
णकोहृदयविचारी वरकीकरोपरिछाअवहो शिवशिरधरणहाथचहतवहो देषि
तासुगतिशिवभयमानी चल्यापलाइसकलसुपिहानी जहलगिछितिसवरिसचहुं
ओरा भजेमहाभ्रमभयोनथोरा तासुनिवारणजानेनकोऊ रहेमौनगहिसुरसव
सोऊ स्वेनरीपकहुशिवनवधाये जहश्रीरमनवसतमनभाये सेतसीलजेजग
महकोई तिनकहुपरमरम्यगतिसोई जाहिपाइपुनिभवनहिपरई नामलेतअ
घलेसनरहई जानिरमापतिसवमहवाता दनुजहेतुकरिशिवअकुलाता देषि
व्यसनगिरिजापतिकेरा प्रणतारतिहारकहिमहेरा २४ दोहा तुरतभयेवटूरूपहृ
रिसुंदरस्यामसरूप धरेमेषलादंडवरअजिनकमंडलभूप २५ सोरठा महातेज

श्री भा॰
१२९६

296

घनराशि अभिवादिन करि तासु को वोलेर मा निवास साकुने यतन कुशल तव २६ चौ॰
निश्चेक छुन्न मभा अतिमारी ग्रहा दूर चलि कितपग धारी धन विश्राम करहु इह ठा
मा यहतन सब पुर या स्थ धामा तवनि श्चेक छू मन कीजे सी कहि न योग तो कहिये ते
सी निज कारन साधन के हतू कहियहि नृल विबुधि निकेतू इमि भगवंत गिरा मधु
सानी मन स्रम करहु न लाग सुख मानी जिहि विधि वर मो गा अरूपावा आइहि ते स
ब प्रभुहि सुनावा तासु वचन सुनि हरि मुसकाने इहै वचन तो किमि सकुचाने हे रनु जे
सना सुको वाना सत्य न रम जाना न हिहै ताता २ ध्यान पकरि सो सबु काला फिरे विमा
नरीत मनि वाला प्रेनत नविष धर उर माला छिनि सम ान निहि फिरे विहाला तासु वच
न महि का विस्वास जो नु मकहनि श्चे पुनि तास तो रनु जेस करो किन अवही रूढ सोच
ल विपरे सुख वही निज सिर पे निज कर तुम धरहू तपत सी न पार यगुम करहू २७ दो॰
दानवेंद्र नास मुको वचन असत जो इजाइ मारि डोरि ते नुरत नहि फिर नहिं अरु लक रा
इ २८ सोरठा अति विचि चर मनीय सुनि वानी मति भ्रम भयो प्रभु कहु यह करनीय
रनु जमूल करि सिर धरेवा २९ चोपाई सिर जरगो गिरि परयो मुरारी मान हु भरु धरि
असनि विहारी जय धुनि व्योम दसह हरि लाजी साधु साधु रविरुद्र मिवाजी सुमन
बसि नवरवन कीनी गायेसु जस अरि विन करम भीनी संकर मे दि संभु को नाथा क
हन लगे हरि सुनि गिरि नाथा यह खल अधम पाप को रासी मरयो सुनि जग अघ वे

घविलासी जेतुमात्रकोकरिअपराध लहेसुजसपुरकसुअगाध विश्वनाथपतु
सजगहितकारी तुमसोकरैद्रोहि कुविचारी तासुद्रोहकहकिमिकल्याना अमिक
हिगेप्रभुकृपानिधाना हरिचरित्रयहपरमपुनीता सकलितासुवहुकहिश्रुतिगी
ता गिरिजापतिसंकरभयहारी शरणागतिपालकव्रतधारी तासुचरनगावैमन
लाई सुनैस्रवणअतिसेसुषपाई सेसलतिकटिअरुभयपकटिजाई रोगदोषसववेग
नसाई २० दोहा कृष्णकथाकलिकालमहिसवसाधनकोमूल विनुप्रियाससव
सुषलहेंअंतमिटैभवभवमूल २१ सोरठा कहेदोहरासात पांचसोरठासुभगवर
अघसववेगिनसात स्रवणसुनततेरमात्रके २२ इतिश्री भागवतेमहापुराणे द
शमस्कंधे भाषानिवेद्धे रुद्रमोक्षनेनामअष्टासीतितमोध्यायः ८८ दोहा अतसीअ
धिकनवकोसुभगयहअध्यायपुनीत तीनिदेवमहिकोवडो रिषिविचारयहरीत
१ भृगुकहअरपठाइहै सीलसुभावनिहारि सोसवतिनहिवरनिहै हरिउनकरथ
प्रकार २ चौपई मुनिवोलेसुनिभूपसुजाना कहोंतोहि इतिहासपुराना एकसमे
विधिसुतातीरवर वैठेरिषिमुनितेहसमाजकर कथाप्रसंगहोतहरुचिवर वीच
वीचकोऊकरततरकवर यथअधीसमहकहहुकवनवड निजनिजमतिकोऊक
हहिओरवड तासुपरिक्षालेनचाहिचित भृगुहिपठायोदेखिजाइतित तासुपठाऊ
भृगुचलगइऊ निजपितुसभासंकनहिगयऊ वेदनविनहिनअसुनितकीने सत्य

श्री भा.
६२८७
297

परीछा हित नित हीने बैठि गयो सो सभा मझारी ३ चितनय विधि को हम पारा पाव
क सरस क्रोध उर छायो मान हु सुनक हृच हग जरायो पुनि निज मन विचार करि आए
उपसम कियो क्रोध परिताप जानि बाल निज चुप हैं रहि ऊ नहि तिहि सनक धूमु षते
कहि ऊ जिमि पावक जल आवत रहे घी सो न गहे सु नहि गुरु दियपषी ४ सोरठा तिहि ते
उठि हिमिगिरि गए ऊ भृगु प्रति चतुर प्रवीन तरुं गिरी सम मुनि गन सहित सुभ आसन
आसीन ५ सोरठा भृगु आवत षिव देषि उठे हु रख तिहि मिलन हित मन करि तरक
बिसेष श्रुति पथ त्यागि हि नहि मिल्यो ६ चोपई बैठ गयो यह हृदय विचारू हे श्रु
ति पथ रद गति आचारु भयो क्रोध हिय तब उपकेनू भृगु हिय को सबल षिषि वहेनू
लेत्रि सूल तिहि मारन धाये पर गत उमा बहुत समुझाये भृगु उर गे बैकुंठ तुरंता जंह
बसु देव रव भगवंता छिप उत सेग धरे प्रभु सीसा सोवत है दिई सन के ईसा उर मह
हन्यो जाइ भृगु लाता जाग परे प्रभु निज जन त्राता त्यागि सेज निज रमा समेता जोरि
पानि जुग कृपा निकेता मुनि कह किय प्रणाम पर गहि के बोले गिरा पुनीत निहसि के
हे भृगु रव क पावइ कीनी आइ अचानक दरसन दीनी सादर सुभग सु आसन दीना
छमहु नि वैरिय परम प्रवीना तव आगमन अचानक भय ऊ सो हिन सुधि रंचक क
छुरहि ऊ छमा करव मम चूक गोसाईं अति कोमल पर तव द्विजराई आसि कहत च
रन पसीन लागे निजकरि गहि अति से अनुरागे ७ दोहा पावन कीजिय लोक म

297 A

ममोहिसहितमहिदेव निजपादोदकरेहु अवसकतीरथजनुसेव ८ चौपई तवपदद
तउरपावनमोरा वसहिरमाथिरुलाभनघोरा भयोभूतिभाजनमैआजू कृपाकरीतुम
हेद्विजराजू इमिवैकुंठनाथजवभाषा गिरागहनमुनिउरधरिराषा रहेमौनतननगरइग
दमएऊ प्रभुतनचितयनयनजलभरिऊ निजअपराधदयाप्रभुकेरी कहुतविचा
रमनहिमनहेरी आयोचलिसरस्वतितीरा जहमुनिवृत्तविचारहधीरा निजकरतू
तकहीभृगुगाई सुनीसकलमुनिजनसुषपाई संसयहानिभई उरप्रीती हरिपरव
डजान्योयहरीती सोनअभयअरुग्यानविचारा धरमसहितअैस्वरजविभारा वहुगु
णजुतश्रीपतिकहजानी भजेसकलमुनिगणसुषमानी रहितदंडजेमुनिजनकोई
ममद्विगसोनअकिंचनसोई साधनकहसरन्यसोइईसा जगनायकजगपालमहीसा
सुद्धसत्वतनश्रीभगवंता भजहिविवेकीजनवुधवंता नासुअमितयहविविधिप्रका
रा गुणकृतराछसमनुजअपारा ९ दोहा जहदिसुरासुरसकलयहनामायाकृतजा
नि सुधसत्वभगवंतपदभजतहोइभवहानि १० सोरठा मुनिमकरीनिजधार नरसंस
यकेनासहित भयेसकलभवपार हरिपदभजुचितचाहिकरि ११ व्यासननयसुषके
ज नहतेप्रगटपियूषधर कथारूपसुषपुंज पानकरतभवरुजमिटै १२ चौपई हे
नृपसुनहुअपरइकुवाना कृष्णरेवगुणसवसुषदाना एकसमैकुसपुरीमझारा विप्रना
रसुतसुभगअपारा जनमतभूपरसतमरजाई विप्रउठाइवालककहुल्याई राजद्वारप

श्री·भा·
१२९८
298

रधरि दुषपाई करि विलापदरोवै अग्र कुलनाई द्विजद्वेषीसठलोलुषकामी अवबंधु
नपकुमनीवामी इनकेदोषमरेममवालू हिंसारतजहवसैभुआलू दुसरसीलदरद्रीवस
हीना कृपनकूरमनकपटमलीना तहंवसप्रजादुषीनितहोई इहिविधिद्विजवानीक
सिरोई एकवारसुनिद्विअरुचारी मस्योवालदुरैनृपद्वारी इमिकहवचनरुदनसोक
रई कोऊनहिंतासुकष्टपरिहरई इकदिनकृष्णजिष्णइकसाथा वैठेतहरोयोकहू
गाथा मरेवालनवसनयहरोनी रोवेद्विजकहवचनअनीती मुनिअर्जुनवोलेअति
मानी भूमिदेवकहवहुसनमानी अहोविप्रकिमिरोवनकरहू व्यरतइहांवसदुष्कृत
भरहू २२ छंद कनभरहूदुषविचारिविजुइनिवसकहासुषपाइस्यो हेविप्रनहिंकोऊध
नुधारीवसनतुमजिहिद्वाइहो राजन्यवंधनअहैएसवकहोकिमिगुणमाइजू मयमा
द्विजिमिमूरवमिलसवकरनकरमवनाइजू २३ किमिभयोचाहतयेसकलराजन्यवं
धुनयेअहैं धनदारपुत्रविजुकतियह भूदेवसोचननितरहे मैराषिहोतववालदिजन
वरकहनदोयहपनमहे तेभूपवेषवनाइजीवतजोचिकाजिमिनरचवहैं २४ दोहा जो
नराषिहोतवतनयसुनहुप्रतिज्ञामोरि मोंतनत्यागौंअनलमहलगेनरचकयोर २५
सोरठा सुनिअर्जुनकेवैन वोल्योद्विजवरदामनिहू हानननहीचिंतचेन सुनेवाततवव
दनकी २६ चौपई हरिहलिधरप्रद्युमनसमेता वर्दे धनरधरबुधिनिकेता नहिसति
भरअनिरुद्धहिलायक राषानदिनिनवालसुभायक जेजगरीससकलजनमाना

नहि राष्यो मम सुत हे ताना सो तुम राषन कहि विधि कहहू तुम बालीस व पाहइ गहहू
विप्र वचन सुनि अर्जुन बोला हे द्विजवर मम वचन अडोला हरि हलधर सम मोहि न
जानू कृष्ण सम सु अन सम जनु अनुमानू मे अरजुन गांडीव धनु जासू शिव नीलकंठ वल जे
गन प्रकासू मृत्यु जीत रण नव सुन आनी हे ऊ विप्र तो कहु सन मानी सुनि अर्जुन के वच
न अनूपा द्विज निज गेह गयो सुषरूपा अर्जुन वर्ल्हे यन को चाहू भयो प्रसूत काल ज
व ताहू गयो सो द्विजवर अर्जुन पासा पाहि पाहि मम सुत जम त्रासा १७ तेहा सुनि वा
नी भूदेव की अति आतुर निहि काला अर्जुन सुचि जल परस कै शिवहि वंदन रपाला १८
सोरठा विप्र मिरा कहु त्यागि कृष्ण अविसा रोष बहु केवल शिव अनुरागि स्तुती ग्रह रो
कित भयो १९ चौपई गांडीव धनुक धारि बहु बानी अस्त्र शस्त्र बहु जतन विधाना ग्रध
ऊरध हि सविदिस समेता शर पंजर किय बुधि निकेता बालक जनम भयो द्विज गेहा
भयो अदरस नर हीन देहा रोइ उठी द्विज नारि दुष्यारी बहु विलाप कर करुना भारी कृष्ण
समीप धनंजय बैठो मानी महा गरव भर ऐंठो नह भूदेव गयो दुष भीना देषि धनंज
य परम मलीना कहन लाग द्विज वचन कठोरी हे बहु सकल मूढ ता मोरी महा नि पुंस
क अरु बाचाली ता सु वचन सांची करि पाली राम कृष्ण अनुरुद्ध समेता अरु प्रद्युम
न रथी रण जेता इन रक्षा जिन की नहि कीनी अपर राषि को सक मति हीनी धिग अर्जु
न धिग पौरष तोरा मृषा वचन कहि रहु मन मोरा निज मुष ते निज कीरति गाई धिग

श्री·भा·
२४५
299

धिग मरे खकलानन आई धिग गांडिव धनुक मम बाना। पुनि कर जो नहि पालनि राना
२० दोहा देवनास जाकरि कियो ताहि अग्नि चहम्मद्ध निज पौरष करि मेरमति महा
मोहि अरु ठु २१ सोरठा मुनि द्विज के डमि बेन अर्जुन रहयो सुमौन गहि करि धीरजन
हिवेन गए उनु रतन मरान पुर २२ चौपई तहां न पायो विप्र कुमारा नोक एहि चलिग
एउ सुखारा पुनि कसा नु नैरि तिहि रिसि सोधा पुनि गो वरुण पुरी अति जोधा गयो रसा
तल सो अकुलाई तहां न द्विज सुत परयो लखाई तब इति आयो बालन पावा महारोग ता
के उर छावा अग्नि प्रवेस करो मन लाई भई प्रतिज्ञा सत्य न भाई सुनि के कृष्ण देव न
हि आई कह्यो निवारनि तिहि समुझाई विप्रसु अन तो हि देउं दिखाई अमल सुजस
तव रह जग छाई तन प्रहार करि सि जनि आजू दुरलन रतन नर राज समाजू इमि प्रबोध
तिहि लेनि ज सगा साज्योर थ तिहि वेग अभंगा चले प्रतीची रिस जदुनाथा हीन बंध
जन करन सनाथा सपन सिंधु अरु दीप सु साता सात महा गिरि नदि जन ग्याता लोका
लोक गयौ रथ पारा आयो तम अति दुस्तर भारा २३ दोहा देखि अस्व गति ईस हरि अ
खिलेस्वर भगवंत आयुस दीन्ह कृकचक्र नुमा सुतेज अनंत आसेन २४ चौपई सहस्र सूरस
म तेज प्रकासा गहन घोर तम दारन आसा आगे चल्यो तेज जिन्हि भरी चल्यो मनो जव
गति अति हरी जिमि श्रीराम बाण अरि पासा जाइ सघी घुनि हि करत विनासा जिमि यह
चक्र चलत तम माही तिहि सम अपर तेज कोउ नाही आगे चल्यो चक्र सुख पाई तिहि

299 A

अनुगामिनि रघुपतु रग बलाई आस पास तम घोर अपारा उतनो द्वारमा च अनुहारा
देखि सुनाम तेज नहि थोरा मूंद लीन अर्जुनु द्रिग कोरा आगे महा जला सय घोरा महाप
रंग और नहि थोरा ता जल मह रथ कर्यो प्रवेसा आगे भवन लषा सुभ रेसा अति उत्तम
मनि षंभ अनेका किमि बरनै रसना जिहि एका तहं अनंत अहि राज अनूपा सहससी
स वपु सुभग सरूपा सुगा सहस्र अति उग्र सुलोचन वपु सोभा हिमगिरि दुति मोचन
नील कंठ रसना अति स्यामा तन अभिराम सकल सुष धामा ॥ दोहा ॥ सो अनंत वपु सु
षद अनि तिहि आसन आसीन देष्यो भूमा पुरुष वर होऊ जन परम प्रवीन ॥ चौपई
मेघ स्याम दुति सुभग सुअंगा पीत वाम दुति दामिनि भंगा वदन प्रसन्न सुषद सब काहू
निरषत होइ हरष चित चाहू तरुन अरुन जलरुह सम लोचन चितवननि जनने
सोच विमोचन सुभग किरीट महा मन लागे कुंडिल छवि जन मन अनुरागे सौरभ
स्याम सचिक्कन केसा लसन वदन परि सुभग सुदेसा बहु विसाल अष्ट भुज कारी वें
ठ चारु मनि मुनि मन हारी उर विसाल कमला कर वासर वनमाला न हे लसन सुरासर
नंद सुनंद आदि निज किंकर चक्र आदि आयुध मय रतिधर श्रिया पुष्टि आदि कनेम
नी सेवहि लषन न धर करि प्रीनी देषि अषिलपति कहे सिर नाये क्रुस्न जिस्न मिल
होऊ सुष पाये अर्जुन ना सुदरस कहि भूपा चक्र अनत विन लषि चरन अनूपा जोरि या
न ठाठु न हहे होऊ कहन न वेचन कहा कछू कोऊ भूमा पुरुष तिहि सब कहवानी दासन

श्री·भा·
६०·३००

300

देखप्रभुहि भगवानी २७ दोहा विप्रधेनुअनइनिग्रानियोनवरेषनकेहेतु धरि अवतार
भूमकलागेनुमपालनसेतु २८ चौपाई अवनिभारभरइ घकरि दूरी असुरमारिजनसु
खदेहुभूरी अवममनिकरहीप्रभुचलिआवहु जनिविलंबरंकु करतुमलावहु तुमसोऊ हरण
कामसुभायक नरनारायणहि परसुबरायक धरमकर्मआचरणतिहारे जनसंग्रहहि
तमुनि नविचारे मुनिवाणीमममाप्रभकेरी सेऊजनरहेबरनद्विगहेरी पुनिवेरनकरि
वचनउचारा अवशिवचननतवयह उरधारा लेहिजेसुअनसयोगआआए फिरेतहा
नेनिरखप्रनाए आयेनिजपुरहरषसमेता दियोवानतिहिकपानिकेता विस्नुधामले
खिअनुंनुभूपा विसमयमनिगुन नरतेअनूपा जहालगिपारघगुलनिपुनाई नरमह
रविवसुभगवदाई सोअनुकेपासवहारिकेरी निजहियानि अैकरयोनिवेरी इहिविध
विविधिप्रकारअनेका करमचरिजेएकनेएका विवयमोगकीनेविधिनाना विधिव
तमषकरिदेनिऊराना प्रभ्माकामनासबविधिपूरी द्विजगृहभरिऊरानहेभूरी जे
सकालपाइसुरनायक पालहिप्रजासवहिसुषदायक २९ दोहा तिमिसुवरीनोकरा
लपहुमहजगमहसवकाहू गाइचरित्रविचित्रजन भमिकलेहविनुचाहि ३० सोरठा
मारिअसुरअनेक भारिउतारयोअवनिको हरयोसबजनसोनिवेक वचनरसासवधा
मबहू ३१ धर्मप्रचुरकिनाथ अनावासयहजगतमह परमसुअननरनाय पा
योजनयहअवनिपति ३२ दोहा यामितिगसेहाकहे छेदयुगमरसपानि कहसोरठा

300A

विमलवसुसुनतहोइअघहानि ॥ ३३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबंधे
द्विजकुमारानयनं नाम एकोननवतितमोध्यायः ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ यह अध्याय जु अंतको ।
नामहि कथारसाल ॥ ब्रह्मचरित्र समाप्त करि कहि मुनि परम कृपाल ॥ १ ॥ चौपई ॥ हेनृपनि
जपुरवेसजदुनाथा सुवसमेतकियसवहि सनाथा सकलसंपदा जुतजदुसारे वलप्रता
पवैभवगुणभारे तियनवजोवनभातिअनूपा अंगवेसभरवित अनुरूपा निजनिजअ
टिनचढीसुकुमारी कंदुकलैलै क्रीडहि नारी मत्तमतंगवेरअतिभारे नाकरिसंकुलप
थवहुवारे सुभगअलंकृतभटहयसाजू कंचनमयरथसुभगसमाजू उपवनसुभउ
द्यानअनेका ठामठामकियचरिविवेका पुष्पित द्रुमराजीगुणभूरी वोलतविहंगभृं
गगतिरूरी योडसमसहस्रवामपतिएकू रमतसकलग्रहलयहु विवेकू उतनेरूपधा
रजदुनाथाक देतसवनसुषजोजिहिलोयक केसोसरनरमतजहहंसो फूलेकमल
कुमरवनहोसा अरुणनीलअरुपीतसुरंगा वोलेविविधविहंगकुलभृंगा अतिउज
लसुगंधसुषकारी भरेमनोहरद्विरसुभवारी तहांकरतमजनजदुराई लियेवंरतिय
गणसुषपाई ॥ दोहा ॥ कुचकुंकुमलेपेसुघरसुभगअंगसुकुमारि परिरंभनिकरितो
सुकोअरेसिकरतविहार ॥ २ ॥ सोरठा ॥ गावहिगुणगंधर्व वाजतपनवमृदंगधुनि आदर
येसुरसर्व वेदीमागधसूतगण ॥ ४ ॥ चौपई ॥ जलविहारनानाविधिकरही सींचेतिय
हरिकोसुषभरही हरितिनकोसींचेवहुभांती यछराइवयछसुहानी भीगेवसन

श्री·भा·
१३०१

301

चिवुकनकुचिरेखा अतिसोभितवयवेससुवेखा कवरीसुमनवसनछविरेही प्रतिवरलो
वाहनहुमनेही हरिहिलीचवेचलहिउमाही प्रभुनिहिलेतलाइउरमाही हरितनपरसि
वितनतनछाये अनिउनसवमुखसुभगसुहाये कृष्णकेठवरमालविराजी तियउरो
नकुंकुमकरिआजी कीड़ाअतिनिवेसमनजासू केपितकुंतलवृंदप्रभासू वारवारसी
चहिसववामा प्रतिलिचनहरिकरअभिरामा जिमिगजराजनलियेवहुकरनी इमि
रानेजदुकुलमनहरनी नटनरतकगायकजनकोई वाजेओदपनिमिलजोई कीड़ा
पटभूषणवहुमानी सकलदियोप्रभुतिनहिसुहानी सादरतियगनतियकहुहीनी
तेगमनेनिजपुररसभीनी ५ दोहा इमिविधिकरतविहारनितगनिअलीपमुषदेखि
नरमखेललनपरसकरतियमनहस्योविसेष १ सोरठा कछमबुद्धिइकजाहि रही।
धनकभरमोनगाहि सुधिनरहीकछुताहि जडवतवोलीवचनकछु २ चौपई हेनरप
नाउनवचनवखानी सोमैवरनहुसुनहुसुजानी अहोकुररिविहंगीसुनिवानी सो
वनकछुनरेवसुषसानी निद्राभंगकरसितेनासू करसिविलापमसोवसिआसू यह
अनुचितनैकरसिअनीती प्रभुहिजगावततजिमनिप्रीती अपनहिकछुतवअपरा
धहरिमहिमाअनिर्वहि अगाध कंजनयनकमलापतिताकी मंदमुसिकिचितवन बां
अतियाकी नाकरिविधिभयोचितनेतोरा जिमिनितभ्रमतिरहेचितमोरा अरेचकवा
कोनिसिआये पियअरिछतवहुवउरछाये पलकनलगेरहरननिसिकरसी अ

301 A

होकहुलैदुषवढुभरसी कियोअपरकारणडरतोरे सुनिअलिभाविचारमनमोरे हासी
होनचहसिदहिकाला अच्युतपदसेवीवनमाला निजकबरीधारिनजोचहली हमस
मानयानैदुषवहसी ८ दोहा अहोवारिनिधितूसदा घनभरिनीरनलेत आक्रोसन
संततकरहुकहोतातकिहिहेतु ९ चौपई हमहिंसरसिजनहरसातुमारी दहितेअहो
कहुअलिभारी हमसंगकियभोगविलासु अपहतकुचिकुंकुमवयनासु सोहलोध
नगतिहमइवपावा तिमितुमकहुडरवढुदुषछावा गएउकौस्तुभमनिवरतोरा कु
चकुंकुमितिमिहतभामोरा हेनिसिसअतिकसततनतोरा बईरोगउरहैनहींथोरा निज
करसोनमदटरैननोसो रहानेजनहितोहियरोसो कैनिरधारनरिहसिकीबाता सुनि
भूलेनुमहंहतलाना तासुमकविनाउरव्यापी षीनवपुषविरहनपरितापी हमसिस
रिसलत्रितवमेजाना षकनवाकततनमनअकुलाना हेमलयाचलअनिलप्रतापी
घटैनतुम्हकहकामिनव्यापी विनुअपराधविननकहुप्रेरी हमहिंहेरुदइषिदुबिनय
नेरी गोपीजानिप्रियद्दिगरसवांके ताकरिहृदयघनीविधिबांके नाथरनुममनिसि
जहिंपठाई मारमहोकिमिरवानिआई १० दोहा हेजलधरश्रीमनिसदा पारवेदके
मित्र तासुकरतअवध्याननुम अहोचिरिचविचित्र ११ चौपई श्रातिउनकंठाजुतथ
कुलाई सवलहृदयअनिलदुषपाई सिसिरसिमिरगुणनासुकरारा डारतमनहुन
यनजलधारा अहोकरीतिनसोकैसोप्रीती जाननतनहिउनकीतुमरीती तासुप्रसंग

महसु घताई हमहि सरसि नव गति भइ आई हे कोकिल प्रियस्वर तिहारे जिमि श्री
कृष्ण वचन अति प्यारे ताहि सरसा मत वचन उचारी मनक जिवावत हे असुरारी
अनि रमनीय कंठ हे तोरा सुनि वानी मोहित मन मोरा अब अम्य सु कीजे कछु मोहू क
नित हूं अस प्यम कछु कहि य भारी असल छल महि हृदय विचारी वासुदेव पद पंकज घ
री ताहि नसी सथरन गुने भरी जिमि हम निज उरोज परना सु धरि न च हो स व सुघर
नि चारु नीय रह भई रसा मम रखी कहो कहा तो हि वचन विसेषी २४ दोहा जौ निश्चै म
न अ लय रहे तो दुख पे हो अब जिमि हम कहय रह क स्यभा नहि आये इति केन २५ सोरठा
हे सरित तानु मय दु न मलीनी सूखि गये हद अति से दीनी वारि पत व पति अति प्रियमा
नी मनुधरि सि सवरपे व हु पानी तुम कह सुखित कियो तिहि कान्ह अब यह द्रीय चौप॰
नि रतन वहु ग्वाना सूखि गये हृद कमल न मारे अति क स्य ह दुख अति भारे मेह पुस
कि चितवन हरि केरी तिहि पाये विनु विपति घनेरी ह स्यो गयो मन ता विनु पाये जि
मि हम दुखित भई सुन माये तिमि तो हि भयो क छु नहि थोरा जानत हौ कल पे मन मो
रा नचाह नहोइ कहे सनि हारी मन कल्पित सो नेहु विचारी विधि वाह न अप्रायो भल
कीनी दूत पठायो हरि रस भीनी कहो दूत चित ने चोर हमरे कुशल अहै गोपीजन प्या
रे कहो रह सिहम सो कछु वाता वहु दिन वीत गयो सब नाता छन मित्री जन तम लरी

३०३ A

नी कहो कवहु सुमिरै मम प्रीती १४ छं० कवहू कहो मम करत सुमिरन छली वै छ।
ल सो भरो द्रगनि कहिय जन तव सोच निसि दिन वहुत मन महु अरवरे यह हेतु द्रगनि मै ह
पठे हम कह चलिय उन सुख पाइ कै तुम पछु इन्ह नन के दूर हम किमि भजै उत चलि जा
इ कै १५ तव सेतु मन सिज हेत दुष अति कही आनंदु धाइ कै जिमि होइ च्यापम सु कै हो
सोइ नैना हिल्या ऊव लाइ कै जव चल्या दूत हि केरि लीनी कहो सुनि समुझाइ कै मम वे २४
वना करि रमी इकली रमा अति सुख पाइ कै १६ दोहा ताहि विना इकलौ हरिहि लै आ
वहु इति जाइ औ कहा विशै सौ कहो निति सेवै वह पाइ १७ सोरठा तासु त्यागि किमि हो
इ तहां सुनहु यह वचन मम सवति यगम महं सोइ सदा तहां लागी रहे १८ चौपई मधु
सम वचन मानै है नाहीं ऐसहु हरि कौ कमि विश्वासू नाहि रत पुरुनहि वचन प्रमानू रमा भ
जेइ कर करम न मानू हम किमि भजे मान नी ताही निस्ठा एक सदा है जाही रमानि रादर रस
हि वहु वारा भजै उनै पर ह उनन हमारा हम मानिन पूजे जव मानू भजै एक हरि कृपानि
धानू ऐसो भाव जिनै रनि रानी कृस्न देव महि सुभग सुहानी लगी परम गति विन हि प्र
यासा जहं गोपी सव है कियवासा कृस्न कथा गुन गनइ कवारा सुनै स्रवन तिय
जन मन धारा सुनि तमो च्रमनि हठ करि तासू तन मय यहू तेह करै निवासू जे प्रभु व
इन दिवस निसि रहि याहि वहे प्राणधन जीवन लेषहि तिन की कहा कहिये अवलान
ने कृष्ण त लाल्य सहज भई ताता प्रेम सहित निसि दिन मन रीने सव हि प्रभ पर प्रतिमन

श्री·भा·
१ ३०३

303

कीने तिनकेनपकीनेकहूगाया जिनसेयोहरिविधिजदुनाया ४९ दोहा वेदविहि
तनेधर्मवरकरतरभगवंत गृहवससवनिदियाइयोपपसुभकममलाकंत सोरठ
५० धरमअरथअरुकाम गृहवसत्रयसाधनसुभग भयोचहैनिहिकाम ताहिप्र
पमगृहवासभल ५१ चौपई ग्रहमेधनकेधर्मसुहावनि कृस्नदेवसबकियअति
पावनि तहाग्रहस्थधर्मकेमाही सोरहसहससतियानितिहिपाही सतअरुआठअ
धिकपटरानी कहीप्रथममैंतुमहिवषानी नामरुकिमिनीआदिकजेती दसदस
सुतजायेसबनेती सकलसुअनपितुसरिससुहाये सीलसुभावरूपाइकहाये॥
सुतप्रद्युमनमहागुनसागर अरुअनुरुद्धपढ़ोनयनागर दीपतमानएकभानुप्र
तापी सोवसुजससबजगरहव्यापी मधुअरुवृहतभानुवरनाम चित्रभानुवृकस
वसुषधाम पुहकरवेदवाहुगुनभारे सुतसुनिदेवसुनंदनप्यारे चित्रभानसुतस
परविरूपा कविन्यग्रोधसरूपअनूपा तामअरूएसुतअपरवषाना महरपीव
लरूवानिधाना ५२ दोहा नामकहेअनुरुद्धजेरुकमसुअननिहिजानु केसवहहसंख्या
मनोअपरनभमनिसयानु ५३ सोरठा हरिसुतमोऊरुकमिनीनंदन वडोअहेअ
रिव्यूहानिकंदन तिनकीरुक्मीसुताअनूपा व्याहीपिनाहियअनुरूपा तिनते
भोअनुरुद्धकुमारा अप्रद्युमनागवलसंततधारा तिनरुक्मीसुतसुताविवाही
वजनामउपज्योसुतताही रवोमसत्तश्रविसेषसुजाना भाप्रतिवाहुप्रत्रतिहिजा
१० नाविहिमहारवीगुणभारे अश्वसेनसुतसोअतिप्यारे नासुकहीमैंनामवषानी सुनहुभूपसंततसुषदानी १०

ना तिनके उपजासु अनसुवाहू सोतसेन तिनके नरनाहू भासतसेनसु अनवरनासू
नहि इहि कुल को अस अधिक प्रकासू नहि अब पावन वीर जघोरा सवधर्म सालहि न
हि छोरा जे जदुकुल जन मे अस कारी पुरुष प्रवीन सील व्रत धारी तिनकी संख्या नहि
करि सकरू अयुत वरष लगि जो हठि करि अरू तीनि कोटि अरु सहस अठासी सत
अधिक पंधा गुन रासी एक एक गृह वालक केरा विद्या पढहि सहासु षकेरा २४ दोहा
वाल पढावन हार की संख्या कहौ नृपाल वालक गननाको करै कहु कहि बुद्धि विसा
ल २५ सोरठा अयुत प्रयुत कुल जासु जदु माधव इन आदि है को कहि सक मति कासु
जदुकुल के वालकन पति २६ चौपई देवासुर के समर नरेसा मरे दनुज जे दारुण वेसा
सो मनुष्य तन धरि भू माही महा कूर दुष प्रद सव काही निग्रह ताहि करन के हेतू पूर
व कह्यो नृप पानि केतू देव सुर गन तुम सव इहि काला जदुकुल जनम हु रूप विसाला
ते सव जदुकुल जनमे आई एक अधिक सत कुल सुष पाई तिहि कुल प्रभु प्रमान भग
वे ता जासु सुजस स्रुति कहत अनेता प्रभु अनुकूली जे जदु माही तिहि सम अपर सु
षी जग नाही सय्या आसन अटन विहारू मज्जन भोजन आदि सुषसारू सदा एक संग
ज षपि वसही हास वास कौतक वहु लसही हरि कहि ब्रह्म निरूपन हि जाना निज संवे
धसहा उनकी मा यह ते सव वस्तुनि करहि प्रकारू कृष्ण सुजस सव तीरथ सारू कृष्ण
जन मते पूरव जानू धन्य वान रवि सरत वेषानू जदुकुल अजनिज जनमज वलीना

श्री॰भा॰
१३०४

पारसोच करि अलप जु कीना ॥ दोहा ॥ कृस्न भुजन खरिपु न्यमय सो जगती रघराज
नि हिसमन अप्रसरन जु न्पपालक हनवे स्मनिराज २८ सोरठा कृस्न सुहृद अरि होउ
लहि कृस्न सारूप लषु रमा भजे पर सोऊ जाहि भजे विधि आदि सिव २९ चौपई सोभ
गुसुना निरंतर ताही भजे मानगति हरि पर जाही जासु नाम अघ मूल विनासू स्रुति
पुरान इमि मुनिन प्रकासू जासु क्रिया निज निज स्वकरमा करहि सकल जन सजा क
रि धरमा छिति भर हरन जु केनि कवाना कृस्न रव जिहि गुन विख्याता अति दुसत
रस भाव नहि घोरा आयुध चक्र जासु अति घोरा जयति जयति जय करुनासागर
सब कहृ आश्रय जघन घनागर जय सब घटवासी जगदीसा जयति कृस्न योगिन के
ईसा वारमा चरेव कि उरगाये जदुवर सभा सब सुख छाये इछ्या माच सकहि कारना
सू कौतु निहि यह करम विलासू देभु गहेउ सम मनहारी सकल अधरम नाहि के
पिटारी नहि अधिकार विचार विचारू सब के अघ हरि करि परिहारू चर अरु अच
रनिकेय सब पावन अनि कृपाल जन सोक न सावन वृजअरु पुरविन ना येरोऊ निप
नकुर न हि निजचित मोऊ ॥ दोहा ॥ श्रीमुषवचन रिषाइ निहि मंदहास जुन आषु
त्रिव अरिनिन हि वढाइ प्रभु मेट्यो जग संताप ३१ चौपई प्रभु अनंत हरि चरित अनंता
ता सुने कोटि अघ न सहि नुरेता जो जीतन हरि धर्यो न रेसा तिहि अनुरूप करम सु
भरेसा करयो विविधि विधि लीला वहु भांती सुने नसे अघ औघ अराती अचल कृस्न पर भा॥

३०४A

त्रि अनूपा वहै विस्राम सुषद सरूपा तौ तिन कथा सुनै हरि केरी जौ चाहै मेटन अघ ढे
री श्रीमुकंद गुन कथा प्रसंगा सुनै स्रवन चित राषि अभंगा मनन करै तिहि वारंवारा
नराकार चिंतन हू जिन धारा तौ तिहि धाम जाइ सो प्रानी अभय पद्म मलहु सुष निधि षा
नी काल प्रवल तिहि सकै न पेषी सदा अभय वह लोक विसेषी जाहि लियो कोऊ चतु।
र विवेकी जे महीप उत्तम मति टेकी त्यागि राज ग्रह संपति भारी जाति गहन उर हरि हित व्र
त धारी कृस्न कथा अघ व्यूहन साई हेतु मुकति सुंदर सुषदाई नहि अचरज यह जा
नहु भूपा कृस्न कथा सुरतरु अनुरूपा ३२ छंद सुरद्रुम सरिस कोऊ कहत हरि गुन सो
न तिहि समता अहै वह देत सुरपुर कामनी महल कल्प पुसप रसजस अहै वह सुधन
र कहत देत वंछित अधम कहत वह सुषद है यह हेतु निरूपम हरि कथा जन नृपा सुनि भ
व वन दहै ३३ हरि कथा पावन भवन स्रावन सुषद सव कहत हैं सदा कोऊ सुनै अनुरा
ग सहित रु चित्त रोऊ एक से सुष लहत हैं जुत कामना विन कामना जिन सुनी ते पावन भ
ये विनु योग जग्य उपाय सिगरे त्यागि तन हरिपद गये ३४ इहि हेतु कृपा निकेतु कीमे
कथा भाषा करि कही जिन अधम जीव अनेक तारे कहत स्रुति मुनि सव सही करनू त
कूर कपूत के सी कंस कुविजा गनिका हू सो राधिका पति रीऊ न्यारी कृपाल घिसर ने
गही ३५ नव नाम पतित अनेक तारे विदित सव जग जानही गज गीध व्याधि निषा
द षल जन मनारि सुरपुर लाधही जे हून अध करे सके जड जीव सुरपुर नापही तुम।

श्री भा. द. ३०५

305

तेप्रबलनवनामजदुवरहैतनसवफलसाथही ॥ ३५ दोहा ॥ अरपारिकजेचारिफलहेत
एकहीसाथ नामतिहारेअतिप्रबल अतिगोईइमिगाथ ॥ ३७ सोरठा ॥ मेरहनजअने
क श्रमकरितुमतिहिंमतिरहई कहेवारदूएक नामहेततिहिंविमलगति ॥ ३८ दोहा ॥
धातसमुंदर दोहरासपनसोरठाजानु छंदकहेषटविमलवर यहअध्यायप्रमाण
३९ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दशमस्कंधे भाषानिबद्धेसंपारामेएकाननव
तितमोध्यायः ॥ ८९ ॥ संपूर्णमदशमभाषा ॥ लिपीतनमिश्रहरिगोविंदयेषपा
यसननगरवासीयं ॥ ॐ तत्सतब्रह्मणेनमः ॥ ॐ राधेकृष्णायनमः ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
वसुमितसंवत्सुइंदुपुनिसेवनसुभगपुनीत मासअषाढउत्रयोदसीकृष्णपक्षसुभरीत
१ तादिनयहश्रीभागवतकथासुभगचितचाहि रामकृपाभाषाकरीसुनतसुषरस
वकाहि २ अपरलेषकदोहा ॥ धर्ममुनिहवसुवेदपुनि जोइसमाससितपक्षले
षकभाषादशमकीहरिगोविंदप्रियपक्ष २

305.A

श्रीभा॰
ए ३५६
306

॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीमते रामानुजो जयति ॥ रामाय नमः ॥ सोरठा
वंदौं श्रीरघुवीर कृपासिंधु संतन सुखद ॥ प्रणतपाल रणधीर दुःखहरण हारि रमन ॥ १
दोहा ॥ हरण मोह निज दास सब श्रीगुरुपद करि ध्यान कृष्ण कृपा वरनौं विमल यथा बुद्धि क-
रि कल्यान ॥ २ ॥ सोरठा ॥ मैं मतिमंद मलीन कूर कपट कलिमल भर्यो जान्यो अतिसै दीन
गुरु कृपालि पावन कियो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ गुरुपद पंकज परसि करि सरस कृपा जग जानि
देवगिरा समुझै नहीं भाषा ही सुख मानि ॥ ४ ॥ रमारवन विधि सों कही तिन नारद कहुँ सी-
ने ॥ व्यास मुनीनि न पै कही सुक तिन पै पढ लीन ॥ ५ ॥ श्रीभागवत पयोधि वर को सकति
हि अवगाहि यातें कछु भाषा रची निज मति मुक्ति चिन चाहि ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ मुक्ति एकादस मा-
हि वरनी श्रीशुक बहुत विधि संत चाहना चाहि ताहि कृपा भाषा रच्यो ॥ ७ ॥ दोहा ॥
एकतीस अध्याय सुभ तिनको कहति विभाग प्रथम माहि जदुकुल नास कहि सुनि उप-
जे वैराग ॥ ८ ॥ चौपई ॥ निमि योगेस्वर सुभग प्रसंगा चार अध्याय वरने बहु अंगा छठये
विधि विनती प्रभु पासा सो नारद वसुदेव प्रकासा नेईस हरि उधव संवादू जाहि सुनै जग मि-
टै विषादू द्वै करि मूसल जुद्ध प्रसंगा यह एकादस को सुभ अंगा राम कृष्ण जदु सहित स-
मानू कियो मसक लसुर मेगल काजू करि निमित्त पांडव रण भारे दुष्ट भूप सिगरे तब मा-
रे छिति भार उतारि उजन वहौ निज कुल तें विसोच हिय न चहौ मौ सलगि जदुकुल है ज-
गमाहीं अनि अमका को हनै न नाहीं मैं रभुज रछक जदु अहहीं निज करि विधि अनुचित स-
न कहहौं मौरन भय अहहै असकोई जासन जदुकुल को छय होई तव प्रभ निज मन

माहि विचारा इहि विधि होइहै कुल संघारा ज्यौं बहु बांस बढै बन माही
पाय घसि जाहीं उपजै अग्नि सकल बन जारें त्यौं सब जदु जादव संघारें यह बिचार ज
गदीस बिचारा बिप्र श्राप करि कुल संघारा तब जे है नि जगुर सुष मानी यह शुभ श्राप
ने मन अनुमानी अखिल लोक सोभा के सागर अद्भुत तव प्रगटे ब्रजनागर नाच बिक
रि नर चित हरि लीना गति मति क्रिया आपु मय कीना सुंदर कीरति जग बिसतारी जाकौ
गाइ तरैं नरनारी यह ठहराइ कृपालि गोसाई निज पद गमने श्री जदुराई ४ तेहा मुनि
जदु कुल द्विज श्रापे तें सकल किये संघार पूछत नृप किहि हेतु भा भूसुर स्राप अपार ५ नो
पई बेत उ विप्र भक्त जदु सारे अति उदार सेवक सुषकारे कौन निमित्त स्राप सो कै।
सो बृध उपासिक कि मिदुय थैसो एक चित्त पारब कुल सभा भे रगुक्र कहु कौन प्रका
रा श्रीसुक कहें नरपति यह नीनो हरि इच्छा न जिओरन मानो सुंदर वपु धरि त्रिभुवन रा
ई कीन्हे कारम संत सुष दाई द्वारावती वसु जगदीसा क्रीडा करत निई सकै ईसा विषय
वस्य जन निमन मरु आनहु पूरण काम ब्रह्म तिहि जानहु सुजस बितान हेतु जदुदेवा कौ
तकु आमित कौन यह भेवा निज कुल नास करन के हेतू काल रूप तिहि नृप कुल केतू ६
दोहा करम कराबन हेतु नहि आये मुनि जन बृंद महापुन्य दायक विमल करम किये सु
षकंद ११ चौपई कलमल हरन करम सब कीना विदा किये मुनि सकल प्रबीना विश्वा
मित्र असित भृगु ग्यानी दुरवासा कस्यप सनमानी नारद कन्व अंगिरा साधू बामदेव म

नअत्रिअगस्त्य औरवशिष्ठआदिमुनिजेते विश्वामित्रहुतेते पिंडारकएकतीरथरा
जू तहांगयेमुनिसहितसमाजू बालकनजदुकुमारतेहआये सोचरहिवनिमाबेषवनाये अ
तिविनतीसबचरकनिलागी पूछहिंद्विजसबरअनुरागी इहअबलापूछहिंद्विजराजू गर
भवतीलागेयहलाजू निकरप्रसतअहैयहकेरे कहाजनैसोकहहुनिवेरे तुमअमो
घदरसीभदरवा कहियेसत्यपाकरियेहकरिभेवा सुनिमुनिकपटजुकतिजववानी को
पसहितबोलेनरपध्यानी मूसलमनहिमंदमतिजानो जदुकुलनासकरनयहमानो
सुननमयकेपनूसबवाला उरसबोलतहैभ्याततकाला मूसलरेबिलगेपछुतानो कु
हाकियोहमकर्मअयानो लेमूसलकंपतिसबगाता आयेप्रग्रहसुरमतिज्ञाता ही
नउऊउग्रसेनकहुआनो अतिमलीनमुखआवनवानी सुन्योआपमूसलपुनिदेषा
त्रसनभयेसबहदयविसेषा उग्रसेनचूरणकरिताही सिंधुमाहिडारयोपुनिवाही
रननभागरह्योकछुवाको सोलेडारदियोतंहिताको सोवहलोहमीनइकषायो
चूरणनलपितरंगवहायो एरकभयोजाइतटिसोऊ पलप्रभासजानैसबकोऊ
यहतमीनजीमरइककोई औरमीनसेगआयोसोई बांकेउदरलोहतिनपायो
व्याधितादिकोबानबनायो एमारबनमानतसबबाता बहुतभलीमानीभवत्राता ॥
दोहा सुनहिनिरंतरहरिकथापावरमापवित्रसुजान अरथधर्मकामादिसुषदेहिनि
दहिभगवान ॥२४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे भाषानिबंधे प्रथमोध्याः

दः २ चौपई श्री शुक कहे सुनहु नरराया द्वारावती पाल जदुराया विधि सुनहु निरं
तर आवहि श्री वृजराज हरन सुभ पावहि तहां नारद आप नेह लागू हरि पद मन जाहि।
साधु पदु भाग शुक तिन को पद गति नृप रेवा करहि निरंतर हरि पद सेवा सुरमुनि
जासु चरण ध्यान चहहीं नर आसि कौन नासि विश्राम हीं जिहि जिहि लोक जाइ नर
प्रानी तेहु तेह काल शुभ तन भय जानी इंद्रीय जुत पहुंचत न पाई भजियनि रंतर श्री
जदुराई २ दोहा एक वार वसुदेव ग्रह नारद पहुंचे आइ तिनि पूज्यो तिहि वहुत विध
पुनि पूछ्यो चित चाइ २ चौपई हे प्रभु तव जग मे आगए सव जीविन को भवनिधि मं
हे मरए विनु आगमन प्रभु के हेतू तुम सव जीवन को सुष केतू वर देवनि सु बड अधु
तमानो केवल सुष प्र तुम कहु जानो जो न नभ मे देव कहु जैसे देवहु हरु फल ता कहु
तैसे ज्यो करमु करि विलोके कोई जो काछू करे लषे तहु सोई तुम से साधु दीन ज
न देषी करहि सत्पाविन उपकार पषे की मैं तव दरसन भयो पुनीता नहपि पूछौ मे जा
ही सा भगवत धर्म कहो दिविराई जासु निजीव परम पद पाई जा धरम न करि श्री
पति देवा तुमहि प्रसन्न कहहु सोइ भेवा पूरव जनन मकरी मै सेवा माया जदिन मोहि
सुधि देवा न व मे हरि हि सदिस सुत मांग्यो मुकति दान प्रभु नहि अनुराग्यो अव भ
व भय जिहि विधि मिटि जाई सो कहु नतन कारहु चिनराई अनायास जिहि मो तिमो
साई तारिय विस्व सो कहहु उपाई ३ दोहा वचन सुनत वसुदेव के अति प्रसन्न नदि

बिराजु बोले परम सनेह जुत कृपासिंधु परिकाज ४ चौपई हे वसुदेव धन्य तव
बानी हित करि पूछहु सारंगपानी भगवत धर्म सकल अघ नासे अति पवित्र हरि
रूप प्रकासे सुनेभवगाथोरनतें कहही अनुमोदिन करम वनिश्चित रही तुमय
ह किए उ मोर उपकारू श्रीपति सुमिरत्यो सुखसारू अव इतिहास कैहोइक नी
कौ जिहि सुनि रहै न संसय जी को दिवि भै देव सुनन च योगेसा तिनने सुनियो जन
कनरेसा पुनि उत्पति कहौं तव पाही जे गत मह रति हरि पद माही मनु स्वयंभू सु
त प्रियव्रत भए ऊ तिन के अग्गनीध्र सुत कहि ऊ तिन के नाभि तनय सुभ सुंदर
रिषभ भये तिन के सुत मंदर ५ दोहा वासुदेव साईं अंस करि प्रगटे भू परि आइ मो
क्ष परम प्रगट तिन भये सब जो विनि सु बताइ ६ चौपई तिन के तनय भये शत एका
परम ब्रह्मपारि भये सहित विवेका तिन महु भरत अग्र मुनि ग्यानी गति मनि हरि रस रहल्ल प
दानी जासु नाम करि षंड प्रकासू प्रथम हि नाम भयो अजनाभू निहि छिति भोगनि
यो विधि नाना छांडि दियो पुनि लहि बिस्रामा हरि पद सेइ सो विविधि प्रकारा नी
नेजनम करि भये सब पारा तिन महु नव नव षंड नरेसा बार बीसन कर्म सुदेस
न भयो मीस वयेग्नि ग्यानी परमार्थ पदायक सुषदानी आनन विपारत गति माना
सतारि गंवर फिरहि सुजाना कवि हरि अंतरिक्ष सुष धामा द्रुमिल चमस करभा
जन नामा पुनि प्रबुधि अरु आविरहोता पिपलायनय कसु भगुण चेता ७ दोहा

308 A

नै

निराससभगवतरूप जग लख्यो एक करिनाहि और न दूजी चाह चित्ति फिरत लोक
सवमाहि ८ चौपई सुर असुर सिद्ध साध्य गंधर्वा जक्ष नाग नर किन्नर सर्वा मुनि चार
ण विद्याधर लोका तिन्ह कहु अटक फिरहि सव ओका निमि के जग्य माझ इक वारा ते
सव गये करत संचारा तिन कौ वपु वहु नर निसमाना निमि आवत देख्यो सुखमाना उ
ठ्यो राजरिषसहित समाजू करि हुलास वहु विधि सुख साजू सुंदर दिव्य दियो सिंघासन
न हं सोभित वै ठे सुभ आसन सुन हु सनेद सनंदन सनत कुमारा निमि कहु हेखि भयो सुख भारा
नव करद विन य ह सत मुग जोरी पूछत न्रप मृदु वचन निहोरी ९ दोहा जान्यो तुम क
हु नाथ मैं हरि परिकरि सुख दानि मेरु जीव उद्धरन हित फिरहु सकल जग जानि चौपई
अनि दुर्लभ यह मानुष देहा फिरे अनेक जोनि करि नेहा कवहु क दैव जोग करि स्वामी
लह्यो सु नर तन जीव सकामी ताम हु वडो लाभ सत संगा सो पावै तप ज्ञासु अभंगा नि
मिष मात्र सत संगति होई ता हि न भव दुख व्यापै कोई तुष्यो तुम हि अनघ एक वाता
परम छेम कहीये सुख दाता जो मोहि सुनन योग जिय जानिय तो प्रभु भगवत धर्म बखा
निय जिहि धर मते श्रीजदुराई द्वै प्रसन्न वस रहत सदाई इह निमि पूछ्यो जो गे सा अ
ति प्रसन्न मन कहत सुदेसा सकल सभा सह मुनि गन जेते सुनन लगे चित दै सव ते
ते १० सेहा कवि वोल्यो सुनि राज रिष निरभय पद जग एक अच्युत पद सेवन सदा क
रीये सहित विवेक ११ चौपई द्वैदि विनु रहित सकल जे करमा ते सव जानहु मन के भ

विद्या

रमा श्रीमुक आपु कह्यो जगदीसा लहै जीव जिहि विधि करि ईसा अनयास करि म
रिं जासो पावै सुगम परमपद तासो भगवन धर्म ताहि निरुप जानू बिनु स्त्रमते रैसो क।
रोव बानू जिहि धरम महि आश्रित नर सोई विघन न व्यापे ताकहु कोई मूंदे आखि
धावे जो प्रानी गिरन पतन होइ सुवतानी निमिस कामधरम न मधु धोवा तिमि न हि
इहा होइ कछु हानी प्रत्यवाय न हि फल न स जाई भगवति धरम सदा सुख दाई मन
वचकाय करि ये जे करमा बुधि स्वभाव वरन के धरमा सो सब हरि हि समरपन क
रिये भगवंत धर्म इहै हीय धरिये १३ दोहा अहंकार गुन जीव यह भूल जो हि प्रभु रूप
मायाकृत ममता यसो भय पावे यह भूप १४ चौपई यहते बुध हरि गुरु के चरना से
वहि जनम मरन भय हरना हरि गुरु एक करि जानी सेवे सदा ताहि सन मानी
जो गुरु कहै करै पुनि सोई तो भव रोग न व्यापे कोई द्वै प्रपंच सत्य नहि भूपा देवि यस
वन यह होइ स्वप्न यस वभोती हरि गुन सुने सदा दिन राती तजे ला जगावे गुन करमा न
होइ असेगर तिभगवति धरमा भजन प्रेम निति प्रति अधिकाई पुलकित गात नयन
जल छाई गद गद सुर गावे हसि रोवे कबहु कमौन गहे हरि जोवे लोक वेद वाहर गु
निनाचे सो उनमत्त ऋद्धि यसु वराचे जहलगि जीव चराचर कोई वायु अग्नि सरल
द्रुम जोई दिसा अकास सकल ससि तारे सकल माहि हरि रूप निहारे होइ अनन्य सब

हिसिरनावै सोहरिभक्तिसदासुषपावै २५ दोहा अंतरजामीसकलजग व्यापिरह्यो
सबमाहि ऐसेजानतनमननित परमभक्तिहै ताहि २६ चौपई तबइहिप्रभुअनुभव
पुनिहोई विषएकसुषत्यागे पुनिसोई तीन्योहोइताहिइककाला भजनप्रतापजानु
नरपाला तुष्टपुष्टअरुक्षुधविनासू ज्यौंप्रतिग्रासलहैसुषरासू जइवरवरएभजै
चितचाही ग्यानविरक्तभक्तिहोइताही सोइपुनिपरमसोनकहपावै वहपुराणभक्
तिकहिगावै निमिकहलह्योघनोहरिसिरनाई हरिजनलछ्यनकिंयेगोसाई कहियोभा
गवतकहुयहहोई मोहियचाउभयोसुनिसोई कौनसाधर्मजाहि केकीने प्रभुप्रस
न्नकाहियेरसभीने किहिविधिचलैकहौसोभाषे कौनसुभावनिरंतरराषै कहहुभा
गवतकेगुनसाई हरिनामावोल्योहरिषाई २७ दोहा सकलजीवयहलगिजगत
सवमहुव्यापकईस हरितेभिन्ननजगतयहप्रभुसमरथजगदीस २८ चौपई जहुता
मलिनरहितसवठामा आनिसर्वजनतपसुषधामा अंतरजामीसवपारनेहा जानहि
मननिजननहिसंदेहा सोभागवतमुष्यजगजानू औरसुनहुमध्यमसुषदानू ईस्वर
भक्तिअसअरुजानी इहिविधलषहिसुनहुनरपपानी हरिसनप्रेमभक्तिसननेहू
कृपाअसपरिकरनतिएहू औरिसनकरैवैरनहिप्रीती मध्यमभक्तिभगवतरीती
विधिनुतहरिप्रतिमाकरिपूजा मनक्रमवचनअवरनहिदूजा नहिनप्रीतिभग
वतपरिजाही प्राकृतसाधुजानिनपनाही पुनिउत्तमभागवतवषानो लषितिहि

सुषनिधि ताकहुं जानौ इंद्री विषय पाइ कहुं सोई नहि हरषै जग विधि गति जोई क
हुं दुष पाइ सोच नहि आनिहि माया कृत सव जग न वषानहि यह उत्तम ज्ञान दृढ़ हिरह
स॰ जिनके हिय हरि सदा प्रकास ८ देह प्रान मन इंद्रिय धरमा जनम मरन भय लो
भसु करमा इन करि मोह न उपजै जाको उत्तम भक्ति ज्ञान निरपता को ९ दोहा काम
करम वचन दीजम सव जिनके चित महु नाहि ९ मरदवन को आसा तो हरि रस सुषनिधि
नाहि ९ चौपई सोइ हरिजन उत्तम नरराया सुनहु ओर जे षतिमुष गाया ना
नवरण आश्रम कुल रीती धर्म करम जे विनय विनीती देह पाइ जे गति अभिमानू
उत्तम ते जिनके सुभ ग्यानू नाहि पर अपर गेह धन रहा सर्वभूत तिमहि सनेहा संतवे
रसमता संतोषू उत्तम सो जग जीवन मोषू अल्प सिद्ध त्रिभुवन सुष जेतो तिनको
तुछ लहो सव ने तो अषिल लोक के सुष लगि रहवी इक छन न तजे जे हरिपद सेवा
निहि चरनन को अज त्रिपुरारी ध्यावत सुर मुनि नगजन नारी नाहि चरन रति जे
मुनि ग्यानी निमिष विन तजत लोभ वद्ध ज्ञानी कहीये उत्तम सो जग साधू परउप
कारी सुमति अगाधू ११ दोहा भगवत नेह वचन सरोजनय प्रीति इति सुभग प्रकास
निहि आश्रन गति ताप सव नहि आवे तिहि पास ११ सोरठा जासु हृदय करि धाम
वसत निरंतर आपु हरि सुमरत जाको नामु रहे न अघ वहु जनन मकर ११ दोहा प्रेम
इन कहि ना सु हिय धरे न चरन न नइरोइ मानहु करे उनि वेधन तहे सो सव ते अधिका

310 A

१ २५ इतिश्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे भाषा नवें द्वितीयोध्याय ॥२॥
चौपई माया को तरण प्रकारा बहुरि करम करम प्रसन विचारा तिसरे माउ प्रसन म
हचारी उत्तर देहैं हैं रिषिन विचारी तिन कहु रुपा करिय मुनि देवा जानन चहु उग्र ज्ञा
करि मेवा जा माया वस विधि त्रिपुरारी फिरहि भुलान बडे मुनि भारी सुनि तव सुषके
वचन गोसाई नहि अघाउ कवहु मुनिराई त्रिविधि ताप ताप तन रकोऊ भेषज
हरि कथा पाव न सोऊ अंतरिष्य बोल्यो सुनि वानी सुनिय राजरिषि कहहु बषानी आ
दि पुरष नारायण एका तिन माया करि रच्यो अनेका प्रथम महामहाभूत तिन कीना
तिनते ऊंच नीच जग लीना नरतन पाइ जीव अभिमानी बस्यो तहां अनि सेसु षमानी
तह वस करे भोग यह नाना बांध्यो मोह वस फिरइ भुलाना ॥ दोहा यह सव माया
जानियहु जहि लगि जग विस्तार नाम रूप बस्यो अस यह निज करि मन अनुसार ॥२
चौपई इंद्रिय मन एक सुभाऊ बहु न भांति करि विषय पसाऊ अस भाग इंद्रि
य गुन सोऊ कहहि भोग मन बच सब कोऊ सो वा जीव पाइ भल ठाम अंतर जामी त
ह सुष धाम करन भोग भौतिक यह देहा मान्यो अहंकार कर गेहा इह विधि बंध्यो
जीव तह माही पुनि पुनि जनम मरन गति जाही तहां करम पुनि करहि अनेका सहि
त वासना रहित विवेका तिनके फल सुष दुष्य मे जानू भ्रमहि जगत माहि गति विग्या
नू आवत जाहि न पावहि अंता प्रलय अवधि लगि जीव अनंता लीन होहि मा

श्री भा.
ए ३२२
३११

यामहुं माई होहि विकुर जग अब सकल पाई पुनि जव कालु चहै करि नासा अनावृष्टि सात
वरष अकासा प्रलयकाल को सूरत पावै तीन लोक अति से दुष पावै ३ दोहा नव
से करषन वदन ते प्रगटे अगिनि अषंड ज्वाला सव जग पवन जुत त्रिभुवन अति वररेड
८ चौपई पीछे प्रलय घन घमंड जल लावै गज कर धार अंबु वरषावै वरषे वारि वरष
शत जानू लीन विसार होइ जल मानू तव वैराट पुरुष तन जि जोकू वसे प्रकृति महं सु
हरजाकू जो विधि होइ अभर्जन पाना प्रकृति लीन सुनि वुधि विसाला जे हरि भक्ति
होइ नरक को ऊ सो प्रभु पद निज पावै सो ऊ औरे प्रकृति महुं सकल समाही जेह लागि
आदिक यह कहा ही मारुत युं से गंध कहुं नवही होइ लीभ जल मे नवही तिऊ ही पव
न युं से रज मारा सलिल लीन नव ते ज सु वारा रूप हि युं से अंधतम भारी ते ज लीन तव
पवन मझारी सपरस कहुं जव युं से अकासा पवन करे तव नभ महु वासा सव रहो
ने जव भयो अकासा तामस अहंकार नभ वासा तामस अहंकार मे न होऊ राजस
अहंकार यु स सो ऊ इंद्री अरु दस जस अहंकारा सत्व अहंकार तक रस धारा सात्विक
अहं बुद्धि अरु सेवा महातत्व तहं कीन कलेवा महातत्व सो प्रकृति समाई इहि विध
का जस कल युं स जाई ऐसे हि विधि यह वार हि वारा उत पति प्रलय अनेत अपा
रा यह सव माया का करि परिताप उपजावै पालै हरि आप ४ दोहा यह जग सगरो
त्रिगुणमय माया चिन सुजान कहो पाजरि छि सकल मे रुछहूं निज कल्यान ५

नं
सं

311 A

सोरठा भयो न पति प्रतिभीन सुनि माया की प्रबलता नाहि तरन की रीत पूछत प्रतिहि बि
नीत है ७ चौपई प्रभु माया यह प्रबल गोसाई नरहि जीव किम करि सुष पाई देह गेह प
र ममता जाही सुगम उपाय कहहु मुनि नाही सुनि नृप वचन मृदुल प्रति साधू नव प्रभु
धमति बोलु अगाधू यह जड जीव सुषन के काजू करै आरंभ कर्म बहु साजू लहै न सुष
दुष दूर न होई फल विपरीत लहै पुनि सोई मरन धरम यह नर तन देहा पुत्र वित्र सो क
रत सनेहा कहहु कहा तिन कौ सुष होई धन हित जतन करत रह सोई आयो धन पुनि
दुष अपारा सो नर रहहि थिर लघु निरधारा इहो कर्म सुभ करै अनेका लहै लोक कर वि
मल विवेका तहो दुःख करि धरन पजानू मत्सर रोष सोष अभिमानू इहि ते सब नस्वर
जग जानी उत्तम गुरु गहि ये पहिचानी सबद ब्रह्म को जानै पारा सीतल सम हरसी सु
भचारा ८ दोहा ऐसे गुरु बिनु जीव कहु मिटै न संसय येर ताबिनु उपजन ग्यान नहि
कहहि साधु मुनि वेर ९ चौपई भगवत धरम तहां लव सीषै तब इहि सुध हो इहरि
रीषै सब ते मन कहु करै असंगा प्रथम ह करै साधु सत संगा इया मै जीवनि पनि तिष्ठ
त व अरु सौच स्वछ ना सिछा बार पाअलाप रहित गति माना निज तिय गमन सो ष सु
भ माना गर्नपढो हि मोहि अविवेका सुष दुष सम लषि सहित विवेका सब महुं ईस्व
र रूप निहारी हो इ एकांत सो लघु तन धारी ग्रह मद कोद सकल आरंभा रहित प्रसन्न
कपट न जिह भा चीपी पट को बसन कर ह केथा बलकल वा सुसुनै सर ग्रंथा जपमाला

श्रीभा०
१२२

312

भले तो यसु करमा इहि बिधि सीये भगवति धरमा बारबार भागवत पुराणा सहासुने
नितानजिकाणा बचन कर्म मन रेह सुभाऊ इन जीतन हित सो षऊ पाऊ बचनज
थारथ भावन रीती करे बस्व सव इंद्री जीती ॥१॥ दोहा जनम करम हरि के सकल गावहि
सुनहि सुजान रमारमन उपरे सने करहि करम गति मान ॥२॥ चौपई जप तप दान जग्य
ब्रत नेमा सीधे इहि सब करहि सप्रेमा सुन वित नारी प्राण प्रिय गेहा प्रभुहि समरपइ
करि वहु नेहा अग जग जीव जहां लगि आही जथा जोग सेवे सब काही ता महि अधि
क जानन रहे ही प्रीति सहित सेवे पुनि तेही तिन मह संतन सो करि हेतू सेवहि तन मय
होइ सचेतू तिन संतन के संग सुजानू गावहि हरि गुण तजि अभिमानू बिरत प्रीति अरू
मन संतोषू मम नारहि न गभिन परितोषू संत संग नह हरि गुन नित गावे दिवस निसा करह
बहु सुख पावे प्रभु गुन सुनत पुलक सब गाता प्रेम भक्ति उपजे सुषदाता कबहू कहर
न करे हसि गावे कबहु क नृत्य करे सुष पावे कबहू क हरि लीला करि आपू होइ निरे
तिरह सुष चापू भगवत धर्म सीष इहि भांती गुरू दिग रहे सदा दिन राती तिहि ते अपने
भक्ति पुनीता या बिधि हार जन माया जीता रमारमन पारायन होई नाहिन जग दुषया
ये कोई ॥३॥ दोहा सुनियो वचन यहू नपति जव अनिसे हिय हरषान हाथ जोरि सिर
धरण धर बोल्यो वनुर सुजान ॥४॥ चौपई ब्रह्म विदु ब जह लगि जगि साई तिन महि तुम
सर्ब समो साई को ब्रह्म कर को भगवाना को कह परमातम जग जाना को कह नाराय

3

णप्रभुनामा इनकरिभेदकहियेसुषधामा मुनिमहुसरलन्तपतिकेवेना पिप्पलायन
वोलसुषग्रैना जगउपजाइपालसंघारे नारायणसोवेदउकारे सोवतजागतसपनि
हुमाही वरननसकलकहेस्रुतिजाही ताकहकहैब्रह्मसवकोई तुरीयारहेनिरंतरसो
ई देहप्राणमनिइंद्रीरूपा जिनकेप्रेरेनिजअनुरूपा करहिकामसवनिजनिजठामा
सोपरिमातमलषिसुषधामा तेसवएकतत्वतुमजानहु औरनसेसयमनिकछुआ
नहु मनवचनपुनवुधिअरुमाना इंद्रीऔरसक्तिकरिनाना नाहिनयहुचेयेसवको
ई सुधस्वरूपकहेस्रुतिसोई पावकमोगलोहजिमिनायो तासुरूपसोतुरतहिपायो
दाहकसकतिभईतिहितैसी पावकपरपुनिसकतिनवैसी तैसेइंद्रीगणसवजानहु
ताकीसकतिसकलनिजहिमानहु २४ दोहा जानहिऔरविषयजगनाहिनजानहि।
कोइ नेतनेतकरिकहेस्रुतप्रगटकहैनहिसोइ २५ चौपई यहनहियहनहियहन
हिकहई सवतेपरेसत्यसोइअहई अवधिविनानहिहोइनिषेधा जानहिवुधिजिन
कहुसुभमेधा सूक्षमथूलजहांलगिकोई तिनकेपरेब्रह्मसवहसोई पावकपवनगग।
नजलधरनी सवमहुसोभासेस्रुतिवरनी कारनतेकारजनहिन्यारो प्रभुमहयहसवस
कलपसारो जनमेवढेमरैनहिसोई वालजुवासोजरठनहोई सदासुधवहपरमअनू
पा चितानंदविज्ञानसरूपा देहमेदवहुधासोसोहै विनाम्पानसगरीजगमोहै सदानिरं
तरसवघटवासी निरलेपकचैतन्यप्रकासी ज्योंइंद्रीवसहोइनप्राना चलैसदाअपने।

श्री भा
ए. ३१३

313

अनुमाना जैसे पवन सुद्ध सब ठामा सो वह ब्रह्म सदा सुख धामा अंड पिंड उद्भिज स्वेद ज
जानी और जरायु जहैं बहु कोनी लिंगदेह ज्ञान न महि जाई प्राणवायु नह वस सुध
पाई सपरस रूप सब्द रस गंधा मन अहंकार बुधि चित्त न बंधा एतव ततु लिंग वपु हो
ई इन के मिटे सुधि पुनि सोई जब सुबोप तब स्या यह पावै इहि अहि मिलन मे मिलन आ
वै नव कूटस्थ होइ यह रूपा शुद्ध ज्ञान माइ हू अनूरूपा १६ दोहा अहंकार मन बु
धि चित सकल भये जब लीन तौ पुनि कयो जाग्रके रे पाछिल बात प्रवीन १७ सोरठा
लिंग देह बिनु जान भई सोइ द्रौ लीन सब बंध बासना मानि यातें लह्यो शरीर पुनि २८
चौपई सो हि नवासिना लिंग सरीरा नाहि न सो पुनि नहि भव पीरा तजे ईश्वर एक करे सु
करमा भजन करे जु न भगवत धरमा तिहि ने उपजै भक्ति अनूपा निर्मल चित्त होइ
तब भूपा तब वह सुद्धि रूप पहिचाने नैन दोष गति वस्तु पछाने नैन रोग सो वहु न रक्त
ई मोहि पतंग दीसत अहई पुनि तिहि मिले सु अंजन नीको लखे सु एक नाड़ अमनी
का कर्म भक्ति नासे सब रोगा कर्म बिना नहि भक्ति सु योगा १९ दोहा सुनि योगेस्वर के
वचन हरष्यन हृदय नरेस कर्म योग अब कहिय प्रभु जिहि ते मिटइ कलेस २० चौपई
नाहि करम के करत गोसांई जीव तरे भव निधि सुधि पाई उपजै ज्ञान भक्ति गुन जेसे मि
टे बिकार कहिये मुनि तैसे और प्रश्न एक पूछौं सांई मो हिं भ्रम भयो वह मम नियरांई प
कृ अवगमपि मुकुंद दास सनकादिक आय कहि नेहा मो पितु निकट रह्यो तिहि ठामा ॥

रहै ब्रह्म दृष्टी सुषधामा तिनमोहि उत्तर दीनन काऊ नहि बोलै सो कौन प्रभाऊ यह स
ब कहिये मोहि समुझाई तुम सर्वज्ञ तत्व सुषदाई सुनि अस वचन नृपति के नव ही अ
तं विरहेउ बोले मुनि नव ही जानहु भूप करम गति गहना तिहि ते तिन तुम नेन हि वरना
करम भेद तह तीनि प्रकारा सकल वेद ते प्रगट पसारा वेद प्रगट हरि मुष ते भएऊ इहि
ते भेद न काहू लहेऊ बडे बिदुष मोह हि इह देषी लहे भेव नाहि अररघ विसेषी २२ दोहा
तुम नव लायक अगपहे करम गहिन अति जानि नहि बरने मुनि नाहि ते अब सुनि नृप सुष
दानि २२ करम अकरम विकरम नृप इन के भेद अनेक वेद विहित सुभ करम लषि हरि हि
त करि गहि टेक २३ चौपई वेद रहित सो जानु अकरमा अति निषिधि सो कहीय विकर
मा श्रुति प्रतिपाद्य कर्म जे करही भक्ति हो इ पुनि भव निधि तरही करम न जन कहहु कर
मगहावे श्रुति को अर्थ कहो किमि पावै सुर पुर भोग कहे फल गाई पुनि पाछे तिहि हे द
वहाई जिमि बालक को रोगी होई कटु औषध सुनि रोवै सोई पिता मासु न वल डूरि
पावे औ वर हेतु लोभ उपजावे औषध को फल होइ न सोई पिता रोग हित काहु जिमि गो
ई त्यों यह लोभ कहे स्रुति गाई नहि वहु स्वरग सत्य सुषदाई फल यह लगि सव पुषप
ति वानी तजे सकल फल मन वच नामी २४ दोहा स्रुति प्रतिपादक करम सव करै सस हा
चित चाहि ईस्वर अरपन करै फल सिद्ध सकल नृप ताहि २५ चौपई इहि विधि प्रेम भ
क्ति जव होई कर्म बंधु नहि पावै सोई कह्यो पद्य वेद कर्म गाई कहोन नृप पद सुनि नर दा

श्रीभा.
द्वा ३१४
314

ई ह्रदय ग्रंथ कहु काटन चहई तौ हरि पूजन महु चित धरई श्रीगुरु आग्या पाइ प्रसन्नहू
जिहि विधि कहै वेद प्रतिपादु हरि मूरति तैसी मन भावै तिहि महु चित पूजा मन लावै
मंजुन करि सुचि सो धि सरीरा तजै वासना मनि की धीरा प्राण अपान वायु सब सो
धी एक चित मत सरनानि क्रोधी आगन्यास करि सनमुख सा प्र बैठ सु पूजि करहि आरा
धू हिय वंधन करि आसन सोधी सकल द्रव्य धरि लै अविरोधी वह विग्रह भगवत वपु
मानी अरघ पाद सब करि विधि दानी मूल मंत्र जुत करसब पूजा भगवति ध्यान छो।
डि नहि दूजा अंबुज महि चक्र नु न ध्यावै शब्द सहित पूजा मन लावै प्रभु को अंगन्यास
पुनि करई इहि विधि न रपूजा अनुसरई सनान कराइ वस्त्र पहिरावै विविध भांति भू
षण हि वनावै बहु सुगंध जुत सुंदर माला पहिरावै बहु भांति रसाला पुनि नाना विधि कर
पकवानू प्रभु हि समरपे गीत मद मानू या विधि मंत्र सहित सब करई अस्तुति करै विन
य उर धरई करहि रदु वत विविधि प्रकारा नचत मय द्वै हरि नाम उचारा यह रीति हरि को।
सुभग प्रकार वर धरै सीस पर सोइ देव सयन करवाइ पुनि पूजा इहि विधि जोइ ३३
ऐसे पूजत नित प्रति हिय निर्मल नव होइ अभिमत फल पावहि सुजन लहै विस्वपर
सोइ ३४ तौरथ हरि पूजा फल चारि लहहि जीव अनयासतें श्रुति सुमिव हहि प्रकारन
रतन करव हु परम फल ।। २७ ।। इति श्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे भाषा निवद्ध
त्रिनी दो अध्याय ।। २७ ।। दो० जनि मि पूछित अवति विनय जुत कहिय कृपा करि नाथ प्रभुअ

314 A

वनारभयोजिमिकूहैसुभगुनगाय २ अवनेअहै प्रसिध हरिजगरछकभगवान कृपासिं
धुगुणकमेयुनकहनसुनतकल्यान २ चौपई सुनिविदेहकेसुंदरवचना कहनलुमि
लसबहरिगुणरचना प्रभुअनेनकेगुणअरुकरमा कहैकहाजानैकोमरमा भूमिरे
नुवहगनिसकैकोई हरिचरित्रगगनसकैनसोई जोचाहैप्रभुगुनगणअनंत वालबुधि
जानहुनपसंतू इहितेकथूककहोताहिपाही मतिअनुसारसुनतसुखजाही पंचभूत
कादिरचिवैराटो ताहिधरयोजलमहजगटाटा तामहिप्रविसेनिजकरिअंसा पुरुष
आदिपुनिताहिप्रसंसा जोकेवपुकरिजअवपुभाऊ रमारवनसुनिताकहिकहिऊ
ताहिअंगतेसबकेअंगा भयोजानियोनृपबहुरंगा रजगुणनमसातिककरिहेवाक
रेहरेपालेइहिभेवा रजगुणतेब्रह्मापुनिभाऊ सात्विकरूपविस्नुतहकहिऊ नाम
सरूपअहैगौरीसा इहिविधिजानहुनुमनरईसा ब्रह्माकरहिविष्णुतिहिपालहि
शिवसंघरैअंतकेकालहि यहपुरुषाअवतारनपाला औरसुनोहरिचरितविसा
ला पितायरमअरुमूरतिमानू नरनारायणसुतविख्यानू ग्यानभक्तिजिनबहुविस्ता
री मंदबुधिनरजगनिसतारी अबचहूं आपुकरेसुभकरमो नारदसुनिहिभागवध
रमा सकलसुरासुरवंदितचरणा जनमीताहानाइथहहरणा सुरपतिचिनइहिआपुवि
चारी तेहैलोकमोरयहधारी तिनमनमपकदुआरारीनी चितनसंगसेनावहुः
लीनी ३ दोहा रंभादिकसवनारिसिंगारितुवसंतअरुपौन सीतलमंदसुगंधजुत

ते

श्री·भा·
८१३५
315

किधोमहोकहुगोन ४ सोरठा जद्युवस त्रिभुवन देव नाम बड़ि कासम सुभग जानत
कछुनहि भेव मीनकेतम तिमिंहमनि ५ दोहा पुस्पबान नियन यनसर प्रभु उर मारि
सिधाइ विफल भये सब तासु बल ज्यों मगल खिहरि पाइ ६ चौपई प्रभु जान्यो सुरपती
कै नरोषू हसि बोले प्रभु सुखनिधि तोषू जनि भय करु तै मनसिज बीरा देव बधू सु
निये धारि धीरा वेदहु करो श्रनिष्पतु मारी आस्त्रम मोरि किरहु सुभकारी ग्रहहु मम
पूजन कामा जिहि ते सफल होइ मम धामा ऐसे सुनि प्रभु के मृदु बचना लजु जन मदन म
लिन बरचना केपिन मान झारि नुगहाथ्या बोल्यो मदन भमि धरि माथा हे प्रभु यह क
छु नहि आचरजा मायावसि सेवे मुनिवरजा निरविकार मन सरनागति मेरा रागद्वेष बिग
तिचित नहि येरा मन अनेर थारि पूरन कामा तव पद सेवे सब सुखधामा तव पद पंकज
रति जब कोई तिनकहु विघन करे सुर सोई तिनको लोक निरादर करही तिनसिर प
गधारि लोक सिधरही इहि ते विघन करहि सुरकामी तिनको मिल इनानि जबलस्वा
मी औरन काहू को दुवरे ही पावहि भेट मानि सुख लेही ७ दोहा तव भक्तिन कह कब
हू प्रभु विघनन व्यापे कोइ तिनके माथे पाव धरि तव पुर पहुचै सोइ ८ चौपई जिन
के रक्षक तुम भगवाना किमि व्यापै तिहि विघन सुजाना तुमते विमुष कराहि तप मानी
तिनकी दुर्गति मे प्रभु जानी हूपरे वस परि लव सुख माहो निज आगी वसले सासु घना
ही जौ नहि छुधा न तृषा व हु भांती ७ प्रान मसीत वात तप हु जाती बरषा सपन नीरति

करे

यसंगा एसब जलधि ग्रपार तरंगा ताकहु जेन तेन विधि तरही गोपद बोध बूडते म
रही तिनकौ तप मिथ्या सब भएऊ दुहूं लोक महि दुषित तिन लहिऊ कैसे हु न यके हु करे
गोसाई विनु तव भक्ति न नव पुर जाई ग्रैसे कहि तें देव तिनाथा कौतक भयो सुनहु नृप
गाथा ग्रपर मुनि ग्रमित नारि प्रमदाई श्री सरूप निकट सब ग्राई प्रभु परसे बै ग्रति चि
तरीने जिनहि देषि सब देव मलीने तिनके गंध रूप गुण देषी सकल मोहि बस देव विसे
षी श्री हति भये देव लषि ताही ज्यो शशि उदय कंज सकुचाही ॥ दोहा तिन प्रति बोले
नाथ हसि सुनहु देव का मारि इन मह एक जो लेहु तुम महि व म्हषण प्रति पाहि ॥ १० चौपई प्र
भु के वचन धरे निज सीसा करि प्रणाम सुर चले महीसा एक उरवसी तिन करि ग्रागे
गए शक्र पहि ग्रति ग्रनुरागे करि प्रणाम शक्रहि सब वाता कही सुनत भावि सब मित गा
ता बहु रूप सुनहु हरि हंस सुभाऊ कपिल रूप तसनकादि सुभाऊ पिता हमार रिषि भजि जिह
नामा इन सब रहि ने कियो जग हित कामा हेग्रीव मारि उ मधु नामा श्रुति उद्धार कियो
सुर कामा मीन रूप होइ पुनि जग रीसा पाल्यो मनु सत्यब्रत नरदीसा ता हि प्रलय विनु ग्र
लय देषाई विमा पालि तिहि सुमति दृढाई यसब राह बहु रह हरि भएऊ कनक ग्रक्ष्या
हति जग सुष दएऊ छिति मेल गात तिहि रूप ग्रानी थाप्यो पुनि तिहि सुष निधि या
नी पुनि कूरम वपु धरि जन त्राता धरे उ पीठ मंदिर र जल जाता ग्रमृत का दि सुर काज
सवार्यो गज उधारि हित तुंगनि वपु धार्यो बाल षित्य ते रिषि गन नाना ग्रति लघु रू

श्री॰भा॰
११३२६

316

पअग्रगुणसमाना। कश्यपवसमधिलेनकहुंनाही। वनपटएसबगेछनमाही ॥११॥ दोहा॥ नह
तोपरमलमाहिसबपरेकालवसिजाइ। दूवनल्लागेतेनहींसुरपतिहससुषपाइ ॥१२॥ तं
वत्रिनहृदयविचार कियहरि विनुकोसुधिलेइ। अनंतपालजगपालविनुकोभक्तिनसुष
देइ ॥१३॥ चौपई॥ सुनतविनयप्रगटेसुषकंदा। तिहिउधारिदियसुषआनंदा। वालषिल्य
मिलयहअवतारा। सुनहुनपतिप्रभुचरितअपारा। वत्रासुरवधइंद्रसकोनों। व्रसलते
पअघनवज्रवदानों। तवप्रभुवेगहिताहिउधारी। असुरनपुनिघेरीसुरनारी। तवति
नाचिनतीप्रभुसनकीनी। असुरमारिसुषतिनकोदीनी। पुनिप्रहलादहेतुसोस्वामी। न
रहरिभेसोअंतरजामी। असुरमारिजनरक्षाकीनी। अभक्कीयेसुरपतिसुषदीनी। अपु
रप्रवलजवभएपरहोही। सुरकेश्रोकहरदिद्विजद्रोही। तवभगवंतकलाअवतारा। हो
हिप्रगटपालहिजगसारा। असुरमारिजनकोसुषदेही। पुनिवामनभयेसनसनेही
इंद्रहेतुवलिकेग्रहजाई। भिक्षामांगिउजनसुषदाई। तीनिलोकछलकरिहरिलीन्यो।
सकहिनोछिनहिवरदीन्यो। वहुरिभयेनपदुष्टकराला। परसरामप्रगटेनतेकाला। इकीस
वारछत्रीनहिराषो। नासुरसुरनरमुनिभाषी ॥१४॥ दोहा॥ सोकोशल्यातनयप्रग
प्रगटेश्रीभगवंत। रघुकुलमेउतसुजससुमकरिउजानकीकंत ॥१५॥ बिलिरायवर
वनुहनेवाल्लवधेउगकवान। सतुवधिशिवचापप्रतरावकलिकियोनिदान। चौपई॥
भकोभारदूरणहिनइला। जदुकुलजनमधारिहिजगतीला। रामतारुन्मवप्नेदरधा

री सुंदरकीरतिसुषद विसतारी जाहिगाइसुनि कलिके प्रानी तरहिं जी वसर्वहेसुवष्ष
नी जसपकरत असुरनकहुरुषी हरिहुँ हैं बुधिरूपविसेषी कृतुनिंदाकरितिनहिं वि
मोही मतिहरिभ्रष्टकियेसुरद्रोही पुनि धरिहैं सुभकलाकि सरूपा अतिअधमरें होहिं
जवभूपा कलिकेअनद्रसबमारी सतयुगवहुरकरहिंसुषकारी ७ दोहा ऐसेप्रभु
केरूपगुण जनमकरमअतिभूरि बरन्योकछुकनपालमैंसुनतजाइअघदूरि १० इति
श्रीभागवते महापुराणे एकादसस्कंधे भाषानिवंधे चतुर्थोध्याय ४ दोहा सुनीयोनृप
तिजेविमुषनरतिनकहुं विघनन होइ पूछतपुनियोगेशप्रतितिनकोकागतिहोइ १
रमारवनकहुनहिंभजेंइंद्रीवसजुतकाम कहियेकृपाकरिमोहिंप्रभ जाहिंकहासुष
धाम २ चौपई सुनिनृपकेयहवचनअनूपा बोलेचमससुमतिअनुरूपा हरिमुषतेप्र
गभूदेवा छत्रियभुजतेकियनरदेवा ऊरूतेभयेवैश्यसुजाना पदतेप्रगटसूद्रजग
जाना इहिविधभयेसुआस्रमचारी हरिभजवेकोसवअधिकारी जहितेप्रगटभयेन
रप्रानी सोपालेलगहेंसुषदानी ऐसेहीनिरयालकृपाला ताहिनभजहिंपरइभवा
जाला अतिकनध्रताव्यापेताही स्वामिद्रोहिंगुनजानियवाही यहअपराधअधमग
तिनाही कवहुनसुभगतिलहजेगमाही सूद्रयोषिताअंतजजानी अतिमलीनगपा
वरष्याती तिनकहुंहरकथासभकेरी ध्यानसोननहिंवुधिघनेरी तेनेंमेंअभिमान
नधरही तुमसिकोउवकथापुनिकरही तिहितेउनकौहैंनिसितारू जनतअभिमान

श्री·भा·
॥३२७
317

नेनेभवपारु ३ दोहा विप्रद्रोहीबैश्यनरइनकोमत अनुतकरम करनकहोसवजगप
ग्रंतम्रोरलककलसुमधरम ४ चौपई इहिनेइनकोअतिअभिमाना नहिसमुझेश्रुतिक
रननाना पुसक्षितवचनधारिउरतेऊ पावहिमोहिनजोनेभेऊ भजनजोग्यउनमग्र
धिकारा नहिहिनमनदीमिधिमिलगनारा करमनसमुझेमरुआरूढा अतिकठोरवि
षयाभुतमूढा हमपंडितहुतुकेअधिकारी हमसवकरमकरहिसुषकारी भ्रमहि
श्रायुजनकहुभममाहि प्रियवानीवहुभोतिसुनावहि अरथकामकहुजानहिसारु
पढहिवेदनहिअरथविचारु अतिसंकलपघोरमनधरही बहुतअभ्रंमवषापचिम
रही रजगुणअधिककोधवहुमाही कपटदंभअहिमितिवहुनाही हरिजननिहादि
नअदरानी ग्रहमुषसुमभकहेवहुभोती तिमअरुपुरुषवेदइकसंगा वरनहिमेथुन
सुषवहुरंगा करहिजग्यविधिरहितसराही अन्नदषनाविनुनरराई वृथाहनेपसु
नेअभिमानी श्रुतिपथचलेनतेअज्ञानी सेपतिकुलविद्याअरुराज रूपत्यागिवल
कर्मसमाज इनिकरभयेमहामदअंध सठगुनकधूउरधरमनगंधू तवहरिजनकहुह
सहिअभागे जेविषयासुषमेअनुरागे ५ दोहा सवजगव्यापकब्रह्महरिजिमिअ
काससदाम श्रुतिपुराणटेरेकहेसुनतअवुधसकाम ६ चौपई मदिरापानमासकोषे
वो निपसंगसेजरिवसनिसजेवो सवजीवनकोसहजसनेहू इहिपरसतसनेह
विरहू इहिनेश्रुतिनिनाहिधरेकाहू अतिअगाधकोसककोसवगाहू निहित्यागिनहित

317A

नियम बनावै विधिनिषेद करि अरथ दृढावै सेग चहै तौ करहु विवाहू रूपसील गुनव
यसु अगाहू तामै दिन प्रति करै न संगा रितु के समै हान रति रंगा ता पै पैच परब न व होई
न व रत हान रहन नहि कोई पिता श्राद्ध करि जो करि भोगू तासु पितर पावै बहु सोगू प्रजा
निमित्त करै तिय संगा नहि सब काम यह वेद प्रसंगा क्रम क्रम विषय छोडावन हेतू निय
म बनावै श्रुति जग सेतू ऐसहि आमिष मदिरा पाना यज्ञ मांझ अपि विसेष बषाना सु
रा ग्रान पुनि कहे प्रकारी नहि तेहि भछन नियम विचारी कहै प्रवृत्ति निवृत्ति बतावै स
कल ठौर निज अरथ दृढावै हरि सेवे धकरम जे करहीं श्रुति कहि ते भवसागर तरहीं
तात परजन विनु श्रुति को जानै परहि सिधु भव जी बश्र यानै ७ दोहा धन को सुंदर धर
म फल मिहि तै उपजै ग्यान उपजे अनुभव नाहि कर पुनि कैवल्य निदान ८ सोरठा
ऐसो धन वह मूढ बो वै सुन हित नारि कै मए काल मुष रूढ नाहि रेषेव सा विषय के ९
चोपई मदिरा मांस जनम न हि कहि ऊ नहो प्रोष अव घाल द्वल नहि ऊ बाहिय पे छाभ बसो
परही सुरापानि ते अधिगति लहिही ते सह वनिता संग सुजानू प्रज्ञ हेतु नहि निन प्रन
मानू भये एक सुत त्यागे ताही नहि प्रनि लिपति रहे घर माही परम शुद्ध धरम न रसो
ऊ भूलि गयो तिहि सुधि नहि कोऊ श्रुति करि अरथ एक नहि मानहि ते मति मेद अ
पुहि बुध मानहि करहि द्रोह बधि जीव घनेरा नहि पावै संसृति सरि बेरा जिन हि मार
दहि भछन करही ते परिलोक तिन हि संघरही सकल जगत मह ईस्वर एका नहि रेषे

श्री·भा·
प्र ३२८
318

सठ रहित विवेका कर परिद्रोह श्रापु तन पोषहि सुत दारा परिजन सं तोषहि तिन म
हुनेह बहुत करि श्राप जाहि श्रधोगति जुत परितोष नहि ते मूरष ग्यानन आएउ श्र
रुप धरम हित मन मदनाश उ तिन हित सांत एक छन कबहू पढहि पुराण वेद सब तव
हू करहि मद्ध ने श्रातम घाती भजहि न प्रभुहि श्रखिल सुखदाती ॥ २० ॥ ते मूढ श्रति
श्रारूढ मरछ करहि पयन नानहि श्रस्तान मुनि सब करम करती नाहि मान सुमान ही
बहु जननन करि श्रारंभ सा जहि रहित फल दुख पावही सब करहि नित नित बहु मनोर
थ भंग सुनि पछतावही ॥ २१ ॥ पुनि बहुत श्रम करि रचित गृह सुत दार प्यार सुमानि के ति
हि धाइ इति मि श्रापु सह भव परहि इब निधि जानि के सहि जात नाना जम द्वार पावर श्र
ति श्रध मगति पावही हरि विमुख को फल जानि नर पवर जाहि श्रति नित गावही ॥ २२ ॥
दोहा सुनिउ जु हरि की भक्ति बिनु जीव तरै नहि कोइ मृदुल मनोहर वचन कहि निमि जो
रे कर दोइ ॥ २३ ॥ चौपई तब निमि कहै सुनि ये योगीसा कौन भांति प्रगटै जगदीसा कौन
काल मैं कस सुख वर्ना [illegible] नाम वरन पुनि कस श्राकारू वरणाश्रम निति हि कहि विधि भ
जही उपजे ग्यान सिंधु भव तरही वचन सुनै नृपके रस भीने बोलि कहि भाजन सुप्रवी
ने कृत त्रेता द्वापर कलि कालू बहुन वरन हरि रूप विसालू नाम श्रनेक भजन बहु भां
ती भजी ये कृत्म नितिश्र घश्रारानी कृत युग सुभ्र वरण भुज चारी जटा सीस तन व
ल्कलधारी वर उपवीत धरम गछाला दंड कमंडल कर वरमाला तब सब मनुज सोत

318 A

गतिहोया समरमकरि नहितसंतोषा समरमसहितध्यानमन लाई प्रभुकहिभजहिजीव
सवुपाई नामसुपरणहं सयोगीसा धरमकरहुवेकुंठअधीसा ईश्वरअमलपुरुषवर मैं
नाम अरुअव्यकृतसकलसुषधाम इहिनामहिजपकृतजुगप्रानी तरेसकलज्ञान
कुसुषषानी त्रेताअपुरुषवरणप्रभरूपा त्रिगुनमेविलासुभगअनूपा भुजाचारकंच
नसमकेसा सुवासहितहरिसुंदरवेसा २४ दोहा वपुसुंदरवहवेदमयहरिकीतिहियु
गमानि करहिकरमस्तुतिविहतिनरसवजगहरिमयजानि २५ सोरठा जगपऊरुत्रम
जानि विष्णुसकलगुनिवेदमय वहुरवषाकपिमान नामजयेतासुभगावर २६ चौप
ई यहप्रभुनामजपहिसवकाला भयेपवित्रजानुनरपाला द्वापरस्वामिरूपभगवेताश्री
रषवक्रधरिप्रगटअनेना पीनवासभुजसुंदरचारी उरभगुलताचिहनसुषकारी ध
रकौस्तुभमणिअतिसुंदर लक्षमीरेषाउरसुषमंदिर चामरछत्रसहितपुनिताही सेव
हिमनुजएकमनयाही वेदतंत्रमारगअनुसरही करमसमरपनताकहुकरही वासुदे
वसंकरषननाम पुनिप्रद्युम्नसकलसुषधाम नारायणभगवानअनेना विश्वरूप
कौलहेनअंता जगतईससवअंतरजामी भजेताहिनिहिपदचितगामी वहुनभांति
निहिकरहिप्रणामा हरिभजजीवहोहिनिहकामा द्वापरपूजाप्रभुनरपाला अवसु
निपरमधरमकलिकाला कष्णरेवसुंदरघनस्यामा सहितपारषदमनअभिरामा न
हिकछुस्त्रमनहिवहुतअरंभाकिमरेनामनलेमहरे।२७ दोहा स्वेवलकीरतननामइककलि

श्री॰रा॰
उ॰र॰ण

319

केवलिग्रंथारि यहतेजेजगवतुरनररटहिनामसुषसारि २८ चोपई प्रणतपालहे
ग्यानेरकेरा मैनवसरणचरणजनदुनेरा ध्यानजोगमनवेछितदाता परिमवहूरकर
नगनओता सकलनीमयजह वसहिनिरंतर नारदादिवेदितग्रजप्रेकर भवनिधि
कहुनोकामुनिकहही निहिअवलंबचारिफलल्लहही वंदौश्रीरघुवरकेचरना गंज
नकामक्रोधमचहरना ग्रतिदुलरसुरवेछितराजू ताहौत्यागिकीन्यासुरकाजू पिता
वचनकरि ग्रेमीकारा वनगमनेप्रभुकरमउतारा कंचनमृगोसियमनग्रभिलाषात
हितगमनेवेद ग्रसिभाषा परमकृपालभक्तिजनरछक तेनिवंधुकाल्हुकेभछकया
हीअंतिमवानियुगमाही भजहिनोचभवनिधिनरजाही कलिप्रभावजेमानहिप्रानी
तेप्रभुनामरटहिसुषदानी जेगुणग्राहकगुणसारू कहेहिंतेकलिकदुगुणभेडारू
जाकलिकनामअधारा तरहिंनीवदुलरसंसारा भ्रमतजीवयहजोनिअनेकाम
मतावससदगुनअविवेका २९ दोहा भाग्यजोग्यकलिकालिमेपावेनरतनकोइ एक
भजननमोविरकेलहैमोछनरसोइ ३० चोपई कृतयुगआदिभयेनरजेऊ कलिसमव
मानेभुनतेऊ नहोमनेगाजग्यवृतपूजा नामअधूरऔरनकछुदूजा साधनकछुनवेनै
कलिकाला नामअधारणकनरपाला इहितेनामनितिभजिये ग्रौरविषयस्वाध
नेसवतजिये ग्रौरदोरकोरसपुनीता नेहपुनिमाहगकोविपरीता इविदुरेससवसु
मत्राचारा अवजेनरहरिरसविस्तारा नहोजीवसुषनरहिघनेरे जेसवदसहितहाह

रिप्रेरे जहां पुनीतनदीकृतमाला ताम्रपरनि अतिसुभगविसाला कावेरीपयपरस
पुनीता प्रतीचीवहसरस्वतिसुभरीता तिनकोजलपीवैनरकोई अतिपवित्रनिर्मलचि
तहोई वासुदेवरतिविनमदषोई देवकुदेवपितररिषिजेते जेहैरिनीसेवसवतेते नहि
तेरिनीनसेवाकरही सवतजिकैजेहरिअनुसरही वासुदेवतजिऔरनजानै विधिनिषे
धनहिकछुमनआनैं ॥ दोहा ॥ ऐसेप्रभुपदलीनजेतिनकहुमलनहिहोइ देवयोगते
होइकछुप्रभुनासैसवधोइ ॥ चौपाई ॥ प्रभुचरणारविंदपरितापू जानहिसनकसहित
निजवापू इहतेसेईएनितहरिचरण मिटैमहादुषउतपतमरना ऐसेसुनिरुपभग
वतधरमा ऊन्यकलमान्योनिजकरमा पुनितिनकौपूज्योवहुभांती कहोकहालगि
नहिकहिजाती विप्रनसहितनृपकरिजोरी विनयकीनवहुभांतिविहोरी सवकेदे
षतनवजोगेसा ऐनरध्यानभयेनिहिदेसा निमिपुरपरमधरमरतिभएऊ ऐनकालसुभ
मतिसुषलहिऊ तुमवसुदेवसुन्योयहधरमा अग्रजानतसेवहुलुभकरमा पुनिसवप्र
गिपरमपदपैहौ जहांगयेपुनिनहिजगऐहौ देपतितुमजानतकृष्णसुजाना जोकेगु
ह्यगटभगवाना तवजसभरयोसकलजगमाही सुनतपवित्रहोहिनरजाही आलिं
गनदरसनआलापू भोजनसयनसंगहदिआपू वैठिगोदजोकेअविनासी सिसुलील
कीनीसुषरासी पुत्रभावतुमतासनमानी तेऊकृतकृत्यभयेसुषदानी मिथ्यावासुदेव
सिसुपालू दंतवक्रऔसाल्वनपालू वैरभावनितजिनहरिहेरे तिनकहुहरिनिजप

श्री भा॰
स ११॰
320

रकहुधेरे प्रेमसहितसेवैनरकोई तिनकहुकसनपरमपदिहोई अवतुमप्रभभाव
मनमानहु ईस्वरकृष्णब्रह्मतुमजानहु मायाकरिधरिमानुषरूपा नवग्रहवसेग
उनजरूपा छितमहुअगदभरिवहुजानी तासुनासहितेहसुषदानी पारदूरहितज
सविस्तारी भावतसुनितनरनिनरनारी सुनिनारदकोअदभुतवानी सूरसेनअनिवि
समयमानी आपुहिजान्योअतिवडभागी कृष्णप्रतिलषिअतिअनुरागी २३ दोहा
इहिइतिहासपवित्रअतिकहैसुनैजनकोइ उपजैतिनकहुग्यानवरलहइपरमपद
सोइ २४ नारदयोवसुदेवकर वरन्योसुभगप्रसंग हरिउद्धवसंवादअववरनौंगणपा
नेसुप्रेम २५ इतिश्री भागवतेमहापुराणे एकादसस्कंधे भाषानिबंधे वसुदेवनार
दसंवादे मायानेनामपाव्यापने पंचमोध्यायः ५ दोहा एकसमैअजसनकादिसुरस
कलद्वारिकाआई श्रीवैकुंठगमनहितकरहिविनयवहुभाई १ उद्धवश्रीभगवान
प्रतिकरिहैंविनयअनेक निजपुरमोकहलैचलहु तुमजननरछकएक २ चोपई
इमिनीतकथाजानिमोभाई छांडियमोऊहोहिसुषदाई श्रीसुककहितसुनिनृपतिप्र
वीना हरिनसमस्तवलहोहिअधलीना ब्रह्माशिवसनकादिकदेवा इंद्रमहातिरविवि
स्वदेवा साध्यअगिनपरिभुमेधवी अपसरनागसिद्धरिषसरवा विद्याधरकिन्नरग
धर्वचारण रुद्रगणमहदरसनकारण गुह्यकपितरदेवसुरकेरे गयेद्वारिकामहुवहु
तेरे श्रीजदुनंदनदेषिनकाजा गयेतहांसवसहितसमाजा श्रीवपुसुंदरसवसुषदाई

320 A

निरखत मन नहिं रहित लुभाई ज्ञान न करि सुन जस विस्तारि उ तरहि गाइ सव जननि वि
सतारे उ धारावती सकल सुष षानी दि द्विसिद्धि जुत सत सुख हानी ता पुर मे प्रभु सुर सारे वै
देषत सुष उपजे उर भारे दिवि के फूलन की सुभ माला जदुवर को धरा सो तिहि काला ल
षि प्रभ रूप चित्र पत नहि होही थकित विमान रहे सव मोही ललित विचित्र पद निर्मल निर्म
दु वानी वहु प्रकार अस्तुति पुनि ठानी तव पद कमल नमामि गोसाई वचन काय चित
मन कहुं लाई इंद्री वुद्धि प्राण करि स्वामी गोचर नयन अंतरजामी जा हित जोगी जन
हि न राती जतन न करहि प्रभि नित भोंती केवल हृदय माझ सो धावहि नाहि पुनि प्रगट सो श्री ३
इहि विधि पावहि धन्य धन्य हम धन्य मुरारी देषे चरण कंज असुरारी गुनातीत तुम स्र
जित अमानी जिन माया के रिहे सुष षानी रचि प्रपंच पालहु तुम देवा पुनि संघार करहु
इहि भेवा तुम ते भिन्न न यह संसारू राग रहित सव गति सुष सारू तुम कहु परस सकै
कि मि कोई करम करत कहुं लेप न होई ३ दोहा विधान पअरूदान जुत हो सो पाकरे प
हि वेद इतने होइ न सुद्ध तिमि जिमि तव जस सम रिदे घेर ४ सोरठा तव जस परम पुनी
त गाइ न रहि भव नारि नर रिदय दहे न वरीत जनहित करम अनेक किय ५ चौपई
हम तव चरण लष्यो प्रभु आजू अव कुरक्षेत्र है सव काजू तीन वचन एस राजा निपा
वहि अभिमत फल विनु श्रम सो पावहि प्रभ तव भक्ति सेव निज जाही अरु यह धरम का
मादिक चाही अरु को सेवत लोभ कर तव चाहे सा विनु श्रम सोइ पर अव गाहे एक जस क

श्री भा
५३२१
321

रिमजहिं गुसाईं तव पद कमल सदा मन लाईं सकल बेर मय तुम को जानी को पुनि भ
जहिं महा मुनि ग्यानी जीवन मुक्ति एक नर को ऊ सेवहिं पद तव बहु विधि सो ऊ एक
बरन आश्रम गुन धरमा सेवहिं चरन करहिं सुभ करमा जो जिहि भांति भजे जह को
ई सो तै सो फल लहहु निसाई सो तव चरन प्रगट हम देखा सफल जनम निज रहम अ
बलेखा चरन कंज मन धत जप्र कास मम असुभ नास करहु विनास भक्त वतसल सुंदर
वनमाला धरा हृदय तनु महीन रसाला तिहिं लखि कमला करइ सपरधा जानि सो तिनि
तिनिहिं मरव रधा भक्ति एक पानी जदुराई निज जन कीनु मकरहु सहाई ताहि नि
रादर के जिन कछाना राखहु नित प्रति कै सुहाना अैसे पर दीन जन बंधु तव पद म
नहिं नेत मर अैधु सो तव चरन भक्ति सुर हन असुरन कहि अधिगति सो दैनू व
सिव्य ननि जनव कीन गोसाईं तव मन वच रन के नु समुगाईं प्रति ऊ बात्र य पवनि तप
ताका निरखत लहत कलप कैमल परि पाका तीनि लोक पावन तिन कोना गंगा
नाम लेत अघ लीना सो तव चरन सरन सुरसाई सकल भये पावन हम आई ब्र
ह्मादिक सुरनर मुनि जेते तव आधीन अहै सब तेते असुरन ने भय पाइ गोसाई तव
चरनागति आवहिं धाई जिमि बलि विरर नाथ करि कोई राखे नित प्रति वस करि
सोई तैसे हम सब तव आधीना हे प्रभु पोतम प्रभु बस दीना सो तव चरन हम दि
सु बहे ऊ हीनि जानि प्रभु करे ऊ दोहा सकल विस्व कहु हे तुम स्तुति पुरा न क

ही
लोक
कृपा

321-A

हिगाई प्रकृतिपुरुषचरअचरके तुम सिर्ष्टकजदुराइ ७ चौपई तीनिनाथियुतका
लगोसाई सोतवरूपकहैंस्रुतिगाई उत्तमपुरुषतुमहिकहहेवा हरितवसरणमि
टिहिभवघेरा प्रकृतिपुरुषमहत्तादिकजेते तवमायाअनुगानिसवतेते पुरुषसं
ज्ञितवपाइगोसाई तवमहिमाहिकरवेवनाई तिनतेयहब्रह्मांडवनायो तामहलोक
कलपनागायो चरअौचरजीवजगनाना उपजेविविधिप्रकारसुजाना तुमसव
कारहुकरावहुस्वामी लिपतहोहुसकलघटिगामी जोविषयासनमुनिसवदुरहीसे
वहुनाहिदूरतेरहहो सोरहसहसएकसतनारी महासुंदरीअतिसुषकारी हावभा
वजुतप्रेमवढावहि मनसिजकरिवहुभांतिचलावहि तदपिनतवचितक्षोभिनहोई
तुमअषिलपतिजानेसवकोई पुनिदेनरोप्रगटतुमकीनी सकलजीवकहुअति
सुषदीनी पहनषमनिजलएकसुहाई परमतजीवपरमपदजाई कीरतसरिता
सुभगसयानी सोतिहुलोकसुषदसुषषानी ताहिसुनमनअघरहेनसेसा होइग्यानस
वजाइअंदेसा ०दोहा जोजनमैंकोधर्मरतिसवहियहसरिसोइ नाथकृपाकरिदेउ
मोहि तवजनसंगतिहोइ ९ अैसिशिवसनकादिसुरकरिअस्तुतिइहिरीति विधि
वोल्योतववचनमृदुकरिप्रणामजुतप्रीति १० चौपई भूकोभारहरणकेहेतू हमवहु
विनयकीनिश्केतसेतू तिहितुमप्रगटेजदुगेहा कृपासिंधुद्विजदेवसनेहा भूको
भारउतारगोसाई धरमथापसुषउपचलाई कीरतिविमललोकमलहारी प्र

श्री भा॰ प॰ ३२२

गट करी सब जग बिस्तारी। जदुकुल प्रगट कीन बहु कामा। जग हित कियो दुष्ट हनरा
ना कर्म किये बहु विधि सुखरानी। तब रहहिं गाइ मेरमनि शानी। अब रू निज कुल कर करि स्र
वनास भूसुर श्राप हेतु कियनास। देव हरि सब तुम्ह कीना। रहौ न कछु अब के काज प्रवीना
बरबस कस तस अधिक यवीसी। भूप हरि भयो तुम महि जगदीसा। इहि ते हम प्रभु बहु जदु
राई चलिअ अस्लोक निज जनम सुखदाई। पावन करिय धाम मम स्वामी। हम नव सरण च
रण अनुगामी। जस इच्छा तव जदुकुल केतू। करिय नाथ तस जग हित सेतू। ॥ सो॰ ॥ सु
नि बिरंचि के बचन अति श्रीपति करुणा प्रेम। जानि नाहिं न आपने बोले प्रभु मृदु
बैन ॥ २२ ॥ कहौ अनुमय यह बैन सुभ सकल मुनीस सनभाइ। भयो काज तव जानि यहु नव
जदुकुल नराइ ॥ २३ ॥ चौपई ॥ मो बिनु एस वन जिमि रिजारा। नास हि जग बहु करहि बिषा
त इहि ते नास हेतु कछु भएऊ। द्विज घट बिप्र श्राप इन लहिऊ। जो बिनु कीये नास सुरई
स नाऊ धाम मनो सब जग बीसा। अब इन करि होइ हि संघारू। अैहौं धाम जानु निरधा
रू। अैसो सुनि प्रभु को सुभ बानी। हरख्यो विधि अति सिसु सम मानी। करि प्रणाम हरि को ब
हु भांती। निज निज गृह गये असुर अराती। एक समै नृप सभा मे गारा। बैठे जदु तह स
ब पार वारा। निज पुर बिबिध उतपात अनेका। प्रभु बोले नव सहित विवेका। जहउ मपा
न होन पुर माहि। अब निज परायन करहु सब काहु। बिप्र श्राप भा कुल बहु भारी। यह ते
न हि मन सकिय विचारी। इहां न बसिबो मोहि सुहाई। गवन चहहु तन जहू पर माई

परमपुनीत छेत्र परिभासू चलहु वेगि तहं करहु सुवासू दष्य श्राप ससि को जव हरएऊ
यईरोग पुत्र सोतव भएऊ ।१५। दोहा गयो निसाकर तुरत तव कीन्हो मज्जन आय पुनि
सुंदर भाव पुषवर मिट्यौ सगुर करि आप ।१६। चौपई तिहि ते सव मिलि चलहु प्रभासा
जहां न हाडु देहु धन वासा भोजन विप्रन को धन नाना देहु धेनु पुनि करि सनमाना देव
पितर गन वहु सनमानी करि तप्पन मन सुरग रूपानी तिन प्रसाद सव दुष मिटि जाही
जिमि नौका ग्रहे सप्त न राही सुनि असि वचन सकयानि छिकेरी हरषे जदु मिहि सकहि न
फेरी तुरत चलन करि कीन विचारू निज निज रथ वहु भांति सवारू तव उद्धव पहल षि
विवहारू कछु चित्त निनित जिहि सुष सारू श्रीमुष वचन सुन्यो है काना तव उद्धव आ
तिसे अकुलाना देष आरि सम हाडु पराई गयो एकांत जहां जदुराई करप्रणा
म शिर सो करि जोरी कहत मे जमुद्दव वचन निहोरी देव देव मानिह्यो गीसा तव जस
सुन नर हत अघ लेसा जदुकुल करि संघारि गोसाई तजन चहत भुअ तुम जदुराई
विप्र श्राप मेटि न कहु साई तुम सम थके हे स्तुति गाई तव चरणारविंद जन त्राता छ
निसदिन तिन सके सुषदाता जीवन प्राण मोर धन तोहा जिमि जल परि नित मीनन ने
हा इहि ते सक पाक रियि सुष केरा मोहि संग लीजिय हेन चेरा ।१७। दोहा तव गुल कर
म विदु वना नर कहु मंगल रूप जाहि सवन पुर पालि करि नरन परहि भव कूप ।१८।
चौपई आसन अग सन गगवन नतव सेगा सवन समान षेल वहु रंगा मै तव दास संग अन ना

कृपाला नजिनसकौसंगहीनरष्याला बसनगेधमालाश्रमभूषन तवउनीरनक
रेउचिभूषन तवप्रसादभोजननितकरिऊं मायाभयतेहोनहिंडरऊं जोमायायामय
हितमुनिलेता करहिंमितनजपजोगग्रनेता ॥ गृहसनबसनगतिरत महमोहा रहि
यहमरहितवरिद्रोहा सीतलसोनिहुरयसुखकरिके लहहिधामतवग्रघपरिहरिके
सेजनहीननतनसबहीना ग्यानध्यानगतिवहूरमलीना तुमरेकियेकरमसुरत्राना थ्या
सनेबचनगमनमुखरना कहहुतपरससपरसुनतगोसांई तरहुदुस्तरतमजगुसाई नहि
थायेमोहिमायाकवहू बिनुउपयोगकियेप्रभुतवहूं परितुवचरनपलकविनुरेथे
हकुछनमोहिकलपसनतसेथे ॥ दोहा सुनिउद्धवकेवचनवरकरुणासिंधुकृपालमि
तजनिनिजश्रापनोबोलेवचनरसाल ॥ अनिलपतमग्रध्यायमहिलखिउद्धवनि
जहास सोनसिद्धिहितनाहिंसोकहिहै दिजइतिहास ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
त एकादशस्कंधे भाषायांमेंद्र भगवतउद्धवसंवादेषष्ठमोध्यायः ॥ चौपई महाभाग
उद्धवबहसाची कहीजुनेसोमोमनराची ईद्रशंभुग्रजमुनिसनकारी लोकपालरि
षिनारदग्धारी कहहुनसबहिदेकुछपधारिय सकललेखलोकनप्रतिपालिय भयेभा
रमपरिग्रतिभारी तबविरचमोहिकहिउपकारी तवमैलीन्हमनुजग्रवतारा दू
रिकियोसबछितिकोभारा सकलसुरनकेरिकीनोकामा नगजलमस्योसुग्रगम्य
निरामा नईकुल्लेरमपभयोकुलस्यायापरिहहिनिनजनिजबलकरितदा रिव

समानभीतरतें जानू सिंधुलीन नैं यह परमानू तनहौं मैं जब हौं भूलोका मंगलरहित।
सहित अघ ओका हूहैं सब नरक लिअनुमाना ईहां वसहु जन संत सुजाना हेउद्भव
सुनि चतुरथं वीना सुने हो इहित अघमर छीना सज्जन कुटंब बंधु सुत दारा तनहु ने
ह अरू सुष संसारा राषहु बिन्न माहि इक मोही विचरहु छित कछु लगे न तोही मन अरू
बुधि बचन कर गाहिये तहलग सब जागन खरकहीये यह सब माया ता तजगजानू
मन चंचल ते बहुतु बषानू जिन मान्यो यह सत्य सुजाना तिन कहु भयो भेद पुनि नाना
भेदहि भ्रम करि लषे न जोई विधि निषेध तिन कहु पुनि होई गुन अरू दोष कहे पुनि
ताको बुध भेद भ्रम महै मन जाको कर्म अकर्म करे श्रुति गाई तिन हीं पुनि अधिकार बना
ई मिटे भेद बिनु त्यागि न होई कहे वेद दे भौ तिहु सोई गुण अरू दोष न हि न एसा वे नि।
जमन भेद ताहि मन रोचे ॥ दोहा ॥ इहि तें इंद्रीय ग्राम सुमन नि अरू चलकर रहु सुबस तनि अगजग
मह बसा टु यह सब आतम मय जानि ॥ चौपाई ॥ पुनि सब जग महमोम जहु देषू अरू हुं का
र मम ता गनि पेषू सहित ग्यान विग्यान विचारू लषे एक आतम ज्ञेत सारू अरू जो भव ते
उपजै संतोषा तब न न ताहि व्यापै कछू दोषा इहूं लोक सुष की तजि आसा राषै मन हरि च
रण सु पासा तब नहि कोइ हह बाधिक होई परम सुषी जानहु पुनि सोई इहि तें विधि नि
षेध करि दूरी हीय धरा बहु हरि मूरत रूरी पुनि निहि ग्यान होहि हिय माहीं विधि नि
षेध तिन कहु कछु नाहीं तिन कहु विधि पुनि सहिज हि होई नहि निषेध ज्यों बहि हिंगि

श्री भा.
ए ३२४
नं ९
३२४

कोई सुखदुखवेगुलरो चनमानहि बालकसमआचरनहिहानहि करहिसहाविधि
जुनहरिकरम्म तिहिहिगकवहूंनआवविधरमा सहितग्यानअनेभवजवहोई सवभू
तिगतिलखेसुकोई सुहसोतग्रेसोजगप्रानी वहुरभवआनेसुषहानी सुनिहरिकी
यहसुंदरवानी तनजानिचकीमतिहानी हेनरपुनिउद्धवकरिजोरी कारिप्रणमज
दुहैवानिहोरी ३ दोहा हेयोगेस्वरयोगप्रतियोगपत्रगरजगदीस पालनयोगीजनननके
तुमजदुकुलकेईस ५ सोरठा तुमजुकह्योयहज्ञानिमेरहितकहजगतपति सोमोह
दुस्तरलागिकिहिविधछूटेनेहसव ५ चोपई मैविषयावसफिरेऊभुलाना पुत्रकलत्र
देहधनप्राना यहवनितासुरगृहमेरो मैकुलीनग्रहमितवहुघेरो लोभसमुद्रमगन
मनिमूढा तवप्रभतजगजनयोग्यारूढा इहतेतिहिविधिकहियगोसाई समुझोतभ्रम
मिटिजाई तुमजगदीसजगतपतिस्वामी मैतवभक्तचरणअनुगामी इहितेकहोकृपाक
रिमोहि उपजेग्यानदूरदुखहोहि तुमविनरेककवनजगमेसो ममहियसंसयसकल
नसेसो शिवविरंचजहलगिविवुधेसा तवमायावसजनहिअंदेसा तिहितेनाथजनहि
वुधअसो करमजरितभावहि पुनितेसो तोग्वनर्थतिहिअपेवसानहि नरदजीव
किहिविधिजगजानहि तुमचेतनवेधअनंतअपारा रमारवनईस्वरअवतारा प्रभुवि
कुंठसवेनसुजाना वुद्धिहीनमेकृपानिधाना जगतदुखकरिवेदुखपावा करमहीनसु
षलेसनआवा तवपदकंजसरणजहराई करहुउपाइसुलभसुषदाई यहसुनिउ

324A

द्भवकेमृदुवचना दीनबंधुबोलेकरिरचना ६ दोहा पुनिउद्भवपहजगतमहजेकोसंत
प्रवीन आपुभयेगुरुआपुकहकरिमोवासनाछीन ७ चौपई जहलगिपसुपछीज
गकोई हितअनहितनिजजानहिसोई ताहूपरनरतननपहनीको गुरुआपुहिआपु
नभलिजीको करिअनुमानिप्रगटप्रतिरेषी करहिआपनोभलहरिपेषी पुरुषशरी
रनिपुनजनकोई सोअपजोगजानहिभलिसोई तेसवमहिलषहिहरिएका सकल
सकतिगुनसहितविवेका एकपाददैपारचिपारा चारपादपुनिकोवहुपारा वहुममो
तिजगरचिउविनाई तिहिमहमोहितरतननसुषपाई जानतकरिपावेप्रनिमोही क
रैविचारजुकतगुनतैहीं ईडोहहचित्तनइआही किमिनिजनिजएअरथगहाही
सोयहलकतिकवनकीअहई भ्रमिअनुमानकरतसुषलहई एकप्रकासीविनु।
यहरचना कोहैयेकोकरमृदुवचना प्रनिसोवड्सपनाजगहेयई सोइंद्रीननतहोन
पेयई सपनमोजनेसुषदुषलहिऊ जागेवातसकलकिमिलहिऊ इहिविधआ
चहिअरूविनरेकू अंतरजामीसवगनिएकू करतविचाररहैदिनराती सोसवसुष कं
पावैवहुभांती ८ सोरठा तोहिअनुभवकेहेतु कहोएकइतिहासवर समुझेभलसुष
देतुजदुवरसुभसेवादद्विज ९ दोहा विप्रएकअतिसयनिसुनतरुलसुभगसव।
गात विचरतभूपरजदुलष्योतिहिपूछीसववात १० चौपई हेप्रभपूरनपरमकृपा
ला करिउपसननकपुदीनदयाला बुधिमहासुंदरकहपाई जिहिअवलंवफिरहु

श्री भा
० ३२५
325

सुघराई अतिसे निपुन रहिन जगई हा विद्य विचिछन गत रस जो हा बालक सम ।
विच रो जगमाही विनार हिन लखैं मन माही निसिदिन सब जग करति विचारा
अरथ धर्म हिन काम अपारा करें जनन नमो सिध न होई मिथ्या आयुस कहति न सो
ई तुम समर्थ अति निपुन गोसांई सुभग सुचाल कृपा निपुनाई करहु न कछु नहि चाहि
विसेषा विचरो जिमि वाउर करत लेषा अरूप माच जहु को जस रीती तुम ही लखो न
हि भय गति श्री नी काम लोभ जग अनल प्रचंडा तिहि कारि लखो हरगध भय षंडा तिहि
ताप न करि तुम हिन नाए लख ऊं महा मुनि कों प्रनाए भरे अनेर ताप न हि लेसा तुम
हि न लषि ऊं सब रहित कलेसा विष्णु वरो जिमि पाइ गयेइ तिहि सुष अधिक अध
कत्यानेइ ४१ दोहा विषय रहित आनेर जुग संग दोषनहि कोइ कहहु नाथ निज
चित कहि आनेद कारन सोइ ४२ सोहुरा जइ वरपूछ्यो विप्रवर बहु प्रकार करि जो
रि कहन लग्यो द्विजराज तब जिहि न बुद्धि कछु थोर ४२ चौपाई द्विज इक भूप सुनहु सुघ
रानी गुरु अनेक मैं कीन सुजानी तिनते पाइ बुधि निपुनाई फिरो मही गत मद जड़
ताई तिनते मैं मति लीयन पराजू तिनके कहौं नाम सुभ साजू छिति अरु गगन पवन
पुनि पानी पावक शशि रवि अग्नि जग रजानी बहुतक पोत सिंधु अरु द्वि गा कुंजर म
धुहा वहुरि वनेमा मीन कुरंग पिंगला व्याल्यू कन्या कुररि पछ गुर वाल्यू मकरी भृंग
कीट सर कारु एमगरु बनुर विंशाद धारु तिनते मैं कछु गुन न पली नो सो सबते

325 A

सनकहूऊंप्रवीना छितिगुणप्रथमलष्योमैजवही तलधारिगुणमान्योतवही रहैजी
वसवधरनिअधारा पुनिमूरषघोरेवडुवारा करहिघनोअपकामअनंता सोनहि।
षमा तंजिमिसंता परवतवृछवसैतहभारी लषेसकलमैजगउपकारी मूधरसिधी
जगउपकारा पराधीननगकोगुणधारा कोघोरैपुनिफेरलगावै कोऊपवंडैसमफल
होऊपावै २४ दोहा इहिसिछाछिमिपेलही नृंनपनिजमनजानि अवगुनिपरनहि
गुरुकियोसोपुनिद्वैविधमानि २५ चौपई प्राणवायुकीवृत्तसमाना करैअहारमुनी
समुजाना रूपरसाहिप्राणनहिचाहे त्योंमुनिभोजनकोअवगाहे रसजुतगतरसलषै
नसाधू करिअहारजिहिप्राणनवाधू दुसरोपवनफिरैजगजैसो काहूंनलिपतहोइ
वहतैसो सुधअसुधवस्तुकोपरसै नहिगुणदोषताहिकोदरसै तैसैहमुनिविचर्यो।
एकमाही वचनकरममनरतैनताही पुनिनानाभेदनमहिपरई नहिपुनिहृदयभेद
कछुधरई ज्योंपुनिपवनगंधसंयोगा भयोलिपितजानेसवलोगा सदापवनवहएक
सरूपा लिपतगंधनहिपवनअनूपा पंचभूतयहरचितशरीरा अहेविकारगेहमति
धीरा जोगीतामहिलिपतहोई औरलिपतगनेसवकोई ज्योंअकाससवगतिहैएका
घटमठकोरछोटवडनेका ऐसेसवजगमैहरिएका अगजगमैकरिलषेविवेका
जोसवयहजगवस्तुअनेका मुनिदेषैसवमहप्रभुएका ज्योनभिलिपतकहूंनहिहोई
त्योंआतमरेषेपुनिसोई प्रेरतवायुमेघजिमिधावै नहिअकाससपरससोपावै २६

श्री·भा·
उ·कां·३२६

326

२८ सोरठा कालकरमसकनहेरु नामहिसेगमकरियपुनि सुनविनसुवनीगेहू सवते
न्योरीजानियहु २७ चौपई यहुनभकागुणतोहिसुनायो अवसुनिजोजलतेगुण·
पायो निरमलमधुरपवित्रसुभाऊ सवसुखदायकसीतलताऊ सदापुनीतहरैमल
जीको जलसोयहगुणमहासुनीको तेनवंतअतिरीपतनपाला रहितछोभजहु
नहसवकाला सरवमछनिहिमलनहितारी सिंवतककवहूकरेनमारी उदरमात्रजेलेइअहा
रा जानहिनहिकछुजगविवहारा औरअगिनगुणसुनहुविसेषा रहैगुपतिनिहिप्र
गटनदेषा प्रगटकियेप्रगटेपुनिसोई लघुतेप्रबलप्रबललघुहोई परिग्रहप्राप्ति
आहुतलेई पापमालकरिनिहिसुखदेई त्योमुनिअसनिवसनविवहारू परिग्रहग्रा
भोगीसुखमारू वहुरअगिनवहुएकसरूपा क्रियाविकारवहुतअनुरूपा त्योंआत
मसुरपसुनरमाही लषियअनेकभांतिपुनितारी बहुविकारतेरहिनसदासोमेजा
औरजनीसमभासो जिमिशशिकलाघटेपुनिवडई पुनिप्रतिपदाप्रगटनहिलहई·।
त्योंयहवालअवस्थानेरा आतमएककहैअववेरा २८ दोहा वहुरकहोनपनोहिअ
तिगुणपावककरिजानि गह्योतुमेचितचावसोमुनिहिनसुषप्रमानि २९ चौ·
कालकरमप्रेरतवहप्रानी जनमहिजातमाहिसुखदानी वालजुवापुनिवृधदिषा
ई पुनिश्रदइछनमहहोआई हेवरनिपावककरसरेवा जिमिपावकदीपककरमे
वा त्योंजानतत्रवेनाहकोई तिहिरीसनेसोपुनिसोई दिनप्रनिरहुजातहेअैसेही

पकछि घाजात चलिजैसे बहुरकहो रविगुरुवहिलीना गुरु विसेयन रपसुनहु प्रवीना
जिमिपतंगकरसोजलसोवै कालपाइ वहुरौजगपोवै कवहूंकतिहिं ऋभिमाननहोई
तज्योगह्योचित ऋाननसोई तिमिमुनिकहहिसुनैसवरेवै. द्दद्रीगतिविषयासवले।
वै ज्योघटिजलरविविंवसुहाई तहरववह ऋाकासरहाई लिपतनकहूंवसेसवठा
मा त्यौंही ऋातमसवऋंगधामा भेदद्दसमानहिनहिं ऋैसे हैरविहरप्रकासकजैसे दहते
तजैसकलकोसंगा करैनेहतौसुषहोइभंगा कवहूंकहूंकाहूसोकोऊ करैनेहदुषपावै
सोऊ जिमिकपोतपायोकरिनेहा ऋतिकलापभाइदुषकोगेहा एककपोतवसेवनमा
ही प्रियसंगऋतिसुंदरवाही देपतिमनऋतिसयऋनुराग निसिदिननेहनछूनकविा
राग मनसोमनऋंगनिसोऋंगा वंधेनैननैनविहंगा ऋासनसयनऋसनेऋरुगवनू
ववनरचनलेपटिप्रियरवनू निसिदिनमिलेकरमसवकरही एकसंगनिरभयवनचै
रही भयोकपोतप्रियावसहोनो हावभावकरिमनहरिलीना जोजोचाहचाहिसोनारी
ऋानिदेइसोसहिदुषभारी सोनारीवसभोइहिंभांती जिमिनृमलिपितरहेदिनराती रू
रोहा तवनाकीतियऋंडदुनि उपजायोनरपराज पुनिदंपतिमिलिताहिसेनेहिकियो
तनिकाज २२ तवविधिवसदिसुतभयोसुंदरकोमलऋंग पोषहिनितप्रतिताहिकोव
हुतभांतकरिसंग २२ चौप० कोमलवचनसुनहिसुषपाई ऋंगसोऋंगपरसमनलाई
वालचरित्रदेषितिनकेरे दंपतिसुषमनहोतघनेरे चलेउऋसंगऊडिपुनितिहिफेरहिंफिर

श्री भा ३२७

फिरतासुवरनेहसलहेरहि हरिमायावसपुत्रसनेहा लिपतभयेहोउसुतवितदेहा एकवार
निजसुतकेहेतू गयेलेनचारानृपकेतू वनमहिफिरतभई बहुवारा ढूंढतकनकहूंमिलेन
चारा तिहिसुतनिकरव्याधिरकआयोऊ वालकनिरखजालविथरायऊ तिनलख्यो
लख्योनहिजाला आनवंधेतवहीखगवाला तापीछेचारोलेआये ग्रहमोतिनतव
वालनपाये जननीतवरंखेनिजवाला जालपरेसुनिवहुताविहाला धाइरुदनक
रतवहुभांती सुनहित जालपरोअकुलाती तवकपोतरेखसुतनारी वंधेजालजुत
अतिदुखभारी तवनानाविधिकरहिविलापू सोचेनिजअघकरिपरतापू हे प्रभुकी
नपापमेकीना जिहितेविधितारलाइखहीना यहपतिव्रतानारिसुकुमारी सुनहितयह
सुरलोकसिधारी सुनेघरसुंदरमोहित्यागी चलहुलोककोहि वडभागी मेमनिमेरमा
गहतरीना पूरवअघकोउकियोमलीना ॥१४॥ इहिलोकमेसुखरहितमेपारलोकसा
धननहिकियो वपवरगहतगतसुभगभामिनिमंदमतिकपटीहियो अवतजियोप्रान
निरानसुतवितवहुतदुखजगकोसहै इहिविधिअनेकविलापकरिपुनिगयोतहूनह
सुतअहे ॥१५॥ लखिपुत्रवनिताइखतअतिसेआपुवंधनमहपरयो तिहिपाइव्याधाम
हितपरिजनचलेयोग्रहआनेरभसो इहिविधिकुटंवप्रसक्तजेनरसदाग्रहरतिहूरहे
सुतसहितत्रियग्रहसंपदासुतननसहिवहुदुखतेलहे ॥१६॥ दोहा यहमानवतनपाइवर
मुक्तिहेतकरिहेतु भजइनतहंगोविंदपरमूढदूरैनहिचत ॥१७॥ सोरठा सुतदारागृहवं

धुकरहिसनेहपतंग्रसम तेनरदुहुंदिगग्रंधपरहि महातमकूपतेई २७ सोछयहन
रपाल कहीजुमैगुरुग्राठकी सुनतमिटैजगजाल कृष्णकथाअघग्रोघहरि २८ इति
भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे भाषानिवंधे ग्रवधूतपाख्यानेसप्तमोध्यायः ७
चौपई ग्रजगरग्रादिकियेगुरुजेते गुनमैगहेसुनहुग्रवतेते ग्रप्रथमभागकहोइहिवा
ता नवगुरुतेसोष्यासुषदाता जेतेइंद्रीसुषनिरधारा सरगनरकमहिसवसाजू ज्योंसु
करकूकरसुषभोगा त्योंहीविषयभोगकरिलोगा पुनिसोसुषविनुमांगेग्रावे लिषोग्र
कनिहिकऊनसोवे ज्योंदुषचाहिकरैनहिकोई विनुपूछेग्रावेपुनिसोई इहतेवु
धसुषचाहनचाहे सदानामहरिकोग्रवगाहै घोरोघनोस्वादनहिवारा कटुग्ररु
मधुररहितगुनवारा हरिइछ्याग्रावेकछुजोई भोजनकरैमानगतिहोई जवनहि
ग्रावेकछुकग्रहारू सोइरहेकरिहेवाविचारू नहिकछूकरहिकरमव्यवहारा हेइंद्री
यजुतवलतिहिसारा मनइंद्रीयजीतेयहभोगी यहग्रजगरगुणसुभगसुहागी ग्रति
प्रसन्नहियपरमगंभीरा ग्यानग्रगाधभरेसोनीरा लहेनथाहिपारिकोपावे ग्रवका
रोगनिरागमुहावे निश्चिलसदानीरनिधिजैसे सदासर्वदामुनिरहतेसे वरषाकाल
सरतसवधाई करहिप्रवेसजलधिमहुजाई नहिसोवढेनेकवढेकवहूं नहिग्रीष
मरूषेपुनिनवहूं २ दोहा ग्रैसेहिमुनिकहुवहुतविधिज्योपाइजेनपकोइ ग्रसनकरा
वैसहतरसवसनरेइपुनिसोइ २ सोरठा दानमानसनमानिवारहिवड़ाई वहुतवि

श्री·भा·
१ ३२८
328

धि पुनि कोमिं रासन लेइ सो वसन उतारस व ३ नहि कछु हरष विषादि जैसे जलनि
धए करस तिन्हकों विसमय या चारि जे नारायणपारत ४ चौपई वसन विभूषन युत वर
नारी तिन्हि कों निरषे सुभग विचारी ता विभावति न कौ न पिमहा तो हि काम वसता हि अ
रूढा ज्यों पावत गही पकुपर मरई त्यों मुनि संग ही पनेजरई यह ते तिय जानिय सुर माया
नहि लोभाय कबहुन हि काया भोग बुद्धि अरु कै जन कोई निष्क्रिय तिन्हि पतंग गति हो
ई ज्यों मुनि तम्प हो इ नर पाला ० जिहि ते कबहूं न हे अनुराग मधुकरि वृत्त करै वडुभा
ग थोरे वरे ग्रंथ न गज्ञैन करि अभियास लयै पुनि तेन तिन्ह तें सार सार हरि पंथ गहै
सो मुनि जिमि कहहु सब ग्रंथ जिउ मधुकर बहु फूलनि माही गहे सुगंध पेडु नहि चाही
मधुकरि सो इह भांति वषाने मधुसंचै इक जग सब जाने धने गेहनि तें लेइ अहारु
उदर समइ इक ही वारु भोर आनि संधा नहि राषे संध्या आनि भोर नहि राषै ५ तो हा
संग्रह कछु अन करै मुनि करै तौ होइ कलेस जिउ मधुमाषी सहित मधु विनसै आ।
पुनरस ६ चौपई तरुन मधी युवती जो होई ताहि न पर परसे बुधि कोई परसे कातिहि
बंधन गाढो जिमि गय इक आ प्रति दृढ गाढो अव सो जानि मतको रूपा भजैन बुधि क
वहु निहि भया कोऊ इक भजै गयेर समाना तिन्हि मारे मिलकैं गत नाना कोधन संग्र
ह करहि वनाई तिन्हि औरष कों हरि ले जाई नहि षायो न हि दीनि कतनू संच्यो धन द
यकरि गनि मान् सो धन व्यरथ होइ पल माही ज्यों मधु सब मधुहा ले जाही मधुमाषी

ज्ञेअसनाद्वा ६
पाला

६

अरु कपन सुभाऊ प्राण सहित धन जाइ कुठाऊ उद्यम विना होत सुष देषे सब पुराण श्रु
ति संयति लिषे गहो हमै निज हित भल पाको भिक्षक यह आये तिन तुम्ह को प्रथम सु
भोजन ना कहि देई यह तें उद्यम तजि हरि सेई अरु मधु हा मधु कौ ले जातू वो तेंहि
न और को षातू हरि गाथा विनु और न सुनिये ग्राम गीत बुध जन सब तजिये गीत न
त्य अरु वाद्य विसेषी सुनहि ग्राम वनिता कहु देषी व्याधि गीत हरना कहु जैसो सुनै उ
को गति पावे तैसो ७ दोहा सुनो और गति हरण की मृग गीत सु विसेषी धीर ग्राम या विता।
संग करि रहो न सो ध्रुव वीर ८ सोरठा सुनै जु तिन को गान सो वस तिनके होइ पुनि जा
त रहे विभान सुत पुराण जुत भयो जो ९ चौपई मुनि रसना आकस तिन होई तजे रस्वा
द गुन रस पुनि सोई रसना वस होइ जिहि जियना सै मीन मरै रसना वस आसै जे मुनि
विषय त्यागि वन जाही नव वस विविधि उपाइ कराही जतन जतन इंद्री वस कीना
रसना होइ न तासु अधीना रसना तिन को प्रवल करावे रस संयोग जब हि सो पावे ज
उ लगि रसना वस नहि होई तउ लगि श्रम सब सिद्धि न कोई रसना वस न वस सब वस जा
निय और न कछु उपाय मन आनिय इक इक इंद्री वस जे कोऊ दुख महि गये अयोग।
ति सोऊ जो नर होइ पंच वस कोई कैसोन माइ अधिगति कहु सोई वहु पिंगला में गुरु की
ना तासन मैं सिष कछु सुभ लीना सो तुम सुन हु न पति विन लाई जिहि ने ह्रदय विमल
हो जाई नगर विदेह न हो ति हि वासू नाम पिंगला रूप निवासू तिन सिंगार कियो वहु

श्री भा.
ए ३२९
329

भोगी काम चारिनी सुभगा सुहाती निकस भई ग्रह बाहर ठाढी धनी पुरुष आसा तिहि
वाढी वडो राज पथ सुभग वजारु चला जाइ को तहा निहारु सुंदर नर को आवत देखै
आवे गो यह मन महु लेखै ॥ दोहा ॥ जब वह आगे जाइ चलि तब ओरहि पुनि चाहि वह
आवे चलि जाइ सो तब वड दुष भा याहि ॥ चौपई ॥ पुनि चितै कोऊ वड धनवानू आइ
मोरि करिहि सनमानू इहि विधि करत मनोरथ नाही निद्रा रहित भयो दुष वाही कबहु
सो ग्रह भीतर जाई पुनि बाहर आवै तिहि ठाई इहि विधि अरध निसा निहि वीती भई
सोच वस हृदय विपरीती धन आसा सब ओ मुष जारु हीन चित अति विषय विलासु ।
तव तिहि आपन करि अपमानू सब ते हीन आपु कहि जानू पूरव सुकृत तासु कोरि को
ऊ तिहि ते प्रगटे उभल मति सोऊ जो लगि मन नहि होइ विरागा तौ लगि मिटिय न भव
अनुरागा यह भव है सब दुष को मूला त्रिविधि ताप सरु वहु विधि सूला ममता वेध्यो
जी चवहु भोगी ते छेदन असि सुभग सुजाती वीतराग विनु भेदन हि छूटे ममता वेध मो
हि नहि छूटे जा को मन है विषय विरागा सो सुकृती जानिय वड भागा विनु हरि कृपा
न उपजै सोई जव तिहि प्रगट पुन्य कछु होई इहि ते सव साधन करि साध जिमि उपजै
वैराग अगाध ॥ छंद ॥ इहि विधि विचार निहार निज गति दीनतन की पिन भई अगये
दिन तिहि हनु ते पाछि जाइ अति करुना मई यह जब हु मम अग्यान ममता विषय वस भ
ली गई यह नुछ नर प्रति चाहत सुष को करी मिमनि मति गई ॥ यह वसत प्रभ ममनि

329 A

करसे नत वित्त ग्रह करुणाकरा तिहि छोड़ि दुर्लभ पद बिन लोभी दुखभ स्थान रवावरा तिहि
पासमे सुष चाहना करि भजी मूरष बावरी रुधिर मज्जा मेद अस्थि बनाइ बपु संहर करी
१३ दोहा तवारोमन बमरू ज्ञान लग्व हसहित ममगेह उरे द्वार न वनि त्यप्रति बहु मलजु
तन देह १४ सोरठा तिहिमान्यामे के न मोसी मूरष जगत को छोड़े ग्राकमलाकंत दिन
धोयो सब बारही १५ चोपई ऐसेसे नर प्रति निजतन हारी बाह्यो धन धिग मे दृग वारी
इहि विधि हम पुरुष में इक मूढ़ा तजि अच्युत मन कामक रूढ़ा इहि विधि पुनि निज मन सोक
हई अब अस किकरऊँ मोहि सुष लहई ईश्वर सब जग अंतरजामी प्रतिपालक भक्ति
न अनुगामी ताहि निवेदन करि उरधीरा रमौ ताहि संग गहि मन धीरा रमा रहे जिमि प
गल पदाई त्योंहि में अब रहौं सदाई औरकहासुरनर प्रियकारी है कालग्रसति सब
आपुहि मरहै इह मे निश्चय निज जिय आना कृपाकरो मोहि श्रीभगवाना मेद वुधि मे
निपट अयानी सो कह विरति हीन सुष हानी विषयरहित मो मन जिन कीना भनेति नि
हि जिहि मज हिप्रवीना १५ दोहा विनु हरि कृपा निहोइ अस विरति कबहु कहु काहि जो
भव नासे छिन कमहु सुष उपजे हिय माहि १६ चोपई पुनि गनिका निज मन यह ठानी
नहिं मे मर भाग्य अब जानी तो मै होती पुन्य विहीनी तो प्रभु विरत मोहि कस कीनी अस नि
रषि त्याग बड़ भागी ताकरि ग्रह वे धन सब त्यागी त्रिलोई सकल सुष षानी अब भ
गवत रूपो मे जानी तासु अनुग्रह अवधि सीमा जाइ शरण भ जे होनितई सा छोड़ि डर

ड.

श्री·भा
१३३०

सामन धरि धीरा यथा नाभ निरवाह सरीरा इहि विधि कस्यो चरन को ध्याना इसों
ताहि संमय हरि जीव माना यह भव कूप परै जे प्रानी विषय रोग करि द्रिग हैरानी तेहि
काल अहि ग्रसित न घाई हरि विकौ कारै तिहि जाई अब यह लोक भोग परिलोका
सा विधान होइत जि सुख अोका तब यह आपु हि आपु उपारहि कालग्रसित जग यह
उर धारहि २८ छैद यह जानि कै संसार सुख न जि भजिय सु इरसा बरो सोक सुख त
तारक रूप रहे तिहि पद अनुसरो यह भाति विमल विचार दृढ करि आस तजि तिहुं
लोक की बहु विगलेन भई बिसर मानस भूपत जि मति लोक की २९ दोहा सीतल चित
स जागई लही परम आनंद यह सिछा मैं ता हि सन लही सकल सुख कंद ३० जह आ
सा न है परम दुख सुख निरास न है जानि ज्यों अग्रैं सात जि पिंगला सुख तन भई न्र पमनि श
पुनि न च मेरे अध्याय महं कुरर आदि गन लीन सो द्विज कहो न पाल प्रति यह बरनन
चित दीन ॥२२॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा निबंधे पिंगला
चरित अष्टमो ध्याय: ॥८॥ चौपई ॥ जो मानि जहि तसंग्रह करई ताहि हेतु नर बहु दुख भ
रई जबब हु संग्रह तजे विचारी तब नर पाव अमित सुख कारी कुरर विहंग आमिष
कहु पायो सो ले गगन पंथ वह धायो तब तिहि और बलि न दुख दीनौ तिन पुनि सो गि
ता सु करि लीनौ तब वह सुखित भयो बहु भौती कुरर सो बपदल ई सुहाती इहतें सं
ग्रह तजो न पालू अब सुनि सीष विये गुरु पालू न हि मैं चहौ मान अपमाना ग्रही स

स

नचिंतानहिंमाना आतमरतआतमसुषमोंही बालकगतिविचरैंछितिजोही यहजु
गर्द्धजनसुषमयजानूं चिंतारहितगलितमदमानूं गुणातीतजेहरिपरलीना तेज्ञा
नहुजगसुषीप्रवीना अतिविमुगधमेजडमतिमेरा तेसुषबुतलभुआनंदकेरा १
दोहा कोइकविप्रसुबुधिवरताकेकंन्याएक ताहिवरणहितसज्जनगहुआयेसहि
तविवेक २ चौपई तिहहिनताकंन्यापितुमाता गयेअोरकोपुरविष्याता तवकंन्या
तेंघकरिसनमाना आपुहिकरनचाहिमनमाना तिनकेभोजनहितकहलाली कं
डणकरनलगीसुभचाली ज्योंज्योंकरिप्रहारपुनिसोई त्योंत्योंकरिकंकनधुनिहोई
लजालुततिनसकलउतारी इकइकपवमेंदेहुधारी पुनिधुनिभईयुगलकेराषेत
वइकवहुरदूरिकरिनाषे तवधुनिरहितभईनरदेवा मैलषिलयोतासुगुणभेवा
सोगतत्वजाननकेहेतू तसोगयोमैंनृपमनिकेतू बहुतसंगतेघनोविवादू देषुनि
मिलेहोइसंवादू यहतेयोगीरहैअकेला तवसुषपावेहेनरपाला आसनमनरे
हमनजीती दृढविरतहियअतिप्रीती लैबिछिपरहितचिंतहोई तवसमाधिसुष
पावेसोई सालकवदेरजनतमघटिजाई त्योंयोगीवपुरहेजडराई ३ दोहा इरसनार
जवरहितभाभीतरलषेनताहि जानिनिकरसरकारजिमिलष्यानतपकोआहि
४ सोरठा सरसधोकरसोइ तासुचिंतितनमयतनहो गईसयनढिगहोइ इहुमिसहि
तजानसा ५ चौपई जैसेजनतेडरहिभुअंगा होहिगृहासदातजिसवसंगा साविधा

श्री भा.
प॰ ३३१

331

नबोलहिंग्रनियोरा लखैनकोगतिगतावियधोरा ग्रहस्रारंभजानिदुखमूला जोकोउला
रे नाहिनितसूला परिग्रहवसत्रा हिंसुखकरि नाना यहगुनमेगुभगसोगुजाना उ
रणनाभसिद्धामेलीनी सोग्रवसुनोसरासमीनी श्रीनारायणग्रादिसुएका निजमा
याररचिविस्वग्रनेका सनरजनतमकरिबहुविधिप्रानी पुनिसंघारकरैसोजानी पुनि
वहएकमुद्रसुखरासी प्रसंनिगुनंकोईसप्रकासी विधितेंग्रादिकतिंजेप्रानी तिन
कहुग्राग्रयसोसुखदानी सदाप्रकासकग्रानंदकंदा निरूपाधिकमनसुखप्रदवंद्य
ग्रापुहिकरिसबपुनिप्रतिपालै पुनिसंघारिग्रापुजगकालै ओतपोतजगमेपुनि
सोई तिहविनुंग्रारनहेजगकोई इहिसिद्धामकरीकीलेई सोमुखिग्रोरसिमन
निमुखरेई ६ तहा जहजेहनाकोजायमनबसहिबहुमकरिनेह रागद्वेषभयका
हुविधसोधरनोकीरेहे ७ जैसेभ्रंगीकीटिकोधरै जनुग्रहग्रानि नोकीभयतेजंतु
वहताकुरूपहोइजानु ८ चौपई सिखाहितमेपगुरूकहेउ सुनहुजेनिमननसे
कहुलहेऊ विरतविवेकहुगुममहेहा गयोवालमिमिगुवानिवेहा ग्रावेजरामहा
दुखमूला पुनिदेमरणलहायहसूला पुनिमनमयमोलखोविचारी सिवासानभ
छकनिरधारी नायाग्रर्थपुत्रपसुगेहा बंधुवरगबहुमतपसनेहा बहुविस्तारैमा
हितप्रानी लालनकरैबहुतसुखमानी सोतनग्रनतनसेदुखदेही पुनिग्रागेकहुवी
जनपेही जैसेवृक्षबीजबहुकारिके नसेग्रापुग्रागेधरिकरिके त्योंइहनसेग्रा

पुरुषपाई सहै घनो दुख जमपुर जाई॥ रसना रस निमित्त इक थोरा बेधिहि इहि
पुनि वर जोरा भोजन मात्र प्राण नित चाहै नयन रूप को नित अवगाहै जल कहु
तृषा शावर प्रति स्रवना मैथुन सिस्न चाहि नित नगवना कोमल चाहत्वचा नित चा
हे नासा सुरभी गंध उमाहै चरण गवण कारि नित प्रति श्रम कर मा माविधि सब पह क
रहि विधरमा तिन के वस यह जीव अभागी निसिदिन उ नहि रहै अनुरागी एक पु
रुष के ज्यों बहु नारी है अमूढ तिहि संग दुखारी ते नर वध्यौ रहै सब काला धरै देह
बहु होइ विहाला ॥ दोहा यातें ममता देह सौं तजिये सहित विवेक तब यह पावै जी
व सुख भजहि कृस्न गहि टेक १० चौपई हरि निज माया गुण विस्तारी नाना विध ब
हु देह सवारी देखि जीव न तब तोषित पायो मानुष तन तब प्रभु प्रगटायो देखि जीव त
ब भयो सुखारी तहां वास को अति रुचि धारी नर तन पाइ भजै जदुवीरा जानहु सु
फल तब हि मति धीरा अति दुरलभ यह मानुष देहा है अनित्य पुनि सुख को गेहा
है इच्यार फल सब सुख दायक जजन जाप साधन सुखदायक जो लो पतन न होइ
शरीरा पहिले जतन न कर हि मति धीरा विषयन तजि न भजिये जदुनेरा तबै जीव पा
वै सुख केरा जिहि जिहि जोनि जाइ वस स्वासा विषय भोग तहं मिलइ सुपासा य
हतें सकल भोग सुख त्यागी भजिये कृस्न नित ह्वै अनुरागी बहु गुरु ते सिक्षा मेली
नी ग्यान पाइ हरि पर मन दीनी बिचरी महि तजि संग न पालू बहु अनेक जगत

श्री भा.
ए. ३३२
332

भयकाल ॥ २१ ॥ छंद ॥ बहुत गुरुहि बिनु सुद्ध ग्यान न होइ नर कहु जानिये यह पाव।
कुंदरस सुमति सकुन लोहि गहहि गुरु मानिये ब्रह्म विषय अनेक विधि करि कहे मुनि सु
बतानिये २२ दोहा परिमारथ गुरु एक नर एसब सति गुरु मानि मैं इन तें गुन सी
ख सब भयो सकल सुख खानि २३ सोरठा अइकी कहि उपदेस तातें विप्र वर ग्यान निधि
पूजि तमाहि निरंस पुनि मुनि कीनि पयान तब २४ श्री जदुनंदन हीय धारि वचन वि
प्र के सुभग अति जगमहि हरषहि निहारि हम प्रकृत्य भये राजरिषि २५ मीन कपोत कु
रंग पुनि कन्या कुरर पतंग पन्नग ग्योरग ये रपि लिख्या है वके अंग २६ मधुहा म
धुकृत पिंगला तीनि रेऊ दिसमानि धरा आदि गुरु और जे उपदेसक कुमानि २७ देह
गेह संबंध जन मम जीव सह बुनि मरे नहि ग्यान मक कु बंध इसमें चुर नन होइ यह ॥ २८
इति श्रीभागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषा निबंधे चतुर्विंशति गुरु आख्यानं
नाम नवमो ध्यायः ॥ ९ ॥ चौपई ॥ उद्धव में जो कहे सु धरमा आश्रम सहित वरन के करमा
भक्ति विरोध न जासो होई सो सब कर्म न जे जन कोई नारद पंचरात्र सुभ ग्रंथ तिहि
अनुकूल करे हरि पंथ सा विधान फल रहित सराई वरे करम महरिपद चित ला
ई करत करम सु दुख भुग्रई फल विपरीत लखे सब ठाऊ नव यह स हि नहि होइ
अकरमा फल पावे उन मन आभिरामा नहि लगि बुधि अहे जगना ना सो सब उद्धव
विफल निताना इहि तें न जे विषय आरंभा होइ मान गति बहु रंभ आरंभा सपन मनोर

पकोसुखजैसे ऐसहिभ्रमसवजगकौतैसे तजैप्रवृतकरमसगजेते करैनिवृतक
रमसवनेते वहुतभांतिनितनतेवविचारु जानैसवमिथ्यासंसारु अरुकरमकोआर
त्यागे सुभअरुअसुभनहीअनुरागे यमनितकरैसहामनलाई नियमनयथाश
क्तिसुकृतिगाई आसनतजेनियमयमकेरो उत्तमगुरुकोहै रहे चेरो मनसरमानरहित
दृढनेमा व्यरथअलापरहितजुतप्रेमा आलससकितिनिश्चलचितकरई प्रियाआहि
ममतापरिहरई जायापुत्रगेहधनवंधु सकलभूलतकहप्रभुजगवंधु उदासीनसम
तासवठामा इहिविधिलषइ आपुनहिकामा ॥ दोहा करमवस्यकरिहैहिइतिनते
रहौदूरि सदाप्रकासीएकरसचेतनअरुभरिपूरि ॥ चोपई प्रगटथूलवपुहेषियए
हा ताहिकरियेचेतनवहहैहा सोऊतनचेहसत्यनहोई चेतनसंगजानियेसोई वह
न्यारोरोऊवपुतेजानू करैप्रकासदुहूनकोभानू अगिनप्रकासदाहकजैसे आपुदूर
पावकलषिऐसे दाहकदारुप्रकासप्रकासी ऐसेआतमहैअविनासी जैसेपावकै
दारुप्रसंगा लघुउपजे पुनिप्रवलअभंगा पुनिनानाविधिहोइप्रकारा यहआतमय
हविधिनिरधारा प्रभुमायागुणकृतयहदेहा मूढकियोतिनतेअतिनेहा ताहिसंग
वंधनभाआही आदिअविद्यावसयहआदी जवउपजैविद्यापुनिताही वंधनकटै
होइसुखवाही इहितकरैउपायविचारी उपजैविद्याप्रतिसतकारी हेकअजनमा।
अरुअविनासी चेतनघनपूरणसुखरासी उपजैनसेवहुरवपुधरई परमसुधिनहि

श्री॰भा॰
प॰३३३
333

कछु वह करई ऐसे देहा कि सुष जेते तिन ते ममता तजि सुभ चेते सब महं एकल वै
जब प्रानी तब यह सुखी होइ सुष हानी आदि अंत अरनी गुरु करई बचन श्रवण मथन
सुभ धरई विद्या पावक सम प्रगटाई देह कर्म ईधन समुहाई जिमि वह अनिल जोत
गनि होई तिमि ग्यान मग तिल षिजन कोई यह विध जो जानहि नहि मूढा तिहि कर्म
निमे होइ अरूढा होइ करम फल के नर भोगी भव दुष सहहि करम वस रोगी जिहि जिहि
लोक जाइ सो प्रानी तिसि दिन सहहि महा दुष षानी सब कर्म चर नजहि लोमसु अग्यादी इन
को जो कोकहै अनादी यह जगपुनि तिहि हि सिते सो पलइ करहै न सो पुनि देसो होइ।
अवर विधि ग्यान प्रकारा मन तिह संग ता सु आकारा ताके हृदय ग्यान नहि होई जन
मजनम पावै दुष सोई करम बहु रकरमन को करता दुष पुनि सुष भोगन के भरता
ए चारो नहि अहहि सुनंतू इहि तइ नाहित जो भलनमंतू ३ सोहा सुषिनहि हे यत ताहि
कहूं जो मग विदुष कहाइ तिमि दुष मूढन लषिय जग करमन सुषक हू काहि ४
सुष आवे दुष जाइ जिमि मघ विविधु को मानु सो विधि को ऊन जानि जिहि मतु न होइ
निदान ५ चौपई जिनि प्रनि काल ग्रसे जिहि जानू तिहि सुष कहां वसे ते मानू जिमि
काहू मारन के हेतू गये बांधले बिमन निकेतू अस्थ सललेच हु रि सट है कहहि म
को जन कारि गाढ कहां ताहि कि भिभोगन सुहाई ऐसे हि सुष नरक हु समुहाई पुनि
सुरपुर सुषइ हि विधि जानू राग दोष मय गुन अप मानू जिमि इहि लोक विबुध सुरते

सो तिनके हेतु अनंत कहु कैसो कोऊ तिहिं हेतु करै उपचारा होइ निसिध विघन सं
चारा जिमि खेती मैं विघन अनेका लहै सरग कोऊ सहित विवेका पुनि जो लहै उसु
थिर नहिं जानू नसर वेग नहिं सुख सम मानू इहां करम को करै अरंभा विघन न हो
इ करहिं तजि दंभा तब वह विबुध लोक चलि जाई सुनहु तासु गति है सुखदाई जा
इ पुन्य बलि सो सुरलोका देव वपुष धारि फिर सुभ ओका दिव्य विमान वडै ओस व
धामा सुख भोगै निज कल अभिरामा गान करैं तहं बहु गंधर्वी नाचहिं विविध अपू
ग णसर्वी ६ दोहा नेह नेह दृष्या होइ पुनि निन होवे गिर चलि जाइ अमत मान नहे करइ
सो धरई देह मन भाइ ७ बसन विभूषण बहु विधि धरै करै बहु भोग मगन रहै
निसि दिन सहा युवति वृंद संयोग ८ चौपई ता हिंन सुधि परि वे की कबहूं करत भो
ग न गवी त्यो जव हूं पुनरत्यो जितनो जस तास भोग कियो तितनो तिन नास भये
छीन जव पुन्य प्रभाऊ गिरयो अचान कसुधि नहिं काऊ काल कलित सब लोक अ
नेका फिरहिं अगपजु तमर अविवेका उत्तम मंत्रि यह विधि सुख भोगी भूपरि आ
इ न भयो विसोगी अविनिषेध गति कहो बखानी जो है सकल दुखन की खानी विध
व सपरयो कुसंगति जाई करहिं अधर्म सदा तिहिं ठाई इंद्रीय वस चाहे सुख भो
ग तिय ल परलोभी नित सोग तिनि कै हेतु करै बहु द्रोहा बिनु सतसंग जाइ कि
मि मोहा पुनि सठ प्रेत भूत गण नाना जजन करहिं विधि रहित अयाना अव

श्रीगी
ग ३३४
334

धिहू ते परम उदारा निरय परे जे हठ परि आरा पुनि पावत तन नर लहै बिमूढा
नाना दुख पावे मर मूढा ९ दोहा करम करहि पुनि बपु धरहि पुनि रूचि कर्म नि
माहि इहि बिधि संसृति होइ नित कहहु कहा सुख नाहि १० सोरठा लोकपाल स
बलोक लस बखान हु अलप सुख मह लगि बरने प्राक लय पावहि बिधि रिव सम
ह ११ चौपई सो बिरंचि पुनि रहे न अंता भच्छक काल महा भय अंता पावक पवन
सूर ससि जेते मीन डरहि जानु भगते ते मृत्यु ग्रसे सब भग कहू जानू काल रूप मो ते
डर मानू इहि ते तम जे ग्रथ ते सुभाऊ नहि सुख लेस लहो पुनि काऊ सुख नर चह करि
सब कहु होई इहि ते गहि पथ सुद्ध कहि सोई जह लगि भोग करम सब अहही गुन
ले दीन तसु नि सब कहही गुन कृत ग्रहे विषमता तो लो नाना भाव लषे यह तो लो
जब लगि नाना भाव न जाई तब लगि नहि सुख ते चर राई जो लगि पराधीन पर ग्र
हही तो लगि ईस्वर ते भय लहही गुन कृत तासु कर्म फल भोगू जे सब अहि ते मर सब लो
गू लोक अनित्य जाइ ने प्रानी सोच सहित मोह हहि अभिमानी करम सुभाव अनेक प्र
कारा गुन कृत यह है सकल पसारा काल आतमा आगम लोका जे है प्रगट है बि
यह आका सो सब माया कृत जग जानी नहि अहंके तिन सो सुख हानी १२ दोहा एक
आतमा सु यह देह संग कृत बंध पुनि बिबेक करि मुक्ति यह देह नभव पथ अंध १३
सोरठा सुनि हरि के द्वमि बेन गुन कृत पह संसार सब करुना निधि गत एने उद्धव

334A

तिनप्रतिबोलप्रभुनि ॥१८॥ चौपई ॥ हेप्रभुजौनसत्यसवरेहा इंद्रियविषयकरमगुणदेहा
हेअनीहआतमअविकारी बंधनतिहिकिहिभांतिमुरारी बहुरआपानयहकोजवभ
एक छेड़िउपाधिदेहमें गहिकू बसैतहांकिमिलिपतनहोई किहिप्रकारजानियप्रन
सोई मुकतिबंधविचरहिकिमिदेवा मोसनकहहुतासुकरिमेवा भोजनकिमिबोल
हिकहुकैसे ग्रहनकरेछोड़ेपुनिजैसे सयनवसनकैसेवेकरही किहिलछनजा
नेतेपरही अरुआतमकहियेप्रभुएका मुक्तिबंधकेकौनविवेका एकबंधएक
मुक्तिलखाही बहुतएकिमिएककहाही गुणआतमहोऊअहहिअनादी इहितें
भयोसुबंधनआदी नित्यमुक्तिपुनिकहहिगोसाई इहकरमेरकहहुसमुझाई ॥१९॥
१९ दोहा सुनिउद्धवकेवचनवरदीनिबंधुमुषतानि बोलेमदुलसनेहयुनिउत्तरसु
भगसुजानि ॥२०॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेएकादसस्कंधेभाषानिबंधे भगवानउ
द्धवसंवादेदसमोध्यायः ॥१०॥ चौपई ॥ एकादसाअध्यायअनूपा तामहिमुक्तिबंधकौ
रूपा साधुभक्तिकेलछनजैसे हरिकहिहैउद्धवप्रतितैसे सुनिउद्धवतैंसुभविग्याना
जिहितेमिटहबंधभ्रमनाना मुक्तिबंधजोयहहैभेदा सोममगुणतेकहहुनिवेदा सो
गुणमायाममआधीना मुक्तिबंधनहिसत्यप्रवीना सबतेदूरआतमाजानू यहतेंअ
पनेउरअनुमानू सोकमोहदुखसुषजगजेते भयअरुजन्ममरणमदकेते सोसिग
रेमायाकृतमानो आनहुसत्यनहूसमवानो सपनेजिमिदुषलहेंअनेका जागेपुनिव

श्री भा॰
ग॰ ३३५

335

हलबेनएको वहसुबदयमनिबुधिकोहोई आतममानिलेइ निजसोई इहीदेहअ
गटजपसोवे बुधिआदिगतिलीनसुहोवे ताकोंकहेसुखपनासवही रहेनिरंतरआ
तमनवही जोंवे आनमसचकोसाखी नोव्यवहारकरे अटिमाखी कबहुंकहुंननादि
विकारा यहज्ञानहुमायाविवहारा आपहोइअपनोकरिमानिऊ यहतेसुखदय
वहुविधजानिऊ निन्यएकरससोवे अहई वंधमोछनोंकोकिमिकहई उधवए
कअविद्यामानी दूजीवहुरसुविद्यामानी मेरोशक्तिजानियेहोऊ इहितेंवंधमोछ
पुनिसोऊ मेचाहोंबंधनकियजाही वहवोप्रेरअविद्यामाही अरुचाहोंजिहिवंध
नछोरा विद्याप्रेरिदेऊतिहवेरा मुक्तिनिवंधुहोऊतेजानू मायामेरिकरेसबमा
नू ८ दोहा अंतरजामीएकवह सबतेन्यारोजानि जेसेप्राणिप्राणिविवहुमेदघरि
नकोमानि ९ चौपई जेसेवहसबमहहेएकू तेसहिनानाहुसहितविवेकू फूटेघ
टिजबनववहरूपा मिलेनिसोकरिमाहिअनूपा त्योयहजीवअंसममअहई देह
संगसवदुखसुखलहई विद्याशक्तिदेऊजवजाही तवहिछुटिसवबंधननाही
औररहेंसबबंधनमाही जेलोविद्याप्रगटिनजाही बंधमुक्तिकोकवऊविधानी
लछनभिन्नभिन्नकरिजानी सवहिसुएकरेहमहहोऊ ईश्वरमहजीवसुधरेऊ
जिमिद्वैविहगएकतरुवसही इमतेभिन्नहोऊपुनिलसही चेतनतेऊपुनिएक
सरूपा सखासुहदएकपरमअनूपा तिनश्रापुहितेहेकियोनिवासा एकहितरु

335A

लाग्योसुभवासा सोदुमफलयायोवहुभांती इहितेभयोसुइषसंघाती नाहिन
करैकर्मवहुतेरो तिहितेभवग्रावैवहुफेरो इहितैजीवकहावैसोई जनमैमरैवहुर
पुनिहोई ईस्वरतिहितरूमैनितवसही याइनफलनिहिवछनरवही ३ दोहा निजा
नंदकरितप्रिनिजिनग्यानसक्तिपरिपूरि सुधनिरामयपरमप्रभुरहहएग्रविद्यादूरि ४
जीवग्रविद्यायुतसदाफलभोगीसवकाल इहितेवेधनयाहिको नाहिछूटैजगजाल ५
चौपई ईस्वरजीवभेदविलगाई कहिऊतुमहिमैसवसमुजाई जीवजीवमहुभेद
विषानी कहौंवहुरसुनिहैसुषपानी एकनिपुनकोऊदेवग्रधीना वसैदेहमैपरम
प्रवीना पतिवहदेहगोहतेन्यारो ग्रापुहिसमुझ्योवुधविचारयो देषिसपिनजाग्योजि
मिकोई वहसवसपनमिथ्यासमुझिसोई सपनदेहग्ररुसपनाहोऊ जान्योमिथ्या।
भ्रमइनसौऊ कुमतीएकदेहयहपाई सोतनधनमहिरहिलपटाई जिमिसोवतसप
नेकछुपावै तासौंमरषमनललचावै वहुरमुकतिकेलछनकहिऊ मैतिनकेसंमत
ह्विगरहिऊ कहैसुनेइथेकरिकाजू वलइगहैसुषलहैसमाजू ग्ररपपसकलाई
द्रोहतजानी विदुषतजेममतायहमानी रागद्वेषतिनकेनहिकोऊ मुक्तिजीवइ
हिविधिजगजोऊ करमाधीनयायनेदेहा ताकेकियेकरममहुनेहा करैमूढ।
तामहुग्रभिमानी ग्रापुहिवेधनपावग्रयानी इंद्रीयमनसहितकरमनमानहि मूढ
ग्रापुकोकरतामानहि ग्रासनग्रसनग्ररनग्ररुसयना इत्यादनपरमध्यानग्ररु

श्री·भा·
ए ३३६
३५

वचना। विषयभोगइंद्रीवसकरई। वीतरागितिहि नहिमनधरई। जिमिमरखबंधेति
हिठामा। तिमिनिपुनबंधगतिकामा। रहैदेहयुतममतानाहीनां। ज्योनभसवगतिकहु
नहिलीना। अनिलिपतगर्दिरेसवठामा। तैसेमुक्तिभोगगतिकामा। विद्यानामपाइअ
सिनोकी। वीतरागदढुसानधरेकी। तासोंसंसयजियकीछरी। ज्योन्नागससपनोदुषभे
री। ६ दोहा। भयेवीतसंकल्पजे नहिकछूरह्योविकार। इंद्रीमनअरुप्राणजुतविहर
तिइहसंसार। ७ चौपई। नधविदेषियसोंतनधारी। तदपिनतहांलिपतअविकारी। इ
हिमुक्तिनकेलछणताना। औरसुनहुअतिसुभगसुहाना। कोइमनकवहूविग्रहमन
नकहुविविधभांतिदुषदेनू। पुनिकवहूकाहूसुषदीनो। वुधनहतोयदोषनहिकीनो।
भलाकरेकोकरेवुराई। कोनिंदेकोकरैवडाई। तिहिदेनोकहसमकरिदेषा। सोना
नहतुममुक्तिविसेषा। विधिनिषेधकछुनहिसोकरही। नहिकछुकरेनहियकछु
धरही। निसिदिनरहैब्रह्मरसभीना। जडउनमत्तरीतिवपुपीना। मुक्तिजोवकेलछ
णजानू। अरुमुमुषुकेसाधनमानू। सगरोसवरब्रह्मजिनजानो। अंतरजामीनहिप
हिचानो। अरुइनसाधनमेहरतिनाही। तिनकेस्वप्नमपिच्यासवनाही। हरिहरिजन
होकुलकनदेषा। वंध्यागाइसोइस्वप्नलेषा। धेनुहूहपुनिहोहनजैसो। असतौनिय
धरराषेवेसो। पराधीनतनराषेकोई। इसपुत्रजगवेचकहोई। धरमहीनधनज्यो
जगमाही। इननेसुषउपज्योकहुकाही। जैसेतासवइषकोमूला। नहिसुषलेसहोइ

नितसूला ज्योंहीमोविनुसोहनवानी केवलवंधनहोतुतिहिजानी ८ दोहा विस्व
प्रगटपालककरोपुनिलयकरौंसुजान ऐसेजसकोरिरहितेजोवानीविफलव
खान ९ चौपई मेरेजन्मकर्मवहुतेरे वेदविहितगुणनामघनेरे जावानीमेए
कनहोई वेष्यागिराजानियहुसोई धीरपुरुषधारहिनहितांही कहैंसुनैकव
हूंनहिवांही यहविधिविविधिप्रकारविचारी निरमलमनकरिप्रभुपदधारी
नानाभ्रमसवमिथ्याजानी मोमेमनराखैनितग्यानी जोमनधारणसकतिनहो
ई ममहितकरियकरमनरसोई प्रेममगनफलजसपरहरई भत्यभावसुमके
रमनिकरई करमअकरमविकरमहित्यागी भक्तिहेतुममगुणअनुरागी सरधा
सहितसुनैगुणमेरो अतिपवित्रअघरहैनेनेरो पुनिगावैसिमरैममनामा प्रे
मसहितनिसिदिनगतिकामा मेरोजनमकरमपुनिकरही ममहितधर्मआदि
आचरही इहिविधिउपजैभक्तिअनूपा ममपदकंजप्रीतिसुधरूपा सतसंगति।
विनुभक्तिनहोई विनाभक्तिमोपावनकोई संतसुमारगदैहिदेखाई अनायास
ममपदसोजाई इहितेसतसंगतिनितकरहूं साधनऔरसकलपरिहरहूं १०
दोहा सुनिजदुवरकेवचनवरमनउपज्योअभिलाष जोरिहाथजुगविनयेजुत
उद्धववचनसुभाष ११ चौपई हेप्रभुकरुणाकरिभगवंता नामकहुवहुतभांति
केसंता तुमरेमतकसमाधिमोसाई सोमोहिकहुनीपसमुगाई अरुसोकवन

श्रीभा०
ए ३३२
337

भक्ति कहहु सोई जेहि कीन्हे तव पद पुनि जाई। पुरुष प्रकृत के आगु नि पंता। प्रणतपाल
भगवंत अनंता। यह मैं पूछऊं करुणा केहा। कहिय मोहि प्रति जड कुल चेरा। सुनि उद्धव
के बचन कृपाला। बोले तब हरि दीनदयाला। प्रिय मांगे तस ब हिं न सब देसा। कृपासिंधु
कहहु द्रोहि नें नेमा। सत्य सार अन बैद्य सुभाऊ। सम सुख दुख ममता नहिं कोऊ। अपाप्रा
क्ति सब के उपकारी। धरे काम पिर चित्त बिचारी। जितई द्री कोमल चित नासू। सदाचार
संग्रह नहिं कासू। लघु भोजन इहा नहिं कोऊ। पुनि हृदय में दृढ नित प्रति सोऊ। मम आ
स्वप सुभ मनन सुभाऊ। सा बिधान संतत गनि चाऊ। निरबिकार अरूप रून बोला। बिप
त काल चित नेकु न डोला। छुधा तषा गनि शोक न मोहा। जरा मृत्यु षट ऊरमि नोहा।
रहित मानि औरन प्रर मानू। बोध देन अतिदम बषानू। नहिं बंचक करुणा कार चेता।
प्रति उपकार बिना सुष देता। सम्पत मोन आहि दृढ जाही। संत मानि ये लछन याही।
बेदरूप मम जो अकर्षू गायो। बरणाश्रम जो धर्म बतायो। बिधि निषेध सब तजि बिबि
हारू। भजे अनन्य भाव सुभ चारू। संत चित आनंद घन मम रूपा। ताहि भजे कोऊ सं
त अनूपा। यह मैं कहे साधु के लछन। सुनहु भक्ति पथ परम बिचछन। २१ दोहा। तू जे मन
बच काय करि अरचा बिग्रह मोरि। हित सों दरसन पुनि परस प्रेम करे नहि थोरि। २।
औरसहि मरो भक्ति करि करे सकल मन मानि। अर्पने सुमति बिबेक नव लहहि परमा
कल्यान २८ चोपई। परसत जानि तिक रई मारी। बंदन अस्तुति दृढ ब्रत धारी। मम

गुणकर्म नित्य प्रति गावै सकल कामना मन नहि भावै सुनै कथा अरु जस मोरी ध्या
न करै सब चाह निवेरी प्रभु इच्छा कछु मिलै जु आई सो हि सम भवि आपु सो पाई तन ति र
य धन सुत घर परिवारा दासी भृत्य सम अरु पइसारा मेरो जन नम करम सब करई अनुमो
दन उत सब उर धरई नृत्य गीत वाजंत्र अनेका प्रति दिन करै सु सहित विवेका औ
से मम ग्रह करई उछाहू करै पर वदिन जस निरवाहू जाभा करै पुरी जह पावनि को
सिक पुर मथुरा दि सुहावनि आपु करै और नि सिषहे ली वेद तंत्र जत दीछा लेई मम
व्रत गहै करै मम धामा विग्रह मम पापै गति कामा तुलसी फूल वारिका चई क्री।
डाथल अति अदभुत करई पुनि उपवन बहु भांति लगावै तिन्हि ठामी दिरसु भगव
नावे पवना राम तहा अति नीको रचै सुभग भावत सब जीको करै आपु सम रघ जु
होई जो असक्य तौ मिलि पुनि देई महिमा कहि कहा बहु भांती करै करावै दिन प्रत
राती ऊपर इमंदिर सुभग सुचेता जल गोमय युत लेपनि केता सिंचन करै धूप दितु
आये चौक चारु पूरै मन भाये भन्य भाविपुन कदि सब आहू रहित मान गति दंभ अला
पू करै सो नहि निज मुख सो भाषै सदा रूप मम हिय मह राषै दीपक मोहि निवेरन क
रई ता सो ग्रह कारज न नहि करई जो अवस्य करनौ कछु होई तैल डारि बाती पुनि जो
ई ॥ २५ दोहा मम प्रसाद भोजन करै प्रीति सहित नित नेम अति प्रिय जो जो आपु कहु मो
हि अरपै युत प्रेम ॥ २६ चौपई एकादशी कृजा को दामा मम षट्जान न हं कदि सुषधामा र

श्री·भा·
रा ३३८
338

विप्रपावक द्विज धेनु बखाना । मोर भक्ति नभ पवन सुजाना । जल छिति निज वपु मे सुभ धा
मा । सर्वभूत महि यह विधि जाना । सुक्तन रीति हि नि करि कीपूजा । भाव मोर लखि देव
नह पूजा । हवि समेत पावक करजागा । अतिथि भाव द्विजवर अनुरागा । तल जलक
रि पूजे नित धेनू । धरे सीस भक्ति न पगरेनू । बंधु समान भक्ति सतकारा । करै निरंतर वि
विधि प्रकारा । ज्यों सतजन सों करै सनेहू । मम भक्तिन सों तिहि विधि नेहू । हृदय प्रकास
ध्यान सों सेवे । अनिल हि प्राण दृष्टि बिन रेवे । जल सों करैं नीरकी पूजा । छिति पूजे नेलखि
र बन दूजा । मंत्र सहित पूजे नित धरनी । निज ग्यान मभोगिनि करि वरनी । सर्व भूत ए
नाइ हिरीती । एक दृष्टि ये करि प्रीती । इतने ठौर मागके करहिये । मेरो रूप ध्यान हियरा
हिये । सुंदर स्याम चतुरभुज रूपा । गदा चक्र धरि शंख अनूपा । मुकट सीस स्रुति कुंडल
सोहे । कंठ कौस्तुभ मणि मन मोहे । कटि तट पीतवास सुभ सोहा । मन हु तड़ित घन चे
रि विमोहा । ऐसो रूप सकल ठौर धै । मोहि छूटिको ऊ और न लेखै । इहि विधि बापीकू
प तड़ागा । उपवन पवन दृ पाव्रत बागा । मेरे हेतु करे सब करमा । मोतें रहित तजे सब धरे
मा । ऐसे साधन जो करि कोई । तो को प्रेम भक्ति पुनि होई । २७ दोहा । बिनु सतसंग नि भ
क्ति दृढ़ उपजे नरकहु जाने । बिना भक्ति कस ग्यान तिहि ता बिनु कस कल्यान २८ इह
तनि सिदिन संतपद गहे सरन जो कोइ । विरति ग्यान दृढ़ भक्ति तब पावे साहि नै सोइ
२९ जो चाहे भव तरन को अहे न और उपाइ । संतसंग नित प्रीति करे सहिज हि भव तरि

जाइ २० सोरठा मेंग्ररूमेरेसंत तिनमेंलषैनमेदकछु सुनि उद्धवयहसंत तिनकें हियमेंनितवसो २२ ममहियतासुनिवासहाकालनिसिदिवसप्रति तिन्हकोमोपर प्रासुचारिपदारथतुछनिहि २२ कहेउगुपतइकवात सुनिउद्धवचितलाइग्रब सुहृदसषामममतात तुमसोचितयनग्रोरजग २३ इतिश्री भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे भाषानिवेद्धे श्रीभगवानउद्धवसेबारहएकादशोध्यायः ११ चोपई द्वादशयहग्रध्यायपुनीता वरननसाधुसंगसुभरीता पुनिकरमनिकरित्यागहिधा ना यहमावरननग्रंतनिदाना हे उद्धवयहगुपतिप्रसंगा जानेंतासुहोइभवभंगा योगसांख्यजुतहिंसात्यागी वेदव्रतपाठवहुग्राएरागी ग्ररुसंन्यासकरेजोकोई ग्रग्निहोत्रबहुविधिकरितोई वापीकूपतडागवनांवे विनुसतसंगमोहिनहिपावे दानघनाविधतेकरितेतो एकादशीग्रादिव्रतजेतो सुरपूजावहुभांतिग्रनेका गोपमंत्रममग्रपहिविवेका तीरथग्ररुनिनियमजमनाना साधनग्रागमनिगम बषाना इनकरिमोहिनपावेकोई विनुसतसंगकोऊकिनहोई कोरेउपायकोकि किनकोऊ विनुसतसंगनमेवसहोऊ तरेतरनतरहेजेग्रागे सतसंगतिसवतेग्र नुरागे षगमृगजातधानगंधरवो नागग्रपसरासुरगणसरवा गुह्यकसिद्धग्रो रवुनिचारण विद्याधरिग्रोरोपसुवारन ग्रेतग्रजसहइग्रोरतियजाती नेवेस्या गलमलिनकुजाती राजसतामसजीवग्रनेका जुगजुगमेंजिनलसोविवेका

श्री·भा·
ए·३२९

तेसव सतसंगति परिभाऊ मोहि मिलन करि दृढ है उपाऊ २ सोहा वृत्रासुर अरु बा
नवनि वृषपरवा प्रहलाद मय सुग्रीव गजेंद्र पुनि गोपी गीधनि षाद २ जामवंत
रावण अनुज पवन तनय अरु व्याधि तुलाधार कुबजा नारी फल सतसंग अगाध
३ सोरठा मति मग यतनी जाण दृढ तेसई यसंतन मित यह दृढ निज मन आनि गहि
य साधु वदकै जवर ४ चोपई तिन कछु श्रुति पुराण नहि जाने नहि गुरु पढि नहे तप स
नमाने अग्य रागन तप सतन नाहि कीनिऊ और धर्म तिन कछू नहि चीनिऊ जिन जिहि
कालु कीन सतसंगा तिन तवही पायो श्री रंगा अरु उद्धव नें दृढ हिमन जानू उनको
संग मोहि ले मानू मे अरु संतन कुन नहीं दोई वसहि निरंतर मो उर सोई तिनके उर
मे वसहु निरंतर मम जन मोहि जानु नहि अंतर केवल भाव सहित जे भजहीं सत
संगत जे नित प्रति सजहीं गोपी धेनु वृछ मृग नागा और सो मूढ बुधि बडु भागा ममस
तसंग प्रेम तिन कीनियो मोहि मन निचहु चित नहि दीनियो बल्लरू प जान्यो नहि मो
ही जदुकुल वर मोहि तिन जोही बिनु प्रयास मो कह तिन पायो भवसागर दुष कोट
मिटायो योग सांख्य व्रत दान अनेका तप अरु मख श्रुति पाठ विवेका कहि पुरान
सन्यास कराहीं सहि दुष कोटि मूल फल पाहीं तदपि न पावे मोहि सुजाना विना
प्रेम यह वचि फल निदाना सुनि उद्धव गोपिन के प्रेमा मोहि तजे सकल विधि नेमा
५ दोहा राम सहित जब मधुपुरी चले कंस पास अक्रूर मोहि तज गोपी विकल अति उ

339 A

मग्पोरुजभरिपूरि ६ सोरठा चितनितमोपदलीन देहगेहप्रतिनेह गति भईसकल
सुषहीन मोविनुसुषनहिजगतजिहि ७ जोनिसिमोरेसंग गईपलकसमवीतजि
हि मोविनुमोसुनिग्रेग भईकलपसमताहिकह ८ चौपई करिअनुषेदवुधिमनजा
स्र ममपदलगेउनिरंतरतासू गईभूलसुधितननहिजानै द्वरिनिकटकछूनहिपहि
चानै नहिपतिपुत्रमोहधनवंधू तिनकहुभूलगयोजगधंधू जिमिजनगोपील जोगी
हियसमाधी नामरूपसुधनहिगतिव्याधी अरुसरिताजिमिजलनिधिपाई ना
मरूपगुणभेदगवाई तैसहिगोपीममपदलीना वचनकायकरिजानिप्रवीना अ
वलाजातिहीनिसवभांती निजपतिछोडिकाममदमाती जान्योमोहिपतिजारिअ
नूपा नहिजान्योकछुब्रह्मसरूपा जद्यपिइहिविधिमनतिनलायो परमपुरुषा
मोकहतिनपायो सतनिसहस्यगनेकोपारा अमितपवित्रभयेवहुवारा इहितेउद्ध
वसुनिममवानी लोकवेदफलतजिअववानी विधिनिषेधप्रतिमनजनदेहू सु
न्योसुननकोतजिअववतेहू जहलगिकरमप्रवर्तकहावै अरुनिवर्तजहलौंश्रुति
गावै तेसवतजिममपदगहिसरण मिटैमहादुषभवजनममरण सवदेहनकौंआत
मजानी भजैभविजनमोविग्यानी तेवपावैममसुद्धसरूपा गतिभयपुननपरैभव
कूपा सुनिप्रभुकेयहवचनरसाला उपजाहियसंदेहविलासा उद्धवकहकेलागि न
मइवानी हेयोगेशईसहिनरानी त्यागिवेदकरिकहियगोसाई संसयउरउमग्यो

श्री॰भा॰
रा ३४०
340

मम आई आसारू पवेरतववानी सवजीवनकोसासुषषानी नाहिंपापिकेसेसु
षहोई लहेहेजीवकिहिविधिसुषकोई पहिलेकहे ऊकरेसुभकरमा पुनिनाथ्यो
नहिकरैसुधर्मा यहसुनिममभ्रममयो विसेषा किहिविधिचलेपंथनहिदेषा
वहतोसत्यकियापहसांचा उभयवीचससयमनराचा कहियसुनाइमोहि जहनो
यक भ्रमजिमिमिटैसंतसुषदायक ९ दोहा सुनिउद्धवकेवचनवरसरलभावगंभी
र विहसेकरुणाकरतववोलेश्रीजदुवीर १० चौपई सुनिउद्धवताहिकहोंवुझा
ई जाहिसुनितवभ्रमजाहिनसाई प्रभुमायाकोतेरहुग्रनेका अंतरजामीसवगति
एका नरतनमेजवकौनप्रवेसा प्राणशवदहोऊमिलेसुदेसा सावहमावरचक्रअ
धारा पराभामनिहिवेदपुकारा मनपसिककजवहोइनिवासा पस्यंतितिहिनामसुहा
सा वक्रविसुद्धमाहिजवआवै नाममध्यमासोतवपावै आननह्वैप्रगटसोजवही
नामवैषरीमानिहितवही जोकरिलोकवेदवहुग्रंथा नानाविधिप्रगटेसदपंथा
लघुदीरघस्वरवहुतप्रकारा वानीगतिपुनिवहुतअपारा लहेनपारप्रभुकोको
ई वरनिवरनिमुनियाकेजोई जैसेअनिलदारुमथकाढी अनिलसहायसंगवध
तवाढी ऐसेहिमनवानीवहुजानू सकलपसारनाहितेमानू आगमनिगमपुराण
जहाते चेतनरूपहमानिहाते ऐसेहिईश्वरश्रेजानू अरूप्रधानमनिबुधि

विनमानू अहं कारजुत जगत पसारा सतरजतमसत गुण माया सारा जे प्रभु अहहि एक
अविनासी ज्ञामाया तिन आपु प्रकासी तिन ते प्रगट विस्व सब भएऊ बहुत भांति गु
ण त्रय युत कहिऊ सोई हेतु घनो आभासे मध्यम उत्तम नीच प्रकासे विधि निषेध।
भांतिन केहेतू पुनि सुष दुषकें अहैं अकेतू इहिसंसार वृक्ष की रीती करम मूल पत्र
फूल प्रसूती हे पुरान तरु जानि विवेका एक वीज नरहोइ अनेका तातें यह सब ए
क अधारा एक ईसकों सकल पसारा ११ दोहा जैसे पत्र सब तें तुम में ओत पोत निहि जा
णु ओसे हि भव तरु फल सहित साषा अमित वषानि १२ सोरठा वरनो वृक्ष प्रभाऊ
उद्धव सुनि मन लाइ अव करेउ नकछु दुराऊ भक्त विचक्षन निपुन तुम १३ चौपई
पुन्य अरु पाप वीज द्वै जासू मूल अपार वासना तासू त्रिगुण तासु साषा त्रयमोटी पं
च भूत साषा पुनि छोटी उपसाषा इंद्री मन जानू एकादस संख्या गण नानू सब द्रु
परस सपरस पांचौ पंचसु भग रस निहि मह हिंसो चा वात पित्त कफ छिलकातीनी
सुष दुष द्वै फल विधि तिहि कीनी तामे विहंग युगल नितवसही जीव ईस सोभा सुभ
लसही रवि मंडल लौं व्यापक सोई यह संसार वृक्ष वुधि जोई ये यह दे है वृक्ष की।
रीती लषहि आपुजिमि विहंग प्रतीती विरत होइ जब यह तरु माही तब सुष सो मम
निकट रहा ही रहहि ताहि तरु मैं सो रोऊ षाइ एक फल कामी कोऊ गहि होइ दुष।
फल सो षाई ताहि हेतु वहु जन्म धराई ताहि हेतु वहु जन्म धराई सुष फल ताए व

श्री भा०
ए० १५२

विवेक बोधाई करि संन्यास विपिन उठि जाई दूसर एक आरि अब नाशी माया कृत नव
द्रु रूप निवासी गुरु प्रसाद जिन यह विधि जाना तिन सब बैर अरप वहि चाना इहि ते
गुरु की शरनी नाई ६८ उदासिन भक्ति उपाई गुरु सेवा ते होइ विवेका मिटै मोह
मद जाल अनेका १५ छंद मिटि जाइ मोहि अपार जग जे जाल नव गुरु पद गहै पुनि
होइ भक्ति अनन्य प्रभु पद जीव सुख जासो लहै गहि ग्यान विमल कुठार तो छेन छे
द लिंग शरीर ही हैं सुद्ध रूप अनूप पावन ईस पद पावै सही २५ दोहा पारि रू
प निज आपुनो तब साधन तजि देइ ग्यान भक्ति पुनि नाहि कह जो सरूप ह निज से
इ रूप इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषा निबंधे दशमोध्याय:
१२ चौपई अब अध्याय ग्यारह माहीं ग्यान उदय हित जतन कहाहीं अरु पुनि कह
बद्ध सइ निहारा विषय चित्त करि भिन्न विलासा सुनि उद्धव अब कह हो बखानी ना
न लहैं जीव सुख बखानी सत रज तम गुण त्रय जग जेते है माया कृत जानिये तेते आ
तम गुण ते न्यारो आही इहार हित विमल कह नाहीं इहि ते सात्विक सेइये जानी ति
हि ते रज तम कीजै हानी सत्व हि हरि कैरे सत सेई उपजै सुध धर्म सुख देई भक्ति
मोरि गुनि रतन लखावै सुधि धर्म सो सकल कहावे सात्विक सेवै बस्तु सुजाना बढ़ै सत्व
नवैश्वन निधाना तिहि ते धर्म सुधि उपजाहीं रज तम नाश होइ पुनि ताहीं हरषि सो
क निद्रा अपमाना आलस मोहि गरब अरु माना राग दोष सत रज जग जेते रज

तमके सब जानियतने ते द्वै गुण दूर भये जब जाही तब तिन के गुण उपजै नाही देस का
ल अरु प्रजा सुनीरा जनम करम पुनि ध्यान सुवीरा संसकार युत अरु सह ग्रेषा मंत्र
ना पण दश ग्रामुभ पेषा जामे एसा त्विक हस होई जान हु ते सात्विक नर सोई तिन मे सा त्वि
क लषु ते नाही संत वषान करै नित ताही करहि साधु निं दानित जासु सो तामस सजा
न कुसु षरासु नहि निंदै न हि करै प्रसंसा राजस गुण निहि निगम प्रसंसा १ दोहा सत्व
वढि नके हे गुन र राहस सात्विक सोइ धर्म होइ पुनि ग्यान तव जिहि ते सुषन र लोइ २
चोपई ग्यान भये उपजे विग्याना देषै सकल एक भगवाना द्वै शरीर निज क्रांत गुण
जाने जग विस्तार स्वपन सम माने तब इह ई सम माहि थिर हूहैं सात्विक हू की और न
जैहे प्रगटे अनिल वेनु के मारी पवन प्रता पुवि पुल बल वाही र हे सकल वन र कछ
न माही आपु समित कछू स्वम तिहि नाही त्यो साधन नर तन ते होई है प्रचंड वल विपु
ल सुवेही द्वै शरीर को करि के नासु आपु समित साधन सुष रासु कही ये गुण तीत सो
योगी सदा काल जो हरि रस भोगी सो भव सिंधु कवहू नहि आवै मो पद कमल संत सो पा
वै कृस्न देव के सुनि यह वचना उद्धव मइ लवे लू सुभर चना कहि न लगे उ सुनि ये ज
गदीसा संत सुषद ईस्न के ईसा नाथ कहि ऊ गुण को परिहारू साधन सुभग विवेक वि
चारू परिजे विषय महा दुष जानी ते क्यो करहि विषय सुष मानी स्वान छाग षर की
सी नाई सहहि विविधि उपहार गोसाई ज्यो वल हेतु अगनि ये छागू अस नाम ध्याज

३४२

श्री भा

प ३५२

त

चमपोऽभाग। लज्जारहित नकछुसुधिताही। कहन लागि रत मन सुख चाही। निमिष
रधाव घरीके पांछे। पार ध्यान सहि सुख करि आछे। ३। दोहा। पुरुषी धी अरु बोह टस्वा
न सहहि उपहास। तदपि छैरै विषयसु पत्यो इहन रसुख आस। ४। चौपई। चैतो पसुक
छुनाह सुधि नेही। विषयन रति सुख संत तजेही। यह न रतन सब जानि विवेका। क्यों
प्रभु करि यह कुपथ अनेका। यह मम प्रसन स्यक लगन जाना। कहहु बुझाइ संत सुपहा
ना। मन्यमि रासुनि जदुकुलनाथा। कहन लगे प्रभु सुभग सुगाथा। सुनि उद्धव जो नर अ
विवेकी। महा प्रमत्त कुमति जिन टेकी। देह गेह दारा सुत आरी। अहं बुधि करि मिथ्याका
री। त्यों सो अहं बुधि करि मूढा। त्यों त्यों मन कुकुपथ आरूढा। सात्विक मनि पुनि रज जु
न होई। नव संकल्प विकल्प सोई। अहो रूप यह अद्भुत नारी। करहि ध्यान निसिदिन
विचारी। पुनि उपजे दुरधर निहि कामा। विषय भोग हित चाह सुभामा। होइ काम बस क
रि इक करम। इंद्रीवस सो न तजइ सुधरम। आगे दुख देखे यह प्रानी। तदपि करम करै अ
भिमानी। यद्यपि विधान रकी बुध भाई। रजनम करि न सुध ना पाई। तदपि विवेकी जन
जे कोई। निसिदिन तास विचारे जोई। उर ते सकल कामना टारी। मन कहु रोक विषय
सुखहारी। ५। दोहा। सावधान आलस रहित करम अकरम करि ध्यान। आसन जितवस
प्राण करि मन मोरु पसमान। ६। चौपई। सनकादिक मम मति य्य सुजाना। तिन सों मैं यह
जोग बखाना। सबै निमनक हूं थे चिप्र चीना। रावें मम स्वरूप महु लीना। मन जीते सब

मिटै विकारा मन जीतै न घटै संसारा सुनि उद्धव हरि की यह बानी बोल्यो वचन।
जोरि जुग पानी है जग ही सकै कौन सो काला कह्यो जोग तुम हीन दयाला सनकादिक
कहि समै गोसाई पूछ्यो प्रभु हि कौन विधि आई सो वह समय रूप वर स्वामी जानन
चहौं उरग अरिगामी सुनि उद्धव के वचन रसाला बोले जदुवर परम कृपाला वेदगर
भके सुभ सुतचारी मनते प्रगट भये व्रत धारी सनकादिक रस ब्रह्म प्रवीना विरति।
विवेक सहित जग हित लीना तिनि पूछ्यो निज पितु के पासा अति लघु प्रसन कीन हरि
दासा लखि न जाइ वह गिरा गंभीरा दुस्तर महा लहै को तीरा सनकादिक निज पितु स
न भाषे नहि कछु हृदय दुरा इसो राषे हे प्रभु ब्रह्म ब्रह्म समय तताता पूछिय स्वामि तुमहि
इक बाता विषय वासना महु चित रहई चित महु विषय वासना अहई ७ दोहा मिले
परस्पर जुगल ए जैसे पय महु नीर कैसे न्यारो होइ प्रभु कहिय विसद मतिधीर ८
सोरठा यह बानी उर धारि वेदगर्भ सोचन लग्यो बहु विधि नहि विचारि नहि पिन उत
र दैसकौ ९ चौपई करम बुधि संतन नहि जासु रहत उनर भयो न तासु न बब्रह्माय
ह बुद्धि विचारा प्रसन पास भीर मन उनारा तब तिन करयो मोरहु ठि ध्याना मैं तहु प्रग
ट्यो सुनहु सुजाना हंस रूप मैं तिन हि दिषावा प्रसन बहुत विधि कह सम गावा ति
न मोहि देखि बहुत सुष पायो पिता सहित उठि सीस नवायो कौ भवान पूछ्यो तिन मोही
उन सो कहि ऊ कहो अब तो ही विप्रहु प्रसन करी तुम ऐसी नहि संभवै विदुष कहुं।

यो॰भा॰
३४३

ऐसी वस्तु विचारन है कछु आही कहौ कवन विधि कहियै ताही देह रूप जो न्यारो
कहहू तौ कछु हू जो वस्तु न लहहू पंचभूत यह सकल शरीरा जो कछु जहि लगि है
मति धीरा इहि ति सकल एक तुम जानौ कोउ जो है यम हि भ्रन मानौ पुरुष इहि रै वे
वह एक प्रकृति लखै नहि अरु देखने को प्रश्न कर्यो तुम हि जड़ इहि मानौ बहुत वस्तु।
जिमि है वहु मानौ अरु जो ईश्वर तत्व विचारो तौ नहि प्रकृति पुरुष विस्तारो रहित अर
थ असि प्रश्न तनुमारा कहियै कवन विधि सनत कुमारा देखिय सुनिय कहिय जो वानी
मन वुधि करम जहा लगि जानी सो सब मैं व्यापक मोहि जानू मो तजि और निरूसर मा
नू नाम रूप यह सकल विकारा मइ घटि रीति सकल संसारा ॥ दोहा ॥ आदि मध्य अ
रु अंत महं लख वहु एक न गहीस कारण रहित सकोपालि प्रभु सब घटि व्यापक ईस ॥ चौ॰
असि विचार जो केउ नव आवै सो तव महा परम पद पावै अरु तुम प्रसन करो पितु पाही
सो मैं राख्यो निज हियमाही चित्त मिल्यो विषयान महि नाई विषय चित्त महु रह्यो समा
ई सुनहु पुत्र यह सो वो वाता आन मते इन ते हीनाता विषय चित्त माया कृत होऊ पुरु
ष सुध ज्ञान हु नित सोऊ जब सो विषयन माहि चित देई होइ चित्त सुख मई तिहि सेई पु
नि विषयन को नित प्रति ध्याना करै करम नित हित हित अग्याना गुण चित आन पोत है।
नाही ननं मै भरे जगत के माही उभय देहु यह कारण होई पुरुष प्रकृति सब लखै न
कोई दे हा अ सम सुध सुख वानी मरो सरण गहै जब प्रानी वाहर विषयन को परिहा

रू चितमहकरैनतासुविचारू विषयचित्तहोऊ व्यापीनिहारी तिनकेपरेसुद्धअवि
कारी सततचितआनंदघनसुषरासी ग्यानरूपचेतनअविनासी १३ दोहा इहिविधि
सुभगविचारकरिउभयतनेजवकोइ चितगुणव्यापोसहिजभासुषपावैपुनिसोइ १
३ चौपई जाग्रतस्वप्नसुषुपतिसुजाना बुधिवृत्तएसकलवषाना तिनकेपरेपुरु
षकोजानौ सदाएकरससुधवषानौ जाग्रतसात्विकगुणतेहोई राजसस्वपनअ
वस्थासोई होइसुषोपतितमगुणसेती यहसवप्रकृतिकेरहैं अेती एकरूपआत
मअपदधामा साक्षीभूतवसैअभिरामा यहतेतीनिगुणनतेन्यारो निजानंदमैरूपह
मारो तामहिथिरह्वैकरैविचारा साहिजैछूटैत्रिगुणपसारा आतमसुधिवेहदमिक
हिकू अहंकारकरिवंधनभइऊ भूलिगयोनिजआनंदरूपा जगसुषतिनतवलषा
अनूपा पुनिविवेकजवताकहुआवा तिनजगसुषनस्वरकरिगावा गुणतेविरत
माननवसोई चौथेपदरतिराषैजोई देहगेहचिताअभिमानू तजैलोककौतुकस
नमानू जौलौंतनजेगइहिविधमाना तौलगिसवहूतअपरषवषाना १४ दोहा जौलौंना
नावुधियहकुनिहोइनहिंछीन तौलौंजाग्रतस्वपनसमअपसहानरहीन १५ चौ
पई पढैग्रंथवहुअतिनिपुनाई वेदधरमनानाविधिमाई गहैप्रवृत्तिधरमकौमू
ढा जाग्रतमानैभरमआरूढा परिजोएकवुधिनहिंकीना तौसोवतजानहुरसभीना
कहौंतासुदृष्टांतवुझाई समुझिपरैसवकौसुषदाई कोऊइकनरसोवैसुषपाई सो

श्री भा

ए ३५५

तव सपनन्ह होति हि आई सपनमांझ तिनि क्रिय विविहारू लेन देन अरु पान अहारू
जानि निसा पुनि सायो आए भयो दिवस पुनि वह संताप ऐसी विधि दिनि गयो घनेरे सो
वत जागत बहु स्रम घेरे बहुरो उन ऐसी मन आनी निसि दिन तमो नी ह अभिमानी न
हि सोवे जागे पुनि तेई सा विधान आलस सब खोई करें काज सब अपु गे ऐसे रहे न
धन को कोन रनें ऐसे ईहा जागत करि उन जब देखा तब बहु सकल प्रपंच करि लेखा ऐ
से ह वरण धरम अरु करमा जो प्रवृत्ति सो नहि भल करमा भयो मोह ते तन अभिमा
ना वरणाश्रम गति अगति बखाना करहि बहुत विधि निपुन सुकरमा सुख कारण बहु
विधि करि धरमा नहि सुख मिले बचपा वद्दि माने सपन जगरन सम करि मानें ।। १८ ।। दोहा
रहे गेह सो पर सुख जाग्रत करें जु भोग ता हि सरिस जो सपने में बिलसे है संयोग १९
सोरठा पुनि सोवे दुख पाइ सबको कारि उपसम सुघर चेतन एक सुभाइ सबको साक्षी
एक वह २० चौपई पुनि जागे सब कहहि सु बाता हे यो लिख्यो सहि आतम बाता जहं ल
गि पांच्छे सब करमा आतम एक गान सब भरमा बाल किसोर जुवा तन होई चेतन ए
क रूप है सोई तीनि अवस्था मन को जानी जीव प्रविचारु न दुख खानी यहि विधि नि
श्चय करि जिन माना निसि दिन हृदय विचार हि दाना सकल उपाधिन कौ है देनु अहं
कार जान दुख मूल चनु तौ छिन मौन बड़ग करि लेई ता हि छिन ध्यान मसु धरे ई हृदय
मांझ में बसो निरंतर भजे मोह तजि कपट पटंतर जन मसानते यह भ्रम करि जानिय

मनकृत सब मिथ्या करि मानिय उपजै एक विनसइ क्षण माही विनसि एक पुनि रूप।
धरा ही ऐसी रीति सकल की जानी सपन समान हृदय अनुमानी यह जग अति चं
चल थिर नाही जिमि अलात चक्र फिरि कर माही एक ब्रह्म मैं सकल अभासा गुण आकार
बहु भेद प्रकासा सपन भोग गुण भास सहि भोगी त्यों सब जग है बैभ लि भोगी २१ दोहा
जगत दृष्य सब छाडि कै सकल क्रिया फल त्यागि निजानंद सुख रूप दृढ रहे परम रस
पागि २० चौपई ग्यान सुधि रहै वे के हेतू न इच्छा गति तिनि श्चल करि चेतू बच मन का
य करम न हि करई इहा रहित ब्रह्म सुख गहई ऐसे बच्या जानि सब त्यागे निश्चल
हिय हरि रस अनुरागे सो जो रहै देह के माही ते पुनि धर्म उपजै तिहि नाही जो यह दे
ह जाइ कहूं आवै ऊढि वैठ पीवै कछु खावै औरो जो कछु करि विविहारू परि सो सि
धन जानै सारू तिहि निज देह न सुधि कछु रहई जो करि सुभ गग पानन रलहई जैसें
करि को उन्मदि रापानो चलै फिरै नहि सो कछु जानो ताको पट उतार लेको ऊ अपर
आनि पहिरावै सोई ताहि न सुधि को लै गो कैसे हि यो फेरि पुनि आन न वैसे तैसे ये
विचरे जग माही पीये ब्रह्म रस सुधि तन नाही है वाधीन करम वस देहा संचित
भोग करि नाहि नेहा इंद्रिन सहित करे सब भोगू निज प्रारब्ध मिलै न संजोगू सोनि
त मगन ब्रह्म रस माही देहादिक कछु सुधि नहि ताही २२ दोहा जैसे कोऊ सपन
मे पायो दुख बहु भाइ जागे सो दुख दूरि भा विहस्यो अति सुख पाइ २२ सोरठा मोहि

निसानैजानि नहिंग्रटकैसोविषयसुष लहैंबुलग्रनुरागि लिपेनकाहूंकरमते र
३ चौपई इहिरहिंग्रादिहिंजेतो भ्रमकरिभयोसकलजगजेतो त्रिगुणरहितहैंवि
चरैसाधू हरियरमननिहि बुधिग्रगाध जवमनलग्योब्रह्मरसमाही विषयनि
तंग्रापुहिचिलमाही यहमैतुमसोंकह्योविचारू सांख्ययोगसंमतिसुषसारू यह
मैमोपदकहोतवपासा हियधारहुहुसंतसुपासा तवहितहैतुहियमहिंधारी विस्व
हूंसनवचननहितकारी मैहोंब्रह्मसवकलकोईसा मोबिनुग्रौरसुग्रहेंग्रनीसा सो
क्यग्रहरसन्यनेनतपजोग समदमरितग्रौकीरतिभोग ग्रौरोवसतुजहांलौंग्राही
ममग्राधीनसकलसुनाही मोरसरनग्रावैजोप्रानी लहैसोउत्तमसुषकीषा
नी मोबिनुसाधनकरौग्रनेका लहैनसुषकरिवहुतविवेका मैनिरगुणगुणमोह
ग्रधीना निरपेछकमैसवघटलीना चाहरहितसवकौउपकारा करोनिरंतरदि
नप्रतिसारा सवकौहितसवकौग्रवलंवा पोषनभरणकरौजिमिग्रंवा उद्धवयह
मैग्यानसुनायो मुनिसनकादियरमसुषपायो गनिसरहूभयेतवतेऊ ऊरधरेता
हैमुनितेऊ वहुतभांतिप्रनामकीनी पुनिग्रस्तुतिकीनीरसभीनी तिननेमैपूनि
तहूंतवही पुलकितगातभयेमुनिसवही ॥२८॥ दोहा वेरमरमकेरचितेतिनकौंसु
षउपजाइ गयेधामनिजधामकौंहेउद्धवसुषपाइ ॥२९॥ सोरठा भक्तिसुयशग्र
निग्राहि ग्रौरनहरसग्राहिकछू कहाहुसनुरहतमाहिंउद्धवप्रानिजइनाथग्रवर॥

दोहा ॥ ध्यानजोगसाधनसहितपुनिवरनवयहमाहि हीनवेधुकरुणाअयनसंतनसु
वहनइनाहि ॥ ७ ॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेभाषानिबंधे श्रीभगवान
उद्धवसंवादेत्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ चौपई ॥ हरिनेसुन्योसुभगयहस्याना भक्तिएकभव
तरणवखाना उद्धवनिजमनमाहिविचारा मारगवहुविधअहैअपारा तवइंहिजोरि
विनयजुतवानी कहनलगेमरदमंजेवखानी परमदयालदीनदुखमोचन कृपासिंधु
केपंकजलोचन भक्तिकियेनवचरणगोसाई अमितलहेमंदमतिसोई जेनरस्तुत
अरूपढैपुराना तिनपुनिसाधनवहुतवखाना मुक्तिहेतुवहुमारगभाषे आपुकरे
हुविसोअभिलाषे इहिनेदेखोपंथअसेषा भक्तिसमानकेकछुकविसेषा मुकति
हेतुतुमभक्तिवताई साधनतिहिकोकहैवुझाई इहितेकहहुमोहिनिरधारी नव
पदपंकजगहोमुरारी सुनिउद्धवकीगिराअनूपा वोलेहरितवतिहिअनुरूपा उ
द्धवकलपसमयजवभए ॥ तवयहतत्वलीनह्वैगए ॥ पुनिमैसृष्टिसमैयहज्ञाना
ब्रह्मासोंस्तुतिनलवखाना सोविरंचनिजसुतनपढावा स्वायंभूमनआदिकपावा
भृगुमरीचिअंगिराआदी पुलहपुलस्त्यअत्रस्तुतिवादी क्रतुनामासुतपरमपुनी
ता तिननिजसुतनपढावविनीता तिननेसुरनरअसुरनपावा गुह्यकसिद्धसवन
स्तुतिगावा विद्याधरचारणकिरेवा किंनरनागनिसाचरसेवा तिननिजसुतनप
ढावाचाही सतरजतमजसप्रकृतिजाही जससुभावतसमतितिनगाहि ॥ इहिते

श्री॰भा॰
प॰ ३४६

पथबहुतगुनिभएऊ १ दोहा जानि हु नहि तिन वेद कहु तत्वपरम जे ग्राहि निज
स्वभाव मम कहहि स्रुति नहि कछु सुधि है जाहि २ सोरठा जस जस जासु स्वभाव
तैसभागुनि वेद बहु तस तस आचरन प्रभाव करहि आपु औरनि कहहि ३ चोपई
परंपरा इहि विधि मोती भई अनेक जगत विख्याती प्रकृत प्रभाव भेद बहु भएऊ
वेद तत्व काहू नहि लहेऊ पुनि पाषंड कलपना कीनी धर्मग्यान कृ विसव हरिली।
नी मोहि न मम माया करि प्रानी स्रुति करि अरथ एक नहि जानी अपनी रुचि कर
नि जग अनुमाना करहि चरम अरु भाव सहि तोना। साधन बहुत प्रकार बनावे तहां त
हि कल्यान सुनावे एक कहे यह धर्म प्रधाना इहि ते मुक्ति मुक्ति सुयनाना एक कहे
जगत मसु पताई तिहि ते दुख सहि नहि मिटनाई जो लो भोगाको जस स जग करहही
तो लो स्वरग भोग सो लहही एक कहे होसुष कामवषाने आगे स्वरग नरक नहि जाने जा
तन भोग करे सब प्रानी सो तन छारहि जाइ इति मानी आगे सुख दुख वल है न कोऊ यह
ने भोग करो सब कोऊ समर मह यार दि अरुनी ती कहे एक यह सुख की रीती न्याय
सहित उद्यम सो करिये उत्तम धरम जानि उर धरिये ४ दोहा त्यागि भोग भोजन सु
गति एक कहे सम जाइ जग्य दान तप नियम वम एक कहे सुख दाइ ५ चोपई तीर
थ व्रत इक बहु विधि कहही सहि न तनेम दृढ सो गुनि करही तिन ते करहि स्वरग को
भोगा पुन्य क्षीन नव उपज कुरोगा तीरथ पानि गुनि लहहि अनेका जनम पुर वसहि

सहितअविवेका अरुनवकरहिदेवपुरवासा नवहूंकछुसुखलहैनतासा कामक्रोधादि
द्यअभिमानू रागद्वेषइर्षाअभिमानू असेरोगग्रसततनहंवासा कहोकहासुखभोगविला
सा भक्तिहीनविधिलोकसिधारें कालनहोंनेपुनितिहिडारें इतनेउद्धवमतिसवत्यागी
चरणकंजममहूंअनुरागी सोसुखलहेअखंडअपारा नासुखकोवरनेकोपारा जानेसो
नोकोभालाभा जासुखकीलवसवजगआभा सोनहोंतसमचेतसहोई ममजनसदाअ
किंचनकोई मैंप्रसन्नहोइसवसुखदेऊं तिहिंनवाहकछुममपदसेऊं विधिकरिसो॥
कदुखदकरिजानें सुरपतिलोकविघ्नकोआनें सवभूखंडअहेदुखमूला नागविवरमेंहै
वहुसूला असुसिद्धिप्रणमादिकजेती तुच्छजानिसवत्यागहितेती ६ दोहा मुक्तिसिद्धिति
हिपासनितसदारहेकरिजोरि लखेंनताकीओरसोकोउकहिकोटिनिहोर ७ चोपई
सदाएकमेप्रियअतिनाही ममपदकंजचित्तनितजाही इहिंनेसोजनप्रियअतिमोही नि
तप्रतिमैंनिरख्योपुनिओही तनयमोरिविधिनहिंअतिप्यारो जिमिमोहिंसंतलागसुख
कारो नहिंअनंगप्यनिप्रियमोहिताता नहिंसंकरबलप्रियममभ्राता कमलाप्रियनमो
प्रतिलागा मोनिजदेहनप्रियवडभागा जसनुमप्रियलागहुमोहिभाई असनहिंकोउप्रि
यमोसुखदाई इछारहितसोनगतिरोधा परमदयालसेसनहिंरोधा भक्तिरोमनिजज
नसुखदाई तिनपाछेमैंफिरेउंसदाई सात्विकसुधिविसिरतनताता चारोचरणरेनु
नितपाता नहिंकिंचिनपुनिसोनसुभाऊ परमदयालहृपासवकाऊ मेरेचरणकमलअ

347
श्री·भा·
१५७

नुरागा सकलकाममनउपजविरागा उनकहुजेसुषमिलिउअनूपातिहिसुषकोतेहलला
षहिलरूपासोमुषअोरनमानेकोई जिनकरिचिंतकामवसहोई इंद्रियजीतसवंपानहि
सोई तवहीवरनगहेममअाई विषयावलेकरिसकेनभाई ८ दोहा भक्तिमोरअतिप्र
वलहेविषयाअवलसुजान नहिनिहिवाधकहोइसुनिकहिअसिवेदपुरान ९ चौपई
पावकप्रगटकरेजिमिकोई अोरेहारतनाहिमहसोई करेजारिनिहिसवनिरमूला ऐ
सहिभक्तिनाहिसमतूला जवहीप्रगटहोइनिहिपासा तवहीतासुकरेअघनासा
येपासोप्यवहुकरेउपाई हानेहइपुनिवेदपढाई वरतधरमसाधेवहुभांती तपपुनि
करेसकलदिनराती इहिविधिभवसहोउननासा भक्तिअधीनजथासुमतासु साधन
सुनिमहकहेअनेका भक्तिरहितसवविफलविवेका मेकेवलइकभक्तिअधीना इहि
समअोरनजोनिप्रवीना विनुरामोचदुवेविनुचेतु अरुअानेरअ्रुसुषकेतु इनल
षनविनुभक्तिनहोई भक्तिविनाहियसुधनकोई विनुहियसुधिलहेसुषनाही कोटि
कनतनकरोजगमाही ड्रवीनतेनाकोविनहोई गुरुगरवचनकहेपुनिसोई कव
हुकरहनकरेअतिभारी कवहुकहहसेममविरहसंभारी करेनिचलकुगतिसोई
जिहिउनमत्तमानसवकोई गिरामधुरकरिगानसुगावे इहिविधिसवरिनेरेनवो
तावे १० दोहा ऐसेलछनसहितकोहोइदासजोमोरि सकललोकपावनकरेगुण
तिहिमोउनिचोर ११ चौपई जेसहारकमलजुतहोई धोवेवहुविधियारमिलोई

औरो जतन करै किन कोटी बीस बार पुनि कसौं कसोटी मल नहि तजै सुध नहि होई प
चिपचि मरै रो रूदन कोई नाहि बहुर पावक नहि डारी तपत करै बहु भांति सुधारी म
लि जरि जाइ सुध सो होई पावै निज सरूप पुनि सोई औसे जतन करो किन कोई आत
म सुद्ध कबहू नहि होई जब हिय गहै मम भक्ति अनूपा मल जरि जाइ पावै निज रूपा जिम
जिम करै भक्ति नर मोरी रटै नाम गुण सुनिय बहोरी जिमि जिमि होइ वासना नास
तिमि तिमि होइ ग्यान परकास जैसे नैन माझ भा रोग लखै कछू नहि अति से सोग पुनि
काहू सुभ अंजन दीना भई द्रिष्टि तिमहि सब चीना औसे भक्ति रूप भलि अंजन सब
दुरो गत तासु करइ भंजन ॥ २२ दोहा बिना भक्ति पावै नही मुक्ति कबहू को जानु साधन करै
अनेक बिध सकल विफल तै मानि ॥ २३ चौपई जो करि विषय सुमन को ध्याना सो पावै
संसार निदाना मेरो ध्यान करै जो कोई मो पद अंत पाव पुनि सोई इहि ते सावधान फ
ल तेते सपन समान जानि यह तेते मन बच काय विषय करि त्यागै मम पद के नेक
रहि अनुरागै अरु जे चहै तन निसंसारा चाहै मम पद के जग धारा ते जुवती सुख तज
डु बिचारी सपनि हु पुनि निरखहि जन नारी अरु जे तियले पट नर कामी महा रूढ मत
परि तिय गामी तिन की संगति करिय न भूली करै जु नर तिहि विधि प्रतिकूली नहि
अस बंधन आन प्रसंगा जस बंध न होइ जो षन संगा तियलंपट जे नर अति मानी ति
न के संग घनो इष मानी इहि ते इन को संग बिहाई भजहि मोहि दृढ मन नित लाई मि।

३५४
२४८

रभयदेसजानिसुखवासू शुभआसनदृढकरैनिवासू मेरोध्यानकरैदिनराती प्रेम
सहितहियमेंबहुभांती उद्धवसुनिहदिवचनअनूपा पूछनलागसुमतिअनुरूपा कम
लनयनप्रभुकरुणाकेरा जदुकुलकुमरनामसुहितनचेरा १४ दोहा कहहुनाथकिहिवि
धिकरियध्यानयोगजगदीस चित्तलगाईथिकोनसोरूपवरावरोईस १५ सोरठा क
रहिजतननबहुभाइ जिनकेहियमोछरुचि तिनहितकहियवनाइ मेतोतवपदकंज
रत १६ सुनिउद्धवकेवैन करुणासिंधुसुजानप्रभु बोलेराजेवनैन वचनअमीरसबो
रिजनु १७ चौपई कहौध्यानसुनिभक्तसुजाना जिहिसनजोवनहैकल्याना सम
आसनहोइथिरचितकरई जंघाऊपरदोऊकरधरई कायसमानचलैनहिडोलै
दृष्टिनासिकामुखनहिबोलै इडाप्रेरकुंभकथिरधरई पुनिरेचकपिंगलसोकर
ई बहुरोप्ररिपिंगलाद्वारू इड़ानिसारैवारंवारू इंद्रियअर्थकरैपरिहारा मेरो
हनुहृदयनिजधारा प्राणायामसोधेइहिभांती जतनकरियसुभदिनअरुराती प्रा
णायामसुगलविधिजानी सोमैतोसौंकहौवखानी एकअगरभगरभजुतएक
सुनहुतातनुमसहितविवेका नामसगरभमंत्रजुतहोई कहियअगरभमंत्रविनु
जोई जोसगरभहेप्राणायाम सोउत्तमकहियेपरिनामू रोमदुरिरेचकपुनिकर
ई प्राणवमंत्रनिजउरमहधरई धरधार[illegible]नल्पसुरध्यावै नासोमिलकरिप्राणचला
वै जोत्रिकननअभ्याससकोई प्राणायामसिद्धितिहिहोई प्रणवसहितजोकरिअ

348A

प्यासा पवनतुरनजीतेहरिदासा १८ दोहा ।हृदयसरोज जो कंजवर अष्टपांखुरी।
नारि अष्टो धौमुखतिहिं ध्यानकरिरूचीकरैसुवाहि १९ चौपई तांकेमध्यहिंवाक
रधरिई तामधरमावेधुविसतरई शशिमेअनलधरेपुनिआनी तिहिंममरूपध्या
नकरिजानी सजलमेघघनस्यामस्वरूपा अतिप्रसोनप्रसोनमुषसुखरअनूपा हाटक
जटितमुकटसिरसोने निरषिताहिमतरतिपतिलाजे तिलकभालअंबुजदललोच
न भक्तिसुखदसहजभवमोचन चारुप्रलंबभुजावरचारी ग्रीवाहदरसमजगासु
षकारी विसदकपोलमंदमुसकानी सुनिपुराणसवसोभाषानी मकराकृतकुंडल
अतिलोला श्रीनिकेतउरहारनिमोला भगुरेषासुंदरवनमाला द्रेकौस्तभमण
गणमाला वक्रगदाधरिपरमविसाला हलशंखलियेहीनरमाला अंगदकंकण
छविसुठिनीकी निरषिसुंदरीसुषमाफीकी उदररेषत्रयसुंदरसोहा हेमांवरकटि निरषतसोर मदनमनमाहा
किंकिनरूरी पदपंकजनूपुरधुनिरूरी नषमणिसुभगचंद्रकाचारू ध्यानकियेदु
खअघपरिहारू अंकुशाकमलचवग्रध्वजरेषा स्वस्तिकुजंबूफलजवलेषा अरौरो
सुभगरेषजुतचरण चिंतनभक्तिविसदुषहरण २० दोहा वयकिसोरकरूण
यतनपुनिअतिसकुमारि ध्यानकरेनितप्रतिसुजनअैसोरूपविचारि २१ चौपई
नषसिषध्यानकरेनितयोगी लहैविसदसुषकामवियोगी प्रथमहिंचरणसरोज
चितराषै तिहितजिअौरअंगमणनाषै अहैगहैतजेपुनिअंगा निरषेमुषप्रनि मै

५

३४९
ी॰भा॰
३४५

दुखि अभंगा संतनकरे ध्यानदृढ़ हिं जोती हृदय मो जराखै दिनराती इंद्रीय विषयवा
सना त्यागी मनसो रूप होइ अनुरागी जब चित अचल होइ मम रूपा निरखै मुख मम प
रम अनूपा याविधि मन अयनेवस होई तब विराट मे लावै सोई सकल विराट रूप म
म जानी सो ते भिन्न अपर नहि मानी निश्चल नहीं होइ मन जबही तहं ते पुनि छुटिका।
वै तबही। सुधि रूप मे लावै ताही। मेरो ब्रह्म रूप जो आही। ऐसे मोहि लखै सब ठामा।
सो मै सब जग लखि अभिरामा। जैसे अनल अयंडु मलका दारु भेद पुनि होइ अनेका।
ऐसहि करन विचार सुनीको जगभ्रम मिटै जानु मननीको। २२ दोहा ऐसे साधत यो
गके मिटै सकल जगजाल लहै संत सुभ जो वपद नहि व्यापै पुनि काल २३ समारवन
प जातद हविघन होइ वहु भाइ अष्ट सिद्धि फल वीच हीना सकरहि वहु जाइ २४ य
ह सब वरनन होइ गो सुभग पै दुखी माहि जैसो विधि मो सिध सो आह गहै पथ माहि २
५ इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषा निवंधे चतुर्दशोध्यायः १४ चौ
पाई उद्धव अति पुनि कह भगवंता कारुनीक गुन अहै अनंता उद्धव योग कठिन
अति जानी सुनि अरदास तिहि कहहुं वियानी जोइंद्री जीते मन प्राना सो विधान दूर
हि सुजाना सो मै धरैचित मित जाई ताक हविसिद्धविघन हित होई सो तिनको वाक
रे पर हारा तो मम चरण पाव निरधारा तिनहि देखि तो मसुलभ भाई तो सब मसकल
न्याउ भाई हरि मच वचन सुनि उद्धव वोला वचन सोंत मह परम अमोला हे अच्युत

कहियेसमुझाई मैनहिसमुझ्योएकगोसाई केप्रकारधारणाहेवा सिधीकोपुनि
केविधिभेवा तिनकेनामभिन्नकरिसोई कहियसकृपाकरिमोहिगोसाई तबआ
धीनसिधिसबनाथा तुमबिनुकोकहइसकयहुगाथा सुनिउद्धवकेवचनरसाला
हसिबोलेपुनिदीनदयाला सिधअष्टदशजानहुसासा साधनकियेलहैंअन
यासा तिनमहिअष्टसिद्धप्रधाना मध्यमदससिद्धिकरउंबखाना १ दोहा अणि
मामहिमाओरपुनिसिद्धिजुलघिमाआहि तीनिसिद्धयहदेहकीप्रगटकहौंअवता
हि २ चौपई अतिअनुरूपदेहकौकरई कतहूंताहिअटकनहिरहई अणिमा
नामसिद्धसोताता नहिजानोइनकोसुषदाता अतिसैदेहरूपविसतारू धरैकरै
पुनिकर्मअपारू जहांतहांअतिपौरषकरई महिमानामसिद्धसोअहई अतिल
घुरूपकरैनिजदेहा लषैनकोसोरहैसदेहा लघिमानामसिद्धसोआही ममजनमू
लगहैनहिताही प्रापतिनामसिद्धकोभेदा सुनिकैमनआनौजनषेदा सकलप्रा
नकेइंद्रनसंगा जहांतहांकरिविषयप्रसंगा सुरअधिपतिहैजेतिहिठामा तिन
कौरूपधरैअभिरामा तासुरूपधरिभोगैभोगू प्रापतिसिद्धकहैतिहिलोगू वैठा
रहैएकहीठामा देषैसुनैसकलजगकामा विवरआदिकीजानैवाता तिहनअ
गोचरहैकछुताता कहैप्रकाम्यसिद्धितिहिनामा अटकैसोजोहोइसकामा ३ दो०
मनइंद्रीअरुदेहपुनिबुधप्राणसबजानि सबलोकनजोप्रेरसकताहिईसतामा॥

350

श्री·भा· ११ ५०

नि ५ चौपई विषय सुषिन कौं गहै न कबहूं दिन प्रति रहै अनेरत तन बहूं नाम अ
वस्था सिद्धि सो आही। मेरो मन तिन थैन हि ताही इच्छा जो भक्त मन मह धरही पला
वै सकल आइ दिग रहही ऐसी सक्ति होइ पुनि जाही अब दई वसिता सिद्धि सु आही
सिद्धि आठ है ए परिधाना। इनते मध्यम और सु नाना क्षुधा पिपासन व्यापै हही आ
न पसील वात दुषो हो। ऐसी सक्ति देह की जास नाम अनुरमि सिधि तिहि पास
सुनै दूर को बचन अनूपा लषै दूर कौ परम सरूपा मन के वेग देह गति होई इछित रू
प करै निज कोई करे प्रवेस और तन माही स्वइच्छा मरन होइ पुनि काही मिलि।
अपसरनि फिरहि तिहि संगा निरखै देव चरित बहुरंगा सुर क्रीडा दरसन तिहि नामा
मिथ्या फल जानहु परिनामा गयो जहां चाहै तिहि माई अप्रतिहत गत सिद्धि क।
हाई इसा मिलए अष्टादश भाषा हियै पांच छुद्र तहं भूलन गहियै है अरु भयो होइगो
आगे जानै नर सब पुनर निमि मागे नाम त्रिकाल ग्यान है तास लोक प्रतिष्ठा फल
नाहि जास वरषा शीत वात अरु घामा द्वंद न वारै जो सब ठामा रहित द्वंद सो सिद्धि कहा
वै जो अटकै तौ सु धनाहि पावै [illegible] पावक रवि जल आदि विष करै जु थंभन तासु
लोक अवे तामानस [illegible] द्वा सिद्धि फल नासु ६ चौपई परिनि [illegible] सिद्धि सो आही उ
द्धि पनर लगा है न दिनाही इस अपरु आठ पांच राक हि के सिद्धि गहै तौ सम फल न इक
मेरी करै धारना जैसी सिद्धि आइ प्रगटै तिहि तैसी जोगी जन कहु रिपु न हम जाने

फलकेनामहेतुतेमानू इनतेजोकोदृढहोइरहई सोममचरणविनास्वमलहई जै
सीकरैधारनायोगी सिद्धिताहिनसहोइ नयोगी जोकेहियेसिद्धजोग्रावै लघि
योगीकोमनललचावै सोसवतेसोकहोवषानी चितदै सुनहुभक्तिरसषानी
सगुणरूपजोकछुविस्तारा सोनानाविधिरूपहमारा शब्दरूपरसस्पर्सग
धा पंचभूतकेसूषमवेधा भूतसूषममेमनजोधारै मनवचकरनहिंग्रौरनि
हारे ग्रैसेकरैध्यानममजोई गरिमाकोसिद्धिपावपुनिसोई मनलैमहतत्वमह
धारै ग्रौरकछूनहिताहिनिहारै पंचभूतसाषाउनिनाना जोप्रासाषाकोकरि।
ध्याना तेसीरेहधरैपुनिसोई महिमासिद्धितिहिहोई ७ दोहा कहहिंविष्णुप
रमानुजे पंचभूतकोग्राहि तिनमेयोगीमनधरै तिहिसमरेहधराहि ८ चौपई
लघिमानामसिद्धितिहिहोई इहिविधिध्यानकरैजोकोई सात्विकग्रहंकारम
नधारै जोकोमेरोरूपविचारै तवतेइंद्रियभोगनकरही वहुतभांतिविषयावि
स्तरही तेतेसुषयोगीयहपावै सोवहप्राप्तिसिद्धिकहावै महतत्वजोरूपकहा
वे मेरोसूत्ररूपधरिधावै तिहितेत्रिभुवनकीगतिजानै सकलवस्तुसोप्रगट
पछांनै करिदीपकलेदेषैकोई तेसेत्रिभुवनगतिसूझैजोई नामप्रकाससिद्धि
सोग्राही योगीजनकहविफलकराही मेरेकालरूपमनधारै सवगतिसवको
ईसविचारै तिहितेईससिद्धितापावे जानेत्रिभुवनत्योंवरतावे जासोजोचाहे।

351
श्री भा
पत्र ५१

करवावै ताकै अंतर सो उपजावै रमारवन जो रूप हमारा ताम हि चित्त धरै निर
धारा ताते सिद्ध अवस्था आवै त्रिगु विषयन सुख योगी पावै निरगुण ब्रह्म माहि म
न धरई सब कोई सक करहि न गहरई ऐसे सो नित करै विचारा वसि ता सिद्ध पा
प निरधारा जो जो चाह करै पुनि सोई सो सो अनायास तिहि होई ९ दोहा सुद्ध त
त्व जो रूप मम स्वेतदीपपति जानि ताम्हि योगी मन धरै द्दढ करि कै सुखदानि १० सोरठा
इहि ते सुद्ध होइ करि आप षट ऊरमिति हि तन नहि व्यापै पावै सुद्ध रूप सो मोरा
मन न प्रताप न सुख कछु थोरा गगना धाम प्राण मम धारै शब्द रूप अ माहि विचा
रै तब मह लागि है अनिल अकासा सुनै सकल को वचन विलासा नैनन में रवि को
जो धारै अरूप तेज नैनन विचारै अपर छन्न देखै जो माही तब सो दिव्य चषु है वा
ही सब जग मे जो चरत अनेका देखै निज अनिकेतन मह एका पवन सहित मन मो मे
धारै तहा तहा मम रूप विचारै तब जोगी को मन जह जाही मन संग देह जाइ तिहि
ठाही समर मे मेरो रूप विचारै तिन तिन ही मे मन को धारै चाहै भयो रूप जह जैसो
तारत न लगै होइ न बनै सो ११ दोहा पर जोग प्रभाव को अमित सुकार न जानि मेरी
सक्ति अनेक न गुण मन जन ने सेसय आनि १२ सोरठा जोगी जब जीय चाहि काहू तन
हि प्रवेस लखिय तब निज मन तिहि माहि राखे जब ही ता घरो १३ निज शरीर को त्याग
लिंग रूप है जब इनरो जिमि षटपद रस लागि सुमन सुमन प्रति जाइ चलि १४ चौपई

331A

मूलद्वारपगवंधलगाई प्राणवायुकहसीसचढाई ब्रह्मरंध्रहोइगौनकरावै जोम
नहोइसोइसुषपावै स्वरगदेवसुखनिनाध्यावै मेरारूपजानिमनलावै तबतेहि
सहितविमाननहिं आवहि तिहियोगीकहसुषउपजावहि जोजोवस्तुहृदयमहधा
रे तातांकोप्रभुमोहि मनमोहि विचारै जानिसत्यसंकलपजुमेंही तामेंनिजमनरा
षेयोंही जवहीजोचाहै जिहिकाला सोसवलहैताहितत्काला सकलनियंतासब
कोईसा सहास्वतंत्रअखिलजगईसा ध्यानकरेंऐसोममरूपा जायोगीवलसु
नहुअनूपा असोमोरसकलजगजैसो वहयोगीकीआगपातैसो ग्यानरूपसव
अंतरजामी ध्यावैमोहिसकलकोस्वामी ग्यानत्रिकालजन्मनिजमरना जानै।
सवपरिमनआचरना प्रकृतिगुणनतेन्यारोजानै अरुतिनकोस्वामीमोहिमानै
रहितद्वंद्वमेरोसुभरूपा करैध्याननितयोगअनूपा ८५ दोहा पावकपानीपवनजे
द्वंद्वसकलजगमाहि एकनव्यापैतासुतनद्वंद्वदूरिचलिजाहि ८६ सोरठा मेरोसु
भअवतार ध्यानकरैनितलाइमन आयुधअरुसुचारु कृपाचमरचितलाइजब
८७ चौपई ताकौकहूनपरामेहोई सबकेमाझवसैपुनिसोई जैसीकरैधारणाजो
ई ताहिसिद्धितैसीपुनिहोई इंद्रीजितजीतेपुनिस्वासा दांतचितसवविषयनआ
सा मेरीकरैधारणाचाही कहोसिद्धिदुरलभकाताही पहियहसिद्धिनउत्तमजा
नू मोकहमिलतविघनतैमानू मोहितपावैइनहिंचहई भजतमोहिविनुस्वमा गो

श्री भा
॥ ३५२

लहई इहते जाको चतुर विवेकी मनमें कछु रिक कछु और न टेको जेतिक अष्ट सिद्धि जगमाही योगकिये प्रगटे सब ताही और उपाइ करो किन कोई योगिन की गति लहै
न सोई २८ छंद सोमल हन योगीन निप्रभाव सुभाव जिहि वे चलयहै तिहि गोपि लनक बहू सिद्धि कहु के सलहै सब सिद्धि को पति मोहि जो नहु धरम को पति
मै अहो सांख्य योगि उपाइ जे तिक हेतु मैं साची कहो २९ अखिल जगको जनन के मे
पुनि भरण पोषण मैं करो अरु बसहु सब के हिय निरंतर दूर सबने नित ष रो ज्यो
पे चभूत प्रभूत न जग यह मिल्यो पुनि न्यारो लहै त्यो सकल मे व्यापकु सदा मोहि जा
श्रुनि बुध सब कहै ३० दोहा सत चित अरु आनंद घन व्यापी सबते दूरि मोहि ल
खो उद्धव सदा जग प्रभु एक सु भूरि ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषा
निबंधे श्रीभगवान उद्धव संवादे पंचदसोध्यायः १५ चौपई ॥ अरु विभूति वरनन सब
नीको जाहि सुने भ्रम रहै न जीको बोउ समारि भक्ति हित कारी कहि है श्रीमुष क
कमधारी उद्धव सुन्यो हरि मुख बानी समबिसेष हित बुध अकुलानी तुम प्रभु
ब्रह्म सु अविनासी आनंद घन विग्यान प्रकासी आदि अंत को मध्य न जाने स
ब गति रति नहि वेद बषाने सकल जगत न पालक उपजाई पुनि तिहि तुम संहरउ
गोसाई अरु यह जगत यहै बहु भांती ऊंच नीच हरि आगिनि तन जाती ताम हए
क सत्य तुम सोई किहि विधि लषै जीव जड राई वे धावि षया सो भांति अनेक

352A

श्रुतिदुस्तर तिहि सुमति विवेका ॥ अरु जो सान वंत नर कोई तुम कह भजहि न यार य सोई भ
जतिलहहि पुनि सिद्धि गोसाई सो बिम्हलिक दिये सम जाई सव महव सोनाय तुम गूढा
किहि विधि मानि सकै नर मूढा १ दोहा भूमि रसातल नाम कहुं अब रहहि सवि रिसअनंत
निज विभूत विस्तार जुत मोहि कहहु भगवंत २ चोपई सुनि सनेह सानी सुभवानी लागे
कहन संत सुष रानी हे उद्भव हूष्ट हु मलिवाना उत्तर तास सुनहु अवतानी भारत जुद्ध
मांज मोहि अैसे हत ते होइ दुष निरयपनेर अहंकार अपने उर आना कारण करता आ
पु कहु जाना तव मै ताहि कह्यो समुजाई तिहि विधि तो सन कहउं सुनाई उद्भव मै सव
जग को स्वामी अरु सवको मै अंतरजामी मै उपजाइ करौं प्रतिपाला पुनि संहार करौ
जग जाला सव जग को जानै मोहि ईसा ईश्वर हित एक जग ही सा दूसर मो विनु नहि
संसारा जानहु मन मह यह निरधारा मह विभूति सेछेपवषानी कहौ तोहि सनहे सु
षदानी अवि विसेष कोटि कहाौं वनाई मम विभूति सुनि भ्रम मिटि जाई जे गमि वंता
जीव गति तासरु मैं कालहु मे हि को करो विनास जगर छक को रछक जानू जगम
छक को भछक मानू ३ सो त्रिगुण प्रकृति की आदि सो मै जानहु संत तुम और सक
ल मति वार पंचभूत की आदि मे ४ चोपई गुणन मांज जो सहज सुभाऊ मम विभूत
लषु ते सत भाऊ सूत्र सकल वंधन मे जानू वड़न मांज महतत्व सुमानू कहु संबंध
मात्र मोहि जानू कनहु मोहि निरधारण मानू सूष्म मांज जीव मोहि जानिय दुरज

सौर ८।

श्री·भा
१०२५२
353

जपमहु मनमोकहु मानिय जेस्तुतिसामननमें विधिग्रहहु ऊ मंत्रनमोऊ प्रणवतोहिकहहु ऊ
गायत्रीसबछंदनमाही ममविभूतिस्तुतिमतयहग्राही अछरमोऊ अकारहिजानू
सुरपतिविविधमोऊ मोहिमानू वसुनमोऊ पावकममरूपा रविनमोऊमेविष्णुअनूपा
नीलकंठरुद्रनिमोऊ विचारू सपतिरिषिनमेंमें भृगुउरधारू राजरिषिनमेंमनुमेंग्रहहूं
नारददेवरिषिनमेंकहहूं कामधेनुसबधेनुनिमाही विहगनमोऊ नागअरिग्राही
सिद्धनमोऊकपिलममरूपा प्रजापतिनमें दछसरूपा पितरनमेंमेंअर्जमनामा
ममविभूतिग्रेसेसबठामा ५ दोहा दैतनमोऊ सुनानयुनिकेचनवपुसुतमोहि उ
डगनद्रुमअरुग्रोषधीतिनमेंसोमसुजोहि ६ चौपई जछनमेंमोहिजानुधनेस ए
रावनगनमाहिसुवेस जलमलचरमेंवरुनसुजानू तेजप्रकासकमेंरविमानू
नरनमोऊनरपतिममरूपा धातुनमोऊ कनकवररूपा उछैस्रवावाजमहजानू ऐर
धरे तिनमें गजमजानू वासुकसरपनमोऊकहीवे नागनमोऊ अनंतलहीवे मगन
मोऊमेहोमगराजू शस्त्रसबतिनमेंपविराजू वरलवारमहिविप्रवेषानो स
रिनमोऊगंगासुभजाना सरनमोऊ जलनिधिममरूपा आयुधमेंकोदंडअनूपा
सबकेधनुषधारनिमेंजानू परमनिवाससमेरुमेमानू हिमगिरिगहननमेंममरूपा
अन्नमोऊनवपरमअनूपा वरछनमोऊ अस्वत्थवषानो कुलगुरुमेवसिष्ठमो
हमानो जेस्तुतिग्यानननमेंगुरुजानो सेनापतिमहशिवसुतमानो धर्मप्रवरत

353A

कमै अजजानहु व्रह्मजगपजसनमैमानहु वतनमांऊ अद्रोहवषाना ममविभू
तियहसवजगबखाना ७ दोहा पावकपानीपवनरविचवनअप्रीतमाजानि जेते
साधकजगतमै नेसवमोकहमानि ८ चौपई आठअगयोगिनकेआही जोसं
माधिसोमैतिनपाही जीतनचहैताकुकेमाही नीतिअहौमैतिनकेपाही सुवविवे
ककेमध्यसुजानू तत्वविवेकमोहिकहमानू करहिविवाहनहोहुऊवारी तिन
केमध्यवसुजोअपारी जोइदरतिसोमैमिनपाही जीतनचहैताकुकेमाही नियगएम
हसतरूपाओही पुरूषनमध्यजानुमनमोही मुनिनमध्यनारायणजोही तिन
तेव्रह्मचरजव्रतधारी तिनमेहमैसनकादिकवारी सवधर्मनकेमध्यसुजानो
तुम अभयदानसोमैहमानो जितनेअभयठौरकहकोई अंतरनिहसारतमैसोई स
कलगोपनेगहनअनूपा मौनगिराप्रियसोममरूपा हेपतिसुषरतिजेजगमानी के
मा नसुअनतिनमहमोहिमानी जितनेसाविधानजगआही संवतसरमेतिनकेमा
ही कुसकररितुमेमोहिजानू अगहनमासमध्यमोहिमानू अभिजितमेनछत्र
केमाही युगनमांऊसतयुगमैआही जितनेजगतअहेकोधीरा तिनमहदेवलअ
सतसुवीरा ९ दोहा जितनवेदविभागकेकरनहारभयेमित्र तिनमहजानोव्याससु
मोहिपावनपरमविचित्र १० चौपई विद्यमांऊसुकमोहिजानु व्रह्मवेत्तमहमैभ
गवानू जितनेभगवतजनहेकोई तिनमहतुमकोरूपसुहोई पवनतनयहरि

354

श्रीभा.
॥३५४

मां॥

मनकेमाही। ममविभूनगतिन्हहि विधिआही विद्याधरजितनेजगमाही नामसु
तद्दरसनमेंमुनिनाही। जेतिकरतननजानिबहुरूपा पद्मरागिनितिहिमोऊखनूपासु
भगनमोऊकंजकेकोसा त्रिणमहकुसनुरहितसवरोसा यमपवरुनुमहिगोघन
जानू व्यवसाइनमहधनमोहिमानू छलनंजूवाविवहारू वलवंतनमेवलिमे।
सारू छिमावनजितनेजगप्रानी छिमारूपसोममवहुजानी भगवतकंरमयहै
जगनेने ममसरूपजान्हूसवतोने अरचाव्हूहअहेनवतेनेने तुमसोकहोमिन्न
करितेने वासुदेवसंकरषनमानू अनिरुद्धप्रद्युम्नसुजानू नारायणहयग्रीव
वयानानरहरिवामनकोइसुजानो वासुदेवइनननवविचमेही। लघुसख्यातकहो
मेताही परोहा गंधर्वनके मध्यमोहि विस्वावसुनूजानि एरवतिनीनामसोसुरव
रूपनमेमानि रंरंभोपई गिरिनिमोऊथिरताममरूपा छितिमहगंधविमलिअनू
पानानहूनिजहियग्रहअनूहकाजलमहूरसजोमधुरअनूपा तेजिस्वनिमहअ
हेलकमानू रविससिमोऊप्रभामोहिमानू नभमहसबदजानमहअहऊ वीरन
महअर्जुनमहहूहऊ जेब्रह्मण्यनहावलिमानू करोहरोपानौमोहिमानू म
नर्माइद्रियबुद्धिआदिकजेती मरीसकहिअहेसबतेती रहिसवमोऊअरपसवेग
हऊ जेसवजडचेतननिहिकरऊ सवरूपरससपरसगंधा तिनतेपंचभूतस
वेधा महतततइन्द्रिमनजेते अहंकारमिलेकेसवगते त्रिगुणसहितसवप्रकति

354A

विकारा पुरुषप्रकृतिमिलयहसंसारा जहलगिजगतअहैकछूकोऊ मेरोरूपजा
निसवसोऊ मोहिविनाजगमेंकछूनाही प्रगटरहोमेंहसवघटमाही छितपरमा
नगनेमेंकछवहू वहुतकाललगिगनोसुसवहू परियहममकृतअंडअनेका को
कहसककिहिविमलविवेका कोटिकोटिहैंअंडसुजाना कोकविकरेविभूतिप्रमा
ना १३ दोहा जेप्रभावसंपतिसुभगलज्जात्यागिविवेक कीरतवलअरुभाग्यज
सछमारपाहिअनेक १४ चौपई जहांजहांएअधिकसुहाई मनलोचनलविजाहि
लभाई तहेतहंममविभूतिसवजानू औरनेकछूमनमेंमुनिआनू एहिविभूतिसं
छेपवखानी अभिनिवेसअतिसेमनिआनी मनवानीइंद्रीअरुप्राना इनकेनिग्रह
करहुसुजाना वुधिसत्वकरिरोकहुजवही मिटैरोगभवसंसयतवही एनकेनग्र
हविनुनरकोई करैध्यानजपतपव्रतजोई विफलहोइतिनकेसवकेसे काचेक
लसभरयोजलजैसे १५ दोहा इहितेमनवानीसुजनप्राणआहिजेअंग निग्रहक
रईविचारदृढसहजहतवभवभंग १६ भक्तिजुक्तजेवुद्धिवरताकरिकरेविचार म
नवलजाकोभयोजवसोकृतकृत्यउतार १७ उद्धवकहीविभूतियहपरंग्यानकेो
मूल देखोसवमेंरूपममसूक्षमअरुजेपूल ॥१८॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे ए मे
कादसस्कंधे भाषाविवधे उद्धवसंवादेषोडसोध्यायः ॥१६॥ चौपई अवअध्यायस
त्रहकेमाही भक्तिलछ्छणधर्मकहाही वर्णवरजअरुजेग्रहवासी तासुधरमक।

हदि सुखरासी॥ सुनियो विमल तिमोर हरि वानी॥ सात्विक कर्म महा सुख षानी॥ नहे एक
वार मक रत ग मिलहहि॥ कोइक ध्यम निमहा दुख सहहिं॥ असि विचार उर मास संदेहा॥
पूछनि भयो सुसहित सनेहा॥ हे प्रभु करुणासिंधु सुजाना॥ प्रणत पाल असि वेद
विषाना॥ तुम सर्व गय अस समेरे वा॥ समुरुप रानहि मोक हमेवा॥ आदिक लप जो गिरा
वषानी॥ मोक्ष निमित्त धर्म सुखदानी॥ आरच मव ए धर्म सुभ भाषा॥ निनतेस कलन
रनमन राषा॥ करन कर मकोइ निरसंसारा॥ कोइक नासुन्न हे नहि पारा॥ इहि ते इहि
विधक हहु गोसाई॥ जो चल हे सुघन व पद पाई॥ तासु कर्म ते नव परके जा होइ भक्ति
ज्ञान वरनन जा॥ सब प्रभु है सरूप नुम पाया॥ परम धरम तन ववहु विस्तारा॥ सो अब वहु
त काल चलि गाउ॥ उत्तम धर्म लीन व हम एउ॥ तुम विनु असि को कहहि वषानी॥ है
नवे धुमह अक थक हानी॥ तुम वक्त करता इहि के र॥ राषनहार न जग्य हु ते रे॥ अज
कीसभा मोरु चलि है विय॥ निगम महा वपु युत पुनि पविय॥ ता हि सभा महु असि को
नाही॥ कर हि धरम गति असि व लकाही॥ १॥ सोहा॥ तुम करता इहि धरम के वकतार॥
कृपयान करि हो कहुणमकेर तुम तवको कर हि वषानि॥ परम धरम यह गुपत मा १॥
इहके रीन रयाल भक्ति लक्षण धर्म निज मो समक हहु कृपाल जान रक हु जन सजा॥
हि विधि ४ चोपाई॥ सुनि उद्धव की मृदु सुभ बानी॥ बोले कृपासिंधु सुखदानी॥ उद्धव

355A

धन्यधन्यतैरासा प्रसन्नमोरसवकहुसुखवासा परिउपकारकीनतुममनीको सुन
तधर्मभ्रमसवमिटिजीको ग्रादिकल्पजवभासैसारा तवनहिकछुककर्मविचा
हारा हंसनामजपममसवप्रानी हूंसोनतसोत्यलहैसुखखानी सौनयुगनामभयोऽ
हिहेतू भक्तिमोरिसवकेप्रियचेतू पुएवरूपतवजानहुवेहा नहिकछुवहुतभयोत
वभेहा चारिपाहसुनजानहुधरमा क्रियानग्रौरनहीकुछकरमा मनइंद्रीनिग्रहहुत
पजानू हंसनाममममजयहिसुजानू करहिनिरंतरतेममध्याना लहहिमुक्तिनेग्रंत
धरम नितना परमहेयहजगमाही भक्तिमोरतिहिसमकोउनाही प रोहा भक्तिरहित
जेधर्मजगतेविधरमतेजानु नहिपावैसोकर्मफलस्वमफललहै नितनु ८ चौपई
पुनित्रेतायुगभाजिहिकाला त्रिगुणरूपप्रगटेनरपाला विषयमोजसवकोचितव
सिऊ रजगुणघनोपापमनलसिऊ प्रगटवेदभातितिनकेहेतू जेराजसरनपापविचेतू
ग्रास्वमवलीभयोवहुभेदा करमभिन्नतिनकेकहूवेदा करेत्यागिनिजधर्मजुकोई
निरयजाइनिश्चैनरसोई ग्रैसेवहुविधित्रासदिखायो मजैनधर्मउपायवतायो पुनि
वहुभांतिप्रकारतवेदा भक्तिविनाभवमिटेनखेदा तद्यपिरजगुणवसयहप्रानी करे।
ग्रारंभदंभवहुमानी तिनकेहेतुजसउपजावा विष्णुरूपमेसवाहिसुनावा जजन
करोहरिरूपनिहारी यहसुनिकरैप्रकारप्रकारी पुनिमैमुखतेद्विजउपजाये निज
भुजनेछत्रीउपजाये उरूतेभाप्रनिवेस्यसुजाना पगतैपगतेसूद्रप्रगटपरवाना

श्री भा.
प ३५६

पुनिगोहीनधमानेभाराऊ ब्रह्मचरजन्हि पंतेलहऊ बानप्रस्थउरतेप्रगटायो शिर
तेमेसन्यास उपायो सबकोजनकजानु मोहिनातो भजेनमोहि तासुनहि त्राता जिहि
जिहि अंग भयोजो प्रानी तवलछ्छनतिहितिहि भाजानी ७ दोहा भयोजुउत्तमअंग्रे
गनसोउतमतेजानु नीचअंगतेनीचजन इमिकियवेदवखानु ८ चौपई तिनके
भयसबु भावअनेका जासुप्रकृतिजससुनहुविवेका समदमसौचक्षमापरसंतोषा
छमादयातप अरुगतिरोषा सहासत्यमदूभक्तिहमारी द्विजस्वभावस्तुतिकरह
नपुकारी अतिप्रतापधीरनवलसूरा उदामछिमादानकुलरूरा भूसुरभक्तिअ
चलगंभीरा छत्रीप्रकृतिजानियहुवीरा सनीअरस्थासतीअरंभा भूसुरभक्ति
भरिअरंभा नाहिसंतोषउवहितकवहू वैश्यप्रकृतिजानियहुसवहू भूसुरआ
दिकमीचपजोई करेकपटतजिसेवासोई तिनतेलाभहोइकछुजोई अतिसंतोष
करेपुनिसोई इहिविधिकरेदेहप्रतिपाला सूद्रप्रकृतियहसंतदयाला सहज
सोचकूढ़अरुचोरा कारनविनुविग्रहकरिघोरा कामक्रोधनासनीकसुभाऊ अ
तिलोभीयहनीचप्रभाऊ हिसारहितसत्ययुतवानी कामक्रोधमदलेसुनआनी र
हितलोभनपारिहितचितराखे नाहिअधरमकवहूकछुभाषे सकलवरनकोयहसुभ
धरमाजीवदयामदुचितसुभकरमा ब्रह्मचरजेकेधरमवखानो जिहितेउपजेभक्ति
सुजानो ९ दोहा भूसुरछत्रीवैश्यपुनिवरनतीनिजेमाहि इनकोसकलसुवेदविध

3561A

करएोहै चितचाहि १० सोरठा संसंस्कार आदि गरभाधानकहै श्रुति जो कछु अहै अनादि तेसबकरै विधानयुत ११ चोपई जबपुनि पावसुभगउपवीता तबतेगुरुकुलवसैविनीता गुरुसेवापुनिवहुविधिकरई वचनकायमनपरचितधरई पढेवेदगुरुआग्यापाई अरथविचारैमनचितलाई अजिनमेषलादंडसुहाहो ब्रह्मसूत्रमालाउरमाहो सुभगकमंडलकुशकरिधरई जटासीसवोलकपरिहरई वहुतनधोवेवसनवनाई अंगनमलेनरीमहजाई मूत्रपुरीषत्यागजपकाला भोजनसमैवहुरमयमाला गुरपूजामजनजपकरई इतनीठौरमौनजुतरहई नखकेसादिदूरिनहिकरई सदाकालदृढव्रतउरधरई कवहूंभूलिसुकनहिडारै जोगिरिजाइतौयहउरधारै मज्जनकरैगुरमतिहिकाला प्राणायामसाधुलेमाला त्रिपदीजापकरैवहुवारा रहैसदासुभसहितविचारा पावकमसुररहु गुरुदेवागोआचारजवृद्धकीसेवा संध्याकरैत्रिकालवनाई मौनसमांहिनचित्तसलाई आचारजजानेममरूपा मनेमेगहैनमनुजसरूपा १२ दोहा कवहूककाहूसमैपुनि करैनगुरुअपमान मनवचक्रमसेवाकरैजानेमोहिसमान १३ चोपई सकलवेदमयगुरुकहुजानी रहितअसूयाकहिसुभवानीभिक्षादिकजेवसुअनूपा गुरुहिसमरपैममलविरूपा गुरुकृपालजवकहनिजवानी भोजनकरहुतिवहसुषमानी गुरुजवगमनकरैचढिजाना पीछेचलेत्यागिअभिमाना पुनिजैसयन

का

तं

वे

357
श्री०भा०
८३५७

करहिसुखपाई तबपुनिवरलपलोटैजाई जबबैठेतवजुगकरिजोरी निकट
ठाढरहिलखिमुखहेरी सेवाकरेनीचकीन्याई सदाकालसवदामवनाई इहिवि
धवसेसुगुरकेगेहा सविधानतजिभोगसनेहा तौलौरहैनेमव्रतधारी जौलौसु
नित्यवपढैसभारी चारहुजोविरचेपुरजाना तौयेहीनहिहोइसुजाना देहनिवेहनग
वनगमनेकाही नित्यअरुनित्यलपढनेप्रानी तिनसगतजेविषजानी इरसन
परसअलापनकरई परिहासादिकसवपरिहरई ईपतिकीडालपैनसोई इ
ई कप्पाकरेत्रिकालवनाई अरुअभष्यकहुतजेसताई वचनननकहेइसकेपासो
अर्थचवंतरहैनिरासा वचनकायमनसयमकरई सवमेप्रभव्यापकउरधरई
२४ तहाव्रह्मचरजइहिविधिकरै दृढव्रतगहैसुजान श्रुतिविचारनिसिदिनकरै
लहैपरमकल्यान २५ चौपई विगतपापअसोविधहोई मेरीभक्तिलहैपुनिसोई
जेसकामतोकरैविवाहू ग्रहीकरमतवकरैनिवाहू कामरहिततवकरिवनवासा
द्विजशरीरतोगहिसंन्यासा आश्रमतेआश्रमचलिजाई नहिप्रतिलोमकरैगु
निकाई मेरीभक्तिहोइजबजाको नहिकछुरहोकरनतवताको व्रह्मचरजमेक
हवखानी सुनहुग्रहस्थपरमसुखवानी ग्रहनेपढैवेदसवजनवही इहइविस्तागरु

कहत वही गुरु आयसु लैकै सुष पाई मज्जन करै सु बहु बिधि जाई अति कुलीन
लषण गुन नारी तिय वय तेल पुसु भग निहारी करै विवाह वेद कुल रीती ग्रही धर्म
पालै करि प्रीती जो अति काम करै चित चाहू कंन्या चार वरण की व्याहू भूसुर रीत क
ही है ऐसी सुनियहु छत्री कुल की जेसी द्विज कंन्या तजि तीनि विवाहा तिय द्वै वैस केर
निरवाहा सूद्र विवाह एक निज जाती सव की टहल करै दिन राती वेद पाठ में सूद्र
ने निषेधा वरन तीनि को धरम वषाना दान लेइ पुनि मष करिवावै अधिकारी वहु
वेद पढावै तौ निवृत्ति तेन पघटि जाई अनिल होय जिमि जल हउ ताई २६ दोहा होय व
हु तल षि विप्र वर इन कहुं मन वैत जि रेइ सिला उंछ करि जीविका तन वसु रपुर सुष ले
इ २७ सोरठा उत्तम यह द्विज रह मिले न पौरे न पानि ते तुच्छ विषय सो नेह करै न कवहू
विप्रवर २८ चौपई जहां जाइ तहं मिलै सु भोगू ता हि है नु कस्यो वेजोगू करै क एत
पसा धन राषे विनु हरि भजन और नहि भाषे शिला वृत्ति सोतन निरवाहू दासा सु
न ग्रह केन हि नाहू करै अति पसन कामु विसेषी सो व्यापक सव जग मह लेषी जीव
न मुक्ति भयो द्विज सोई मम पद लहै सो नु सो होई मेरी भक्ति होइ जन कोऊ है वाधी
न लहै दुष सोऊ तो को दुष जो व गिमि रावे सो मम प्रिय अति सैन कहावे तो कहु मै
भव पार उतारौ जिमि जल निधि नौका सु षसारौ जो भूपति पालै निज धरमा
छत्र सम प्रजा पाल सुभ करमा हरै प्रजा को दुष सव काला परम पवित्र सुषदा हम

358

श्री भा.
९ ३५८

पाला सो छत्री पावै सुरलोका। चढि विमान विचरै सब ओका। वासव सहित करै सुख
नाना। छत्र धर्म यह वेद बखाना। आपद काल विप्र कह आवै। वनिक वृत्ति करि कालवि
तावै। बड़ गव धनम घर फिरै नीकी। हिंसा रहित अन्न बहु फीकी। सेवा वृत्ति करै नहिं भूली
लहै सुरि सम पद बासुख नूली। छत्रि हइ पब जब होइ घनेरा। शूद्र करम गहइ तिहि वे
रा। लेइ न तान पढावै वेदा। तन पोषै मन करइ न खेदा। वैश्य गया करि तन पुनि पालै। टारे स
कल विपति जमालै। विपति वैश्य वरण कह होई। शूद्र करम अवलंबै सोई। विपति स
उ कह आवै जब ही। गहै करम प्रतिलोम जन तब ही। १९ दोहा। इहि विधि टारै विपति कौ
ह करि शरीर निरवाह। विपत गये निज धरम पुनि गहै नाहि करि चाह। २० चौपई।
निस करम ग्रहै हो कोष्ठक हकं। पंच जग्य जाम ह विसनर ऊ। ब्रह्म जग्य पनो कहइ जस जागा।
तो कामिरि बन जजे सुभ लोगा। सुर हित होम भूत बलि दाना। स्वधाकार करि पितर सु
जाना। मनुष्य यह अन्न जल पा अन्न माना। नर शरीर कछु भजन न पाना। इनमें लोप मोह
निमरुपा सब महं कह दान हू। इस अनूपा दैव योग में नहु धन पावै। नय गुन तनि मन बसे
सो उपजावै। तासोनि मयारि करइ कह पोषै। पुनि करम धर्म कछु संतोषै। निज कुटंब
मह रहै सदा ही। नहिं प्रीति कबहुं करै नि हिं ताई। करत विचार रहै मन माही। एपरिकर
कछु सन न न माही। पच कसे गन समइन को सेगा। यह कर लघेन वचुत प्रसंगा। सावि
धान रहि भूल न जाई। ईश्वर भजन करै मन लाई। रहइ रहइ पनि जाइ समुझै सनिद्रा

वससपनालहि जैसे जब मांगे नवसपन विलाही ॥ त्योंसब जगजानहु जियमाही
जनमेमरैहोइ पुनिमरई बहुतवारभवसागरपरई ॥ इहिते सकलवासनात्यागी
घरमहवसनिमिवसहिविरागी ॥ अहंकारममताकरिदूरी वेधनछोरजननकरि
रूरी ॥ ग्रहमेधीकारिमनकरिगेही ॥ नजेभक्तिबुतमोहसनेही ॥ अस्सजबहोइरहेघर
माही ॥ वनवरजाउनकछुइवनाही ॥ जोअतसुभगहोइपुनिवाही ॥ गहिसेत्यागसाफिरो
जगमाही ॥ पुत्रगेहदाराधनमाही ॥ मनआसक्तिहोइपुनिजाही ॥ तिपलेपटअतिलाग
नविमूढा ॥ मेवहमारमानआरूढा ॥ त्यागनरहितवहुकरमथवेमा ॥ जाकछुकरैसहि
तसोहेमा ॥ इहिविधवेधनरचिवहुभांती ॥ परहिकूपभवकूरकुजाती ॥ कालग्रसतिनि
जवपुनहि जानै ॥ औरनकोचिंताउरआनै ॥ पितावृद्धअरुवलाकुमारी ॥ तबकोसि
सुअतिसिसुधकारी ॥ मोविनुएअतिहीनदुखारी ॥ जिआहिकवनविधयहउरधारी
मोविनुकोप्रतिपालैइनको ॥ एअनाथसोवेमेतिनको ॥ ४१ छंद ॥ एहेंअनाथसनाथमि
इनकोकरैकोअसजगअहै ॥ इहिविधअनेकप्रकारआसागेहचिंतानितरहै ॥ मन
काइवचकरवध्योवहुविधतोषनहितनसोंलह्यो ॥ फिरध्यानकरनसुवारवारहि
आहिअनेककरगह्यो ॥ ४२ ॥ पुनिमरैसोचितहीनिहूंअतिगयेजमपुरवासको ॥ तह
विविधविधसहिजातना पुनिजन्मपाएनासको ॥ फिरतामसीगतिजातिमूढअ
दममतानहितजे ॥ यहगतिसुपावरजीवकी जेरूपाजइवरनहिभजे ॥ ४३ ॥ दोहा

359

श्री भा॰
ए॰ १५९

ब्रह्मचरज गृहीधरम दहम महं कहे उ बषान जा सुनि सज्जन सुभ क्रिया गहहि परम।
सुबषानि २४ सोरठा ब्रह्म आश्रम माहि अवधि आश्रम की कथा कहहि अति चित
चाहि कह्यो केशव निज दास सैं २५ इति श्री भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे भाषानिबंधे
श्रीभगवान उद्धव संवादे सपतदसो ध्यायः २७ चौपई सुनि उद्धव इहि धर्म पुनीता
बानप्रस्थ कहि को सुभ रीता बरष पचास अरु पेंइह बीते वनतन गमन करै सुषरी
ते कुलकहु सौंपि नारि घरबासा केवल मम पद निज उर धारा भामिनि रहै न तौ नि।
नी गहा लेइ संग तिहि गति सो रहहा कंद मूल फल करै अहारा सोहर अजन चे कलव
उधारा भूचरतल अरु पचउदसाई ना परि सयन करै सुषपाई केस रोम नष दूरन
करई फलमल समय पचाल न होई करै सो नित्य क्रिया मन लाई पंच अग्नि ग्रीष्म
रितसई गनि छाया बरषा सिर लेई सीत काल आकंठ प्रमाना जल मह वै ठरहहि
परिछाना तप अरु कठिन करै बहु भाँती सहहि कुलेस हरि भजहि निराती काल।
पकवल पावक पाके रसकाल जस मिलै जब तौ के पाहन हेत उलूषल कूटी अस
न करै मन मुष बहु लूटी रहहि मौन बिकाल नि जलकरि षानी सो गृह रावै निजु भरि मानी।
जो मुनि अन्न नाहि कहु लेई नूतन भये नाहि तजि देई जमन करै ताही सन मोही।
नो कुछ लाभ न होइ पुनि ओही अग्नि हो त्र अरु करै रावा चतुर मास मघ सुभ अरि
न रावा मम महि तन न मन करै सब काला तनै और मघ बुधि बिसाला २ दोहा गै

सेनपकरि विविधविधिसेननममहितलागि शुद्धिहोइउपजैभक्ति जाहिसकल
दुषभागि २ चौपई सोममपदपावै सुषधामा विनुप्रियासनहिमिलहिसुठामा
केवहब्रह्मलोकहूंश्रावै तवपुनिमोपदपंकजपावै करैयाहिविधकल्पश्रनेका
जोसकामनहिउपजविवेका तामसंकोम्हरषजगमाही वष्यासकलस्वमभागु
निनाही वरषसाठपेद्रिहकेमाही वीतरागमनभयेजिनाही जराग्रसनभासिथिल
सुअंगा नहिसमरथव्रतकरनश्रभंगा धरैजसानुहियेश्रारोपी ममपदचितधरै
गतिकोपी श्रग्निमाजरतनुकरैप्रवेसा लहैताहिपुनिसुभगसुदेसा करमजनितसा
वलोकजहालो विनभेगरसवलषैनहालो यहमनजानिवासनात्यागी सक
लसुषनतेहोइविरागी जनेमोहिस्ववेदविधाना प्रजापत्ययाहजसरसाना सरव
विवेकजवहिदृढजाही तवहीसुभगगहैसन्यासा सकलसुषनतेहोइनिरासा वह
तकरनसेन्यासहजवही सुरतिहिविघनकरैपुनितवही तातमातमातासुतनारी
निहिमिसश्राइकरैछलभारी हमकोनाथजाइकितिश्रागे इहिकारणनिहिपष्य
श्रनुरागे निहिचिदृढव्रतमनमहिधारी विचरैमहिसुभगपानविचारी ३ दोहा जो
कदाचितोहिधरणकवहूवसनसुजान तोकोपीनप्रमाणसोकटितटकेश्रनुमा
न ४ सोरठा दंडपात्रकरिधार श्रौरनराषैकवहिकछु मारगचलैविचार दृषि

360

श्री·भा·
५३६

देषिवगधरइमिहि ५ चौपई वस्त्रछानजलपीवैसोई वचनअन्यथाकरैनकोई
मनविचारसुभकरैसुभाए जोपरिलोकहिजातिसुहाए ईहांरहितमोनयुतहो।
ई इंद्रैकायवचनकदुसेई प्राणायामकरैहिनराती चितकहुइंद्रेहेइइंहिभां
ती देइनीनिजोकहियनाही सोसंन्यासदपाजगमाही वणगहेकवभासंन्यासी
नोलुपाकिमिपावैअविनाशी भिछाकरैसानघरजाई औरनकछूमनमाहिग
हाई विप्रनमोजउत्तमजेचारी तिनकीभिछाकरैविचारी विप्रकहीजेहसपर
कारा तिनकोनुमसोचकहोविचारा हेद्विप्रविविप्रहिजानो विप्रविप्रअरुछ
त्रीमानो वैसुसूद्रअरुएकचिंडाल पंचअरुमलेछविप्रचंडाल भिछातिनस
रुपदेपढावै सकलअर्थअरुतनुधनावै इंद्रीजितसीतलसंतोष हेद्विविप्रसो
निरगतदोष तपअरुसनहिसानहिकरै दिनदिनषट्करमनअनुसरै का
ललोपकबहूनहोहोई प्रिथिवब्रम्हणकीअतुहैसोई बिनुहिंसाफलफूलेनला
वे तिनहिंसोरहिवरतावै वरषाप्रीतउस्नसवसहै विप्रविप्रनितिश्वमा
गहै अस्वाहिकनकरैअसोहा रणमेंसूरनजेतनुमोहा नीतिसहितदानेआ
रंभा छत्रीविप्रहितेनहीदंभा अरुजोउत्तमचणजदकरै पशुपालषेतीविसन
रे सोवहुवैस्पब्राम्हणकहीये नातेलेभिछानाहिंगहिये तेलत्नोनघनधम
दलषा तिलअरुमीलमहीमधुमषा इनकोवणजकरतहेमोई सूद्रविप्र।

360A

कहीयतु है सोई सब भूतन के द्रोह हि करै सब के छिद्र न हेयाति फिरै प्रतिदिन हि
सा सो अधिकार विप्र कहावै सो मंजार भष्य अभष्य अकारन कारन गमन अ
गमन लषै अकारन कृतघन सकल पसुन के लछन सो पसु ब्राह्मण कहै विवछ
न वापी कूप ताल पराव बन वगा हि कनास करावै संध्या ष रह इस्नान न जानै ऐ
सो विप्र मलेछ वषानै निरदकु लोभी परधन हरै निरदय क्रूर पिसनता करै सो चं
डाल विप्र करि मानै ऐसे सब विप्र न जानै तातै उतम भिछ्या करै और सकल हू जे
पाहि है सात घर न तै भिछ्या पावै ताही करि संतोष उपावै सरिता सुभ गंगतडाग नि
हारै भिछ्या लेति हित दाम पधारै तहां जाइ पुनि करै विभागा विष्णु विरंचि भानु अरु अ
रागा जो को उजन मांगे ति हि देई वचै सो पुनि आहार करेई रहित संग इंद्री मन जी
ती विचरै भूपति सो इहि रीती ९ दोहा आतम रति क्रीडा रहित धीर इस समसोइ विह
रै निरभय है सब वसन हीन नितजन न कोइ ७ चौपई मोर भाव करहि यमा पावन
भयो ग्यान जब सो कन सावन सब मह व्यापक एक सरूपा लषै निरंतर मोहि अनूपा
इंद्री यन बस वै धन सब काहू विषय रहित मुकति लषि ताहू यह विचारि कै ऐसे
बरौ को भजै मोहि दुनि न होइ विसो की इह लोक सुष नुछ निहारी तजै ताहि लषि रो
ष विचारी पुरुष अरु ग्राम मोह जो है पै भिछ्या लैये जाइ सो पेषै उदर मात्र न हलेइ
अहारा पुनि आगे कह हकरि साचारा पुन्य हेस सरिता गिरि पावन तह तह है फिरै

सुदेससुहावनि वानप्रस्थकेगहहुचलिजाई शिलावृत्तिकोअन्नलहाई तिहंभोज
नतेसुद्धशरीरा उपजैज्ञानमिटैभवपीरा जद्दपिलगिइन्द्रीविषयविनोदा छणभंगुर
लखिकरैनमोदा नाहिनकरैनउद्यमकोई उभयलोकसुखछाड़ियमोई जगतज
होलौंहोबिवचनयना सुनैश्रवणअरुकहियजेवचना सोसवयहहंकारकरिमएऊ
सेवनिसुखशरीरजेकहिऊ मायाकृतयहसवजगजानी इन्नेतआतमहरिविषा
नीसवनसरिसलखिकरैविचारा नहिसिमरैपुनिसुखसंसारा ॥ दोहा ॥ यहवि
धउवजेग्यानजवकैविरक्तमनहोइ कैअनन्यउपजैभक्ति आस्रमतेंनेसुखसो
इ ॥ चौपाई ॥ कहेसलिंगजोआस्रमत्यागा नहोसुनोअसअहहिविभागू आस्र
मधर्मकरैसववानी करैनफलनमोहमनरामा विधिनिषेधहोऊनाहिगहई
निगमसकेनहिमनमहरहई करैवालवतअनिवुधिवेसा माननिरादरहाऊ
गनिसेना अतिनिपुनकरैजडुकरनी फलइच्छागनिजिमिसुभवरनी पीड़ितस
त्रिलमिलकहअैसी वाऊरकहैवानजपजेसी अनुरंजनननहिजगकोकरई
अैसीविधिविवानीसुखधरई त्रानेनिगमअरथवहुभांती नीनअचाररहितन
दिनरानीवेरवाररतिहोइनकवहू सुनैअनेकवारमतिजवहू गतिपावैइ
वेदमलिन्यगामीनरकरहितअरुभोगविरागी विनाप्रजोजनवादविवादकरे
अवरकोउसुनैसुनाऊ वरिकाहूकोपछ्यनकरई अपनोमतिसोनहिपरिहर

ई अरु उद्वेग देइन काहू साधु असाधु नीच तन जाहू काहू तें उद्वेग न पा
वे परुष वचन सहि सुख उपजावै करै न काहू कौ अपमाना मन वच काइक
संत सुजाना निज शरीर सुख हेतु विचारी वैरु न करै काहू सन भारी पसु समा
न नाहि करै विरोधा .... १० दोहा अंतरजामी एक हरि सब महं सुष
इसु वास ज्यों शशि एक अनेक घट व्यापर है चहुं पास ११ सोरठा कबहूं का
हूं भांति भोजन मिलै न सम मांहि मन प्रसन्न दिन राति बेदन मानै तासु हित १२
चौपई जब कछु उत्तम मिलै अहारा तिहि लषि हरष न मानय पारा हानि लाभ स
व दैव अधीना असि जानै जिय परम प्रवीना नहि त्यागै पुनि आसन विवेकी छाडे
असन बुधि भल लिये कौ जिहि विध रहै प्राण सो करई रहै प्राण सुभ कारज सर
ई तन मन सो करि तत्व विचारा भवरु जमि टैन बहि तिहि वारा भोजन वसन सय
न सुख साजू हरि इच्छा सन मिलै समाजू षाटो मिष्ट षारि अरु रूषो अति प्रि
य सो लै बरु अति रूषो भलो बुरो नहि मन महं लेषै सुख अरु दुख हेतु अमिथ्या
देषै मज्जन सौच आचमन जाए औरौ जो कछु नियम कल्याए करै वेदस काग
न सो ऊ विधि निषेध मन धरै न हे ऊ नपापि करै कर्म सुभ सोई जिहि तें भलो
जगत को होई भेद दूसरा मैन नहि कोई व्यापक रहि सब मैं सो जोई जो कछु सवि
नहै पुनिया को नैलो देह रहै पुनि ताको इहि विधि रहैं सदा जो जोगी सो भव रु

362

श्री॰भा॰ ८३६२

जनेभयोनिरोगी ॥ अरुजोकैउपज्योवैरागू करनचहैभवनिधिकोत्यागू न
हिजानैममभजनउपाई सोमतगुरुकीसरणहिजाई ॥ ऐसोनापापसनसाधनसवपा
वै सोपरपारचहूरनहिआवै ॥१३॥ दोहा ॥ गुरुकहहैवैचसल्लसमलवैनहूजोभाद्
रहित ॥ असपापरेवरैनिनप्रतिचितहिलगाइ ॥१८॥ चौपाई ॥ तौलोकरै निरंतरसे
वा जौलोब्रह्मनजानैभेवा पीछेऐपाजानैन्योरहहू ॥ परमहंसधरमहिपुनिग
हहू ॥ जिनयद्दरिपुनिअवसननहिकीना विषयभोगचितनितिप्रतिहीना ॥ चित
चेचलनहिंग्यानविचारागा तिनकोसकलचपासवत्यागा ॥ विनाविवेकभेषभ
लकीना जगवंचकनिजवपुदुषदीना ॥ तौनिरंदुगहिसवहिदिषावा विफलेक
रमपाइ ॥ लोकनसाचा जोहलगिचितरहैवासिविकरमा सकलत्यागिपुनिभयो॥
विधरमा ॥ अतगनिमेवेचषोही ॥ आपुहिवचहोइसुभद्रोही ॥ आसयसुद्ध भ॥
यानहिनास ॥ तिनकरउभयलोकभानास ॥ आश्रमकेधर्मवषाना इनकेकि
याहोइकल्याना ॥ अवचारिहुकोधर्मप्रधाना भिन्नभिन्नकरकरोवषाना ॥ हिं
सागतिसमतापुनहोई वेरविहितसन्यासीसोई ॥ ऋतिविचारतपजुनवनवा
सी तिन्हकोअतहोइसुषरासी ॥ ग्रहीभजनदयाप्रतिपाले नित्यजगपसुभकरमन
चाले ॥ ब्रह्मचरजकरुमसुरपूजा ॥ इहिसमानकछुऔरनदूजा ॥ अवसाधारन
धरमवषानो तपसंतोषसोचभलिजानो ॥ ब्रह्मचरजरतनहिरसमाना ॥ रहित

३६२A

कौ धरममभजनप्रमाना गहीदेहवनितासिसुताना भूलिसुगगमनकरैदिनश्राना
इहिविध निजजनिजधर्मसमेता ममहितकरैकर्म दृढचेता सबमेंभावमोरदृढरा
षै सबसोमधुरबोलनितभाषै पावैसोदृढभक्तिहमारी जिहतेहोनपदारथचा
री २५ छंद जिहितेंपदारथचारिलागेहोनसेवननमोहिकों श्रनपाइनीवहभक्ति
उद्धवहियउपजैजाहिकों सोलहैममपदसहजहीजिनकियोहैसुभकरमको
तेनहुरनहिभवसिंधुश्रावैग्रहितनेममशरनकौ २६ इहिभांतिनिजजनिजधर्मकी
गतिपरमपावनिजानियो उपजैविवेकसुविरतिमगमोलहैसुभगतिमानियो
तुमप्रस्नपूछ्योसाधुहमसोवरनधरमवषानियो कोऊपुन्यसीचितवडेसुकृती
तिनहिमलिमतिजानियो २७ दोहा यहमैंकह्योस्वधरमगुरुभक्तिहोइतिहभांत
पुनिपावैसोमोहिकहलहैपरमसुषसांत २८ श्रबउनईसिग्धयायमहिकहहि
स्रीजदुदेव त्यागिग्यानसाधनसहितभिन्नभिन्नकरिभेव २९ इति श्रीभागवतेम
हापुराणेएकादसस्कंधे भाषायांवेध श्रीभगवानउद्धव संवादे श्रष्टादशोध्यायः २८ ॥
चौपई सुनिउद्धवचितदैममबानी स्ववरणासरमतनोहिकहोवषानी उपजाश्रव
छग्यानजबजाही वरणासरमभिष्यातबताही साधनतनिपावेसोमोही श्रोर
नकछूउपजैहियश्रोही मायाविलसितयहजगजाना रहिताक्रियचितमोपरश्रा
ना ग्यानीकेसवसाधनहेतू मोबिनश्रोरनहैदृढचेतू स्वरगादिकसुषमोबिनजे

श्री·भा·
उ ३६३

ते गहैं नभक्ति निरुछ्यानि ते ते मेरे चरनकमल चिन्हेहीं मो विनु भक्ति मुक्ति नहिं ले
हीं मेहिय अतिप्रिय होनि तनाहीं मो विनु सकल न प्रिय कछु वाहीं जे हैं ग्यान सहित वि
ग्यानी ते मोहिं नाम नतव मुरखु जाना जहिं ते ग्यानी प्रिय अति मोहीं वसैं निरंतर मम उर
आही सो राखै उर अंतर माहीं मो कहसरो ग्यान भामाहीं २ दोहा जपतपनीरथदानव्र
त जोग दिलमि विधि विधि विधान करत वहु तविधि साधन न फल अंतैसो न हिं ग्यान २ सोर
ठा ग्यान कला ते होइ जैसो फल या जीव को लहै परमगति सोइ ग्यानी सम नहिं औ
र कोउ ३ चौपई इहिं ते ग्यान हृदय निज धारहु अरु तुम साधन सकल निवारहु
सवै मेरूप एक ते जानू मोहिं जानि प्रभु सेवादानू दै कारि सहित ग्यान विस्ताना देव
हु सकल लोक भगवाना द्विविधि प्रिय मोहिं माना जबहीं सो मम रूप पावनि नतव
हीं गये वहु मुनि पद निरवाना तिन जानो विग्यान सुजाना उद्भवनेमहि त्रिविध
विकारा जन्म आदि सुषदुष परकारा ते सव यह ते नन कहूं जानू माया कृत निहिं
समान मानू निरविकार नासुद्ध सरूपा आपु सहित लखु परम अनूपा रहित प्रपंच
एक है सोई ग्यानी अंत न वाह अपर न होई इहिं जो प्रगट देह अरु गेहा माया कृत यह वि
षय सनेहा इहिं ते आतम भिन्न अनारी नहिं संवेध कहै मुनि आदी ४ दोहा आ
दि अंत संसार नहिं मध्य प्रगट सो आहि सो जानहु आपु ग्यानी ते ग्यान भये नहिं जाहि
५ सोरठा जैसे रजु के माहिं कहै भ्रद यह कलपना पन्नग आदि न आहि अंत

363

प्रभु

कुपन्नगहैनहीं ८ चौपई तिमिहिहारिसकलभ्रमअहई आनमसुधिवेद्दमिक
हई ऐसेमुनिकेसबकेवचना उम्भवपुनिपूछतकरिवचना हेविभिसस्कलघ
टिवासी कृपासिंधुभक्तिनसुषरासी कहहुकथाकरिग्यानप्रवीना अरुविग्यानवि
मलसुभरीना भक्तियोगपुनिकहियगोसाई जिहिवायभवरूजनसजाई जाको
ब्रह्मादिकशिवलोचहि पाइजीवजिहिवेधनमोचहि जाविनुग्यानध्यानसवफीके
साधनसकलवृथासवजीके जोकोपाइमुक्तिनहिचाहि औरसुषनकोकवअवगा
हि यहभवपंथघोरजदुनाथा फिरयोभ्रमतयहजीवअनाथा तापरित्रिविधतापसो
ताप्यो महादुषितयहजीवनकाप्यो सुषहितकरैउपाइअनेका दुषपावैगतिहो
इविवेका ७ छंद दुषपावबहुविधिनाथयहनरकबहुनहिसुषलेसहै बहुकाल
करमउपाइवसयहसहितकठिनकलेसहै तेहिहेतुमैनिजहियविचारीनासुके
उरषकमही तवचरणकेअविनुनाहिजदुवरऔरकोत्रिभुवनेमही ८ तेहा तव
पदपंकजछत्रसिरधरैजुनरपुनिकोइ त्रिविधतापनसिजाइसवपरमसुखीसोहो
इ ९ सोरठा सुधामयीसुषषानि छत्रचरणजिनसिरधस्यो तेऔरनसुषहानि
यहमैनिश्चैकीनप्रभु १० चौपई जिमिकोउकहिवरवसज्ञानी हेइराजसिरछत्र
सुठानी होइभूपसोबहुसुषपावै औरनकेबहुदुषनघटावै जेतवचरणछत्रसि
रधरहीसोअपनेपारिकेइबहरही पुनिजेताकीझारनाहिआवै तेनरअतेपरम

364

श्री भा

१२३६

वरपावै परयो मीच भव कूप विहाला ताप रिडस्पो महा अहि काला तुछ विषय सुख
हैं जग जेते तिनहि निकरै उपाइ सु केते न वयह पावैं दुख अनिभारी तस्मा रहित नहो
हमुरारी ऐसे बहुविध पावै ताप मोहि ग्रसति समुजैं नहि आप ताकहि कृपासिंधु
यदुराई काढि कूप ते मन क गोसाई वचन पियूष विवरख जगरीसा हरहु ताप ईसन के
ईसा ११ दोहा ऐसे वचन विनीत वर सुनि निज श्री जदुराइ तब उद्धव सो कहत हरि
ग्यान सुख दरसाव काइ १२ चौपई उद्धव प्रसन्न कीन तुम जैसे धरम प्रश्न कीनी पुनि तैं
से सरस ज्ञान मन सुत परिऊ हमरे सुनि तव वचन अपारिक हिऊ सो मै तुम सन कहहु
वखानी भक्ति ग्यान विग्यान सुजानी माया पुरुष मैं तत अहै कारा ग्यावतारि कजे पंच
प्रकारा वीस अरको यह विसनारा इह विन और कहूं कछु नाही एक दूसरे देखै।
सब माही ताकरि सकल एक करि जाने ताहि संत श्रुति ग्यान वखानै अरु जब यह
सब प्रतत पसारा तत्व गुण हिक जग अपारा जानै सकल न तन हि साचा ग्यान मन
ताएक मन राचा देहादिक सब मिथ्या जानहि ब्रह्म सत्य एक तिहि मानहि रजुपहि
चानि सर्प भ्रम नासी माया रहित सलये अविनासी १३ दोहा रिसा मोहि मिटि नाइ नि
मिष रवल वेष पतंग सुधि आवहि रिस विरिस को रहै न भ्रम को अंग १४ चौपई क
रत निरंतर ग्यान विचारू दृष्टि सो मिटै विस्तारू ताको नाम कहिये विग्याना स
हे सन को चतुर सुजाना आदि अंत न सत्य है कोई मध्य माहि जानै पुनि सोई वरता

अकारप्रगटहैजैसे आमहिन अहैअंननहितेते इहितें अवहूं मिथ्याजानूं तिहूंका
लमैसत्यप्रमानूं जैसैतिहूंकालमैघरनी घटनामात्रिकमिथ्याकरनी कहैवेदअरु
प्रगटलषाई पुनिसतपुरुषकहैयहभाई अरुनिजमनमहुकरिअनुमाना वार
भांतियहपुष्टप्रमाना यहजगमिथ्यनवेदवतावै वारवारसबकहुसमुझावै नाना।
कारसकलभ्रमजानूं ब्रह्मसत्यदूजानहिआनूं वस्तुएकसबघटकेमाही ऊंचनी
चकछुभेदनआही ऐसीभांतिनिगमनितकहही गहैवचनसोसुषकोलहही पुनि
यहप्रगटजगतदृष्टिलेषिय सपनधातुमैसबतनुदेषिय उपजैविनसैपुनिउप
जाई जिमिघटपटकछुथिरनरहाई १५ दोहा ऐसेजानहुजगतसबहोइजाइवहु
वारि यहप्रसंगछसुजानियहु सेतसुषदगएसार १६ चौपई अरुसतगुरुषभयेजे
जैते वचनविचारहुतिनकेतेते सबकोमतएकैलषिलेहूं जानहुमोहमैदनजिदे
हू पुनिअनुभवजिनहृदयविचारी तजिअसारजगगहिसुषसारी दृष्टप्रमान।
सबमिथ्याजानूं रजिनसीपमहिनिमिकोमानूं अरुस्नुतितैसहिसबदृष्टांनूं अ
नुभवपुनितैसहितसिद्धांनूं एनवारहुकोएकविचारा मोहिलषाइसबभेदनिवा
रा सकललोकतेकरैविराग ब्रह्मरूपसोनितअनुराग करमरचितसबदुषको
रूपा दसअरुचारिलोकभवकूपा ब्रह्मलोकलोनस्वरजानी इहितेसकलसत्य
नहिमानी सुषदुषजुतजिमि[illegible]यहनरलोका कर्मजनितैसहिसबओका १७

३६५

श्री·भा
पत्र ८५

दोहा इहि मे जे नर निपुन जग इन ते करैं न नेह करि विराग मम भजहि संतन सहित
सनेह २८ भक्ति भक्ति कौ हेतु मै पीछे कह्यौ वनाइ भक्ति सहित साधन वहुर कहहु
सुनिये सुखदाइ २९ चौपई सादर कथा सुने नित मेरी हिय धारे उत्तम हित निवे।
री पूजा मे अति प्रीति वढावे वहुत भांति मम करम नगावे वहुर प्रदछिण करे प्र
नामा आठ अंग गुनगनि सव कामा सकल भूत मह मो कहु जाने जन मेरे मम तन
करि माने मम दासन की सेवा करई तन मन दै आयसु अनुसरई लौकिक कर्म क
रे मम लागी रसना रटै नाम अनुरागी मोहि समरपै सकल सुभ करमा सदा सील गुन
अरु कुल धरमा भजन विरोधी गेय कोउ त्यागा विषय भोग सो करि वैरागा जप तप
जग जाग व्रत दाना जो कछु करै सो निगम विधाना ३० दोहा वापी कूप तडाग फल
सकल समरपै मोहि अंत समय तामो हित जिय करै कर्म स्वकीत जो होहि ३१ चौपई इहि
हि कर नेम नर पावन सोई सोन सकल चित भवय दहवानी मो मे हृद धरै जव हि सुखदानी
परम गयान विराग यनेका अरु विराग लहि सहित विवेका जोइ हित मे
हि आवे देह गेह मह चित्त न लगावे तव रजन न मगुण वढे अपारा वैधे अधर मनिप
रस कारा वंध मुक्ति को कारण जाको मन न तनि आरन ज्ञान विवेका राषे मो पद मन
कहु जोई लहै मोहि कछु निश्चय सोई जो मन विषय भोग मह लावे तो मन वासि

365A

नंही

धुपाहि पावै धरमग्यान वैराग विलासा लहै न मम पद बिनु हरिदासा २२ दोहा जय
जै नाथ बिधि भक्ति मम परम सुभग सो जानु सकल जेनन मह एक प्रभु लषे ग्यान सो मानु
२३ सोरठा सकल विषय के त्यागि ताहि कहत वैराग श्रुति आलि माहि कवहु भागि य
ह ऐश्वर्य वषानियो २४ सुनि हरि के सुभ बैन उद्धव जुग कर जोर करु हे प्रभु करुनाऐ
न मैं पूछौ निज वुधि वल २५ चौपई हे करुणाकर जग हितकारी कहिऊ भक्ति कत
धरम विचारी अरु वैराग पुनि ग्यान वषाना सो सब सुनि प्रभु उरमें आना जम पुनि क
हिय सो केविधि आही सम पुनि कहा कहिये पुनि ताही नियम कहा पुनि हम समुझाई
षिमा दान विधि कहिय गोसाई धीरज तप अरु सत्य वषानी कहिय सत्य ताग अम्रत सु
गामी त्याग कहा प्रभ धन पुनि कैसा कहिये जगपद विलो जैसो सेसा वल प्रभ कह हु
वषानी को श्रीमान लाभ को जानी भाग्यवंत विधा पुनि कैसी लज्जा परम कहौ श्रीजै
सी सुषदु षपी दुनकोन गोसाई [illegible] ष गरु को कहिय वुझाई सुप पसरग अरु कुप
थ वषानी को पुनि वे धुनरक कि मि जानी को दरिद्र को समरथ आही को है कृपन को
है पुनि ताही को धनवंत निरंतर स्वामी सकल कहौ मोहि अंतरजामी २६ दोहा जो क
छु पूछी बात हरि हरनते जो विपरीति जिहि विध समुझौ नाथ में करहु सकल करि प्रीत
२७ इहि विध पूछे प्रस्न वहु उद्धव परम प्रवीन हासि वोले जदुवीर तव वचन सुधा रस
भीन २८ चौपई हिंसा रहित सत्य नरे तम भैयै अहस्य सैगल जुनि [illegible] नाषै ब्रह्मचर्य जुत [illegible]

366

श्री॰भा॰
ए३६६

सतेनसहाई संसयरहितमौनधरिनाई निश्चयबुधिछिमापुनहोई अभयसहाय
हजमहैसोई जवनपसौचहोमगुरुसेवा अक्मानुनहमैश्रीदेवा तीरथररनसहसं
तोषा आदरअभ्यागतनितपोषा परउपकारहेतुसबईहा वारहिनियमकहोनि
नजीहा जेनिवृतिजमगहेविचारी नियमप्रवृतीनितउरधारी रहितकामहकेबु
तसबकामा मनवछितपावेअभिरामा भोगमुक्तिचाहैजनजोई इनकेसाधनमिल
सबसोई मोपदनिष्टाबुद्धिसुजाना समतिनकहुस्तुतिकहेपुराना इंद्रीनिग्रहहर
मैतेजानू दमतेलहेपरमकल्यानू त्रिविधिदुखनितेदुखितनहोई नाकहछमाक
हैसबकोई सरैसोहा इंद्रीजितहवाचेपलहोऊ करैइनाहिवसजोऊ धीरजजानहुता
तनुमइनजीतिमुषहोइ ॥ चौपई ॥ भूतद्रोहित्यागेसोदाना नतनेभोगसोनपनहि।
आना निजस्वभावनीनेसोसूरा समतादृसमत्ययहरूरा कबिनसत्यकछुऔ
स्वधाना धरमसहितप्रियसत्यसुजाना अनासक्तिस्वकरमनमाही सोचनाबु
हरिजननृनाही कर्मनकोफलतजिसोत्याग धनवडआहिधरमअनेरागृ मम
हितजजननगपसोआही ग्यानेहरविल्लनविताही प्रानायामपरमबलजा
नू वडोधर्मजिहिविधिवसआनू ममगैश्वर्यपाववडुभागू भागनामसोल्य
हरभागू सरीनीतिपरमयहलाभा विषयभोगसबगनहुअलाभा विद्यासोजो
मेदमिटावे अपरअविद्यासकलकहावे लज्जाग्रुतनांजेरइस्यकरमा सोलज्जा।

366A

जोरहितविकरमा निहिकिंचित अकामगतिलोभा इनहि आदिगुणतेवड सोभा सु
षडुषरहित अहैसुषसोई विषयकामनादुषवडजोई बंधुमोछजानैनरजोई देह
दिजनपंडितहैसोई देहगेहमैममताभारी निसिदिनअहंकारउरधारी ३१ दोहा मैं
मेरोयहग्रहरहै सोमूरषतूजानि जेनवृत्तिमारगसजनसुषपसुभगनिहिमानि ३२
सोरठा जोप्रवृत्तिजगमाहि सोकुपंथसवजानियै सात्विकगुणवडजाहि सोईसुघरग
वषानियै ३३ चौपई नामसअधिकनरकसोअहई सतगुरूबंधुनेतिइमिकहई
गुरूकहुजानौनिजममरूपा जिहिसतसंगछूटिभवकूपा मनवतन यह मनगहअ
हो गुणयुतसोधनवानकहाही सोदरद्रिजिहितोषनआवा इंद्रीयतिसोक्रपणकहा
वा विषयासक्तिवुधिनहि जोकोर सोहैईसनकोसरवोकी विषयनवससोअहईअ
नीसा प्रभुकोनजानुमषवदूतीसा ३४ दोहा गुणअरुदोषकहाकहौकहतनआवैपा
र विधिनिषेधलछनसहितसमुजितकोनिरधार ३५ परिगुणदोषनेदेषिवोसो
सबदोषनिदान तजिवोजोगुणदोषको सोहैगुणधरवान ३६ सोरठा विधिनिषेधध
भ्रमजानिंनहिअटकैकोचतुरनर उद्धवइहिजीयआनि त्यागिदेहुगुणदोषसव ३७
दोहा अवअधपापजुकीसमह भक्तिक्रियाअरुग्यान अधिकारीकेमेदकरिकहिहि
सुसमुजान ३८ इतिश्री भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे भाषा निवंधे उद्धवसंवादे
एकोनविंशोध्यायः १९ चौपई विधिनिषेधधममतेसवजानू इहिविधिकहिउद्धो

कविस्तानू यहसुनिउरुवहियअनुमाना समुझिनपरामोहिअसिमाना। तवकरिजोरि
कहतअसिभएऊ नाथमोहिकछुसमुझिनपरिऊ तवअप्रोगपायहवेदपुराना नामह
मेस्कहेमुनिनाना। विधिनिषेधयहनिगमवषाना। ताकहिसवकोअकरतप्रमाना। प्रभुश्री
गपालैयेकिहिभांती सोनेभेदकहेवहुजानी अरुयहप्रगटदेषियेदेवा विधिनिषेधको
वहुविधिसेवा अप्राश्रमवर्णप्रगटविधिचारी तिनंकेकर्मविविधिगतिन्यारी तिनको
प्रगटस्वरगफलहोई देवियमसाअनारिकसोई अरुनिषेधयहप्रगटगोसाई अनु
लोमादिकजगसमुहाई पुनिपुनिलोममातिवहुभांती अरुअप्रेवखजगतवहुजाती पुनव
हुवरणअप्रोकरकेते भिन्नकर्मकहियेपुनितेते २ दोहा तिनकेफलप्रभुप्रगटजग
नरकघोरमहवास कहेउनिगमफलजसनहदुअप्रोरनहोइप्रकास २ चौपई दु
यंदशवयकालगोसाई विधिनिषेधजुतसफलसुहाई विधिनिषेधजोसाचन
होई तोसुषदुषफलनहेनकोई नहिपुनिस्वरगनरकनहिकाहू तोस्रुतिविधिवि
मिकहिवहुनाहू कहाकहोप्रभुवारहिवारा हरिनववचनअप्रोरप्रकारा तवप्रुषव
चनंयेरयहस्वामी विधिनिषेधयहुतिहिअनुगामी देवपितरमुनिमानवनेते वेद
नपनकारितेधियनेते विधिनिषेधफलेसुरभलजाने तेऊकरहिसुषदसोमाने
तवअप्रायासवकिरपाटिसाई कहिवनापतिमिसवहिसुहाई मिथ्यानिगमकहि
यकिमिदेवा वाकोनापनसमुझोभेवा दो० विधिवचनसुननसंदेहा वहैसांवाक

367A

सो पुनि एहा भेद दुख प्रभु निगम पुकारे ताहि कहहु यह भ्रम है सारे ३ दोहा उपजा
असंदेह बड मायाकरहु अव नाथ दूर होइ तिहि भांति सवही निवंधु जदुनाथ ४
चौपई सुनि उद्धव की मंजुल वानी वोले श्रीसंतन सुषदानी सुनि उद्धव अस्कि कहौ
बषानी जिहि ते जीव लहे सुषषानी नर हित त्रय उपाइ मै भाषा भक्ति ग्यान जु तक्ति ।
या सुभाषा जो को जस अधिकार निहारी तस तो को मै कहा विचारी सव को जो मै ग्यान
वताऊ तौ विषयीन उरता पवढाऊ इहि ते कम कम विषय निवारी ग्यान हेतु कछुक
हऊ विचारी तिहि ते वचन सत्य सव मेरे विधि निषेध यह वषाने रे तद्यपि सक
ल ग्यान की हेतू भये ग्यान नहि गये सुचेतू एस वब्रह्म मिलि नहि तजा नेत तौ ते हिय से
दहू न ग्यानू भव सुषनि ज जाना अति हीना व्रह्मलोक लौ विपति नहीना तिह सुष
हेतु न उद्यम करई और सकल तन निष्पिर है रहई तिन को ग्यान योग अधिकारा
निसि दिन करहि ज्ञ ब्रह्म विचारा ५ दोहा अरु जे विषयन दुषलष्या उद्यम तजि जिन
दिहीनि परिभोगन सुनि सुषलह हहि मनन करहि मन लीन ६ चौपई करे भोग
मन वहु न गलानी भक्ति योग तिन कहु सुषषानी अरु जे विषय सरारस लीना ति
न के उद्यम वस आधीना कथा श्रवण कोनहि अवकासा मम पद प्रीति न हे आ
भासा कर्मयोग तिन को सुषदाई इतने और न सुषद उपाई अव तीन उकरि कह
हु विभागा उद्धव सुनि चित करि अनुरागा करम योग करता है भीती रहित का

368

श्री भा

प ३६८

मकामइककामसुहानी भक्तिग्यानउपजैनहि जौलौं करैकरमचितदैनरतौलौं
हरखभागपउदयभाजाको मेरीक पामोगमनताको नहिग्रासक्तिनग्रतिनिर
वेदा भक्तियोगतिनकहुकहिवेदा सकलसिद्धिपावैमुनिसोई भक्तिग्यानग्रालेषु
जोकोई नहिनिरवेहकपारु विनाही कर्मतजहिसोमूढकहाही ७ दोहा पालेनि
जकुलधर्मसचजजनकरैमतिकाम नहिनिषिधकछुग्राचरैकरैकूपग्राराम
८ चौपई सोजनसुरगनिरयननहिजाई जोइहिविधिकरिकरममताई एहीदेहव
सनइहिलोका पावैग्यानभक्तिसुपरग्रोका ऊभयवयहनरतनवडभागा पावैसोउ
कीनवहुभागा सुरमुनिसकललोकयहचाहैं नमपुरवासियुनिवहुतउमाहैं भ
क्तिग्यानकरिसाधनाहा परमपवित्रजानुनरदेहा जोग्रैसोतनपाइभुलाई तिहस
मसठकोग्रपरकहाई इहितेसकलकामनाखोई भजिमोहितातसुखीसोहोई
तमिनिषिधिधिसबकर्मसमूहा ग्ररुकामादिविषयकरिमूढा ग्ररुपुनिनहिचाहैं
नरदेहा पाइरतननहिखोवैएहा जद्यपिपावैनरतनकोप्रानी तदपिनकरैमानर
सबानी दहुगेहदारासुतवंधु इनकेसंगहोइपुनिग्रंधु रसनाइंद्रीसुखबहुधावे
वंधा
ग्रापुदामकरिग्रापुहिबावे जोलगिमरनकालनहिग्रावै तोलगिप्रपमहिजनत
नवनावे ९ दोहा जाविधिकुटटिभवसरितसोनोकछुकरैउपाइमरनधरमइह
रहनबिनहिग्रटकेसुखपाइ १० चौपई ग्रर्थतनजद्यपियहदेहा तद्यपितासो

करैननेहा नजिसनेहमितकरैउपाया सावधानसबकालग्रमाया ममयां कहहुकथ
रंतरसंता जिहिविधलहैनहीभवग्रंता जिमिकरततरूपरवासा तामैप्रीतिग्रधिम
नग्रासा ताहियछबहुकोटिकोई तोकैहिरियनहिहोई वछसंगजोकरैविहंगा
तोतिहिसंगहैपतनमंगा जोवहपथमत्यागिनरूजाई कादिनरैबिनरहैलुभा
ई ग्रापद्धिग्रैसीभांतिवचावै तौविवाहगमहासुखपावै त्योंहीनरतुननतरूग्राधा
रा ग्रानमथगतिहंकियोग्रगारा जैतननतरूकादिनसोहैथी ग्रीनैजिउरवास
विसेषी निसिदिनकाल्नछेदममवासा भयकहुपाइनजेधरग्रासा रहेहाईवि
रसत्यग्रनित्यजगयहनिश्चैउरग्रानि रहितसंगहूवासतजिभजिहरिपदसुखषा
नि १२ चोपई नरशरीरभवसागरतरनी ग्रतिदुरलभयहस्रुतिमुनिवरनी
मेरीकृपासुलभसोपावा ग्रतिदृढसोचहुजतनवनावा तामैकेवटगुरूसुख
दाई सानुकूलमैपवनसहाई ताहूमैभवसिंधुनतरई तोकात्यागिफेरभवप
रई सोग्रातमघातीनरजानू तिहिसमग्रोरनपापवखानू यवजहकर्मनेतेग्र
कुलाई भयोविरागकरमसुखदाई कर्मफलनितेगतिग्रनुराग इंद्रीनिग्रहकर
हिसभाग करिग्रभ्यासग्रचलमनराखै सोपदसहानिकछुग्रभिलाखै जतनक
रतमनग्रचलनहोई वहकिजाइविषयनलखिसोई तौनहिग्रालसकरिनिहछा
डे पुनितिहगहनजतनवडमाडे एकहिवारनग्रावेहाथा वहुतकालविषयना

श्री·भा·
श्री·प्र·
प ३६८

मकामङ्ग

धारणा या क्रमक्रम विषयनि वारै ताकौ पुरवै कछुक अभ्यास पुनि वाकौ २५ दोहा इ
हि विधि जतनन वनाइ वहु निज मन वस करि राषि फेरि फेरि अभ्यास करि अरु अभ्या
स करहु नाथ २६ इंद्री जित अरु प्राण वस मन गति तिन जैन सोइ स्वच्छ बुद्धि करि
मन निहै होनी होइ सु होइ २७ चौपई जे चंचल मन द्वा आदि कौं आही मन गति प्राणम
जानीयै ताही जैसे तुरग नहीं नियम वेडा तुरग धावति तिहि रेइन हेडा ताउपरि चढि पु
नि ताहि चलावै हठनि करे सो निज गति धावै एवि ना सुरूप पुनि तिहु रोकी नि
जवस करि पुनि होइ विसो की त्यो योगी निज मन वस करई सो सब योग सहित ज
मै लहई साध्य विचार करै पुनि योगी तव जग तें मन होइ वियोगी जिमि जग होइ
जाइ नसि जैसे तवनि की उत्पत्य पुनि वैसे लषि अनुलोम लषे प्रतिलोमा कोटि
न अरु इरोम प्रति रोमा इहि विधि ईश्वर रूप उर धारै जग अनित्य यह हृदय विचारै
जो लौं निज मन निश्चल न होई तौ लौं साध्य विचारै सोई ऐसी विधि सब कारिय वि
चारा गुरु के वचन हृदय मह धारा तव मन तें विषय अनुरागु सुष निधि लहै
ज्ञानि वडभागु २८ दोहा ध्यान योग विध आदि विधि अरु गुन लषि लहि विचार अवलाहि
क सो चित वस होइ न और प्रकार २९ चौपई इहि मारग मन वसि करि संता मोपद
कमल धरहि बुधिवंता ऐसे मन चौथी मारग आही निगम पुकार कहै सव काही
जो करि लेहि इहु आवै पाया तौ तिनही ते पुनि तिहि पाया और न कछु उपाइ तिहि के

रनौ विधिनिषेधसवमलकरिजानौ निश्रेंग्यानितेनाहिमौ वरनौ उत्तमकहूकछु
मतिमानौ गुणअरुदोषविचारैरौऊ वधेरहितजगमेसवकोऊ भयतेकरहिअ
नेकअरंभा जोकछुकरहिवहुतकरिदंभा फलविपरीतिजानुतेतासु विधिनिषेध
जेनिगमप्रकासु जोअधिकारजासुकोआही सोगुणकहैवेदपुनिताही सुद्धअसुद्ध
दोषगुणरेखी निगमकहैवहुभांतिविसेषी सकलनत्यागहिएकहिवारा क्रमकरि
तजुसवकरमविचारा करिसंकोचतिहित्यागिनहेतू प्रगटनेजतनकहेंत्यागसेतू
इहितेविधिनिषेधनहिकरनौ सकलत्यागिमोमेमनेधरनौ विधिनिषेधमिथ्या
जिनजानौ भवसुषसकलमहादुषमानौ २८ छंद भवसुषसकलदुषमानमनम·
हुविरतकर्मनितेभई ममकथासादरसुननतचितहैत्यागिसमरथनहिभई तेजान
उकृवभक्तिकेपथपरमसुषपावैसही मोहिभजहिसादरसहितदृढमनगाइगुणवि
चारैमही २९ दोहा विषयभोगजद्यपिकरहिरुचिनअहैतिहिमाहि मनवचकर्म
त्यागनचहहिमोपदकीनउचाहि ३० चौपई भक्तियोगकेएअधिकारी सोसवकु
मसनकहिऊविचारी जिहिकहिऊभजनमेनाना भजेनाहिविधिवुधिचितराता
नसइवासनाभजनप्रतापू सुद्धरूपममलषेसुआपू अहंकारकीगांठिनरहई
संसयकर्मवासनारहई जहांजहांदेषेसवमोही औरनेकछुउपजेप्रतिओही
जोजनभक्तिकरैनितमेरी नाहिनचाहहिषवसुघनेरी विनाग्यानअरुविनुवेरा

गा ॥ सो मम धाम पाव बड़भागा ॥ बरन्यौ श्रम के धर्म प्रकारा ॥ तव अरु ग्यान बिराग बिचा
रा ॥ जोग समाधि ग्यान ब्रत जेते साधन सिद्धि कहै फल केते सिगरे फल मम भक्ति अ
धीना ॥ पावे मम जन सहज प्रबीना ॥ सब ते भक्ति शिरोमनि जानू सुलभ मुक्ति प्रद वे
द बखानू ॥ स्वर्ग सुषन की केतक बाता ॥ जो मम जन चाहे सुनि ताता ॥ २१ ॥ तेहा साधु धी
र मम भक्ति मन हि अनन्य गति जाहि ॥ देऊ मुक्ति केवल्य निह लेत न सो चित चाहि ॥ २२
को पई सकल त्यागि मम पद नित नेहा ॥ मोहि सम रपिऊ निज बपु गेहा ॥ निरपेक्ष क
ता अति कल्यानू ॥ निहि ते और न सुख जग जानू ॥ निसिप्रेही को सुख बहु भोनी का ॥
ल्प करम कन नहि सुख जानी ॥ मे निसप्रिह निसिप्रिह जो होई ॥ मेरो भक्ति जानियहु
सोई ॥ मम लक्षण गुन होइ जु सेना ॥ ता महि बल्लु मानि मगवेना ॥ मे निहि प्रिय सो मम
प्रिय न्याही निरपेक्षी इहि ते अपि काही ॥ २३ ॥ छंद ॥ निरपेक्ष इहि ते हे अधिक मोहि
जानि उद्धव नू सही ॥ समचित्त साधु अनन्य गति तिन कोन करनी कछु रही ॥ जो गुनती
त अनीनि मो पथ गहि रहे निसि दिन सदा ॥ तिन कौन परसे दोष गुन फल ब्रह्म पद पा
बहि मुदा ॥ २४ ॥ यह ग्यान भक्ति क्रिया जु बरने परम पावन जानियो ॥ जो गहहि पेषप वि
अशोभन ने पुनीति समानियो ॥ बहु तरे तर हे तरन अजहू भक्ति जिन मम आदरी ॥ ते
मेद मति कह क्रिया कलि जिन कृस्न भक्ति न आदरी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ जे जह पावन पेषन
जि करहि कर मन अधिकार ॥ ते पसु जीवन की सदा विधि निषेध बिस्तार ॥ २६ ॥ एक

पु

370A

बिश्राम्अध्यायमहं केवल कामहिं जानि इव्यहं सगुण दोष सब कहि हहिं रूपानिधान ॥ ३७ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषायां निबंधे श्रीभगवान उद्धव संवादे विंशतमोध्यायः २० चौपई सुनि उद्धव ममभषकी वानी कहो नो हरि गुण दोष वषानी जे पसु सरसि भरे अग्यानी मारग त्यागि करहिं कछु ग्यानी बहुत कामना है हिय जोंको गुण अरु दोष करम सब तोंको भक्ति क्रिया अरु ग्यान विहाई ते भवसागर पुनि पुनि परहीं कलप कोटि लीन हिं निसिन रहीं तिनि हित कहे दोष गुण केते हैं आरंभ सकाम कर्म ते जो अधिकार जासु को होई चित है करै पुरुष जो कोई अपनो धर्म न छुटकि नहोई तजे न निजकुल करमन कोई सो ताकों ते विधि करि जानू तिहि तनि सब निषेध ते मानू १ दोहा जो कछु वस्तु समस्त जग है सब एक समानि सुध असुध विधान करि निगम पुराण वषान २ चौपई जोग अयोग्य नानि पुनि नाहीं गुनि अरु दोष है नु पुनि वाहीं जो प्रवृत्ति निहित लागि न है तू गुण अरु दोष कह्यो जदु केतू पाप निवार धर्मरति होई तमे अरंभ जीव विधि कोई जो न इक र्मभाव वहु वहई तिनहित वहु आचार स्रुति कहई परम अवर विविहार हित लागी या अहे तु काम अनुरागी इहि के कारन भेद वषाना वस्तु एक विधि बहुत सुजाना छिति जल पावक पवन अकासा सब जग पंचभूत परकासा ब्रह्मा दिक थावर जग जेता पंचभूत करि मानहु तेतो आतम एक सकल जग माही

इहि तेभेद कथ्य जग नाहीं तदपि वेद कृत नाम सरूपा विषम क्रियो वहु भाँति अनूपा तिन के स्वारथ मुख के काजा विधि श्रुति कहइ फल सहित समाजा देश काल गुण द्रव्य सुभाऊ इन के श्रुति भाषे बहु नाऊ एक निषेध एक विधि भाषे करि सकु चित कर्म बहु नाषे ३ दोहा जैनें देशन कर्म मग प्रकृति नहिं भूसुर भाव कर्म आरंभु न होइ जो जिहि कलि गिअसि नाव ४ चौपई कीकट देश अग्र सुचि सबहे सो मारन अग्र नर हित अग्र सुचि भूदेवा इन दे सन मैं जह कछु सेवा ते सुचि तुम जानहु बुधि वेता पुनि जह देस अग्र सुर वहु वसहीं सो अति सुचि धर्म जह न सही भू लिन वास करहु निहि ठामा सुचि भूपरि करि बहु विस्रामा सून क आदि काल मह तोया जामह धरम मल सब सो या पान का हि सब काल निषेधा इन ते रहित सो सुभ कह वेधा जन लेन वसन सुध स्रुति कहई भूषपर सते सुध न अहई सुध अग्र सुद्र वचन ते होहीं निगम यो वूरषा जब अग्र काल रिनु होई इन दिन जल अग्र सुद्ध हैं सोई पुनि वरषा जल सुध कहावे दिवस तीनि अग्र सुचि कहवे तन छिन पाक सुधि सो आहीं इन नीग निसे अग्र सुचि कहाहीं ५ दोहा थोरो जल जब सर न में नीच परस जिह कोइ सो अग्र शुद्ध जानहु वहुर वहु जल अग्र सुचि न होइ ६ रवि उपराग निमाग जो सून क अग्र न समान सो अग्र सुध धन देन प्रति निधि नाहिं सुध वखान ७ चौपई औरउ वस

न॰अधन कहसुधा धनवंतनकौ परम॰असुधा है॰असुधविनु मजन ग्यानी वा
लजरठ तिहि रहित बखानी ॰और रोस कलेस सकि॰अनुमाना सुध॰असुध वेदमत जाना
सो सब देस काल॰अनुसारु विधिनिषेध गुनदोष विचारु वासन बसन धान गृ
ह ता घृत॰अरु तेल तृन कनक॰अनंता पावक बाल बायु॰अरु नीरा बहुरस्न तन का
प्रति मुनिधीरा जथा जोग मिलि सुध करही जल॰अरु भस्म जहां जस चाही लागे
जहं दुरगंध बहूता नहि धोवे करि दुक्ख सपूता जौ लगि गंध न जेन हौ सोई तौ ल
गि ताहि गहे जन कोई सो नित हाग लग्यो जह ठामा धोवे हाग रहे नहि कामा तव सो
सुधि गनो तुम नाही हाग रहे सो॰असुध कहाही सकलनि॰अवस्था तप॰अरु दाना मज्जन
संस्कार पुनि नाना करम॰आदि सब सुधि॰अनेका कहे॰ऊ निगम करि भिन्न विवेका
॰अंतहकरन सुधित वहोई मैं रोभ जनके रैज वकोई ८ दोहा संतगुरु मुष नेम ज
सुनि धारै निहि ता रीति मं असुद्ध सो जानियहु ॰अवर॰असुध॰अनीत ९ चौपई कर
म सुध जब॰अर पै माही विनु॰अपर न॰असुध सब॰औही करता करम काल॰अरु देसा
में न दूव्य षट सुभ गसु वेसा ए जब सुध होइ बहु भांती धर्म सिधि फल लहे सुजाती
जो विपरीति करे नर कोई सो॰असुद्ध जान हु सब सोई पुनि॰असुद्ध कहसुद्ध सो होई
कहूं सुद्ध॰असुद्ध जु सोई सुद्ध॰असुद्ध भेद है जो को गुन॰अरु दोष॰अहै सब ताको
भूसुर धर्म॰अहे॰अभिनी को सूद्र करे वद निंद पुनि फीको धर्म सूद्र को जो स्रुति

श्री·भा
१३२२

गावै ताहि विप्र करि धर्म नसावै आपद काल भूपनर को ऊ करै प्रतिग्रह दुर्णहै सो
ऊ विना विपत्ति करै जो कोई महा सेष जानहु तुम सोई दुर्ण को दोष बहोइ यहि भांती
दोष होइ गुण कस न हूं भांती १० दोहा क्षुधा पान करि सह दु जिमि करम भ्रंस नहि होइ भू
सुर कर परसन सुरा महा भ्रष्ट पुनि सोइ ११ चौपई यनीति षन रूली को संगा सो गृह
स्थ को गुण वहु रंगा जिमि पियूष विष लै करि कोऊ ऊंच नीच कहि तिं जे सोऊ इक
सम मरन अपर ऊनि होई तिन महि भेद कहूं नहि कोई ऐसे विधि निषेध कहि जा
नू वडो छोट नहि मन महि आनू नर विन ताहि ऊस कछु आही तू विचार अपने मन मा।
ही अरु नो गृही कर न है संगा रितु के समै जु पति पुसंगा नर विन दूषण है कछु नाही
सदार है सो दूषण माही जैसे परस्या धरनि महि कोई ताहि परनि को भय किमि होई
ऊ चैन दै कछु कनर को ऊ संग तिय मिरि है पुनि सो ऊ इहि संग न्याग भलि आही
नि श्चै करि जानहु मन माही जहं नहं करम नि महि जाई ताहि छुडावे जतन वनाई
जै ज्यो करम तजे नर प्रानी त्यो त्यो सुष उपजै सुषदानी अति कल्यान धर्म यह साध्य
स वनर को सुष देइ अगाध १२ दोहा मिटे सोक अरु मोहि भय हु रिपर उपजे प्रीत
भजन भजन कह जनन कपा मुक्ति लहे यह नीत १३ चौपई इहि कपल मैं भेद व
षानी पुनि धराइ पोर यहि आनी पीछे भ्रम कह सकल निवारे ऐसी भांति जीव
निलारे भवनर विषयन उत्तम जाना नवनि न महि आसक्ति हि ठानी नवतामे उ

पजेतिहि ब्रामा कामप्रसंगकलहकोधामा तिहितेकोधतीव्रपुनिहोई पुनिग्र
विवेकयुक्तिनरसोई सोअविवेकहरैसवग्याना वहनरहोइसामतकसमाना
नाहिकछुसमुजेकाजअकाजा निसिवासरइवपुनगतिलाजा होइसकलपुरु
षारथहानी कहोनमाननहियनगलानी पुनिवहमनकतुल्यनरहोई कामा
सक्तिहोइजनकोई जीवेमिथ्यावृछसमाना जादिपसुतूलरहितग्याना
स्वाससहितजीवेवहअैसे भस्त्रापवनवधाजगजैसे अरुपुनिकहेकर्मफल
जेते सुरपुरइंद्रिआदिसुषकेते तेसवकहिकरिरुचिउपजाई तजिनिषेधति
हिविधिकरवाई ४ तहाजैसेअौषधआधिककटुवालपिवेनहिताहि ताहि
षानहितजननकरिमोदककीजेवाहि ५ चोपई नहिअौषधफलमोदकआई
अौषधषातिरोगनसिजाई सुरपुरहेतुकर्मसुभकरई सोनरतत्वग्यानवरल
हई तवअनर्पितक्रियहनरकोई सोपरसहिजपावपुनिसोई अरुजवतेज
नमेजगजीवा कामभोगभोगेनजिसीवा सुतदारागृहसजनसनेही निजवपु
माततातानृहितनेही करहिकरमवहुसुषकेकामा आपुआपुकोअनरथसा
मा तासुषकोसोमरमनजाना नाहिपाइअगतेन्छ्नुमाना इहिविधिपरहिवहु
रभवकूपा नाहिछूटैविनुलषैसरूपा पर्योसिंधुतिहिदुषतनिहारी श्रुतिअरुसं
तनद्रिदयविचारी अरथकामजवतजयहप्रानी तवभवनिधिछूटैसुषदानी

यह तें अर्थ काम की वाता सेतन कहै काहू सो नाता अरु जे निगम कछुक पुनि
गाए अर्थ धरम अरु काम बताए २६ दोहा सकल छुड़ावन हेतु तें वेद कहे बहु
भांति अर्थ काम सुख को लिये सुपच करै दिन राति २७ चौपाई अरथ काम न्या
गक काजा करन कहै बहु विधि जुत साजा मैं तो सकल युक्ति बहु जानी काम व
मि किमि कहौं बखानी सुनि को हम जन समुझै कोई पुरुष पित वैन वखानै सोई मू
रख गहै सुमन सम वानी फल नहि न करहि कम रुचि मानी कामी कृपन लोभ अ
ति नाही फल मानहि कुसमन के माही केवल अग्य मग धर्म विवेकी लहै न गम।
सकाम हि यहांकी तिनके हिय मैं वसो निरंतर लखै न मोक्ष हि काम पटंतर यह
सब नगन जहां निमताऊ जो सुख थार सकल पितपाहै ऊ चेतन सकति अहि सि
वना की जा बिनु जड़ मति है वेसा की आशा जो को लोपन कोई खले सुनि ज
पथ सुख मुनि लोई सब घटि प्रगट रमय निकोई सो एकनाथ मैं प्रभु जगईसा न
• लखैनही पपि मोहि क्षेप पसु हि सा निहार बहु धंधू काम्य कर्म तन मद छूननाही लखैन मोह
वसा हिय माही २८ दोहा नयन रोग जुत होइ जिमि निकर वस्तु लखाइ तिमि अग्या
नी अधमति मैं हनै है भाइ २९ सोरठा मो बिनु मनि मम गूढ जानै किहि विधि नं
कूर नर इंद्रिय पोषक मूढ जनमहि जग पहि सासहि न ३० चौपाई बधहु नीच अ
निहरयक दोरा नेवरि लोक सहै दुख घोरा एक वार पसु हनै जो कोई जनम जन

मपावैभपसोई जवजोकेहिंसावहुदेषी हनिहनिजीवजीविकापेषी तिनके
हेतुकहीयहवाता हिंसाजगपमाहिविष्याता पसुवधुएकजगमेराष्यो औार
समस्तहूरिकरिनाष्यो जबनररहेतहोदहराई निगमदेदपुनिताहिमिटाई इहि
निमित्तहिंसावहभायी सोईतत्वमूढनगहिरायी वहुविधिकरैकर्मनरयाते
वहुतकामनाहियवसतोते पसुहिंसाकरहिविहारा समुझैमूढनवेदवीचारा
सं पितरदेवभत्तननितजवही उरतेसुधरध्यानहितजिही स्वप्नतुल्यसुरमानिको। वॅर
श्रोका स्ववणसुषदयहतीनहुलोका तिनकोइछ्यहियमहुधारी करहिकर्मध
नवहुविस्तारी होहिविघनवहुकर्मनमाही मिलेनस्वरगमूढपछुनाही जिमि
कोवनिकजलधियहपारा चढिजेलभानसुजाइगवारा धनहितगहधनलेस
वसंगा वोहिथमांजधरैवहुरंगा दुस्तरसिधुनसकअवगाही तरनगवोइमूढप
छुनाही तैसहिवहुविधिकर्मउपाई नरपसुइहूलोकनसिजाई देवजजननसा
त्विकनरकरई राजसमथ्यश्रारिश्रनुसरई जजहिंतमसीभूतपिसाचा तनमन
धनतिनकहुतहरांचा २१ तेहा जिहिविधिपूजैदेवगणतिहिविधिजजयजन
मोहि इद्रहिमानतमुष्यकरिकहीयसगनितोहि २२ पुनिवहमूरषमेदमतिनि
सिदिनकरहिविचार होहिहैवगतिविफलसव जेसकामचिविहार २४ चोपई
जहायगयवहुविधिहमकरिहे देवहुलनचिप्रवहुवारिहै निहिफलतेसुरप्ररसु

374

श्री०भा०
९३७५

सभोगू। पैहैं हि मरल व विधि सुभ जोगू। इहि लोक सुख करि बहु भांती। ऐसे है पुनि इ
हि लोक सुहाती। अति कुलीन धनवंत हि जाती। पावत नही परजन मसु जानी। इ
हि विधि करहि मनोरथ भारी। करहि कर्म पुनि बहु विस्तारी। अति मानी अरु वक्र
सुभाऊ। मरी वानर वैन नही काऊ। भक्ति कहाते उपजै काही। रुचै न मम बानी पुनि
नाही। जद्यपि कर्म करै नित भाषै। अरथ अहि मरजाद राखै। परंतु यापि स्तुति श्र
वन नावै। क्रम करि सकल अनित्य छुडावै। निगम अरथ अप्रास च गंभीरा। जानै कौ
ऊनै है मति धीरा ॥२४॥ दोहा॥ गूढ न समुझैं मूढ मति वेद कहै निरुकाम। करता
थोर कौ और कछु बूडहि सहित समाज ॥२५॥ चौपई॥ श्रावर ब्रह्म है अति दुरवोधा।
माको कोऊ न लहै नहिं सोधा। सूक्षम थूल रूप है याको। मो विगुभे हल है कोना
को प्राण सरूप परा सेनामा। पश्यंती को मन निज धामा। कंठ मध्यमा को हैमू
ला। प्रगट बैखरी सो अति थूला। तीनि ठौर न हल षै न कोई। चौथे प्रगट जानिये
लई। नासु अनंत अपार सुभाऊ। जैसे सिंधु थाह नहि काहू। अति गंभीर अर्थ
सुनि आही। कैसे लहै भेद कहु काही। सब घटि मैं अंतरजामी। सकल अनेन
सकल लोक स्वामी। सब महु व्यापक ब्रह्म सरूपा। लिपत न कत हूं परम अनूपा। सो
इ व्यापक सब ही निमाही। श्रावर रूप पहूंसर को ऊ नाही। तनु वासे पंकज बिजै
से श्रावर रूप मैं सब महूनै सो। प्रगट्यो सो पुनि बहु विस्तारा। ऐसे वेद रूप मम म

मं

जानू प्रणव मूल सव कौं तै मानू तिहि तें अक्षर बहुत प्रकारा तिन ने छंद स्वारन
हि पारा २८ दोहा चारि चारि अक्षर अधिक छंद होत इमि भाँति एक प्रणव ते वे
द बहुत तिन को अंके नित जाति ॥ चौपई ॥ छंद अनेक बहु रीं होइए की जानत जे
को ऊ चतुर विवेकी ॥ गायत्री तिहि नाम पुनीता ॥ चौंविस वरन जानि यहु मीता ॥ उ
ष्णिक छंद आठ अरु वीसा ॥ अहे अनुष्टुप छंद अरु तीसा ॥ वृहती नाम वरन षट् तीसा ॥
पंक्ति नाम वरन चालीसा ॥ चालिस चारि वरन युत जोई ॥ त्रिष्टुप छंद अहै पुनि
सोई ॥ चालिस आठ वरनि है ना को ॥ जगती छंद कहत कवि ताको ॥ कहो कहा लगि
छंद प्रकारा ॥ या विधि प्रगट वेद विस्तारा ॥ कहा छिंद मह कहाव नावै ॥ लेकर अंत
कहा ठहरावै ॥ असममम मोविनु जानन कोई ॥ शिव विरंचि भावै किन होई ॥ यप
रूप कहि मोहि वनावै ॥ सकल वेद मय मोहि जनावै ॥ मम हित करम कहै नित वे
दा ॥ भजहु सकल प्रभु तजि सब खेदा ॥ उपज्यो सब जग मोते कहही ॥ अंत समय सब
हरि हिय रहही ॥ छंद ॥ सब रह हि हरि हिय माहि जानो प्रगट प्रभु इच्छा भयो ॥ पुनि
लसत बहु विधि देषिये जग अंत जहं को नहं गयो ॥ अैसे निरंतर निगम गावत ।
नित्य जग जन मानियो ॥ सो नित्य परम प्रकास ब्रह्म अनादि कारण मानियो ॥ ५ ॥
जिमि जेवरी विव भाव अहि को भयो भव उपज्यो महा ॥ पुनि दीप लै निरख्यो जबै
भव त्रास परे ह्वै भजि गई तहा ॥ तिमि ग्यान उपजे सकल जग यह लख्यैन रव रहै सही

इमि भांति सेतन वेद भाषत ईस बिनु हूजर महीं ३० दोहा मो कह सत्य बषानि श्रु
ति सब जग व्यापि त्रलाइ नेत नेत करि श्रुति परख्यो मेरो हि कहि बुझाइ ३१ सोरठा जात
रूको मोमीव सो हैं ताके भ्रेन फल प्रगव वेद के बीज ताको फल तू मोहि लषु ३२
दोहा सकल वेद बहु भांति ते मोहि बतावे जानु यह जग सा चो है नहीं यह सब वेद
प्रमानु ३३ अब बाइ सष्य ध्याय महि पुरुष प्रकृति को ग्यान तब निर्गुन ती वह
रु कहि हैं हरि कृपानिधान ३४ इति श्री भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे भाषाविवेके
श्रीभगवान उद्धव संवादे एकविंशोध्यायः २१ चौपई उद्धव सुनि यो वेद की गा
था बोल्यो मधुर जोरि जुग हाथा है न गहीसन त्व प्रभु केते करुणा कृपानिधि मोहि
करि तेते जो करि रचित सकल संसारा बहु प्रकार नाना बिस्तारा हरि जु मग्या।
दास करहीना सो ते दृढ करि हिय गहि लीना बहु नारि षि बहु भांति बषानी
कहे नाथ किहि विधि बहु वानी बद्धु अरु वीस कहे मुनि को ऊ अपर पचीस ब
षाने सो ऊ को कह सात कहे नव कोई बद्धु को कहे चार मुनि कोई। तब एकाद
स अपर बषाने को सनदस को मन दिढाने सोरह तेरह कह पुनि को ऊ भिन्न भि
न्न गावहि सब सोऊ सत्य सिंधु प्रभु हो नरपालो सत्य कथन मति कहिय कृपा
(?) १ दोहा सुनि उद्धव के वचन प्रद कृपासिंधु भगवंत कहन लगे सवतत्व के
रितत्व भेद श्रीकंत २ चौपई सुनि उद्धव जे जे मुनि भाषहि भिन्न भिन्न ते गने

तत्वनराषहि तें सेसत्व जानें तुमसा चों मायागुणनें कहि कोवांचें मायाम्प्रास्त्वत
जोकहें जेसो सत्यमानियहुसत्व तुमनें सों मूलकहें गननतीलघुहोई सोषागहें
होरवकुसोई सुनि उपसाषागहें अनेकालषहु तत्वतुमसहित विवेका वीजमां
ऊजिमिवृक्षनकाया जोसंसारमूलहें माया सोमायागुणअगनितजानी इहतें
सकलसाषसवभांती तत्वसकलसाषापरसाषा अरूतिनकेवहुविधिउपहो
साषा जोंजोमुनिभाषेसोसाचा जेहाजानु जोंकोमनराचा परितुमसत्यगहोजन
कोई मायाभ्रमतकरिसवसोई जाकेमनजेसीजोआई तिनतेंभीसंख्याक
रिगाई पंचसपतषट्वहुरपचीसा तत्वकहेंजोंकोजगहीसा घटिवढितत्वन
सेसयआहू जोकोऊ कहें वारकिमिहोई दुरघटमायालषेनकोई ....
२ दोहा जडचेतननकोगांठपरिवंध्यो आपुसोआप कृपाकीरनलिनोगहें तजें
न छूटें तापु ४ चौपई ईसकृपाविनुछुटेनसोऊ करिविचारदेषोपुनिकोऊ
एचौवीससकलजडजानूं देमिलनतेंछवीसवषानूं नहिस्वतंत्रउपजेरहिसो
नाचाहें औरहोइकछूआना इहतें जीवईसद्वै अहहूं छविसतत्वभांतिइ
हकहहीं अरुजेवंधमुक्तिदेनाहीं मायाभ्रमएसवजगमाहीं इहिते जीववु
लदेनाहीं योपचीसजानोमनमाहीं सतरजतमएगुणजगजेतें जडसरू
पमायाकेतेतें जगसंभवरजगुणतें होई प्रतिपालेसात्विकहेंसोई तामस

गुसेसकलसंसारा इहिविधिसव गुणकोविस्तारा सुद्धग्यानसात्विकनेहोई रजगुण
कर्मकहेसवकोई तमगुणतेउपजैअग्याना यहमायाकेहैं गुणनाना इनतेप
रअग्यानमाअहई यहपचीसकोमनिहेभाई कह्योतोहिमेप्रगटवताई सोईकाल।
सुभाववतावे सूत्रसक्तिसोचरवतावे इहितेकालरूपहरिजानू पुनिस्वभावमहत
तिहमानू इहितेतत्वअधिकनहिरे छवीसपेचवीसपुनिकहहरे पुरुषप्रकृतिअ
रूनोअहंकारा महतत्ववतनमात्रेपसारा ७ दोहा सोहे पेचप्रकारसव जोतिआ
पुहुमिजानि अनिलअकाससमेतयह रविनैपतत्ववपानि ६ करनत्वचा।
अरूनयन पुनिरसना घ्राणसमेत कहतग्यानइंद्री इनैसुनहुसंतसुभचेत ७
सोरठा पायुउपस्थवपानि करिअरूवानीचरणपुनि करमकरनएजानि मन
सवकोहिनयनिपुनि ॰ चौपई इंद्रीएजासुअधीना तिहवलतेएकरमप्रवी
ना इहिविधिएकादसकहकोऊ तत्वअगग्यानेनुमसोऊ छितिजलपावक
पवनअकासा पंचतत्वइहिविधिहरिदासा गनिउन्नसगककरमअरूवानी
एनकहूतेपुनिमनमानी अंतरभूतिइनहिपुनिजानी अधिकनमावैपु
निक्रिपानी नगनमयचकेमायाआही प्रथमएकसोअहईअनादी पुरुष
सक्तिभईअनेका अहंकारकारणसोएका महतत्वतनमात्रसमेता
कारणसानजानसुभचेता परमहुअपरअपरपरमाही इहिविधिसपत

तत्व पुनि आही पंचभूति अरु आतम एका षट जानहु करि सुमति विवेका पंच
भूत इंद्री दस जानू मन समेत षोडस इहि मानू रज तम सत्व गुण तीनि प्रकारा तिनि
ते रचित सकल संसारा कारज अरु कारन जग जेता प्रकृति हेतु सब कौ सुभ चेता
पुरुष निभिन्न नहीं है साषी आतम लग अकास सत्य सुनि भाषी ९ दोहा दृष्टा सक्ति
जु पुरुष ते याई जब इन जानि तब सब तत्वन मिलि कृपा सरसिर चौ मन मानि १०
चौपई सात धातु कौ सब संसारा आतम इस्लाके आधारा सकल तत्व सात हि महु
आए इहि ते एकन सपन बताए पंचभूत आपुहि प्रगटाई तिनि करि रचि पुनि
देह बनाई आपु प्रवेश न होहि कीना लिपिन कत हू लषहु प्रवीना ऐसी वि
धि यह घटि विस्तारू आपु मो ऊ बहु करे विचारू छिति जल तेज तत्व ए तीनी
आत्म सहित चारि गनि लीनी या विधि चारि तत्व कहहु कोऊ जानियत इनक
रि ये पुनि सोऊ पंचभूत तिन मांझ जानू इंद्री पंच प्रपंच बषानू आतम अरु मनु
पुनि दस साता एस अह कौ मन है ताता आतम मन एके करि जाना ते जन षोडस
तत्व बषाना पंचभूत इंद्री इंद्री दस कहिये ब्रह्म जीव मन गनि तौ कहिये ऐसी
विधि ते रहि मुनि कहहि नाहि विवेकी बुद्धि जु गहही पंचभूत इंद्री पुनि पांचो
एक आतमा सब घटि सांचो एहि विधि कहै एकादस कोऊ जानहु तत्व साच
कारि सोऊ ११ दोहा ऐसी विधि मारग घने कहहि वेद मुनि गाइ युकति सहित

377

श्री भा॰

१३२२

निहचलु रनर गहहि सकल विनचाइ १२ सोरठा प्रकृति पुरुष को भेद सुनि के
श्री मुष की गिरा नहि कछु मन मह खेद सुनि उद्भव पूछन लग्यो १३ चौपई हे प्र
भु कमल नयन करुणाकर दीनबंधु जन सुषद गुणाकर उपज्यो संसय मो मन
भारी तुम बिनु को छेदै असुरारी चेतन रूप सनातन साँई अविनासी अरु सु
द्धि कहाई सन चित अरु आनंद प्रकासी व्यापक अरु जग अरु सब घट वासी आ
तम सो सु स्वरूप गोसाँई गुणन पार कहै श्रुति गाई जड विनास मे अति हि मली
ना दुष को धाम सकल सुष हीना ऐसी प्रकृति पुरुष ते न्यारी कि हि विधि भई
परम पर प्यारी प्रकृति माहि जग आतम मिलि रहिउ अरु आतम प्रकृति हि करि गहि
उ इह मह भेद परै नहि जान्यो एक मेक है रहिउ नित ठान्यो प्रकृति दार आतम म
लिष पाई आतम बिनु सो प्रकृति न पाई आन पान रोउ अरु ठामा किहि बि
धि भिन्न लषौ सुष धामा तुम सर्वज्ञ सु जान कृपाला वचन ससन्न करि हिन ह
काला मम संसय न हैं हरिय गोसाँई मै न चरण सरण आरत जदुराई सकल मी
व कह वचन मीता तुम रो प्राकृत रोग अतिनीता १४ दोहा नवमा मा गतिनाय
तुम ज्ञान कुंभ परन को इ किहि विधि समझो मेरे मनि कह हु कृपा करि मोहि १५
सोरठा सुनि उद्धव के वैन करुणासिंधु कृपाल हरि बोले राजव नैन वचन सु
धा करि बोरि जनु १६ चौपई हे उद्धव यह ग्यान अनूपा सो अरु कहै सनत मुनि।

रूपा पुरुषप्रकृतितेभेदन चोरा ॥ विनदेखेपुनिभ्रमरहैंतोरा ॥ मायागुणकृतयह
संसारा ॥ अगजगतसूछमस्थूलप्रकारा ॥ उपजैपुनिविनाशह्वैजाई ॥ आतमएकसु
नित्यरहाई ॥ त्रिगुणप्रकृतितेउपजामानू ॥ इहितेविविधिसकलजगजानू ॥ त्रिविध
कहनभावहुविधिभेदा ॥ जिननेजीवलहैनितिषेदा ॥ अध्यात्मअधिभूतिसुहायो ॥
अधिदैवकहइकनामसुपायो ॥ द्विगअरुरूपमिलेरविजवही ॥ कारजसिद्धिहोइजव
तवही ॥ मिलैनतीनिपरस्परजवही ॥ वस्तुनसूझैकछूजगतवही ॥ तीनिविनाक
छुसिद्धिनहोई ॥ मिलेतीनिवरनेसवकोई ॥ सपरसत्वचोवपनसोजानै ॥ श्रवण
शब्दमिलिदिशावषानै ॥ गंधघ्राणसुरवेदवषाना ॥ रसजिह्वानुतवरुणसुजाना ॥ चि
तचेतनपुनिअंतरजामी ॥ बुधिवोधपंकजसुतस्वामी ॥ अहंकारकरताशिवमानू ॥
मनअरुगिरासोमकहमानू ॥ याविधित्रिविधिप्रपंचअनूपा ॥ आतमसकलपरेनि
जरूपा ॥ इनतीनोविनुजगतनहोई ॥ तेआतमविनुरहैनकोई ॥ आदिसकलआ
तमएका ॥ तेंतेचेतनहोइअनेका ॥ २७ दोहा ॥ अविनासीचेतन्यपुनिस्वयंप्रकास
कआहि ॥ सवजगकोआधारपुनिनहिपरसैकछुवाहि ॥ २८ सोरठा ॥ ताविनुक
छूनहोइनाहिलषैकोचतुरनर ॥ सवकहआसयसोइ उद्भवआतमरूपयह ॥ २९
२९ चौपई ॥ महतत्वतेभाअहंकारू ॥ तीनिगुणनिकोत्रिविधप्रकारू ॥ सोअसान
मूलतेमानू ॥ ताकोकियोजगतसवजानू ॥ सोआतमअप्रगहितलीनो ॥ अवभ

३७४
श्री·भा·
ए ३७८

यआपुआपुकोकीनो सदाएकरसआतमआही सबतेंपरेकहेस्रुतिनाही आतम
मजानहुसानसरुपा सनविनअरुआनंदअनूपा जद्यपिसुद्धअहेसबकाला
प्रकृतिसंगकारहोइसोबाला तबयहरूपआपनोजानें तजिउपाधिनिजसु
खकोठानें सोउपाधिकछुसत्यनआही आतमदृढकरुगहिरहुताही जद्यपि
मिथ्यासबसंसारा सोकछुदीसेविविधिप्रकारा परिजोलोयहभजेनमोही तौ
लगिग्यानहोइनहिंवोही तबसेवैममपदहिनरानी सहिनहिग्यानहोइबहुभांती
२० दोहा ऐसेश्रीमुखबैनसुनिप्रकृतिपुरुषकोग्यान उद्धवकीनोप्रस्नतबहरि
जनपरमसुजान २१ चौपई हेगोविंदकृपानिधिसांई पूछौंमैसोकहियगोसांई
तबपदविमुखबुद्धिहैजाकी कहौकवनगतिहेहरिताकी व्यापीविमलआतमा
एका कैसेंकरिपावैदेहअनेका सुभअरुअसुभकरमहैजेते त्रिगुणरचितक
हियसबतेते तांकरिमनकरिबंधेसोकैसे कहियेनाथसमुझौंमैजैसें सोअज
हैजनमेंकिमिहिभांती कैसेंमरेंअमरजगख्याती याकोमोहबतायभेदतुमबि
नुकोमैंहैममयेदा जद्यपिबिद्याबेनकहावे तदपिनबदमेदकोपावे जोकछुपा
ढवधुसोहोई तेलमरमनहिजानेकोई याविधिसुनिहरिजनकीबानी सोपा
सिधुबोलेसुखदानी उद्धवयामनपरमबिचारी सोइद्विनकोहेअधिकारी ई
द्विनद्यमकर्मकिनकरई सुख्यहिनउद्यमबहुबिस्तरई २२ दोहा सोतननतनिमम

जाइ जब दूसरे वपु सुष माने आतम नित हूं नित हूं धाम कहूं चल्यो जाइ न जाने २३
चौपई जे जे सुषिन सुने अरु देषे नाहि नाहि उत्तम करि लेषे निसि दिन सो ध्यावे मु
नि नाही यह तन षीन भये न हूं जाही वह तन पाइ बिसारे याको जनम मरन कही
ये नु हे ताको नूतन वपु सो करे सनेहा छोड़ देइ पूरव तन ने नेहा जनम मरन आतम
कह सोई हूजो जनम मरन न नहि कोई जैसे स्वपन मनोरथ कोई यह तन छाडि अै
र कहूं जोई तब यानन की सुद्धि नहि ताही वा तन सो सनेह अति वाही विद्यमान
पूरव तन नेतो को तदपि प्रीति नूतन सो या को जन्म मरण को कारण असो सा नहि
आतम को कछु वैसो मरे न जन्मै आतम सोई मन ऐसा तनेन बहु विधि सो होई तन
क्रतकर्म गहे फल जोई नाना दुष सुष पावे सोई तन मन बुद्धि चित्त अहंकारा ए
सब आतम के आधारा आतम तिन संग निर्दुष पावे पूरन तन जे तिहूं आतिमन भा
वे यह तन स्फल होइ न सिजाही छन छन छीन लषे को नाही २४ दोहा काल नदी
को वेग अति नाहि लषे कहूं कोन छिनि छिनि जीत सो आयु बल्यो जिमि पानी मे लोन
२५ चौपई नदी निरंतर जिमि जल जाई देषत हू को न हो रहाई दीपसिषा जैसे घ
ट होई देषिय दीपक हे जन सोई अरु जैसे सब वृक्ष फलाही झरत जानि थिर तिं
हि लषाही असे ही यह स्फल रहि गनि जानू काल ग्रसन निसि दिवस वषानू जद्यपि
अवस्था हे विधि नाना बाल कुमार तरुण पुनि नाना तदपि मंद मति ताहि न सूझा

379
श्री भा.
ए ३७९

मैहोसोइ आपुहि इमि बूझा सो बहुरी पसरत जलसोई मिथ्याभ्रम मानै कुर कोई
रहित सकल आतम कहु जानू देह संगते जन्म बखानू अमर निरंतर रहै पुनि सो
ई देह संग मरे तो कह कोई जैसे अग्नि दारु सत संगा सत लहै उतपत अरु भंगा
जो लगि तन सो करे सनेहा तो लगि आतम लहि दुख गेहा गर्भ प्रवेश तहा पुनि काढे
प्रसूत पवन ताहि पुनि काढे बालकुमार युवा पुनि होई मध्य अवस्था गति पुनि सो
ई जरा मरी आयें पुनि ताही मन कतरे बक हिन कवि जाही देह अवस्था नव विधि
अहई एक रूप आतम न हरहई नहि वह लिपति होइ सो न वहू नेह करन बहु
विधि सो जवहू २८ तेहा बध्यो पुरुष अविवेक ते यह तन अपनो माने जब उप
जे पुनि ग्यान पाने यह छूटि नाइ दुख खानि २९ चौपई ऐसी भांति मुक्ति यह होई
मेरो शरण गहै जब कोई और एक यह युकति विचारा करत रहै यह बारंबारा
अपनो पितु को पितामनि हारी तिनको मरण उर महधारी भाइन को जो उन सुख दी
ना जस अरु अजस करम जस कीना ते तो प्रगट काल वस थाये गये छोड़ि स
बसगन आये हू है गनि ऐसी पुनि मारी जैसी हो तज गत बहु आरी पितु के पिता
गये चलि जैसे मैं चलि हो दिन हू मह तैसे मेरे बालन नेह मम जैसो हम परि नेह
पिता कीने सो सकल अवस्था गति ने मोही प्रगट अवक भूत और बहारी निहि
विधि पुनि गेह धन बैभागी मैं अरु केते जे होत निरंतर हा जासो मैं प्रति करो सनेहा

इहि विधि उरमहु करै विचारा निजवंधन निजहांथ विचारा देहगेहमजुअ
सुनदारा भंजैमोहित जिनेह अपारा २८ दोहा जैसे तरू है वीज ते वीज होइ तरू मा
हि फलपाके पुनि जरपरै तरू है वे पुनि ताहि २९ जैसे धानजु षेन मह उपजपा
कि जरजाहि षेती करनो हारि जिमि न्यारो है घरमाहि ३० सोरठा कर्मवीजअविद्या
रू करतनक बहुं सुधर नर नूं निज हृदय विचार ये हैं सुष अनियास ते ३१ दोहा
तो ते न्यारो आपु कह जानै चतुर प्रवीन संग कियो सुषदुष लहै संग करै मतिही
सौ न ३२ चौपई तनसु षहे नु करम बहु करई घटि वढि मोनि जाइ पुनि परई सो
लिक सुररिषि प्रर जाही रजते नर तानवमहु माही नामसते पुसुबर अघ जा
नी त्रिगुण जगत नहहि इहि विधि होनी जद्यपि पुरुष रहित सब देहा करै न कछू
वोलन नहि जो हो करता हूं निज वपु के संगा वंधे संग हो व बहु रंगा जिमि नर गावनो
व गुण भरी है विन हार वैठि पुनि दूरी त्यों त्यों करै वेद पुनि सोऊ तो लग राग गति
जिमि महजोऊ मायागुण तन कर्म अनेका अपनो मानि लेइ अविवेका इहि ते
आपु वंधै बहु भांती मरन जनन अरू जाति कुजाती जो लो तजे न कर्म प्रसंगा
होइ नतो लो गर्भ बहु भंगा जलवाहन जिमि चढि नर कोई तट के तरू चल पेषै सो
ई नयन दोष भ्रमा कर जवन एऊ सकल पुमित तहं लहै ऊ आतम थिर नै से स ते
व काला चंचल जग ज्यों विषुद्धि विसाला है ये से वर्जव मन थिर करि कोई नि

380

श्री॰भा
रा२८०

अलरूपघ्र स्नेलंघु सोई विद्यासपनमनोरथजैसे ॰ सवजगमैंविषयहु तैसे जद्य
पिजगजन्हि आहिनसांचा तदपिनछूटैमनजिहिकांचा ४३ दोहा जद्यपिसपना
सपनासत्यनहिं तौलगिसांचबखानि जौलगिसोवैनींदवसिसुधइवलहिमन
मानि ४६ चौपई निमिअपमानमोहिवसप्रानी जगदुखसहैमूढअभिमानी इ
हिसबमैजानहुभ्रमअहई महाअनर्थरूपसुनिकहई विषयहेतुउद्यमसब
त्यागा अरुसवजगततैंकरिवैरागा जौलगिआपुनसमुझैकोई तौलगिमि
टैनभवदुखसोई निजसरूपसमुझैनरकोई ममआधीनहोइजोकोई रहैनि
रंतरममआधीना सहैजगतउपहासप्रवीना कोऊदरकमूढकरैअपमाना
कोऊकगहिवांधेअपमाना तनपरधूरिमूत्रकरकोऊ डारैरजसिरसहदुख
सोऊ भिक्षाअन्नदारैहैकोऊ ताहिरिपिमनदुखितनहोऊ एकमूढवचकहिपुनि
आई ताहिनकहिनिरहिदुखदाई ४५ दोहा सबहितहुखलजननभयजुतबचनसु
नाइ सहैसकलनहिचितगहैसुखदुखसवकदाइ ४६ चौपई वाहैमोकोऊनि
नवाल्यमना मनथिररहाचितमैंनहिंध्याना यहविधिरहैजगतमहुसंता सोमम
पदपावैइनबंता मेरोपदयककहनअतिभारी द्विगैनसोबहुद्रिढब्रतधारीह
रिकेबचनकठिनअतिजानी उधवप्रश्नकीनभयमानी हेप्रभुहोनवेधुजग
दीसा नवमुखवचनसुनासबईसा ममऊरसंसयभयोनथोरा सुनिप्रभुगिराय

380A

कितमन मोरा बिनु अपराध साधु कहुँ कोऊ दुख जो देइ सहै किमि सोऊ मेरे हृद
य गयान किमि होई सहन उपाइ कहौ प्रभु सोई जो अज्ञानी सहिं न ओभ लि आही ते न
हि कहे वचन कछू काही परि कोऊ रे दुह्र दुख तिनहूं होइ धीम जाना श्रुति जिन
हू हो प्रकृति बस रहै न ग्याना सहि न सकै दुरजन दुख नाना जो श्री ऊन व पद कमल
परागा निज मन भृंग कीन बड़ भागा करि मधु पान मगन तन भूले तिन कहुं न हि ज
ग को प्रतिकूले सुख दुख तिन हि समान गोसाईं और प्रकृति बस बचा न कोई ताहे
यों न प्रभु करुणा करो समुझौं मैं जिह भांति कहौं कृपा करि नाथ सब मन उपजै जिहि
सांति ३८ दुष्ट वचन अपमान सब सहन उपाइ बखान ते इसके अध्याय महि कहिहै
क हरि सुखदान ३९ भिक्षु गीति गुण विविधि निज बुधि मन कहु रोक कृष्ण कृपा क
रि वरनिहै जिह सुनि रहै न सोक ४० सोरठा दुरजन महा कठोर तिन कृत नाना दुस
हृदय जिहि गुण ग्यान न थोरि ते न हि न पि सहि सकै ४१ इहि तें कठिन विचारि क
ष्ण देव करुणा अयन सुभ अध्याय उचारि सहन उपाइ बखानिये ४२ इति श्री
भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषायां श्रीभगवत उद्धव संवादे द्वाविंशतिमोध्या
यः २२ चौपई सुनि उद्धव के मृदु सुभ वचना जन पियूष साने बहु रचना प्रति
पाल संतन सुख दायक बोले गिरा मधुर जदुनायक हे उद्धव ऐसो नहि कोई दुर
जन वचन क्षुभित न हि होई मरम वाण लगि असि दुख नाही दुष्ट वचन जस सदा व्यापि

श्री·भा·
प॰३८१
381

राही उनको जस गुण सील अगाधू सहनसील विनु साधु न होई है अति कठिन
सहै जन कोई परिनै महिं उपाय सुनाऊ सहिनसीलता सुनाऊ दुःख न कियो
बहुत अपमानू ताहिन मोरि हेइ विधनानू जिन भिक्षुक गायइ कुगाई कुमति आ ग॰ध
पनी रहै बडाई सो अब सुनो सुचित ह्वै मोसो निज मन जानि कहत हौं तोसो ॥ ५ ॥ दो॰
मालव देस सुदेस भलि भूसुर इक धनवंत कृषी वनिज संतत करै कामी कृपन असं
त ॥ २ ॥ चौपई ॥ अति लोभी क्रोधी जस होना घनो द्रव्य रहत सदा मलीना जेन रहोइ व
हुत धन चैना सुख जासो पुनि निकलहै न सैना निज जनन को पीड़ा पुनि देई पुत्र दार हित
करै न कोई देव पितर गन सनन पोषै भगनी भूलि कबहुं नहि तोषै सो कंहद ज
नामे गुण ऐसो इहि ने पाप रूप कहु कैसो वह कंहद जन्म भूसुर अति भए उ स
वजग मे अनि अपनल हिऊ वधु स्नात भिक्षुक निजतन नहू इन हूं हेतु धन बर
चेन कबहू पुत्र अधिक अन्नये वह भोती ग्याति अन्य सह दुखारि न रानी कन्या अरु
वत् भृत्य सुख सारा तेस वको सगे सखे सारा तेस वद्रोह निरंतर करही तोको प्रिय न
हि कोउ आचरही ऐसो पापरे विप्र अनितो को जब्य समानु चिनै है ताको धर
मकाम ने सब विधि हीना दुहु लोक के सुख करि छीना जिन हित पंच जग्य नन के
रही गेही सकल रैडु नित भरही सकल रैवमासो करि कोया तिन करि भयौ वि
प्रधन लोपा ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कछू धन चोरी ने गयो कछु जानि न हरि लीन कछू धन पा

वकतेवस्योभयोकालनेहीन ४ सोरठा विप्रभयोअतिहीनिराजद्दंडवहु धनग
यो इहिविधिसवधनछीन भयोनासुअपमानवहु ५ चौपई वहुतकस्टकरि
धनउपराजा दियोकौनखायोगयोविनुकाजा तवतिहिउपजीचिंताभारी निस
दिनधनहितभयोदुखारी महातापतापनसोभएऊ नयनप्रवाहरोगउरछएऊ
ऐसीविधिउपजावैरागा होइजासुकरिजगदुखत्यागा तवसोद्विजवोलाअकु
लाई धिगधिगअधमनमोसमकाई अहोवयामैवहुस्रमकीना आपुआपु
कोदुखवहुदीना मैधनकीनवहुतस्रमपाई सोभाजससपनेसुखजाई मैखा
नं योपुनिदियोकाहू केवलअपजसभामोहिलाहू एकहुअरथनधनममला नं
गा हाकपालिमैपरमअभागा जोवंद्रजनिनकोधनऐसो गयोमोरमघना
विधिजेसो इतिसुखलहेनउनसुखहोई उभयलोकनिसकरनिनषोई वहुत
रूढकहिजिनधनजोरा तिनकहुजेमपरविपतिकठोरा परमजसश्रीवहुगुए
वेता सकलसिरोमणिजगसवजाना अतिकमनीयरूपवडमाना ६ दोहा ऐ
सेनरजेजगतमेजाजघापिकछुलोभ तौसवगुणश्रीगुणभयोतिहिछिनिकछु
अनसोभ ७ चौपई जैसेरूपवंतनरहोई कवनिहुअंगविघननहिकोई स्वेत खे
कुस्टंचकभाजाही सकलरूपनसिमानवनाही ऐसहिथोरोभाजिहलोभा
मिटेसकलगुणरूपनिसोभा जवतेधनहितउद्यमकरई वढितरहेतृस्नाषसव
पंडितजेअरुवडकुलवंता ५

श्री·भा·
ए ३८२

परिहरई तव ते त्रास सोक भय पावै चिंता पावक नित हिय दहै सोवै सिमु भय ये अरु रा
धन हेतू पुनि नित सहै कुल अघ केतू भोग न करै नास जव होई तव पुनि बहु दुख पा
वै सोई हिंसा दंभ मधा अरु चोरी काम क्रोध मद गर्व वहोरी वैरु भेद अरु गानि विस्वा
सा बहु रस पर धाहू हरि हासा पुनि तिय संग पुनि मद पाना पंद्रह मदा अनर्थ वखा
ना यह हिंसादि प्रथम धन हेतू होइ अनर्थ महा दुख केतू भये अनर्थ तव अन
र्थ होई मरने आदि कहहु सव सोई जो कोऊ चाहै निज हित कीना इन्ह हि हरि तजि
रह प्रवीना अरथ नाम सुनि भ्रमि हि लोका विनु विचार पावै दुख सोका भ्राता पि
ता पुत्र अरु दारा सजन सुहृद जे निज परिवारा कोडी वीस लागि अग्यानी वैर क
रहिं नहिं सुख अभिमानी ॥ दोहा ॥ आपु आपु मे वैरि करि जन्म करहिं नर मूढ निहं
मारै आपुन मरै समुझै अरपन मूढ ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ धन हित निज प्रिय प्रान तज
हिं नाहित न आस रसि ने निह अघ हेत निदान जाहिं मद पुनि अधम गति ॥ १ ॥ चौपाई
जातन को जाचहिं निनरवा मिलै न सो लहहि नित सेवा सो नर तन न तामे हि मजा
तो सो नन पाइ बहु रहि नदानी भजि ऊन कृपासिंधु सुख धामहि पावै मद दुरतन
विनु कामहि निज हित करै न नर तन पाई दुख बहु सहहि अधो गति जाई यह न
र रह मति लोकाचारा नाहि पाइ कसम लगि वारा जो अनर्थ नाम हम नलावाम
ढ न न मिन न पचि गवाया दवपि तिर दिवस न सहाया पुत्र वाल ने सजन अरु

जाया घर धन होइन तो यहि इन नहीं ताहि अधोगति वड दुख तिन नहीं सो तन धन मैं
व्यर्थ गवायो भव दुख नेन नहिं आयु वचायो ॥ २२ ॥ छंद ॥ भव दुख न तेन वचाय निज तन
न कहहु मन के सो करौ जिहि भाँति कहिं न कलेश पावहि हृदय हु रम भव अव न हि प
रौ मम गयो वल वय आयु सव गृग घ जरे हि साधन कि मि वने इहि भाँति सो वस को
वमन अति पाव मुनि कलपे घने ॥ २२ ॥ दोहा ॥ जे नर महि न विवेक गुन सील सज्जनता
जाहि ते पुनि करहि अरंभ कन इ पव वहु जो के माहि ॥ २३ ॥ चौपई ॥ छाड़ि अर्थ अनर्थ
विमिलेही कहा करै वे परवस आही नर तन न सुभग ताहि दुख देही इहि ते करहि
अरंभ सदा ही जो माया की माया कहि मोहै नर वानी के सम सव सोहे सो प्रभु वड़ो व
लिख्य चेटा अप्पा जासु सकल सिर टेढो जे धन अरु जे धन के दाता काम वहु रका
म विख्याता अरु वहु करम धर्म जग जे ते पिता मान सुख दायक के ते कहौ कहं
ति हिते आचरही मत्यु ग्रसित तन नहि पर हर ही काल सरूप प्रानु हे जो को
कहौ कहा है सुख पुनि ताको परि जे ही न वंधु भगवेता करुना सागर जे श्री केता
ति न अवेक्ष पाकरी नहि घोरी जो सन असमति मे अव मोरी ताहि चहै भव पा
र उतारा विरति तरनि नि हरे तउ धारा इहिते प्रभु मोहि होनि विरागा प्रगट्यो क
पूर रव मम भागा अव जो आयु होइ कछु मेरी ताकारि मति कि करो हदि केरी
मानन के गुन सकल निवारी मन ते सकल कामना टारी जप तप करि निज

ना

श्री॰भा॰
९३८३
३८३

अंगसुभाई भजौसुहरिपर मनचितलाई २५ दोहा अंतमोहनजोकरैसुरनो
ममकारजहोइ जद्यपिविमेअनिवद्धहौहरिपरदूरनकोइ २५ चौपई नपवहुं
गघरीहूमाही प्रभुपरगयोजानजगजाही प्रभुसमकोऊकपालजगमाही जन
कोअगारहोतपलमाही मनवचकायभजोअवताही दीनिवंधुस्तुतिकहनित
जाही निश्चैकरिममतानतनिभ्रूरी भिक्षुकभयोबुद्धिअतिरूरी सीतलहृदयत
थानहिनाही अहंकारगतिविषयनजाही छितिविचरैमनकहियेकाकौ इं
द्रीअगनिग्रहअतिजाकी भिक्षाहेतुजाइसवठामा फिरहिअलछितपुरग्रह
ग्रामा मजुतनरहितमलीनसरीरा जीवनपटकरिअतिमतिधीरा भिक्षुक
वृधविप्रकोजानी दुसनिनिरसकारवहुदानी कोऊइंदुधीनलेनास कहिहु
रवचनरेइकोऊआसु पात्रकमंडलकोऊलैछीनी मारगरोकिमारिवहुदीनी
भिक्षाअन्नलेइकोघासी इहिसमरंभीमयोनहोसी अंसेकहिमोरेपुनिकोई
आसनवसनरहेनरसोई कोऊकपाककरिपरिहारु हरेचोरकोविनहिविचारु
कोऊजयमालालेभांजी देहिमारिपुनिजोवहमागे २८ छंद कोइतमारपुकार
बहुविधकहहिमहूअवचनहि कोइतनवासनवसनफेरमुलेतवहुदुषदेतहि कोभ
जतभिक्षाअसनलेतिहमाऊकोपूकेघनो कोऊमलनासिरपरधूलडारेनरजि
काधेयसुमनो २७ दोहा कहैमहतैवोनुरमवचहमीनीहोइ नहिवोलोतवता

383A

हिसवमारहिनरपसुसोइ १८ सोरठा एकनरजिकहिनाहि चोरचोरयहमंहहै कौंना
दुषुनिवाहि एककहै यहसठमहा २९ चौपई भयोसकलधनहीनअभागा तवय
हसठकोभयोविरागा सकलकुटंवत्यागियहहीना अररनिमित्तमेषधरिलीना
रषसुयाकैसोहैमोहा महाप्रवलवग्रंनरकोषोरा हषोहमपचमिगरेहारे दुषिकेम
ननभयोदुषुमारे धीरजवेनगयेचलमहकैसो पवनप्रचंडमेरुगिरजैसो योकेजा
ननहमकछूकहहुऊ ज्योंवकध्यानमोनगहिरहिहुऊ योंकरिकोधनिगडमहिडारे
पुनिवहुतभांतितिहिमारे चोरिकपताससवेलती करही विषसेवचनघनेपुनिकह
ही मोनिकाहिदुषभाषेजेस तिनवहुभांतिसहेसवतेसे वरषीशीतिउसमदुषजेमे
एहेविकदुषजानहुतेते अवरअरुतापउहरवहुरोगा सिरअरुउरुणवहुरेहिकसोगा
असेवहुविधिदुषतिनपावा सुषनहिकवहूजिहिढिगआवा परितिनकेषूनम
नेमेआने अपनेकरेकर्मतिनमाने नवतिनभावीगाथानीको पावनपरमसुषद
सवजीको भिछुकककसोगिरामोगाई मेतोसोभायोसुषदाई भिछुककरिमन
मांझविचारा नवपुनिसुंदरवचनउचारा सुषदुषदेनहारकोमोही यहनरआपु
आपुनोद्रोही नहिदुषदेनहारएलोगा नाहिनहेइकर्मसंयोगा पुनिसमरजनमव
हुविसतारा तीनेभांतिविविधिपरिकारा इहियोगनेवहुदुषहोई मनविनुतन
दुषदेनकोई दुषसायकसहमननिरधारा कहेसंतसुतिविविधिप्रकारा ३०

श्रीभा
प ३८४
384

अव्यय अविकारी सदा। ईस रहित परिकास॥ विद्या युत यह आतमा। मन करि भव दुख
त्रास॥ ४१॥ चौपई॥ मन सों ये ध्यो अविद्या माही। निज वैधन सुधि अहै न ताही॥ विषया वि
ष सम लेषन सोई। खाइ सुधा सम पुनि दुख होई॥ वृष सम याय ह जीव कहावै। मन के सं
ग घनो दुख पावै॥ मन विषयन को जब परिहारू। तब हि सुधि है ब्रह्म विचारू॥ आतम हो
इ रहित मन जबही। भयो सुधि मानो तुम तबही॥ जिन अपनो मन वस करि लीना। नहि
करनो कछु तिनहि प्रवीना॥ जिन अपनो मन वस नहि कीना। तिन कर करम कहा फल ली
ना॥ सोइ सम मतवारन जोई। एकाह शीष कोटि करि लेई॥ अरु निज धर्म करै बहु भांती। ज
प अरु नियम करै दिन राती॥ श्रुति पुरान बहु भांति निरूपा। ऐसे सकल धरम बहु रूपा॥ कि
ये सकल साधन जेते नेमा। मन वस विना व्यर्थ सव प्रेमा॥ मन वस करन हेतु सव वेदा सा
धन विविध करे तजि षेद॥ मन निग्रह ते सव फल लेई। विनु निग्रह मन सकल न साई॥ ४२॥
दोहा॥ मन वस भयो सु जाहि के। ता विधि कछु ना को नाहि॥ जा को मन वस है नहीं। विध सव
ही वह जाहि॥ ४३॥ चौपई॥ मन वस करनो सव को मूला। विनु वस किये कर्म सव सूला॥ म
न को वस्य करे नर कोई। इंद्री गन अपहि वस होई॥ मन वस विना दसों दस जाही। ज त
न करत केते मर जाही॥ मन वस भये रंक वस होई। त्रिभुवन ताहि से वस सुष जोई॥ सक
ल चलन ते मन चलन चेता। करै मारि सव हिन को प्रेता॥ मन को कोउ न सके पुनि जीती।
करि उपाय बहु भांति सुनीती॥ ऐसे प्रवल जो ही निमन जोई। सवंते सवल कहे हैं नर सोई॥

384A सोउदरजयपरिपुवसनहिकोना वाहरउडुजतनमहलीना वैरीभिन्नवहुतविधिमाने
हितअनहितअरूतिननेजाने तेअतिमूढसुषीनहिहोही मनवसविनाविफलसव
वोही सुषदुषजडमिथ्याहैतनको आपुमानिकरिवेध्योमनको २४ छंद वंध्योवहुत
प्रकारमूढनजानकछुसुधिआपमो सवदेहगेहसुताहिसंपतिचाहिनिसिदिनहे
घनी यहमेहमारीवसनुसिविधिमि अरुकीनोवधा तिहिहेतुपरमअचेतसंत
तसहहनईयमरवाटयपा २५ पुनिउपजसरतनतजनभवनिधिलरतजगरत
हैसदा यहजीवअगपतगप्रभुकादिहैसकपाजनयेकहा इहितेजडुषकीमूल
मनहैकहतस्रुतिसजनसवै भवपातआनमघातसम जगजेनरोकहिमनअवै
२६ दोहा अरुसुषदुषजेरेतहै मोकहकोमतिहीन तोसुषदुषमोकोनहीदेहपंच
तत्वकीन २७ चोपई सुषदुषसकलदेहकोहोई आतमकेकहुनिकटनहोई
जद्यपितनसोंकरिसंयोगा दुषसुषकरैजीवसवभोगा तद्यपिमैंकाकहुदुषदे
ऊ आतमसकलएकलाविलेऊ दुष केंा आपु आपुको कीने आपुनोवुरो।
आपुवेंतोकीजे यातननेमे पावेदुषजोई अपरदेहव्यापकहेसोई निजहतन
रसनाजिनकाटी कहोदंडदीजेकिहडाटी कैविचारदंडजाहिकोकीजे सोनोउ
भयव्यापहोलीजै इंद्रीअधिपतिहेसुरजेते जोएदुषदायकहैकेते तद्यपि
आतमसवतेन्यारो परिउपाधिवेंतासिरपरिधारो असनसमैकरनिजमुषदे

श्री·भा·
प३८५
385

ही दलनकारि अरु गुरु पुनि जोही तो पावक सुरपति रोअ ज्ञानै स्वपावै रअवनेरच्यौं
हौने यो सबइद्रिनके जे भूपा वेरभाव निजनिज अनुरूपा वे जसजानैनसउनि
करही जानी नहि मनमै धरही तो सुषदुष हानायह आपू तो हूअयको नहि
कछु पापू तो यह है स्वभाव सब अपनो सुषदुष सकल जानियैसपनो २८
दोहा आतमसुषदुषनै परैलषियैभ्रम अरु मैर सो सब अपनो भूलयह ज्ञो
नेयह बहुदुद्द २९ चौपई अयेगपानसुषदुष मिटि जाही इहितै आतमकोक
छुनाही यानैकोपकवनसोकरियै अपनोमन निग्रहपुनि करियै ग्रह ज्ञोहै
सुषदुषके दानी लोकवेद असपुनिय कहानी तो नर क्रोध करै किहिलागी
यदि दुषनकेयांहु जेनग्रभागी वसैनव ग्रह नभकेमाही बारह रासससहाचे तिजा
ही रामग्रहबहे आपसमाही तिनको रषि नाहि कोअ्राही इहिते राशि जन्मजि
हिहोई नवनिहि भैगपावदुषसोई सदा अजनमा आतमैमानो जन्मदेहकोनि
नप्रनिजानो इहितै सुषदुषन नुकेधरमा आतमसदारहितसबकरमा ३० दो०
ह नद्यपिदुषिहै सगनै कहे काऊ इकभांति सरपिन आतमको कछु ग्रहय
ग्रहिलेत अनकीचै समुझसदा ३१ चौपई सुषदुषदानकर्मको मानै कर्मने
सनसुप्रदवयानै याजइदेहकर्महै ताको आतमसोसंबधन जाको पुरुष

सुद्धसग्यानसरूपा सबनेपरेप्रकासअनूपा अबमैंक्रोधकरौंकहिकासौं कर
महेंहसंबंधनवासौ जोदुषकालहेतुकरिमानो तौअपनेपरिषिकहिविधिठानो
ननकहकालहेनदुषअहई सोतोपुरुषनिकरहीरहई कालअनामाब्रह्मस
रूपा हेहविलछ्छणसकलअनूपा इहिविधकालहुनेदुषनाही कालभयानके
देहनिमाही धूमकेतुपावकमहिडारें सवाअगनिनाहिनहिवारें हिमकणले
जैसेनरकोऊ धरेंहिमाचलमेलेसोऊ तौहिमकणकोभयकछुनाही जहपिर
हैसदातामाही योगीपुरुषकालहोऊजानो उभयरूपएकैकरिमानो सुषदुष
एसवतनकहूहोही सवतेपरेपुरुषनितजोही ३३ छंद सवतेपरेवहसुद्धरू
पअनूपअनामस्तुनिकहे जहलगिअहेजगद्वंद जेतेसकलसोप्रकृतिलहेसो
प्रकृतिजडचेतन्यअनामकहहु किमिसंवंधहे केवलविकलपविनाइसुषदुष
मूहयहनरअंधहे ३४ यहनिसामोमहाजुनमनहुसयनकरिनिरभयरह्यो
इहितेजुपरिकुनतोघेरापवदारनिजकरमेंगह्यो सेसुवीअवमेदुवीअसेकहत ९६
निसवासरअहे जोजगपोरअनीमोहने सोहोनिनिरभयस्तुनिकहे ३५ दोहा
इहिनिभयअवनहिकरोमैसवनेहोंदूरि भजोसदाहरिचरणवरसहोनभवद
षभूरि ३६ सोरठा जिनसेयोपदकेज तिनपायोहेपरमपद अहेमुक्तिसुष
केद निश्चैमैजानीइहया ३७ चौपई उद्धवकहद्विजभयोविवेकी आसाना

श्री·भा·
११ ८६

तिसुनगममतिटेकी दुहुनवहुभांतिदुषरीना परिसोकछूनदुषगलिहिलीना ऐसेजग
मोहोइउदासा भूविचरेनहिकनहूंनिवासा सहनकीनअपमानघनेरा निसिवा
सरपुनिमोजसवेरा दृढकरिमनसोतनिउनधरमा कहुनतभयोदुषनिजनिज
करमा सुषदुषदेनहारनहिकोई लषियदोउजोभ्रमहैसोई आरिमित्रबंधु
जगमेते यहआपानकियेसवंतेते मनवचकायकियेजेकरमा हेतबुद्धिजहल
गिसोभ्रमा सवप्रकारमननिग्रहकरनो ममपदकेजविन्निजधरनो याही
कोकहोयभलयोगा नाहिकियेममरूपसंयोगा अरुजेयहगाथाजोगावहि
पुनहिवहुरनिजउरमहिधारहि तासुनिकरदेषदंदनजाहीं ऐनकालममचरए
रहाही ॥ दोहा ॥ इहिनेमनतयाहिकोकरिविचारमनमाहि वसीभूतचितहोइ
गोविदसकलसुषचाहि ॥१॥ चौविशकेअध्यायमहसांष्ययोगवहुभाइ करू
णाकरिकहिहहिसुपासुननमोहिमिटिजाइ ॥४०॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे ए
कादशस्कंधे भाषाटीकायां भिक्षुकगीतवर्णनेनामत्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥ चौपई ॥ सु
निउद्धवमैकहौबषानी सांष्ययोगअतिउत्तमजानी जाहिसुननभ्रमदूतनसा
ई बूझतथकलविसुखचहूपाई प्रथमहिकपिलआदिमुनितेते सांष्यमगर।
करिगेपुनितेते जानेसा ध्यमुक्तिसोहोई विनासांष्यकृटेनहिकोई युगके।
आदिप्रथममेराका मोविततरेकनवस्तुअनेका नवीमप्रकृतिआपुनेकीनी सो

दू विधिवहु भई प्रवीनी कारजकारणसो बहुभांती त्रिगुणमयोनासोजगव्याती
जडचेतनकाभासंयोगू उपज्योपुत्रजहांतेलोगू महानतत्वजेसूत्रकहावै उपज्यो।
सोयहवेदवतावै सूत्रतेभयोजानिअहंकारा सोपुनित्रिविधभयोनिरधारा जा
सोयहसवजगतपसारा सवजीवनकोध्रमकरिद्वारा छितिजलपावकपवनअ
कासा अरुसूखमसवदाहिविलासा अहंकारनामसतेएते प्रगटेसवजानहुगुण
तेते १ दोहा पुनिराजसअहंकारतेइंद्रीप्रगटीजानु उपज्योमनअरुसुरसकल
सतअहंकारवषानि २ चौपई तवसवमेपुनिप्रेरिमिलायो तिनसवहिनिमिल
अंड उपायो सोममधामजुअहेअनूपा अंतरजामीमेसवरूपा तामेअंसमहीध
रिलीना आदिपुरुषनिद्दिकहतप्रवीना हेउध्दवजोवहममरूपा त्रिगुणनियंता
ग्यानसरूपा तासुनाभिपुनिपद्मप्रकासा सकलभुवनकोजिहमधवासा महा
विरंचिप्रगटपुनिभएऊ लैमोसौंवरजगनिरमएऊ रजगुणतेअजभातेजानू
तासोसकलजगततेमानू तिनिपुनितीनिलोकमहंकीना वांटिलोकपालनदे
हुलीना स्वरगलोकसुरवसेसुपासा अंतरिछभूतनिकोवासा महभूलोकवा
सनरप्रानी असुरनागघरअतलवषानी जनतपमहरलोकसतलोका यह
चारउसिद्धनकोओका जेनरत्रिगुणकरमनितकरही तीनोलोकमाझतेफिर
ही तपसंन्यासकरहिमलयोगा जनतपसत्यआदिनिहभोगा भक्तियोगतेम

शिभा
१३८७
387

मपुरजाही भयगतसुखपुतसहारहाही प्रवलकालरूपममआही सकलजग
तभछकहेंयाही जिहिजिहिलोकजाइजोप्रानी तिहंतिहंभछककालवषानी २
दोहा कवहुककरिकेकछुनरउरधलोककूंजाइहि कालतहांतेताहिकोपुनिडारे।
अधिधाहि ४ चौपई ऐसीविधिभरमेसवलोगा उपजैमरैसंयोगवियोगा उत्तम
मध्यमनीचजगतेते छोटवडेथूलसूक्षमसवतेते जेजगमआहतहेंसवलोका प्रकृति
पुरुषमिलहसवआका उभयामिलेविनुऔरनकोई इद्रीमनगोचरहेजोई जोजग
कहहेकारणआही अन्नकालसवसयअनादी मध्यलषियेजोहेपुनिसोई आदिअं
तजोकीजोहोई छितिनैज्योघटभयेअनेका छितिमहमिलिगेलषहुविवेका ज्यो
कंचनतेवहुआभरना आदिअंतइकवहुरखवरना मध्यकिंकनीकुंडलनामा मिथ्या
जाननामअभिरामा नजिविवहभलषेजवऐसे मोरसरूपजानिफुरजैसे जोहेआ
दिअंतपुनिसोई मध्यमाहिमाहिइसरकोई ५ दोहा महतततवभाप्रकृतितेतिनतेपुनि
अहंकार तिनतेभयोजुविश्वयहचारयानविसतारि ६ चौपई प्रकृतिमूलअरूपु
४ रुषअधारू अरुजोकालकहिकरतारू जानहुसक्तितीनिएमेरी मोविनुऔरन
लषोघनेरी जहंतेहोइतहांमिलिजाई लषिवसुचेचलथिरनरहाही ज्यासरिता
जलत्योसंसारा चल्योजाइनितयहव्योहारा वरतमानजेगतेलगिजोनू जोसोह
रिइथ्यातेमानूवहुरसकलजगरहेनकोई प्रलयकालजवआवेसोई महावलि

सद्रासिमम काला भछजाइ जिमि मूषक व्याला इहिविधि नासकरै सब लोका र
है न कछू काहू को सोका नहि वरषै सत वर्ष सुरेवा प्रलयकाल को यह सब भेवा छो
टी वडी है हु जग जेती लीन अन्न विच हूं सव तेती असन भयो तब छिति महु लीना भू
मि गंध मिलि है गई छीना गंध लीन पुनि जल के माही जल स्वाद रस मांझ समाही
रस तब तेज मांझ मिलि जाई तेज जोति मै रहै समाई ७ दोहा जोति पवन मह जा
इ मिल पवन गगन गुण लीन सपरस मिल्यो अकास पुनि गगन सबद गति छीन ८
सोरठा सबद समानो जाइ अहंकार तामस जु है इंद्री सब जो भाइ अहंकार राजस
मिलो ९ चौपई सात्विक अहंकार जु आही मन अरु सुर सब तहां समाही महतत्व
करि मिलि अहंकारा इहि विधि होइ सकल संहारा महतत्व पुनि प्रकृति समानो
प्रकृति काल महु लै तुम जान्यो पुरुष मिले पुरुष तन मजाई पुरुष न भूमे चलै चला
ई भेद भरम रहित सो अहई निज आनंद रूप स्तुति कहई चेतन निर्मल ग्यान सरू
पा पूरण अक्षय परम अनूपा १० छंद अक्षय अनूप सरूप अडुन सदा समसब
ठौर है वह आदि अंत अनादि कारण ब्रह्म सब सिरमोर है यह जगत सत्य न अहै का
बहूं अहै सो भ्रम जानियो इहि हेतु सकल सनेह त्यागी नेह दुष रूप वषानियो इहि भां
ति निज प्रति सांख्य जोग विचार जो कोऊ नर करै ताको मिटै भ्रम भेद षेद न बहुर भव
सागर परै जो होइ तीन सिजाइ ऐसे तिमर ज्यो रवि रेषि कै अग्यान संसय गूं षहिय

श्री भा
ए ३८८
388

कीनाहिजहमनि पवकै २१ दोहा तातेयहजोसोध्यमनिसहाविचारैकोइ परैन
सोभवसिंधुपुनिमुक्तिसहजनहीहोइ २२ पंचविंशअध्यायमहगुणातीतजिमि
होइ परैनसोभवसिंधुपुनिकहिहैवहुविधिहोइ २३ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे
एकादसस्कंधे भाषानिबद्धे श्रीभगवानउद्धवसंवादे सोध्यनिरूपणोनामचतुर्विंशो
ध्यायः २४ चौपई उद्धवसुनिगुणवृत्तिअनंता होइनिवृत्तिजाहिसुनिसंता जा
गुणगहिहोइनरजैसो भिन्नभिन्नहोइ भाषिउतैसो समदमसुधिरमछिमावि
वेका सत्यदयाअरुदानअनेका आसतिबुधिअरुदृढवैरागा लाजमानअक
र्मकोत्यागा यथालाभसंतोषसुभाऊ सुधिमूलेनहिसुमतिप्रभाऊ थिरबुधिस
तसुमारगमाही धीरजवंतजसजुतजगमाही परिउपकारमदुलसवठामा विन
यहीनितागतिसचिकामा सीतलहृदयसतासुवेषानी यहसात्विकगुणवृत्तिवषा
नी बहुअभिलाषनिमव्यापारू अतिमदमानितभोगविचारू दरपगरवनिज
सुनससुहाई वहुउपहाससवलसवढाई दवअराधनधनकेहेतू निजप्रभाव
निजसुयसकहिहेतू मरदकरिजुद्धमोजरूविभारी रजगुणवृत्तजानिउरधारी क्रो
धलोभमिथ्यानितभाषै दंभकलहनाचाउररापै स्वमअरुसोकमोहवहुसोवै
कपटतदिनभयमहाविमोवै निसिदिनचिंताउधमहीना आतिविषादअरत
अरुदीना आसावहुतआलसीभारी यहतामसगुणवृत्तिविचारी नमगुणव

त्रिमहादुखदाई इनतेलहैनसुषजसकाई २ दोहा मिलेतीनिगुणवृत्तिजनस
न्नपातितिहन्नाम तिनकरिधर्मअरथकरैनिजहितप्रनिवनकाम ३ सोर्ठ
उपजैममताभूरि वढैनाहिंअमितिघनी होइअवृत्तिनदूरि कर्मकरैरुतिमानसो
३ चौपई धरमअरथअरुकामकोचाही स्वधारनिवोछातियमाही धरमप्रवृत्त
परायणतेते वहुतिभांतिनिसदिनरहतेते निजनिजधर्मकरैजवकोई तवग
हस्थहुवैरसतोही अतिप्रियरहगेहसुषताही अरुगहकरमसुनाहिंसुहाही
एसवसन्नपातितेजानू इनविगुतेप्रवृत्तिनमानू समदमआदिसुकनितेआनी
सात्विकलछणनेसवजानी कामआदिजाकोमनराता सोराजसजानहुनुमनाता
क्रोधआदिसवदेषिपजाही तामसनरजानहुनुमताही भजैसुधरमसहिता
जवमोही तजेसकलसंपतिसुतजाही निरपेछकममपदचितलावै सावहसा
त्विकप्रकृतिकहावै पुरषअपवाकोनारी मोहिंअनन्यभक्तिअतिप्यारी उपजी
हृदयकामनाकोई सहितसुधरमभजैजियजोई सोसुभावराजसकोआही भ
क्तिहेतुकाहियेनहितारी जवहिंसाकछुमनउपजाई सहितसुधरमभजेमन
लाई सोवहनामसविरतिसुजाना विपलजोगतिकल्पाना ४ दोहा एगुणती
नोजीवकेउद्भवएममनाहि भयेविन्नतेजानितू पुनिवंधेएनाहि ५ चौपई जो
अंकनिवंधेपुनिसोई फलतेरहितनवेधनहोई एगुणसकलसामअप्राधी

ठा॰भा॰
३०८५
२८१

ना मोहि भजे एवं धन सब छीना साधन करि जतन करि हरी सात्विक बुद्धि रहै भरि हरी
सात्व हू परम प्रकास सब आही सो तम लव श्रीशिश्रम कहूं नाही अतिकल्पान मल सुध से
ई मन थिर है दुख रहै न कोई तब वपु धर्म ध्यान नर पावा सोक मोह भय सकल नसा
वा जब हीन मलन गुण ते हरी बढे रजोगुण घटि रहि हरी राजस रूप सेग बल भे
दा मान मान कर्म भय बेदा जस श्रीहि गुरु करे बहु करमा सदा प्रवृत्ति सुभाव न धर
मा जब सनर न होउ भाजि नाही भयो तमोगुण केवल काही यो विवेक नासै छि
न माही हेअमाचरन सकि सुनि जाही अधम रहि तन मूढ नाभारी सो क मोहि हिंसा
अधिकारी निद्रा आलस निसि दिन आसा जह नरक कहु सरति करपासा थिर चि
तन वहि है इ माहूं कर्म रहित इंद्री तब ताहूं नर शरीर में भय कछु नाही मन भयो
अस मी नाही दोहा हरि गुन सात्विक रूप ने जान हु बुधि निकेत इहा परम सुख
सिप सान्त धाम मम हेत ७ चौपई जब न वमन इंद्री गन जेते थिर निरहे बुधि सु
धि भ्रम ते ते कर्म करे दिन निस बहु भांती राजस बुधि लषियइ दिन राती जब मन
बहु विकार युत भए ऊ आसा बध पकित है गए ऊ सो क विषाद चेतना हीना
सो तामस अधम बल छीना सत गुण बढे देव बल जाही रज गुण बढे असुर पुनि तो
हि नमत रछिस बल अधिकाई सो इ दिन की व तल लषाई देव असुर रछस कहे जे
ते इंद्रिय धार मान यहु ते ते आग्रन सात्विक सब को जाने सपन अवस्था राजस मा

389A

नै अहई सुखपनि तमो गुण केरी तुरियब्रह्म निरंतर हेरी
रजगुण फल नरलोक रहही तम गुण थावर अधम सरीरा इहि विधि भ्रमे जीव
अधीरा सात्विक वृद्ध समै नर कोई तजे प्राण तिहि सुभ गति होई पावर देव लो
कमहि वासा महासुख सो सुघर प्रकासा राजस वृधि प्राण के त्यागा सो नर के रलो
क अनुरागा तम गुण मांऊ त्यागि तन कीना निरय लोक तिन को विधि हीना गुण
तीन मो मांऊ रहाही ऐसे निगम पुराण कहाही ॥ दोहा करै जु मम हित कर्म को फ
लन चहै मो पास सो वह सात्विक कर्म सुभ लहै न पुनि भव वास ॥ सोरठा फल इ
छा कर कर्म कराही सो राजस ज्ञान हु मन नाही करै कर्म हिंसा के हेतू सो तामस
अनहु दुखदेतू भेद रहित सो सात्विक ज्ञाना देह भेद जुत राजस जाना बालक मूढ अनु
त्या जिहि ग्याना तामस ग्यान सो निगम बषाना मम विषइक जो ग्यान अनूपा एक
लषै सब मांऊ सरूपा सो है निरगुण ग्यान सुजाना जिहि ते होइ परम कल्याना तजि स
ब आस बसै एकाकी सात्विक वास कहै सब ताकी राजस वास बसहि जे ग्रामा तामस
पूनि सुरा अरामा चिर खल मूरति मम जिहि धामा निरगुण वास सुघर अभिरामा
करता सात्विक कहीयै सोई फल परिहार करै जो कोई फल अति प्रिय सो राजस
जानू विधिकर रहित तामसी मानू केवल चरण सरण जो मेरी करै कर्म गुण रहि
त निवेरी करम रहित जो आतम जाना सकल त्यागि यै मन अनुमाना पुनि सब ।

त्याजि अचल भज्यो ही रव द्वारा सात्विक कहिये सोई । सुधा राजस सो तेज जान् करे कर्म बहु
भांति निदान् करे विकर्म तामस गुण स्वधा निरगुण सो जो रहित सपरधा मम सेवा सब
निरगुण ताता जा ह्वि कियै भवदुःख मिटे जाता ॥ २० ॥ सहा हितकारी अव बुद्धि पुनि मिलै
सात्की बहु रञ्जन पास सो भोजन कहहि स्रुति पुराण इतिहास ॥ २१ ॥ सोरठा कहहुं तो अन अति
चारि चाटे अरि अनि मिश्र युत अनितानोई बसार सो भोजन राजस कहे ॥ २२ ॥ दोह
ई अनि अमुद्रहि सा पुनि आवे सो तामस आहार कहावे मोहि निवेद जो कछु कर
ई अस समन वसन निरगुण सो अहई इंद्री सुख सब भोजन सावा तहमा हि कसुख कै
सकल बहाचा न जि अर भजन थिर भाज बहि आतम ते उपजे सुख तन वहि सो सात्विक
सुख अहहु सुजाना ता सुख ते सुख अहे तनआमा इंद्री सुख सब राजस आही आल
स निद्रा ते मम सुख वाहि मेरी भक्ति प्रेम पुनि करई निरगुण सुख भव रुज कहुं हरई
द्रव्य देश फल काल विवेका करता कर्म नु कहे अनेका बहुर अवस्था सब धानु सकी
निश्च अरु आकृति घर घर की त्रिगुण मिलत यह सब छवि बहारा जो कछु करे क
सुमी वं हि सो सारा रचि यह मिय कहिय जो बानी मति अरु बुधि महा लगि ज्ञानी प्रक
ति पुरुष मिलि सो सारा त्रिगुण रहित यह सकल पसारा इहि ते जीव परे भव कू
पा त्रिगुण न्यार मन करि भ्रांति अनूपा जिन यह गुण ती नोक रिन्यारो मम पद कं
ज निज निरधारो सो मम पद निश्चय करि पावे बहुर नही भव सागर आवे ॥ छंद

मों

आवैनभवनिधिबहुरनरतेभजहिममपदजोसदा इहितेजुइलेभमनुजतनय
हमिलहिकैसेकहुकदा यहग्यानअरुविग्यानभूमिमेंआहिपरमसुहावनी
यहजानिनिपुनसुजानसजनगहहतिभक्तिजुपावनी सबत्यागिआसभरोसजग
कोसंगतजदृढमनरहे सावधानसरूपसेंनतलषैहियमहुपनगहे सवसेइसालि
कवस्तुनिसिदिनरजतमोगुणनासके देहाहिममनाहरिकैइध्यानहीसुरवासके १५
छंद इछातजिहीनाममपदलीना बुद्धिनचेचलनैककहू अंतरगतिपावनसुषसुहा
वनभयोअगुणसोजानितहू तजिलिंगसरीरावहमतिधीरामोहिमिलैभवनाहिप
रे पूलीअविनासीसवघटवासीमोहिलषैभवसोहिजतरे १६ दोहा ऐसेबहुविध
तेकहीगुणकीवतअनेक निग्रहमनकोकरणहितसमुझोसहितविवेक १७ छवि
सकेअध्यायमहिअवपुनिकृपानिधान दुष्टसंगत्यागिनलियेकहिहैसुभआष्यान
१८ सोरठा दुष्टसंगहैभंग कियोयोगबहुकालको सोसुधिरैसंतसंग कहिहैंकरुण
कृपालअव १९ इति श्रीभागवतेमहापुराणे एकादसस्कंधे भाषानिबंधे पंचविंशतमोध्या
यः २५ चौपई उद्धवयहनरतनसुभआही सकलसृष्टिमेंऐसोनाही नरतनते
उपजैसुभग्याना भवअहिकौहरिजानसमाना ऐसोसुभगमनुजतनपाई सोमिल
नेकोकरेउपाई गतिसतसंगगहैसबधरमा करेक्रियासुभतजेहितजहिविकर
मा उपजैग्यानताहितवनीको मायाक्रमामिथ्याजवफीको ऐसीविधजानैजोप्रा

नी सोनयुसे भवरु जदु बखानी देहगेहमे जोरहै सोऊ मायाविषयपरसनहि
कोऊ जद्यपि ग्रैसोहढकोग्राही भूलिनदुस्संगकरिकाही रसनासिसनपरै
वसजोई तिनकौसंगकरैनतिकोई करैग्रसाधुसंगनरकोई तुरितहियागंभ
सतसव होई जवनरकरैग्रसनकोसंगा ग्रधिमतिजाइ भयेव्रतभंगा जैसग्रंध
ग्रंधकसाथा परेकूपजेचलुगहिहाथा कहौसुभगगाथाइ वतोही उपजैगया।
नमसुखहोही २ दोहा एलपुरूरवनामजेहि एकचक्रछितिराज वडोजसस्वी
नितुनग्रनिमोखोननिसुखसाज २ एकऊरवसीस्रापवससोग्राईभूलोक कि
यानाभिहिकेसंगमुख गईभवनकरिसोक २ चौपई चलीउरवसीजवतिजगेहा
नासुविरहनृपभयोविदेहा रोवैकरिविलापनृपभारी नृपकीग्रोरलषयनहि
नारी राजानगननरेहसुधिभूली गतिलजाउनमत्तसमतूली वानीहीनविक
लनाहिधीरा करुणाकरैविरहग्रतिघोरा ग्रहोप्रियातुमनेकनिहारो घरीरहै
ममगोहिनिवारो मिलिउरवसीसंगसुषपायो सोसवदुषमनतेनकेनया
या छिपननभयोभोगवनभोगा पायोउरवसीकरिसंयोगा तिनउरवसीगया।
नहरिलीना सवविधभानृपतासुग्रधीना ननमनलीननजिहिकछुग्राना गत
हिनमासवरषनाहिजाना भानिरवेरभोगकछुपागा तवनपववनकरैनकछु
लागा सोमेनाहिकरोग्रवताना स्ववलसुखरग्ररसुभफलताना नषकहदेष

391A

हूममयहइसोहा आपुहिकियोआपना द्रोहा आपुआपुमेमूढअचेता सुखमाना
मेशोषनिकेता ४ दोहा सुरमायाकरिग्रसतमे कंठदोकगोमोरि आपुयंडजान्योनही
कविसंध्याकविभोरि ५ सोरठा मायावे च्योमोहि गईअवस्थाबीतसव गरलद्रिगन
निजजोहि बायोमेतिहिअमतकरि ६ चौपई गयोवरषमभवीनअनेका वहुविका
रसुतिरहितविवेका कहाकहौंनिजमोहवडाई तियवससहजपरयोमेजाई सातही
पमेइकछितिराजू कियेअधीनभूपसिरताजू भूपसकलजेभूकेमाही सवहिपदस
रोजचितचाही सोमेपरिनियसायअधीना हायजोरिआमपातिनकीना वाजीगर।
ज्योंकपिहिनचावा त्योंमेकहइमिषेलषलावा तापरराजसहितमोहित्यागी तएस
ममोहिद्वारिपुनिभागी नगनभयोपीछेमेपायो जिमिवाउरतनसुधिविसरायो कौ
नभांतिवलतेजप्रतापा पौरुषसुमतिरहेअरुदापा जोअवलाकेहोइअधीना सरज्यों
घरीसेगनेहीना विद्यानपसेन्यासवैरागा वनवसिवोयहधनकौत्यागा मौनव्रता
दिकसुवणपुराना एसवविफलकियोविधिनाना जोलगितियमननमेवसजाके
नपतेआहिवथासवताके ७ दोहा अर्थआपानीभूलिमेअनरथकरिगहिलीन
पंडितमानीमूढमति धिगनिमभयोअधीन ८ चौपई इससकलभूकोमेएका न
रूपसंगतेगयोविवेका सोमेपाइउारवसीसंगा सुषकीनोनानाविधिरंगा ज्योंज्यों
अधरपानिमेकीना त्योंत्योंकामअधिकइवरीना वहुतकाललोरतिसुषकीना

तदपि न त्रिपिनचिन्न विधि लेना। ज्यों पावक वारै नर कोई। तामें घृत डारै पुनि सोई।
त्यों अंधो पावक वर्द्धै जु सोई। कहो कवन विधि सीतल होई। तरु ली चिन्न हरयो जब जो
केउ ग्यान विचार ना खभा ताको। हरि विनु को छोरै पुनि ताही। तिप कोउ सफंद भा
जाही। इहि तें मैं अवह रिपरकें ना भजो ताहि तें भव रूज गेजा। जद्यपि दे वी मोस
मुझावा। तिय आदो यह गुणवहु मसुनावा। तदपि न मरषमें कछु जाना। काम अंध मा।
मोह निदाना। ९ दोहा तहां लौ यह पावक प्रवल कामी पुरुष पतंग निरषि मोहि
तें परस्स करि मूढ वरैं सव अंग ९० चौपई यह तें तिय कौ नहि कछु दोवा मैं अति
लंपट मैं नहि मन तोषा। जो मैं स्वरग निरय कहु माना। वडसुष सो मै दुष पुनि जाना।
गुण कौ भुजंग मान भय पावै पावक पारि पतंग मरि जावै तो तिन को कछु नहि
अपराधू आपुहि दुष में लेइ असाधू तातें इन को सहज सुभाऊ मैं मन मैं क्यो।
करो अकाऊ जो मैं पावक मे गिरि परऊ तो पुनि दोष कवन सिर धरऊ है हम
लीन महा दुरगंधा ताकरि नान्यो विमिल सुगंधा अहे अविद्या कन सव मोरा भू
ल्यो ईस मग घोर दुष घोरा यह तन तोषव हु तैन को आही वेपे मम तान रमहु करा ही
माता पिता कहै सुन मेरा तिय कहै यह पति मम हेरो वै यह तन भपति केम्ह करि
यै कै पावक भष्छन पुनि सहियै तेवु कस्वान कहे छिति मेरो गीध काक कहय
हम मचेरा कहै मित्र मेरो हे ताही कहो कवन की धौं यह देही निश्चय नहीं।

392A

सं॰

कहौयहकोही सिगरेममताकोहिजु याको महाअंधुद्रहै दयहअैसो आकर
निरयकहैहैकविनैसो अैसोतियतननिहिमतिमहा ताहिरेबिडारे जियफेरा र
हेहा त्वचारुधिरुअरुमासपुनिमजाअरूचनिकेन मेदरोमनषअस्यप्रनिवि
ष्टाषूयसमेत १३ चौपई इहितेतियकोसंगनकीजे अरुतियपलेपटसंगनली
जे तिनकेंक्षुभितचितहोई देषेविनाविकारनकोई ताते दरसनकीजेना
रू अपअपनोकीजेकतनारू चाहौविषयकरै परिहारू अरुइंद्रीनिजस
वसविचारू तोमनवचनकामकरिसंता त्यागहुतियअरुवहुतियकंताउभ
यसंगत्यागेनरजवही होइतासुमनथिरपुनितवही दरसपरसपरिहासनिवा
रू रववणवपनसुषहावविलासरु भावतियनकेहैसबजेते तजाहिबिवेकीवुध
जनतेते इंद्रीनकोविस्वासनकरई ग्यानवंततथापितेडरई जीवनमुक्तिसंत।
जगजेऊ संगहोषडरपतिहैतेऊ चाहतरनभवउदधअपारा सोतियसंगक
रोपरिहारा हैजगजेमोसरसिविमूढा हाविभावकिमिहोइअरूढा इहितेमेस्स (?)
वसंगविहाई श्रीपतिचरणभजोचितलाई १४ दोहा दीनबंधुकरुणअयन।
सरणागतिरछपाल भजहुकृष्णश्रीरमणकहुमिटैजगतजजाल १५ सोरठा उ
द्धसोनपराज कहेवचनसोवहुतविध तजिसुरलोकसमाज जहोवसैवहउरव
सी १६ चोपई लह्योग्यानसंसयसवभागी मनमोदधरिविषयविरागी इहिते।

श्री॰भा॰
१३६
३०३

नरतनकौफलएक। भजै तुमो पद सहित विवेक। तो नै दुख संग है त्यागी संतसं
गकी मे प्रभु मांगी करे संत न चहौ उपदेसा जिहि ते संसय रहै न लेसा मनकी
सब आसक्ति निवारे सेमम महा भवसागर तारे तिस प्रेही मम चित गत निमाना समद
रसी अरु सोन वषाना संत हरहि तहु दुःख नहि नाही अहंकार परसै न हीं ताही ज
द्यपि उपदेश न हि काहू सेवै नर जिन को मम चाहू नहो कथा मेरी नित होई सुनि
अघ मसे रहै न कोई मेरी कथा सुने मन लाई सकल पाप मन नहि मिट जाई सा
दर सुने कहे सुचि मेली पुनि बिचार अनुमोदन ठानी ऐसहि कहत सुनत नर निरा
नी सह मे लहे भक्ति अरु सोनी भक्ति भई जो कहहु जब मोरी तो कह सुष आनंद
नघोरी भक्ति अधीन सकल सुष जानू नहि कछु अधिक सकल जग मानू १७
तहा सौनकाल कीरे रकोऊ पावक निकट रहाइ ऐरु भवभय असान सबरें च
कक अनरहाइ १८ तैसे सज्जन संगते जइ नाम समिटि जाइ तेमनु घार भय सहि
जहीं ता सुष मिटि जाइ १९ चौपई बूडत नर तज जलधि भवघोरा ऊंच नीच घ
रिमनन मनघोरा गहो संत दृढ नाव निविसाला बूडित काढि लेइ तत काला ऐ
न अहै जो मित्र आन अधारा तिमि आरत कहु सरण हमारा नरकहु धरमचि
नपारि लोका लोभ वेतरनि साधु परलोका करै प्रकास ककम अनेका संनेरे
हपुनि नयन विसाला निरगुण सगुण लषे तत काला वाहर करे पतंग प्रका

393A

सा नवहीसैभलकुनसितवासा हृदयनमनविनुवसुन्नपावै सोसंतननविनुकोनवता
वै तोतैसतसंगतनितकरनो ग्रौरउपायनहियविचंधरनो सेनैमातपिताहितका
री हैवनवंधुसंतइषहारी संतग्रातमामैनिजजानू ग्रौरनकछुसेसयजियग्रानू
२० छंद जियग्रानिसंसयग्रोरनहि इकसंतसेगतहैभली ग्रनयासतेभवतरहि।
तेजिहिबुद्धिनिश्चित्यनहिचली सोएलराजपरूरहायहवचनकहिउविचारकै
वहउरवसीकोलोकसुंदरत्यागिहियेधिकारकै २१ दोहा भयोग्रातमारामवहसु
षनिधिपरमहुलास भूविचरयोगनिकामनामैवरनीतवपास २२ सघनविंशग्र
ध्यायमहथियायोगवहुभाइ सकलकर्मफलमिलनहितकहिहै श्रीजदुराइ ग्र
इति श्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे भाषानिबंधे श्रीभगवानउद्धवसेकहे षट्विं
शोध्यायः २६ चौपई सुनिकैसाधुग्रसाधुप्रसंगा ग्रतिप्रसन्नपुलकितसवग्रं
गा सोपवित्रउद्धववडभागा कर्मयोगपुनिपूछनलागा हेप्रभुकृपासिंधुजदुनंदा
क्रियायोगकहियेसुषकंदा जाकेकरतहोइगतिपापा उपजग्यानतासेपरिता
पा श्रीविग्रहकीपूजाकरई परमसत्रेयपानकुसवहरई नरकहयहकल्याणग्र
नूपा पूजनकरनपरैभवकूपा ग्रैसेकहैव्यासग्ररुनारद सुरगुरुग्रहैजबुद्धि
विसारद ग्रोरोजोमुनिपरमविवेकी परमसत्रेयभाषेषनंदकी प्रभुविरंचिसोतु
मप्रहभाषी सोउनिजउरमैधरिराषी भगग्रादितनयमलजानी विधितिन

टी॰भा॰
उ॰ ३९४
395

सो बहु सकल बखानी सो प्रसंग पावन अति बेरा सो सुक सो गिरिजा प्रति भेरा चार
वर्ण आश्रम जग जेते नियत अंत जन रहै गुलके ते याबिनु करहि धर्म के श्राना इहिउ
पावन हित मे जाना इहि तजि औरक कर्म जे करई तिहि ते नर पुनि बेधन परई धरम
सिरोमणि यह मे नाई इहि ते बंधन परे न कोई १ दोहा तुमर्द्याल जनपाल प्रभु सिर
रनहु अघ धीस कहहु कृपाकरि नाथ मो मे पूछत जगदीस २ सोरठा सुनि उद्धव
के बैन प्रेम भरे उपकार जुत बोले करुणाऐन बैन अमीरस बोरि जनु ३ चोपई
उद्धव यह है अमित अपारा मम पूजा को बरनै पारा तदपि कछु संछेप बखानौं ता
मैं सकल तत्व मे आनौं मम पूजा बिधि तीनि प्रकारा वैदिक तांत्रिक मिलित बिचा
रा बेद मंत्र अरु वैदिक अंगा यह वैदिक जानहु परसंगा तांत्रिक मिश्रित हो ऊ इहि
भाँती पूजा करै जु कोई सुभ जाती बिप्रा वैस्य छत्री सु जाना पूजा विधि तिन
की पुनि नाना सो सभ सत्य मे कहहु बुझाई सुनहु सेन अव मन चित लाई प्रति
मा भूमि अग्नि जल माही भूसुर रबि हृदय भल आही निज गुरु सहित सुभग इहहदा
ई पूजा करै सुमन चित लाई जथा जोग पूजन सब कामा अरु सब हिन मे लखि अ
भिरामा गुरु अरु मो मन ता के जानै मानुष बुद्धि न मन मे आनै जल अरु लेइ मति
का नीको अंग सुधकै विधि नहि फीको पुनि नहाइ के करई सु धरमा जस सजा वि
हु सु मिकहि निज करमा विधि निषेध स्तुति कहुं न सज्जा को उत्तम रीति भजे गह

394A

नोको संध्याआदिक देशुभकरमा प्रगटजोतीनिवरेएकेधरमा ताविधिसुधिहो
इजपमंत्र् जाम हमाव र नैशुरतते पुनिहरिमेंदरजहजसनोको तहांजाइविधिसोपूजाको
अवभाषोप्रतिमाकोभेदा जाहिछूटिपूजेभवषेदा एकशिलाअरूहारसुदूजी से
योजिनआसातिहिपूजी षकलेपचेरनकीकहिये एकचित्रमूरतिकरिगहिये
प्रतिमाएकस्वर्णकानीकी मणिएकमयभावतीजीकी एकमनोमयमनमहराषी
एकजुमतिमयस्तुतिपुनिभाषी एकअचलचलसोहैभाती पूजाकरतिहोइसु
षसांती दोहा आवाहनथिरकोनही औरविसरजननाहि चलिकोहैकेहैनही
जेप्रतिमाजगमाहि ५ सोरठा नहीविसरजनआहि आवाहनपुनिहैनही साल
ग्राम्यकेमाहि एहोनोकरणोनही ६ चोपई प्रतिमालेपनमारजनकरिये औरन
मज्जनबहुविधिपरिये उत्तमसवसामग्रीकरई तनमनसोममआगेधरई जोनि
हिकामकपटगतिहोई करहिभावजुतसेवासोई हरिदृष्यानेजोकछुपावे सोसवमो
कोआनिचढावे उत्तमविधिनहवावेमोही वसनाभरनवनावेजोही पावकपूजा
घृतिकरिसोई हविपुनिहोमकरोसवकोई छितिरविमेजनापफलफूला जाने
मोहिसकलकोमला भक्तिसहितजोअरपेवारी सोपूजामोकोअतिप्यारी जेको
ऊधूपदीपघृतकरई अरूनैवेद्यमोहिकोधरई ताकीमहिमाअगमअपारा से
समहसनपावेपारा तातेमेइकप्रेमअधीना नेवनमानेप्रेमविहीना अवभाषे

ग्रो॰
२८५
395

पूजाविधितैसैं साविधानरहे सुनितेमोसैं हेपवित्रकरिकैं नितनेमा मनमम
ध्यानसहितपुनिप्रेमा पूजासाजप्रथमसबसाजै फिरनउठैकछुविनवेकाजै
उत्तरमुखवैठकेरिध्याना वैपूरबमुखवैठसुजाना अबलौंजोविगपहहै मोरा स
नमुखनासुवैठकरमोरा आसनकरैरहरमसुभआनो अंगन्यासकरिपूजाठानी
न्यासकरैप्रतिमोसोई पूजाकरनहारनेहानरजोई तबमंत्रोनहितद्रव्यअनेक
आनेकुलसनोयधुनएका ७ दोहा दूसरोजलकोपात्रनहैं आनिधरैवहएक
प्रोक्षनकरिजुमाहिसोंप्रोरजुद्रव्यअनेक ८ चौपई अरघपाद्यआचमनविधिसे
मी तीनिपात्रनहधरैसुनेनी स्यामादूबपाद्यमहडारै उत्तमविधियहवेदपुका
रै गंधपुलपअक्षितजवराई कुसतिलहवेश्रमनसुभमाई अरघपात्रमहडारै
इनही दूजाविधिमैवरनेजिनही जातीलवंगकंकोलसुजाती अचमनपात्रमाहि
बहुभांती गाइडीकरितनसबसुधा पकोअंगनरहेअसुधा हृदयमांजममरूपा
हिध्यावैसुभऊंकारमहानेआवे जैसेगुरमेरीपप्रकासा ध्यानकरतजिमिहोइउ
जासा फलिप्रेमसौतनमयहोई पुनिमहरनिमैपावैसोई सोंगोपांगकरैतबपूजा
भाविनउपजैनिहपुनिदूजा अरघपाद्यआचमनदेई रचैअसरलपेकजतेई
तापरनवधरमादिकपापी सकलसक्तिरविशशिपरितापी अग्निआदिसबरल
वरहेई इहिविधिसोइसकलफललेई प्रोक्तचक्रगहअसिधनुपावाना दलअस

395A

मूसल अरु सरएघा ना मणिमय माला कौस्तुभ रेखा हार उर लषै सुभांति विसेखा औ
रहे व आयुध गन जेते आठौ हि साव सै पुनि तेते ९ दोहा जाहि सजा की होर वरनारि
सिषू जेताहि जथा जोग जैसे कहे पूजा ग्रंथन माहि १० चौपई नंद सुनंद महावल चं
डा कुमद्वपएवलकुमदप्रचंडा हिसा आहु ठाडे गुण आगार सत्य आठ एसु मद उ जाग
र जो रेकर सनमुष उर भारी षरो सदा हिय प्रेम सुभारी व्यास विनायक अरु सुरसा
नू दुरगा अरु निज गुरु सिरताजू विष्वकसेन हु आहि जे हारा सो सनमुष सव षरे सु पा
सा अरघ पाद्य करि सव को हूजो करै यथाविधि लषै नेहू जो कुंकुम अगर उसीर सुधा
री अरु कुपूर चंदन घुत वारी मधुपर का दिक्रिया करि आही जैसे कहहि सकल
स्त्रुति वारी जल सुगंध युत जो धरि राषा नहवावै प्रतिमा पढि साषा वेद मंत्र सो स
व विधि करई नातरु तंत्र रीति अनुसरई सहस्र सीर्षी सो सव सारै कै केवल हरि
नाम उचारै वसन वनाइ धरै उपवीता धरे आभरण अंग सुपुनीता तिलक सुगं
ध करै वहु भांती तुलसी पुहुप माल वहु जाती इहि विधि मोहि अलंकृत करई प्रेम
सहित पूजा अनुसरई धूप दीप उपहार अनेका दे आचमन सहित सविवेका करे
आरती पुनि वहु भांती अरु नैवेद्य मनोगुरा जामी पायस षंड घनो घृत डारी मो
दक रूप धरे जु सोहारी ११ दोहा दधि ओदन व्यंजन सहित सुघर लापसी आनि व
हु प्रकार के प्रेम युत नित्य करे सुष मानि १२ चौपई नूतन नित प्रति विविध वनाई मो

भा॰ ६६

हलमर पै मनचितलाई जवतसकालकरैतससेवा प्रिसरीहूधिसहितसवभेवा
से ध्याकालसमरपै मोही जोकुछरूविउपजैमलच्योही मरदनतेलउवटनअनवा
वै अलंकारवहुविधिपहिरावै पुनिआदरसहित्रिआवै मोही नृपकरै ममपुर पुनिओ
ही गावै प्रेमसहितपुनिसोई ममगुणकथनकरैजियजोई पुनिवहुविधिनैवेद्यस
वारै नित्यनहीनोपरवनटारै वहुरकरै पावकमहपूजा मोविनुताहिनजानैदूजा
अग्निकुंडमहपावकधरई समिधघनादिहोमसोकरई होमकरैपढिमंत्रपुनी।
ना वेदतंत्रगावैजिहिरीता करिकैहोमआचमनदेई प्रोक्षनआदिकरमकरिले
ई अग्निरूपमेराकरिध्याना अंगनपतकंचनसमजाना चारूचतुर्भुजसुंदरअं
गा शंखचक्रगदअंवुजसंगा सांतरूपसेनतसुघराई पीतवसनकुंडलझलका
ई सीसमुकटकोटिसवसुहावा भृगुपदउरवरसुभगवनावा १३ दोहा श्रीरेवायु
तलसतपुनिधरकौस्तुभमाल सपनिवरनकेसुमनयुतपहिरेउरवनमाल १४ इहि
विधिकरिकैध्यानपुनिआहुतदैवहुभांति जथाजोगतैसिकरहु क्रमकरिसवहिसु
हाति १५ सोरठा पावकमैभगवंत एमवहुतविधिध्यानकरि करहिनिरंतर
संतहोमविधिजानिविनतीधनी १६ चौपई पुनितनदारि पारथ इनेने वलिविधानए
नहिसोनिते मूलमंत्रजपकरिवहुवारा नाविधिवंदै प्रेमअधिकारा पुनिआ
चमनदेहुसोसंता लेप्रसादनिजकरिगुरुवंता सोलैभगवतनमतनदेई विष्वक

सेन आरि है जेई अरपाधाइ आपुन वलेई प्रीति सहित लै पावै तव तेई पुनि सुगंध सुगी
तो फूला उत्तम वस्तु सकल फल फूला मोहि निवेदन करि गुण गावै नृत्य करै जिय प्रेम वढा
वे कथा सुनै मम वहु रस गावै मो विनु पलक न एक विताबै सयन कराइ वरण करि
सेवा सुषनेनाम न तजि पुनि देवा पुनि पुराण वहु इतिहासा प्राकृत जे पद सुवेरस
रासा ताकरि करै जु असुनि मोरी वारवार पुनि जुग कर जोरी पुनि मम चरण कमल
धरि सीसा कहै पाहि हे मम जगदीसा १७ छंद मो पाहि हे जगदीस जगमनई सई सन ।
के प्रभो भव नारिवे को वान नेते री भन्यरछ न हे विभो तुम हीन वे धुरयानि के न अचेत मैं
अतिहीन हौ अव पालिये जन कृपाजदु वर चरण तव गहि लीन हौ १८ दोहा इहि विध
करि कै विनय वहु चरण कमल चित राखि हृदय जोति धरि जो निमरु सा पानि गमजि
मिभाषि १९ चौपई पुनि विग्रह को सयन कराई जपै नाम मम ध्यान चित लाई जो विग्रह
स्थापा जह जाकी पूजा करै तहा सो ताकी अधिष्ठान अैसे पुनि जानो अौर न कछु अनु
महि यम हठानौ सर्व भूति मय मे को जानी वह सव विग्रह मेरो मानी करै कथा वि
धि सव मै पूजा छोडि मोहि जानै नहि दूजा याविधि क्रिया योग मन लावै भुक्ति मुक्ति
लहि जैसा पावै उत्तम मे हरि मोहित करई तो मम विग्रह पुनि धरई प्रसय वाटिका
अरु उधाना अनिरमनीय करै सुभ धाना यात्रा उत्सव हित वर धामा करै सवारसु
मम सव ठामा मम पूजा प्रवाह के हेतू देइ ग्राम पुर सुंदर सेतू होइ ईसता मोहि मम नाही

तीनि लोक सुख करतल्ल वाही मम विग्रह पायै नर कोई रिधि सहित भूपति सो होई मे
रिरूचिर करै मम लागी सो कतीनि पावै बहु भागी इन्द्रादिक फल अजन को धामा जो
इहि भांति सेवै मम कामा लहै भक्ति सब सुख कौ धामा निसकिंचन सेवै जिमि भावै सो मम
रूप सहज में पावै २० सोरठा ह्वै वर्नि कौ विप्र जो अरु हरि मंदिर हेतु करी होइ काहू कबहू
अपवानि जग्र हरेतु २१ सोरठा हरै ताहि नर कोइ पापसिरोमणि भयो वहु कोमि विप्र
को होइ बरष कोटिनि कुसि नहीं २२ करता प्रेरत होइ अरु सहाइ जो करइ नर अनुमोद
न करि मोइ सब को फल लहै एकसम २३ अस्त्राविंशतिमो ऽ पुनि ग्यान योग जदुराइ कहि
है अव संक्षेपते उद्धव को समुझाइ २४ इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषा निबद्ध
सप्तविंशो ध्यायः २७ चौपई सुनि उद्धव बरनौ न ब पासा ग्यान योग अति सुख रसु रा
सा जेन्न जीव त्रिविध गुन करमा जो कहि ने सस्वभाव न सधरमा नहि नहि करहि
सेसा प्रकृति पुरुष को लविसव अेसा जाने एक सकल जग माही नहि दूसर है तो नहै
नाही जो केसु जनि दा करहि पुरुसा सो निजे सार पते भाम्र सा मिथ्या अभिनिवेस नि
न कीना ते निज आतम कोइ यहीना निद्रावस इंद्री जैलीना आतम लहइ यस्व पनरस
भीना जहै मन अरु थेयान हैत न है जाई दुष सुष लहै पावै वहु भाई पुनि सुष पति मै जै अ
चलीना मरन तुल्य कहै अहमिति हीना अरु सुष पति तजि रैथे सपना जनम मरण
दुष वाव कल्पना जो लगि सो वै तो लगि होई जागत पुनि कछु रहै न सोई ते से दुष सु

397A

षपुण्य अरु पापा जन्म मरण अरु भौतिक तापा जो पै देत सत्य प्रति होई ग्यान भ
येनासै किमि सोई तिन्हते सुष दुष सत्त न कोई हानि लाभ सम जानि धरे ऊ हे प्रिय
सुनिय कहिय जो बानी मन अरु बुद्धि जहां लगि लागी तेस बसत्य न सुति कहु जाही जांनी
तो सुभ असुभ कहो किमि आही जद्यपि है मिथ्या संसारा तद्यपि दुष को वार न पारा
तो लगि हैं बुद्धि नहिं त्यागे तो लगि भव भय पेनक न भागे जैसे अपनी बुद्धि निकी गा मुंष
ई अरु प्रति विंब सिंह की नाई रजत सीप गुण मैं आहि जानी मृगतृस्मा महु ज्यो जल
मानी १ दोहा जद्यपि सपना सत्य नहिं सुष दुष सांचे होइ मिथ्या जानै जब हिय तब कछु जांग
न थी गाथी होइ २ चौपई ब्रह्मरूप यह सब संसारा जद्दपि लषि यहै कछु आकारा ब्रह्म
रूप ब्रह्म हि उपजावै ब्रह्म ब्रह्म आधार रहावै सो सब करै सो इ प्रतिपालू सो संहा
र रूप है कालू जैसे जल तरंग जल माही उपज नहिं फिर तिहि मांझ समाई ऐसे ब्र
ह्म स्वरूप सब जानो मो ते जगत भिन्न जनि मानो पारियह लषहु सुहै निरमूला ज्यों स
रीर चलिन भमे फूला त्रिगुण रचित यह सब संसारा सो गुणमाया करि परिवारा
यह मम कहो ग्यान हिय धारै भल अरु न भल नहिं आप विचारै काहूं निंदन करहि
प्रसंसा वह है ग्यानिन को अवतंसा सो वह जद्यपि जगमहु रहई ज्यों पतंग गगण हो
य न गहई जग मे असुभ न सुभ कछु देषै मिथ्या जानि ब्रह्म करि लेषै ज्यों प्रति छाय
दर्पण माही उपजि बिनासि पुनि तहां समाही छिति त्रिकाल सत्य ते जानू नाम

श्री०गा०
९३९९
३९४

रूपमिथ्यानेमानू जैसेब्रह्मसोसबकाला नामरूपमिथ्याजेजाला पुनिअनुमान
करहिंइहभांती यहतनवाकेअहैसंगाती जडमनमनअरुप्राणसमेता कोनयाह
कहुकरैसुचेता इंद्रीपंचकरहिनिजभोगा प्रेरककोनकरावसंयोगा निराकारते
चेतनहोई जोअकारजहांलोकोई अहैअकारजगतसबकोवा चेतनब्रह्मए
कहैसाचा ३ दोहा ऐसेसिद्धिविपरिमानकहुदेखहिचितहिविचार नेतनेतनित
निगमरटसोईसत्यनिरधारि ४ सोरठा अनभवनिजउरआनि द्रिस्यमाननस्वरस
कल आत्मनिब्रह्ममानि औरनहूजीवस्तुजग ५ मनवचक्रमकरिनेम तजै
संगसवजगतके प्रभुपदनिजप्रतिप्रेम कृपाकरहिंभवतरहिंसो ६ चौपई प्रभु
कोवचनसुनाचितलाई उद्धवपुनिबोलाहरखाई हेजगदीससुनतनववानी भा
संदेसभक्तिसुखदानी सोमैसकलकहोअवस्वामी जानहुतुमप्रभुअंतरजामी
जोइहअज्ञानमजनमनलेई तौकिहिविधिपुनिसुखइहलेई हेअनित्यपुनि
ब्रह्मनिकहजाही इहसाइस्यातोकहनाही जोप्रभुजन्ममरणकछुकाही अजा
अव्ययअनादिअविनासी चेतरूपसोस्वयंप्रकासी निरगुणनिराकारनितसु
धा सरअपनाचनऔरप्रवृद्धा गनिइहासनचितआनेरा ध्यानस्वरूपरहितसब
द्वंदा अकथअहैइहसाक्षिसबहीना जडअसुद्धअतिमहामलीना इहतेइनकोसंगन
होई अतिविसेषअंतरनितहोई इहारहितअज्ञानमांआही जोबहुजडकछुकरै

398A

नचाहो। आतमवंधनरहितगोसाई जनमेकोमोहिकोहियवुभाई कोसुषदुषपावै
संसारा वहजडवहसवरहितविकारा मैमतिमंदमूढनहिचेता तुमप्रभुसुमतिवि
वेकनिकेता कहियेक्रपाकरिजदुकुलदेवा मैतवचरणकेजनितसेवा उद्धवदहिहृ
ष्योंग्याना वोलेहरितवक्रपानिधाना उद्धवसत्यकहीतुमवाना नयविहोऊमिल
यहजगताता ७ दोहा आतमकोसंसारनहितातिहिनपुनिआकार उभयमिलेअविवे
कजोसोईयहसंसार ८ तनइंद्रीअरुप्राणमिलचेतनताढिगजाइ मिलतगाठवह
धुरगई कोछोरैवहुभाई ९ चोपई हेअसंगनयविवहसाचो निजआपानलियेसो
नाचो जौलगिमनसंवंधा सोअविवेकमूलसंसारा भाविवेकतवलहसुषसारा
जवलगियहजगसत्यनआही तवविनछूटिनाइकछुयाही सहाजीवदुषमेलप
राई वारवारजनमैमरजाई ज्योंसपनासोवोनहिकोऊ निंद्रावसससाचोसव।
सोऊ जोसुषदुषयहमनमहुध्यावै सोसोसकलसपनमहुआवै जवलगिसोवैय
हसुषमानी तोलगिलहैदोषगुणषानी पुनिजवजागपरैवहप्रानी नहीसकलहो
यदुषहानी सोकहरषभयइछालोभ क्रोधमोहिजनमाहिकछोभ एसवअहंकार
कहुजान आतमसुद्धिसदानैमानू आतमसदाएकरसरहई अहंकारसंगतदुषसह
ई अहंकारकहिकिमिसंसारा जोकोइमिपुनिवचनउचारा तनइंद्रीमनप्राणसमे
ता आगजगजोहसुमननिकेता तामहजीवकरैअभिमाना गहैआपसुषदुषअग्या

श्री·भा·
रा ३५८
२११

ना तिनहित करम करे वहु नेरे जनम मरे नइ षहद घनेरे ईस अधीन जाइ सव ठाई
रहै न हांसी वह दुष पाई कवन काय मन प्राण सरीरा करम वासना महि वहु भीरा
इहि विधि करे वहु निनगाना तन के संग सो कहु षनाना सो निरमूल सकल है जानू
जिन्हि अहि गुण मे मन अनुमानू ग्यान षडग वहु विधि उपजाई गुरु सेवा सो सान
धराई ना सो का रहोइ गनि संगा भव विचरे करि सरूप भंगा ९० दोहा सुनि प्रति
नुइ प्रिय गुरु के वचन प्रमान पुनि करि नख विचारि ये है वह एकनिरान ११ चौपई
नेति नेति नित निगम पुकारे जनम मरण प्रनछनि हारे आतम भिन्न देह यह न्यारी अ
से यह सव नरक विचारी जग की आदि अंत है जोई मध्य विचारे है पुनि सोई नामरू
प अहै अनेका सत्य कहै सो निज अविवेका कंचन आदि अंत मजुआ एका मध्य आभर
ण किये अनेका तो वह कंचन छाडि न आना है थे निज विचार करि ग्याना नाम रूप स
व सत्य न आही कंचन सत्य काल त्रय माही आदि अंत वह एक स्वरूपा मध्य चयाके
वहु अभिन अनूपा जाग्रत आदि अवस्था तीनी आदि अंत मध्य मकरि तीनी इनके
नाम भये जो रहई छाडि सकल वुधि ता को गहई इंद्री अरु इंद्रिन के ईसा विषय भो
ग नाना विधि ईसा जाविनु एक सव गई है नाही सत्य सो अहै लषो हिय माही जिह प्र
कास सकल प्रकासे जा की सत्ता सत्य सो भासै सव नृप को मुष करकार है को नय
न नयन को परवर हू को मन को मन स्रवन को स्रवना जहलगि प्राण सकल को भव

399A

ना जाविधसकलप्रकासकएका ताविनुमिथ्यासकलभ्रमिनेका जाहिलगिदृगएस
कलकोभवना ····· याविधिसकलप्रकासकएका ताविनुमिथ्यासकलविवेका १३
दोहा जेतोनामसरूपजग छूरणजिहतेंग्राहि तेसवग्राहिनहैकछूरहहिनअंतहु
माहि १४ चौपई तानैअवहूंमिथ्यामानो कारणब्रह्मनिरंतरजानो नामधस्योसोस
कलनसावे ज्योंमरणमयतेंवहुघटिराचे अंतएकमरनकोहै साची ओरनघटिकार
णहियराची जोकछुहैसोब्रह्मसरूपा आदिमध्यअरुअंतअनूपा ऐसेवहुविध
वेदवषाने ब्रह्मवताइदेतसवभाने आदिजगतयहहुतोनकवहू अवआभामैसो
मध्यसवहू योंनेपरब्रह्ममरूपा सकलप्रकासकआपुअनूपा येहविचित्रतामे
आभासे ताकीसकतिसकतिप्रकासे यातेसवजगब्रह्मनिहारु तजिकररूपअरु
पविचारु इननेपरेरूपनिजजानु पुनिसवजगममरूपहिमानु ऐसेजोनित
करेविचारु जानैमिथ्यायहआकारु गुरुसेवाकरिग्यानउपाई चेतनमोहिलषैमनलाइ
ई आतमविषयषेदसंदेहा पाइतोषनजिसकलसनेहा यहतननतोआतमहैनाहीनि
तघटरूपविचारैमाहीअरुइंद्रीयसवहीयसमाना ताहिप्रकासकआतमआना दे
वपवनुमनबुद्धिसमेता एनहिआतमअहेहिअचेता छितिजलपावकपवनअका
सा अहंकारगणचित्तप्रकासा प्रकृतिसाम्यतनमात्रानेता जगप्रपंचवहुनहीकोतेता
१५ दोहा एसवजडतूजानिअवआतमइननेदूरि तासुसक्तिइनसवनमेरहीसदाभ

श्री भा.
११ ३५००
८००
400

रिपु रि २५ चौपई याबिधि रूप बिचारै जोई सकल उपाधि आपनी खोई सो वन रहै कि
ग्रह करि वासा निग्रह करै कि विषय विलासा तो को नहि गुण दोष प्रसंगा जीवन मुक्ति
जु भासव अंगा ज्यों पवन गको घन घिर गइऊ तो तिनसों कछु परसि न भइऊ गयो मेघ।
जो हूर हेराई तो कछु नर नि प्रगटि तिहि ठाई कहो अरक कहु जो लह विचारा जानत लि
पत सुमहडग धारा जैसे वायु अनल जल धूली रितु गुणन न परसै नहि भूली इमि नि
भूप उपजनसि ताही नभको परस सकै कोनाही ऐसहि आतम परम प्रकासा सब
ते परे अलपत उदासा तद्यपि सेगनक रियेकाऊ मायागुण विपरीत सुभाऊ जो
लो मम दृढ भक्ति नहोई ताकरि मनवक बादु नहि कोई जोलो भेर बुद्धि मन होई तो लो
सेगकरे जन कोई जैसे रोग होइ तनमाही दृढकरि मूल उपाव्यो नाही करै अपंप
अगद नहि पाई तैसो रोग बढुतवढि नाई त्योंयहि मिति भव रोग प्रचंडा जो लगि करै
न निहि को खंडा तो लगि सग कुपथ करि जोई जगम हु जनम मरे पुनि सोई २६ तात सु
नहु ताहि कुटंब जैसि ख्यवंध प्रिय लोग सुरप्रेरे आवहि सकल जे जगको पुनि भोग २७
चौपई अंतराय सो या को करही योगी को कारज परिहरिहो सो तिह ते ते जित पुनि
लेई बहुरसो नरममभक्ति करेई करम तेतम हृदय रेन सोई मैं प्रेरकि निह कुमति
न होई याविधि पाइ ग्यान विग्याना लखि मोहि भूले आप्याना सो वह तन नसो कर मन
करे ले ने रे न भो जन न विसनेरे से सकार हूरवको जैसो करै कर्म विधि लघु पुनि तैसो

400A

ताको दुख सुख लखै न कोई हरख विखाद रहित भा सोई ब्रह्मानंद मगन मन जाको
शोक मोह पुनि होइ न ताको और कहा कहौं तन सुध नाही बैठत उठत चलत
भूमाही आवै जाइ रहै कहु सोई अ सन करत जल पीवै जोई सब व्योहार रहत
को ठाना करै सकल सो गति अभिमाना लखै न कियो कहा मैं करि हो इहि नै सुख
इहि नै दुख भरि हो इहि विध रहै सदा वह योगी ब्रह्मानंद प्रेम रस भोगी पुनि लोक
वहू लखै संसारा इंद्री गोचर विविध प्रकारा मानै नही सो सब पुनि माही स्वपन वसु
ज्यो जागे माही १६ दोहा ज्ञान मपहिले जानि यहु वेधन हु तौ न कोइ आपु हि प्रक
ति अधीन है वे ध्यो घनी विध सोइ १७ सोरठा भई सो विद्या माहि जब मैं करी क
टाक्ष पुनि प्रकृति लखी विषयाहि पहिले जातें नेअमत सो १८ चौपई तब इन जा
न्यो विषयन आई त्यागि दियो करमहै न ताही प्रथम हि मोह न जोलगि जाना
प्रकृति भोग उत्तम करि माना जब मम सरन गहीउन आई सुखी भयो अपन्यान मि
टाई तब माया को इन दुख जाना परिमाने ह रूपे माहि माना निज कृत वेधन सो
पु विचारा विद्या सो छेद नि हि द्वारा पुनि तिहि सुद्धि रूप ने जानू विषय लिपि
तना कहु जनि मानू जिमि रवि अंस सकल दृगमाही रवि विवि नु लखै न कछू को
काही जब संयोग तरनि को होई तब सम लनि रखै पुनि सोई रवि विनु अंधका
र अति भारी को ऊ लाहि लखैव लु निज सारी जब पतंग सो पाइ प्रकासा तम मि

श्री॰भा॰
पृ ४०१
401

तिंह

दिनाइ सरूप सब आसा तौ निज काल महि चुअ निरलेपा अंधकार सो भयो न लेपा
सदा मयन इक भांति रहाई रवि बिनु सरूप कछु नाही रवि ते तम उपाधि करि दूरी
पाइ प्रकास प्रकासहि भूरी तिमिर ग्यान मय है मे रोग अंसा स्वयं प्रकासक सब घट
हंसा जन्म मरन दुख लोहै न काउ सदा सर्वरस सुध सुभाउ ॥ ९९ ॥ दोहा अप्रमेय अरु
ग्यानघन सकल भाउ अनुभाव एक अगोचर कर्म गति सदा निरीह सुभाव ॥ १० ॥
चौपई सत चित अरु आनंद सरूपा नेति नेति करि निगम निगम निरूपा जो कछु
रिइं द्री तन मन प्राना चेतन है वरते विधि नाना मन वानी पहुँचे न हि नाही ... कहा
कवन विधि गहहि पुनि मेरी प्रगट ग्यान रूप रवि फेरी तम अग्यान भाजि सब जाही
अद्भ रूप नित ता हि लखाई पुनि मो हि भंजे निरंतर सोई नहि माया व्यापे पुनि कोई
मन मत सकल बिकलप सु जाना केवल आतम कछु कर नाना भ्रम रहित न
हि जगह आ थम करि ओर रेव गाना इजा इहि संसार लख दु अव ओर से गुण सह
भयो स्वाप थम ने से एक ब्रह्म बिनु है नहि कोई जैहे तो अवलंबन सोई पुनि य
हु येच वरन बिसतारा उपजे बिनसे बारहि बारा जो को मिथ्या बेर व षाने अरु अ
नभव करि आपु हि जाने अरु प्रतछ मे ता ने न कहही जाग स्वपन जथा सुब न
हही ऐसो रंग तन सब करि जाने पुस पिन वानी वेद वषाने स्रुति के अंत न वच
न विचारे प्रथम कहे तहँ उरधारे करहि काम कर्म बहु तेरे परहि सताम वनि।

भुताही मन वच
सरन गहे

तं

धिकेफेरे कर्मविछपतिबुद्धिहै जोंकी कबहुनगतिजानहु नुमताकी तोतै जिनहिल
गेनहिंग्याना आपुहिमानहि परमसुजाना विषईजीवनकोभरमाई डारिहि भव
निधिदुखदाई इहितेसकललक्षारि जेनाला भजहिमोहिपावैतनकाला २१ दोहा उद्ध
वयाजोजोगविधि महाकष्टतिहिमाहि होइसिद्ध तोअलपफलमुख्यमहागननाहि २२
सोरठा करैजोगनरकोइ भयोपेक जवजोगनहि रोगग्रसतभामोहि तांकोकहहुउ
पाइपुनि २३ चौपई जोयाकेतनप्रबलविकारा करिनहिसकैभक्तिअधिकारा
प्रथमहयोगधारनाकरई सीतउष्नरोगनपरिहरई आसनकरिवातादिकरोगा
जीतेसबपुनिउपजनसोगा उपकरिपापनिवारनकरई मंत्रऔषधनिजउरधर
ई गुससरपादिककोपरहरई सोयोगीसुखसोभवतरई कामादिकजोमनकोरेया
करिममभजननाहिपुनिसोया योगेस्वरकीवत्तविचारी दंभमानिकोहनेप्रचारीअ
रुकोउएकमूढगवारा योगकरैपुनिबहुतप्रकारा रहैदेहयहकलपप्रमाना इह
वोछेनितप्रतिगतिग्याना जरामरनव्यापैनहीमोही तरुणरहैसततसुखसोई इ
इरहिनपरिकायप्रवेसा करहिजतनजिमियरूउपदेसा वारिजनमइहिविधज
इ षोवै परिभवासिंधुमेंरमतिरोवै जोवहयोगग्यानहिंनकरही तौवैपोभवसागर
मेपरही जाशरीरहितदुखबहुतेरो करैसहुदसुखआवननेरो तनकोआदरकरहि
नतेऊ ग्यानवंतजेनरहैकोऊ हेशरीरजेनस्वरजाने तेअैसोपुनियोगनठाने

श्री·भा·
ए ४०२
402

अरु कोऊ करै योग बहु भांती विघन न आपै कोऊ दिन राती भागयोग मम परमै ईपी
नी दृढतन भयोन कोऊ विपरीती राखे जो बहु काल सरीरा तदपि न हि कछु चाह हिय
धीरा छोड़हि योग समाधि उपाई सेवहि सदा चरण चित लाई २४ दोहा ताजन के आ
धीन मे मन आधीन मोरेह तां कीद्र ध्या होइ ज्यों त्यों मम इध्यानेह २५ सोरठा विघन
न ताहि गनाइ अंधकार ज्यों रवि निकट ब्रह्मानंद सुभाइ सुर के सेतु हज्ञाइ सक २६
निज मन उद्धव जान उनति सके आध्याव महु पुनि अवक्षपानिधान भक्ति योग क
हि हुव बहुर २७ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भाषानिबंधे अष्टविंशाध्यायः २८
चौपई सुनि श्री मुख के वचन अनूपा ध्यान धारणा कहि न सरूपा पूछन लागा सु
गम सुभ पंथा जो कछु करै विसरस वग्रथा है हरि कृपा सिंधु मग चेता पंकज नयन
आधार अनेता मन निग्रह युति योग बखाना कठिन महा अति कृपानिधाना ई द्वीव
सहरि मई न जो की अश्व नक हो कवन गति ताकी है दृढ चित्त परम सनेह सो ब्रह्महृ
ठ कछु नहि जिय संसा मन बस करण हेतु दिन राती जतन करै सो अनेग न भांती
तिनको मन बस होइ न कबहू जतन करे स्व मन में न तबहू तब पद कंज का मधु
कन्यागी सेवे महत्व जाप यत लागी करै योग तप यग अनेको कर हि करम सब
रहित विवेका गरव सहित सब क्रिया कराही जनम पाइ पुनि पुनि मर जाही मेको
सारासार विवेकी तब पद कमल सुमति निज टेकी तिनक हु सुयश आवे अनेपासा

408A

गनिन्हसरीजेनवरासा मायाताखुनिकटनहिआवै जेतवपदसंतनचितलावै सह
जहिजगतमिटैपुनितासू जेअनन्यगतिहैकोदासू शिवविरंचजेहैजगत्राता
तिनकेतुमरक्षकजनत्राता २ दोहा कहाअचंभोनाथअवगतिदीनीनिजदास अ
धमउधारेवारवहु तहिकछुतुमहिप्रयास २ चौपई तुमअगअच्युतअनंतअविनासी
सवघटव्यापकनित्यउदासी तवपदकंजसेवमनलाई तुमहिकरैवससहिजगो
साई कमलनयनआदिकजगजेते तवआगपापाल्यकहैतेते निजकिरीटसोत
वपदपीठा जोरेसहास्येइकूरीठा तुमरीसरणहिकोऊजगआना भक्तिपक्षपा
तीभगवाना गोपीवल्लभतिभयअधीना मुनिआचारजकरैमतिहीना जवश्रीराम
रूपप्रभुकीना तवकपिराजसखाकरिलीना जोहनुमन्तकोऊहैगोसाई। किमि
पदकंजतजैअदुराई तवउपकारसमुझिजोकोई तौकिमिभजनतजैनरसोई तु
मनवसियहदेहसवारी तुमचैतन्यसकृयहधारी सहारहैइहितवआधारा
तुमहीनितप्रतिपालनहारा तापरसठयहतुमहिविसारी करतऔरनकोउरधा
री जद्यपितासुऔगुणनहिमाना होविमिटाइकरीकल्याना जोपुनिसरणगहै
कोऊआई मिलैचारफलसहजसुभाई जोसरवसहोइयहमानी तवउपका
रसमुझमनवानी चहैतासुजोप्रतिउपकारा कोसमरथअससिअहैविचारा जो
विरंचसमजीवैकोई नितप्रतिकरैजतनवहुसोई तौतवऋणछूटैनहिसोई

श्री०रा०
॥४०३
403

जनमअनेकवारमरजोई जोतुमबाहरअरुहियमाही असुभदूरकरिपालितनाही
बाहरतुमआचारमरूपा भीतरअंतरजामिसरूपा विषयवासनासवकरिहरी नि
जसरूपप्रगटावतिहरी ऐसेतुमकृपालजदुरामा तवसरिकोहूजोजदुराया तेहा
सुनिउद्धवकेवेनवर प्रेमभरेसुखअैन मंदमंदमुसकायतववोलेकरुणाअैन ४ चौ
पई सुनिउद्धवअवकहौंवषानी यहममधर्मसुमंगलषानी सुधासहितकरैनरको
ऊ दुरजयभवजीतेपुनिसोऊ करैकरमसवमोहितलागी अभयलोकसुखमनसो
त्यागी करमकरैसुखनामउचारै रूपहृदयनेनेकननेटारै मनराषेनितमोपदकंजा
मेरेधर्मभोजविनरंजा जिहिजिहदेसवसेममदासा तहांकरेसुखसोनरवासा
पुन्यदेससोइजानहुवीरा जहांवसेममभक्तिसुधीरा सुरनरअसुरभक्तिममजेते
भयेहोइअरुहेंजगकेते तिनलोकत्यागसुभआचरणा सोयहकरैकरमपुनव
रना जगमहोसेवनितकरमेरो परवनिभोजमिलापघनेरो जात्राजनहोहोइपुनिमे
री जाइनहोचलुआपुसवेरी नत्यगौनिवारिअ अनेकाआयुकरैधारसहितबिवे
का छअवमरअरुवस्तुअपारा करैचितअनितमुदितउदारा ममहितलगेभलोसो
इमाने सोविनरकहूपासवमाने सरवमनिमदुरवेमोही अंतरवाहरदेहकओ
हो आपुसहितममामधिजाने नमन्यमलअनावतमाने हेउद्धवइहिविध
सवठामा ध्यानदृढमाहिअभिरामा सवमहभावमोरनितराषे करिसनमा

403A

नमधुरप्रियभाषै ५ दोहा स्वपचविप्रअरुचोरनर सांनकूरजेकोइ सवमैरे ये
एकवहमेरहतजैप्रुनिसोइ ६ चौपई एकविप्रजिहस्रुतिअधिकारा अंत्यजए
कजभरयोविकारा एकविप्रकोधनहरिलेई द्विजकोएकघनोधनदेई कूरए
कसवकोदुषदेई सांतसुभावएकसुषसेई इहविधिनानाभांतप्रपंचू जीवसुभा
वसुरच्योविरंचू भेदत्यागिसवमेलषिमोही पंडितसोईकहियेगतिद्रोही इह
विधकरतभावममकोई घोरहकालसुषरगतिहोई मानसपरधाअरुअहंका
रा सपदिजाइमिटचित्तविकारा इहतेरेहवुद्धिसवेत्यामी लोकलाजनेहोइविरा
गी गरवमानकुलकोअभिमाना धनमनविद्यामहजगनाना सकलछाडसव
मोमहिजानी भेदरहितदेषेसवप्रानी स्वानधेनुषरस्वपचकुजाती सवमेल
षेमोहइकुभांती करेप्रनामसवनकोअैसे इंडपरैषसभूपरिजैसे जौलगि
अगजगासिगरेमाही मेरोभावहोइथिरनाही तौलगिमनवचकायसभेना मेरोभा
वलषेजगजेता अैसकर्मकरैजोप्रानी तिनकोसवजगव्रह्मसमानी विद्याअगर
अविद्यानासी छूटिगईभवनिधिकीफांसी उधवजेनेमतजगमाही तेसवनिगम
पुराणकहाही तिनमेइहैकह्योमतसारा जाइवेगमिटियहसंसारा मनवचका
यइहेदृढजानै अगजगसवममरूपसुमानै हेउद्धवइहमतोहमारो किहिविध
कहोप्रभावअपारो जोनिहिकामधरममकरई करतहिमात्रप्रगटदुषहरईअ

लपमात्रउपजानवसोई कोटिकलपलगिनासनिहोई अतिसैप्रबलनिगमइह
गावै कोटिविघनसोनासनपावै ७ दोहा विघनकरनकेद्वारजे तेगुनमयसबं
जानि मेगुनरहितअनूपअतिधर्मसकलममजानि ८ चौपई अविनासीमेंस
बजगमाही त्यागमेंधरमनोसकहूंनाही उद्धवकहूलगिकरौंवडाई तीनिकालड
बरीतरहाई कबहूंछीनहोइनहिसोऊ मेरोधर्मभलकरिकोऊ उद्धवजेलौकिक
विवहारा राजसतामसविविधिप्रकारा जोकेवलअनरपकेहेतू करैंअपुरुखचेत।
मिलुतिसनजाकेकियेनिरयनरजाई कामक्रोधदयाविद्दाई जघपिअसकर्म।
धनीता मोहिसमरपैहोइपुनीता जैसेभयअरुसोकसमेता कोमोहिभजेनिरंतर
चेता सोभवतरसपनेनानू मोतेरहितवचातेमानू केसकूवरीअरुसिसुपालू मि
ल्याबासुदेवभुवपालू भयअरुकामक्रोधमुनमोही रहेनिरंतरजोसुतिद्रोही मिले।
मोहियहदेखुविचारी औरनहूजीयहनिरधारी सुधागुनकोऊभगवतधरमा करै
निरंतरनिजकुलकरमा ताकीकहलगिकरौवडाई जोपुनिधर्मचोखउनपाई ता
तेइहि विवेकचतुराई इहैबुद्धिहूजीनहिकाई मेरोभजनकरैदिनराती छोडिदेहस
बविषयसुहाती यहझूठीक्षणभंगुरदेहा सकलविकारनकोइहगेहा तासरीरसोहरि
अविनासी मिलैमाहिसोहुवैअविनासी ९ दोहा यहमेसबकोसारमतिकह्योतोहि
समुझाइ ब्रह्मज्ञानकोसारभलयहहूजोनहिकाइ १ चौपई जोनेमिटैसहजसंसा

रा इतनो ग्यान मूल सब सारा सो मैं तो सौं कह्यो बषाना व्यास समास भांति बहु नाना अ
ति दुरलभ यह ग्यान अनूपा सुर कहु मिलै न यह अनुरूपा यह मैं कह्यो ग्यान तोहि पासा
तिहि को जो जानै हरि दासा संसय दूर होइ तत काला धाम जाइ तजि भव भय व्याला
पूछहु जो मोहि प्रस्न बनाई सकल कह्यो तो सों समुझाई सो तैं निगम तत्व सब जानू प
रम रूप मेरो वह मानू इह को मो नर ले बुधि वंता है इह भली विधि जो मम संता ऐसो ग्यान रे
इ जो को ऊ तो के बस सह जे मैं हो ऊ सुने सुनावे समुझै जो ऊ अति सै सहजे मम प्रिय सो
ऊ पुनि इक चित सादर को उ सुनेई करि अनुमोदन निज मन गुनेई करम करत नहि बं
धन होई परम भक्ति जानहु तुम सोई ग्यान परम निधि यह मैं भाषा तुम उद्धव कछु हि
य गहि राषा सोक मोह अव भा तब हरी कह्यो तोहि भव रुज गर हरी ११ छंद भव रोग
भारी ग्रसत जो नर ताहि औषद यह भली जो पाइ रुचि सों कुपथ छांडै नसै रुज जिगति सु
भली यह ग्यान परम सुजान तुम जो निंदहु सठ नर कूर को जे दंभ जुत पुनि रहित सेवा
और पुनि अविनीति को १२ अरु जे अभक्त असक्त ग्रह निसि दिवस कामी मन है अरु
नासती कसु भाव जिन को सहत अपजस दुह है इन कौं न कबहू दीजियो तुम ग्यान य
ह सुष कंद है १३ दोहा इतनि दोषन तें रहित अरु द्विज सेवक होइ साधू जन सुचि वि
मल मति ता हि कहहु चित जाइ १४ सोरठा भक्ति होइ मम जाहि सूद्र होइ के वाम वर
कहिहु यह तुम ताहि कपट दंभ तें रहित लषि १५ चौपई जिन जाना यह ग्यान सुजा।

श्री·भा·
रा ५०५
४०५
सो॰

नू ताहि जानियो रहियो न ग्रानू जैसे कोकरि पानपियूषा ताहि कहा रहे पुनि कछुभूषा
ग्पान कर्म अरु योग उपाई कथी विनिज अरु नीति सुहाई मोछ ग्पान ते होइ सुजाना क
रमते काम सिद्धि वखाना योग किये अणिमादिक पावे कथी आदि पुनि अरथ सुहावै हरु
नीति तेईस कहावे इहि विधि बहुत स्रुति गावै बडी कठिन ताते सब होई सुलभ सकल सेवै
जो मोही एसव जानहु मम आधीना मिलेताहि जो मम रसभीना मम जन नकछु चाहत ये ना
ही चार पदार्थ मिलसम ताही जवन रसब कल करम कहु त्यागी आतम निर्वेर नभाव इभा
गी तासम प्रिय मोको नहि कोऊ मम प्रिय तिहि अति मम वपु सोऊ ऐसे सुनि प्रभु के जव बै
ना पुलक तनोरुह जल भरि नैना गदगद कंठ जोरि जुग हाथा छन इक कछु न बोलनु नर
नाथा प्रेम सुभर चित छुभित संभारा हरि पद सीस धरयो वहु वारा आपुहि मान सनाथ रू पा
उद्धव बैन बोलत व भूपा २६ दोहा अज अव्यय अच्युत सदा परमानंद प्रकास नाथ तिहारे ।
निकरते भयो मोहि तम नासु २७ पावक निकट जु जाइ बलि सहज हि भय तम सीत जाइ छूटि
छनमाहि सव तिमि सब मोह ब वीत २८ चौपई पुनि प्रभु कृपानिधान सुजानू हियो सीपवर
मोहि विग्पानू जाकरि लषा सकल घटि रूपा एक अनेक न अंत अनूपा जो कृतग्प जनको
जग माही तव पद छोडि अनत कहुं जाही ते कृतग्प नाहि चतुर कहावे तव पद छोडि अनत जो
जावे तुम प्रभु अति करुणा मोहि कीनी प्रवल मोह फांसी हरि लीनी यार ववि येसु द्द मम

405A नेहा सुनहाराहिदेहअरुगेहा निजमायाकरिसहजसिवढाई तवमेरोमननहींलगाई
जनदुषप्रभुनिजहिदयविचारा ग्यानवढ़ुहैताहिनिवारा हेयोगीसनाथअविनासी
सवघटिव्यापकग्यानप्रकासी जनत्रातातातविनुकामी तवपदकमलनमामिनमामी
मैंप्रपन्नजनहीनदुषारी करहुकृपाअवहेअसुरारी तवपदकंजहोइरतिमोरी ग्यान
पायनसंतननहिथोरी यहअवनाथकृपामोहिकीजे जहजनमोतहहासकरीजे यह
विधविनयकीननहिथोरी कृपासिंधुतहकहतवहोरी होउसत्यतवमयकीवानी मम
पदप्रीतिहोइसुषदानी परिउदुवसुनियोइकवाता तुमलोकनसिछासुषदाता याते।
तातकरहुतुमअैसो मैंउपदेसकरौंतोहिजैसो नामवड़काश्रममममआहो परमपुनी
ततातसोआही तहतीरपवरसुरसरिधारा नामलेतअघकटैअपारा ममपदतोयसु
षदसवकाहू उद्धवतुरतितहांचलिजाहू नामअलिकनेराहेजासु हरसपरसमजुन
अघनासू १९ दोहा तहांजाइसुषसीरहौवासकरीफलषाइ वकलवसनधरिपरह
रोभोगाजातदुषदाइ २० चौपई सीतउलमसुषदुषसवसहहू विनयादिकलछनसु।
भगहहू इंद्रिनकेसवभोगविहाई सदारहौंग्यानहिलयलाई सांतिसहाहिनचितसव
काला अरुविग्यानसुबुद्धिविसाला मोतेसीध्योग्यानअनूपा वेदिएकांतिविकारहु।
भूपा वचनचितसवमोमेराषो मेरोधर्मताहिजनिराषो तवतीर्थाएकरिपरिहारू
ममपदपैहोसवसुषसारू उद्धवयहप्रतिसोमेरी नहिउमपतिहूहेपुनितेरी इहिवि

भा०
८०६

धर्मसमवचनसुनिकाना। उद्धवनिजमनमेअकुलाना। हरिपदमेराख्योनिजसीसा। गद
गदकंठसुभयोमहीसा। कह्योप्रेमव्याकुलविहवलचेता। प्रियवियोगवडदुसहनिकेता। ज
द्यपिदुसहदिनकोमरा। हरिविछोहकरकायरहूरा। सजलनयननतनसुधनहितेही
तनमयभयोविषमदुषजेही। चल्योचहेपरिचल्योनजाई। हहरिफिरेपुनिपुनिदुष।
पाई। कृष्णवियोगमहादुषभारी। पुनिउद्धवकहमिलेमुरारी। निजपदसुभगपाउके
टा। दियाकृपाकरिउनकरिओटा। लैकरिसीसधर्योवडभागा। करिप्रणामपुनिअप्रति
अनुरागा। प्रभुआपुसकहसकैनटारी। रहाएकटकवदननिहारी। उद्धवचलनचाहन्नप
भाष्या। चलेप्रभासप्रथमजदुनाथा। उद्धवजाननतहेसववाता। चल्योसुहारिपीछेअकुला
ता। करियादवकुलकौसंघारा। प्रभुवैठेएकांतनिहारा। ॥१॥ दोहा। हैनरपउद्धवतिहिसम।
यगयोकृपानिधपास। तहांमैत्रेयआइगोप्रभुदेषनगदास। ॥२॥ सोरठा। परमभागवतहे
ऊ। करमैत्रेनिरषैप्रभुहि। उपदेससुनिसोऊ। तसमानतिनकौवडुर ॥२॥ चौपई। मित्रासु
तकहहियोनिदेसा। तुमकरिहोविदुरहिउपदेसा। पुनिउद्धवकहिआयसुदीना। समाधान
हरिवहुविधिकीना। पुनिपुनिहरिपदकौसिरनाई। चल्योसुउद्धवअतिदुषपाई। प्रभुस
रूपनिजउरियमदुराषी। प्रेमविवसकछुसकैनभाषी। इहिविपुरीविसालागएऊ। तहांना
रअसिकरतभएऊ। जैसेहरिदियोउपदेसा। सोसवकियोनतत्योनदेसा। ग्यानीतनतवा
भानरनाथा। पायोहरिगतिसहजसनाथा। यहहरिउद्धवकौसंवारा। कृष्णचरकौपरम।

ध

406A

प्रसाद। भक्ति मुक्ति यह ग्यान अनूपा। जानहु यह निज प्रभु को रूपा। जो काहू कृपा होइ सो पा
वै। जाइ धाम भव फेर न आवै। श्रीमुख कह्यो आपु जदुनाथा। परम भागवति की यो सुना
था। प्रेम सहित जो सुनै सुनावै। जाइ मम धाम बहुरि फेर न आवै। २३ दोहा जिह जरा मरन न होइ
इक वहूं पिवत जे इहि अमृत कौ। सुष सार परम अपार महिमा सुष हजन भव स्वामि त
को एक सिंधु तै करि प्रगट आपु पियूष वंहन कहुहि यो। सब जरा रोग मिटाइ तिनकौ वि
गति भय करि वलन यो। २४ अरु इह सरोय हू अमृत पावन निगम सिंधु हि मथ कस्यो
सो प्याय निज जन उद्धवाहि कनापत्रय भव भय हरयो। ऐसे उदार अपार त्रिगुण ग्याह
पुरुष सुषाकरा। सो ब्रह्म कारण करण करता कृष्ण है भूभरहरा। २५ दोहा जासुना
म जप जड़ु तरे परे नष्ट निभव कूप। सदा संत हित रूप धरि कौतक करत अनूप २६
सोरठा कृपासिंधु सुषधाम कृष्ण कमल दल नयन प्रभु। बहुविध करे प्रणाम नाहि
उभय कर जोरि कै २७ दोहा अव अध्याय उनतीस कौ नाम हृ श्रीसुषदेव। जदुकुल को
संहार अव कहिहहि तो को भेव ॥ २८ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशस्कंधे
भाषायां ... एकोनत्रिंशोध्यायः ॥ २९ ॥ चौपई ॥ सुनि मुनि के सुभ सुंदर वैना। भूप प्रस
न भयो चित चैना। पुनि हसि बोलु परीछित राऊ। हे मुनि मे पूछउं सत भाऊ। उद्धव
सुनि उपदेस अनूपा। वन उठि गयो हिये धरि रूपा। पीछे कहा चरित प्रभु कीना। काहो
काह कस आयसु दीना। जदुकुल आपन द्विजन भए ऊ। कहा कर्म प्रभु आपु सु करि

श्री॰भा॰
स॰ ४०७
407

ऊ॰ ईश्वर कोक छु आपन है या भे सुर आपन होइ प्रमोषा सब कौ प्रिय अति सुंदर रूपा अं
ग अंग प्रति अधिक अनूपा जो तिय कौ निरषे इक वारा ता सुन यन पुनि टरै न टारा फ॰
स्यो गये इ पंक जिमि जाई नहि निकसै तहँ रहै समाई कर रछुहर पैठ्यो हिय जाही सो पु
नि टारसकै नाहि ताही गातन की सोभा नहि थोरी वरनत कवि कुल की मति भोरी इन मैं
पार पवै नर याही वैठ नब्यो महा जिन वाही नैनन त्यागि पाइ हरि रूपा ऐसो हरि तन
परम अनूपा सो तन प्रभु त्यागो पुनि कैसे कहिय नाथ समुझौ मै जैसे यह विधि पूछ्यो
नृप मुनि जव ही हरष कृपालि वोल मुनि तवही द्विवम अपनरीछ उतपाता द्वारामती
भयो वहु नाता उग्रसेन आदिक जदु जेते सभा सुधरमा मधि सव तेते वैठे सकल नहा
न यराया तिन प्रति वोल्यो श्री जदुराया २ दोहा कहौं वचन कल्यान हित सुनौ सभा
सद लोग द्वारामती पुनी न अति भौ उतपात कु योग २ चौपई यह उतपात महा पुका
रीना तजहु पुरी यह विधि कत कीना जुवती वाल वृधि सव जेते संषोद्धार पठावहु ते
ते चलहु अभा सकल किमि सभाई पश्चम मुष विधि सुनौ सुहाई तहाँ जाइ मज्जन त्रुन
करीये पूजि पितर सुर मन सुचि करिये पूजि विप्र कीजे सनमाना सादर पुनि दीजे वहु
दाना कंचन भूमि वसन वहु जानी हय गज रथ निगह वहु भांती असन कराइ भली
विधि ताही लेहु असीस सुंदर तिन पाही इहते विघ्न रहै नहि कोई विप्र धेनु सुर पूजै जो
ई मंगलमय यन अमम न्हानी पापहर तीरथ वर जानी सुनि हरि के ऐसे वैना

५०७A

हरषतजदुसुनिचितभावैना भलीनापहमवारनलावै ॥ अवप्रभासछिनमहुहमजावे
चढेतरनसवगयेप्रभासा चढिचढिरथनिजगयेपुरपासा हरिआसांजेसीविधकीना
जदुनतहांतेसांनवकीना औरनकहाजुहरिसुभवाना हरषतकियोसकलसोनाता न
वतिनकियोमहामदपाना जहितेभूलिगयोसवग्याना अतिउनमत्तभयेजदुवंसा दै
वयोगतेमतिभईभ्रंसा हरिमायाअतिप्रवलनरेसा भमोजुधजनिकरहुअंदेसा कर
मदपानसभातिहिकीनी सात्विकवचनवोलमहभीनी कृतिवरमाकोकरिअपमा।
ना कहेवचनमखगरलसमाना छत्रीवंसहोइवहुमानी सोवतवालहनेअग्यानी
महप्रद्युम्नवचनभलिमाना कृतिवरमासुनिवहुतरिसाना कहनलग्योअतिवच
नकठोरा तुमसोंकोनिरदयअतिघोरा भूरिस्रवाभयोभुजहीना ताहिमारितुमवहुजस
लीना वातहिवातकरषवढिआई कृतिवरमामारयोतिहिठाई भयेपरसपरअतिसे।
क्रोधा रह्योजुद्धभारीगनिवोधा करिदेअनीउदधिकेतीरा भिरेपरसपरअतिरनधी
रा धनुषवानकोअसिअरुचरमा गहासकतिकोपहिरिसुवरमा ३ दोहा कोपरसोले
केलरहिकोकरिलियेकुठारि हनतपरसपरक्रोधसोनहिचछुरह्योविचारि ४ चौप
ई हयसोंहयगजसोंगजभिरही रथसोंरथीरथीमिलिगिरही षरसोंषरमहियन
सोंमहिया वृषसोंवृषभकोरे अतिकरषा षचरसोंषचरमिलिलरही नरसोंनरमि
लिजुधसुकरही महामत्तकछूलषैनकाहू करेंजुधजिमिगजवनमाहू लरेप्रद्यु

श्रीमा.
प ४०८
408

मनसीवँ होउ बीरा। अरु अक्रूर भोज रनधीरा॥ सात्विक अरु अनुरुद्ध लराई। को अस
कवि जो बरन सिराई॥ अरु सुभद्र समर जित होऊ। करै जुध बरनै कित कोऊ॥ गद अ
स नाम कृष्ण को भ्राता। पुत्र नाम गद जग विख्याता॥ भिरे परस पर दोऊ रनधीरा। सुरथ।
सुमित्र रन गंभीरा॥ उलमुक निसठ भिरे दोऊ जोधा। भिर्यो सहस जित सतजित क्रोधा॥
भानु आदि सुग्रीव नाम जेते। दुंद जुध सब करहि अचेते॥ हरिमाया मोहित सुधि भूली। ल
रै आपु में अरिसम सूली॥ कृतवर्म सात्विक अरु भोजा। अंधक कुल बड़ो जिहं ओजा॥
अरु बहु रसन सेन दोऊ जोधा। लरे घनी विधि रहित सो बोधा॥ मधु माथुर कुल्यादिक नामा।
भिरे परस पर युति अभिमाना॥ त्यागि सनेह सुहृद ता भारी। पिता पुत्र सों लरैं प्रचारी॥
मातुल अरु भानेज लराई। भ्राता भ्रात सों लरै बनाई॥ मित्र मित्र सों अति रन ठाना। सु
हृद सुहृद सों भिरे सुजाना॥ जाति जाति सों जुध कराई। नहि परि अपर लखै को काई॥ प
हारा धनुक बाण सब टूटि गौ शस्त्र भयो सब छीन। मुष्टि जुध करि प्रकित भे पुनि ए
रककर लीन॥ ६॥ चौपई। वज्र समान ताहि कर लीना। आपु समाज जुद्ध बड कीना॥ सो
कनि बारहि बहु विधि माही। प्रतिपक्षी माने पुनि नाही॥ आनन ताप अरु मूढ अचेता।
भये काल बस कोहु निकेता॥ तब ही आन क्रोध करि ईसा। एरक मुष्टिक सों करि बीसा।
भयो जुध अति घोर कठोरा। पलक माझ क्षय कियव रजोरा॥ विप्र श्राप दूषित मति
भंग हरि माया मोहित तन पंजरा। पाव करु पक्रो ध अति कै घोरा। भयो नास जदुकुल

नहिं घोरा वेणुघसे प्रगटे पुनि आगी जरे सकल वन जिमि हवलागी निजकुल नास ल
ष्यो जगदीसा तव मन मोह मिकहहु जदुईसा अव मे भू को भार उतारा जाकारण लीनो
अवतारा हलधर तव समुद्र तट जाई परमयोग कीनो मन लाई तजि भूलोक गये।
निजधामा संतदुषद करि कै सुरकामा रामप्रयाण हे षिभगवंता जनत्राता गुण विस
द अनंता भू पर लघु अस्व अनूपा तहं वैठे षोडश वर भूपा सुंदर चारु चतुर्भुज रूपा
वपु प्रकास दस दिसि अनूपा ज्यों विधूम पावक प्रकासा ऐसो रूप अनूप विकासा
वपु घनस्याम मयन मन हारी श्रीवत्सल सोभा अतिभारी पीतांवर दुति कोकर पारा के
चनन पतता सुछवि चारा मुष सरोज सव छवि को धामा मुसक्कनि मंद मंद लषि कामा
कुंतल नील सुरभि सुठि सोभा नयन कंज लषि मुनि मन लोभा मकराकृत कुंडल स्रु
ति सोहैं सीस मुकट मन अषिल विमोहैं भ्रूलस चक टिसू चविराजा उर विसाल वन।
मालसु राजा और कौस्तुभ मनि उर राजै कटि किंकन भुज वलय विराजै नूपुर हारमुद्रि
का कीनी तिहिं लषि अषिल भुवन छवि फीकी ७ दोहा सुंदर अद्भुत रूप वर निरषि
तमन हरि लेइ आयुध मूरत वंतवर धरे तहां रहे सेइ ८ चौपई कोमल सुभग कंज स
मराते जन मन भ्रिमता सुरस माते रषि णजंघा नी चेवीना वामचरण तोऊ पर दीना
निश्चल हैं वैठे जदुराई जासु नाम भव रुज मिटि जाई मूसल षंड अलेप जो नाहि उ
डारयो उदधि मीन गिलि गइ ऊ सोवह मीन जाल महि आवा ताके उदर लोह उन पावा

श्री भा
ए ४०६
४०९

सोवह नरावाण भ लिवकीना लेवह सर मृगया मग हीना सो वह व्याधि फिरै वनमाही
हरिको पद जान्यो तिन नाही मृगमृष सम हरि पद उन जाना मारयो गहि उन वान अ
जाना लाग्यो चाण चरण महि सोई विप्रवचन मिथ्या किमि होई सो चलि व्याधि नि
कट पुनि आवा रूप चतुर्भुज नरस न पावा लग्यो चरण देख्यो निज वाना भयो व्याधि
सो मृतक समाना निज कृत पाप देखि भयभीता धरि पद सीस वोल्यो सुविनीता हे प्रभु
मैं कीनो अपराधा मेट बुधि पुनि वपु मम व्याधा मैं अजान यह कीन गोसाई मृगधो
खे मैं वाण चलाई यह मैं पाप कियो अति भारी छमा करिय प्रव हे असुरारी ९ दो०
जासु नाम के लेत नहीं कोटि जन्म अघ जाइ मिटै तिमिर अज्ञान सव निगम कहैं नित
गाइ १० सोरठा शिव विरंच जिहि सेव ना को मैं अपराध किय याते जदुकुल देव
वेग हरो मम प्राण अव ११ चौपाई याते वड़ रव करौ नहि ऐसो यह अपराध करयो
मैं जैसो तव माया गुण कृत विस्तारा शिव विरंच सनकादि निहारा औरो जे मुनि
ग्यानी को ऊ जानि सकै नहि तव गति सोऊ तव माया मोहित सव लोका पार न ल
हो कि नहू कोऊ औ का पाप योनि अघ अमित अगाधा महा मंद मति पाव र व्या
धा कौन भांति वरनौ गुण सांई सेस महेस गिरा सकुचाई और न अव कछु करौ
विचारा हनो वेगि मोहि यह निरधारा व्याधि गिरा छल रहित विचारी प्रभु कृपाल
शुभ वचन उचारी उठ अहि जरा नमय कछु मानू मैं निज कियो पाप जन जानू

409A

यहसब चरितकियोमम आही तेरीसक्ति कहाँइनमाही नाहिस्वरगमम अग्रासामानी
वसहि हंतीजिहंसवसुषमानी जबहिकह्यो अस सिवचनं क्रुपाला आयो रिव्यविमा
नविसाला तीनि प्रदछिन एनवतेइ कीना पुनि पुनि करि प्रनाम रसिभीना चढि विमान
सुरलोक सिधायो तह बस व्याधि अमित सुषपायो हारुकुरपलीनेअचहूं ओरा देषि
नफिरे रूप चित चोरा नहि देष्यातव अतिदुषपायो तुलसी गंध पवन तव आयो तिहं
सुगंधके पषनहं गहऊ कमलचंद कहुं देषित भइऊ सोभा पावकन्सूर प्रकासा पी
परमूल निकेत निवासा आयुधमूरति वंतसमेता निजपति देषन भागति चेता २२
दोहा तवहारूकतनपुलकि अतिसजलनयनमतिभोरि विहवलरघपतिचरननिपे
गिरयोजुगलकरिजोरि २३ चोपई गदगद कंठ प्रेमनहि थोरा बोल्यो वचन निरषप्र
भुओरा हेप्रभु पदपंकज विनु देषे पलकगयो मैं जुगसम लेषे नहदद एनवनेभइमो
री हिसानसकु मोरि मतिभोरी जैसे निसा निसाकरिहीना तिमि पदकमल विनामैं ही
ना सनतकहे जो लोइ मिवाना कौतकसुनहु भयोइकताता गरुडध्वज रघनभपा
घगएऊ देषि सुनअतिविसमयभवऊ रषपीछे आयुध तिहिठामा सकलगएमि
लहरिकेधामा सकल प्रचंभो अति सैमाना तव बोले हरिसापानिधाना घ्यरामतीसनु
नतुमजाहू कहीहहु समाचार सव काहू जदुकुल नासराम निरुजाना अरुममदेसा
कहहु मनमाना ता पर मैं अव रहे न कोई तनुधारी जहि लगि को होई यह नरलोक

श्री·भा·
९५२०
410

तनै मैन वही वारता सिपुर हित वही हमरे मात पिता सन जाई कहिउ बात सकल
समुझाई लैले निज परकार इक साथा संग धनंजय कद धनु भाथा इहि विधस
कलइ द्रुपद जाही। ताही भांति कह्यो तिन पाही। तुम मम धर्म गहहु मन लाई इहि
सम और न है सुखदाई मम माया रचना यह जानी नाम रूप जग मिथ्या मानी छन
भंगुर सब नाना रूपा। अखिल विश्वव्यापक कल थिमोही। जन्म मरन भय होइन मोही
२४ दोहा सुनि सम्पके वचन वर दारुक पुनि करि जोरि कियो प्रश्न न नाथ कहु विन
यकरी नहि थोरि २५ सीस राखि प्रभु पद कमल पुनि कर जोरि विहोर गयो स्त ता।
दारामती दुरमनि दुखतनि होरि २६ इकनिसके अध्याय महि प्रभु निज धाम प्रया
न श्री शुक नृप प्रति वरनिहै पुनि वसुदेव निहान २७ इति श्रीभागवते महापुराणे ए
कादस स्कंधे भाषायां त्रिंशोध्याय: ३० चौपई कहहु मुनि हे नृप सुनि चित लाई जिहि
विधि भवन गये जदुराई तेह अर्धे शिशिर वशिष्ठ समेता अरजुन काहि कबुधि निकेता
पछर छल सब सहित विवेका चारण किंनर अपसर जाती गरुड लोक वासी बहु भां।
ती आये प्रभु दरसन हित लागी हरि निरजान लखन बडु भागी नभ विमान सो गाभर
पूरी सुमन बरख गुण गावहि भूरी हरि के जन्म करम बहु वारा कोवरनै तिहि अमि
तन पारा जय जय शब्द होन तित आई हरि निरख्यो तिन कोन पराई निज विभूत
रखानभ ठाढी तब निज धाम चलन रुचि बाढी तब भगवान कमल दल लोचन मे

मोह ज्ञा नो अज
अन्य अन्य रूपा

प्रेम मगन अति
एक से एक

410A देनयनसंतभवमोचन तोकोहेमुसुनोइकनीकैो कहौसंतभावनसवनीको प्रथ
मविरंचिमांगुवरहाना पाहिकिंकरनहमपानिधामा अवलहुवेरघनेसुरआये तव
हरिलाहितववरनउपाये तिनवेचनहितपलकलगाये योगीइवप्रभुध्यानवनाये
निजतनअषिललोकअभिरामा ध्याननधारनामंगलधामा सोतनसहितगयेनिज
लोका सुरनरमुनिसवकियोविसोका इगधकहेअतिमतिहीना जिनेनस्तुति। ते
गतिअरथप्रवीना १ दोहा अषिललोकजिहिउदरवसरोमरोमप्रतिअंड ताकहु
इगधजुकहेकोकिमिवोचैब्रह्मंड २ चौपई इगधकहैकोतरकवनाई पछलेव
चनवपाहूजाई अन्नहूजगतउपासकजेते हरिकोरूपलषेपुनितेते यातेप्रभु।
अहगधसरीरा गयेस्वधामआपुवलवीरा इछारूपदेहतहंडारी गयेधाममूरजा
इनदारी नवइंदुभिवाजीसुरलोका उपज्योहरषमिट्योभवसोका सत्यधर्मधीर
जअरुसोभा कीरतिरहतिसकलविनछोभा प्रभुपीछेयेसवकलसिधारे ब्रह्मादि
कविसमयउरधारे अतिविसमयहरिकीगतिदेषी लष्योनकाहूसुमतिविसेषी
जैसेमेघहोइनभमाही अरुविपलाप्रगटेतिनपाही प्रगटहोइजाइदुरिसोई न
रनहिलषैथोजपुनिकोई तैसेयहप्रयाणकीवाता देवनलष्योनहरिकोजाता
ब्रह्मादिकनवहरिगतिदेषी अतिविसमयचितभयेविसेषी करतप्रसंसानभ।
। पथगामी निजनिजलोकगयेसुरस्वामी प्रगटभइहैयासवकाहू जाननलषेसु

श्री·भा·
ए ४२२
४११

रनलवनाहूं हेनरनाथनातनकछुआमे। सकतिअनेनसराहहरिजानै। सकललो
ककोकारणस्वामी अरूसवकोपुनिअंतरजामी तासुजनमजाइकुलजेअहही
अरुनानाविधिलीलाकहही सोसवमायाकृततेजानू प्रभुकीसक्तिअखिलतेमानू
करैकर्मप्रभुहेगतिइहा विनुपगचलैकहैविनुजीहा अजअव्ययजनमैपुनि।
सोई नहिकहुंलिपतिगुणरिककोई करतकरमहैयेनरताही। जनमकहैपुनिव
हुविधिवाही ऐसेयहुतअनेकप्रकारा सोसवहेहनकोव्योहारा सवनेपरेराक
रसमोई जदुकुलप्रगटकहतसवकोई जैसेनटवहुगुणविस्तारा पुनिआपुहि
धरिसकलनिवारा नटजिमिसकलक्रियातेंहूरी हरिकेजन्मकरमतिमिभूरी
निजमायागुणरचिसंसारा अमितभांतिपुनिवहुतप्रकारा आपुसकलमहिकि।
योप्रवेसा पुनिविहारपुनिकरेनरेसा अंतकालपुनिनासेसोई ताविनुऔररहै
नहिकोई ३ दोहा सनकपुत्रगुरुकैंदियोजमपुरतेजिनआनि तुमहिंवचायोग
रभमहुव्यापिसुगतिपुनिहानि ४ सोरठा सोकालहूकेकाल गिरिजापतिहरसु
लधर तिहिंजोत्योकरिव्याल भयोजुद्धमववालसो ५ चौपई सोप्रभुसकलई
सकोईसा निजवपुरायननहिंनअनीसा अखिललोकउतपतिजोकरई करि
प्रतिपालअपुसंघरई जद्यपिसकलसकतिधरिस्वामी तथालोकयहअंतजा
मी जदुकुलकोकरिकेसघारा निजइछासौंतजिसंसारा तहांसुनोकारनतप।

411A

एका सोसमुझैजिहिउपजविवेका जोगसाधिकोतनसहराषा पुरुषारथयहव
पुकोभाषा नहांहिषायोथिरनहिदेहा गयोधामनिजअमापुसरेहा मृत्युलोकसु
षतुछहियावा रहितग्याननितिहिप्रगटवतावा हेन्रपओरनचितमहंआनो सना
चितआनेहु हरिनुमजानो जोहरिचरनिपदैयहप्राना कृष्णप्रयाणसुभगसुषदा
ना भक्तिहोइअतिउतमनाही सोकमोहभवरोगनसाही हृदयकगयोछारकामा
ही उग्रसेनवसुदेवजहाही कृष्णवियोगमहादुषषीना परेजाइहुनकेचरणम
लीना नयनप्रवाहरहे नहिरोका पगसीच्योअतिहियभरिसोका व्याकुलचित्त
मुषआवनवचना समुझितहृदयनाथकेरचना पुनिधीरजधरिवचनउचारा
कहोसुजदुकुलकोसंघारा बहुररामनिरजानवषाना सुनतभयेसवमृतकस
माना अतिउदवेगभयेसवलोगा मूरछनसोकमोहगतिभोगा करतविलाप
गयेपरभासा नहांनरहेथेजगतिनिवासा गयेधामहरिसवमिलजाना उरनाउन
रोवहविधिनाना नववसुदेवदेवकीरेवी उग्रसेनवडुसुषकेसेवी अवरसोहि
लोमिलिएचारी प्राणतजेसुतगमननिहारी भगवतविरहिरोगअतिभारी नि
जपतिसंगजरीसवनारी सेकरयहातियपतिधरिअंका चितावैठिसोजरीनि
संका षोडसतियवसुदेवसमेता जरीसकलकरिचितानिकेता कृष्णतनय
प्रदुमनसमेता तिनकीतियंनघनोदुषचेता निजनिजपतिमिलकेसहगमना

श्री॰ भा॰
ए ४१२
412

गई तियासुर पुर अभिरमना। भीषमसुता आदि तिय जेती। अग्नि प्रवेश किये सब ते
ती। अर्जुन सषा परम प्रिय हरि को। कृस्न वियोग सहस कघरि को। प्रभु विनु देषे भ
ये अधीरा। मरन योग होइ गौ सो वीरा। पुनि वह गीता श्री मुष बानी। सो निज हृदय।
महु सब आनी। सो कहु अजन्म अव्यय अषिलेसा। मूढ़ न जानत कहुं लव लेसा। माया
सुनकौ संषेन मोही। सुनि हे सषा कहौं मैं तोही। सो सुधि करि हिय सोक विहाई रखो
धनंजय धीर महाई। बंधुन संग सागर महं जेते। बंधु ज्ञान प्रिय मरि गे केते। तिनके म
तक कर्म सब कीना। पिंड दान तिहि विहु विधि दीना। तजी द्वारका जनु न गहीसा। सय
हि पुरी बोरयो वारीसा। ६ दोहा हरि मंदर जहं लगि हुतो तनहं लगि बच्यो सुजान। परस्यो
जलन नदि मैं कहूं प्रभु गति को पहिचान ७ सोरठा श्री हरि नित्य विहार भूमि द्वारिका
विमल अति जाको नेक निहार मिटै पाप वहु जन्म को। ८ चौपई नाम लेत अघ औ
घ नसाही। मंगल को मंगल सो आही। पावन पुरी सुभग वह देसा। सुव सव से जहं हृ
म्न नरेसा। बालक वृद्ध अंध को बाला। मरत बचे को जे निह काला। ता हि धनंजय लै
करि साथा। इंद्रप्रस्थ पहुंचउ नर नाथा। वज्रनाभ नव करि भू अपालू। नीति धर्म लि
षि कोमि हकालू। नव पितु पिता सुनि यह बाता। कृस्न विरह दुष दुसह थाता। तुम को
कियो वेश धरि राजा। व जनुनाभ मधुपुरी विराजा। ते सब तजि उतर हि सि जाई कृस्न
चरणन मन लुभ गति पाई। सो यह प्रभु को सुभ अवतारा। गुरु अरु करम अनेक प्रकारा।

छंद ९ गुणकर्म अमित अपार प्रभुको सुनै जो नर गावही अघ ओघ जन्म अनेक
केनजि परमपद सो पावही हरि बालपन पौगंड अरु कैसोर वय महुं जे कियो तेप्र
गट लोक पुराण स्तुति महं करम कहि जगमसु बहियो १० गुणकरम प्रभु को वार एक
सुनाइ सुनि पुनि हिय गहे मदकोह मोह विकार बहु विधि लोभ रंच कनहि रहै इ
हिते सुमजोन सुनै नित प्रति और सब विसराइकै कहं कृपा विरति विवेक युत भव
सिधु तरि गुण गाइकै ११ यह कथा पावन अमित सुहावन कस्मरति उपजावनी पुन
सघन वन अघ दहन पावक क्रोध करम नसावनी ११ यह ज्ञानि श्री गुरु कृपा तेज
नक्रिया यह भाषा करी हरिभक्ति जन सुनि है सदा विगुन्य मम सब परिहरी १२ जो
ब्रह्म निरगुण रहित ईहा सकल व्यापक स्तुति कहै निज सेन पालन हेतु सेन नरस्थ
वेकहु वपु गहे सो ब्रह्म पूरन ब्रह्म रूप अनूप है भुवि अवतारै करि विविध लीला।
सुघहसव को गाइ नर पावरतारै १३ दोहा ऐसे कृस्न कृपाल प्रभु सब घटि पूरण एक
म सो मम श्री गुरु मे प्रगट बालकृस्न असिनाम १४ तिहं पद पंकज परस रज जेवम
कृपा जग जानि से प्रेरक हिय महुं सजन भाषा सु भगवत वषानि १५ श्री शुक कही प
रीछतहि व्यास कही सुक पास समुझ परै नहि संसकृत मो मानि अधिक हुलास १६
चौपई कठिन अरथ भागवत गूढा अलप बुद्धि मे अति से मूढा तदपि निज बुध
कें अनुसारा भाषा रचीन बहु विस्तारा सज्जन सुनन हेतु जन मिथोरी विनय करो

श्री·भा·
ए४१२

मेयुगकरिजोरी हरिगुणकहितप्रेमहियहरी अलपसुनेउपत्रैसुषभरी इहतेमैं
यहकीनगोसाई जानौनहिकछूमैंकविताई इहिमहोइभलकछकोई लेवसुधा
रसजनसवसोई पुनिक्ततममभानहुजनजाही वरणअनादिकालकोआही ह
रिगुणसहितसुभगमोभाषा श्रुतिपुराणकारलअसिराषा यहगुणमयनहीअ
सतअलाइ कहतसुनतननहिरहिसताप असुचीमोहिमंदमतिजानहु तौयहव
रणअसुविजनमानहु जौमालीकरिसुमनमगावा असुविनहोइनैलिअसिमा
ना सोप्रभुचरणन्हदैजिहिभाती तिमिममकृतयहसजनसुहाती पुनिपुनिकहौं
नाइपदसीसा संतसभासरसवममईसा निरषदिढाईसाहसमोरा छिमाकरवि
मैंकिंकरतोरा कहवसुनवइहहिसजनसुधारी कृष्णचरित्रसवनसुषकारी भ
सुरकुलविद्यागुणवानी सिधवरकेजरसकसुषहानी हीनवेधुसमदृससुजा
ना लहाएकरसगतिमदमाना ऐसेगुणसुभअमितअपारा लहौंनछोरकहैवहु
वारा सोप्रभुमोरइसममसोई परमकृपालकहैसवकोई श्रीगुरुवालकृस्नम
मस्वामी किंकरकृपानासुअनुगामी आपपातासुमानसिरलीना भाषाइहैएका
दसकीना. वरषअठारहिसोपुनिचारी सरदशुकलसवकहुसुषकारी तिथ
पुनिलगनवारभलयोगा ताहिनकथाकीनउपयोगा जोकोउसुनैकहैमन
लाई कृष्णचरतिहलहासहाई ८७ दोहा सुनैसुनावैपुनिकहै कृष्णकथासु

गौ

षकंह उपजै भक्ति अनन्य तिहं मिटै जगतडु खडुंह ॥ २८ ॥ ध्यान योग तप दान व्रत सब ध्या-
स्वरूप व्रत नेम सकल सिद्धि फल हो इतिहुं स्रो स्रक पाजिहि प्रेम ॥ २९ ॥ इति भागवते म-
हापुराणे एकादसस्कंधे भाषा निर्बद्ध कपारामेन कृत नामने नाम एकत्रिंशोध्यायः ॥ ३१ ॥
संवत् १८७९ मिती श्रावण सुदी ७ गुरुवासरे रिसमापूरम् ॥ एकादसस्कंध भाषा ॥ शुभं

दोहा

भाषा श्रीमद्भागवत विघन हरन गुण बानि ॥ वषत मल्ल के कोटि मैं फली भई सुष
हानि ॥ २ ॥ इलेलसिंह नृपति सुन सखि लखम क्ति गुणवान ॥ तो को श्रीमद्भागवत करै
कोटिकल्यान २